ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC सम्पूर्ण

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए एक समग्र समाधान

ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

UPSC सम्पूर्ण

सिविल सेवा परीक्षाओं के लिए एक समग्र समाधान

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

संस्करण : प्रथम
ISBN : 978-81-19130-82-5

द्वारा प्रकाशित : Physics Wallah

मोबाइल ऐपः Physics Wallah (प्ले स्टोर पर उपलब्ध)

वेबसाइटः www.pw.live

यूट्यूब चैनलः Physics Wallah - Alakh Pandey
UPSC Wallah
UPSC Wallah - Hindi Medium
PSC Wallah - UP Bihar
MPSC Wallah

ईमेलः support@pw.live

अधिकार

सभी अधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित रहेंगे। लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी हिस्से का किसी भी तरह से उपयोग या इसकी अन्य प्रतिलिपि तैयार नहीं की जा सकती है।

छात्र समुदाय के हित में:

किसी भी सोशल मीडिया चैनल, ईमेल आदि या किसी अन्य चैनल के माध्यम से मोबाइल, लैपटॉप या डेस्कटॉप के माध्यम से पीडीएफ या अन्य समकक्ष प्रारूपों में पुस्तकों की सॉफ्ट कॉपी का प्रसार एक प्रकार का अपराध है। किसी भी व्यक्ति द्वारा अपनी डिवाइस (उपकरणों) पर पुस्तक की सॉफ्ट कॉपी को प्रसारित, डाउनलोड, संग्रहीत करना कॉपीराइट अधिनियम का उल्लंघन है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक या इसकी किसी भी सामग्री की फोटोकॉपी करना भी अवैध है। ऐसी किसी भी सॉफ्ट कॉपी संबंधी सामग्री के प्राप्त होने की अवस्था में इसे डाउनलोड या फॉरवर्ड न करें।

अस्वीकरणः

विषय की गहरी समझ रखने वाले PW ONLY IAS विशेषज्ञों एवं अध्यापकों की टीम ने पुस्तकों के लिए कड़ी मेहनत की है। जबकि इन पुस्तकों को तैयार करने में कंटेंट बनाने वालों (कंटेंट क्रिएटर्स), सम्पादकों एवं प्रकाशकों द्वारा पूर्ण प्रयत्न किया गया है। यह पुस्तक शैक्षिक उद्देश्यों के लिए अभिप्रेत है तथा लेखक पुस्तक में निहित किसी भी त्रुटि के लिए जिम्मेदार नहीं होगा। विषय वस्तु की सटीकता के लिए जाँच की गई है। प्रकाशक द्वारा विषय-वस्तु को सटीक एवं आधिकारिक जानकारी प्रदान करने के लिए डिजाइन किया है।

यह पुस्तक एवं इसमें निहित व्यक्तिगत योगदान प्रकाशक द्वारा कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत सुरक्षित हैं।

प्रतिक्रिया के लिए ईमेल करें: support@pw.live

(यह पुस्तक केवल शैक्षिक उद्देश्य के लिए उपयोग की जाएगी।)

प्रस्तावना

PW ONLY IAS की एक अत्यधिक कुशल विशेषज्ञ टीम यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत करती है कि छात्रों को यूपीएससी परीक्षा के लिए सर्वोत्तम सामग्री प्राप्त हो।

शुरुआत से ही कंटेंट बनाने वालों (कंटेंट क्रिएटर्स), समीक्षकों, डीटीपी ऑपरेटरों, प्रूफरीडरों एवं अन्य लोगों की पूरी कंटेंट टीम छात्रों के लिए प्रभावशाली सामग्री तैयार करने हेतु अपने सर्वोत्तम ज्ञान तथा अनुभव के अनुसार सामग्री को आकार देने में संलग्न है।

अध्यापकों ने विषय-वस्तु को आसानी से समझने वाली भाषा में प्रस्तुत करने की नई शैली अपनाई है एवं इस अध्ययन सामग्री के निर्माण के दौरान टीम को अपना मार्गदर्शन तथा पर्यवेक्षण प्रदान किया है।

PW ONLY IAS वैचारिक एवं मनोरंजक शिक्षा में दृढ़ विश्वास रखता है। PW ONLY IAS छात्रों को गुणवत्ता तथा स्पष्टता लाने के लिए उच्च परीक्षा-उन्मुख अध्ययन-सामग्री प्रदान करता है।

यूपीएससी अध्ययन सामग्री बहुतायत के साथ बाजार में उपलब्ध है, परंतु PW ONLY IAS विशेषज्ञ हमारे यूपीएससी छात्रों के लिए सर्वोच्च अध्ययन सामग्री प्रदान करने हेतु निरंतर कार्यरत हैं।

यह अध्ययन सामग्री परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रचुर विविधता के साथ अवधारणाओं को समझने एवं महारत हासिल करने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती है तथा छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा के लिए ज्ञान से सुसज्जित करती है।

इस अध्ययन सामग्री का मुख्य उद्देश्य हमारे छात्रों को संक्षिप्त, स्पष्ट, लघु एवं गुणवत्तापूर्ण विषय-वस्तु प्रदान करना है।

पुस्तक की विशेषताएं

- विषयों की समग्र चर्चा, यूपीएससी प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा के पाठयक्रम के पूर्णत: अनुरूप
- विषयवार कवरेज के लिए वन-स्टॉप सॉल्यूशन
- त्वरित समझ और पुनरीक्षण के लिए आरेख, फ्लोचार्ट और टाइमलाइन्स
- इस परीक्षा के प्रारंभिक और मुख्य चरणों की एकीकृत तैयारी

विषय-सूची

नीतिशास्त्र का मूल मंत्र 1-2

1. नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध 3-51

1.1 भूमिका..3
1.2 विभिन्न विद्वानों द्वारा नैतिकता की परिभाषाएँ 3
1.3 नीतिशास्त्र का उद्भव...............................3
1.4 नैतिकता के स्रोत......................................4
1.5 नैतिकता का महत्व....................................5
1.6 नैतिकता के अभाव के परिणाम.....................6
1.7 नैतिकता का क्षेत्र 6
1.8 नैतिकता की प्रकृति 7
1.9 नैतिकता का सार तत्व 8
1.10 नैतिकता के निर्धारक तत्व...........................8
1.11 नैतिकता के परिणाम 12
1.12 नैतिकता के आयाम 14
1.13 एक्शन एजेंट सिद्धांत.............................. 26
1.14 टेलीओलॉजिकल एथिक्स (परिणामोन्मुख नैतिकता)......................... 26
1.15 साधन बनाम साध्य बहस......................... 28
1.16 नैतिकता के समक्ष चुनौतियाँ...................... 28
1.17 निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता 29
1.18 नोलन समिति: सार्वजनिक जीवन में सात सिद्धांत....................................... 33
1.19 सार्वजनिक और निजी संबंधों का पृथक्करण.... 35
1.20 सार्वजनिक संबंधों का निजी संबंधों पर प्रभाव 36
1.21 सार्वजनिक संबंधों पर निजी संबंधों का प्रभाव.... 36
1.22 सार्वजनिक और निजी संबंधों में सामान्य नैतिकता.. 36
1.23 सार्वजनिक और निजी संबंधों को संतुलित करना...................................... 37
1.24 नैतिक सिद्धांत(मोरल्स)........................... 37
1.25 संवैधानिक नैतिकता 39
1.26 मानवीय मूल्य....................................... 39
1.27 नैतिक सिद्धांत, नैतिकता और मूल्य 41
1.28 मूल्य संवर्धन में परिवार की भूमिका............ 42
1.29 मूल्य संवर्धन में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका.... 43
1.30 समाज की भूमिका 44
1.31 मूल्य शिक्षा के लिए सिफारिशें 45
1.32 मूल्यों के क्षरण के कारण........................ 46
1.33 नैतिकता से संबंधित महत्वपूर्ण शब्दावली....... 47

2. अभिवृत्ति 52-79

परिचय 52
2.1 अभिवृत्ति के अवयव (एबीसी घटक).......... 52
2.2 अभिवृत्ति की संरचना 53
2.3 अभिवृत्ति की श्रेणियाँ: व्यक्त अभिवृत्ति और अंतर्निहित अभिवृत्ति 54
2.4 अभिवृत्ति की विशेषताएँ 54
2.5 अभिवृत्ति का निर्माण एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक 56
2.6 अभिवृत्ति के कार्य................................ 57
2.7 अभिवृत्ति एवं विचार 58
2.8 अभिवृत्ति और व्यवहार............................ 59
2.9 अभिमत और अभिवृत्ति 61
2.10 विश्वास और अभिवृत्ति 62
2.11 मूल्य और अभिवृत्ति............................... 62
2.12 नैतिक अभिवृत्ति 63
2.13 सामाजिक अभिवृत्ति 65
2.14 समाज के कमजोर वर्गों के प्रति अभिवृत्ति...... 65
2.15 पूर्वाग्रह 66
2.16 राजनीतिक अभिवृत्ति............................... 67
2.17 लोकतांत्रिक अभिवृत्ति.............................. 69
2.18 नौकरशाही अभिवृत्ति............................... 70
2.19 सामाजिक प्रभाव 70
2.20 अनुनयन... 72
2.21 प्रशासन और जनता (सार्वजनिक)............... 76

3. सिविल सेवा के लिए अभिरूचि और आधारभूत मूल्य.............................. 80-108

3.1 अभिरूचि 80
3.2 अभिरूचि के प्रकार 80

3.3 अभिरूचि बनाम कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण...... 81
3.4 अभिरूचि और सिविल सेवाएँ..................... 82
3.5 अन्य मूल्यों के साथ अभिरूचि का संबंध...... 85

4. भावनात्मक बुद्धिमत्ता........................109-129
4.1 सलोवी और मेयर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चार स्तर...................................... 113

5. भारत और दुनिया के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान...............130-169
5.1 पश्चिमी दर्शन और पश्चिमी विचारक......... 130
5.2 पश्चिमी विचारक................................. 130
5.3 मैकियावेली का दर्शन............................ 146
5.4 भारतीय दार्शनिक................................ 150
5.5 भारतीय प्रशासक................................. 164
5.6 प्रशासन एवं नेतृत्व............................... 167
5.7 प्रशासक, प्रबंधक और नेता..................... 168

6. लोक प्रशासन में लोक/नागरिक सेवा मूल्य और नैतिकता..........................170-209

7. शासन में शुचिता.............................210-262
7.1 शुचिता से तात्पर्य 210
7.2 शुचिता - दर्शन एवं सिद्धांत.................... 211
7.3 शासन में शुचिता हासिल करने के मार्ग में चुनौतियाँ.. 212
7.4 शासन में शुचिता को बढ़ावा देने के तरीके...... 212
7.5 लोक सेवाओं से तात्पर्य......................... 212
7.6 शासन में सूचना साझाकरण और पारदर्शिता...... 219
7.7 सूचना का अधिकार (आरटीआई)............ 220
7.8 आचार संहिता और नैतिक संहिता............. 225
7.9 नागरिक चार्टर.................................... 232
7.10 कार्य संस्कृति.................................... 236
7.11 सेवा प्रदायगी की गुणवत्ता...................... 239
7.12 सार्वजनिक निधि का उपयोग.................... 241
7.13 भ्रष्टाचार.. 242

8. नैतिकता और उभरती प्रौद्योगिकियाँ......263-272
8.1 परिचय.. 263
8.2 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)........................... 263
8.3 आभासी वास्तविकता (VR) और संवर्धित वास्तविकता (AR)............................... 264
8.4 रोबोटिक्स और स्वचालन........................ 266
8.5 जैव प्रौद्योगिकी और बायोइंजीनियरिंग.......... 267
8.6 अंतरिक्ष अन्वेषण और औपनिवेशीकरण........ 268
8.7 जीन एडिटिंग से संबंधित नैतिक चुनौती...... 269
8.8 डिजाइनर बेबीज से संबंधित चुनौतियाँ......... 269
8.9 सोशल मीडिया से संबंधित नैतिक चिंताएँ..... 270
8.10 अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों में शामिल नैतिक मुद्दे............................... 271
8.11 उभरती प्रौद्योगिकियों में नैतिकता के लिये आगे की राह 272

9. नीतिशास्त्र: विविध विषय..................273-298
9.1 वरिष्ठ का निर्देश बनाम जनहित............... 273
9.2 उद्यमशील सरकार 273
9.3 नवीन लोक प्रशासन (NPA)..................... 274
9.4 नवीन लोक प्रबंधन (NPM)..................... 276
9.5 हिरासत में हिंसा और यातना.................... 277
9.6 प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान की नैतिकता.......... 278
9.7 युद्ध की नैतिकता................................ 279
9.8 प्रशासन में भगवत गीता की भूमिका.......... 282
9.9 सैन्य सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): नैतिक मुद्दे... 283
9.10 केंद्रीकरण और एकाधिकार..................... 285
9.11 फार्मास्युटिकल पारिस्थितिकी तंत्र की नैतिकता...................................... 286
9.12 वैवाहिक बलात्कार और वैवाहिक अधिकार..... 288
9.13 जनमत सर्वेक्षण और नैतिक मुद्दे............... 290
9.14 बुल्डोज़र मॉडल और प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत.. 293
9.15 पीत पत्रकारिता................................... 295
9.16 शब्दावली 297

शब्दावली: उदाहरण के साथ नैतिकता से संबंधित महत्वपूर्ण अवधारणा...........299-310
नैतिकता और मानवीय सहसंबंध................ 299
मनोवृत्ति... 302
अभिक्षमता... 303
सिविल सेवाओं के लिए मूलभूत मूल्य........ 304
भावनात्मक बुद्धिमत्ता........................... 308
नैतिक शासन...................................... 309
ईमानदारी/सत्यनिष्ठा.............................. 309

नीतिशास्त्र का मूल मंत्र

सिविल सेवा परीक्षा के सामान्य अध्ययन 4 - नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरूचि पेपर के लिए सभी नैतिकता-आधारित अवधारणाओं और दर्शन की स्पष्ट और समग्र समझ विकसित करने की आवश्यकता होती है। इसमें उदाहरणों, केस स्टडी और सर्वोत्तम प्रथाओं की सहायता से सिद्धांत और उचित उदाहरण के बीच सही संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता होती है। **उदाहरणों, परिदृश्यों** और **वास्तविक जीवन की स्थितियों** की सहायता से नैतिकता को समझना सैद्धांतिक प्रस्तावों को जीवंत कर देता है और एथिक्स को एक व्यावहारिक क्षेत्र बनाता है।

एथिक्स के पेपर में आवश्यक प्रत्येक विषय का एक विशिष्ट और स्पष्ट विचार रखने के लिए "उदाहरणों की कला" सीखने की जरूरत है। इसे समझने के कई तरीके और दृष्टिकोण हो सकते हैं। पाठकों की आसानी और सुविधा के लिए, हमने यह समझाने और दिखाने का प्रयास किया है कि **नीतिशास्त्र और संबंधित अवधारणाओं के बारे में हमारे उदाहरण-आधारित ज्ञान** को कैसे उत्पन्न, विकसित और समृद्ध किया जाए।

अभ्यर्थियों को आमतौर पर एथिक्स के पेपर में उदाहरणों की गुणवत्ता और प्रासंगिकता के संबंध में समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पाठकों को एथिक्स के पेपर में कम समय में गुणवत्तापूर्ण उदाहरण तैयार करने की क्षमता विकसित करने की सख्त जरूरत है। इस प्रकार **'उदाहरणों की कला'** इस संबंध में अभ्यर्थियों की मदद करने के लिए सुविचारित और शोध-आधारित प्रयास है। हमने वास्तविक समय में उदाहरण अभिव्यक्ति की प्रविधि और तकनीक को सीखने, समझने और उसमें महारत हासिल करने के लिए चीजों को सरल रखने की कोशिश की है।

ऐसे कुछ टेम्पलेट हैं जिनके आधार पर एक पाठक एथिक्स को समझने की कोशिश में अपनी तैयारी के दौरान अपने ज्ञान को संरचित और व्यवस्थित कर सकता है। हम बड़ी संख्या में सिविल सेवा परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने वाले छात्रों के अनुभवों के आधार पर ऐसा दृष्टिकोण आपको बता रहे हैं।

प्रक्रिया

उदाहरणात्मक और प्रतिनिधि उदाहरणों की कला विकसित करने के लिए, हमें निम्नलिखित दिशाओं में सोचने और अपने दिमाग में व्यवस्थित जानकारी सृजित करने की आवश्यकता है। ये चार टेम्पलेट हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है:

1. **टेम्पलेट 1:** हम अतीत और वर्तमान के महान नेताओं, सुधारकों और प्रशासकों के जीवन के अनुभवों/कथनों को देख सकते हैं, इन उदाहरणों की बहुत उपयोगिता है और ये पेपर के सैद्धांतिक खण्डों में उपयोगी सिद्ध होते हैं। ये इस बात को समझने में भी उपयोगी हैं कि महान लोग कैसे सिद्धांतों को विचार और मूल्य क्षेत्र से कार्य क्षेत्र में लागू करते हैं और लाते हैं।
2. **टेम्पलेट 2:** मनुष्य एक राजनीतिक, सामाजिक प्राणी होने के साथ-साथ एक महान नैतिक प्राणी भी है। मनुष्य होने के नाते हम स्वयं नियमित रूप से कार्य करते हैं और नैतिक मुद्दों का सामना करते हैं। इस प्रकार, हमें आम लोगों के जीवन में नैतिकता के अंतरसंबंध को समझने और समझाने के लिए अपने जीवन की स्थितियों और संदर्भों और अपने आस-पास के लोगों पर विचार करने की आवश्यकता है। इसलिए व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों और उदाहरणों का उपयोग नैतिकता में अत्यधिक लाभकारी हो सकता है।
3. **टेम्प्लेट 3:** अक्सर नैतिकता में काल्पनिक स्थितियाँ, उदाहरण और कार्रवाई के संभावित तरीके; नैतिक क्या है और क्या नहीं है, के बीच अंतर का स्पष्ट विचार दे सकते हैं। अवधारणाओं के साथ-साथ केस स्टडीज को समझने में इसकी काफी प्रयोज्यता है।
4. **टेम्पलेट 4:** हमें नैतिक दृष्टिकोण/सिद्धांतों की कल्पना करने और उन्हें सिविल सेवक के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक बनाने की भी आवश्यकता है। इस मामले में, हम सिविल सेवक/नौकरशाह/प्रशासक या जो भी प्रयोज्यता परिदृश्य हमें प्रदान करता है, की भूमिका ग्रहण कर सकते हैं।

टेम्पलेट्स को समझाने के लिए उपरोक्त टेम्पलेट्स पर आधारित उदाहरणात्मक उदाहरण उसी विषय पर विकसित किए गए हैं।

उदाहरण के लिए, विषय - प्रेम और करुणा

टेम्पलेट 1: मानक उदाहरण - गांधीजी के मन में समाज के वंचितों के प्रति बहुत सहानुभूति और करुणा थी। यह अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव को दूर करने के प्रति उनके दृष्टिकोण से झलकता था।

टेम्पलेट 2: व्यक्तिगत उदाहरण - मेरे स्कूल के दिनों में एक क्रिकेट मैच के दौरान मैं एक बार चिढ़ गया था और अपनी हताशा में एक भौंकते कुत्ते पर पत्थर फेंक दिया था। दुर्भाग्यवश, वह थोड़ा घायल हो गया। इसे पूरा करने के बाद, बाद में, उसी घटना ने जानवरों और उनकी पीड़ा के प्रति मेरी करुणा को मजबूत किया जो पहले इतनी मजबूत नहीं थी।

टेम्पलेट 3: काल्पनिक मामले:

व्यक्ति 1
- एक दुर्घटना पीड़ित को नजरअंदाज करता है
- यह करुणाभाव की कमी दर्शाता है।

व्यक्ति 2
- दुर्घटना पीड़ित को लेकर दुखी होता है लेकिन कोई एक्शन नहीं लेता
- समानुभूति रखता है लेकिन उसमें करुणाभाव की कमी है

व्यक्ति 3
- दुर्घटना पीड़ित को देखता है और तुरंत कार्यवाही करता है
- यह करुणाभाव दर्शाता है

टेम्पलेट 4: सिविल सेवक/नौकरशाह/प्रशासक - एक सिविल सेवक के रूप में सच्ची करुणा हमेशा कल्याण की भावना को लागू करके और सशक्तिकरण के प्रयासों की रक्षा और कार्यान्वयन करके ईमानदारी से दिखाई जा सकती है। एक दयालु सिविल सेवक को उन लोगों के लिए सरकार की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए जिन्हें एक सभ्य जीवन के लिए सरकारी सहायता की आवश्यकता है।

हालाँकि, समग्र रूप से एथिक्स पुस्तक इन टेम्पलेट्स पर काम करने का प्रयास करती है। पाठक को "उदाहरणों की कला" सीखने के दृष्टिकोण के साथ अच्छी तरह से जुड़ने का प्रयास करना चाहिए और सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में एथिक्स पेपर (जीएस-4) में शानदार प्रदर्शन के रूप में अंतिम पुरस्कार प्राप्त करना चाहिए।

शुभकामनाएं

टीम, PW-ONLY IAS

1 नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध

"आपको जो करने का अधिकार है एवं जो करना सही है, के बीच अंतर को जानना ही नैतिकता है।" –**पॉटर स्टीवर्ट**

पाठ्यक्रम
• **नीतिशास्त्र तथा मानवीय सह-संबंध:** मानवीय क्रियाकलापों में नैतिकता का सार तत्व, इसके निर्धारक एवं इसके परिणाम; नैतिकता के आयाम; निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता।
• **मानवीय मूल्य:** महान नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों के जीवन एवं उपदेशों से शिक्षा; मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका।

1.1 भूमिका

- **नीतिशास्त्र समाज में मनुष्य के आचरण को विनियमित करने वाले सिद्धांतों की रूपरेखा है।** यह क्या सही है एंव क्या गलत है के आधार पर कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए मानदंडों या मानकों का अध्ययन करता है। **यह नैतिक रूप से क्या सही या गलत, उचित या अनुचित है, का अध्ययन करता है।**
- धर्म, दर्शन, संस्कृतियाँ, मानव विवेक और अंतर्ज्ञान, रोल मॉडल, परिवार एवं मित्र, स्कूल और कॉलेज, तर्कसंगत सोच और व्यक्तिगत अनुभव सभी इसके उदाहरण हैं।

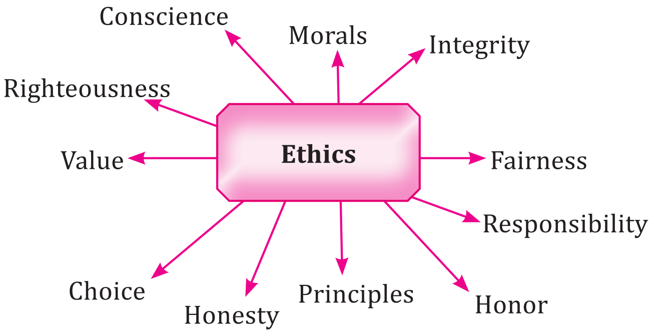

चित्र: नैतिकता के घटक

1.2 विभिन्न विद्वानों द्वारा नैतिकता की परिभाषाएँ

विद्वान	नैतिकता की परिभाषा
अरस्तू	नैतिकता इस बात का अध्ययन है कि **कोई व्यक्ति कैसे अच्छा एवं सदाचारी जीवन** जी सकता है। इसमें नैतिक चरित्र एवं गुणों की जांच भी शामिल है।
इमैनुअल कांट	"नैतिकता विचारशील प्राणियों के अंतर्निहित मूल्यों एवं गरिमा पर ध्यान केंद्रित करते हुए **उन सिद्धांतों एवं नियमों की तर्कसंगत जांच है, जो मानव व्यवहार को निर्देशित करते हैं।**"
जॉन स्टुअर्ट मिल	"नैतिकता का संबंध उपयोगिता के सिद्धांत एवं आनंद की खोज के माध्यम से अधिकतम लोगों की **समग्र खुशी एवं कल्याण बढ़ाना है।**"
जॉन रॉल्स	"नैतिकता **सामाजिक संस्थानों में न्याय एवं निष्पक्षता के सिद्धांतों से संबंधित** है। यह एक ऐसा न्यायपूर्ण समाज बनाए जाने की आवश्यकता पर जोर देती है जो न्यूनतम सुविधा प्राप्त लोगों का अधिकतम कल्याण करता हों।"

1.3 नीतिशास्त्र का उद्भव

- **अरस्तू की निकोमेकियन नैतिकता:** नीतिशास्त्र का उल्लेख प्राचीन यूनानी दर्शन, विशेष रूप से अरस्तू की कृति **"निकोमेकियन एथिक्स"**, में मिलता है जिसमें नैतिक सिद्धांतों एवं व्यवहार का व्यापक अन्वेषण किया गया है।
  - अरस्तू ने अपनी इस कृति में सदाचार की प्रकृति, नैतिक चरित्र एवं अच्छे जीवन की खोज पर प्रकाश डाला है, नैतिक जांच की आधारशिला रखी है और नीतिशास्त्र की उत्पत्ति एवं अध्ययन में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की है।
- नैतिकता शब्द की उत्पत्ति ग्रीक **शब्द इथोस** और **लैटिन शब्द मोरेस**, से हुई है जिसका अर्थ है "प्रथा," "व्यवहार के तरीके," या "मानव चरित्र।"

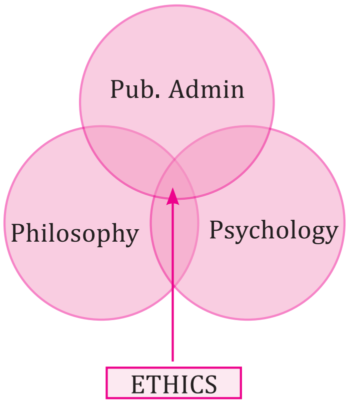

1.4 नैतिकता के स्रोत

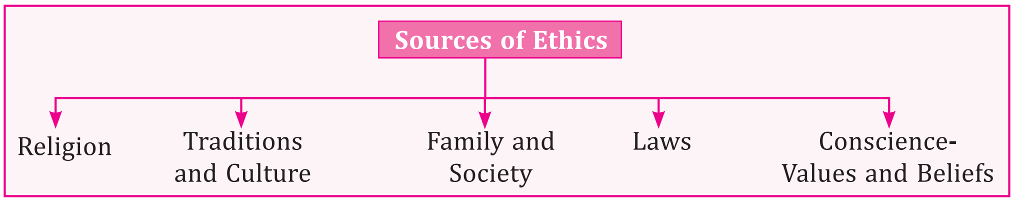

चित्र: नैतिकता के स्रोत

- **धार्मिक और आध्यात्मिक विश्वास:** धार्मिक और आध्यात्मिक परंपराएँ नैतिकता की रूपरेखा प्रदान करती हैं जो प्राय: दैवीय शिक्षाओं, नैतिक सिद्धांतों और धार्मिक ग्रंथों पर आधारित होती है। नैतिकता के ये स्रोत धर्म में विश्वास करने वालों को यह तय करने में सहायता करते हैं कि क्या सही है एवं क्या गलत है और नैतिक मूल्यों की स्थापना करते हैं। **उदाहरण**– हिंदू धर्म में प्रकृति का सम्मान एवं समाज में बड़ों के प्रति सम्मान से जुड़ी शिक्षाएं।
- **दार्शनिक नैतिकता:** परिणामवाद, नीतिशास्त्र और सदाचार नैतिकता जैसी दार्शनिक परंपराएं तर्कसंगत जांच और दार्शनिक चिंतन के आधार पर नैतिक सिद्धांत एवं सूत्र प्रदान करती हैं। दार्शनिक नैतिकता नैतिक निर्णय लेने का दृष्टिकोण प्रदान करती है जो तर्क पर आधारित होता है।
- **सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड:** सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड किसी विशिष्ट समुदाय या समाज के भीतर नैतिक मानकों को आकार देते हैं। साझा मूल्यों, रीति-रिवाजों, परंपराओं और सामाजिक अपेक्षाओं का इन मानदंडों पर प्रभाव पड़ता है, जो नैतिक व्यवहार के लिए स्वीकृत दिशानिर्देश स्थापित करते हैं। उदाहरण के लिए, हम इस तथ्य से अवगत हैं कि ब्राह्मण युग में शाकाहार को उच्च सम्मान के साथ देखा जाता था जबकि पश्चिमी समाजों में ऐसा नहीं था।
- **कानूनी और नियामक ढाँचे:** कानूनी और नियामक ढाँचे किसी समाज में स्वीकार्य और अस्वीकार्य व्यवहार को परिभाषित करते हैं। ये कानून और नियम अक्सर नैतिक सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करते हैं और मार्गदर्शन एवं जवाबदेही प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में प्यार का सार्वजनिक प्रदर्शन कानूनन सही नहीं माना जाता है जबकि पश्चिमी समाजों से ऐसा नहीं है।
- **व्यावसायिक आचार संहिता:** चिकित्सा, कानून, इंजीनियरिंग और पत्रकारिता जैसे व्यावसायिक क्षेत्रों में विशिष्ट आचार संहिता मौजूद हैं जो पे शेवर जिम्मेदारियों, आचरण और नैतिक मानकों को रेखांकित करती हैं। ये संहिता किसी विशिष्ट पेशे के संदर्भ में नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- **नैतिक सिद्धांत एवं नियम:** नैतिकता के ढांचे में, स्वत्व अधिकार, परोपकार, गैर-दुर्भावना एवं न्याय जैसे नैतिक सिद्धांत मूलभूत अवधारणाओं के रूप में कार्य करते हैं। उपयोगितावाद, धर्मशास्त्रीय नैतिकता एवं सदाचार संबंधी नैतिकता जैसे नैतिक सिद्धांत नैतिक दुविधाओं का आकलन करने और निर्णय लेने के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।
- **मानवाधिकार और अंतर्राष्ट्रीय मानक:** मानवाधिकारों संबंधी घोषणाएँ, सम्मेलन एवं अंतर्राष्ट्रीय समझौते व्यक्तियों की अंतर्निहित गरिमा और अधिकारों के संबंध में मूलभूत नैतिक सिद्धांतों की स्थापना करते हैं। ये नैतिक स्रोत न्याय, समानता और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक रूपरेखा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, एलजीबीटीक्यू समुदाय के प्रति धारणा अब मानवाधिकारों का मान्यता प्राप्त भाग है अत:, अब इसे अधिकांश समाजों में इन्हें नैतिक मुद्दे के रूप में नहीं देखा जाता है।

- **वैज्ञानिक अनुसंधान और अनुभवजन्य साक्ष्य:** वैज्ञानिक अनुसंधान और अनुभवजन्य साक्ष्य विभिन्न कार्यों के संभावित परिणामों, लाभों और जोखिमों के बारे में जानकारी प्रदान करके नैतिक निर्णय लेने में मदद करते हैं। साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण चिकित्सा, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण नैतिकता जैसे विविध क्षेत्रों में नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

1.5 नैतिकता का महत्व

- **नैतिक खाका प्रदान करना:** नैतिकता हमें एक ऐसी रूपरेखा प्रदान करती है जिसके माध्यम से हम कठिन स्थितियों से पार पा सकते हैं।
- **निष्पक्षता और न्याय को बढ़ावा देना:** नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि लोगों के साथ उचित व्यवहार किया जाए, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या खासियत कुछ भी हों। नैतिक सिद्धांत भेदभाव, शोषण और सत्ता के दुरुपयोग की रोकथाम में सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए, निष्पक्षता एवं न्याय में विश्वास रखने वाला कोई भी सिविल सेवक हमेशा निष्पक्षता से कार्य करेगा और कभी भी मनमाने तरीके से कार्य नहीं करेगा।
- **सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना:** नैतिकता के माध्यम से व्यक्तियों एवं संगठनों को समाज एवं पर्यावरण पर उनके प्रभाव के बारे में विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह जिम्मेदारीपूर्ण निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करता है जिसमें व्यापक भलाई के लिए दीर्घकालिक परिणामों एवं लाभों पर विचार किया जाता हों। उदाहरण के लिए, सचिन तेंदुलकर ने भारत में अपने प्रति सम्मान से जुड़े सामाजिक उत्तरदायित्व को देखते हुए शराब कंपनियों के विज्ञापन करने से इनकार कर दिया।

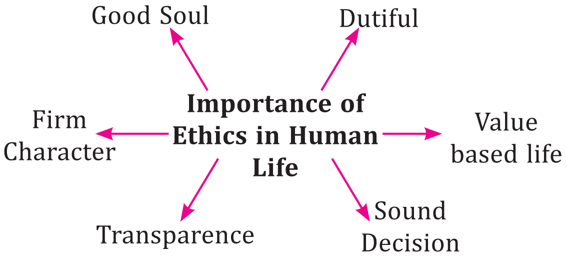

- **नैतिक मुद्दों का समाधान खोजने में सहायता:** नैतिकता नैतिक मुद्दों के बारे में विचार करने के लिए उपयोगी साधन प्रदान करती है। यह हमेशा नैतिक समस्याओं का सही उत्तर प्रदान नहीं करती है, लेकिन यह भ्रम को दूर करने और मुद्दों को स्पष्ट करने में मदद कर सकती है। उदाहरण के लिए, गांधीजी ने सुझाव दिया था कि यदि शास्त्र नैतिक सिद्धांतों के आधार पर अस्पृश्यता की अमानवीय प्रथा को मंजूरी देते हैं तो इसके खिलाफ जाएं।
- **व्यक्तिगत और सामाजिक भलाई सुनिश्चित करना:** नैतिकता मानव व्यवहार को निर्देशित करके एवं नैतिक सिद्धांतों को अपनाकर एक अच्छा जीवन जीने में मनुष्य की सहायता करने का एक प्रयास है। यह व्यक्तिगत एवं सामाजिक भलाई के साथ-साथ समग्र मानवता की भलाई चाहती है।

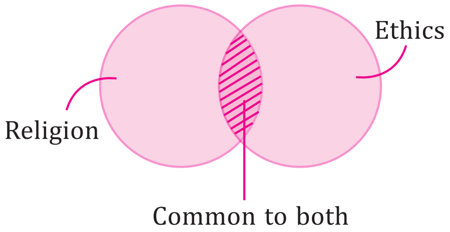

- **पेशेवर मापदण्डों को बनाए रखना:** नैतिकता आचरण एवं कार्यनिर्वाह-क्षमता के मापदण्ड निर्धारित करती है। यह मुवक्किलों, ग्राहकों या रोगियों की भलाई एवं सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए पेशेवर व्यक्तियों के नैतिक आचरण को निर्देशित करती है।
- **विश्वास एवं संबंध बनाना:** व्यक्ति, संगठन और समुदाय सभी नैतिक आचरण से लाभान्वित हो सकते हैं। यह विश्वसनीयता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का आधार तैयार करती है, जिससे संबंध और सामाजिक सामंजस्य मजबूत होता है।

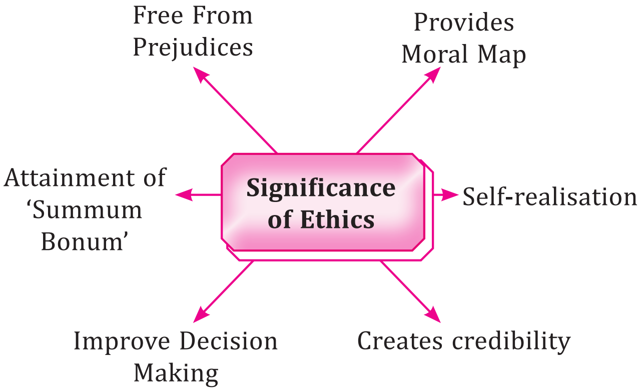

चित्र: नैतिकता का महत्व

- **नैतिक दुविधाओं का समाधान करना:** ईमानदारी, विश्वासपात्रता एवं उत्तरदायित्व जैसे नैतिक मूल्य हमें उस रास्ते पर ले जाते हैं जो हमें नैतिक दुविधाओं से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, बुद्ध, गांधीजी, अंबेडकर, मार्टिन लूथर किंग जूनियर आदि जैसी अधिकांश महान हस्तियों के पास कुछ नैतिक सिद्धांत थे जिससे उन्हें अपने सार्वजनिक जीवन में कठिन निर्णय लेने में मार्गदर्शन मिला।
- **पक्षपात एवं पूर्वाग्रह से मुक्त करना:** हमारे दैनिक जीवन में नैतिक सिद्धांतों एवं नैतिक मूल्यों का उपयोग करने से झूठी मान्यताओं एवं दृष्टिकोण को तोड़ने में मदद मिलती है, साथ ही पक्षपात एवं पूर्वाग्रह से भी बचा जा सकता है।

- **प्रभावी निर्णय लेना:** नैतिकता ऐसे निर्णय लेने में हमारा मार्गदर्शन करती है जो सही एवं न्यायसंगत हों और जिसमें व्यक्ति एवं समाज दोनों की भलाई हों।

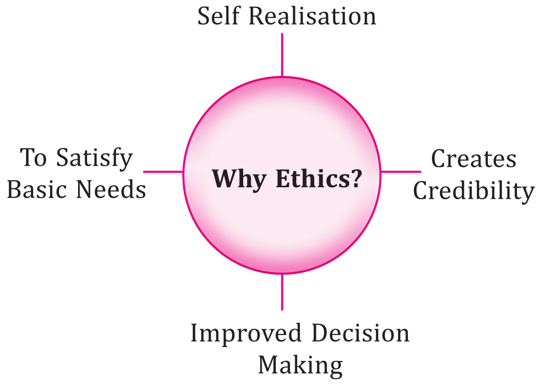

चित्र: नैतिकता का महत्व

1.6 नैतिकता के अभाव के परिणाम

इम्मैनुएल कांट

- कांट ने अपनी पुस्तक **''ग्राउंडवर्क ऑफ द मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स''** में तर्क दिया है कि नैतिकता के बिना, समाज अव्यवस्था और नैतिक अराजकता में बदल जाएगा।
- उनका तर्क है कि व्यवस्था बनाए रखने, सहयोग को प्रोत्साहित करने और मानवीय गरिमा की रक्षा करने के लिए नैतिक सिद्धांत एवं नैतिक कर्तव्य आवश्यक हैं।
- कांट के अनुसार, नैतिकता की अनुपस्थिति के परिणामस्वरूप सामाजिक सद्भाव टूट जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष, शोषण और व्यक्तिगत अधिकारों एवं कल्याण की उपेक्षा होगी।

- **व्यक्तिगत स्तर पर:** दुर्व्यवहार, घरेलू हिंसा, जातिवाद, स्वार्थ, धोखाधड़ी, बेपरवाही, आसपास के भीड़ की उदासीनता, इत्यादि।
  - **उदाहरण:** मैं हमेशा अपने पड़ोसी रमेश को अपने साथी के साथ दुर्व्यवहार करते हुए और उस पर लैंगिक टिप्पणियाँ करते हुए देखता हूँ। नैतिक आचरण के अभाव में उनका निजी जीवन प्रभावित रहा है।
- **सामाजिक स्तर पर:** भ्रष्टाचार को स्वीकार करना, महिलाओं का वस्तुकरण, भौतिकवाद में वृद्धि, साध्य के आधार पर साधनों को उचित ठहराना, नशीली दवाओं की लत, हिंसा, सांप्रदायिकता, लैंगिक अपराध और महिलाओं, बुजुर्गों एवं विकलांगों के प्रति अनादर।
  - **उदाहरण:** लड़कियों का पीछा करना, किसी का सामाजिक बहिष्करण, इत्यादि।
- **राजनीतिक स्तर पर:** राजनीति का अपराधीकरण और अपराधियों का राजनीतिकरण, सत्ता का दुरुपयोग, सत्ता का संकेंद्रण, दल-बदल, सरकार को अस्थिर करना, हिंसा, सांप्रदायिकता, धन एवं बाहुबल का उपयोग, संविधान का दुरुपयोग, इत्यादि।
  - **उदाहरण:** सांप्रदायिक एजेंडे पर प्रचार करना, मतदाताओं को रिश्वत देना, रैलियों या दंगों में गड़बड़ी पैदा करने के लिए गुंडों का उपयोग करना, इत्यादि।
- **नौकरशाही के स्तर पर:** भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, विश्वास की कमी, दंडात्मक पोस्टिंग, लालफीताशाही, सही निर्णय न लेना, व्यक्तिगत लाभ, पक्षपात, हितों का टकराव, सत्ता का दुरुपयोग, सार्वजनिक कल्याण की उपेक्षा, योजनाओं एवं कल्याणकारी कार्यक्रमों का सही कार्यान्वयन न करना, इत्यादि।
  - **उदाहरण:** नियम तोड़ने वाले से रिश्वत मांगना या जुर्माना भरने के बदले ट्रैफिक पुलिस को रिश्वत देना।
- **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर:** युद्धविराम का उल्लंघन, सीमावर्ती क्षेत्रों पर अतिक्रमण, सीमा पार आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी, मानव तस्करी, संगठित अपराध, टैक्स हैवन, संरक्षणवाद, वैक्सीन राष्ट्रवाद, परमाणुकरण, संघर्ष, युद्ध, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों की वैधता को कम करना, इत्यादि।
  - **उदाहरण:** फिलिस्तीनी क्षेत्रों पर इजराइल का अवैध कब्जा, जम्मू कश्मीर में अलगाववादियों के लिए पाकिस्तान का समर्थन, इत्यादि।
- **पर्यावरण के स्तर पर:** वनों की अवैध कटाई, प्राकृतिक जल निकायों पर अतिक्रमण, पशु दुर्व्यवहार, अवैध खनन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी, वन्यजीव अपराध, इत्यादि।
  - **उदाहरण:** लाभ के लिए औद्योगिक कचरे को नदियों या अन्य जल निकायों में फेंकना, विलुप्तप्राय प्रजातियों का अवैध रूप से शिकार करना एवं व्यापार करना, इत्यादि।

1.7 नैतिकता का क्षेत्र

नैतिकता का क्षेत्र कार्य या व्यवहार के सिद्धांतों/कारणों से संबंधित है:

- कौन से दायित्व सभी के लिए समान है?
- सभी अच्छे कार्यों में अच्छाई क्या है?
- कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भावना।
- व्यक्ति और समाज।
- नैतिकता में, हम केवल मानव व्यवहार का अध्ययन करते हैं।

नैतिक सिद्धांतों, मूल्यों का अध्ययन एवं मानव व्यवहार का मूल्यांकन सभी नैतिकता के क्षेत्र में आते हैं। यह सही और गलत, अच्छाई और बुराई के मुद्दों की जांच करता है और नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन हेतु सहायता के लिए रूपरेखा प्रदान करता है। नैतिकता के क्षेत्र को कई शाखाओं में विभाजित किया गया है, जिसमें मेटाएथिक्स (नैतिकता की प्रकृति), मानक नैतिकता (नैतिक सिद्धांत, नियम), और व्यावहारिक नैतिकता (विशिष्ट संदर्भों में नैतिकता) शामिल हैं।

साइमन ब्लैकबर्न की पुस्तक

''एथिक्स- ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन'' इससे संबंधित पुस्तक है जो नैतिकता के क्षेत्र पर प्रकाश डालती है। यह नैतिक सिद्धांतों, नैतिक दुविधाओं और रोजमर्रा की जिंदगी में नैतिकता के व्यावहारिक अनुप्रयोग का संक्षिप्त विवरण देती है।

- **इसमें हर प्रकार का स्वतंत्र मानव व्यवहार शामिल है:** नैतिकता का विषय इसके क्षेत्र से परिभाषित होता है। इसमें स्वतंत्र मानव व्यवहार (स्वैच्छिक कार्यों) के सभी संदर्भ शामिल हैं।
- **मानव का व्यवहार (एक्शन्स ऑफ ह्युमन) और मानवीय व्यवहार (ह्युमन एक्शन) में अंतर:** मानवीय व्यवहार वह है जो मनुष्य द्वारा सोच-समझकर, जान-बूझकर एवं किसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर किए जाते हैं।
- **मानवीय व्यवहार का अध्ययन:** मानव का व्यवहार सोच-समझकर, स्वेच्छा से, सचेत रूप से या जानबूझकर नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह मनुष्यों द्वारा किया जाता है (उदाहरण के लिए, सोना, चलना, आदि)। हम नैतिकता में केवल मानवीय व्यवहार का अध्ययन करते हैं।
- **ज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ जुड़ाव:** नैतिकता/ नीतिशास्त्र मौलिक रूप से ज्ञान के अन्य सभी क्षेत्रों से जुड़ी हुई है, जिसमें समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, न्यायशास्त्र, विधि एवं कानूनी अध्ययन, मनोविज्ञान, मानव विज्ञान, संस्कृति अध्ययन, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन, अर्थशास्त्र, धर्म, सौंदर्यशास्त्र और अन्य संबंधित क्षेत्र शामिल हैं।
- **सभी क्षेत्रों के मुद्दों से सरोकार:** सर्वोत्तम कल्याण की खोज में, नैतिकता का संबंध राजनीतिक, समाजशास्त्रीय, सांस्कृतिक, मानसिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं धार्मिक मुद्दों से है। परिणामस्वरूप, इन मुद्दों को नैतिकता के क्षेत्र में एक नया स्थान मिला है।
- **नए उभरते मुद्दों का समाधान करना:** नई प्रौद्योगिकी के उभार के साथ नैतिकता का दायरा भी विस्तारित होता है जिसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सोशल मीडिया और ओटीटी पर विषय वस्तुओं का विनियमन, जीन संपादन आदि जैसे नए उभरते मुद्दों को समाधान करना शामिल है।

1.8 नैतिकता की प्रकृति

- **नैतिकता सभी मानव समाजों में विद्यमान है:** नैतिकता का उद्भव एक दूसरे को पहचानने एवं दूसरों के पिछले व्यवहार को याद रखने की क्षमता वाले सामाजिक, बुद्धिमान, लंबे समय तक जीवित रहने वाले स्तनधारियों के विकास के दौरान हुआ है।
- **केवल मनुष्य के संदर्भ में:** नैतिकता का संबंध व्यक्तियों और समूहों के कार्यों से है। पशु, पक्षी और कीड़ों के व्यवहार को नैतिक मानकों के अंतर्गत नहीं देखा जाता है। केवल मनुष्यों में ही अपने व्यवहार को निर्देशित और नियंत्रित करने की क्षमता होती है।
- **नैतिक मानक एक समाज से दूसरे समाज में बदलते रहते हैं:** नैतिकता के मानक एक समाज से दूसरे समाज में बदलते रहते हैं; किसी व्यवहार एक समाज में नैतिक माना जाता है तो वही दूसरे समाज में अनैतिक माना जा सकता है।
  - **उदाहरण:** अधिकांश इस्लामी देशों में गर्भपात निषिद्ध है। हालाँकि, कई अन्य देशों में यह पूरी तरह से नैतिक है। इसके अलावा, नैतिकता अन्य कारकों के साथ-साथ समय, परिस्थिति, समझ और अनुभव के साथ विकसित होती है।
- **नैतिक सिद्धांतों की सार्वभौमिक प्रकृति:** कुछ नैतिक सिद्धांत प्रकृति में सार्वभौमिक हैं; वे सर्वसमाज के लिए दायित्व एवं सदाचार का निर्धारण करते हैं। उदाहरण के लिए, एक नैतिक सिद्धांत एवं सदाचार के रूप में सत्य व्यक्ति एवं समाज की सीमाओं से परे अपनी स्वीकार्यता में लगभग सार्वभौमिक है।
- **नैतिकता वैज्ञानिक है:** जिस ढंग से यह व्यवस्थित ज्ञान की तलाश करती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के रूप में, यह मनुष्य के सर्वोत्तम हित के आलोक में सही एवं गलत की व्यवस्थित व्याख्या से संबंधित है।
- **नैतिकता मानक विज्ञान है:** प्रत्यक्षवादी विज्ञान के विपरीत, नैतिकता का संबंध मूल्यों से है। यह उन मानकों या मानदंडों का आकलन करती है जिनके माध्यम से हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि मानव का कार्य सही है या गलत। उदाहरण के लिए, नैतिकता कई वैज्ञानिक विषयों की तरह सिर्फ चीजों का वर्णन नहीं करती है, बल्कि इसका संबंध मानक सलाह से है और यह सुझाव देती है कि किसी विशेष परिस्थिति में क्या करना चाहिए।

1.9 नैतिकता का सार तत्व

किसी भी वस्तु का अंतर्नीहित गुण जो उसके चरित्र का निर्धारण करे उसे उसका सार तत्व कहा जाता है। नैतिकता का सार इसकी विशेषताओं, महत्व, लाभों आदि का प्रतिनिधित्व करता है।

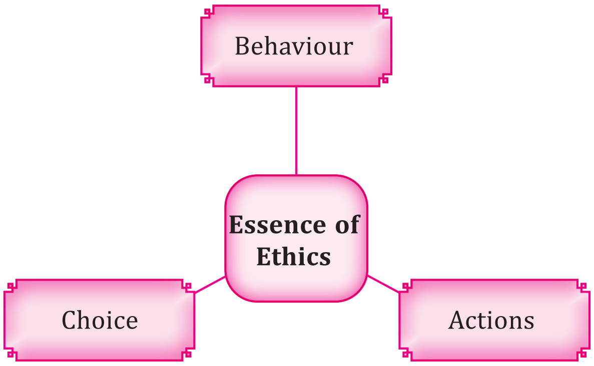

चित्र: नैतिकता का सार।

नैतिकता का सार

- **नैतिक सिद्धांत और मूल्य:** नैतिकता के केंद्र में नैतिक सिद्धांत और मूल्य हैं। ये सिद्धांत, जिनमें ईमानदारी, निष्पक्षता, करुणा, सहानुभूति, प्रेम, मानवतावाद, अखंडता, सम्मान आदि शामिल हैं, नैतिक व्यवहार की नींव के रूप में काम करते हैं और व्यक्तियों को नैतिक रूप से सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।
- **सही एवं गलत:** नैतिकता में यह बताया गया है कि सही और गलत कार्यों के बीच मूलभूत अंतर क्या है। इसका उद्देश्य मानव व्यवहार की नैतिकता का आकलन करना, नैतिक रूप से स्वीकार्य और नैतिक रूप से अस्वीकार्य व्यवहारों के बीच अंतर करने हेतु रूपरेखा प्रदान करना है।
- **नैतिक उत्तरदायित्व:** नैतिकता में नैतिक उत्तरदायित्व की अवधारणा को मान्यता दी गई है, जिसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि व्यक्तियों का यह कर्तव्य है कि वे नैतिक रूप से जिम्मेदारीपूर्ण कार्य करें। यह व्यक्तियों की उनके कार्यों के प्रति जवाबदेही और दूसरों पर पड़ने वाले उनके परिणामों पर जोर देता है।
- **नैतिक निर्णय लेना:** नैतिकता में नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में नैतिक दुविधाओं का आकलन करना, विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करना और नैतिक रूप से उचित कार्रवाई का चयन करना शामिल है। यह लोगों को जटिल नैतिक स्थितियों से निपटने के लिए आवश्यक साधन और दृष्टिकोण प्रदान करती है।
- **व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण:** नीतिशास्त्र/ नैतिकता का उद्देश्य व्यक्तिगत एवं सामूहिक कल्याण दोनों को बढ़ावा देना है। यह व्यक्ति का कल्याण, उसके अधिकार एवं उसकी गरिमा सुनिश्चित करने के साथ-साथ समुदायों, समाजों एवं पर्यावरण पर व्यापक प्रभाव के महत्व को मान्यता प्रदान करती है।
- **परस्पर विरोधी हितों को संतुलित करना:** नैतिकता इस तथ्य को मान्यता प्रदान करती है कि नैतिक दुविधाओं में अक्सर प्रतिस्पर्धी हित एवं मूल्य शामिल होते हैं। इसके अनुसार नैतिक रूप से सर्वाधिक कार्य-व्यवहार को निर्धारित करने के लिए इन हितों पर विचार किया जाना चाहिए और उन्हें निष्पक्ष तरीके से संतुलित किया जाना चाहिए।
- **नैतिक विकास एवं वृद्धि:** नीतिशास्त्र के अनुसार नैतिक व्यवहार निश्चित नहीं है बल्कि समय के साथ विकसित किया जा सकता है। यह नैतिक निर्णय प्रक्रिया एवं व्यवहार में सुधार लाने के लिए व्यक्तिगत विकास, आत्म-चिंतन एवं निरंतर सीखते रहने के महत्व पर जोर देती है।
- **नैतिक नेतृत्व:** नैतिकता व्यक्तियों और संगठनों के मार्गदर्शन में नैतिक नेतृत्व की भूमिका पर जोर देती है। नैतिक नेता नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखते हैं, अच्छे उदाहरण स्थापित करते हैं और दूसरों को भी इसका पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं।

1.10 नैतिकता के निर्धारक तत्व

DETERMINANTS OF ETHICS

3 Circumstance		
• Person	• Place	• Time

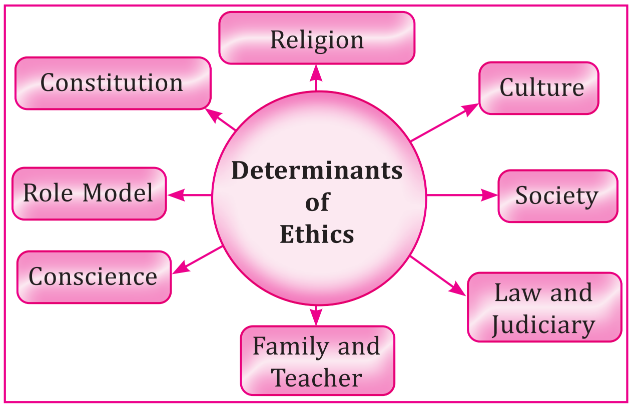

चित्र: नैतिकता के निर्धारक तत्व

- **धर्म:** दुनिया का हर धर्म नैतिक जीवन की वकालत करता है और नैतिक सिद्धांत या मानक निर्धारित करता है।
  - **उदाहरण:** हिंदू धर्म में कर्म का सिद्धांत, ईसाई धर्म में स्वर्णिम नियम, इस्लाम में दान और समानता आदि। धर्म-आधारित नैतिकता का स्रोत ईश्वर को माना जाता है। हालाँकि, नैतिकता को धर्म तक सीमित नहीं किया जा सकता है और न ही यह धर्म के समान है। उदाहरण के लिए, एक नास्तिक व्यक्ति नैतिक भी हो सकता है (वह अपनी नैतिकता विवेक से प्राप्त करता है)।

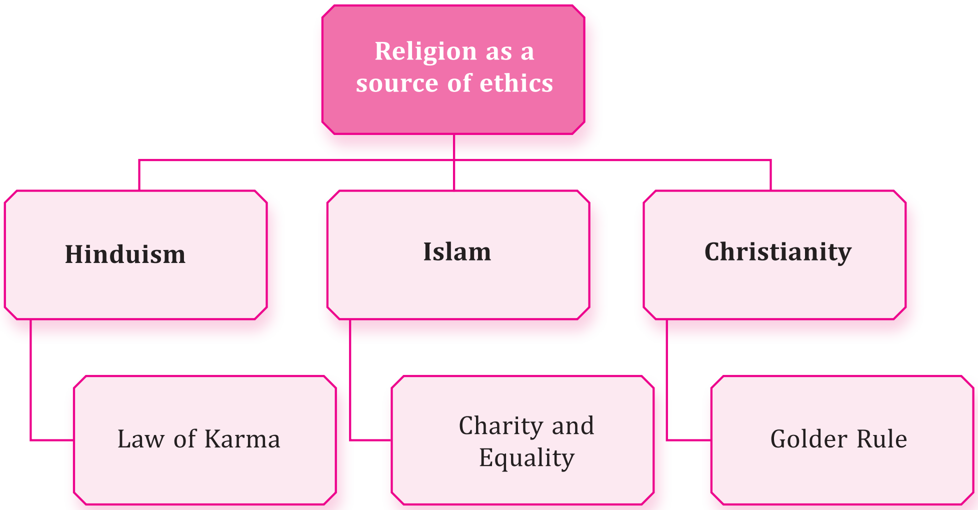

- **संस्कृति:** जिस तरह किसी समाज के सदस्य कतिपय मापदण्ड निर्धारित करते हुए आपस में रहते, खाते, पीते, पहनते, उत्सव मनाते हैं एवं मेल-जोल रखते हैं, उन्हें सामाजिक मापदंड कहा जाता है जो व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करता है। संस्कृति सही एवं नैतिक व्यवहार के लिए सलाह के रूप में कार्य करती है।
  - **उदाहरण:** जब भी मैं किसी से मिलता हूं और बड़ों के पैर छूता हूं तो हमेशा **''नमस्ते''** कहता हूं। इसका कारण भारतीय समाज से जुड़े व्यक्ति के रूप में मुझ पर पड़ा सांस्कृतिक प्रभाव है।
- **समाज:** किसी भी समाज में, अधिकांश लोग ऐसे मानकों को स्वीकार करते हैं जो वास्तव में नैतिक होते हैं। हालाँकि, नैतिकता केवल वही करना नहीं है जिसे समाज स्वीकार करता है। समाज में व्यवहार के मानक नैतिकता से भटक भी सकते हैं। कोई भी संपूर्ण समाज पूरी तरह से नैतिक रूप से भ्रष्ट हो सकता है या सामाजिक जीवन के कुछ पहलुओं में अनैतिक हो सकता है।
  - **उदाहरण:** नाजी जर्मनी नैतिक रूप से भ्रष्ट समाज का उदाहरण था जबकि सती प्रथा पारंपरिक भारत में एक अनैतिक प्रथा थी।
- **विधि:** विधि, व्यवहार के संबंध में वैध मानक एवं उनके परिणाम निर्धारित कर नैतिकता के निर्धारक के रूप में कार्य करती है, जिससे व्यक्ति नैतिक निर्णय लेने के लिए प्रेरित होते हैं। यह एक रूपरेखा प्रदान करती है जो समाज के भीतर स्वीकार्य एवं अस्वीकार्य आचरण को परिभाषित करती है।
  - **उदाहरण:** भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, कानूनी सीमाएँ तय करता है जो ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा के नैतिक मानकों के अनुरूप है।
- **परिवार और शिक्षक:** किसी भी बालक का परिवार एवं उसके शिक्षक उसके दृष्टिकोण, व्यवहार को आकार देने एवं उनमें मूल्यों का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन कभी-कभी, नकारात्मक मूल्यों से युक्त बाहरी प्रभावों के कारण बच्चे पारिवारिक शिक्षाओं से भटक सकते हैं।
- **अंतरात्मा:** अंतरात्मा किसी व्यक्ति की सही एवं गलत के बारे में नैतिक समझ है, जो किसी के व्यवहार के मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है। अंतरात्मा का आमुख नैतिक अंतर्ज्ञान हैं जिससे पता चलता है कि कोई कार्य सही है अथवा गलत।
  - **उदाहरण:** चौरी चौरा घटना में हिंसा के बाद गांधीजी का असहयोग आंदोलन से हटना उनकी अंतरात्मा की आवाज पर आधारित था।
- **आदर्श व्यक्तित्व:** आदर्श व्यक्तित्व समाज में अपने अच्छे व्यवहार या इच्छाशक्ति के कुछ मानक स्थापित करके व्यक्तियों के नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** लाल बहादुर शास्त्री की सादगी, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और दयालु व्यवहार आज भी पूजनीय है। गांधी, विवेकानन्द और अम्बेडकर ने समाज के लिए आदर्श के रूप में कार्य किया। राजनेता और नौकरशाह युवाओं के लिए सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के उच्च नैतिक मानक स्थापित कर सकते हैं।
- **संविधान:** संविधान में व्यापक सिद्धांत का प्रावधान है जो इस बात को विनियमित करता है कि किस प्रकार की विधि एवं कानून बनाए जा सकते हैं और प्रशासक किस प्रकार के कार्य कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** निष्पक्षता, न्याय, समानता, किसी के प्रति भेदभाव नही करना और पर्यावरण की रक्षा संबंधी कर्तव्य भारतीय संविधान में प्रदान किए गए कुछ नैतिक मूल्य हैं जिन्हें सामान्यत: भारतीय समाज के सभी सदस्यों और विशेषत: भारत गणराज्य द्वारा अपनाए जाने की आवश्यकता है।

- **शासन:** सरकार ऐसे कानून एवं नीतियां बनाती है जो एक प्रकार के व्यवहार को प्रोत्साहित करती हैं जबकि दूसरे प्रकार के व्यवहार को हतोत्साहित करती हैं। इस तरह का प्रोत्साहन ढाँचा लोगों में नैतिक मानकों को आकार प्रदान करता है वहीं उनका पालन भी सुनिश्चित करता है।
  - **विलियम ग्लैडस्टोन:** ''यह सरकार का कर्तव्य है कि वह लोगों के लिए गलत काम करना कठिन बनाये और उनके लिए सही काम करना आसान बनाये।''
  - **उदाहरण:** स्वच्छ भारत अभियान ने साफ-सफाई एवं स्वच्छता के पक्ष में लोगों के नैतिक मानकों को प्रभावित किया है।
- **न्यायपालिका:** न्यायपालिका विभिन्न निर्णयों, घोषणाओं एवं दिशानिर्देशों के माध्यम से नैतिक मानक निर्धारित करती है।
  - **उदाहरण:** सबरीमाला मंदिर मामले में, भारत के उच्चतम न्यायालय ने समानता के अधिकार को बरकरार रखा। 1997 के विशाखा दिशानिर्देश कार्यस्थलों पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की रोकथाम के संबंध में कानून के रूप में लागू हुए, जिससे महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित हुई और लैंगिक समानता को बढ़ावा मिला।

1.10.1 विधि एवं नैतिकता: मानव आचरण के निर्धारकों के रूप में

- **मानव व्यवहार को विनियमित करने के महत्वपूर्ण साधन:** विधि और नैतिकता मानव व्यवहार को विनियमित करने और सभ्य समाज की विद्यमानता सुनिश्चित करने के दो महत्वपूर्ण साधन हैं। वे इस लक्ष्य को विभिन्न तरीकों से पूरा करते हैं।
- **विधि आचरण के न्यूनतम मानकों की स्थापना करती है:** विधि आचरण के न्यूनतम मानकों की स्थापना करती है जिनका व्यवहार को विनियमित करने हेतु रूपरेखा प्रदान करने के लिए अवश्य पालन किया जाना चाहिए।
  - **प्रतिबंधों के माध्यम से प्रवर्तन:** इन मानकों को जुर्माना, कारावास, या अन्य दंड जैसे प्रतिबंधों का प्रयोग कर लागू किया जाता है।
  - **उदाहरण:** कानून के अनुसार हत्या, चोरी एवं हमला अवैध है। इन्हें समाज के लिए हानिकारक माना जाता है और कानून का उद्देश्य लोगों को इनमें शामिल होने से हतोत्साहित करना है।
- **नैतिकता नैतिक सिद्धांतों का समूह प्रदान करती है:** नैतिकता नैतिक सिद्धांतों एवं मूल्यों का समूह प्रदान करती है जो व्यक्तिगत व्यवहार को निर्देशित करती है। हालाँकि नैतिकता राज्य द्वारा प्रवर्तनीय नहीं है, फिर भी वे मानव व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
  - **उदाहरण:** हम हमेशा मानते हैं कि झूठ बोलना, धोखा देना या चोरी करना गलत है। भले ही ये कार्य अवैध न हों, फिर भी इन्हें अनैतिक माना जाता है।
- **मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए दोनों के दृष्टिकोण अलग-अलग हैं:** मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कानून और नैतिकता के दृष्टिकोण अलग-अलग हैं। कानून द्वारा सजा की धमकी का उपयोग लोगों को हानिकारक व्यवहार में शामिल होने से रोकने के लिए किया जाता है। इसके विपरीत, नैतिकता अधिक प्रेरक है, यह सही और गलत व्यवहार के लिए लोगों को अपनी समझ का प्रयोग करने की अपील करती है।
- **मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दोनों साझा कार्य करती हैं:** यद्यपि, कानून और नैतिकता दोनों मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साझा कार्य कर सकती है।
  - **उदाहरण:** कानून कुछ व्यवहारों को अवैध बना सकता है, जैसे हत्या, और नैतिकता उस निषेध के लिए नैतिक औचित्य प्रदान कर सकती है। इस तरह, कानून और नैतिकता एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं और समाज को अधिक सभ्य बनाने में योगदान कर सकते हैं।

यहां एक उदाहरण दिया गया है जो दर्शाता है कि यदि श्री आहूजा एक बड़ी वित्तीय कंपनी में काम कर रहे हैं तो कैसे कानून और नैतिक दृष्टिकोण उनके व्यवहार को अलग-अलग तरीके से नियंत्रित करते हैं:

श्री आहूजा का व्यवहार	उनके व्यवहार पर कानून का प्रभाव	उनके व्यवहार पर नैतिकता का प्रभाव
वित्तीय व्यवहार	कर कानून, धोखाधड़ी कानून	वित्तीय मामलों में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा
कार्यस्थल आचरण	रोजगार कानून, उत्पीड़न कानून	सम्मान, व्यावसायिकता, निष्पक्षता
पर्यावरण	पर्यावरण संरक्षण कानून	संवहनीयता, संरक्षण
निजता	डेटा संरक्षण कानून	गोपनीयता, सहमति, सम्मान
उपभोक्ता अधिकार	उपभोक्ता संरक्षण कानून	व्यापार में ईमानदारी, पारदर्शिता
बौद्धिक	कॉपीराइट, पेटेंट कानून	बौद्धिक संपदा अधिकारों का सम्मान करना

अतिरिक्त विचार

- **अन्य कारक भी मानव व्यवहार को प्रभावित करते हैं:** विधि और नैतिकता महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे मानव व्यवहार को प्रभावित करने वाले एकमात्र कारक नहीं हैं। अन्य कारक भी भूमिका निभा सकते हैं, जैसे संस्कृति, धर्म और व्यक्तिगत मान्यताएँ।
- **कानून और नैतिकता के बीच संतुलन बनाना जरूरी:** विधि और नैतिकता के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। यदि विधि अत्यधिक प्रतिबंधात्मक है तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो सकती है। अत्यधिक अनुमत्य नैतिकता से सामाजिक अराजकता पैदा हो सकती है।
- **दोनों की मजबूत नींव की आवश्यकता है:** विधि और नैतिकता दोनों की मजबूत नींव सभ्य समाज के लक्ष्य को प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका है। इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि लोग कानूनी और नैतिक तरीके से कार्य कर रहे हैं।

विधि और नैतिकता में अंतर

पहलू	विधि	नैतिकता
प्रकृति	नियम और विनियम जो कानूनन बाध्यकारी हैं	नैतिक मूल्य एवं सिद्धांत
सार्वभौमिकता	क्षेत्राधिकार के आधार पर भिन्न होती है	हालाँकि सार्वभौमिक सिद्धांत मौजूद हैं, उनकी व्याख्याएँ अलग-अलग हैं।
स्रोत	शासी प्राधिकारी द्वारा बनाए जाते हैं।	व्यक्तिगत मान्यताएँ, संस्कृति और समाज सभी का इस पर प्रभाव पड़ता है।
उद्देश्य	शांति बनाए रखना और विवादों को सुलझाना।	नैतिक रूप से स्वीकार्य व्यवहार को निर्देशित करती है।
प्रवर्तन	इनके प्रवर्तन के लिए कानूनी व्यवस्था का उपयोग किया जाता है।	व्यक्तिगत विवेक और सामाजिक मानदंडों के भरोसे
परस्पर प्रभाव	विधियां नैतिक विचारों से प्रेरित हो सकती हैं।	नैतिक सिद्धांतों एवं मूल्यों को व्यक्त करने के लिए विधि का उपयोग किया जा सकता है।

नैतिकता के निर्धारक तत्वों का विश्लेषण

- **एक ही समय में कई निर्धारक तत्व कार्य करते हैं:** एक ही समय में कई निर्धारक तत्व सक्रिय होते हैं, और नैतिक मानक विभिन्न कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होते हैं।
  - **उदाहरण:** सरकार में सिविल सेवकों की ईमानदारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और अन्य कारकों से प्रभावित होती है।

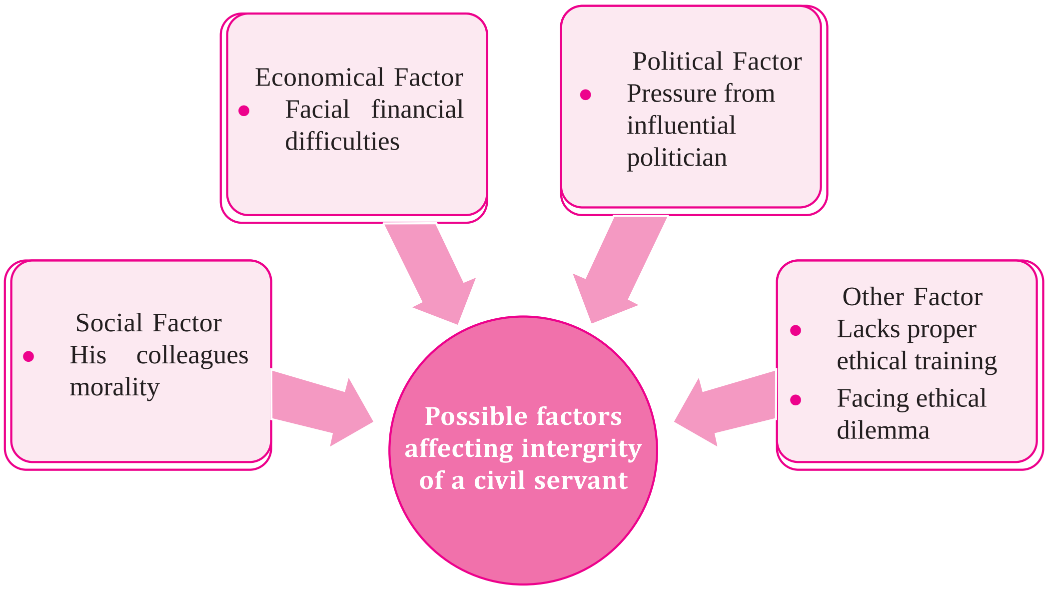

- **प्रभाव में भिन्नता:** विभिन्न निर्धारक तत्व अलग-अलग मात्रा में नैतिक मानकों को प्रभावित करते हैं।
  - **उदाहरण:** कुछ लोगों की वैवाहिक पसंद व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित होती है, जबकि अन्य लोगों की वैवाहिक पसंद सामाजिक मानदंडों से प्रभावित होती हैं।
- **संभावित संघर्ष:** नैतिक मानकों का निर्धारण करते समय, विभिन्न कारकों का टकराव हो सकता है।
  - **उदाहरण:** किसी व्यक्ति के विचार और अनुभव उसे नास्तिक बना सकते हैं, जबकि समाज उसे धार्मिक बना सकता है।

1.11 नैतिकता के परिणाम

नैतिकता के परिणाम व्यक्तियों और समाज पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। यहां नीचे कुछ बिंदु दिए गए हैं जो नैतिकता के वास्तविक जीवन पर पड़ने वाले परिणाम दर्शाते हैं:

- **विश्वास:** व्यवहार में नैतिकता विश्वास और सम्मान पर आधारित लंबे समय तक चलने वाले रिश्ते बनाने में मदद करती है जो सभ्य समाज के निर्माण के लिए मूलभूत आवश्यकता है।
- **सामाजिक सद्‌भाव:** समाज की सामूहिक चेतना में समाहित नैतिक व्यवहार न्यूनतम संघर्ष और अधिकतम सद्‌भाव सुनिश्चित करता है।
- **सकारात्मक प्रतिष्ठा:** नैतिक रूप से कार्य करने से व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों ही रूपों में सकारात्मक प्रतिष्ठा बनाने में सहायता मिलती है।
  - **उदाहरण के लिए,** टाटा का व्यवसाय अपनी नैतिक प्रथाओं, जैसे निष्पक्ष व्यापार सोर्सिंग या पर्यावरण के अनुकूल विनिर्माण के लिए जाना जाता है।
- **कानून का अनुपालन और दंड से बचाव:** नैतिक रूप से कार्य करके, व्यक्ति और संगठन कानूनी जटिलताओं और संभावित दंड से बच सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए, वोक्सवैगन उत्सर्जन घोटाला** – वोक्सवैगन ने पर्यावरण नियमों के अनुरूप दिखने के लिए उत्सर्जन परीक्षणों में हेरफेर किया। इस अनैतिक व्यवहार के परिणामस्वरूप गंभीर कानूनी और वित्तीय परिणाम हुए, जिनमें भारी जुर्माना, उत्पाद वापस लेना और प्रतिष्ठा को नुकसान शामिल है।
- **दीर्घकालिक संवहनीयता एवं सफलता:** नैतिक व्यवहार दीर्घकालिक संवहनीयता और सफलता में योगदान देता है। यह हितधारकों के साथ विश्वास की एक मजबूत नींव बनाता है। यह विश्वास, वफादारी, सहयोग और हितधारक समर्थन को बढ़ावा देता है, जो सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

1.11.1 व्यक्ति के लिए परिणाम

- **खुशी का स्रोत:** नैतिक जीवन को धन, आनंद, प्रसिद्धि आदि के जीवन के बजाय परम खुशी का स्रोत कहा जाता है। ऐसी खुशी से परम संतुष्टि और संतोष मिलता है, जिसमें व्यक्ति को किसी भी चीज की कम या ज्यादा की आवश्यकता नहीं होती है।
  - **अरस्तू का स्वर्णिम मध्य मार्ग:** अरस्तू का दावा है कि **''गोल्डन मीन''** (मध्यम मार्ग, संयम, आदि) का पालन करने से खुशी मिलती है, जिसे वह "यूडेमोनिया" कहते हैं। उदाहरण के लिए, रक्तदान करने से हमें अंदर से अच्छा महसूस होता है।
- **समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण:** नैतिक व्यक्ति का समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है। यह आशावाद विश्वास एवं सामाजिक पूंजी के विकास में योगदान देता है।
- **व्यक्तिगत स्वीकार्यता और पसंदीदा होने में सुधार लाती है:** जब कोई व्यक्ति नैतिक व्यवहार प्रदर्शित करता है, तो उसे समाज में स्वीकार किया जाता है और उसके कार्यों के लिए सराहना की जाती है। उदाहरण के लिए, मेरे माता-पिता और रिश्तेदार हमेशा मेरे चचेरे भाई को महत्व देते हैं क्योंकि, अपनी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प के साथ, उसने प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की है।
- **विश्वसनीयता बढ़ती है:** जो लोग नैतिक और ईमानदार होते हैं उन पर दूसरे लोग विश्वास करते हैं और उनके शब्दों और कार्यों में सामान्य लोगों की तुलना में अधिक वजन होता है।
  - **उदाहरण:** संदिग्ध ट्रैक रिकॉर्ड वाले नेताओं की तुलना में निष्ठावान और ईमानदार नेता जनता पर अधिक प्रभाव डालते हैं। राजनीतिक दल प्रसिद्ध सार्वजनिक हस्तियों से समर्थन मांगते हैं।
- **कार्यसिद्धि में सहायक:** नैतिक व्यवहार न केवल नैतिक रूप से आवश्यक है, बल्कि यह व्यावहारिक भी है। जिन लोगों में नैतिकता और मूल्य हैं उनके लंबे समय में सफल होने की संभावना अधिक होती है।
  - **उदाहरण:** किरण बेदी और टीएसआर सुब्रमण्यम जैसे ईमानदार लोग सरकार में उच्च पदों पर रहे हैं। वकीलों,

डॉक्टरों और अन्य पेशेवरों की उन्नति में व्यावसायिक नैतिकता एक महत्वपूर्ण कारक है।

- **निर्णय लेने के लिए आधार प्रदान करती है:** आज के जटिल जीवन में, नैतिकता हमें बताती है कि जब हम दो समान अच्छे/बुरे विकल्पों के बीच फंसे हों तो क्या करना सही है। नैतिकता निर्णय लेने वालों को अपने कार्यों को उचित ठहराने का आधार भी प्रदान करती है।
  - **उदाहरण:** सिविल सेवकों के पास निर्णय लेने के मार्गदर्शन के लिए एक आचार संहिता होती है।

1.11.2 समाज के लिए परिणाम

- **सद्‌भाव और शांति की ओर ले जाती है:** नैतिक व्यवहार पारस्परिकता की ओर ले जाता है, जिससे शांतिपूर्ण और स्थिर समाज बनता है।
  - **उदाहरण:** यदि पड़ोसी परस्पर ध्वनि प्रदूषण, स्वच्छता और अन्य मानकों का सम्मान करते हैं तो उनके बीच अच्छे संबंध रहते हैं। इसी तरह, अगर देश नियमों का पालन करेंगे तो दुनिया में शांति रहेगी।
- **सुशासन सुनिश्चित करना:** प्रशासन की नैतिकता (पारदर्शिता, जवाबदेही, कानून का शासन, आदि) अधिक प्रशासनिक प्रभावशीलता और दक्षता सुनिश्चित करती है, जिससे जनता को अधिक संतुष्टि मिलती है।
  - **उदाहरण:** किरण बेदी ने तिहाड़ जेल की स्थिति को बदलने के लिए ईमानदारी, करुणा और समर्पण के अपने मूल्यों का उपयोग किया, जो सुशासन की सफलता की कहानी बन गई।
- **न्याय और समावेशन सुनिश्चित करना:** सामाजिक व्यवहार में नैतिकता से सभी लोगों, विशेष रूप से कमजोर और संवेदनशील लोगों को ओहदे और अवसर की समानता, निष्पक्ष व्यवहार एवं अन्य लाभ मिलते हैं। अस्पृश्यता और लैंगिक भेदभाव जैसे अन्याय नैतिकता की कमी के कारण होते हैं।
- **समतामूलक और समावेशी विकास:** आर्थिक क्षेत्र में नैतिकता महत्वपूर्ण है। नैतिकता अवसर की समानता, संसाधनों का समान वितरण, सामाजिक गतिशीलता इत्यादि सुनिश्चित करती है। घोटाले, मंदी और श्रम शोषण सभी अनैतिक व्यवहार के परिणाम हैं।
- **भावी पीढ़ियों के लिए अच्छा उदाहरण स्थापित करना:** समाज की नैतिकता बच्चों एवं युवाओं के लिए अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। वे नैतिक व्यवहार सुनिश्चित करने वाले मूल्यों को देखते हैं, सीखते हैं एवं उनका स्वयं में विकास करते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक स्थिर सामाजिक व्यवस्था बनती है। जब युवा लड़के घर में महिलाओं का सम्मान होते देखते हैं, तो वे अपने सामाजिक जीवन में भी महिलाओं का सम्मान करते हैं।
- **पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना:** आज की दुनिया में, पर्यावरण और जलवायु गंभीर चिंता का विषय हैं। पर्यावरणीय नैतिकता यह सुनिश्चित कर सकती है कि मानव सभ्यता स्वच्छ, हरित और टिकाऊ हो, जो अस्तित्व और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
  - **उदाहरण:** पानी, बिजली या ईंधन बर्बाद न करने जैसा कार्य पर्यावरण को बचाने में काफी मदद कर सकता है।
- **सुधार के लिए प्रेरित करना:** परवाह करना, न्याय और तर्क संबंधी नैतिकता, अन्य बातों के अलावा, समाज में सुधार एवं परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार, नैतिकता एक स्वस्थ समाज बनाने में योगदान देती है। उदाहरण के लिए, उन्नीसवीं सदी के भारत में, उदार मानवतावादी नैतिकता से समाज में सुधार आया और सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध, बहुविवाह आदि जैसी सामाजिक बुराइयों को कम किया।
- **लोगों का विश्वास बनाए रखना:** दुनिया भर में धर्म और परंपरा को बहुत महत्व दिया जाता है। सभी धर्मों में नैतिक व्यवहार निर्धारित किया गया है और इस प्रकार लोगों द्वारा इसे महत्व दिया जाता है। यह सर्वोच्च सत्ता (जैसे ईश्वर) और इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था में लोगों के विश्वास को भी बनाए रखता है।
- **स्वस्थ समाज बनाना:** नैतिक व्यवहार व्यक्तियों को उचित आचरण करने की प्रेरणा देता है, जिसका प्रतिदान दूसरों द्वारा किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप अच्छा कार्यशील समाज बनता है जिसमें किसी को हानि नहीं पहुंचायी जाती।
  - **उदाहरण:** सभी व्यक्ति यदि यातायात नियमों का पालन करें तो सुरक्षित एवं कुशल परिवहन सुनिश्चित हो पाएगा, जिससे समग्र रूप से समाज को लाभ होगा।

उदाहरण

श्री शर्मा, समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने की आकांक्षा रखते थे। सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, वह भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) में शामिल हो गए और उन्हें ग्रामीण भारत के एक पिछड़े जिले के जिला कलेक्टर के रूप में नियुक्त किया गया। अब उनके निम्नलिखित कार्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं:

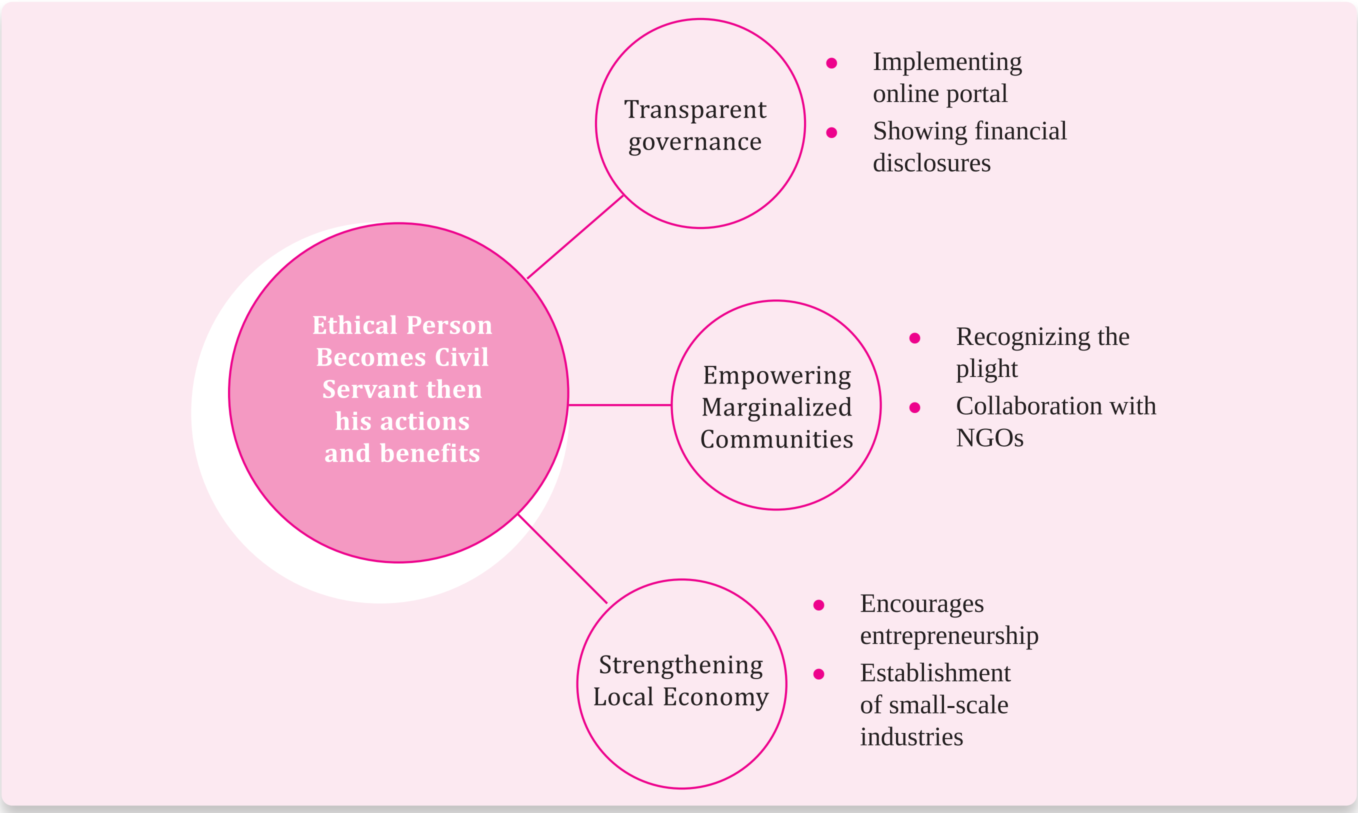

1.12 नैतिकता के आयाम

नैतिकता की 4 शाखाएँ हैं और वे निम्नलिखित प्रकार के प्रश्नों से निपटती हैं:

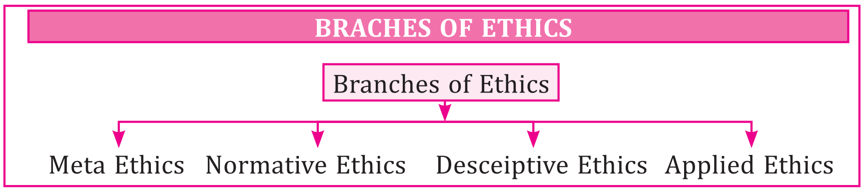

1.12.1 वर्णनात्मक नैतिकता

- **डेविड ह्यूम** जैसे विद्वानों ने वर्णनात्मक नैतिकता का अध्ययन किया है, जो एक विशिष्ट संस्कृति या समाज के भीतर मौजूद नैतिक मान्यताओं, प्रथाओं और व्यवहारों का वर्णन और विश्लेषण करने से संबंधित है। यह निर्धारित करने के बजाय कि लोगों को नैतिक रूप से कैसे व्यवहार करना चाहिए, यह इस बात की वस्तुनिष्ठ समझ प्रदान करना चाहता है कि वे वास्तव में कैसे व्यवहार करते हैं।
- **लोगों की नैतिक मान्यताओं का अध्ययन:** यह "मूल्यों, कौन से कार्य सही हैं और कौनसे गलत हैं और नैतिक एजेंटों की कौन सी विशेषता अच्छी हैं" जैसी चीजों के बारे में अध्ययन करती है। यह लोगों के नैतिक आदर्शों और कानून या राजनीति के माध्यम से समाज किन कार्यों को पुरस्कृत या दंडित करता है, इस पर भी गौर करती है।
  - **उदाहरण:** भारत में समलैंगिकता के प्रति दृष्टिकोण समय के साथ विकसित हुआ है। प्रारंभ में, सांस्कृतिक स्वीकृति थी, लेकिन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने समलैंगिक संबंधों को अपराध घोषित करने वाले कानून पेश किए। हालाँकि, हाल के वर्षों में एक उल्लेखनीय बदलाव आया है, खासकर युवा पीढ़ी और शहरी आबादी के बीच एलजीबीटीक्यू+ अधिकारों के लिए स्वीकार्यता और समर्थन बढ़ रहा है। वर्णनात्मक नैतिकता हमें भारतीय समाज में समलैंगिकता के आसपास बदलती नैतिक मान्यताओं और मूल्यों को समझने में मदद करती है, जो सामाजिक दृष्टिकोण की गतिशील प्रकृति को दर्शाती है।
- यह **नैतिकता के प्रति एक मूल्य-मुक्त दृष्टिकोण है।** यह प्रथाओं और मान्यताओं की नैतिकता के बारे में निर्णय नहीं देती है, बल्कि विभिन्न समूहों या संस्कृतियों में देखी जाने वाली प्रथाओं का वर्णन करती है।

1.12.2 मेटा-एथिक्स

- **मेटा-एथिक्स, जिसका अध्ययन जे.एल.मैकी** जैसे विद्वानों ने किया है, स्वयं **नैतिकता की प्रकृति और आधार की जांच करती है।** यह नैतिक भाषा के अर्थ, नैतिक दावों की निष्पक्षता और नैतिक सत्य की प्रकृति पर गौर करती है। मेटाएथिक्स नैतिकता के दार्शनिक आधारों और इसमें शामिल अवधारणाओं को समझने का प्रयास करती है।

Meta Ethicaol Philosophies

Moral Objectivism
- There are objective universam and moral principles valid for all; binding on all human beings.
- It is morally wrong to torture people or kill an innocent.

Moral Subjectivism/Moral Relativism
- Morality is not dependent on society but on individual.
- An individual may have his own definition of morality that maynot be universally applicable.

Applied Ethics
- Nothing is moral or immoral.
- Rejects the possibility of absolute moral or ethical values.

- **नैतिक मूल्यों के अंतर्निहित सिद्धांतों की जांच करना:** नैतिक अवधारणाओं की उत्पत्ति और अर्थ के अध्ययन को मेटाएथिक्स के रूप में जाना जाता है। यह जाँच करती है कि हमारे नैतिक सिद्धांत कहाँ से उत्पन्न हुए हैं और उनका क्या अर्थ है। यह नैतिक मूल्यों के अंतर्निहित सिद्धांतों की जांच करने का प्रयास करती है।
  - **मेटा** स्वयं को संदर्भित करता है। परिणामस्वरूप, **मेटा-एथिक्स नैतिकता के बारे में नैतिकता है या स्वयं नैतिकता का मूल्यांकन है।**
  - **उदाहरण के लिए,**
    - गलत कार्य क्या है?
    - चोरी करना नैतिक रूप से गलत क्यों है?
    - दान नैतिक क्यों है?
- **नैतिक शब्दों के अर्थ पर ध्यान केंद्रित करना:** यह "किसी विशिष्ट स्थिति में क्या किया जाना चाहिए?" के व्यावहारिक प्रश्न के बजाय नैतिक शब्दों के अर्थ पर ध्यान केंद्रित करती है। इसका संबंध इस बात से नहीं है कि कोई कार्य अच्छा है या बुरा, बल्कि इसका संबंध नैतिकता की अच्छाई और बुराई से है।
  - यह "स्वतंत्रता" और "नियतिवाद" से हमारा क्या तात्पर्य है? जैसे मुद्दों एवं ऐसे ही अन्य मुद्दों की चर्चा करती है।
  - मेटा-नैतिक दर्शन में नैतिक शून्यवाद, नैतिक वस्तुवाद, नैतिक विषयवाद और नैतिक सापेक्षवाद शामिल हैं।

मेटा-एथिक्स को दो श्रेणियों में बांटा गया है:	
1. मेटा मुद्दे	ये बुनियादी मुद्दों, जैसे कि नैतिक होना क्यों महत्वपूर्ण है, नैतिकता का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व क्या है - तर्क या संवेग, इत्यादि, से निपटते हैं। **क. उदाहरण:** ऐन रैंड जैसी दार्शनिक, नैतिक सिद्धांतों के आधार के रूप में तर्क का उपयोग करती हैं। वे मानती है कि तर्कसंगत अहंवाद मानव पसंद का आधार होना चाहिए। **ख. उदाहरण: दूसरी ओर, महात्मा गांधी** जैसे दार्शनिक मानव विवेक को नैतिक मानदंडों की नींव के रूप में उपयोग करते हैं। उनका दावा है कि हमारी अंतरात्मा की आवाज को दुविधा के समय नैतिक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग किया जा सकता है और ऐसी आवाज का मूल्य सर्वाधिक होता है।
2. मेटा-भौतिक मुद्दे	• यह शाखा लौकिक चिंताओं से संबंधित है जैसे कि क्या नैतिकता पूर्ण लौकिक वास्तविकता है या कोई सामाजिक रचना है। • **उदाहरण: भगवद गीता** कहती है कि प्रत्येक इकाई (चाहे ऊर्जा, आत्मा, अणु, ग्रह, आदि) का पूर्व निर्धारित मार्ग होता है और मोक्ष प्राप्ति हेतु उन्हे उसका पालन करना होता है। इसके अनुसार, नैतिक मानक केवल मनुष्यों पर ही नहीं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड पर लागू होते हैं।

1.12.3 मानक नैतिकता

- मानक नैतिकता का अध्ययन **जॉन स्टुअर्ट** मिल जैसे विद्वानों द्वारा बड़े पैमाने पर किया गया है। यह "क्या सही है और क्या गलत है" का निर्धारण करने के लिए दिशानिर्देश प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। **इसका लक्ष्य नैतिक सिद्धांतों और नियमों का निर्माण करना है जो व्यक्तियों को नैतिक निर्णय एवं फैसला करने में सहायता करें। मानक नैतिकता का लक्ष्य नैतिक मानकों को स्थापित करना और मानव व्यवहार की नैतिकता का आकलन करना है।**
- **नैतिक सिद्धांतों की जांच करना:** यह नैतिक सिद्धांतों की जांच करती है जो बताता है कि लोगों को समाज में कैसे कार्य और व्यवहार करने चाहिए। यदि कोई स्थापित मानकों का उल्लंघन करता है तो उसके लिए दंड के साथ-साथ औचित्य का भी प्रावधान है।
- **व्यवहार के मानकों की जांच करना:** यह सही और गलत व्यवहार के मानकों पर गौर करता है और किसी विशिष्ट मुद्दे की नैतिकता की बजाय 'किसी को कौन होना चाहिए' से अधिक संबंधित है।
    - यदि कोई स्थापित मानकों का उल्लंघन करता है तो सजा के साथ-साथ औचित्य का भी प्रावधान है।
- **बुनियादी नैतिक मानक कैसे स्थापित किए जाएं, की जांच करना:** मानक नैतिकता में केंद्रीय प्रश्न यह है कि बुनियादी नैतिक मानक कैसे स्थापित किए जाएं और उचित ठहराए जाएं।
- **मानक नैतिक सिद्धांत:** सबसे आम मानक नैतिक सिद्धांत उपयोगितावाद, कर्तव्यशास्त्र और परिणामवाद हैं।

मानक नैतिकता के सिद्धांत

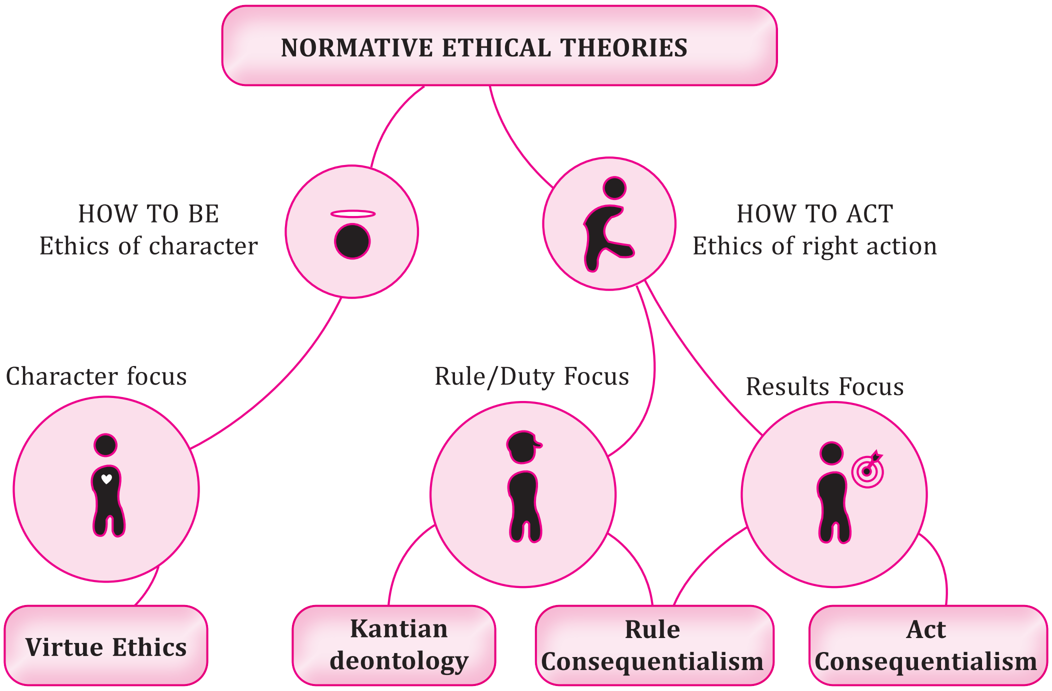

चित्र: मानक नैतिकता के सिद्धांत

उपयोगितावाद

- उपयोगितावाद एक नैतिक सिद्धांत है जो यह निर्धारित करने में परिणामों पर जोर देता है कि क्या सही है और क्या गलत है। यह **परिणामवाद का एक रूप है।**
- **अधिकतम लोगों की अधिकतम भलाई:** उपयोगितावाद के अनुसार, सबसे नैतिक विकल्प वह है जो अधिकतम लोगों की अधिकतम भलाई करता हों।
    - **उदाहरण:** उपयोगितावाद का उदाहरण – आतंकवादियों को मौत की सजा दी जाती है। उपयोगितावादी सिद्धांत के अनुसार, आतंकवादियों को मारना एक नैतिक कार्य है क्योंकि यह असंख्य निर्दोष लोगों की जान बचाता है, समाज में शांति बनाए रखता है और देश के विकास में सहायता करता है। किसी अन्य व्यक्ति की हत्या करना लगभग सभी धर्मों में अनैतिक है और यह एक मौलिक मूल्य है जो हमारे परिवार और यहां तक कि स्कूल भी हमें सिखाते हैं।

सीमाएँ

- **खुशी को मापना असंभव है:** खुशी और खुशहाली की गणना, तुलना या मापना असंभव है। यह भावनाओं और संवेदनाओं, संस्कृति या न्याय को ध्यान में नहीं रखती है।

- उपयोगितावाद एलजीबीटीक्यू समुदायों जैसे **अल्पसंख्यकों की भलाई की उपेक्षा करता है।**
    - **उदाहरण:** यदि कोई विशेष अधिनियम अधिनियमित किया जाता है जो आम जनता के हित में है और साथ ही ट्रांसजेंडर लोगों के अधिकारों का उल्लंघन करता है, तो उपयोगितावाद इसका बचाव करेगा।
- **स्पष्टत: परिभाषित नैतिक संरचना का निर्माण करना:** उपयोगितावाद की एक सीमा यह है कि यह स्पष्टत: परिभाषित नैतिक संरचना का निर्माण करता है। उपयोगितावादी नैतिकता में कोई अस्पष्टता नहीं है ख्र कोई आचरण या तो गलत है या सही है।
- **कार्य के परिणामों एवं भविष्य में उसके परिणामों के बारे में अनिश्चित:** उपयोगितावाद भी निश्चित रूप से भविष्यवाणी नहीं कर सकता है कि हमारे कार्यों के परिणाम अच्छे होंगे या बुरे – हमारे कार्यों के परिणाम भविष्य में होंगे।

डिआन्टोलॉजी (कर्तव्यशास्त्र)

- **नैतिकता की कर्तव्य-आधारित प्रणाली:** डिआन्टोलॉजी नैतिकता की कर्तव्य–आधारित प्रणाली है जो मानती है कि कुछ कार्य उनके परिणामों की परवाह किए बिना अंतर्नीहित रूप से सही या गलत होते हैं और नैतिक एजेंटों को परिणामों की परवाह किए बिना नैतिक आदेशों या नियमों का पालन करना होता है।
- **सही और गलत के बीच अंतर करने के लिए नियमों का उपयोग करना:** डिआन्टोलॉजी एक नैतिक सिद्धांत है जो सही और गलत क्या है यह निर्धारित करने के लिए नियमों का उपयोग करता है।
    - **इमैनुअल कांट** अक्सर डिआन्टोलॉजी से जुड़े रहे हैं। कांट का मानना था कि नैतिक आचरण में ''झूठ मत बोलो'' "चोरी मत करो," ''धोखा मत दो।'' जैसे सार्वभौमिक नैतिक नियमों का पालन करना चाहिए।
- **नियमों और कर्तव्यों का पालन करना:** डिआन्टोलॉजी समझने में एक सरल अवधारणा है। इसके लिए बस यह आवश्यक है कि लोग नियमों का पालन करें और अपने कर्तव्यों का पालन करें। यह दृष्टिकोण हमारे प्राकृतिक अंतर्ज्ञान से मेल खाता है कि क्या नैतिक है और क्या नैतिक नहीं है।
- **कार्यों का मूल्यांकन उनके परिणामों के आधार पर नहीं करता है:** परिणामवाद के विपरीत, जो उनके परिणामों के आधार पर कार्यों का मूल्यांकन करता है, डिआन्टोलॉजी में किसी स्थिति में लागत एवं लाभों को तौलने की आवश्यकता नहीं है। व्यक्तिपरकता एवं अनिश्चितता से बचा जाता है क्योंकि केवल निर्धारित नियमों का ही पालन किया जाना होता है।
    - **उदाहरण:** सिद्धांतवादी दृष्टिकोण के अनुसार, एक सिविल सेवक को परिणामों की परवाह किए बिना दिए गए नियमों और विनियमों का पालन करना चाहिए।

सीमाएँ

- **सख्ती से पालन संभव नहीं:** डिआन्टोलॉजी का सख्ती से पालन करने से ऐसे परिणाम मिल सकते हैं जो कई लोगों को अस्वीकार्य लग सकते हैं।
    - मान लीजिए कि आप एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, जिसे पता चलता है कि कोई परमाणु मिसाइल लॉन्च होने वाली है, जो संभावित रूप से युद्ध भड़का सकती है। आप नेटवर्क को हैक कर सकते हैं और लॉन्च रद्द कर सकते हैं, लेकिन किसी भी सॉफ्टवेयर सिस्टम तक अनधिकृत पहुंच प्राप्त करना आपके पेशेवर आचार संहिता के विरुद्ध है।
    - डिआन्टोलॉजी के अनुसार इस नियम को नहीं तोड़ा जाना चाहिए। यद्यपि, मिसाइल लॉन्च करने से हजारों लोग मर जाएंगे।
- **मानवीय भावनाओं की कोई भूमिका नहीं:** इस सिद्धांत के अनुसार मानवीय झुकाव, भावनाओं और परिणामों का कोई स्थान नहीं है। कुछ स्थितियों में सद्भाव लाने या अधिक अच्छाई हासिल करने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता (सहानुभूति) की आवश्यकता होती है।
- अधिकांश लोगों के लिए इसके **प्रतिकूल परिणाम** हो सकते हैं।
    - **उदाहरण:** आपको झूठ नहीं बोलना चाहिए भले ही इससे लाखों लोगों की जान बच जाए।
- **कार्यों के परिणामों को अनदेखा करता है:** कुछ लोगों का तर्क है कि कार्यों के परिणामों को अनदेखा करके, डिआन्टोलॉजी नैतिक निर्णय लेने के एक महत्वपूर्ण पहलू से चूक गई है।

वर्णनात्मक, नॉर्मेटिव और मेटा- एथिक्स के बीच अंतर दिखाने के लिए वास्तविक जीवन का उदाहरण:
मैं और मेरे दोस्त (प्रिंस और प्रखर) रोजमर्रा की जिंदगी में नैतिकता पर चर्चा कर रहे थे। हम इस बात पर चर्चा करने लगे कि 'क्या किसी की भावनाओं की रक्षा के लिए झूठ बोलना नैतिक रूप से स्वीकार्य है।'

मेरे तर्क वर्णनात्मक एथिक्स पर आधारित थे: मैंने अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं और अनुभव को साझा किया कि झूठ बोलना कैसे गलत है। एक बार मैंने पैसों को लेकर अपने माता-पिता से झूठ बोला था जिसके लिए उन्होंने मुझे बहुत डांटा था।

- यह वर्णनात्मक बातचीत हम सभी द्वारा माने जाने वाले, झूठ नहीं बोलने के नैतिक विश्वासों और दृष्टिकोणों की विविधता को समझने में मदद करती है।

नॉर्मेटिव एथिक्स पर आधारित प्रिंस के तर्क: जैसे-जैसे बातचीत आगे बढ़ी, प्रिंस ने यह मूल्यांकन करने के लिए कि क्या किसी की भावनाओं की रक्षा के लिए झूठ बोलना नैतिक रूप से सही है या गलत है, नॉर्मेटिव एथिक्स में गहराई से उतर गए। उन्होंने झूठ बोलने के नैतिक निहितार्थों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न नैतिक सिद्धांतों, जैसे डिआन्टोलॉजी या परिणामवाद पर विचार किया। उन्होंने इस विशेष स्थिति में झूठ बोलने की नैतिकता के बारे में एक साझा मानक निर्णय पर पहुंचने के उद्देश्य से ईमानदारी, सहानुभूति और झूठ बोलने के संभावित परिणामों जैसे सिद्धांतों पर चर्चा की।

मेटा-एथिक्स पर आधारित प्रखर के तर्क: उन्होंने नैतिक निर्णयों की प्रकृति और नैतिक दावों के आधार का पता लगाया। वह इस तरह के सवालों पर चर्चा करते हैं कि क्या नैतिक मूल्य वस्तुनिष्ठ हैं या व्यक्तिपरक, नैतिक मान्यताओं को आकार देने में सांस्कृतिक सापेक्षवाद की भूमिका, या सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों की विद्यमानता। ये मेटाएथिकल जाँच हमें हमारे नैतिक निर्णयों के दार्शनिक आधारों और नैतिकता की प्रकृति की गहरी समझ हासिल करने में मदद करती है।

थ्रेशोल्ड डिआन्टोलॉजी

इस समस्या का एक संभावित समाधान **थ्रेशोल्ड डिआन्टोलॉजी** है, जो मानता है कि **हमें हमेशा नियमों का पालन करना चाहिए जब तक कि हम आपातकालीन स्थिति में न हों,** उस स्थिति में हमें परिणामवादी दृष्टिकोण पर वापस लौटना चाहिए।

आगे बढ़ते हुए, विशिष्ट मुद्दों के संबंध में नैतिकता का अध्ययन किया जा सकता है। नैतिकता को न केवल ज्ञान की एक सैद्धांतिक शाखा के रूप में देखा जाता है, बल्कि ज्ञान की एक व्यावहारिक शाखा के रूप में भी देखा जाता है जिसका उपयोग वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए किया जा सकता है। प्रशासन, चिकित्सा और मीडिया जैसे विभिन्न क्षेत्रों को अपने कार्यकरण में नैतिक मुद्दों का सामना करना पड़ता है और उन्हें नैतिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

सद्गुण नैतिकता

- अरिस्टोटेलियन सद्गुण **नैतिकता नैतिक व्यवहार की नींव के रूप में सद्गुण चरित्र लक्षणों के विकास पर जोर देती है।** यह नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शन के लिए साहस, न्याय और संयम जैसे गुणों के विकास पर जोर देकर एक समृद्ध समाज बनाने में गुणी व्यक्तियों के महत्व पर जोर देती है।
- **नैतिकता के लिए चरित्र-आधारित दृष्टिकोण:** यह नैतिक व्यवहार के आधार के रूप में अच्छे चरित्र लक्षण या गुणों के विकास पर केंद्रित है।
- **अभ्यास एवं आदत से प्राप्त करना:** जितना अधिक हम ईमानदार, न्यायप्रिय, साहसी इत्यादि होने का अभ्यास करेंगे, उतनी ही अधिक संभावना है कि हम नेक इंसान बनेंगे।
- **नियम या सिद्धांत नहीं:** यह कुछ निश्चित तरीकों से कार्य करने का स्वभाव या प्रवृत्ति है। उदाहरण के लिए, साहस का गुण कोई नियम नहीं है जो कहता है ''हमेशा वही करो जो खतरनाक हो।'' यह दृढ़ता और संकल्प के साथ खतरे का सामना करने का स्वभाव है।
- **अच्छे जीवन से संबंधित:** यह न केवल सही काम करने के बारे में है, बल्कि एक सार्थक और पूर्ण जीवन जीने के बारे में भी है।

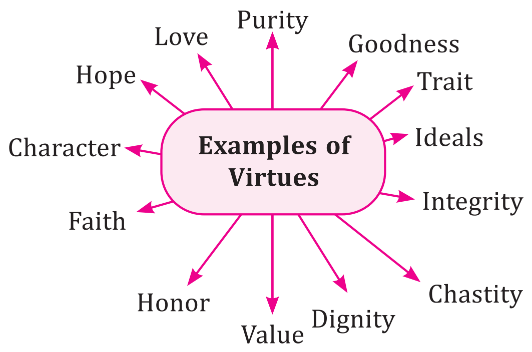

चित्र: सद्गुणों के उदाहरण.

सद्गुण और दुर्गुण

- जीवन के किसी क्षेत्र में अच्छा सोचने, महसूस करने और कार्य करने का नैतिक रूप से अच्छा स्वभाव एक गुण है। इसी तरह, बुराई एक नैतिक रूप से बुरा स्वभाव है जिसमें बुरा सोचना, महसूस करना और बुरा व्यवहार करना शामिल है।
- सद्गुण रोजमर्रा की आदतें नहीं हैं; वे चरित्र का लक्षण हैं, इस अर्थ में कि वे किसी के व्यक्तित्व के केंद्र में हैं। सद्गुण वह गुण है जो अपने धारक को एक अच्छा इंसान बनाता है, और दुर्गुण वह है जो अपने धारक को एक बुरा इंसान बनाता है।
- सद्गुणों में सच्चाई, सत्यनिष्ठा, कड़ी मेहनत आदि शामिल हैं जबकि दुर्गुणों में चोरी, छल-कपट, धोखाधड़ी आदि शामिल हैं।

1.12.4 अनुप्रयुक्त नैतिकता

प्रशासनिक नैतिकता

- **पारदर्शिता:** प्रशासन को न केवल कानूनों में पारदर्शिता का पालन करना चाहिए, बल्कि भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी वाले निर्णयों को रोकने और जनता को सरकार की सटीक तस्वीर प्रदान करने के लिए स्वेच्छा से सभी सूचनाओं को जनता के सामने प्रकट करना चाहिए।
  - **वुडरो विल्सन** ने ठीक ही कहा है कि, "भ्रष्टाचार गुप्त स्थानों में पनपता है और सार्वजनिक स्थानों से बचता है।"
- **सत्यनिष्ठा: सत्यनिष्ठा को अक्सर ''मूल्यों का मूल्य''** कहा जाता है। इसके लिए प्रशासकों को सिविल सेवा मूल्यों को निरन्तर बनाए रखना और उन पर दृढ़ रहने की आवश्यकता है। अगर सत्यनिषठा है तो और कुछ मायने नहीं रखता। यदि सत्यनिष्ठा नहीं है तो और कुछ मायने नहीं रखता।
  - **उदाहरण:** अशोक खेमका और संजीव चतुर्वेदी जैसे सिविल सेवकों ने वर्तमान और भविष्य के सिविल सेवकों के लिए अच्छा उदाहरण स्थापित किया है।
- **वस्तुनिष्ठता:** सिविल सेवकों को किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात के अनुचित प्रभाव से प्रभावित हुए बिना, केवल तथ्यों और तर्क के आधार पर निर्णय लेना चाहिए,
  - **उदाहरण:** किसी भी सिविल सेवक को अपने राजनीतिक बॉस को दी गई सलाह व्यक्तिगत मान्यताओं के बजाय तथ्यों, विश्लेषण और तर्कसंगत तर्क पर आधारित होनी चाहिए।
- **करुणा:** विकासशील देश में जहां गरीबी और भुखमरी व्यापक है, सिविल सेवकों को कमजोर वर्गों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके प्रति दयालु होना चाहिए।
  - **उदाहरण:** यदि किसी योजना के तहत रमेश नामक जरूरतमंद लाभार्थी के पास वैध दस्तावेज नहीं हैं, तो सिविल सेवक को उसका आवेदन सीधे अस्वीकार नहीं कर देना चाहिए, बल्कि उसके आवश्यक दस्तावेज प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए और उसे वह लाभ प्रदान करना चाहिए जिसका वह हकदार है।
- **सार्वजनिक सेवा के प्रति प्रतिबद्धता:** लोकतंत्र में शासन में कई चुनौतियाँ और दबाव शामिल होते हैं, इसलिए सिविल सेवकों को चुनौतियों के बावजूद लोगों की सेवा करने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध होना चाहिए। इस तरह का समर्पण यह सुनिश्चित करता है कि सिविल सेवक अपने लंबे करियर के दौरान प्रेरित रहें।
  - **उदाहरण:** जिले के पुलिस विभाग का सामुदायिक पुलिसिंग के प्रति समर्पण उस जिले को मिले हालिया संयुक्त राष्ट्र पुरस्कार से प्रदर्शित होता है।
- **निष्पक्षता:** सिविल सेवकों को धर्म, वर्ग, जाति या अन्य कारकों की परवाह किए बिना सभी के साथ समान व्यवहार करना चाहिए। यह कानून के शासन और लोकतंत्र में लोगों का विश्वास बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 सभी भारतीय नागरिकों को समानता के अधिकार की गारंटी देते हैं।

विद्वानों की राय

- अपनी पुस्तक **''द रेस्पॉन्सिबल एडमिनिस्ट्रेटर: एन अप्रोच टू एथिक्स फॉर द एडमिनिस्ट्रेटिव रोल'' में टेरी एल. कूपर** लोक प्रशासकों के लिए नैतिक व्यवहार के महत्व पर जोर देते हैं।
- कूपर का तर्क है कि निर्णय लेने में प्रशासकों को जवाबदेही, पारदर्शिता और निष्पक्षता जैसे सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होना चाहिए।
- वह प्रशासकों द्वारा विभिन्न हितधारकों के हितों को संतुलित करने, लोक हित को बनाए रखने और जिम्मेदारी से सत्ता का प्रयोग करने के महत्व पर जोर देते हैं।
- कूपर अपनी इस कृति में प्रशासनिक क्षेत्र में नैतिक व्यवहार के महत्व पर जोर देता है और लोक प्रशासन में नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए सुझाव देता है।

नारीवादी नैतिकता

नारीवादी नैतिकता लिंग आधारित दृष्टिकोण से पारंपरिक नैतिक सिद्धांतों का अध्ययन और आलोचना है। यह लैंगिक समानता के महत्व पर जोर देती है और पुरुष-प्रधान नैतिक ढांचे को चुनौती देती है।

नारीवादी नैतिकता में कई आयाम शामिल हैं, जो निम्नानुसार हैं:

- **देखभाल नैतिकता:** कैरल गिलिगन और नेल नोडिंग्स जैसे विद्वानों ने देखभाल नैतिकता का विकास किया है, जो देखभाल और संबंधपरकता की नैतिकता पर जोर देती है। यह नैतिक निर्णय लेने में, विशेष रूप से रिश्तों और देखभालकर्ता की भूमिकाओं में, देखभाल, सहानुभूति और अंतर्संबंध के नैतिक महत्व पर जोर देती है।
- **लैंगिक न्याय:** नारीवादी नैतिकता उन लैंगिक पूर्वाग्रहों और अन्यायों की आलोचना करती है जो पारंपरिक नैतिक ढांचे में निहित हैं। यह प्रजनन अधिकार, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और लिंग आधारित भेदभाव जैसे मुद्दों को संबोधित करते

हुए लैंगिक दृष्टिकोण को मान्यता प्रदान करने और नैतिक विश्लेषण में इसे शामिल करने की वकालत करती हैं।

- **अंतर्सम्बन्धता:** नारीवादी नैतिकता लिंग और अन्य सामाजिक पहचानों जैसे नस्ल, वर्ग एवं लैंगिकता, की अंतर्सम्बन्धता को मान्यता प्रदान करती है। किम्बर्ले क्रेंशॉ जैसे विद्वान इस बात पर जोर देते हैं कि किस प्रकार कई स्तर पर उत्पीड़न एवं विशेषाधिकार प्रणालियाँ, नैतिक अनुभवों एवं नैतिक दायित्वों को एक दूसरे से जोड़ती हैं और आकार देती हैं।
- **स्वायत्तता और एजेंसी की नैतिकता:** नारीवादी नैतिकता निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की स्वायत्तता एवं एजेंसी की मान्यता की वकालत करती है। यह पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण का विरोध करती है और अपना जीवन जीने और पसंद के मामले में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है।
- **नारीवादी आलोचना:** नारीवादी नैतिकता पारंपरिक नैतिक सिद्धांतों और उनके लैंगिक पूर्वाग्रहों की आलोचनात्मक जांच करती है। वर्जीनिया हेल्ड और एलिसन जैगर जैसे विद्वानों का तर्क है कि नैतिकता के क्षेत्र को व्यापक बनाने, पदानुक्रमित शक्ति संरचनाओं को चुनौती देने और सामाजिक मानदंडों को बदलने के लिए नारीवादी दृष्टिकोण को शामिल किया जाना चाहिए।

नारीवादी नैतिकता एक अधिक समावेशी एवं न्यायसंगत नैतिक ढांचा बनाने का प्रयास करती है जो महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले समूहों के विशिष्ट अनुभवों और चिंताओं का समाधान करती है। यह पारंपरिक नैतिक अवधारणाओं पर सवाल उठाती है, देखभाल और संबंधपरकता के महत्व पर जोर देती है, और लैंगिक समानता एवं न्याय के लिए प्रयास करती है। नारीवादी नैतिकता शक्ति की गतिशीलता, लैंगिक पहचान और सामाजिक असमानताओं की जांच करके नैतिकता की अधिक न्यायसंगत एवं समावेशी समझ में योगदान करना चाहती है।

जैवनैतिकता:

जैव नैतिकता का क्षेत्र मानव जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी के संबंध में नैतिक मुद्दों की जांच करती है। जबकि आधुनिक विज्ञान उस बिंदु तक आगे बढ़ गया है जहां यह मानव जीव विज्ञान को बदल सकता है, जैव नैतिकता इस तरह के वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग कैसे और क्यों किया जाना चाहिए, इसके लिए कुछ नैतिक दिशानिर्देश स्थापित करती है। जैवनैतिकता निम्नलिखित मुद्दों का समाधान करती है:

- **गोपनीयता:** जैव चिकित्सा अनुसंधान एवं डेटा संग्रह में व्यक्तियों की गोपनीयता का सम्मान करना चाहिए क्योंकि इसमें उनके बारे में निजी, संवेदनशील चिकित्सा जानकारी होती है।
  - **लोगों** के चिकित्सा इतिहास का खुलासा नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह गोपनीयता का हनन है और इससे उसका दुरुपयोग हो सकता है। उदाहरण के लिए, किसी दीर्घकालिक जीवन-घातक रोग से पीड़ित व्यक्ति शायद ही इसे किसी अन्य व्यक्ति को बताना चाहेगा।
- **जैव-चोरी(बायो-पाइरेसी):** उन्नत देश और उनके अन्वेषक उष्णकटिबंधीय क्षेत्र (जिसमें उच्च जैव विविधता है) में विकासशील देशों से जैविक संसाधनों (जैसे डीएनए, पत्तियां, ऊतक, आदि) का संग्रहण और उन पर वाणिज्यिक अनुसंधान करते हैं।
  - **जैव-चोरी** (बायो-पाइरेसी) किसी उन्नत देश द्वारा स्रोत देश के साथ लाभ साझा किए बिना लाभ के लिए अपेक्षाकृत पिछड़े देश से जैविक संसाधनों का उपयोग और दोहन है। यह अपेक्षा की जाती है कि विकसित देश विकासशील देशों के साथ लाभ साझा किए बिना जैविक संसाधनों का दोहन नहीं करेंगे।
  - **नागोया प्रोटोकॉल** में हस्ताक्षरकर्ता देशों को जैव प्रौद्योगिकी एवं मानवता की बेहतरी के लिए पहुंच एवं लाभ साझा करना सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता है।
- **गर्भपात:** गर्भपात की नैतिकता के संबंध में काफी बहस चल रही है। जीवन समर्थक उपदेशकों का तर्क है कि मानव जीवन प्रकृति में पवित्र है और माता-पिता को इसे समाप्त करने का कोई अधिकार नहीं है। मानव जीवन तब शुरू होता है जब कोई बच्चा गर्भ में होता है और ऐसे मानव जीवन का अंत हत्या के समान है।
  - दूसरी ओर, अपनी पसंद-नापसंद से जीने वाले समर्थकों का तर्क है कि माता-पिता को माता-पिता बनने का चयन करने एवं योजना बनाने का पूर्ण अधिकार होना चाहिए, जिसमें अवांछित बच्चे का गर्भपात कराने का अधिकार भी शामिल है। बढ़ती आधुनिकता के साथ-साथ भारत के गर्भपात कानून में भी ढील दी गई है।
    - वहीं, भारत में गर्भपात अभी भी अवैध है।
- **भूत-प्रेत भगाने की क्रिया:** मानसिक स्वास्थ्य या तंत्रिका तंत्र संबंधी स्थितियों से पीड़ित व्यक्तियों के उपचार में इसके उपयोग के कारण भूत-प्रेत जैव नैतिकता के संदर्भ में नैतिक चिंताओं को जन्म देता है।
  - जब मनोवैज्ञानिक या मनोरोग स्थितियों के उपचार में स्वायत्तता, सूचित सहमति, संभावित नुकसान और साक्ष्य-आधारित चिकित्सा हस्तक्षेप की आवश्यकता के मुद्दे उठते हैं, जिन्हें भूत-प्रेत लग जाने या आध्यात्मिक

व्यथा के रूप में गलत समझा जाए, तो यह जैव नैतिकता के साथ अंतर्संबंधित हो जाता है।

चिकित्सा नैतिकता

- **जीवन के अंतिम समय में देखभाल:** जब किसी व्यक्ति को दिमागी तौर पर मृत घोषित कर दिया जाता है या उसके ठीक होने की कोई उम्मीद नहीं होती है तो उसे जीवित रखने के लिए जीवन सहायक उपकरणों की आवश्यकता होती है।
  - जीवन सहायक उपकरण कब लगाने हैं और कब हटा लेने हैं, इसके संबंध में विभिन्न समाजों में अलग-अलग नैतिक मानदंड हैं।
  - कुछ देश मरीज को जीवित रखना पसंद करते हैं, जबकि अन्य देश उस मरीज के जीवित रहने की संभावना न होने पर उसे हटा देना पसंद करते हैं ताकि इस सुविधा का उपयोग अन्य आशाजनक मरीजों के लिए किया जा सके।
- **सूचित सहमति:** मरीजों को उनकी होने वाली प्रक्रिया के बारे में पूरी जानकारी दी जानी चाहिए और उस जानकारी के आधार पर सहमति ली जानी चाहिए। उदाहरण के लिए, मरीजों की सहमति के बिना उनकी किडनी लेना स्पष्ट रूप से अनैतिक है।
- **रोगी के साथ लगाव:** चिकित्सा नैतिकता कहती है कि किसी भी डॉक्टर को उन रोगियों के साथ भावनात्मक जुड़ाव विकसित करने से बचना चाहिए जिनका इलाज वैज्ञानिक तरीके से किया जाना है। इससे डॉक्टर वस्तुनिष्ठ, साहसी इत्यादि बन पाता है। दूसरी ओर, एक विचारधारा का मानना है कि रोगियों के प्रति बुनियादी स्तर की करुणा और समर्पण की आवश्यकता होती है।
- **इच्छामृत्यु:** इच्छामृत्यु की नैतिक स्वीकार्यता देशकाल के आधार पर भिन्न-भिन्न होती है। यह गंभीर नैतिक प्रश्न उठाता है कि क्या गंभीर अपरिवर्तनीय पीड़ा के मामलों में जानबूझकर मानव जीवन को समाप्त करना स्वीकार्य है।
  - एक विचारधारा मानव जीवन की पवित्रता में विश्वास करती है, जबकि दूसरी विचारधारा मानव दुख को समाप्त करने और अन्य जरूरतमंद रोगियों को संसाधन आवंटित करने में विश्वास करती है।
  - **इस संबंध में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने** 2011 में अरुणा शानबाग मामले में निष्क्रिय इच्छामृत्यु की अनुमति दी और हाल ही में असाध्य रूप से बीमार रोगियों के लिए 'अग्रिम निर्देश' या 'लिविंग विल' की अनुमति दी।
- **चिकित्सकीय परामर्श:** डॉक्टरों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने मरीजों को सबसे सुलभ, सस्ती और प्रभावी दवाएं, यानी महंगी पेटेंट दवाओं के बजाय जेनेरिक दवाएं लिखें। इसका लक्ष्य सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करते हुए जरूरतमंदों की सहायता करना है।
  - **उदाहरण:** भारत सरकार जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति बढ़ाने के लिए जन औषधि योजना चलाती है।
- **रोगी की पहचान:** चिकित्सा नैतिकता के अनुसार डॉक्टरों को सभी रोगियों का ईमानदारी एवं प्रतिबद्धता के साथ इलाज करने की आवश्यकता होती है, चाहे उनकी पहचान या पृष्ठभूमि कुछ भी हो, भले ही रोगी अपराधी हो। हिप्पोक्रेटिक शपथ, जो डॉक्टर लेते हैं, इस नैतिक मानक की स्थापना करती है।

मीडिया नैतिकता:

- **स्वतंत्रता:** मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, या डिजिटल) को राजनीतिक रूप से तटस्थ और सरकार से स्वतंत्र होना चाहिए। मीडिया की स्वतंत्रता न केवल वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्र को बढ़ावा देती है बल्कि लोकतांत्रिक समाजों में वाद-विवाद करने एवं असहमति जताने को भी प्रोत्साहित करती है।
  - वर्तमान में, संयुक्त राज्य अमेरिका में, कुछ मीडिया आउटलेट स्वयं राष्ट्रपति द्वारा सीधी आलोचना और अपमान के बावजूद, प्रशासन की नीतियों पर सवाल उठाने का साहस और दृढ़ संकल्प दिखा रहे हैं।
- **वस्तुनिष्ठता:** मीडिया कर्मियों की रिपोर्ट व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या पक्षपात के बजाय तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। मीडिया को सभी दृष्टिकोणों से सभी जानकारी की रिपोर्ट करनी चाहिए। इसमें सभी दृष्टिकोणों के साथ-साथ तथ्यों पर भी उचित विचार किया जाना चाहिए।
  - **उदाहरण:** भारत सरकार ने हाल ही में कतर सरकार के स्वामित्व वाले समाचार चौनल अल-जजीरा को उसके पक्षपातपूर्ण कवरेज के कारण जम्मू-कश्मीर में कार्यकरण पर रोक लगा दी है।
- **सनसनीखेज:** लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका लोगों को उसके शुद्धतम रूप में जानकारी प्रदान करना है ताकि वे सूचित निर्णय ले सकें। मीडिया को मार्केटिंग के लिए सनसनीखेज और बदनाम करने वाली खबरों से बचना चाहिए, क्योंकि इससे तनाव बढ़ता है एवं भावनाएं भड़कती है।
- **संपादकीय स्वतंत्रता:** मीडिया व्यावसायिक उद्यम हैं जिन्हें संचालित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, संपादकीय और समाचार रिपोर्टिंग खंडों को विज्ञापनों जैसे वाणिज्यिक खंडों से अलग रखा जाना चाहिए।
  - **उदाहरण:** सरकारें समाचार पत्रों को सरकारी वाणिज्यिक विज्ञापनों के बदले में सरकार की आलोचना प्रकाशित करने से रोकने के लिए बाध्य कर सकती हैं।

- हालाँकि, एक स्वतंत्र संपादकीय विभाग इसकी दोबारा जाँच कर सकता है।

- **स्वामित्व:** मीडिया संगठनों को विशेष रूप से राजनेताओं, व्यापारियों और अन्य जैसे निहित स्वार्थों के हाथों में केंद्रित स्वामित्व से बचना चाहिए। मीडिया स्वामित्व को यथासंभव व्यापक रूप से वितरित किया जाना चाहिए।
- **जिम्मेदारी और संवेदनशीलता:** समाचार, विशेष रूप से लाइव कवरेज को कवर करते समय, मीडिया पेशेवरों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका कवरेज व्यापक सार्वजनिक हित को खतरे में न डाले।
  - **उदाहरण:** आतंकवादी हमलों, युद्धों आदि जैसे मुद्दों को कवर करते समय, मीडिया को राष्ट्रीय हितों के प्रति उचित जिम्मेदारी निभानी चाहिए।
  - दंगों और बलात्कार जैसे मुद्दों पर रिपोर्टिंग करते समय मीडिया को बुनियादी संवेदनशीलता बरतनी चाहिए और किसी भी व्यक्ति या समुदाय की भावनाओं या गरिमा को ठेस पहुँचाने से बचना चाहिए।
- **ईमानदारी:** यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि जानकारी जनता के साथ संपूर्ण और सटीक रूप से साझा की जाए। कोई भी जानकारी रोकी नहीं जाए, भले ही वह मीडिया कम्पनियों के हितों के विपरीत हो।
- **जवाबदेही:** मीडिया को अपनी गलतियों के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए और गलतियों को सुधारने के लिए उचित कार्रवाई करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, समाचार कार्यक्रमों को सही जानकारी प्रस्तुत करते समय अपनी रिपोर्टिंग में त्रुटियों को भी स्वीकार करना चाहिए।
- **जानकारी प्राप्त करने के तरीके:** अन्य बातों के अलावा गोपनीयता, गरिमा और विश्वास बनाए रखते हुए जानकारी प्राप्त करने के उचित तरीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। स्टिंग ऑपरेशन जैसे तरीकों का उपयोग केवल तभी किया जाना चाहिए जब वे स्पष्ट रूप से सार्वजनिक हित में हों, और उनके लिए स्पष्ट दिशानिर्देश हों।

पर्यावरणीय नैतिकता

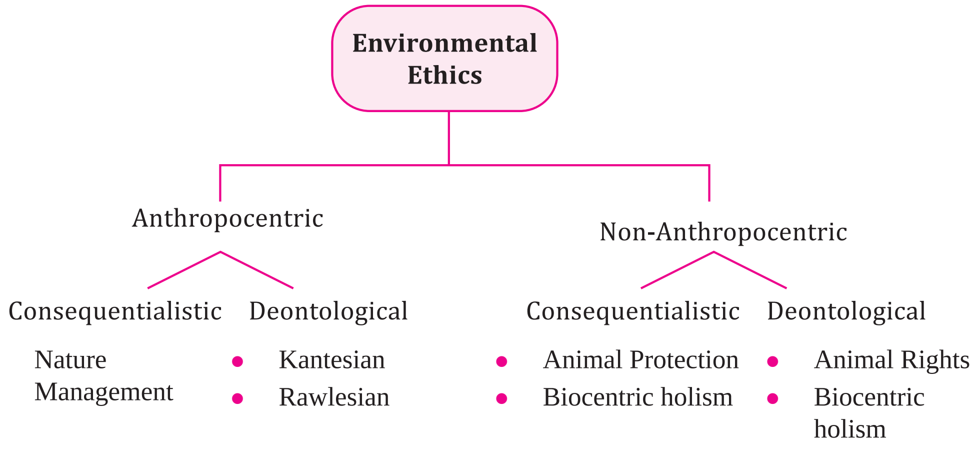

चित्र: पर्यावरणीय नैतिकता के आयाम

- **संवहनीयता सुनिश्चित करना:** पर्यावरण और उसके संसाधनों का उपयोग इस तरह से किया जाना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियों और हाशिए पर रहने वाले समूहों के पास अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त हों। हमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए और आधुनिक उपभोक्तावाद से बचना चाहिए। गांधीजी के अनुसार, हर किसी की जरूरतों के लिए संसाधन पर्याप्त है लेकिन किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं।
  - **उदाहरण:** विज्ञान के क्षेत्र में पीएचडी प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला कमला सोहोनी की कहानी। सोहोनी वैज्ञानिक थी जिन्होंने पर्यावरण के अनुकूल कीटनाशकों के विकास पर काम किया था। उनका मानना था कि पर्यावरण की रक्षा करना मनुष्यों की जिम्मेदारी है और उन्होंने स्थायी कीट नियंत्रण समाधान विकसित करने के लिए काम किया।
- **पर्यावरणीय हानि के लिए मुआवजा:** यद्यपि बुनियादी आर्थिक एवं घरेलू कार्यकलापों में संसाधनों का उपयोग होता है और पर्यावरण प्रदूषित होता है, फिर भी वे विकास के लिए आवश्यक हैं। जो लोग पर्यावरण को खराब करते हैं, चाहे वैध या अनुचित कारणों से, उन्हें क्षतिपूर्ति उपाय करने चाहिए।
  - **एक उदाहरण** प्रतिपूरक वनीकरण है, जिसके लिए भारत सरकार ने हाल ही में कानून पारित किया है।
- **जैव विविधता का संरक्षण:** पर्यावरण प्रदूषण को खत्म करने या कम करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए।

यह प्रकृति के संरक्षण के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहने वाले जीवित प्राणियों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है।

- **चिपको आंदोलन:** भारत में चिपको आंदोलन की कहानी, जिसने वनों की कटाई के खिलाफ लड़ाई लड़ी। चिपको आंदोलन 1970 के दशक में एक अहिंसक विरोध के रूप में शुरू हुआ था। आंदोलन के सदस्य जंगलों को पवित्र मानते थे और उन्हें काटने से रोकने के लिए उन्होंने खुद को पेड़ों से चिपका लिया।

- **प्राकृतिक संसाधनों तक समान पहुंच:** सभी जीवित प्राणियों को प्रकृति तक समान पहुंच प्राप्त है। परिणामस्वरूप, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रकृति का उपयोग केवल कुछ चुनिंदा लोगों के बजाय सभी के लाभ के लिए किया जाए।
- **प्राकृतिक प्राणियों के जीवन और अस्तित्व का अधिकार:** प्रत्येक जीवित प्राणी को जीवन और अस्तित्व का अधिकार है। मनुष्य अन्य जीवित प्राणियों का उपभोग या शोषण करने के लिए नहीं बना है। पृथ्वी केवल मनुष्यों की नहीं बल्कि सभी जीवित प्राणियों की है।
  - **उदाहरण के लिए,** वन्यजीवों का संरक्षण इसलिए नहीं करना चाहिए कि मनुष्य निरंतर इसका शोषण कर सके बल्कि इसलिए किया जाना चाहिए कि इनका अपना जीवन और प्रकृति प्रदत्त अधिकार हैं।
  - **उदाहरण:** इस अवधारणा का विस्तार निर्जीव पर्यावरणीय संस्थाओं तक भी है। उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने हाल ही में गंगा को सभी अधिकारों एवं दायित्वों के साथ जीवित व्यक्ति का दर्जा दिया है।
- **प्रकृति माँ:** पर्यावरणविदों का मानना है कि 'प्रकृति के पास सर्वोत्तम ज्ञान है'। हमें इसका सम्मान करना चाहिए अन्यथा यह संतुलन स्थापित करने के लिए अपना प्रकोप दिखाएगी।
  - **उदाहरण के लिए,** बाढ़, चक्रवात और भूस्खलन को प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के प्राकृतिक तरीकों के रूप में देखा जाता है।

Liberal + **Ecological balance** + **Conservation** = **Environmental Ethics**

विद्वानों की राय

- **"पर्यावरणीय नैतिकता"** में नैतिकता के पारिस्थितिकीय परिणामों पर जोर दिया जाता है। **रोल्स्टन** पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान एवं भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस ग्रह को संरक्षित करने में नैतिक निर्णय लेने के महत्व पर जोर देते हैं। वह कहते हैं, "जीवमंडल अपनी जीवन रक्षा कर सकता है, लेकिन इसमें मानवता की भूमिका इस बात से निर्धारित होगी कि हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से पर्यावरण के प्रति नैतिक रूप से कार्य करते हैं या नहीं।"

व्यावसायिक नैतिकता

- **पारदर्शिता:** व्यवसायों को अपने संचालन में पारदर्शी रहना चाहिए और अपने हितधारकों के साथ सभी जानकारी साझा करनी चाहिए। बाजार के ठीक से काम करने के लिए यह भी आवश्यक है।
- **हितों का टकराव:** व्यावसायिक पेशेवरों को व्यक्तिगत हितों या दायित्वों की परवाह किए बिना तटस्थ और निष्पक्ष रूप से कार्य करना चाहिए। उन्हें कंपनी के सर्वोत्तम हित में ही निर्णय लेने चाहिए।
  - **उदाहरण के लिए,** आईसीआईसीआई की पूर्व सीईओ चंदा कोचर को अपने पति से संबंधित संस्थाओं को ऋण देने में हितों के टकराव के लिए दण्डित किया गया था। व्यक्तियों को किसी भी प्रकार हितों के टकराव का पूरी तरह से खुलासा करना चाहिए।
- **ईमानदारी:** किसी भी व्यवसाय के दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए नैतिक सिद्धांतों का पूर्ण पालन आवश्यक है। संगठनात्मक और सार्वजनिक हितों को निजी हितों पर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
  - **पीएमसी बैंक और पीएनबी बैंक** जैसे हालिया घोटाले व्यक्तियों में ईमानदारी के अभाव का परिणाम हैं।
  - **इसके अलावा,** व्यवसायों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे रिश्वत या दलाली की पेशकश करके सरकार की सत्यनिष्ठा को कमजोर न करें।
- **पर्यावरणीय संवहनीयता:** उद्योगों को इस तरह से काम करना चाहिए जिससे पर्यावरण को कोई ऐसा नुकसान न हों जिसकी मरम्मत और पुनर्प्राप्ति न हो सके। उन्हें ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट उपचार संयंत्र, छतों पर सौर ऊर्जा इत्यादि जैसे उपायों को लागू करके नुकसान को कम करना चाहिए। हर चीज पर्यावरण के संदर्भ में ही संचालित होती है और इसके अभाव में वह कार्य नहीं कर सकती।

- **सामाजिक जिम्मेदारी:** चूंकि व्यवसाय मुनाफा कमाते हैं, उनका नैतिक दायित्व है कि वे अपने मुनाफे का एक उचित हिस्सा अपने आसपास के समाज के कल्याण में योगदान करें।
  - **गाँधीजी ने ''ट्रस्टीशिप की अवधारणा''** को सामने रखा, जिसमें धनी लोग, लोगों के संसाधनों को ट्रस्ट में रखते हैं और व्यापक सार्वजनिक हित के लिए उनका उपयोग करते हैं।
  - उद्योग समाज के संसाधनों (मानव और प्राकृतिक दोनों) का उपयोग करते हैं, और उन्हें पारस्परिक आदान-प्रदान करना चाहिए।
  - **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)** भारत में एक ऐसा ही तंत्र है। यह नैतिक और व्यावसायिक रूप से उचित है क्योंकि यह किसी भी व्यवसाय की छवि को बेहतर बनाता है।
- **श्रमिक अधिकार:** चूंकि उद्योग उत्पादन और मुनाफा के लिए श्रम पर निर्भर हैं, इसलिए वे श्रमिकों को मानवीय परिस्थितियों में काम करने के लिए बुनियादी अधिकार और सुविधाएं प्रदान करने के लिए बाध्य हैं। इसके अलावा, वेतन, मान्यता आदि जैसे कर्मचारियों को अच्छे लाभ, कर्मचारियों को प्रेरित करते हैं और उत्पादकता को बढ़ाते हैं।
  - **भारत** सरकार ने श्रमिकों के उचित वेतन के अधिकार की रक्षा के लिए न्यूनतम वेतन को तर्कसंगत बनाने और बढ़ाने के लिए वेतन संहिता विधेयक पेश किया है। **कार्ल मार्क्स** जैसे दार्शनिकों ने पूंजीवादी समाज में श्रमिकों के अधिकारों पर जोर दिया है।
- **जवाबदेही:** चूंकि व्यवसाय बड़ी मात्रा में सार्वजनिक धन और संसाधनों का उपयोग करते हैं, व्यवसायों, विशेष रूप से बड़े निगमों को अपने हितधारकों के प्रति खुद को जवाबदेह रखना चाहिए।
  - **व्यावसायिक** ईमानदारी और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए कंपनियों को नियमित रूप से वार्षिक रिपोर्ट, लेखा परीक्षा और वार्षिक आम बैठकें (एजीएम) बुलाना सुनिश्चित करना चाहिए।
- **लैंगिक समानता:** पितृसत्तात्मक समाज में, व्यवसायों को मशाल वाहक के रूप में कार्य करना चाहिए और समान काम के लिए समान वेतन, मातृत्व अवकाश, यौन उत्पीड़न को रोकने वाले निकायों की स्थापना करना आदि जैसी नीतियों को लागू करके लैंगिक समानता और न्याय का उदाहरण स्थापित कि जाना चाहिए।

विद्वानों की राय

- विद्वान नैतिकता और संगठनात्मक कार्य-प्रदर्शन के बीच संबंध पर भी जोर देते हैं। अपनी पुस्तक **''एथिक्स एंड द कंडक्ट ऑफ बिजनेस'' में जॉन आर. बोटराइट** व्यावसायिक संदर्भ में नैतिक व्यवहार के निहितार्थ की जांच करते हैं।
- उनका तर्क है कि नैतिक व्यवहार को प्राथमिकता देने वाली कंपनियों में विश्वास बढ़ता है, उनकी प्रतिष्ठा में सुधार होता है और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ अर्जित करती हैं (बोटराइट, 2012)। बोटराइट कहते हैं, नैतिकता ''कंपनियों को कानूनी समस्याओं से बचाने, वफादार ग्राहक बनाने और कर्मचारियों, ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ बेहतर संबंध विकसित करने में सक्षम बनाकर व्यवसाय में लाभ प्राप्त कर सकती है।''

कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी नैतिकता

- यूरोपीय आयोग के अनुसार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) संबंधी नैतिकता, एआई के डिजाइन, विकास, कार्यान्वयन और उपयोग के संबंध में उठाए गए नैतिक मुद्दों पर केंद्रित है। इसमें चेहरे की पहचान में पूर्वाग्रह, पक्षपात आदि जैसे मुद्दे शामिल हैं।
- **भरोसेमंद एआई के लिए यूरोपीय आयोग द्वारा जारी नैतिक दिशानिर्देश:**
  - **मानव एजेंसी और प्रबंध:** एआई सिस्टम को उपयोगकर्ता एजेंसी का समर्थन करके लोकतांत्रिक, समृद्ध एवं न्यायसंगत समाज बनाने में सहायता करनी चाहिए।
  - **पारदर्शिता:** एआई सिस्टम व्याख्यात्मकता के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए और इसमें शामिल तत्वों के बीच पारदर्शिता एवं संचार होना चाहिए।
  - **विविधता, भेदभाव रहित और निष्पक्षता:** विविधता और समावेशन को सक्षम करने के अलावा एआई सिस्टम के पूरे जीवनचक्र में अनुचित पूर्वाग्रह से बचाव, पहुंच, सार्वभौमिक डिजाइन और हितधारक की भागीदारी शामिल है।
  - **जवाबदेही:** जवाबदेही की आवश्यकता अन्य आवश्यकताओं को पूरा करती है और निष्पक्षता के सिद्धांत से निकटता से जुड़ी हुई है।

साइबर नैतिकता

- **कानून का पालन:** इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को कानून का पालन करना चाहिए और हैकिंग, धोखाधड़ी, पीछा करना, परेशान करना आदि जैसी अवैध गतिविधियों के लिए इंटरनेट का उपयोग नहीं करना चाहिए।

- **बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर):** ऑनलाइन सामग्री अक्सर कॉपीराइट द्वारा संरक्षित होती है जिसका अन्य उपयोगकर्ताओं द्वारा सम्मान किया जाना चाहिए। यह वेब नवप्रवर्तन और प्रामाणिकता के लिए महत्वपूर्ण है।
- **गोपनीयता:** बड़े पैमाने पर निगरानी, स्पाइवेयर इत्यादि जैसी आधुनिक तकनीक की उपलब्धता के बावजूद, उपयोगकर्ताओं को एक-दूसरे की गोपनीयता और गरिमा का सम्मान करना चाहिए। इससे पहले कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उपयोगकर्ताओं की निजी जानकारी प्राप्त कर सकें, उन्हें उनकी सूचित सहमति प्राप्त करनी चाहिए।
- **मुक्त और खुला इंटरनेट:** सरकारों, सेवा प्रदाताओं और अन्य हितधारकों को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए कि इंटरनेट सभी के लिए सुलभ और बाधाओं से मुक्त हों। नेट तटस्थता की हालिया माँगों का उद्देश्य इस साइबरस्पेस नैतिकता को बनाए रखना है।
- **ऑनलाइन व्यवहार में सभी का सम्मान करना:** उपयोगकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे सभी के लिए एक सुरक्षित और स्थिर माहौल प्रदान करने के लिए अपने ऑनलाइन व्यवहार में बुनियादी सम्मान और शिष्टाचार प्रदर्शित करें। ट्रोलिंग, दुर्व्यवहार और शर्मिंदगी की हालिया घटनाएं इस नैतिकता के महत्व को उजागर करती हैं।
- **सार्वजनिक शालीनता:** चूंकि इंटरनेट एक सार्वजनिक मंच है, उपयोगकर्ताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी सामग्री बच्चों सहित सभी दर्शकों के लिए उपयुक्त हों। अश्लीलता और क्रूरता जैसी आपत्तिजनक सामग्री से बचना चाहिए।
- **ईमानदारी और निष्ठा:** सोशल मीडिया के युग में, उपयोगकर्ता, प्लेटफॉर्म के अलावा, अपनी स्वयं की सामग्री बना सकते हैं। उपयोगकर्ताओं और प्लेटफॉर्म दोनों को केवल सत्य, पूर्ण और सटीक जानकारी ही बनानी और साझा करनी चाहिए। इस मानदंड के उल्लंघन से फर्जी खबरें, अफवाह फैलाने आदि का खतरा होता है, जो अंततः इंटरनेट पर लोगों के भरोसे को कम करता है।

शरणार्थी संकट में नैतिकता

- **गैर-वापसी का सिद्धांत:** गैर-वापसी का सिद्धांत किसी भी देश को उसके यहां शरण लिए हुए शरणार्थी को ऐसे देश में वापस भेजने से रोकता है जहां उन्हें उत्पीड़न का सामना करना पड़ सकता है।
  - **हालाँकि,** लोकतांत्रिक और खुला समाज होने का दावा करने वाले देश, अक्सर शरणार्थियों को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं और उन्हें वापस भेज देते हैं।
- **राष्ट्रीय जिम्मेदारी बनाम वैश्विक जिम्मेदारी:** देश सीमित संसाधनों, सुरक्षा खतरों और अपने नागरिकों के प्रति प्राथमिक जिम्मेदारी का हवाला देते हुए शरण देने से इनकार करते हैं।
  - **हालाँकि,** वैश्विक समुदाय के सदस्य के रूप में, इस जिम्मेदारी का अक्सर उल्लंघन किया जाता है। शरणार्थियों से निपटने में, राष्ट्र उपयोगितावादी आधार (अपने नागरिकों की रक्षा) पर अपने कार्यों को उचित ठहराते हैं, जबकि धर्मशास्त्रीय पहलू (रक्षा करने का कर्तव्य) की अनदेखी करते हैं।
- **मानवाधिकारों का उल्लंघन:** मानवाधिकार जीवन, स्वतंत्रता और अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग करने का अवसर प्राप्त करने का अहस्तांतरणीय अधिकार है। शरणार्थियों को स्वीकार करने से इंकार करना उनके बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन है।
- **कांट का निरपेक्ष आदेश का सिद्धांत:** जरूरतमंदों से मुँह मोड़ना कांट की निरपेक्ष आदेश के सिद्धांत का उल्लंघन है क्योंकि इसे एक सार्वभौमिक सिद्धांत नहीं बनाया जा सकता है।
  - कुछ देशों पर प्रवासियों को विदेश नीति के एक उपकरण के रूप में उपयोग करने का आरोप लगाया गया है, जैसा कि बेलारूस और यूरोपीय संघ के बीच 2021 के सीमा संकट के दौरान देखा गया था।
  - इसका मतलब लोगों को अपने आप में साध्य मानने के बजाय उस साध्य को प्राप्त करने का साधन मानना है। ऐसे कार्य गांधीजी के जंतर (जिसमें सबसे कमजोर व्यक्ति के हित में कार्य करना होता है) के अनुरूप नहीं हैं।
- **जन्म संबंधी दुर्घटनाएँ:** अधिकांश शरणार्थी बिना किसी गलती के कष्ट सह रहे हैं। वे 'जन्म संबंधी दुर्घटनाओं' के परिणामस्वरूप हिंसा का शिकार हो जाते हैं, जैसे कि किसी विशेष देश (सीरिया, अफगानिस्तान) में पैदा होना, एक सताए गए समुदाय (अहमदिया, रोहिंग्या) में पैदा होना, इत्यादि। उन्हें हिंसा और उत्पीड़न से भागने के अवसर से वंचित करना हर नैतिक सिद्धांत का उल्लंघन है।
- **ऐतिहासिक उत्तरदायित्व:** कई शरणार्थी संकटों के लिए पश्चिमी दुनिया जिम्मेदार है। औपनिवेशिक शोषण और नीतियां (उदाहरण के लिए साइक्स-पिकोट समझौता), सशस्त्र मानवीय हस्तक्षेप जिसके कारण गृहयुद्ध हुआ (मध्य पूर्व में), जलवायु शरणार्थी, इत्यादि। उन्हें अपने ऐतिहासिक कृत्यों के लिए जवाबदेही स्वीकार करनी चाहिए।
- **समाज के नैतिक मानक:** शरणार्थियों के साथ अमानवीय व्यवहार और उनकी पीड़ा को पहचानने से इंकार करना भविष्य के लिए एक बुरा उदाहरण है, जिससे समाज में

देखभाल, सहानुभूति और करुणा जैसे मूल्यों में गिरावट आती है।

1.13 एक्शन एजेंट सिद्धांत

- एक ऐसा नैतिक ढांचा जो **नैतिक निर्णय लेने और मूल्यांकन में एजेंट या व्यक्ति की भूमिका पर जोर देता है,** एक्शन-एजेंट सिद्धांत है, जिसे व्यक्ति-आधारित नैतिकता के रूप में भी जाना जाता है।
  - यह कार्य के नैतिक मूल्य को निर्धारित करने के लिए **कार्य करने वाले व्यक्ति के चरित्र, इरादों और गुणों पर विचार करता है।** मूल्यांकन प्रक्रिया में व्यक्तिगत गुणों और चरित्र लक्षणों को शामिल करके, यह दृष्टिकोण नैतिकता की अधिक समग्र समझ प्रदान करता है।
  - **अरस्तू, अलास्डेयर मैकइंटायर और रोजलिंड हर्स्टहाउस** उन विद्वानों में से हैं जिन्होंने एक्शन-एजेंट सिद्धांत के विकास और अन्वेषण में योगदान दिया है।
- **अरस्तू की सद्गुण नैतिकता:** एक्शन-एजेंट सिद्धांत की नींव अरस्तू की सद्गुण नैतिकता द्वारा रखी गई थी। अरस्तू ने अपने पुस्तक **''निकोमैकियन एथिक्स''** में तर्क दिया कि नैतिक गुण नैतिक व्यवहार का आधार है।
  - उन्होंने प्रस्तावित किया कि लोग साहस, न्याय और संयम जैसे अच्छे चरित्र लक्षण विकसित करने का प्रयास करें। अरस्तू के अनुसार, नैतिक रूप से अच्छा कार्य वह है जो एक गुणी व्यक्ति द्वारा किया जाता है।
- **रोजालिंड हर्स्टहाउस की सद्गुण नैतिकता:** रोजालिंड हर्स्टहाउस ने सद्गुण नैतिकता पर अपने काम से एक्शन-एजेंट थ्योरी पर प्रभाव डाला, विशेष रूप से अपनी पुस्तक "ऑन वर्च्यू एथिक्स" में।
  - उन्होंने नैतिक निर्णय लेने में चरित्र के लक्षणों और गुणों के महत्व पर जोर दिया। हर्स्टहाउस ने प्रस्तावित किया कि गुणी लोगों में कुछ चरित्र के लक्षण होते हैं जो उन्हें नैतिक रूप से सही निर्णय लेने में मार्गदर्शन करते हैं।
- **नैतिक निर्णय पर जोर:** एक्शन-एजेंट सिद्धांत में जोर केवल एक कार्रवाई के परिणामों (परिणामवादी नैतिकता के रूप में) या सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों के पालन पर नहीं है (जैसा कि डिओन्टोलॉजिकल नैतिकता में है)।
  - इसके बजाय, नैतिक निर्णय कार्रवाई करने वाले व्यक्ति के चरित्र और इरादों पर आधारित होता है।
  - यह दृष्टिकोण मानता है कि नैतिक कार्य व्यक्तियों के नैतिक चरित्र और उनके द्वारा धारण किए गए गुणों से उत्पन्न होते हैं।
- **व्यवहार की नैतिकता का आकलन करना:** किसी व्यवहार की नैतिकता का आकलन करते समय, एक्शन-एजेंट सिद्धांत व्यक्तिगत प्रेरणा, इरादे, नैतिक तर्क और अच्छे गुणों को विकसित करना जैसे कारकों पर विचार किया जाता है।
  - यह मानता है कि एजेंट द्वारा प्रदर्शित गुणों या दोषों के आधार पर किसी कार्रवाई की नैतिक रूप से प्रशंसा या निंदा की जा सकती है।
  - क्योंकि यह नैतिक निर्णय लेने की जटिलताओं और संदर्भ-निर्भरता को पहचानता है, यह ढांचा नैतिकता की अधिक सूक्ष्म समझ प्रदान करता है।

कुल मिलाकर, एक्शन-एजेंट सिद्धांत **नैतिक कार्यों में व्यक्ति की भूमिका पर ध्यान केंद्रित करके** नैतिक व्यवहार को निर्देशित करने में चरित्र और गुणों के महत्व पर जोर देकर नैतिक विश्लेषण को समृद्ध करता है। अरस्तू, अलास्डेयर मैकइंटायर और रोजलिंड हर्स्टहाउस जैसे विद्वानों ने इस नैतिक ढांचे के विकास और अन्वेषण में योगदान दिया, जिससे नैतिक निर्णय लेने में एजेंट (उस व्यक्ति) की भूमिका में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की गई है।

1.14 टेलीओलॉजिकल एथिक्स (परिणामोन्मुख नैतिकता)

''टेलोस'' अंत, पूर्ति, पूर्णता, लक्ष्य आदि के लिए प्राचीन ग्रीक शब्द है। टेलीओलॉजी एक दर्शन है जो बताता है कि किसी के आचरण का परिणाम, उस आचरण के सही या गलत होने का अंतिम निर्णायक हैं।

डीअन्टोलॉजिकल एथिक्स (कर्तव्य-आधारित)	टेलीओलॉजिकल एथिक्स (परिणाम-उन्मुख)
• नैतिक कर्तव्यों पर ध्यान दें, परिणामों पर नहीं	• कार्यों के परिणामों पर ध्यान दें
• परिणामों से अधिक इरादों को प्राथमिकता देता हैं। इसमें साधनों की पवित्रता पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।	• इरादों से अधिक परिणामों को प्राथमिकता दी जाती है। साधन सही न होने पर भी ध्यान सही साध्य पर होता है।
• नैतिक मूल्य से अधिक महत्वपूर्ण हैं नैतिक कर्तव्य	• नैतिक मूल्य, कर्तव्यों से अधिक महत्वपूर्ण है
• व्यक्ति के इरादे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं	• व्यक्ति के इरादों की कोई प्रासंगिकता नहीं है
• कार्यों की शुद्धता उनकी अच्छाई से पहले है	• कार्यों की अच्छाई ही उनके सही होने का निर्धारण करती है

• व्यक्ति की नैतिक स्थिति पर जोर देता है	• कार्यों की नैतिक स्थिति पर जोर देता है
• नैतिक कर्तव्यों का नकारात्मक सूत्रीकरण है	• नैतिक कर्तव्यों का सकारात्मक सूत्रीकरण है
• व्यक्तिगत हितों का कोई महत्व नहीं है	• व्यक्तिगत और दूसरों के हितों का समान विचार किया जाता है
• कार्य स्वाभाविक रूप से नैतिक या अनैतिक होते हैं	• परिणामों के आधार पर कार्यों का मूल्यांकन किया जाता है
• **अनुप्रयोग:** आपराधिक न्याय प्रणाली में डीओन्टोलॉजिकल दृष्टिकोण लागू किया जाता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सजा अपराध के लिए आनुपातिक और उचित थी।	• **अनुप्रयोग:** किसी भी कानून, उसके उद्देश्य, दिशा या डिजाइन की व्याख्या के लिए अदालतों द्वारा टेलीओलॉजिकल दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है।

- टेलीओलॉजिकल नैतिकता, **जिसे परिणामोन्मुख नैतिकता के रूप में भी जाना जाता है,** एक नैतिक ढांचा है जो उनके परिणामों या नतीजों के आधार पर कार्यों के नैतिक मूल्य का मूल्यांकन करता है। यह इस धारणा पर जोर देता है कि किसी कार्य की अच्छाई या मूल्य उसकी नैतिकता निर्धारित करता है।
  - **जेरेमी** बेंथम, जॉन स्टुअर्ट मिल और परिणामवादी सिद्धांतों ने, जैसे उपयोगितावाद, ने टेलीओलॉजिकल नैतिकता के विकास और अन्वेषण में योगदान दिया है।
- **जेरेमी बेंथम और उपयोगितावाद:** प्रभावशाली दार्शनिक, जेरेमी बेंथम को उपयोगितावाद के संस्थापकों में से एक माना जाता है, जो टेलीओलॉजिकल नैतिकता का एक प्रमुख रूप है।
  - बेंथम ने प्रस्तावित किया कि कार्यों का मूल्यांकन समग्र खुशी या अधिकतम उपयोगिता की उनकी क्षमता के अनुसार किया जाना चाहिए।
- **जॉन स्टुअर्ट मिल और नियम उपयोगितावाद:** बेंथम के उपयोगितावाद के सिद्धांत पर कार्य करते हुए, जॉन स्टुअर्ट मिल ने नियम उपयोगितावाद की अपनी अवधारणा के साथ टेलीओलॉजिकल नैतिकता को आगे बढ़ाया।
  - मिल ने तर्क दिया कि कार्यों को व्यापक सिद्धांतों द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए, जिनका पालन करने पर समग्र खुशी अधिकतम हो जाए। न कि प्रत्येक व्यक्तिगत कार्य की खुशी या उपयोगिता पर ध्यान केंद्रित किया जाए।
  - **मिल** ने उन नियमों का पालन करने के महत्व पर जोर दिया जो लंबे समय तक अधिकतम खुशी को बढ़ावा दें।
- **कार्य उपयोगितावाद और नियम उपयोगितावाद:** टेलीओलॉजिकल नैतिकता को दो भागों में विभाजित किया गया है,
  - **कार्य उपयोगितावाद:** यह व्यक्तिगत कार्यों की नैतिकता का उनके तत्काल परिणामों के आधार पर मूल्यांकन करता है। यह प्रत्येक स्थिति की विशिष्ट परिस्थितियों को ध्यान में रखता है और उस विशेष उदाहरण में समग्र उपयोगिता को अधिकतम करने का प्रयास करता है।
  - **नियम उपयोगितावाद:** यह सामान्य नियमों का पालन करने पर जोर देता है, जिन्हें लगातार किए जाने पर, सर्वोत्तम समग्र उपयोगिता या खुशी मिलती है।
- **टेलीओलॉजिकल नैतिकता उनके परिणामों के आधार पर कार्यों का मूल्यांकन करती है:** इरादों, गुणों या कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, टेलीओलॉजिकल नैतिकता उनके परिणामों के आधार पर कार्यों का मूल्यांकन करती है। यह नैतिक व्यवहार के अंतिम लक्ष्य के रूप में अधिकतम समग्र कल्याण या खुशी पर जोर देती है। टेलीओलॉजिकल नैतिकता में, नैतिक मूल्यांकन अक्सर उपयोगिता के सिद्धांत या अच्छाई के किसी अन्य मानदंड पर आधारित होता है।
- **सिद्धांत की आलोचना:** टेलीओलॉजिकल नैतिकता के आलोचक परिणामों की भविष्यवाणी करने में कठिनाई, हितों के संभावित टकराव और व्यापक भलाई के लिए व्यक्तिगत अधिकारों या अल्पसंख्यक हितों का त्याग किए जाने की संभावना के बारे में चिंता व्यक्त करते हैं।

डीअन्टोलॉजिकल और टेलीओलॉजिकल सिद्धांतों पर आधारित उदाहरण

- मान लीजिए कि एक आदमी सड़क किनारे सो रहे कुत्ते को लात मारता है। कुत्ता रोता है और भाग जाता है. कुछ ही देर बाद सड़क पर एक कार इतनी तेजी से आती है कि अगर कुत्ता अभी भी वहीं पड़ा होता तो निश्चित रूप से उसकी मौत हो जाती।
- **डीअन्टोलॉजिकल परिप्रेक्ष्य कहता है, आदमी का कार्य बुरा था क्योंकि कुत्तों को लात मारना क्रूरता है, लेकिन टेलिअलॉजिकल परिप्रेक्ष्य** के अनुसार, उस व्यक्ति का कार्य अच्छा था, क्योंकि इससे कुत्ते की जान बच गई।

फिर भी, टेलीओलॉजिकल नैतिकता, विशेष रूप से उपयोगितावाद, ने नैतिकता से संबंधित बहस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है, जो सामाजिक न्याय, नीति-निर्माण और व्यक्तिगत एवं सामूहिक हितों के संतुलन जैसे विषयों पर बहस को आकार देता है। बेंथम और मिल जैसे विद्वानों ने टेलीओलॉजिकल नैतिकता के अध्ययन और नैतिक निर्णय लेने में इसके प्रभावों के संबंध में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

1.15 साधन बनाम साध्य बहस

नैतिकता में साधन बनाम साध्य की बहस में प्रश्न यह है कि क्या साध्य साधनों को उचित ठहराता है। दूसरे शब्दों में, **क्या अच्छा परिणाम/ साध्य प्राप्त करने के लिए अनैतिक साधनों का उपयोग करना नैतिक है?** यह एक जटिल प्रश्न है जिसका कोई आसान उत्तर नहीं है और इस पर कई अलग-अलग दृष्टिकोण हैं।

- **साधन-साध्य भेद नैतिकता की केंद्रीय अवधारणा है:** यह इस विचार को संदर्भित करता है कि जिन साधनों के माध्यम से हम अपने साध्यों को प्राप्त करते हैं वह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि स्वयं साध्य।
- **दो मुख्य नैतिक सिद्धांत हैं जो साधन-साध्य भेद विषय पर हैं:**
  - **परिणामवाद:** यह सिद्धांत **किसी कार्य की नैतिकता को उसके परिणामों के आधार पर आंकता है।** यदि परिणाम अच्छे हैं, तो कार्य नैतिक माना जाता है, भले ही उन परिणामों को प्राप्त करने के लिए उपयोग किए गए साधन बुरे हों।
  - **डीअन्टोलॉजी:** यह सिद्धांत **एक निश्चित तरीके से कार्य करने के कर्तव्य या दायित्व के आधार पर किसी कार्य की नैतिकता का आकलन करता है।** किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले साधन उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना कि यह तथ्य कि वह कार्य कर्तव्य की भावना से किया गया था।
- **राजनीतिक और सैन्य कार्रवाइयों के संदर्भ में साधन-साध्य भेद पर अक्सर बहस होती है:** उदाहरण के लिए, कुछ लोगों का मानना है कि किसी आतंकवादी संदिग्ध से जानकारी निकालने के लिए यातना का उपयोग करना उचित है, भले ही यातना को नैतिक रूप से बुरा कार्य माना जाता हो।
- **साधन-साध्य का अंतर व्यक्तिगत नैतिकता के लिए भी प्रासंगिक है:** उदाहरण के लिए, कुछ लोगों का मानना है कि अपनी भावनाओं की रक्षा के लिए किसी मित्र से झूठ बोलना उचित है, भले ही झूठ बोलना नैतिक रूप से बुरा कार्य माना जाता हो।
- **इसका कोई आसान उत्तर नहीं है कि क्या साध्य-साधन को उचित ठहराता है:** यह एक जटिल मुद्दा है जो प्रत्येक मामले की विशिष्ट परिस्थितियों पर निर्भर करता है।
- **कुछ लोगों का मानना है कि साध्य कभी भी साधनों को उचित नहीं ठहराता:** उनका मानना है कि अच्छे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बुरे साधनों का उपयोग करना हमेशा गलत होता है।
- **अन्य लोगों का मानना है कि साध्य कभी-कभी साधनों को उचित ठहराते हैं:** उनका मानना है कि यदि अच्छे साध्य पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण हैं तो अच्छे साध्य को प्राप्त करने के लिए कभी-कभी बुरे साधनों का उपयोग करना आवश्यक होता है।
- **साधन-साध्य भेद एक जटिल और चुनौतीपूर्ण मुद्दा है:** इसका कोई आसान उत्तर नहीं है, और प्रत्येक मामले पर उसके गुणों के आधार पर विचार किया जाना चाहिए।

साधन बनाम साध्य बहस के ऐतिहासिक उदाहरण

- **महाभारत:** महाभारत एक प्राचीन भारतीय महाकाव्य है जिसमें चचेरे भाइयों के दो परिवारों के बीच जबरदस्त संघर्ष को दर्शाया गया है। इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या अच्छा साध्य प्राप्त करने के लिए अनैतिक साधनों का उपयोग करना उचित है।
- **वियतनाम युद्ध (1954-1975):** संयुक्त राज्य अमेरिका ने एजेंट ऑरेंज, एक रासायनिक हथियार का उपयोग किया। हालाँकि एजेंट ऑरेंज को जन्म संबंधी विकृति और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण माना जाता था, संयुक्त राज्य अमेरिका ने इसे इस विश्वास के साथ उपयोग करना जारी रखा कि इससे उन्हें युद्ध जीतने में मदद मिलेगी।
- **सफरगेट आंदोलन:** सफरगेट आंदोलन ने, खासकर बीसवीं सदी की शुरुआत में, महिलाओं के वोट देने के अधिकार के लिए लड़ने के लिए कई तरह की रणनीतियों का इस्तेमाल किया। मताधिकारियों द्वारा सविनय अवज्ञा में विरोध प्रदर्शन, भूख हड़ताल और यहां तक कि संपत्ति का विनाश भी शामिल था। जबकि उनका अंतिम लक्ष्य महिलाओं के मताधिकार और समान राजनीतिक अधिकारों को सुरक्षित करना था, उन्होंने जिन तरीकों का इस्तेमाल किया, जैसे कि सार्वजनिक व्यवस्था को बाधित करना और अधिकारियों के साथ झड़प, उनकी रणनीति की नैतिकता के बारे में बहस छिड़ गई थी।

1.16 नैतिकता के समक्ष चुनौतियाँ

- **डेटा उल्लंघन:** संवेदनशील व्यक्तिगत जानकारी से जुड़े हाई-प्रोफाइल डेटा उल्लंघन के मामले व्यक्तियों के डेटा की सुरक्षा और संरक्षा के बारे में नैतिक चिंताएं बढ़ाते हैं।
- **हेरफेर और लक्षित विज्ञापन:** लक्षित विज्ञापन के उद्देश्य से व्यक्तिगत डेटा संगृहीत करना, उस व्यक्ति की सूचित सहमति, उसकी स्वायत्तता और उपभोक्ता व्यवहार के संभावित हेरफेर के बारे में चिंताएं पैदा करता है।

- **स्थैतिक नैतिकता:** इस प्रकार के नैतिक दृष्टिकोण की उम्मीद किसी अस्तित्ववादी व्यक्ति से की जा सकती है, जो मानव प्रकृति या किसी भी प्रकृति या सार तत्व की अवधारणा को स्वीकार नहीं करता है।
- **नैतिक सापेक्षवाद और नैतिक विषयनिष्ठवाद:** नैतिक सापेक्षवाद का मानना है कि सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत मौजूद नहीं हैं। जबकि नैतिक विषयनिष्ठवाद का मानना है कि वस्तुनिष्ठ नैतिक सिद्धांत सत्य हैं कि कुछ कार्य हर समय सभी के लिए सही होते हैं और कुछ कार्य हर समय सभी के लिए गलत होते हैं।
- **नैतिक आत्मवाद:** यह तर्क दिया जाता है कि मानव व्यवहार के क्षेत्र में, जो एक व्यक्ति के लिए सत्य है वह जरूरी नहीं कि सभी के लिए या यहां तक कि किसी और के लिए भी सत्य हो। इस दृष्टिकोण में, क्या सही है और क्या गलत यह व्यक्तिगत पसंद का मामला है। लोगों की नैतिक मान्यताओं का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है।
- **सांस्कृतिक और नैतिक आत्मवाद:** एक संस्कृति में, बहुविवाह को सही और नैतिक माना जाता है, जबकि दूसरे में, इसकी कड़ी निंदा की जाती है। एक ही देश या संस्कृति के भीतर, मतभिन्नता हो सकती हैं: कुछ भारतीय विधवा पुनर्विवाह का विरोध करते हैं, जबकि अन्य इसका समर्थन करते हैं।
- **नैतिक अहंवाद:** इसमें यह धारणा है कि लोगों को अपने स्वयं के हितों के अनुरूप कार्य करना चाहिए। यह एक प्रकार का सुखवाद है, इस सिद्धांत में दु:ख को कम करते हुए अधिकतम सुख प्राप्त करने का प्रस्ताव किया गया है।
- **नियतिवाद का सिद्धांत:** मानता है कि मानवीय निर्णय और कार्य बाहरी ताकतों द्वारा निर्धारित होते हैं। उनमें स्वतंत्र इच्छा का अभाव है और वे सचेत या जानबूझकर नैतिक निर्णय लेने में असमर्थ हैं। वे अच्छे और बुरे कार्यों के बीच चयन नहीं कर सकते हैं और इस प्रकार अपने कार्यों के लिए वास्तव में वे जिम्मेदार नहीं हैं। परिणामस्वरूप, पुरुषों को उनके कार्यों के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।
- **निगरानी और सरकारी घुसपैठ:** जैसे-जैसे सरकारों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों की निगरानी क्षमताओं का विस्तार हो रहा है, गोपनीयता के उल्लंघन और सत्ता के संभावित दुरुपयोग के बारे में चिंताएं बढ़ती हैं। गोपनीयता अधिकारों के साथ सुरक्षा आवश्यकताओं को संतुलित करना, विशेष रूप से बड़े पैमाने पर निगरानी कार्यक्रमों और चेहरे की पहचान प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में, एक विवादास्पद नैतिक मुद्दा है।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता और एल्गोरिथम में पूर्वाग्रह:** नियुक्ति, ऋण अनुमोदन और आपराधिक न्याय जैसे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और एल्गोरिदम का उपयोग नैतिक चिंताएँ बढ़ाता है। यदि इन प्रणालियों को निष्पक्षता और समावेशिता को ध्यान में रखकर डिजाइन नहीं किया गया, तो इसमें पूर्वाग्रह एवं भेदभाव को बनाए रखने, सामाजिक असमानताओं को मजबूत करने की क्षमता है।

1.17 निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

गांधीजी के विचार

मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। इसलिए, हम परस्पर व्यवहार करते हैं और जब हम परस्पर व्यवहार करते हैं तो हम कुछ संबंध विकसित करते हैं। गांधी जी ने कहा, **''अहिंसक और सत्य समाज बनाने के लिए रिश्तों का अच्छा होना बहुत जरूरी है।''**

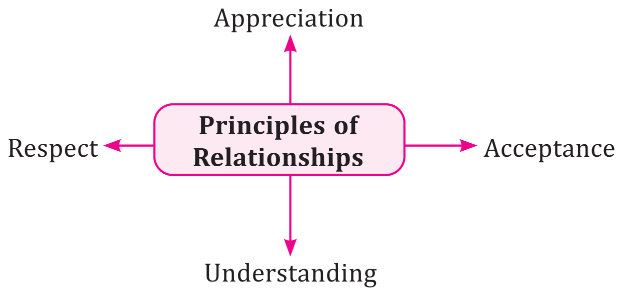

चित्र: चार सिद्धांतों पर आधारित रिश्ते

1.17.1 निजी संबंधों में नैतिकता

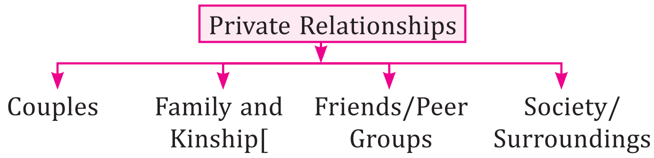

चित्र: निजी संबंधों में नैतिकता

- **इसका संबंध उन** नैतिक मूल्यों से है जिनका पालन कोई भी व्यक्ति अपने निजी जीवन में पारिवारिक रिश्तों, दोस्ती आदि जैसे विभिन्न रिश्तों के निर्वाह के समय करता है।
- **निजी संबंधों में कुछ प्रमुख मूल्य निम्नलिखित हैं:**
    - **विश्वास:** विश्वास वह नींव है जिस पर आपका रिश्ता सबसे कठिन समय का सामना कर सकता है। वास्तव में, आप विश्वास के बिना दीर्घकालिक संबंध कायम नहीं रख सकते। रिश्ते टूटने का एक कारण विश्वास की कमी भी है।
    - **परस्पर सम्मान:** किसी भी व्यक्ति को दयालु, प्रतिबद्ध, सच्चा और ईमानदार बने रहने में यह फायदेमंद है। इससे रिश्ते मजबूत बनाते हैं और एक-दूसरे के साथ उचित व्यवहार होता है।

- **सत्यनिष्ठा का नियम:** सत्यनिष्ठा का नियम कहता है कि व्यक्ति को झूठ नहीं बोलना चाहिए और अपने वादे पूरे करने चाहिए।
- **सुधार का नियम:** यदि कोई गलती हो जाए तो व्यक्ति को उसमें सुधार करने का प्रयास करना चाहिए।
- **कृतज्ञता:** अगर किसी ने मदद की है तो उसे याद रखना चाहिए।
- **वफादारी:** अपने साथी और परिवार के सदस्यों के प्रति समर्पण।

- **प्यार:** हर चीज से प्यार करना, भले ही उसमें खामियाँ हों।
- **निष्ठा:** यह वैवाहिक संबंधों का एक प्रमुख चालक और वैवाहिक नैतिकता का सार है। इसका तात्पर्य कामुक विकर्षणों या व्यभिचार से बचते हुए अपने जीवन साथी के प्रति वफादार बने रहना है।
- **गोपनीयता:** निजी रिश्तों को पवित्र बनाए रखने के लिए गोपनीयता और निजता आवश्यक है।
  - **उदाहरण:** मैं आम तौर पर अपने दोस्तों, सहकर्मियों और अन्य लोगों की अनुमति के बिना उनके रहस्यों को साझा करने से बचता हूं। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं समझता हूं कि उनकी गोपनीय जानकारी उजागर करने से हमारे रिश्तों में कलह और तनाव पैदा हो सकता है। उनकी निजता का सम्मान करना और उनका भरोसा बनाए रखना मेरे लिए महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार मैं अपनी निजता को महत्व देता हूँ, उसी प्रकार मैं दूसरों को भी वही शिष्टाचार प्रदान करता हूँ। उनके रहस्यों को गोपनीय रखकर, मैं उन्हें दिखाता हूं कि मैं उनके विश्वास को महत्व देता हूं और उसका सम्मान करता हूं, जो हमारे रिश्ते को मजबूत और गहरा करने में मदद करता है।
- **जवाबदेही और जिम्मेदारी:** निजी रिश्तों में, व्यक्ति को विभिन्न जिम्मेदारियाँ दी जाती हैं जैसे कि बच्चे, जीवन साथी, माता-पिता आदि के प्रति जिम्मेदारी। इसके लिए उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के साथ-साथ ऐसा न करने की स्थिति में उनके प्रति जवाबदेह होना आवश्यक है।
- **सहिष्णुता और स्वीकृति:** सहिष्णुता दूसरों के मूल्यों और परस्पर मतभेदों को पहचानने और उनका सम्मान करने की क्षमता है। सहिष्णुता स्वयं द्वारा थोपी गई बाधाओं को दूर करती है, जिससे व्यक्ति अधिक व्यापक रूप से सोच सकता है और अधिक आंतरिक शांति का अनुभव कर सकता है।
  - सहिष्णुता और स्वीकृति दोनों से समाज में संघर्ष कम होता है और सद्भाव पैदा होता है, खासकर भारत जैसे देश में, जहां कई धर्म, संस्कृतियां और विचारधाराएं हैं।

निजी संबंधों में नैतिकता आम तौर पर निम्नलिखित द्वारा निर्देशित होती हैं:

- **व्यक्तिगत गुण:** ये आम तौर पर निजी रिश्तों में नैतिकता का मार्गदर्शन करने के लिए उपयोग किए जाते हैं: निजी रिश्तों में नैतिकता का निर्धारण करने में सच्चाई और ईमानदारी महत्वपूर्ण कारक हैं। इससे व्यक्ति के दृष्टिकोण और व्यवहार का पता चलता है।
- **सार्वभौमिक मानवीय मूल्य:** नैतिक व्यवहार के लिए स्थापित मानक सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित है।
  - **उदाहरण:** बड़ों का सम्मान एक सार्वभौमिक मूल्य है जो निजी संबंधों में एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है।
- **धर्म:** धार्मिक और आस्तिक लोग ईश्वर को प्रसन्न करने और मोक्ष प्राप्त करने के लिए ईश्वरीय आदेशों को स्वीकार करते हैं और अपने व्यक्तिगत जीवन में उनका पालन करते हैं।
  - **उदाहरण:** ईसाइयों के लिए परिवार, पड़ोसियों और बड़े पैमाने पर समाज के साथ व्यवहार करने के लिए दस आज्ञाएँ (बाइबल से) मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती हैं।
- **सामाजिक मानदंड:** कुछ मूल्य पर्यावरणीय कारकों से सीखे जाते हैं जो मनुष्यों को प्रभावित करते हैं, जैसे परिवार, सहकर्मी समूह, समाज, इत्यादि।
  - **उदाहरण:** मैं अपने माता-पिता से सीखता हूं कि परिवार के बड़ों के साथ कैसे बातचीत की जाती है।
- **देश की विधि:** कुछ नैतिक सिद्धांत कानूनों और संवैधानिक मूल्यों द्वारा शासित होते हैं।
  - **उदाहरण:** भारतीय संविधान के तहत महिलाओं की शील का अपमान न करना एक मौलिक कर्तव्य है।

निजी संबंधों में नैतिकता का महत्व

- **जीवन को अच्छा बनाता है:** व्यक्ति कठिन समय से आसानी से निकल पाते हैं और अच्छा जीवन व्यतीत कर पाते हैं।
- **सही निर्णय लेना:** इससे हम अच्छे निर्णय ले पाते हैं, खासकर जब हितों में टकराव हों।
- **चरित्र विकास:** ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानता आदि जैसे अच्छे मूल्यों के पालन से इसमें सहायता मिलती है।
- **बच्चों के लिए नैतिक पाठ:** निजी रिश्तों में नैतिक जीवन, विशेष रूप से घर पर, बच्चों के व्यवहार को प्रभावित करता है और उनके नैतिकता के पहले पाठ के रूप में कार्य करता है।
- **सार्वजनिक जीवन में स्वीकार्यता:** नैतिकता के साथ व्यक्तिगत संबंध व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन में अधिक स्वीकार्य बनाता है।

- **कमियों के प्रति अधिक सहनशीलता:** आपसी विश्वास, प्रेम और निर्भरता के कारण, लोगों में निजी संबंधों में कमियों के प्रति सहनशीलता अधिक हुआ करती है।

1.17.2 सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

ETHICS IN PUBLIC RELATIONSHIP

Public Ethics

Social Ethics
- Respect and TC towards other communities
- Peace and Harmony
- Coexistence
- Social Equality

Political Ethics
- Constitutionalism
- Transparencyin Governance
- Accountability
- Public service
- Social welfare

Organisational Ethics
- Corporate Social Responsibility
- Efficiency
- Cost Benefit Analysis
- Honesty and Hardwork
- Code of conduct

Internation Ethics
- Respect to International treates and Conventions
- Global Peace
- Disarmament
- Ethics in Diplomacy

चित्र: सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

- सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता उन नैतिक मूल्यों या नैतिक मानकों को संदर्भित करती है जिनका एक व्यक्ति अपने पेशेवर व्यवहार और व्यावसायिक व्यवहार में पालन करता है। सत्ता सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता को नियंत्रित करती है।

उदाहरण: किसी स्वास्थ्य सेवा कंपनी के जनसंपर्क अभियान में, जनसंपर्क पेशेवर

- पूरे अभियान में नैतिक मूल्यों और नैतिक मानकों का पालन करता है।
- यह सुनिश्चित करता है कि सभी संचार सत्य, सटीक और पारदर्शी हों।
- रोगियों और ग्राहकों की गोपनीयता और निजता का सम्मान करता है।
- किसी भी प्रकार के हितों के टकराव से बचा जाता है जो अभियान की सत्यनिष्ठा से समझौता कर सकता हों।
- हितधारकों के साथ समावेशी और सम्मानजनक तरीके से जुड़ता है।
- स्वास्थ्य सेवा कंपनी की सकारात्मक और नैतिक छवि बनाने का प्रयास करता है।

- **किसी भी पेशे की सत्यनिष्ठा के लिए महत्वपूर्ण मूल्यों की बहुत महत्ता होती है:** ईमानदारी, निस्वार्थता, विशेषज्ञता, खुलापन, जवाबदेही, निष्पक्षता और अन्य प्रमुख मूल्य मानवीय कार्यों का मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक हैं और किसी भी पेशे की सत्यनिष्ठा के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **किसी भी नैतिक ढांचे में निम्नलिखित घटक अवश्य होने चाहिए:**
    - नैतिक मानकों और प्रथाओं को **संहिताबद्ध करना।**
    - सार्वजनिक हित और व्यक्तिगत हित के बीच टकराव से बचने के लिए व्यक्तिगत हितों का **खुलासा करना।**
    - **प्रासंगिक संहिताओं को लागू करने के लिए** एक प्रणाली स्थापित करना।
    - किसी सार्वजनिक अधिकारी को पद के लिए योग्य और अयोग्य ठहराने के लिए मानदंड स्थापित करना।

उदाहरण: सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

सर एम विश्वेश्वरैया	मैसूर के दीवान का पद स्वीकार करने से पहले उन्होंने अपने सभी रिश्तेदारों को रात्रि भोज पर आमंत्रित किया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वह इस प्रतिष्ठित पद को इस शर्त पर स्वीकार करेंगे कि उनमें से कोई भी एहसान के लिए उनसे संपर्क न करें। आजकल ऐसी बातें सुनने को नहीं मिलतीं। ऐसा कहा जाता है कि उनके पास मोमबत्तियों के दो सेट थे। एक निजी तौर पर खरीदा गया था और व्यक्तिगत उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था, जबकि दूसरा सरकार द्वारा प्रदान किया गया था और केवल सरकारी कार्यों के लिए उपयोग किया जाता था।
लाल बहादुर शास्त्री	जब प्रधान मंत्री के रूप में एक यात्रा के दौरान एक कपड़ा मिल के मालिक ने उन्हें महंगी साड़ियाँ देने की पेशकश की, तो शास्त्री ने केवल वही खरीदने और भुगतान करने पर जोर दिया जो वह खरीद सकते थे। उन्होंने अपने बेटे की अनुचित पदोन्नति को भी उलट दिया। 1956 में अरियालुर ट्रेन दुर्घटना के बाद, शास्त्रीजी ने रेल मंत्री के रूप में नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता की भूमिका

- **हितों के टकराव को सुलझाने के लिए नैतिक दिशा-निर्देश:** नैतिक दुविधाओं से निपटने और हितों के टकराव को सुलझाने के लिए एक नैतिक दिशा-निर्देश बनाना। व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव अक्सर किसी भी व्यक्ति के कार्य और सार्वजनिक क्षेत्र में उसकी भूमिका पर पड़ता है।
- **सार्वजनिक संबंधों को मानवीय बनाने में योगदान:** निजी संबंधों में नैतिकता सार्वजनित संबंधों को मानवीय बनाने में योगदान देती है और व्यक्ति की नैतिक व्यवस्था के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि कोई व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी को महत्व देता है, तो वह अपने सार्वजनिक जीवन में भी ईमानदार हो सकता है।
- **जिम्मेदारीपूर्ण पक्ष समर्थन और संचार:** व्यक्तिगत मूल्यों से जिम्मेदारीपूर्ण पक्ष समर्थन और संचार हो पाता है।
- **सामाजिक कल्याण:** इसमें प्राधिकार को बनाए रखना, व्यवस्था में सार्वजनिक विश्वास को विकसित करना और बढ़ाना और सामाजिक कल्याण प्राप्त करना शामिल है।
- **प्रभावी और संतुलित निर्णय लेना:** अधिक निष्पक्ष और संतुलित निर्णय लेने में सहायता करती है।
- **कार्यालय/संस्था/संगठन की विश्वसनीयता:** नैतिक जनसंपर्क में किसी भी जानकारी, चाहे वह संवेदनशील हो या नहीं, को व्यवहार में लाते समय पारदर्शिता बनाए रखने की आवश्यकता होती है। तथ्य और कल्पना के बीच की रेखाओं को धुंधला करने से विश्वसनीयता कम हो सकती है और किसी कार्यालय/संस्था/संगठन की प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है।
- **लोगों के साथ भरोसेमंद संबंध:** विश्वास के माध्यम से, एक संगठन विभिन्न हितधारकों के साथ ठोस संबंध बना सकता है, जिसे हमेशा नैतिक दृष्टिकोण अपनाकर प्राप्त किया जा सकता है। आचार संहिता का पालन करने से, संगठनों और आम जनता के बीच अत्यंत आवश्यक विश्वास के विकास में सहायता मिल सकती है।
- **सौजन्य:** भारत में सिविल सेवकों के आधिकारिक आचरण में यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। इससे आम जनता में अपनेपन की भावना पैदा होती है।
  - **उदाहरण:** प्रशांत नायर (आईएएस) के आम जनता से निपटने के दृष्टिकोण ने उन्हें "कलेक्टर भाई" उपनाम दिया।
- **सेवा की भावना:** सेवा के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है। सिविल सेवकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सार्वजनिक हित में सेवा प्रदान करने के लिए अपने कर्तव्य से ऊपर उठें। यह व्यक्ति को आंतरिक संतुष्टि प्रदान करता है और साथ ही उसके सहकर्मियों को सेवा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

हाल के वर्षों में सिविल सेवकों का मनोबल गिरता जा रहा है। उसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- **जवाबदेही और जिम्मेदारी का अभाव:** जब चीजें अच्छी चल रही होती हैं, तो बहुत सारे लोग श्रेय लेने को तैयार होते हैं, लेकिन जब चीजें गलत हो जाती हैं, तो कोई भी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं होता है।
- **नैतिकता, मूल्यों, सत्यनिष्ठा और आध्यात्मिकता को त्याग देना:** भौतिकवाद और सांसारिक सफलता के लिए इनकी तिलांजली दे दी जाती है।
- **सामाजिक स्वीकार्यता:** समग्र रूप से समाज ने भ्रष्ट व्यक्तियों को स्वीकार करना शुरू कर दिया है। अच्छे लोगों की चुप्पी कुछ लोगों के नैतिक पतन से भी अधिक खतरनाक है। मूल्यों को स्थापित करने में परिवार, स्कूल, समाज और संस्थान विफल रहे हैं।
- **मेगा प्रशासन, धीमी कार्यप्रणाली और निर्णय लेने में देरी:** प्रत्येक विभाग और संस्थान लंबवत और क्षैतिज दोनों तरह से बढ़ रहा है। इससे पदानुक्रम में भ्रम पैदा होता है, जिसके परिणामस्वरूप निर्णय लेने में देरी होती है।
- **नरम समाज, जनता की मिलीजूली राय, और राजनीति, व्यापार एवं नौकरशाही का गठजोड़:** जनता गलत कार्य पर क्रोध नहीं करती या उसे बर्दाश्त कर लेती है। इससे निर्णय लेने वालों को भविष्य में और ऐसे अपराध करने की अधिक छूट मिल जाती है।

इसमें सुधार के प्रयास

- **पारदर्शिता बढ़ाएँ:** ऐसे कानून बनाकर जिनके लिए सिविल सेवकों को अपने आधिकारिक निर्णयों को उचित ठहराने की आवश्यकता हों।

- **व्हिसिलब्लोअर संरक्षण अधिनियम:** आधिकारियों के गलत कार्यों का उचित 'सार्वजनिक हित में खुलासा' करने वालों की रक्षा के लिए।
- **सत्यनिष्ठा की नैतिक लेखा परीक्षा:** सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं की सत्यनिष्ठा के प्रति खतरों की पहचान करना और प्रभावी बाह्य एवं आंतरिक शिकायत निवारण प्रणाली बनाना।
- **अनुशासनात्मक कार्रवाई:** नैतिकता के नियम तोड़ने और उनका उल्लंघन करने के परिणामस्वरूप उन पर अनुशासनात्मक नियमों के तहत दण्ड और सजा दी जानी चाहिए।
- **कम्प्यूटरीकरण और डिजिटलीकरण:** उन चरणों को हटा दें जिनके लिए लोगों को अपना काम करवाने के लिए नौकरशाहों पर निर्भर रहना पड़ता हों।

1.18 नोलन समिति: सार्वजनिक जीवन में सात सिद्धांत

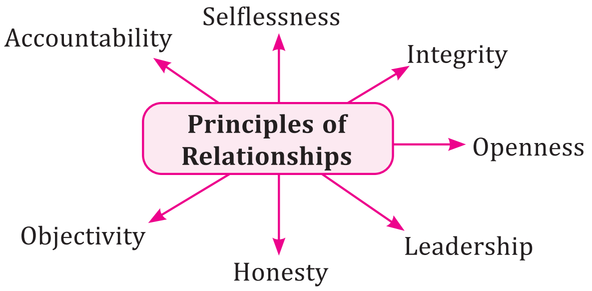

यूनाइटेड किंगडम में सार्वजनिक जीवन में मानकों संबंधी समिति, जिसे नोलन समिति के नाम से भी जाना जाता है, ने नीचे उल्लिखित सार्वजनिक जीवन के सात सिद्धांतों की रूपरेखा तैयार की है:

- **नि:स्वार्थता:** सार्वजनिक अधिकारियों को केवल जनहित में निर्णय लेना चाहिए। उन्हें अपने, अपने परिवार या अपने दोस्तों के लिए आर्थिक या अन्य लाभ के लिए ऐसा नहीं करना चाहिए।
  - **उदाहरण:** जब लाल बहादुर शास्त्री प्रधान मंत्री थे, तो उन्होंने कभी छुट्टी नहीं ली। जब उनकी मृत्यु हुई तो उनके पास केवल कुछ रुपये, कर्ज और कुछ सामान बचा था। परिणामस्वरूप, उन्होंने हमेशा राष्ट्र को पहले रखा और इसे अपने अंतिम क्षणों तक निभाया।
- **सत्यनिष्ठा:** सदा सत्य का पालन करना और लगातार एवं बिना झिझके नैतिक सिद्धांतों का पालन करना। सार्वजनिक पद धारकों को अपने आधिकारिक कर्तव्यों इतर किसी व्यक्ति या संगठन के प्रति किसी भी वित्तीय या अन्य दायित्व के तहत स्वयं को नहीं रखना चाहिए।
  - **उदाहरण:** यू. सग्यम (तमिलनाडु के एक सिविल सेवक) – अपनी 20 वर्षों की सेवा में, उन्हें लगभग 20 बार स्थानांतरित किया गया है। वह जहां भी जाते हैं भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए जाने जाते हैं। वह अपनी संपत्ति का खुलासा करने वाले पहले आईएएस अधिकारी भी थे।
  - महात्मा गांधी और अब्राहम लिंकन दोनों अनुकरणीय नेता थे जो अपनी ईमानदारी के लिए जाने जाते थे।
  - संकट के समय में, दोनों अपने मूल्यों के प्रति सच्चे रहे, जैसे गुलामी के उन्मूलन के लिए लिंकन की प्रतिबद्धता और अहिंसा के प्रति गांधीजी की प्रतिबद्धता।
- **वस्तुनिष्ठता:** इसका तात्पर्य व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या राय के बजाय स्थापित तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर निर्णय लेने से है। सार्वजनिक पद धारकों को सार्वजनिक कार्य करते समय योग्यता-आधारित निर्णय लेने चाहिए, जैसे सार्वजनिक नियुक्तियाँ करना, अनुबंध देना, या पुरस्कार और लाभ के लिए व्यक्तियों की सिफारिश करना।
  - **उदाहरण:** पाकिस्तान पर भारत की 1971 की जीत के प्रमुख वास्तुकारों में से एक सैम मानेकशॉ को अप्रैल, 1971 में प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी को स्पष्ट रूप से यह बताने के लिए जाना जाता है कि भारतीय सेना युद्ध के लिए तैयार नहीं थी। यह कहते हुए कि उनका काम जीतने के लिए लड़ना है, उन्होंने कुछ महीनों का अनुरोध किया – एक अनुरोध जिसे श्रीमती गांधी ने स्वीकार किया, जिनका श्रेय उनको जाता है। मानेकशॉ ने भारत को सबसे तीव्र और उल्लेखनीय सैन्य जीतों में से एक प्रदान की।
- **जवाबदेही:** सार्वजनिक पद धारक अपने निर्णयों और कार्यों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं और उनके कार्यालय को लेकर जो भी उचित जांच हों उसे उन्हें स्वीकार करना चाहिए।
  - **उदाहरण:** प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के अधीन रेल मंत्री के रूप में, लाल बहादुर शास्त्री ने अगस्त, 1956 में आंध्र प्रदेश के महबूबनगर में एक बड़ी रेल दुर्घटना के बाद इस्तीफा दे दिया, जिसमें 112 लोगों की मौत हो गई। उन्होंने नैतिक जिम्मेदारी और जवाबदेही स्वीकार करते हुए इस्तीफा दे दिया, लेकिन नेहरू ने उन्हें अन्यथा मना लिया। शास्त्री के कार्यों ने सिविल सेवकों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह होने का उच्च मानक स्थापित किया।

सार्वजनिक संबंध में नैतिकता

- **द्वितीय एआरसी के अनुसार:** सामुदायिक नागरिक-केंद्रित सार्वजनिक सेवा वितरण के लिए मुक्त, पारदर्शी और जवाबदेह सरकार आवश्यक है।
- **मैक्स वेबर के अनुसार:** एक पूर्णत: विकसित नौकरशाही की शक्ति प्रस्थिति प्रत्येक स्थान पर व्यापक होती है। जवाबदेही के बिना, नौकरशाही फ्रेंकस्टीन के दानव के समान होगी, जिसने अपने मालिक से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था।

- **ईमानदारी:** इसका तात्पर्य है ''विश्वसनीय, निष्ठावान, निष्पक्ष और ईमानदार होना''। एक ईमानदार व्यक्ति कपट-मुक्त, सच्चा और ईमानदार होता है और झूठ नहीं बोलता है। सार्वजनिक पदधारकों को अपने सार्वजनिक कर्तव्यों से संबंधित किसी भी निजी हित की घोषणा करनी चाहिए और सार्वजनिक हित की रक्षा के समक्ष उत्पन्न होने वाले किसी भी टकराव का समाधान करने के लिए कदम उठाने चाहिए।
  - **उदाहरण:** एक ईमानदार सिविल सेवक को अपने कार्य और संपत्ति के बारे में सार्वजनिक होना चाहिए, अपनी गलतियों को स्वीकार करना चाहिए और दूसरों पर जिम्मेदारी डालने या छिपाने के स्थान पर उन्हें सुधारने का प्रयास करना चाहिए।
- **नेतृत्व:** सार्वजनिक पदधारकों को अनुकरणीय नेतृत्व प्रदान करना चाहिए और इन सिद्धांतों को बढ़ावा देना और समर्थन करना चाहिए।
  - **उदाहरण:** इंदिरा गांधी ने ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद अपने सिख अंगरक्षकों को हटाने के सभी सुझावों का विरोध किया क्योंकि इससे सांप्रदायिक विभाजन पैदा हो जाएगा। इस तथ्य के बावजूद कि देश की सभी जांच एजेंसियों ने दिवंगत प्रधानमंत्री से उनके सुरक्षा विस्तार से दो अंगरक्षकों को हटाने का आग्रह किया था, वह झिझक रही थीं क्योंकि उन्हें भय था कि इससे विवाद पैदा हो जाएगा।
- **खुलापन:** सार्वजनिक पदधारकों को अपने सभी निर्णयों और कार्यों में जितना संभव हो खुलापन होना चाहिए। उन्हें अपने निर्णयों के लिए कारण बताना चाहिए और जानकारी को केवल तभी प्रतिबंधित करना चाहिए जब स्पष्ट रूप से यह व्यापक सार्वजनिक हित के अनुरूप हो।
  - **उदाहरण:** पूर्व सीएजी विनोद राय ने 2जी घोटाले का खुलासा करके सीएजी कार्यालय को सार्वजनिक और पारदर्शी शक्तिशाली शक्ति में बदल दिया।

ओईसीडी और एक नैतिक बुनियादी ढांचा

ओईसीडी ने अवांछनीय व्यवहार को विनियमित करने या जांचने और सार्वजनिक अधिकारियों के अच्छे आचरण को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहन स्वरुप कई उपकरणों और प्रक्रियाओं का जिक्र करते हुए एक नैतिक बुनियादी ढांचे का आह्वान किया। ओईसीडी का 8 सूत्री चार्टर इस प्रकार है;

1. नैतिक शासन के लिए राजनीतिक प्रतिबद्धता
2. एक प्रभावी कानूनी ढांचे का निर्माण,
3. एक कुशल जवाबदेही तंत्र विकसित करना,
4. व्यावहारिक आचार संहिता विकसित करने की आवश्यकता,
5. व्यावसायिक समाजीकरण तंत्र (प्रशिक्षण सहित),
6. सहायक सार्वजनिक सेवा शर्तों का निर्माण,
7. एक केंद्रीय नैतिकता समन्वय निकाय की आवश्यकता,
8. प्रहरी के रूप में कार्य करने में सक्षम एक ऊर्जावान नागरिक समाज की आवश्यकता।

सार्वजनिक और निजी संबंधों में नैतिकता की तुलना

सम्बन्ध का प्रकार	सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता	निजी संबंधों में नैतिकता
यह किससे संबंधित है?	समुदाय, समाज, व्यवसाय आदि से संबंधित है।	निकटतम परिवार, दोस्तों आदि की चिंता।
सम्बन्ध की प्रकृति क्या है?	प्रकृति में औपचारिक.	प्रकृति में अनौपचारिक.
स्रोत क्या हैं?	सामाजिक एवं व्यक्तिगत मानदंडों पर आधारित।	व्यक्तिगत मूल्यों, नैतिकता और परिवार मूल्यों पर आधारित
कौन सा भाग बड़ी भूमिका निभाता है?	नियमों-विनियमों की बड़ी भूमिका।	मनोभावों और भावनाओं की बड़ी भूमिका।
नियंत्रणकर्ता	बाह्य रूप से आरोपित और नियंत्रित कार्यालय नियम।	स्वैच्छिक और स्वयं आरोपित

संहिताकरण	संहिताबद्ध	सामान्यतः, संहिताबद्ध नहीं.
उल्लंघन के बाद क्या प्रभाव होते हैं?	मानदंडों का उल्लंघन होने पर कानूनी, सामाजिक और व्यावसायिक निहितार्थ।	उल्लंघन आम तौर पर दंडित नहीं किया जाता है लेकिन इसके सामाजिक परिणाम हो सकते हैं जैसे समाज में प्रतिष्ठा की हानि.

1.19 सार्वजनिक और निजी संबंधों का पृथक्करण

1.19.1 अलगाव के कारण

- **दोनों अलग-अलग तरीके से कार्य करते हैं:** निजी और सार्वजनिक सम्बन्ध अत्यंत भिन्न तरीकों से संचालित होते हैं और इस प्रकार प्रत्येक संदर्भ में उचित व्यवहार करने के लिए उन्हें अलग-अलग व्यवहृत किया जाना चाहिए।
- **एक-दूसरे की समस्याओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए:** न तो सार्वजनिक और न ही निजी संबंधों को एक-दूसरे की समस्याओं से प्रभावित होना चाहिए। निजी मुद्दों का सार्वजनिक प्रदर्शन पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।
- **उदाहरण:** लोग उम्मीद करते हैं कि व्यक्तिगत मुद्दों की परवाह किए बिना लोक सेवक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। सार्वजनिक संबंधों के उतार-चढ़ाव का असर हमारे व्यक्तिगत व्यवहार पर नहीं पड़ना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक पुलिस अधिकारी की कार्य स्थिति का घर पर उसके व्यवहार पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।
- **दोनों को संयुक्त करने से जटिलताएँ पैदा होती हैं:** दो प्रकार के संबंधों को मिलाने से अक्सर जटिलताएँ पैदा होती हैं। निजी संबंधों के प्रचार से भाई-भतीजावाद और पक्षपात को बढ़ावा मिलता है। निजी क्षेत्र में सार्वजनिक संबंधों का प्रवेश निजी जीवन की पवित्रता, गोपनीयता और एकान्तता को खतरे में डालता है।
  - **उदाहरण:** महाभारत में, संघर्ष इसलिए उत्पन्न हुआ क्योंकि धृतराष्ट्र ने अपने सार्वजनिक और निजी संबंधों को मिश्रित कर दिया था। जब वह चाहते थे कि अयोग्य होने के बावजूद उनका बेटा राजा बने, तो उन्होंने अपने बेटे के साथ अपने निजी संबंधों को अपने सार्वजनिक निर्णय लेने को प्रभावित करने की अनुमति दी।
- **दोनों क्षेत्रों से पृथक अपेक्षाएं:** चूंकि समाज लोगों का उनके सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में अलग-अलग विधि से आकलन करता है, इसलिए उन्हें पृथक रखना सबसे अच्छा है।
  - **उदाहरण:** महात्मा गांधी को "राष्ट्रपिता" के रूप में सम्मानित किया जाता है, लेकिन उन्हें अपने बेटे के साथ अपने जटिल संबंधों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है।
- **हितों के टकराव को रोकने में मदद करता है:** सार्वजनिक और निजी संबंधों को अलग करने से हितों के टकराव को रोकने में मदद मिलती है।
  - **उदाहरण:** पूर्व सीबीआई प्रमुख रंजीत सिन्हा ने एक मामले में एक आरोपी से उसके घर पर मुलाकात की (व्यक्तिगत संबंधों के कारण) और इससे उनकी सत्यनिष्ठा पर सवाल उठाया गया। इससे बचा जा सकता था यदि सार्वजनिक और निजी संबंधों को अलग रखा गया होता।
- **पवित्रता बनाए रखने के लिए मिश्रित नहीं किया जा सकता:** सार्वजनिक सम्बन्ध इतने जटिल और प्रगाढ़ हो सकते हैं कि निजी जीवन की पवित्रता बनाए रखने के लिए उन्हें निजी संबंधों के साथ मिश्रित नहीं किया जा सकता।
  - **उदाहरण: राजनेता प्रायः** अपने निजी जीवन को अपने सार्वजनिक जीवन से अलग रखते हैं क्योंकि उनके सार्वजनिक जीवन की व्यापक जांच और आलोचना की जाती है।

1.19.2 अलगाव के साथ समस्याएँ और चुनौतियाँ

- **व्यवहार्य नहीं:** क्योंकि सार्वजनिक और निजी सम्बन्ध प्रायः ओवरलैप और मिश्रित होते हैं, इसलिए उन्हें अलग नहीं रखा जा सकता है।
  - **उदाहरण:** संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति और उनकी पत्नी, प्रथम महिला के बीच एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक संबंध है। संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनेताओं के परिवारों और विवाहों पर मुक्त चर्चा होती है।
- **अवांछनीय:** सार्वजनिक और निजी संबंधों का कठोर पृथक्करण प्रति-उत्पादक हो सकता है। दोनों प्रकार के रिश्ते एक-दूसरे से लाभान्वित हो सकते हैं।
  - **उदाहरण:** परिवार और दोस्तों का समर्थन लोगों को पेशेवर रूप से आगे बढ़ने में मदद कर सकता है। कार्यस्थल पर मित्र, लोगों को प्रेरित और संतुष्ट रहने में सहायता करते हैं।
- **प्रबंधनीय नहीं:** यदि सार्वजनिक और निजी संबंधों का अलग-अलग तरीके से व्यवहार किया जाता है तो व्यक्तियों को भ्रम और मानसिक तनाव का अनुभव हो सकता है।

- उदाहरणः पुलिस अधिकारी जो काम पर और घर पर (क्रमशः सख्त और अच्छा) अलग-अलग व्यवहार करते हैं, वे भ्रमित और छलावरण युक्त महसूस कर सकते हैं।

- **पृथक नहीं किया जा सकताः** क्योंकि कुछ मूल्य और नैतिकता सार्वजनिक और निजी दोनों रिश्तों द्वारा साझा की जाती हैं, इसलिए दोनों प्रकार के रिश्तों के लिए समान व्यवहार की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरणः** परिवार और कार्यस्थल दोनों में सत्यनिष्ठा और विनम्रता वांछनीय है।

1.20 सार्वजनिक संबंधों का निजी संबंधों पर प्रभाव

सकारात्मक

- **प्रेरणाः** हमारा सार्वजनिक जीवन प्रायः हमारे निजी जीवन के लिए एक सीख के रूप में कार्य करता है, जो हमें अपने व्यवहार में सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।
  - **उदाहरणः** कार्यस्थल पर लैंगिक समानता पर कार्यशालाएँ, पतियों को घर पर अपनी पत्नियों के साथ बेहतर व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती हैं।
- **मूल्यः** सार्वजनिक रिश्तों की कठोर वास्तविकताएं (जैसे लेन-देन और असंवेदनशीलता) हमें अपने निजी रिश्तों के महत्व और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले भावनात्मक समर्थन की सराहना करती हैं।
  - **उदाहरणः** सहकर्मियों द्वारा छल, अक्सर लोगों को अपने दोस्तों और परिवार की मासूमियत और सहृदयता का एहसास कराता है।
- **मानवीयः** निजी संबंध नैतिकता, जैसे प्रेम और अपनत्व का उपयोग सार्वजनिक संबंधों को अधिक मानवीय और दयालु बनाने के लिए किया जा सकता है।
  - **उदाहरणः** एक जिला कलेक्टर, जो अपने निजी जीवन में प्रेम और अपनत्व करता है, अपनी आधिकारिक भूमिका में गरीबों और जरूरतमंदों के प्रति दयालु हो सकता है।

नकारात्मक

- **स्पिलओवरः** जब लोग सार्वजनिकता में निमग्न होते हैं, तो वे अपने निजी जीवन में भी उसी तरह का व्यवहार करना जारी रखते हैं।
  - **उदाहरणः** अपराधी या असामाजिक तत्व घर पर भी हिंसक और कठोर व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।
- **समय प्रबंधनः** सार्वजनिक जीवन में अत्यधिक भागीदारी, अक्सर लोगों को अपने निजी जीवन से समय का त्याग करने के लिए मजबूर करती है, जिसका उनके निजी संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

1.21 सार्वजनिक संबंधों पर निजी संबंधों का प्रभाव

सकारात्मक

- **पारस्परिक संबंधः** निजी रिश्ते लोगों को प्रेम, अपनत्व, सहानुभूति आदि जैसे मूल्य सिखाते हैं, जिन्हें वे अपनी गुणवत्ता में सुधार करने के लिए अपने सार्वजनिक संबंधों में दोहरा सकते हैं।
  - **उदाहरणः** डगलस मैकग्रेगर जैसे मनोवैज्ञानिकों के अध्ययन से पता चला है कि प्रबंधकों का विश्वास, आत्मविश्वास, विनम्रता आदि उनके अधीनस्थों की प्रेरणा को बढ़ाते हैं।
- **सकारात्मक मनोदशाः** जिन लोगों के निजी रिश्ते सहज और खुशहाल होते हैं, वे अधिक संतुष्ट होते हैं, जो उन्हें सार्वजनिक रूप से बेहतर व्यवहार करने की अनुमति देता है। "सुखी पत्नी, सुखी जीवन" कहावत के पीछे यही तर्क है।

नकारात्मक

- **तनावः** दोस्तों, परिवार, जीवनसाथी और अन्य लोगों के साथ निजी संबंधों में तनाव का कारण बनता है और सार्वजनिक व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। स्वस्थ निजी संबंध एक बुनियादी आवश्यकता है जिसे अच्छे सार्वजनिक संबंध बनाने के लिए पूरा किया जाना चाहिए।
  - **उदाहरणः** स्वस्थ पारिवारिक जीवन बनाए रखने के लिए कंपनियां अपने कर्मचारियों और परिवारों के लिए अवकाश पैकेज प्रदान करती हैं।
- **पूर्वाग्रहः** निजी रिश्ते अक्सर सार्वजनिक क्षेत्र में व्याप्त हो जाते हैं।
  - **उदाहरणः** जब किसी विशेष समुदाय से हमारा कोई मित्र एक निश्चित तरीके से कार्य करता है, तो हम सम्पूर्ण समुदाय के बारे में एक राय बना लेते हैं।

1.22 सार्वजनिक और निजी संबंधों में सामान्य नैतिकता

- **सत्यनिष्ठाः** दोनों प्रकार के रिश्ते सच्चे व्यवहार की अपेक्षा करते हैं, जिसके बिना भरोसा और विश्वास खत्म हो जाता है। उदाहरण के लिए, विवाह के साथ-साथ वरिष्ठ-अधीनस्थ संबंधों के लिए निष्ठा की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरणः** सार्वजनिक संबंधों में, मैं हमेशा पारदर्शी और सच्चाई से संवाद करता हूं, जिससे विश्वसनीयता अर्जित

करने में मदद मिलती है। निजी संबंधों में, मैं मुक्त और सत्यनिष्ठ वार्ता को प्राथमिकता देता हूं, जिससे विश्वास एवं संबंधों को प्रगाढ़ बनाने में प्रोत्साहन मिलता है।

- **पारस्परिक कारक:** दोनों सम्बन्ध यांत्रिक नहीं हैं, बल्कि इसमें अंतर्वैयक्तिक व्यवहार शामिल है। परिणामस्वरूप, दोनों पक्षों को एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझने के लिए व्यक्तियों में मौलिक संवेदनशीलता, सहानुभूति, अपनत्व आदि की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरण:** कई व्यवसायों ने पारस्परिक संबंधों को बेहतर बनाने के लिए अपने कर्मचारियों को संवेदनशीलता प्रशिक्षण (टी-ग्रुप प्रशिक्षण) प्रदान करना शुरू कर दिया है।
- **जवाबदेही:** दोनों रिश्तों में, हमें अपने कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जाता है। विश्वास और आत्मविश्वास बनाए रखने के लिए, हमें अपने कार्यों के प्रति जवाबदेह होना चाहिए
  - **उदाहरण:** लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे घर और कार्यस्थल दोनों जगह अपने वित्तीय निर्णयों का ध्यान रखें।
- **दया:** दूसरों की मदद करना एक अच्छा काम है जो सार्वजनिक और निजी दोनों रिश्तों में वांछित है।
  - **उदाहरण:** लोग न केवल अपने परिवार के सदस्यों की बल्कि सहकर्मियों, पड़ोसियों आदि की भी सहायता करते हैं।

1.23 सार्वजनिक और निजी संबंधों को संतुलित करना

- **उचित परिश्रम के साथ उचित कार्य करना:** हमारे जीवन में सम्बन्ध बहुत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए हमें उचित कार्यकलापों का ध्यान रखना चाहिए। सार्वजनिक और निजी संबंधों में कार्यकलापों के लिए अलग-अलग नैतिकताएं हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि सम्बन्ध सुचारू रूप से चलें।
- **कुछ मूल्य दोनों क्षेत्रों में काम करते हैं:** निजी और सार्वजनिक संबंधों को अलग-अलग व्यवहार करना आम बात है क्योंकि उनके लिए अलग-अलग व्यवहार की आवश्यकता होती है। आगे की जांच से पता चलता है कि, हालांकि दोनों अलग-अलग हैं, फिर भी उनमें कुछ समान विशेषताएं हैं। सार्वजनिक और निजी दोनों संबंधों में कुछ मूल्यों की आवश्यकता होती है।
- **सुस्पष्ट अलगाव नहीं हो सकता:** परिणामस्वरूप, संतुलन बनाने के लिए ज्ञान और सरलता की आवश्यकता होती है। हालाँकि सार्वजनिक और निजी रिश्तों को पृथक रूप में देखा जाना चाहिए, लेकिन उन्हें सुस्पष्ट रूप से विभाजित करके नहीं देखा जाना चाहिए।
- **दोनों रिश्तों की निरंतरता का उपयोग करें:** हमें यह समझना चाहिए कि वे कैसे अंतर्क्रिया करते हैं और एक का उपयोग दूसरे को लाभ पहुंचाने के लिए कैसे किया जा सकता है। हमें यह भी समझना चाहिए कि सार्वजनिक और निजी दोनों संबंधों में कुछ मूलभूत मूल्यों का प्रदर्शन किया जाना चाहिए।
  - यह अधिक सहायक होगा यदि हम सार्वजनिक और निजी संबंधों की नैतिकता को अलग-अलग हिस्सों के बजाय एक सातत्य के रूप में मानें।

1.24 नैतिक सिद्धांत (मोरल्स)

- लैटिन शब्द मोरैलिस से लिया गया है, जिसका अर्थ है **"पारंपरिक रीति-रिवाज"।**
- नैतिक सिद्धांत व्यक्तिगत मान्यताएं हैं **कि क्या सही है और क्या गलत है।** नैतिक सिद्धांत के विपरीत सिद्धांत, व्यवहार के मानक हैं जो सामाजिक व्यवहार के बजाय किसी व्यक्ति पर लागू होते हैं।
- **व्यक्तिगत अनुभव, चरित्र,** विवेक और अन्य कारक सभी, नैतिक विकास में योगदान करते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** समलैंगिकता को समाज में अनैतिक माना जा सकता है लेकिन इसे किसी व्यक्ति द्वारा नैतिक सिद्धांत के रूप में देखा जा सकता है।

नैतिक विचार और अवधारणाएँ

- **व्यक्तिवादी:** जैसा कि पहले कहा गया है, नैतिकता एक व्यक्तिगत अवधारणा है जो प्रत्येक व्यक्ति के विवेक, पालन-पोषण, मानस आदि का परिणाम है।
  - **उदाहरण के लिए,** एक व्यक्ति मांसाहारी भोजन को नैतिकता के दृष्टिकोण से देख सकता है जिसे अन्य लोग नहीं देख सकते।
- **नैतिक दृष्टिकोण:** नैतिक दृष्टिकोण का निर्माण व्यक्ति की नैतिकता के परिणामस्वरूप होता है। ये नैतिक मुद्दों पर दृष्टिकोण हैं। लोगों में किसी मुद्दे को अनुकूल या प्रतिकूल रूप से देखने की नैतिक प्राथमिकता विकसित हो जाती है।
  - **उदाहरण के लिए,** रूढ़िवादी दृष्टिकोण वाला व्यक्ति अधिकांश दक्षिणपंथी नीतियों को सकारात्मक मानता है।
- **विभिन्न स्तरों पर नैतिकता में भिन्नता:** नैतिकता एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक समाज से दूसरे समाज (सामूहिक नैतिकता) में बहुत भिन्न होती है।
  - **उदाहरण:** मृत्युदंड पर विचार, उन्मूलन से लेकर चरणबद्ध उन्मूलन व दुर्लभतम सिद्धांत से लेकर सक्रिय प्रतिधारण तक के हैं।

- **गतिशीलता:** यद्यपि नैतिक मानक स्थिर हैं, लेकिन जैसे-जैसे लोग नई जानकारी, जीवन शैली, संस्कृति आदि के संपर्क में आते हैं, वे बदल सकते हैं।
  - **उदाहरण:** नशीली दवाओं के दुरुपयोग को एक समय अपराध माना जाता था, लेकिन बढ़ती जागरूकता और समझ के साथ, लोगों ने इसे एक बीमारी के रूप में देखना शुरू कर दिया है जिसके लिए सहायता और उपचार की आवश्यकता है।

नैतिकता और नैतिक सिद्धांत में अंतर:

गुण	नैतिकता (एथिक्स)	नैतिक सिद्धांत (मोरल्स)
मूल	ग्रीक शब्द ''एथोस'' का अर्थ है "चरित्र"।	लैटिन शब्द ''मोस'' का अर्थ ''रीति'' है।
प्रकृति	आचरण के नियमों को मानव कार्यों के एक विशेष वर्ग या किसी विशेष समूह या संस्कृति के संबंध में मान्यता दी जाती है।	सही या गलत आचरण के संबंध में सिद्धांत या व्यवहार। जबकि नैतिकता यह भी बताती है कि क्या करें और क्या न करें, नैतिकता अंततः सही और गलत का एक व्यक्तिगत दिशानिर्देश है।
स्रोत	सामाजिक व्यवस्था- बाह्य	व्यक्तिगत-आंतरिक
प्रत्यास्थता	नैतिकता परिभाषा के लिए दूसरों पर निर्भर है। वे एक निश्चित संदर्भ में सुसंगत होते हैं लेकिन संदर्भों के बीच भिन्न हो सकते हैं। नैतिकता पर्याप्त सीमा तक सत्य, करुणा, अहिंसा आदि के लिए सार्वभौमिक रहती है।	आमतौर पर सुसंगत, हालाँकि यदि किसी व्यक्ति की मान्यताएँ बदल जाती हैं तो यह बदल सकता है। उदाहरण के लिए, समलैंगिकता के बारे में विचार, चचेरे भाई-बहन का विवाह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बदलता रहता है।
स्वीकार्यता	नैतिकता एक विशेष समय और स्थान के भीतर पेशेवर और कानूनी दिशानिर्देशों द्वारा शासित होती है।	यह सांस्कृतिक मानदंडों से सम्बद्ध होती है।

हाल के दिनों में सिविल सेवकों के नैतिक क्षरण के कुछ मामले सामने आए हैं:

नैतिक क्षरण के कारण	इसे ठीक करने का प्रयास
• **जवाबदेही और जिम्मेदारी का अभाव:** अगर कुछ भी अच्छा होता है, तो यह दावा करने वाले लोगों की कोई कमी नहीं है कि इसके पीछे वे ही लोग हैं, लेकिन अगर कुछ भी गलत होता है, तो कोई भी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं है। • **नैतिकता, मूल्यों, सत्यानिष्ठा और आध्यात्मिकता का त्याग:** भौतिकवाद और सांसारिक सफलता की तुलना में इन चीजों का त्याग किया जाता है। • **सामाजिक स्वीकृति:** भ्रष्टाचार के प्रति समाज की स्वीकृति और सहनशीलता उच्च बनी हुई है। अच्छे लोगों का मौन, कुछ लोगों के नैतिक क्षरण से भी अधिक खतरनाक है। • **मेगा प्रशासन, धीमी कार्यप्रणाली और निर्णय लेने में विलम्ब:** प्रत्येक विभाग और संस्थान में लंबवत और क्षैतिज दोनों तरह से विकास हो रहा है। इससे पदानुक्रम में भ्रम पैदा हो गया है जिससे निर्णय लेने में देरी हो रही है। • **नरम-समाज, सहिष्णु जनता की राय, और राजनीतिक-व्यवसाय-नौकरशाही का गठजोड़:** जनता गलत कामों पर असंतुष्ट और असहिष्णु होती है। इससे निर्णय लेने वालों को भविष्य में ऐसे अपराध न करने के प्रति अधिक स्वतंत्रता मिलती है।	• **पारदर्शिता बढ़ाना:** प्रभावी कानून जिनमें सिविल सेवकों को अपने आधिकारिक निर्णयों के लिए कारण बताने की आवश्यकता होती है। • **व्हिसिल-ब्लोअर संरक्षण कानून:** अधिकारियों द्वारा गलत कार्यों के उचित 'सार्वजनिक हित खुलासे' की संरक्षा के लिए। • **अनुसंधान और अध्ययन:** जनसंपर्क पेशेवरों को नैतिक मुद्दों में शामिल होने के लिए स्वयं को सर्वोत्तम रूप से तैयार करने के लिए अकादमिक अनुसंधान और मुद्दों के प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन करना चाहिए। • **एथिक्स लेखापरीक्षा:** सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं की अखंडता के लिए जोखिमों की पहचान करना, प्रभावी वाह्य और आंतरिक शिकायत और निवारण प्रक्रियाएं। • **आचार संहिता का उल्लंघन और अवनमन:** इसमें अनुशासनात्मक नियमों के तहत मंजूरी और सजा का प्रावधान किया जाना चाहिए। • **कंप्यूटरीकरण और डिजिटलीकरण:** मध्य स्तर को खत्म करना, जिसमें लोगों को काम के लिए नौकरशाहों पर निर्भर रहना पड़ता है • **सीसीटीवी लगाना:** इससे यह डर पैदा होता है कि उन पर नजर रखी जा रही है।

1.25 संवैधानिक नैतिकता

- **संवैधानिक नैतिकता** का अर्थ संवैधानिक मूल्यों के अंतिम सिद्धांतों का पालन करना या उनके प्रति वफादार रहना है।
- इसमें एक समावेशी और लोकतांत्रिक राजनीतिक प्रक्रिया के प्रति प्रतिबद्धता शामिल है जिसमें व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों हित संतुष्ट होते हैं।
- भारतीय संविधान के संदर्भ में संवैधानिक नैतिकता के प्रमुख तत्व हैं - **विधि का शासन, समानता का अधिकार, सामाजिक न्याय, राष्ट्र की एकता और अखंडता, धर्मनिरपेक्षता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि।**
- सुप्रीम कोर्ट ने **4-1** के बहुमत के फैसले के तहत सबरीमाला मंदिर में सभी उम्र की महिलाओं को प्रवेश की अनुमति देने के लिए संवैधानिक नैतिकता पर भरोसा किया था। **नवतेज सिंह जौहर बनाम भारत संघ** मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने धारा 377 के पुराने प्रावधान को रद्द कर दिया और संवैधानिक नैतिकता को बरकरार रखा।

1.26 मानवीय मूल्य

- मूल्य कार्रवाई या परिणामों के उचित प्रवृत्तियों के संबंध में व्यापक प्राथमिकताएं हैं। परिणामस्वरूप, मूल्य किसी व्यक्ति की सही और गलत, या "क्या होना चाहिए" की भावना को प्रतिबिंबित करते हैं। यह किसी की आत्म-अवधारणा का एक महत्वपूर्ण पहलू स्थापित करता है और व्यक्ति के मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में कार्य करता है।

बुनियादी मान्यता + भावनाएं = मूल्य

- **कभी-कभी व्यक्तिगत मान्यताओं को मूल्य कहा जाता है:** व्यक्तिगत मान्यताएं जो लोगों को एक या दूसरे तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं उन्हें मूल्य कहा जाता है। ये मूल्य अन्य के अलावा नैतिक/नैतिक सिद्धांत, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक या कलात्मक हो सकते हैं।
- **मूल्यों के प्रति प्रवृत्ति:** लोग आम तौर पर उन मूल्यों को अपनाने के लिए पूर्व प्रवृत्त होते हैं जिनके साथ वे बड़े हुए है। लोग यह भी मानते हैं कि वे मूल्य ''सही'' हैं क्योंकि वे उनकी संस्कृति के मूल्य हैं।
- **नैतिक निर्णय लेने में मूल्यों की उपयोगिता:** नैतिक निर्णय लेने में प्रायः मूल्यों को एक दूसरे के विरुद्ध तौलना और यह तय करना शामिल होता है कि किन मूल्यों को अभिवर्धित करना है। जब लोगों के मूल्य भिन्न होते हैं तो संघर्ष उत्पन्न हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप प्राथमिकताओं और वांछनीयताओं में टकराव होता है।
- **मूल्य सीखे और आरोपित किए जाते हैं:** मूल्य प्रकृति द्वारा निर्मित नहीं होते हैं। उन्हें सीखा और संस्कारित किया जाता है। परिवार, उसका वातावरण और परंपराएँ सभी मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

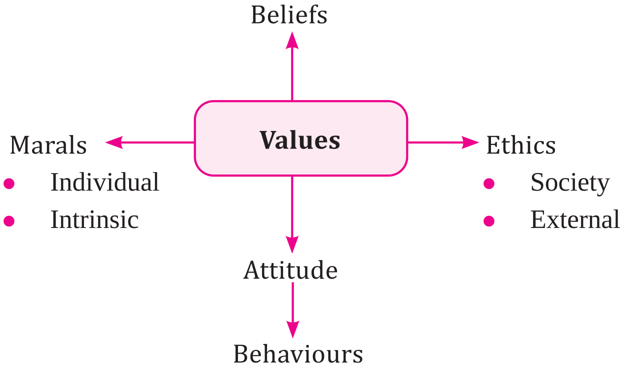

चित्र: मूल्यों के घटक

मान्यता

नैतिक सिद्धांत--------------------नैतिकता

व्यक्तिगत समाज

वाह्य

आतंरिक दृष्टिकोण

व्यवहार

चित्र: मूल्यों के घटक

> **उदाहरण**
>
> मोहन करुणा और सहानुभूति को महत्व देता है। मंजुली व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता को महत्व देती हैं। सुमन पर्यावरणीय सततता और संरक्षण की वकालत करती हैं। दरविश बौद्धिक जिज्ञासा और ज्ञान की खोज को प्राथमिकता देता है। ये व्यक्ति मानवीय मूल्यों के विभिन्न समूहों, क्रमशः सहानुभूति, स्वायत्तता, संरक्षण और ज्ञान-प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1.26.1 विभिन्न प्रकार के मूल्य

- **साध्य मूल्य और साधन मूल्य:** साध्य मूल्य स्वयं साध्य हैं, किसी अन्य साध्य को प्राप्त करने का साधन नहीं, जैसे प्रसन्नता, मुक्ति इत्यादि। साध्य मूल्य, साधन मूल्य के उपयोग के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं।
  - **उदाहरण:** भारतीय परंपरा में, धर्म, अर्थ और काम साधन मूल्य हैं, जबकि मुक्ति साध्य मूल्य है।

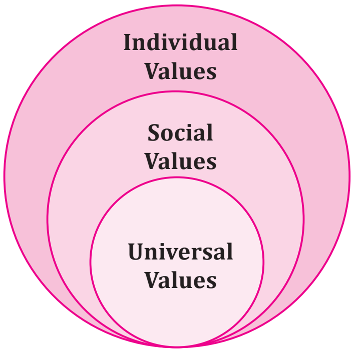

- **सापेक्ष और निरपेक्ष मूल्य:** सापेक्ष मूल्य लोगों के बीच और बड़े पैमाने पर विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के बीच भिन्न होते हैं।
  - **उदाहरण:** भौतिकवादी मूल्य व्यक्तिगत और समाज विशिष्ट हैं। एक निरपेक्ष मूल्य दार्शनिक रूप से पूर्ण है और व्यक्तिगत और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से स्वतंत्र है, साथ ही यह ज्ञात या अनुभव-जन्य है। अहिंसा, समानता, गैर-भेदभाव इत्यादि।
- **संरक्षित मूल्य:** संरक्षित मूल्य वह है जिसे कोई व्यक्ति छोड़ने को तैयार नहीं है, भले ही ऐसा करने के लाभ कुछ भी हों।
  - **उदाहरण:** कुछ लोग किसी अन्य व्यक्ति को मारने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं, भले ही इससे कई अन्य लोगों की जान बच रही हो।
- **व्यक्तिगत मूल्य:** व्यक्तिगत मूल्य वे हैं जो अकेले व्यक्ति द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, चाहे उसके सामाजिक सम्बन्ध कुछ भी हों।
  - **उदाहरण:** श्रम की गरिमा, संवेदनशीलता, स्वच्छता, विनम्रता, ईमानदारी, इत्यादि।
- **सामुदायिक मूल्य:** सामुदायिक मूल्य वे मूल्य हैं जो पूरे समुदाय द्वारा साझा किए जाते हैं।
  - उदाहरण: बड़ों की देखभाल करना और उनका सम्मान करना।
- **आंतरिक और बाह्य मूल्य:** आंतरिक मूल्य वे हैं जिनका स्वयं में आंतरिक मूल्य होता है, जैसे शांति, प्रेम, इत्यादि। बाह्य मूल्य केवल तभी मूल्यवान होते हैं जब उनका उपयोग आंतरिक मूल्य के साथ कुछ प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
  - उदाहरण के लिए, धन और बुद्धि, बाह्य मूल्य हैं जिनका उपयोग समृद्धि और ज्ञान जैसे आंतरिक मूल्यों को महसूस करने के लिए किया जाता है। मूल्य विभाजन परस्पर अनन्य नहीं है।
  - **उदाहरण:** एक धार्मिक पुस्तक को उसके आंतरिक मूल्य (धार्मिक संदेश/सिद्धांत) के कारण महत्व दिया जा सकता है या क्योंकि यह मोक्ष या निर्वाण जैसे उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता करती है।
- **नैतिकता, अनैतिकता और नीति-निरेक्षता:** मूल्यों को सही और गलत के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। नैतिक मूल्य वे हैं जो सही कार्य को प्रोत्साहित करते हैं, जैसे ईमानदारी, सहानुभूति, इत्यादि। अनैतिक मूल्य वे हैं जो लालच और वासना जैसे गलत कार्यों को प्रोत्साहित करते हैं। नीति-निरेक्ष मूल्य वे हैं जो न तो नैतिक हैं और न ही अनैतिक और जिनका नैतिकता से कोई लेना-देना नहीं है, उदाहरण के लिए, सुंदरता, फिटनेस इत्यादि।

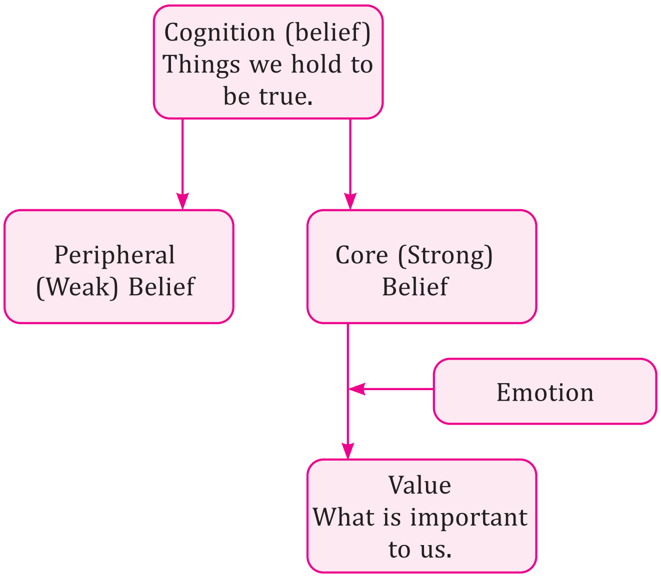

चित्र: मूल्य प्रणाली

संवैधानिक मूल्य

- न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, गैर-भेदभाव, धर्मनिरपेक्षता, सहिष्णुता, कमजोर वर्गों के प्रति करुणा आदि।

1.26.2 मूल्यों का महत्व

- **मानव व्यवहार का मार्गदर्शन करता है:** मूल्य वह सिद्धांत और मौलिक दृढ़ विश्वास हैं जो व्यवहार के लिए एक सामान्य मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। दृष्टिकोण और व्यवहार मूल्यों से प्रभावित होते हैं।
- **नैतिक निर्णय लेने में प्रेरक शक्ति:** मूल्यों को सार्वभौमिक रूप से नैतिक निर्णय लेने में एक प्रेरक शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है - मूल्यों को नैतिक निर्णय लेने में एक प्रेरक शक्ति के रूप में सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त है। वे उनकी ऐच्छिक गतिविधियों के लिए आधार के रूप में काम करते हैं और किसी व्यक्ति की पसंद को प्रभावित करते हैं।
- **अच्छे जीवन के लिए आंतरिक संदर्भ:** व्यक्तिगत मूल्य जीवन में क्या अच्छा, लाभकारी, महत्वपूर्ण, उपयोगी, सुंदर,

वांछनीय और रचनात्मक है, इसके लिए एक आंतरिक संदर्भ प्रदान करते हैं।

- **क्या सही है और क्या गलत है, इसके बीच अंतर करने में मदद करता है:** सभी मूल्यों में प्रभावी, संज्ञानात्मक और दिशात्मक पहलू होते हैं जो हमें यह तय करने में मार्गदर्शन करते हैं कि क्या सही है और क्या गलत है।
- **शांति और स्थिरता को बढ़ावा देता है:** मानवीय मूल्य मानवीय संबंधों के प्रबंधन के लिए एक उपकरण हैं और तनाव अधिक होने पर शांति के लिए एक उपकरण हैं। मूल्य हमें एक-दूसरे के साथ सद्भाव से रहने और व्यक्तिगत स्तर पर शांति में योगदान करने में सक्षम बनाते हैं।
- **मूल्य विशिष्ट कार्यों और स्थितियों से परे विस्तारित होते हैं:** मूल्य विशिष्ट कार्यों और स्थितियों से परे विस्तारित होते हैं।
- **उदाहरण,** आज्ञाकारिता और ईमानदारी ऐसे मूल्य हैं जो काम या स्कूल के साथ-साथ खेल, व्यवसाय और राजनीति में भी प्रासंगिक हो सकते हैं। यह मूल्यों को मानदंडों और दृष्टिकोण जैसी अधिक सीमित अवधारणाओं से अलग करता है, जो आमतौर पर विशिष्ट कार्यों, वस्तुओं या स्थितियों को संदर्भित करते हैं।
- **मानकों या मानदंडों के रूप में कार्य करता है:** मूल्यों का उपयोग कार्यों, नीतियों, लोगों और घटनाओं के चयन या मूल्यांकन में मानकों या मानदंडों के रूप में किया जाता है। लोग अपने पोषित मूल्यों के संभावित परिणामों के आधार पर निर्णय लेते हैं कि क्या अच्छा है या बुरा, क्या करना उचित है या क्या नहीं करना चाहिए।

1.27 नैतिक सिद्धांत, नैतिकता और मूल्य

- मूल्यों में सभी नैतिकताएं और नैतिक सिद्धांत शामिल हैं। सभी मूल्य नैतिक नहीं हैं. उदाहरण के लिए, बहादुरी.
- **यह एक मूल्य है, लेकिन यह नैतिक नहीं है।** जो व्यक्ति साहसी नहीं हैं उन्हें अनैतिक नहीं माना जा सकता।
- हमारे समाज में **संरक्षण एक मूल्य है, लेकिन नैतिकता नहीं।**
- जापान जैसे कुछ देशों में नैतिकता के साथ-साथ समय की पाबंदी को महत्व दिया जाता है। कड़ी मेहनत एक मूल्य है, लेकिन यह नैतिक मूल्य नहीं है।

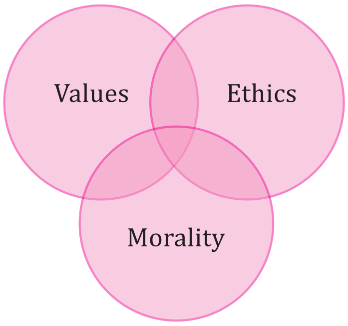

चित्र: नैतिक सिद्धांत, नैतिकता और मूल्य

नैतिक सिद्धांत के उदाहरण

- "केरल में एक युवा लड़के ने अपने स्कूल बैग में मिले 1 लाख रुपये लौटा दिए। उसने कहा कि उसने अपने माता-पिता से सीखा है कि हमेशा वह चीज वापस लौटाओ जो उसका नहीं है।" यह नैतिक सिद्धांत का एक उदाहरण है क्योंकि लड़के ने इस तथ्य के बावजूद कि वह पैसे अपने पास रख सकता था, सही काम किया। उन्होंने ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और ठोस नैतिक मानदंड का प्रदर्शन किया। ऐसे कार्य एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करते हैं कि सही कार्य करें। युवा दुनिया में बदलाव ला सकते हैं।
- **फिल्म के पात्रों से:** बॉलीवुड फिल्म **"लगान"** में, पात्र नैतिक सिद्धांत प्रदर्शित करते हैं जब वे उत्पीड़न के आगे झुकने से मना करते हैं। आमिर खान द्वारा अभिनीत भुवन के नेतृत्व में, वे अंग्रेजों द्वारा लगाए गए अन्यायपूर्ण करों के खिलाफ एकजुट होते हैं। बाधाओं के बावजूद, वे निष्पक्षता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के सिद्धांतों को कायम रखते हैं, अपने अधिकारों के लिए लड़ते हैं और एक राष्ट्र को प्रेरित करते हैं।

1.27.1 जब पूरा सिस्टम ही भ्रष्ट हो तो नैतिक कैसे बने रहें?

- **व्यक्तिगत ईमानदारी बनाए रखें:** दूसरों को ईमानदारी का उपदेश देने से पहले, आपको पहले इसे व्यवहार में लाना चाहिए। भय या दबाव के बजाय दृढ़ विश्वास के साथ ईमानदार रहें।
- **अपने काम को अच्छी तरह से जानें:** अपने अधीनस्थों को उचित दिशा में ले जाने के लिए, आपको कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं को उनसे बेहतर तरीके से जानना चाहिए।
- **साहस:** अपने प्रबंधकों को मौखिक रूप से अपनी सत्यनिष्ठ राय देकर साहस का प्रदर्शन करें। अपने अधीनस्थों पर साहसपूर्वक प्रभावी बनें

- **फूट डालो और राज करो:** बेईमानों को नजरअंदाज करते हुए ईमानदारों का समर्थन करें। किसी भी कर्मचारी के अच्छे काम को सार्वजनिक रूप से मान्यता दें।
- **दूसरों के लिए प्रेरणा बनें:** आप दुनिया में जो बदलाव देखना चाहते हैं, वह बनकर दूसरों को प्रेरित करें।
- **दयालु बनें:** अधीनस्थों के प्रति दयालु रहें और कठिन समय में उनकी मदद करें। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करें।
- **कानून का पालन करें:** अनपेक्षित जल्दबाजी न करें। एक भी आपराधिक कृत्य आपको जीवन भर परेशान कर सकता है और आपकी प्रतिष्ठा को नष्ट कर सकता है। इससे आपकी विश्वसनीयता भी कम होती है।
- **नेतृत्वकर्ता बनें:** नेतृत्व करें, जिम्मेदारी को यत्र-तत्र आरोपित करने की आदत न डालें।
- **अपने सिद्धांतों के लिए कष्ट सहें:** ईमानदारी बिना कीमत के नहीं मिलती। तबादलों के लिए सदैव तैयार रहें। एकनिष्ठ मन, सर्वोत्तम विश्रामस्थल है।

1.28 मूल्य संवर्धन में परिवार की भूमिका

परिवार एक सामाजिक संस्था है जिसमें सामान्य विश्वास, धर्म, रीति-रिवाज, संस्कृति, भाषा और जीवन शैली का बंधन होता है। यह परंपराओं और रीति-रिवाजों को पिछली पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक विरासत के रूप में आगे बढ़ाता है।

उद्धरण

- "स्व-निर्मित व्यक्ति अस्तित्व में नहीं है। हम हजारों अन्य लोगों से मिलकर बने हैं"।
- ''एक आदमी आमतौर पर अपने सबसे करीबी पांच लोगों के निकटस्थ होता है।''
- परिवार सामान्य विश्वास, धर्म, रीति-रिवाज, संस्कृति, भाषा और जीवन शैली के बंधन से बंधी एक सामाजिक संस्था है। यह परंपराओं और रीति-रिवाजों को पिछली पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक विरासत के रूप में आगे बढ़ाता है।

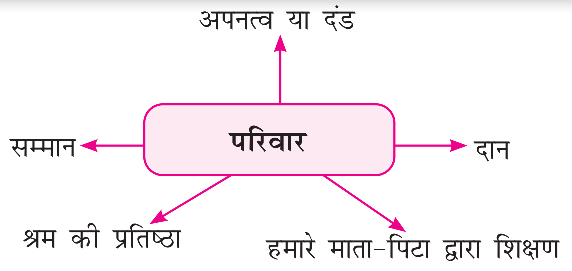

चित्र: मूल्यों के विकास में परिवार की भूमिका।

- **बच्चों के लिए मूल्य शिक्षण की प्रथम पाठशाला:** मूल्य प्राय: सांस्कृतिक प्रक्रियाओं, विशेष रूप से माता-पिता से बच्चों तक प्रसार और संचरण या समाजीकरण के माध्यम से प्राप्त किए जाते हैं।
  - **बच्चों के लिए,** परिवार और माता-पिता मूल्य शिक्षण की प्रथम पाठशाला के रूप में कार्य करते हैं। वे युवाओं में ईमानदारी और सच्चाई जैसे मूल्य उत्पन्न करते हैं। भारतीय पारंपरिक परिवारों में दादा-दादी प्राय: अपने बच्चों को महाभारत और रामायण जैसी पवित्र पुस्तकों से नैतिक/नैतिक सिद्धांत परक कहानियाँ सुनाते हैं। वे उनके साथ अपने जीवन के अनुभव और सबक भी साझा करते हैं। परिणामस्वरूप, युवा उनसे मूल्यों की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करते हैं।
- **अपनी पसंद का करियर बनाने की आजादी:** चाहे वह खेल हो, कला हो, फैशन हो या कुछ और। वे ही हैं जो अपने शेष जीवन का आनंद ले सकते हैं।
- **भावनात्मक सहायता प्रदान करें:** उसे ऐसे नकारात्मक विचारों से बाहर निकालने के लिए आवश्यक भावनात्मक सहायता, देखभाल और परामर्श प्रदान करना।
- **तनाव दूर करने में मदद के लिए पाठ्येतर गतिविधियों को प्रोत्साहित करना:** उसे फिल्म दिखाने ले जाएं और घर पर खुशियों के बारे में बात करें। ये सभी, बच्चे को फिर से ऊर्जावान बना सकते हैं।
- **परिवार शिक्षण का एक अनौपचारिक तरीका प्रदान करता है:** एक बच्चा अंतर्निहित रूप से प्यार, करुणा, आत्म-त्याग और साझा करने और देखभाल के मूल्यों को विकसित करता है। उदाहरण के लिए, बच्चों को अपने लंच बॉक्स को अपने दोस्तों के साथ और अपने खिलौनों को भाई-बहनों के साथ साझा करना सिखाया जाता है, जिससे उनमें दान और भाईचारे की भावना पैदा होती है।
- **बच्चों के लिए रोल मॉडल:** माता-पिता और परिवार के सदस्य बच्चों के लिए रोल मॉडल होते हैं, और वे प्राय: उनके कार्यों और व्यवहारों का अनुसरण करते हैं।
- **उदाहरण के लिए, यदि पिता उसकी मां को प्रताड़ित करता है,** तो बच्चे में महिलाओं के लिए समान मूल्य होने की संभावना होती है, हालांकि, यदि परिवार के सदस्य महिलाओं के साथ समान व्यवहार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं, तो युवा द्वारा भविष्य में भी ऐसा ही करने की संभावना है।
  - यदि वे जानबूझकर यातायात कानूनों का उल्लंघन करते हैं, तो उनके बच्चे भी ऐसा ही करेंगे।
  - यदि किसी लड़के का पालन-पोषण ऐसे समाज में होता है जहां लड़कियों के साथ दोयम दर्जे के नागरिक सदृश व्यवहार किया जाता है, तो वह अपनी पत्नी के साथ

भी ऐसा ही व्यवहार करेगा और इसमें कुछ भी गलत नहीं देखेगा।

  - यदि माता-पिता निजी और सार्वजनिक संपत्ति, दोनों पर स्वच्छता के प्रति ईमानदार हैं, तो उनके बच्चे भी ऐसे ही होंगे।

- **रचनात्मक और विनाशकारी दोनों भूमिकाएँ:** परिवार बच्चों में आदर्श स्थापित करने में लाभकारी और हानिकारक दोनों भूमिका निभा सकता है।
  - रचनात्मक भूमिका का एक उदाहरण बुजुर्ग या अंधे लोगों को सड़क पार करने में सहायता करना है, जो बच्चों में उनके माता-पिता द्वारा पैदा की गई बड़ों का सम्मान करने की अवधारणा से उत्पन्न होता है। हमारी संस्कृति में, अधिकांश लोग बचपन में ही अपने परिवारों में जाति व्यवस्था की समझ हासिल कर लेते हैं और विकसित कर लेते हैं।
- **माता-पिता द्वारा सिखाए गए मूल्यों में बदलाव:** एक और प्रवृत्ति जो हम देख सकते हैं वह है माता-पिता द्वारा सिखाए गए मूल्यों में बदलाव। वे सहयोग के स्थान पर प्रतिस्पर्धा को, परिवार और सामूहिकता के स्थान पर व्यक्तिवाद को तथा संतुष्टि और त्याग के स्थान पर उपभोक्तावाद को प्राथमिकता देते हैं।
- **परिवार और व्यक्तिगत मूल्यों के बीच विचलन:** पारंपरिक परिवारों के विघटन, माता-पिता दोनों के कामकाजी होने की अनिवार्यता, तकनीक-विस्फोट और साथियों के प्रभाव के कारण, हाल के वर्षों में प्रथम मूल्य प्रदाता के रूप में परिवार की भूमिका में गिरावट आई है। इसके अलावा, शिक्षा, आलोचनात्मक सोच, मीडिया और जागरूकता के परिणामस्वरूप, बच्चे पारिवारिक मूल्यों को अस्वीकार कर सकते हैं और उनसे विलग हो सकते हैं।

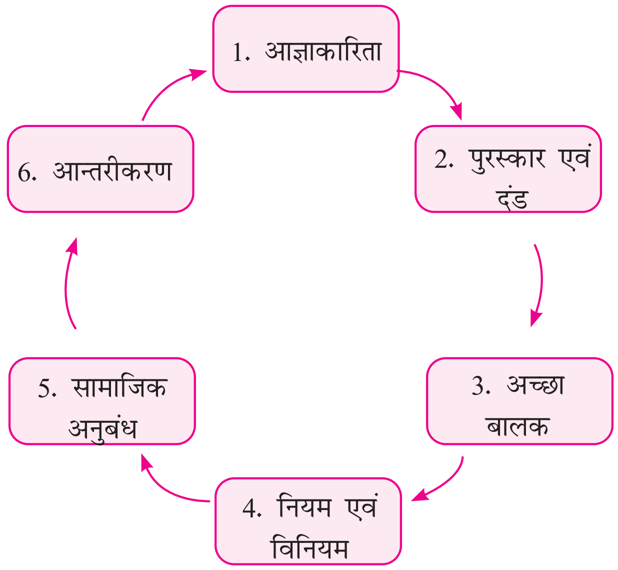

चित्र: मूल्य संवर्धन

मूल्य संवर्धन में परिवार की भूमिका के उदाहरण

- **काल्पनिक:** मिस्टर एक्स और मिसेज एक्स अपने घर में लैंगिक समानता को सक्रिय रूप से बढ़ावा देते हैं। वे निर्णय लेने में अपने बेटे और बेटी को शामिल करते हैं, उन्हें अपनी महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें लैंगिक रूढ़िवादिता को चुनौती देना सिखाते हैं। वे ऐसे मूल्यों को स्थापित करते हैं जो उनके बच्चों को सम्मान और निष्पक्षता का मॉडल बनाकर समाज में लैंगिक समानता की वकालत करने के लिए सशक्त बनाते हैं। परिणामस्वरूप, वे प्रायः स्कूल और सहकर्मी समूहों में लैंगिक समानता की वकालत करते हैं।
- **वास्तविक जीवन:** ''हर साल दिवाली के दौरान, मुंबई में एक परिवार ने जरूरतमंदों को कपड़े दान करने की परंपरा शुरू की।'' उनके बच्चे अब बड़े हो गए हैं और उन्होंने इस परंपरा को जारी रखा है, जिससे उनमें समाज को वापस देने का मूल्य पैदा हुआ है।''

1.29 मूल्य संवर्धन में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार, बच्चों में संस्कार विकसित करने का सबसे प्रभावी साधन शिक्षा है। जीवन के प्रथम वर्ष में, स्कूल एक ऐसा स्थान है जहाँ व्यवस्थित शिक्षा प्रदान की जाती है। स्कूल बच्चों को सबसे अधिक अवसर और अनुभव देता है। इसके अलावा, एक बच्चे को स्कूल में पहली बार उसके परिवार के अलावा समुदाय के सदस्यों, जैसे उसके साथियों, विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों से परिचित कराया जाता है। यह बच्चे को सिखाता है कि समाज में अपने व्यवहार को कैसे नियंत्रित किया जाए।

उद्धरण

- "बुद्धिमत्ता के साथ चरित्र ही शिक्षा का सच्चा लक्ष्य है।" **– मार्टिन लूथर किंग**
- "मूल्य-विहीन शिक्षा मनुष्य को अधिक चतुर शैतान बनाती प्रतीत होती है।" **– सी एस लुईस**
- "शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क को चिंतन, हृदय को महसूस करना और शरीर को कार्य करना सिखाना है।" **– जॉन डूई**

- **एक मजबूत मूल्य प्रणाली प्रदान करना:** माता-पिता का प्रमुख कार्य अपने बच्चों में मूल्यों को विकसित करना है। हालाँकि, शिक्षक और स्कूल इसमें महत्वपूर्ण भूमिका

निभाते हैं क्योंकि छात्र स्कूलों और संस्थानों में अधिक समय बिताते हैं। छात्र स्कूलों में और बाद में कॉलेजों में सीखते हैं कि समाज में कैसे व्यवहार करना है। सहकर्मी की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है और यह मूल्य संचय और मूल्य आंतरिककरण में अत्यधिक महत्वपूर्ण बनी हुई है।

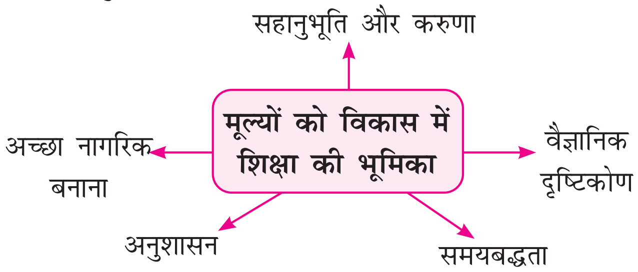

चित्र: मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका

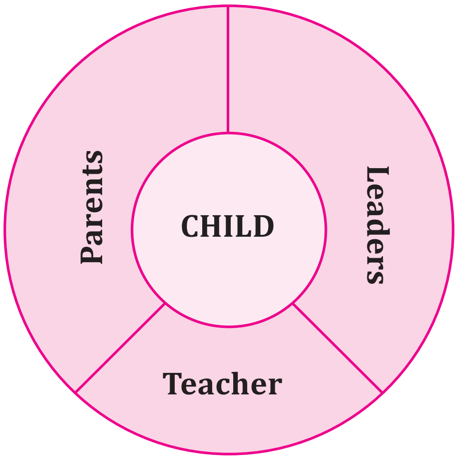

- **मानवीय मूल्यों को स्थापित करने के लिए सबसे प्रभावी एजेंट:** शिक्षा में मजबूत और स्थायी मूल्यों को उत्पन्न करने की क्षमता है। शिक्षा हमेशा एक मूल्य प्रणाली पर आधारित रही है जो शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक जीवन के विकास को बढ़ावा देती है।
- **बुनियादी शिष्टाचार और मूल्य:** जापानी प्रणाली में, बच्चों को स्कूल में उनके प्रथम चार वर्षों के दौरान बुनियादी शिष्टाचार और मूल्य सिखाए जाते हैं।
  - बच्चों को यह भी सिखाया जाता है कि वे अपने शौचालयों को ठीक से कैसे साफ करें। नीदरलैंड में कक्षा में प्लास्टिक की अनुमति नहीं है। प्रकृति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण स्थापित करने के लिए छात्रों को पहले कुछ वर्षों तक प्राकृतिक परिवेश में पढ़ाया जाता है।
- **पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें भी बच्चों के दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं:**
  - **फ्रांसीसी क्रांति:** स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व।
  - **आधुनिक इतिहास:** प्रिटोरिया तक गांधी की ट्रेन यात्रा – अन्याय के खिलाफ खड़े होना।
  - संवैधानिक आदर्शों में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सत्य, प्रेम व करुणा जैसे मानवीय मूल्य शामिल हैं।
  - **साहित्य:** यह हमें मानव स्वभाव और एक निश्चित युग के प्रमुख सामाजिक आदर्शों के बारे में सिखाता है।
  - विज्ञान के बारे में जिज्ञासा: इससे धार्मिक रूढ़िवादिता और बुरी प्रथाओं के बारे में प्रश्न उठते हैं।
- **खेल भावना और टीम भावना के मूल्य:** कम उम्र में कई खेलों में भाग लेने का अवसर विद्यार्थियों में टीम भावना विकसित करने में मदद करता है।
- **समग्र व्यक्तित्व विकास:** समग्र विकास के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण है:
  - विभिन्न संस्कृतियों के बीच करुणा, ईमानदारी और पारस्परिक साहचर्य की भावना पैदा करना;
  - करुणा और निस्वार्थता प्रदान करने के लिए वृद्धाश्रम।
  - सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देने के लिए संग्रहालय और सांस्कृतिक केंद्र।
  - पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए वृक्षारोपण और सड़क की सफाई।
  - योग आपकी सोच को आंतरिक बनाने में मदद करता है। एक बार जब आपका ध्यान केंद्रित हो जाएगा तो आपके पास विचारों की अधिक स्पष्टता होगी।
  - एकता में विविधता, संवैधानिक नैतिकता और गांधी जैसे दार्शनिकों की अंतर्दृष्टि।

चित्र: मूल्य परक शिक्षा

1.30 समाज की भूमिका

- समाज, अनौपचारिक शिक्षा के केंद्र में है जो सदस्यों की विरासत सुनिश्चित करती है। यह बच्चे के विकास को प्रेम और स्वामित्व की भावना के साथ अपनाता है, बच्चे को सामाजिक पैटर्न और दर्शन को महत्व देना सिखाता है।

- **समाज, सामाजिक परंपरा के माध्यम से मूल्य प्रदान करता है:** अंतरंगता, भाषा, प्रेम, समानता, जीने की इच्छा, कार्य, व्यवहार, नैतिकता, एकता, लगाव और ईर्ष्या के मूल्य सभी सामाजिक परंपरा के माध्यम से उधृत मूल्य हैं। ये स्पष्ट विशेषताएं हैं जो एक बच्चा समाज से सीखता है। सहयोगात्मक प्रयास के माध्यम से, समाज जाति जैसी सामाजिक उदासीनता की समस्याओं को समाप्त करता है। उदाहरण के लिए, भारतीय समाज में बुजुर्गों के पैर छूना।
- **समाज के माध्यम से संस्कृति का संचरण:** मनुष्य मानसिक और बौद्धिक रूप से विकसित होने के लिए समाज में मौजूद रहता है। समाज हमारी संस्कृति की रक्षा करता है और उसे भावी पीढ़ियों तक पहुंचाता है। **उदाहरण के लिए,** पीपल के पेड़ और पवित्र गंगा नदी की पूजा।
- **व्यक्तिगत अनुशासन समाज द्वारा** दंड और पुरस्कार के माध्यम से लगाया जाता है। उदाहरण के लिए, भारत में ब्रिटिश काल के दौरान दक्कन किसान विद्रोह में किसानों द्वारा साहूकारों के खिलाफ सामाजिक बहिष्कार का इस्तेमाल किया गया था।
- समाज में मनुष्य का अस्तित्व **मानसिक और बौद्धिक रूप से विकसित होने में है।**
- **नैतिकता और सदाचार का पोषण करता है:** समाज हमारी संस्कृति को संरक्षित करता है और भावी पीढ़ियों तक पहुंचाता है। व्यक्ति में नैतिकता एवं सदाचार का पोषण समाज द्वारा होता है।
- **सहिष्णुता और राष्ट्रीयता की भावना विकसित करती है:** समाज के माध्यम से सहिष्णुता और राष्ट्रीय एकता लायी जाती है। सहिष्णुता तब विकसित होती है जब कोई व्यक्ति कई जातियों, धर्मों और क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के व्यक्तियों वाले समुदाय में रहता है।
- सहयोगात्मक प्रयास के माध्यम से, समाज जाति जैसी सामाजिक उदासीनता की समस्याओं को समाप्त करता है।
- **समाज में अनुरूपता स्थापित की जाती है:** एक व्यक्ति अपने साथियों की नकल करने के लिए मजबूर होता है। यदि वे धूम्रपान करेंगे, तो वह धूम्रपान करेगा; यदि वे एकल परिवारों में रहते हैं, तो उसे अपने संयुक्त परिवार से अलग होने की आवश्यकता महसूस होगी, इत्यादि।
- **समाज के नए सदस्यों के बीच व्यवहार पैटर्न का पोषण करता है:** युवा विभिन्न प्रकार के व्यवहार पैटर्न से सम्बंधित होते हैं और साथियों के साथ सामान्य कारण विकसित करते हैं; पड़ोस का महत्व, विविधता में एकता, मानव सेवा ही ईश्वर सेवा, सहयोग और वृहद्-सद्गुण।

औद्योगीकरण की तीव्र तार्किकता और गहनता के साथ, सौंदर्य बोध, साहचार्यता, भावनात्मक विवेक और आध्यात्मिक मूल्य तेजी से बिगड़ रहे हैं। यह व्यापक पैमाने पर भौतिकवाद और अंतरराष्ट्रीय पूंजीवाद के साथ भी तेज हो गया है। परिणामस्वरूप, मूल्य संवर्धन में स्कूल, समाज और शिक्षकों की भूमिकाओं को फिर से परिभाषित किया जाना चाहिए क्योंकि मूल्य परिक्षेत्र की तेजी से उपेक्षा हुई है और मानव जीवन में मूल्यों को पुनर्जीवित करने की एक उभरती हुई आवश्यकता है।

समाज की भूमिका

- **समाज की रचनात्मक भूमिका:** किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में समाज महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। नैतिक मूल्यों को व्यापक रूप से कायम रखकर यह व्यक्तियों को नैतिक होने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।
- **समाज की विनाशकारी भूमिका:** इसी प्रकार, समाज एक अपराध को एक उपसांस्कृतिक अवयव के रूप में विकसित करने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। यदि यह अनैतिक व्यवहार/कार्यों को अस्वीकृत नहीं करता है, तो यह समाज में नैतिकता के मानकों को कम कर सकता है और इसके परिणामस्वरूप आपराधिक गतिविधियों में वृद्धि हो सकती है।

मूल्य बोध में समाज की भूमिका के उदाहरण

- **फिल्म के पात्रों से:** भारतीय समाज में मूल्यों को स्थापित करने में समाज की भूमिका पर फिल्म **''तारे जमीन पर''** प्रकाश डालती है। दर्शील सफारी द्वारा अभिनीत ईशान की यात्रा के माध्यम से, समाज उसके व्यक्तित्व को मान्यता और समर्थन प्रदान करता है, सहानुभूति, स्वीकृति और समझ को बढ़ावा मिलता है। यह सामूहिक प्रयास उन्हें अनुशासन अपनाने और सामाजिक प्रभाव की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रदर्शित करते हुए व्यक्तिगत विकास हासिल करने में मदद करता है।

1.31 मूल्य शिक्षा के लिए सिफारिशें

- **मूल्य-आधारित शिक्षा:** मूल्य शिक्षा को संपूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया में एकीकृत किया जाना चाहिए। व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण शिक्षा से होना चाहिए। शिक्षा ऐसा सूचना प्रकाश होना चाहिए जो दुनिया का सम्यक दिशा में मार्गदर्शन करे।

स्कूल में बुनियादी मानवीय सिद्धांतों पर जोर दिया जाना चाहिए।

- **गलत मूल्यों का पुनर्निर्माण:** मूल्यों को प्रदान करने के अलावा, शैक्षणिक संस्थान और शिक्षक विद्यार्थियों द्वारा सिखाए गए गलत मूल्यों के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उदाहरण के लिए, लिंग पूर्वाग्रह, शत्रुता, सांप्रदायिकता या जातिवाद को छात्रों में उचित दृष्टिकोण पैदा करके समाप्त किया जा सकता है।
- **शिक्षक छात्रों के रोल मॉडल के रूप में:** स्कूल के बाद, किशोर काफी समय स्कूलों में बिताते हैं, इसलिए शिक्षक, माता-पिता की तरह, अपने छात्रों के लिए रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं।
- **परिणामस्वरूप,** शिक्षक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन मूल्यों को अपनाकर छात्रों में नैतिक आदर्श पैदा कर सकते हैं। एक शिक्षक को अपने छात्रों के लिए एक आदर्श नैतिक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह न केवल ज्ञान अर्जन के एक सूत्रधार के रूप में कार्य करे, बल्कि एक मूल्य स्थापित करने वाले और आंतरिक अस्तित्व के परिवर्तक के रूप में भी कार्य करे।

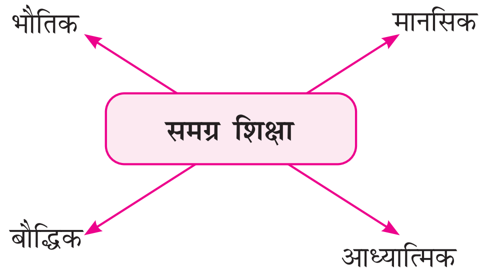

- **मूल्यों को विकसित करने के लिए खेलपूर्ण शिक्षा:** शिक्षक-प्रशिक्षक छात्रों को निष्पक्ष खेल, ईमानदारी, साहस और सहयोग जैसे मूल्यों को विकसित करने के लिए कक्षा में सक्रिय खेलों में संलग्न कर सकते हैं; सम्मान और प्रेम उन साथियों के साथ अंतर्क्रिया के माध्यम से बेहतर रूप से सीखा जाता है जिनके पास विविध सांस्कृतिक, जातीय और व्यक्तित्व विशेषताएं हैं।
- **समग्र दृष्टिकोण:** अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य करने के लिए प्रतिबद्ध होने पर, प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन उन सार्वभौमिक आदर्शों के प्रकाश में किया जाना चाहिए जिन्हें समाज स्वीकार करता है। ऐसे व्यवहार प्रकृति, पारिस्थितिकी या सामान्य रूप से जीवन के लिए विनाशकारी नहीं होने चाहिए। मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों को सार्वभौमिक प्रसन्नता या सभी के प्रति सद्भावना की दिशा में ले जाती है।
- **प्रौद्योगिकी और मूल्य शिक्षा:** क्योंकि प्रौद्योगिकी सार्थक निर्माण और अर्थहीन विनाश दोनों में सक्षम है, इसलिए भविष्य के टेक्नोक्रेट को प्रौद्योगिकी के रचनात्मक और विनाशकारी दोनों पहलुओं से पूरी तरह अवगत कराकर तैयार करने के लिए मूल्य शिक्षा की आवश्यकता है।

1.32 मूल्यों के क्षरण के कारण

- **भौतिकवाद:** इक्कीसवीं सदी में व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय, नैतिक, नैतिक सिद्धांत और आध्यात्मिक मूल्यों का व्यापक क्षरण देखा गया है। बढ़ते व्यावसायीकरण के साथ-साथ भौतिकवादी लाभों की बढ़ती चिंता, सामाजिक मूल्यों और नैतिकता को कमजोर कर रही है।

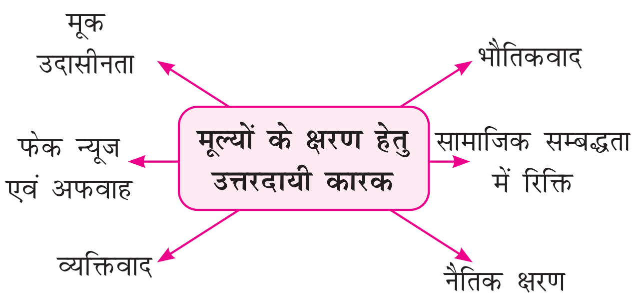

- **सामाजिक एकजुटता और स्थिरता में शून्यता:** निहित स्वार्थ, आतंकवाद, व्यवधान और सांसारिक जीवन तक पहुंच सभी ने सामाजिक एकजुटता और स्थिरता में एक रिक्ति में योगदान दिया है। इसलिए मूल्य धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त और नष्ट होते जा रहे हैं।
- **नैतिक पतन:** बढ़ती संशयवादिता, अधिकारों और कर्तव्यों के बीच का अंतराल, भौतिकवादी झुकाव, नैतिक पतन और हिंसा ने मनुष्य के ज्ञान को क्षति पहुंचाया है।
- **धार्मिक नेताओं की विफलता:** दुनिया भर में प्रमुख धार्मिक अनुयायियों के बीच कट्टरवाद के उदय ने आसन्न और उभरते संकट को नियंत्रित करने में धार्मिक नेताओं और प्राधिकरण की अक्षमता को उजागर किया है।
- **पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं का विघटन:** पारंपरिक परिवार नैतिक शिक्षा और मार्गदर्शन का एक प्रमुख स्रोत है। हालाँकि, हाल के वर्षों में, सम्बन्ध-विच्छेद, एकल-माता-पिता वाले घरों और मिश्रित परिवारों जैसे कारकों के कारण पारंपरिक पारिवारिक संरचनाएँ विघटित हुई हैं। इससे बच्चों के लिए नैतिक मूल्यों को सीखना और आत्मसात करना अधिक कठिन हो गया है।
- **रोल मॉडल की कमी:** अतीत में, लोगों को अपने माता-पिता, शिक्षकों और अन्य रोल मॉडल से नैतिक मूल्य सीखने की अधिक संभावना थी। हालाँकि, वर्तमान विश्व में, युवाओं

के लिए स्पष्ट रोल मॉडल की कमी है। इससे उनके लिए मजबूत नैतिक मूल्यों को विकसित करना और अधिक कठिन हो सकता है।

निष्कर्ष (मूल्य)

- **मूल्य और मूल्यपरक शिक्षा** समग्र रूप से माता-पिता, शिक्षकों और समाज के लिए चिंता का विषय बन गई है। मूल्य मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो हमारी वैश्विक दृष्टि, व्यवहार और दृष्टिकोण को परिभाषित करते हैं और वे किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सत्य, प्रेम, अहिंसा, ईमानदारी, समयबद्धता, सत्यनिष्ठा, आत्म-अनुशासन, समानता, साहस, स्वच्छता, लोकतंत्र और आत्मनिर्भरता को युवा मन में स्थापित करना होगा। ये सिद्धांत न केवल किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास के लिए बल्कि समग्र रूप से मानव जाति के अस्तित्व के लिए भी आवश्यक हैं।

1.33 नैतिकता से संबंधित महत्वपूर्ण शब्दावली

- **नैतिक एआई प्रशासन:** जिम्मेदार और जवाबदेह एआई प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए एआई प्रौद्योगिकियों के विकास और उपयोग के लिए नैतिक ढांचे, दिशानिर्देशों और नियमों की स्थापना एक प्रमुख केंद्र-बिंदु है।
- **नैतिक उपभोक्तावाद:** तेजी से, उपभोक्ता अपने क्रय निर्णयों के नैतिक निहितार्थों पर विचार कर रहे हैं, जिसमें निष्पक्ष व्यापार, टिकाऊ सोर्सिंग और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे कारक शामिल हैं।
- **कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) नैतिकता:** विभिन्न क्षेत्रों में एआई के बढ़ते उपयोग के साथ, इसके विकास, तैनाती और संभावित प्रभावों के संबंध में नैतिक विचारों ने महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है।
- **नैतिक अनुभूति:** यह इस बात का अध्ययन है कि लोग नैतिक निर्णय कैसे लेते हैं। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न प्रकार के संज्ञानात्मक कारक शामिल होते हैं, जैसे तर्क क्षमता, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की क्षमता और सहानुभूति रखने की क्षमता। नैतिक अनुभूति किसी व्यक्ति की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ उनके व्यक्तिगत अनुभवों से भी प्रभावित होती है।
- **नैतिक मूकता:** यह अनैतिक व्यवहार देखते समय मौन रहने की प्रवृत्ति है। यह तब भी हो सकता है जब लोग ऐसे तरीकों से संवाद करते हैं जो उनकी नैतिक मान्यताओं और प्रतिबद्धताओं को अस्पष्ट करते हैं। यह कई कारणों से हो सकता है, जैसे प्रतिशोध का डर, संलिप्तता की इच्छा, या किसी के स्वयं के नैतिक निर्णय में आत्मविश्वास की कमी।
- **एल्गोरिदम पूर्वाग्रह:** एल्गोरिदम और मशीन लर्निंग सिस्टम में पूर्वाग्रह के बारे में चिंताएं सामने आई हैं, जो स्वचालित निर्णय लेने के नैतिक निहितार्थों को उजागर करती हैं जो कुछ समूहों के खिलाफ भेदभाव कर सकती हैं या मौजूदा असमानताओं को सशक्त कर सकती हैं।
- **गोपनीयता बनाम सुरक्षा:** व्यक्तिगत गोपनीयता अधिकारों और उन्नत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता के बीच चल रही बहस, विशेष रूप से निगरानी प्रौद्योगिकियों और राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में, नैतिक दुविधाएं पैदा करती है।
- **नैतिक अदूरदर्शिता:** नैतिक मुद्दों को स्पष्ट रूप से देखने में असमर्थता। ऐसा तब हो सकता है जब लोग अपने तात्कालिक लक्ष्यों या हितों पर इतने अधिक केंद्रित होते हैं कि वे अपने कार्यों के नैतिक निहितार्थों पर विचार करने में विफल हो जाते हैं। मोरल मायोपिया दृष्टि में कमी अनैतिक व्यवहार को जन्म दे सकती है, जैसे धोखा देना, झूठ बोलना या चोरी करना। मोरल मायोपिया एक शब्द है जिसे मिनेट ड्रमराइट और पैट्रिक मर्फी ने अपने 1992 के लेख, "मार्केटिंग में नैतिक मुद्दे" में गढ़ा था।
- **संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह:** यह चिंतन की एक सुव्यवस्थित त्रुटि है जो तब होती है जब लोग अपने आसपास की दुनिया में जानकारी का प्रसंस्करण और व्याख्या कर रहे होते हैं। ये त्रुटियाँ लोगों को तर्कहीन निर्णय लेने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।
- **आबद्ध नैतिकता:** यह विचार कि लोगों की नैतिक विकल्प चुनने की क्षमता आंतरिक और वाह्य कारकों द्वारा सीमित है। इन कारकों में संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह, सामाजिक दबाव और संगठनात्मक मानदंड शामिल हो सकते हैं। परिणामस्वरूप, आम तौर पर नैतिक लोग भी कभी-कभी अनैतिक निर्णय ले सकते हैं।
- **अनुरूपता पूर्वाग्रह:** दूसरों के साथ सम्मिश्रण के लिए अपनी मान्यताओं या व्यवहार को बदलने की प्रवृत्ति। यह एक प्रकार का सामाजिक प्रभाव है जो लोगों को भीड़ के साथ चलने के लिए प्रेरित कर सकता है, भले ही वे लोग जो कर रहे हैं, उससे असहमत हों।
- **एथिकल फेडिंग:** यह एन टेनब्रुनसेल और डेविड मेसिक द्वारा अपने 1999 के लेख, "Ethical Fading" The Role of Self-Deception in Unethical behaviour" में उधृत एक शब्द है। नैतिक पतन तब होता है जब लोग ऐसे निर्णय लेते हैं जो वे उस स्थिति में नहीं लेते यदि उन्हें उन निर्णयों के नैतिक निहितार्थों के बारे में पूरी जानकारी होती।
- **भूमिका नैतिकता:** यह विचार कि समाज में उनकी भूमिका के आधार पर लोगों के अलग-अलग नैतिक मानक हो सकते

हैं। उदाहरण के लिए, जब एक डॉक्टर किसी मरीज का इलाज कर रहा होता है तो उसके नैतिक मानक अलग-अलग हो सकते हैं, बजाय इसके कि जब वह अपने सहकर्मियों के साथ बातचीत कर रहा हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि डॉक्टर से प्रत्येक भूमिका में एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है और ये अपेक्षाएं एक-दूसरे के साथ विरोधाभासी हो सकती हैं।

- **कार्यस्थल नैतिकता:** निष्पक्ष श्रम प्रथाओं, विविधता और समावेशन व नैतिक नेतृत्व जैसे मुद्दों ने ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि संगठन नैतिक कार्य वातावरण बनाने और सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का समाधान करने का प्रयास करते हैं।
- **नैतिक निरपेक्षता:** यह विश्वास है कि सार्वभौमिक नैतिक मानक हैं जो संदर्भ के निरपेक्ष सभी पर लागू होते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि परिस्थितियों के निरपेक्ष, कुछ कार्य हमेशा सही या गलत होते हैं।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. ऐसा माना जाता है कि मानवीय कार्यों में नैतिकता का पालन किसी संगठन/प्रणाली के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करेगा। यदि हां, तो नैतिकता मानव जीवन में क्या बढ़ावा देना चाहती है? नैतिक मूल्य उसके दैनिक कामकाज में आने वाले संघर्षों के समाधान में कैसे सहायता करते हैं? (उत्तर 150 शब्दों में दें) (2022)
2. आपको क्या करने का अधिकार है और क्या करना उचित है, इसके बीच अंतर जानना नैतिकता है। -पॉटर स्टीवर्ट. (उत्तर 150 शब्दों में दें) (2022)
3. "अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त होना है और श्रेष्ठ व्यक्तियों का देश बनना है, तो मुझे दृढ़ता से लगता है कि तीन प्रमुख सामाजिक सदस्य हैं जो बदलाव ला सकते हैं। वे पिता, माता और शिक्षक हैं। - अब्दुल कलाम। (उत्तर 150 शब्दों में दें) (2022)
4. निम्नलिखित पर प्रत्येक 30 शब्दों में संक्षिप्त नोट्स लिखें: (i) संवैधानिक नैतिकता (ii) हितों का टकराव (2022)
5. "हम वाह्य दुनिया में तब तक शांति नहीं प्राप्त कर सकते जब तक कि हम अपने भीतर शांति प्राप्त नहीं कर लेते।" -दलाई लामा (उत्तर 150 शब्दों में) (2021)
6. परस्पर निर्भरता के बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं है। हमें एक-दूसरे की जरूरत है, और यह हम जितनी जल्दी सीखेंगे कि यह हम सभी के लिए बेहतर है। -एरिक एरिकसन (उत्तर 150 शब्दों में) (2021)
7. ''शरणार्थियों को उस देश में वापस नहीं भेजा जाना चाहिए जहां उन्हें उत्पीड़न या मानवाधिकारों के उल्लंघन का सामना करना पड़े।'' मुक्त समाज के साथ लोकतांत्रिक होने का दावा करने वाले राष्ट्र द्वारा नैतिक आयामों का उल्लंघन किए जाने के संदर्भ में कथन का परीक्षण करें। (2021)
8. व्यापक राष्ट्रीय शक्ति (सीएनपी) के निम्नलिखित तीन प्रमुख घटकों अर्थात मानव पूंजी, सॉफ्ट पावर (संस्कृति और नीतियां) और सामाजिक सद्भाव के संवर्धन में नैतिकता और मूल्यों की भूमिका पर चर्चा कीजिए। (2020)
9. "शिक्षा कोई निषेधाज्ञा नहीं है; यह व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के सर्वांगीण विकास के लिए एक प्रभावी और व्यापक उपकरण है। उपरोक्त कथन के आलोक में नई शिक्षा नीति, 2020 (NEP, 2020) का परीक्षण कीजिए। (2020)
10. विधियों और नियमों के बीच अंतर बताएं. उन्हें तैयार करने में नैतिकता की भूमिका पर चर्चा करें। (2020)
11. सार्वजनिक जीवन के मूल सिद्धांत क्या हैं? इनमें से किन्हीं तीन को उपयुक्त उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द) (2019)
12. 'संवैधानिक नैतिकता' शब्द का क्या अर्थ है? कोई संवैधानिक नैतिकता को कैसे कायम रख सकता है? (2019)
13. सिविल सेवा के संदर्भ में सार्वभौमिक प्रकृति के तीन बुनियादी मूल्यों को बताएं और उनके महत्व पर प्रकाश डालें। (150 शब्द) (2018)
14. जनहित से क्या तात्पर्य है? लोक हित में सिविल सेवकों द्वारा अपनाए जाने वाले सिद्धांत और प्रक्रियाएँ क्या हैं? (150 शब्द) (2018)
15. कार्यों की नैतिकता के संबंध में, एक दृष्टिकोण यह है कि साधन सर्वोपरि महत्व के हैं और दूसरा दृष्टिकोण यह है कि साध्य, साधन को उचित ठहराता है। आपके अनुसार कौन सा दृष्टिकोण अधिक उपयुक्त है? अपने उत्तर का औचित्य सिद्ध कीजिए। (2018)
16. आधुनिक समय में नैतिक मूल्यों का संकट अच्छे जीवन की संकीर्ण धारणा से जुड़ा है। चर्चा कीजिए। (2017)
17. बताएं कि नैतिकता सामाजिक और मानव कल्याण में कैसे योगदान देती है। (2016)
18. कानून और नैतिकता को मानव आचरण को नियंत्रित करने के दो उपकरण माना जाता है ताकि इसे सभ्य सामाजिक अस्तित्व के लिए अनुकूल बनाया जा सके। चर्चा करें कि वे इस उद्देश्य को कैसे प्राप्त करते हैं। उदाहरण देते हुए दिखाएँ कि दोनों अपने दृष्टिकोण में किस प्रकार भिन्न हैं। (2016)

19. 'पर्यावरणीय नैतिकता' से क्या तात्पर्य है? अध्ययन क्यों आवश्यक है? पर्यावरणीय नैतिकता के दृष्टिकोण से किसी एक पर्यावरणीय मुद्दे पर चर्चा करें। (150 शब्द) (2015)

20. निम्नलिखित के बीच अंतर करें (2015)

a. विधि और नैतिकता

b. नैतिकतापरक प्रबंधन और नैतिकता का प्रबंधन.

c. व्यक्तिगत नैतिकता और व्यावसायिक नैतिकता.

21. मूल्यों एवं नैतिकता से आप क्या समझते हैं? व्यावसायिक रूप से सक्षम होने के साथ-साथ नैतिक होना किस प्रकार महत्वपूर्ण है? (2013)

22. प्राय: कहा जाता है कि राजनीति और नैतिकता एक साथ नहीं चल सकतीं. इस संबंध में आपकी क्या राय है? उदाहरण देकर अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए। (2013)

केस स्टडी

1. आप एक बड़े शहर के नगर निगम आयुक्त हैं, आपकी छवि एक बहुत ही ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी की है। आपके शहर में एक विशाल बहुउद्देशीय मॉल निर्माणाधीन है जिसमें बड़ी संख्या में दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी कार्यरत हैं। एक रात, बरसात के दौरान, छत का एक बड़ा हिस्सा ढह गया, जिससे दो नाबालिगों सहित चार मजदूरों की तत्काल मृत्यु हो गई। कई अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए जिन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी। इस दुर्घटना के परिणामस्वरूप बड़ा हंगामा हुआ और सरकार को जांच गठित करनी पड़ी। आपकी प्रारंभिक जांच से कई विसंगतियों का पता चला है। निर्माण में प्रयुक्त सामग्री निम्न गुणवत्ता की थी। स्वीकृत भवन योजना में केवल एक बेसमेंट की अनुमति के बावजूद, एक अतिरिक्त बेसमेंट का निर्माण किया गया है। नगर निगम के बिल्डिंग इंस्पेक्टर द्वारा समय-समय पर किए जाने वाले निरीक्षण के दौरान इसे नजरअंदाज कर दिया गया। आपकी पूछताछ में, आपने देखा कि शहर के जोनल मास्टर प्लान में ग्रीन बेल्ट और स्लिप रोड के लिए निर्धारित क्षेत्रों पर अतिक्रमण होने के बावजूद मॉल के निर्माण को हरी झंडी दे दी गई थी। मॉल के निर्माण की अनुमति पिछले नगर निगम आयुक्त द्वारा दी गई थी जो न केवल आपके वरिष्ठ और पेशेवर रूप से आपके परिचित हैं, बल्कि आपके अच्छे मित्र भी हैं। प्रथम दृष्टया मामला नगर निगम के अधिकारियों और बिल्डरों के बीच व्यापक सांठगांठ का प्रतीत होता है। आपके सहकर्मी आप पर पूछताछ धीमी गति से करने का दबाव डाल रहे हैं। बिल्डर, जो अमीर और प्रभावशाली है, राज्य कैबिनेट में एक शक्तिशाली मंत्री का करीबी रिश्तेदार है। बिल्डर आपको मामले को रफा-दफा करने के लिए मना रहा है और ऐसा करने के लिए आपको मोटी रकम देने का वादा कर रहा है। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि यदि यह मामला जल्द से जल्द उनके पक्ष में हल नहीं हुआ; तो उनके कार्यालय में कोई है जो POSH अधिनियम के तहत आपके खिलाफ मामला दर्ज करने की प्रतीक्षा कर रहा है। मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए। इस स्थिति में आपके पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं? अपनी चिन्हित कार्यवाही की व्याख्या कीजिए। (2020)

दृष्टिकोण

- **प्रस्तावना:** व्यक्तिगत बनाम व्यावसायिक नैतिकता, ईमानदारी और साहस जैसे नैतिक पहलुओं बनाम चापलूसी और शामिल हितधारकों जैसे मुद्दों की पहचान करना।
- **मुख्य भाग:** किसी कल्याणकारी परियोजना से विकासात्मक परियोजनाओं में धन के पुनर्विनियोजन में शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए। योग्यता के आधार पर विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण कीजिए।
- **निष्कर्ष:** योग्यता के अनुसार विभिन्न संभावित विकल्पों/प्रतिक्रियाओं की खोज करना। कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनना और उसे नैतिक सिद्धांत के साथ प्रमाणित करना।

2. राजेश कुमार एक वरिष्ठ लोक सेवक हैं, जो ईमानदारी और स्पष्टवादिता हेतु प्रतिष्ठित हैं, वर्तमान में वित्त मंत्रालय में बजट प्रभाग के प्रमुख के रूप में तैनात हैं। उनका विभाग वर्तमान में राज्यों को बजटीय सहायता प्रदान करने में व्यस्त है, जिनमें से चार राज्यों में वित्तीय वर्ष के भीतर चुनाव होने हैं। इस साल के वार्षिक बजट में राष्ट्रीय आवास योजना (एनएचएस) के लिए 78300 करोड़ रुपये आवंटित किए गए, जो समाज के कमजोर वर्गों के लिए केंद्र प्रायोजित सामाजिक आवास योजना है। जून तक एनएचएस के लिए 775 करोड़ रुपये निकाले जा चुके हैं। वाणिज्य मंत्रालय लंबे समय से निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक दक्षिणी राज्य में एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) स्थापित करने का मामला चला रहा था। केंद्र और राज्य के बीच दो साल की विस्तृत चर्चा के बाद, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अगस्त में इस परियोजना को मंजूरी दे दी। आवश्यक भूमि अधिग्रहण के लिए प्रक्रिया शुरू की गई थी। अठारह महीने पहले, एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र इकाई (पीएसयू) ने क्षेत्रीय गैस ग्रिड के लिए उत्तरी राज्य में एक बड़ा प्राकृतिक गैस प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की आवश्यकता का अनुमान लगाया था। आवश्यक भूमि पहले से ही पीएसयू के कब्जे में है। गैस ग्रिड राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा रणनीति का एक अनिवार्य

घटक है। वैश्विक निविदा के तीन दौर के बाद, परियोजना एक बहुराष्ट्रीय कंपनी, मेसर्स XYZ हाइड्रोकार्बन को आवंटित की गई थी। बहुराष्ट्रीय कंपनी को भुगतान की पहली किश्त दिसंबर में दी जानी है। वित्त मंत्रालय से इन दो विकासात्मक परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त 6000 करोड़ रुपये के समय पर आवंटन के लिए कहा गया था। एनएचएस आवंटन से इस पूरी राशि के पुनर्विनियोजन की सिफारिश करने का निर्णय लिया गया। फाइल को उनकी टिप्पणियों और आगे की प्रक्रिया के लिए बजट विभाग को भेज दिया गया था। केस फाइल का अध्ययन करने पर, राजेश कुमार को एहसास हुआ कि इस पुनर्विनियोजन से एनएचएस के निष्पादन में अत्यधिक देरी हो सकती है, जो कि वरिष्ठ राजनेताओं की रैलियों में बहु-प्रचारित परियोजना है। इसके अनुरूप, वित्त की अनुपलब्धता से एसईजेड में वित्तीय नुकसान होगा और एक अंतरराष्ट्रीय परियोजना में भुगतान में देरी के कारण राष्ट्रीय शर्मिंदगी होगी। राजेश कुमार ने इस मामले पर अपने वरिष्ठों से चर्चा की. उन्हें बताया गया कि राजनीतिक रूप से संवेदनशील इस स्थिति पर तुरंत कार्रवाई करने की जरूरत है। राजेश कुमार को पैसों की हेराफेरी का एहसास हुआ। एनएचएस संसद में सरकार के लिए कठिन प्रश्न खड़े कर सकता है।

इस मामले के संदर्भ में निम्नलिखित पर चर्चा कीजिए:

- किसी कल्याणकारी परियोजना से विकासात्मक परियोजनाओं के लिए धन के पुनर्विनियोजन में शामिल नैतिक मुद्दे।
- सार्वजनिक धन के समुचित उपयोग की आवश्यकता को देखते हुए, राजेश कुमार के लिए उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कीजिए। क्या त्यागपत्र देना एक उचित विकल्प है? (2020)

दृष्टिकोण

- **प्रस्तावना:** मामले में टकराव का वर्णन करते हुए परिचय दें।
- **मुख्य भाग:** प्रश्न के पहले भाग में, पुनर्विनियोजन में शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए। प्रश्न के दूसरे भाग में सार्वजनिक धन के समुचित उपयोग की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए। प्रत्येक विकल्प के गुण और दोषों को समझाते हुए राजेश कुमार के समक्ष उपलब्ध कार्रवाई की चर्चा कीजिए।
- **निष्कर्ष:** फिर, राजेश कुमार द्वारा अपनाई जाने वाली कार्रवाई का सुझाव दीजिए।

3. रामेश्वर ने प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की और वह इस अवसर से उत्साहित थे कि उन्हें सिविल सेवा के माध्यम से देश की सेवा करने का अवसर मिलेगा। हालाँकि, सेवाओं में शामिल होने के तुरंत बाद, उन्हें एहसास हुआ कि चीजें उतनी अच्छी नहीं हैं जितनी उन्होंने कल्पना की थी। उन्होंने पाया कि उन्हें सौंपे गए विभाग में कई तरह की विसंगतियां व्याप्त हैं। उदाहरण के लिए, विभिन्न योजनाओं और अनुदानों के तहत धन का दुरुपयोग किया जा रहा था। आधिकारिक सुविधाओं का उपयोग प्रायः अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा व्यक्तिगत जरूरतों के लिए किया जाता था। कुछ समय बाद उन्होंने देखा कि कर्मचारियों की भर्ती की प्रक्रिया भी मानक के अनुरूप नहीं थी। भावी उम्मीदवारों को एक परीक्षा देनी थी जिसमें बहुत अधिक नकल चल रही थी। कुछ अभ्यर्थियों को परीक्षा में बाहरी सहायता प्रदान की गई। रामेश्वर ने इन घटनाओं को अपने वरिष्ठों के ध्यान में लाया। हालाँकि, उन्हें सलाह दी गई कि वे अपनी आँखें, कान और मुँह बंद रखें और इन सभी चीजों को नजरअंदाज करें जो उच्च अधिकारियों की मिलीभगत से हो रही थीं। रामेश्वर को बहुत निराशा और असहजता महसूस हुई। वह आपसे सलाह लेने के लिए आपके पास आता है। उन विभिन्न विकल्पों को इंगित करें जो आपके अनुसार इस स्थिति में उपलब्ध हैं। आप उसे इन विकल्पों का मूल्यांकन करने और अपनाए जाने वाले सबसे उपयुक्त मार्ग को चुनने में कैसे मदद करेंगे? (250 शब्द) (20 अंक) (2014)

दृष्टिकोण

- **प्रस्तावना:** व्यक्तिगत हितों के लिए सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग, विभागीय उदासीनता, सतर्कता और संगठनात्मक नैतिकता जैसे नैतिक मुद्दों पर चर्चा करें।
- **मुख्य भाग:** योग्यता के आधार पर विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण कीजिए जैसे वरिष्ठों से सलाह स्वीकार करना, मूल्यांकन रिपोर्ट का मसौदा तैयार करना या व्हिसलब्लोअर के रूप में कार्य करना। इसके अलावा, चर्चा कीजिए कि अनुनय जैसे नैतिक मूल्य कैसे सहायक हो सकते हैं।
- **निष्कर्ष:** फिर, नैतिक मूल्यों के आधार पर रामेश्वर द्वारा अपनाई जाने वाली कार्रवाई का सुझाव दीजिए।

4. वित्त मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में, सरकार जिन नीतिगत निर्णयों की घोषणा करने वाली है, उनके बारे में कुछ गोपनीय और महत्वपूर्ण जानकारी तक आपकी पहुंच है। इन निर्णयों का आवास और निर्माण उद्योग पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की संभावना है। अगर बिल्डरों को यह जानकारी पहले से मिल जाए तो वे भारी मुनाफा कमा सकते हैं। बिल्डरों में से एक ने सरकार के लिए बहुत सारे गुणवत्तापूर्ण काम किए हैं और वह आपके उस तत्काल

वरिष्ठ का करीबी माना जाता है, जो आपसे उक्त बिल्डर को यह जानकारी प्रदान करने के लिए कहता है।

आपके लिए क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

इनमें से प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिए और कारण बताते हुए वह विकल्प चुनिए जिसे आप अपनाएंगे। (20 अंक, 250 शब्द) (2013)

दृष्टिकोण

- **प्रस्तावना:** व्यावसायिक नैतिकता के उल्लंघन जैसे नैतिक पहलुओं की व्याख्या कीजिए और इसमें शामिल विभिन्न हितधारकों की पहचान कीजिए।
- **मुख्य भाग:** विभिन्न संभावित विकल्पों की खोज करना जैसे कि वरिष्ठ को अधिनियम की अनधिकृतता के बारे में बताना या बिल्डरों की जानकारी का खुलासा करना।
- **निष्कर्ष:** उपलब्ध सर्वोत्तम विकल्प का सुझाव दें जो नैतिकता को ध्यान में रखता हो।

5. आप एक आगामी इन्फोटेक कंपनी के कार्यकारी निदेशक हैं जो बाजार में अपना नाम कमा रही है। श्री ए, जो एक स्टार कलाकार हैं, मार्केटिंग टीम का नेतृत्व कर रहे हैं। एक वर्ष की अल्प अवधि में, उन्होंने इस प्रकार से राजस्व दोगुना करने के साथ-साथ कंपनी के लिए एक उच्च ब्रांड इक्विटी बनाने में मदद की है, कि आप उन्हें पदोन्नति देने के बारे में सोच रहे हैं। हालाँकि, महिला सहकर्मियों के प्रति उनके रवैये के बारे में आपको कई स्रोतों से जानकारी मिलती रही है; विशेषत: महिलाओं पर भद्दे कमेंट्स करने की उनकी आदत. इसके अलावा, वह अपनी महिला सहकर्मियों सहित टीम के सभी सदस्यों को नियमित रूप से अश्लील एसएमएस भेजता है। एक दिन, देर शाम, श्रीमती एक्स, जो श्री ए की टीम के सदस्यों में से एक हैं, आपके पास परेशान होकर आती हैं। वह श्री ए के निरंतर दुर्व्यवहार के बारे में शिकायत करती है, जो उसके प्रति अवांछनीय रूप से बढ़ रहा है और यहां तक कि अपने केबिन में उसे अनुचित तरीके से छूने की कोशिश भी की है। उन्होंने अपना त्यागपत्र दे दिया और आपका कार्यालय छोड़ दिया।

आपके लिए क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

इनमें से प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिए और कारण बताते हुए वह विकल्प चुनिए जिसे आप अपनाएंगे। (20 अंक, 250 शब्द) (2013)

दृष्टिकोण

- **प्रस्तावना:** मुद्दे और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए, व्यावसायिक नैतिकता, आचार संहिता और प्राधिकार के दुरुपयोग पर भी चर्चा कीजिए।
- **मुख्य भाग:** गुणों के आधार पर विभिन्न संभावित विकल्पों की खोज कीजिए। इसके अलावा, नवीनतम तथ्यों और आंकड़ों के साथ कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न को रोकने और प्रतिबंधित करने के लिए एससी विशाखा दिशानिर्देशों और विधायी उपायों के बारे में चर्चा कीजिए।
- **निष्कर्ष:** महिलाओं के लिए संस्थागत सुरक्षा उपायों को मजबूत करने के उपायों के साथ-साथ उपलब्ध सर्वोत्तम विकल्प का सुझाव दीजिए।

❖ ❖ ❖

2 अभिवृत्ति

"अभिवृत्ति एक छोटी सी वस्तु है जो बड़ा बदलाव लाती है।" **–विंस्टन एस. चर्चिल**

पाठ्यक्रम
अभिवृत्तिः विषय-वस्तु/अवयव, संरचना और कार्य; इसका प्रभाव तथा विचार और व्यवहार से संबंध; नैतिक और राजनीतिक अभिवृत्ति; सामाजिक प्रभाव और अनुनयन

परिचय

अभिवृत्ति **मानव मनोविज्ञान का एक मूलभूत पहलू है जो हमारे विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को प्रभावित करती है।** यह लोगों, घटनाओं, विचारों या स्थितियों के प्रति हमारे पूर्वाग्रह या दृष्टिकोण को संदर्भित करती है।

अभिवृत्ति **सकारात्मक, नकारात्मक या तटस्थ हो सकती है।** इन अभिवृत्तियों को व्यक्तिगत अनुभवों, सांस्कृतिक प्रभावों, पालन-पोषण और सामाजिक संपर्कों सहित विभिन्न कारकों के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। अभिवृत्तियाँ निश्चित नहीं होती हैं और नई जानकारी, अंतर्दृष्टि या व्यक्तिगत विकास के आधार पर समय के साथ बदल सकती हैं।

उद्धरण

- "आप अक्सर अपनी अभिवृत्ति बदलकर अपनी परिस्थितियों को बदल सकते हैं"। **–एलेनोर रूजवेल्ट**
- "अभिवृत्ति एक छोटी सी चीज है जो बड़ा बदलाव लाती है।" **–विंस्टन चर्चिल**

2.1 अभिवृत्ति के अवयव (एबीसी घटक)

- अभिवृत्ति के अवयव उन **तरीकों को संदर्भित करते है जिनके द्वारा विश्वासों, मूल्यों और भावनाओं जैसी विभिन्न मनोवैज्ञानिक संरचनाओं को अभिवृत्ति में व्यक्त किया जाता है।**

अभिवृत्ति के घटक

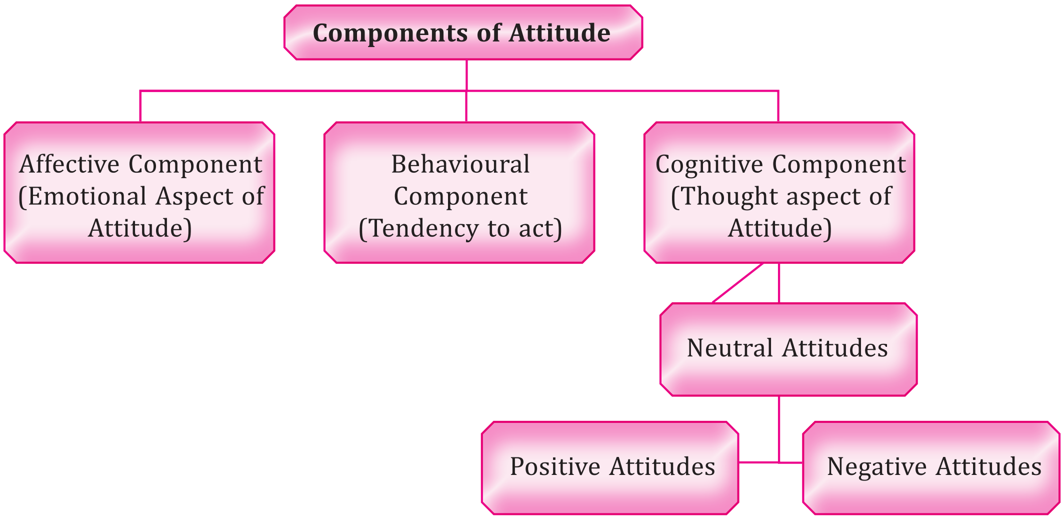

चित्रः अभिवृत्ति के अवयव

1. **अभिवृत्ति का प्रभावशाली घटकः** अभिवृत्ति का भावनात्मक घटक किसी विशेष विषय, व्यक्ति या स्थिति से जुड़ी **भावनात्मक प्रतिक्रियाओं, भावनाओं और मनोभाव को शामिल करता है।** यह अभिवृत्ति विषय के प्रति व्यक्ति के भावनात्मक अभिविन्यास का प्रतिनिधित्व करता है। अभिवृत्ति के प्रभावशाली घटक में शामिल हैं:

भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ:	**उदाहरण:** रॉकी अपने पसंदीदा बैंड के लाइव संगीत समारोह में भाग लेने के दौरान उत्साहित और आनंदित महसूस करता है। यह भावनात्मक जुड़ाव बैंड और संगीत के प्रति उसकी समग्र सकारात्मक अभिवृत्ति में योगदान देता है।
भावनाएँ तथा मनोभाव:	**उदाहरण:** जेएनयू और डीयू के छात्र आम तौर पर अपने विश्वविद्यालय के प्रति गर्व और निष्ठा की गहरी भावना विकसित करते हैं, इसे व्यक्तिगत विकास और यादगार यादों का स्थान मानते हैं। ये संवेदनाएँ और भावनाएँ उनके मातृ संस्थान के प्रति उनके मजबूत सकारात्मक दृष्टिकोण में योगदान करती हैं।

2. **अभिवृत्ति का व्यावहारिक घटक:** अभिवृत्ति का व्यावहारिक घटक किसी अभिवृत्ति से जुड़े कार्यों, इरादों और अभिव्यक्तियों से संबंधित होता है। यह दर्शाता है कि अभिवृत्ति किस प्रकार अवलोकनीय व्यवहार में परिवर्तित होती है। अभिवृत्ति के व्यावहारिक अवयव में शामिल हैं:

क्रिया प्रवृत्तियाँ:	**उदाहरण:** पर्यावरण-समर्थक व्यवहार वाले संदीप का पुनर्चक्रण, पुनः प्रयोज्य उत्पादों का उपयोग करने और ऊर्जा संरक्षण जैसे पर्यावरण-अनुकूल व्यवहारों में संलग्न होने के प्रति एक मजबूत झुकाव होता है।
अभिप्रेत या वास्तविक व्यवहार:	**उदाहरण:** शिव एक स्थानीय दान के लिए स्वेच्छा से काम करने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखता है। वह सक्रिय रूप से स्वयंसेवी अवसरों की तलाश करता है, आयोजनों के लिए नाम दर्ज कराता है और इस उद्देश्य का समर्थन करने के लिए अपना समय और प्रयास समर्पित करता है।
अभिव्यक्तियाँ और प्रतिक्रियाएँ:	**उदाहरण:** अभय यूट्यूब पर ए.आर. रहमान के संगीत कार्यक्रम देखकर, उनके साक्षात्कार सुनकर और दूसरों के साथ उनके काम पर चर्चा करके खुले तौर पर ए.आर. रहमान के प्रति अपनी सराहना और प्रशंसा व्यक्त करता हैं। ये भाव ए.आर. रहमान के प्रति उसकी सकारात्मक अभिवृत्ति को दर्शाते हैं।

3. **अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक घटक:** किसी अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक घटक उन विश्वासों, विचारों और ज्ञान को संदर्भित करता है जो किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति को आकार देते हैं। इसमें धारणा, व्याख्या और समझ की मानसिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। अभिवृत्ति की संज्ञानात्मक सामग्री में शामिल हैं:

विश्वास और ज्ञान:	**उदाहरण:** आपका कोई मित्र हो सकता है जो मानता हो कि नियमित व्यायाम अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु को बढ़ावा देता है। यह विश्वास व्यायाम के प्रति उसकी सकारात्मक अभिवृत्ति का संज्ञानात्मक आधार बनाता है।
विचार और धारणाएँ:	**उदाहरण:** ग्रेटा थनबर्ग वैज्ञानिक साक्ष्यों, समाचार रिपोर्टों और व्यक्तिगत टिप्पणियों के आधार पर जलवायु परिवर्तन को एक गंभीर वैश्विक मुद्दा मानती हैं। यह धारणा पर्यावरण संरक्षण और स्थिरता के प्रति उनकी अभिवृत्ति को प्रभावित करती है।
सूचनाओं का प्रक्रमण करना:	**उदाहरण:** नया स्मार्टफोन खरीदने पर विचार करते समय, मैं हमेशा इसकी विशेषताओं, प्रदर्शन और ग्राहक समीक्षाओं के बारे में जानकारी एकत्र करता हूँ। स्मार्टफोन के प्रति मेरी अभिवृत्ति अधिकतर इसी जानकारी के आधार पर बनती है।

रोनाल्डो का उदाहरण

- पुर्तगाल के फुटबॉल खिलाड़ी **रोनाल्डो, हंगरी एवं पुर्तगाल के बीच** टूर्नामेंट के अपने पहले मैच से पूर्व प्रेस वार्ता के लिए बैठे। उन्होंने देखा कि उनके ठीक सामने **कोका-कोला की दो बोतलें रखी हुई थीं।** उन्होंने तुरंत शीतल पेय को कैमरे की नजर से दूर कर दिया और उसकी जगह पानी की बोतल रख दी। दिए गए उदाहरण में, अभिवृत्ति के निम्नलिखित ए.-बी.-सी. घटक देखे गए:

Affective component	• The feeling of disgust towards Coca-Cola.
Behavioural component	• Removal of the Coca-Cola bottles.
Cognitive component	• Knowledge of Ronaldo that Coca-Cola Is bad for health.

2.2 अभिवृत्ति की संरचना

- संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यावहारिक घटकों के भीतर तथा उनके बीच सकारात्मक और नकारात्मक निर्णय कैसे व्यवस्थित होते हैं, इसे **अभिवृत्ति संरचना द्वारा संबोधित किया जाता है।**

- अभिवृत्ति के तीनों पहलू हर समय सकारात्मक नहीं होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति के मन में **जीवन बचाने के अनुकूल विचार हो सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप वह रक्तदान कर सकता है।** फिर भी, जब ऐसा करने के लिए कहा जाता है, तो किसी व्यक्ति का व्यवहार सुईयों के डर जैसी अप्रिय भावनाओं से बाधित हो सकता है।
- **अभिवृत्ति संरचना के दो दृष्टिकोण हैं:**
  1. **एक-आयामी परिप्रेक्ष्य:** एक-आयामी दृष्टिकोण के अनुसार, सकारात्मक विश्वास, भावनाएँ और व्यवहार, नकारात्मक विश्वासों, भावनाओं और व्यवहार के विकास को रोकते हैं। इस प्रकार, यह दृष्टिकोण बताता है कि कोई भी अभिवृत्ति संबंधी दुविधा नहीं होगी और अभिवृत्ति विषय के प्रति व्यक्ति का दृष्टिकोण सुसंगत है।

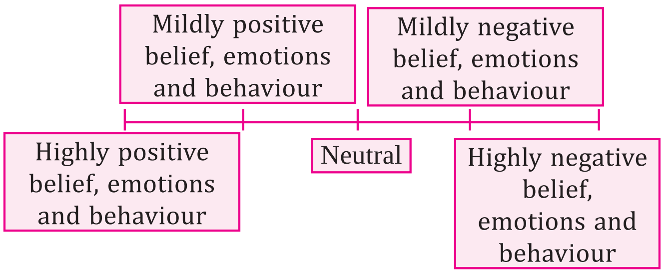

चित्र: अभिवृत्ति का एक-आयामी परिप्रेक्ष्य

  2. **द्वि-आयामी परिप्रेक्ष्य:** इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को दो अलग-अलग आयामों में संग्रहित किया जाता है। **एक आयामी परिप्रेक्ष्य में, विश्वास, भावना और व्यवहार के कई सकारात्मक तत्व होते हैं, जबकि इस परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत कई नकारात्मक तत्व होते हैं।** इस सिद्धांत के अनुसार, मनुष्य में सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति का कोई भी अनुपात हो सकता है।

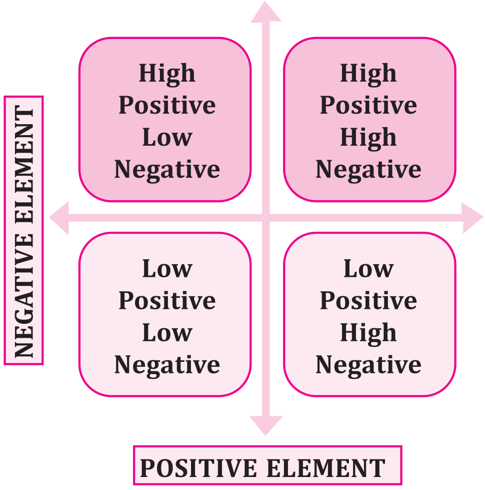

चित्र: अभिवृत्ति का द्वि-आयामी परिप्रेक्ष्य

- थोड़ी सकारात्मकता और उच्च नकारात्मकता, थोड़ी नकारात्मकता और कम सकारात्मकता, या न तो सकारात्मकता और न ही नकारात्मकता (यानी, एक तटस्थ स्थिति) को एक अभिवृत्ति में शामिल किया जा सकता है।

2.3 अभिवृत्ति की श्रेणियाँ: व्यक्त अभिवृत्ति और अंतर्निहित अभिवृत्ति

1. **व्यक्त अभिवृत्ति:** इसे **"स्व-सूचित अभिवृत्ति"** के रूप में भी जाना जाता है। यह अभिवृत्ति हमारी सचेत अनुभूति में अंतर्निहित है या सरल शब्दों में, इसमें शामिल व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति से अवगत है।
2. **अंतर्निहित अभिवृत्ति:** ज्यादातर अतीत की यादों द्वारा नियंत्रित, यह अभिवृत्ति हमारे अचेतन संज्ञान में अंतर्निहित है। यह अनजाने में हमारे अनुभवों, सीख, अंतर्निहित मूल्यों और किसी व्यक्ति के अंतर्निहित व्यक्तित्व के कारण उत्पन्न होती है।

व्यक्त और अंतर्निहित अभिवृत्ति के बीच अंतर इस प्रकार है:

व्यक्त अभिवृत्ति	अंतर्निहित अभिवृत्ति
यह अभिवृत्ति के प्रति **सचेत जागरूकता है।**	यह **अचेतन या स्वचालित** अभिवृत्ति है।
यह **स्वैच्छिक** और नियंत्रणीय है।	यह **अनैच्छिक** और कम नियंत्रणीय है।
यह आसानी से **पहुँच योग्य** और रिपोर्ट करने योग्य है।	यह **कम पहुँच योग्य** है और आसानी से रिपोर्ट नहीं की जाती है।
यह **मूल्यों, विश्वासों और वांछित प्रतिक्रियाओं को दर्शाती है।**	यह सामाजिक स्थिति पर आधारित **अनुभवों को दर्शाती है।**
उदाहरण: किसी उत्पाद के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति क्योंकि उसका निर्माण पर्यावरण-अनुकूल तरीके से किया गया था।	**उदाहरण:** बचपन के दिनों में माता-पिता द्वारा उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति।

2.4 अभिवृत्ति की विशेषताएँ

अभिवृत्ति में कई प्रमुख विशेषताएँ होती हैं जो व्यक्ति के स्वभाव या व्यक्तित्व को आकार देती हैं और व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। ये विशेषताएँ हमें यह समझने में मदद करती हैं कि अभिवृत्तियाँ

कैसे बनती हैं, बनायी रखी जाती हैं और व्यक्त की जाती हैं। यहाँ अभिवृत्तियों की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ दी गई हैं:

- **मूल्याँकनपरक:** अभिवृत्तियाँ स्वाभाविक रूप से मूल्याँकनपरक होती हैं, जिसका अर्थ है कि उनमें लोगों, वस्तुओं, विचारों या घटनाओं का मूल्याँकन या निर्णय शामिल होता है। अभिवृत्तियाँ सकारात्मक (अनुकूल) या नकारात्मक (प्रतिकूल) हो सकती हैं और वे किसी चीज के बारे में हमारे समग्र मूल्याँकन या राय को दर्शाती हैं।
    - **उदाहरण:** सोनम वांगचुक की पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति हो सकती है क्योंकि उनका मानना है कि यह ग्रह और उसके संसाधन भावी पीढ़ियों की भलाई के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **समय के साथ सीखना:** अभिवृत्तियाँ समाजीकरण, अनुभव और हमारे वातावरण में विभिन्न प्रभावों के संपर्क के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं। वे समय के साथ परिवार, दोस्तों, मीडिया और सामाजिक मानदंडों के साथ परस्पर क्रिया के माध्यम से सीखी जाती हैं।

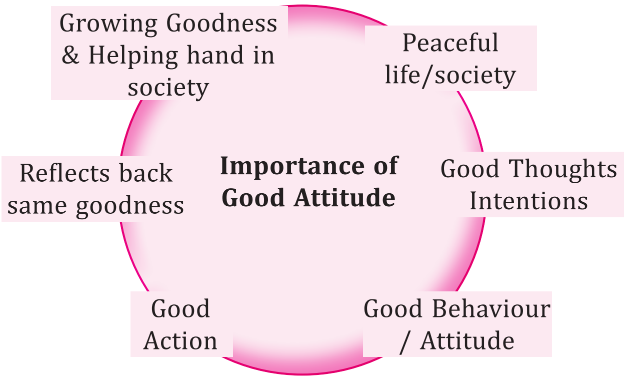

    - **उदाहरण:** यदि आप किसी विशेष राजनीतिक दल का समर्थन कर रहे हैं तो उस राजनीतिक दल के प्रति आपकी अभिवृत्ति आपके परिवार की राजनीतिक मान्यताओं, राजनीतिक अभियानों के संपर्क और मीडिया कवरेज से प्रभावित हो सकती है।
- **स्थिर और स्थायी:** अभिवृत्तियाँ अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी होती हैं, जिसका अर्थ है कि वे समय के साथ बनी रहती हैं।
    - **उदाहरण:** मेरी दादी, उनकी युवावस्था से ही एक धार्मिक महिला होने के नाते, रोजाना एक मंदिर में जाती थीं और वह अपनी मृत्यु तक धर्म के प्रति इस अभिवृत्ति के साथ बनी रहीं।
- **व्यवहार को प्रभावित करती है:** अभिवृत्तियों का व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वे हमारे कार्यों, विकल्पों और निर्णयों को आकार देती हैं। अभिवृत्तियाँ हमारी प्रेरणा, प्राथमिकताओं और इरादों को प्रभावित करके हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं।
    - **उदाहरण:** मेरे पिता का शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति बहुत सकारात्मक दृष्टिकोण है। वह खुद को नियमित व्यायाम में व्यस्त रखते हैं और स्वस्थ जीवन शैली की आदतों को बनाए रखते हैं। यह शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति उनकी अभिवृत्ति को दर्शाता है।
- **संगति:** संगति का तात्पर्य किसी दृष्टिकोण के विभिन्न घटकों के बीच अनुकूलता या सुसंगतता के स्तर से है। जब कोई अभिवृत्ति सुसंगत होती है, तो संज्ञानात्मक, भावनात्मक और व्यावहारिक पहलू एक-दूसरे के साथ संरेखित होते हैं।
    - **उदाहरणार्थ:** पर्यावरण संरक्षण के प्रति अभिवृत्ति:
        - **संज्ञानात्मक घटक:** विश्वास कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण महत्वपूर्ण है।
        - **प्रभावशाली घटक:** स्थायी प्रथाओं के प्रति सकारात्मक भावनात्मक प्रतिक्रिया।
        - **व्यावहारिक घटक:** पुनर्चक्रण में संलग्न होना, और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों का उपयोग करना।
        - इस उदाहरण में, **अभिवृत्ति के सभी तीन घटक सुसंगत होते हैं।** वे पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक रुख दर्शाते हैं।
- **तीव्रता:** अभिवृत्ति की तीव्रता किसी वस्तु, व्यक्ति या अवधारणा के प्रति अनुकूलता या प्रतिकूलता के स्तर का प्रतिनिधित्व करती है। कुछ अभिवृत्तियाँ अतिवादी भी हो सकती हैं। अतिवादिता का तात्पर्य किसी अभिवृत्ति की प्रबलता या तीव्रता से है।
    - **अभिवृत्ति:** राजनीतिक विचारधारा
        - **अतिवादिता:** अत्यधिक उदार या रूढ़िवादी विचार रखना।
        - **उदाहरण:** एक व्यक्ति, जो सामाजिक समानता और कल्याणकारी कार्यक्रमों (अत्यधिक उदारवादी) की वकालत करने में दृढ़ता से विश्वास करता है या कोई ऐसा व्यक्ति, जो सीमित सरकारी हस्तक्षेप और मुक्त-बाजार सिद्धांतों (अत्यधिक रूढ़िवादी) का दृढ़ता से समर्थन करता है।
        - दोनों ही मामलों में, व्यक्ति अपनी राजनीतिक विचारधारा के प्रति मजबूत और भावुक अभिवृत्ति रखते हैं, जो उनकी मान्यताओं और मूल्यों में अतिवादिता का प्रदर्शन करती है।
- **विशिष्टता में भिन्नता:** विशिष्टता एक दृष्टिकोण की स्पष्टता और सटीकता को संदर्भित करती है। इसमें किसी विशेष वस्तु, व्यक्ति या अवधारणा पर स्पष्ट ध्यान केंद्रित करना शामिल है। अभिवृत्तियाँ अपनी विशिष्टता में भिन्न हो सकती हैं, व्यापक से लेकर संकीर्ण तक। उदाहरण के लिए:

- **अभिवृत्तिः** भोजन संबंधी प्राथमिकताएँ
    - **व्यापक विशिष्टताः** विभिन्न व्यंजनों को आजमाने और नए स्वादों की खोज के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखना।
    - **संकीर्ण विशिष्टताः** इतालवी व्यंजनों के प्रति विशिष्ट रुचि तथा पास्ता और पिज्जा को प्राथमिकता देना।
    - इस उदाहरण में, व्यापक विशिष्टता विभिन्न प्रकार के भोजन के लिए सामान्य खुलेपन को दर्शाती है, जबकि संकीर्ण विशिष्टता इतालवी व्यंजनों के लिए अधिक विशिष्ट प्राथमिकता को इंगित करती है।

उदाहरण

पितृसत्तात्मक समाज में, एक बच्चा अपने परिवेश से सीखता है कि **महिलाएँ कई स्तरों पर पुरुषों से कमतर होती हैं।** बच्चे की **शादी हो जाती है** और उसे एक बेटी और एक बेटा पैदा होता है। चूँकि उसके **संसाधन सीमित हैं,** इसलिए उसकी बेटी के प्रति उसका भावनात्मक गठन उसे एक सार्वजनिक स्कूल में भर्ती कराना है, जबकि वह अपने बेटे को एक कॉन्वेंट स्कूल में भर्ती कराता है। बाद में जीवन में, जब उसे एहसास हुआ कि लड़कियाँ भी समान रूप से सक्षम हैं और विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं, तो वह अपनी प्रतिक्रिया बदल देता है, वह लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना उसके बेटे और बेटी दोनों को शिक्षा के समान अवसर देता है। (यह बदले हुए दृष्टिकोण पर आधारित है।)

2.5 अभिवृत्ति का निर्माण एवं उसे प्रभावित करने वाले कारक

अभिवृत्ति कैसे और क्यों विकसित होती है, यह कई कारकों से प्रभावित हो सकता है, जिनमें शामिल हैं:

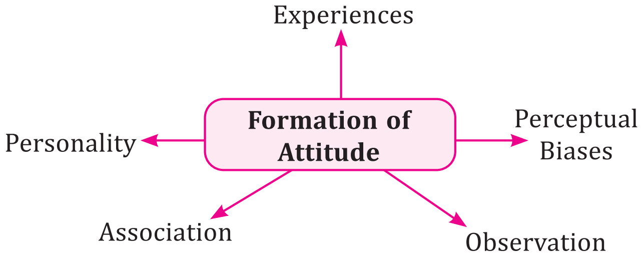

- **व्यक्तिगत अनुभव या वैयक्तिकताः** अनुभव का सीधा प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि अभिवृत्तियाँ कैसे विकसित होती हैं। वे अवलोकन या प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुभव के परिणामस्वरूप प्रकट हो सकती हैं।
    - **उदाहरणः** जलवायु परिवर्तन और सौर पैनलों के लाभों के बारे में पढ़ने के बाद, मैंने अपने पिता से हमारे नवनिर्मित घर पर सौर पैनल लगाने का आग्रह किया और हमने इसके वित्तीय और **पर्यावरणीय लाभों को देखा।** इससे मुझे सौर ऊर्जा के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति विकसित करने में मदद मिली।
- **सामाजिक कारकः** सामाजिक भूमिकाएँ इस बात को संदर्भित करती हैं कि व्यक्तियों को किसी विशिष्ट स्थिति या भूमिका में कैसे कार्य करना चाहिए। सामाजिक मानदंड वे दिशा-निर्देश हैं जिन्हें समाज ने स्वीकार्य व्यवहार के लिए स्थापित किया है।
    - **उदाहरणः** मैं इस कार्य के प्रति इच्छुक हूँ क्योंकि मेरे सामाजिक दायरे में सौर ऊर्जा के बारे में सकारात्मक धारणा है, हम सभी में कमोवेश इसी तरह की अभिवृत्ति अपनाने की संभावना है।
    - **उदाहरण के लिए,** मेरी एक मित्र एक नवीकरणीय ऊर्जा फर्म में काम करती है। वह सौर ऊर्जा के प्रति मेरी अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देती है और उनकी वकालत करती है।
- **सीखनाः** अभिवृत्तियों को सीखने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है। विपणक [क्रेता-विक्रेता] **अनुकूलित अनुक्रिया** के माध्यम से किसी निश्चित उत्पाद के बारे में आपकी राय कैसे प्रभावित कर सकते हैं।
    - **उदाहरणः** मेरे भाई ने एक युवा, आकर्षक व्यक्ति को एक टेलीविजन विज्ञापन में चित्रित उष्णकटिबंधीय समुद्र तट पर मस्ती करते हुए एक खेल पेय की चुस्की लेते देखा। फिर उसने विज्ञापन की भव्य और आकर्षक कल्पना के कारण इस विशेष पेय को सकारात्मक रूप से जोड़ना शुरू कर दिया।
- **प्रानुकूलन कंडीशनिंगः** इसके अतिरिक्त, अभिवृत्तियाँ क्रियाप्रसूत प्रानुकूलन से प्रभावित हो सकती हैं।
    - **उदाहरणः** एक युवक जिसने हाल ही में धूम्रपान शुरू किया था, उसे आपत्तियों एवं फटकार का सामना करना पड़ा, और अक्सर जब भी वह उनके आस-पास सिगरेट जलाता था तो उसे जाने के लिए कहा जाता था। अपने आस-पास के लोगों की इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप उसने धीरे-धीरे धूम्रपान के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित की और धूम्रपान छोड़ने का संकल्प लिया।
- **अवलोकनः** इसके अलावा, लोग अपने आस-पास के लोगों को देखकर अभिवृत्तियाँ अपनाते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** एक मध्यम वर्गीय परिवार का बच्चा, अपने माता-पिता की अभिवृत्तियों को देखकर, आमतौर पर किसी गरीब व्यक्ति या घरेलू नौकर आदि के प्रति समान दृष्टिकोण प्रदर्शित करना शुरू कर देता है।

- **अनुनयन:** प्रेरक विज्ञापन अभियानों के माध्यम से, कंपनियों का लक्ष्य अपने उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं की अभिवृत्तियों को आकार देना है। **उदाहरण के लिए,** एक सौंदर्य प्रसाधन ब्रांड व्यक्तियों को यह समझाने के लिए प्रेरक संदेश और दृश्यों का उपयोग कर सकता है कि उनका उत्पाद उनकी सुंदरता को बढ़ाएगा और उनके आत्मविश्वास को प्रोत्साहित करेगा।
- **मॉडलिंग की भूमिका:**
  - **सेलिब्रिटी प्रभाव:** सेलिब्रिटी अक्सर रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं तथा उनकी अभिवृत्ति और व्यवहार उनके अनुयायियों के दृष्टिकोण को आकार दे सकते हैं। **उदाहरण के लिए,** जब एम.एस. धोनी जैसे लोकप्रिय एथलीट स्वस्थ और सक्रिय जीवनशैली को बढ़ावा देते हैं, तो उनके अनुयायी समान अभिवृत्ति और व्यवहार अपना सकते हैं।

शास्त्रीय या पावलोवियन कंडीशनिंग (चिरप्रतिष्ठित प्रानुकूलन): इवान पावलोव द्वारा खोजा गया

उन्होंने कुत्तों में प्रानुकूलित प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए पहले से तटस्थ उत्तेजना (घंटी की आवाज, जिस पर कुत्तों से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती थी) को सकारात्मक उत्तेजना (कुत्ते का भोजन) के साथ जोड़ा। प्रानुकूलित प्रतिक्रिया के कारण, कुत्तों में केवल घंटियाँ बजाने से लार का स्त्राव हुआ।

2.6 अभिवृत्ति के कार्य

अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों के जीवन में उनके विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को प्रभावित करते हुए कई कार्य करती हैं। यहाँ उदाहरणों सहित अभिवृत्तियों के कुछ सामान्य कार्य दिए गए हैं:

- **उपयोगितावादी कार्य:** अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों को पुरस्कारों को अधिकतम करने और दंड को कम करने में मदद करके उपयोगितावादी कार्य कर सकती हैं।
  - **उदाहरण:** भारत रत्न, पद्म भूषण, पद्म विभूषण आदि जैसे पुरस्कार नागरिकों में उनके संबंधित कार्यों और सामाजिक सेवा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने के लिए सरकार द्वारा दिए जाते हैं।
- **ज्ञान कार्य:** अभिवृत्तियाँ सामाजिक दुनिया के बारे में जानकारी को व्यवस्थित और सरल बनाकर ज्ञान कार्य कर सकती हैं।
  - **उदाहरण:** यदि आपको आईएसआईएस शासन के दौरान सीरिया जैसे देश में जाने का मौका दिया जाता है, तो निश्चित रूप से आप इससे बचेंगे क्योंकि आप एक सिविल सेवा के उम्मीदवार हैं और आपको पता है कि वहाँ आपका जीवन खतरे में होगा।
- **सामाजिक पहचान कार्य:** अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों को उनकी सामाजिक पहचान को परिभाषित करने और व्यक्त करने में मदद करके एक सामाजिक पहचान कार्य कर सकती हैं। वे किसी विशेष समूह या समुदाय से संबंधित होने की भावना में योगदान करती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** हम भारतीयों की अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति एक मजबूत सकारात्मक अभिवृत्ति है, जो हमें अपने सांस्कृतिक समूह से जुड़ाव महसूस करने में मदद करती है और हमारी पहचान की भावना को मजबूत करती है, खासकर जब हम विदेश जाते हैं।

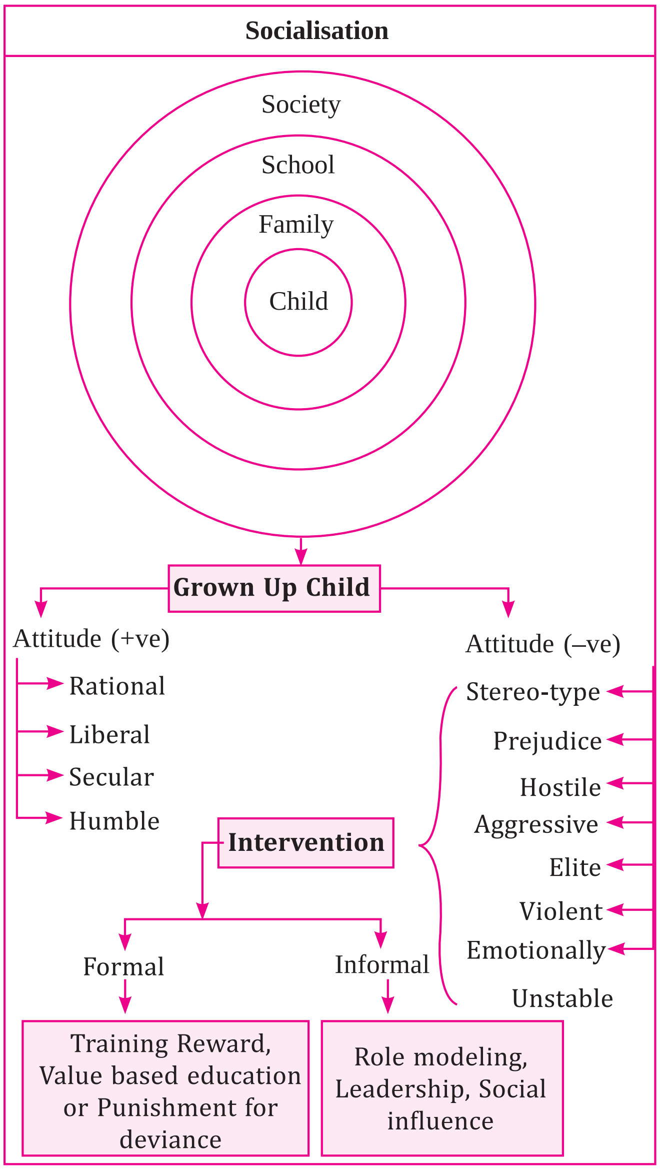

- **अहं-रक्षात्मक कार्य:** अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों के आत्म-सम्मान की रक्षा करके और एक सकारात्मक आत्म-छवि बनाए रखकर अहं-रक्षात्मक कार्य कर सकती हैं। वे व्यक्तियों को अपनी मान्यताओं या व्यवहारों को उचित ठहराते हुए चिंता, भय या खतरे से निपटने में मदद कर सकती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** हो सकता है कि आप मेसी की तरह फुटबॉल न खेल पाएँ। इस वास्तविकता को स्वीकार करने के बजाय, कोई अपनी आत्म-छवि बनाए रखने के लिए यह दावा कर सकता है कि उन्हें फुटबॉल पसंद नहीं है।

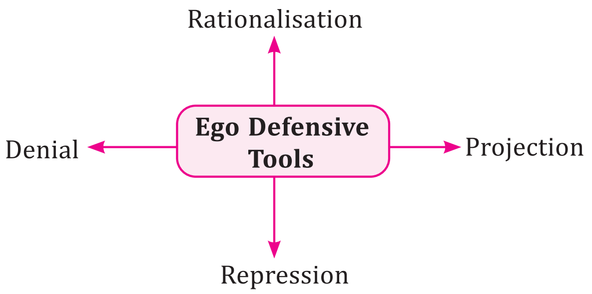

- **मूल्य-अभिव्यंजक कार्य:** अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों को अपने मूलभूत मूल्यों और विश्वासों को व्यक्त करने की अनुमति देकर मूल्य-अभिव्यंजक कार्य कर सकती हैं। वे आत्म-अभिव्यक्ति के साधन के रूप में कार्य करती हैं और किसी व्यक्ति के नैतिक या वैचारिक रुख को दर्शाती हैं।
  - **उदाहरण के लिए:** एक सिविल सेवक ईमानदारी और कानून के शासन के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए **शून्य भ्रष्टाचार सहिष्णुता अभिवृत्ति** रख सकता है।
- **व्यवहार मार्गदर्शन कार्य:** अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों के व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करके एक व्यावहारिक मार्गदर्शन कार्य कर सकती हैं। वे विकल्प चुनने और कार्यों का मार्गदर्शन करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** एक **सिविल सेवक,** जिसके विचारों और दृष्टिकोण में समानता निहित है, वह समाज के सभी वर्गों के साथ शालीनता से व्यवहार कर सकता है।
- **आत्म-जागरूकता कार्य:** अभिवृत्तियाँ लोगों को उन चीजों तक पहुँचने में मदद कर सकती हैं जो उनके लिए लाभदायक हैं और उन चीजों से बचा सकती हैं जो उनके लिए हानिकारक हैं।
  - **उदाहरण:** स्वस्थ भोजन के प्रति तान्या की सकारात्मक अभिवृत्ति उसे पौष्टिक भोजन चुनने और हानिकारक आहार संबंधी आदतों से बचने के लिए प्रेरित करती है।
- **सामाजिक समायोजन कार्य:** अभिवृत्तियाँ हमें सामाजिक समायोजन में सहायता करती हैं। अभिवृत्तियाँ हमें दुनिया के बारे में हमारी धारणा को सरल बनाने और इसे हमारे लिए अधिक प्रबंधनीय बनाने में मदद करती हैं।
  - **उदाहरण:** माइकल की खुले विचारों वाली अभिवृत्ति उसे विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को अपनाने, सामाजिक संपर्क को सुविधाजनक बनाने और वैश्विक दुनिया में समझ को बढ़ावा देने की अनुमति देती है।

अभिवृत्तियों के ये कार्य दर्शाते हैं कि वे व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं और व्यवहारों को आकार देने में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों को सामाजिक दुनिया में संचालन करने, उनकी पहचान परिभाषित करने, चुनौतियों का सामना करने, मूल्यों को व्यक्त करने तथा उनके विश्वासों और मूल्याँकनों के आधार पर उनके कार्यों का मार्गदर्शन करने में मदद करती हैं।

अभिवृत्ति विचार और व्यवहार दोनों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अभिवृत्ति, विचार और व्यवहार के बीच संबंध को इस प्रकार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

2.7 अभिवृत्ति एवं विचार

- अभिवृत्ति जानकारी की व्याख्या और मूल्याँकन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करके विचारों को प्रभावित करती हैं। वे व्यक्तियों को अपने आस-पास की दुनिया को देखने और समझने के तरीके को आकार देती हैं। अभिवृत्तियाँ फिल्टर के रूप में कार्य करती हैं जिसके माध्यम से व्यक्ति जानकारी संसाधित करते हैं, जिससे अभिवृत्ति विषय से संबंधित विचारों और राय का निर्माण होता है।

अभिवृत्ति	विचार
अभिवृत्ति का तात्पर्य किसी वस्तु, व्यक्ति या अवधारणा के प्रति **मूल्याँकन या भावना से है।** इसमें सकारात्मक या नकारात्मक अभिविन्यास शामिल है।	विचार जानकारी को संसाधित करने, विचारों का विश्लेषण करने और राय या विश्वास बनाने की **संज्ञानात्मक प्रक्रिया** को संदर्भित करता है।
अभिवृत्तियाँ भावनात्मक रूप से अधिक प्रेरित होती हैं और इसमें किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ, पसंद और नापसंद शामिल होती हैं।	विचार अधिक **तर्कसंगत और तार्किक होते हैं, जिनमें आलोचनात्मक सोच,** विश्लेषण और समस्या-समाधान शामिल होता है।
अभिवृत्तियाँ **अपेक्षाकृत स्थिर और स्थायी होती हैं,** जो समय के साथ व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करती हैं।	विचार अधिक क्षणिक होते हैं और नई जानकारी, दृष्टिकोण या अनुभवों के आधार पर बदल सकते हैं।
अभिवृत्तियाँ विचारों के फोकस और दिशा को आकार दे सकती हैं।	विचार अभिवृत्तियों के निर्माण या संशोधन में योगदान कर सकते हैं। जानकारी का विश्लेषण करना, तर्कों का आलोचनात्मक मूल्याँकन करना और कई दृष्टिकोणों पर विचार करना अभिवृत्तियों को आकार दे सकता है।
अभिवृत्तियाँ व्यवहार को प्रभावित कर सकती हैं और कार्यों का मार्गदर्शन कर सकती हैं। वे व्यक्तियों को उनके दृष्टिकोण के अनुरूप कार्य करने या उन कारणों का समर्थन करने के लिए प्रेरित कर सकती हैं जिन पर वे विश्वास करते हैं।	विचार निर्णय लेने की नींव प्रदान करते हैं और उनके विश्लेषण, निर्णय और तर्क के आधार पर व्यक्तियों द्वारा चुने गए विकल्पों को प्रभावित कर सकते हैं।

केस स्टडी: अभिवृत्ति बनाम विचार – मतदान व्यवहार पर प्रभाव	
परिस्थिति:	राजनगर नामक एक काल्पनिक भारतीय शहर में, एक स्थानीय विधान सभा चुनाव चल रहा है। शहर में दो मुख्य उम्मीदवार हैं: राहुल शर्मा और प्रिया देसाई। राजनगर के निवासियों की उम्मीदवारों की योग्यता और राजनीतिक एजेंडे के बारे में अलग-अलग राय और मान्यताएँ हैं।
अभिवृत्ति परिदृश्य:	राजनगर निवासी राजेश, राहुल शर्मा के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखते हैं। उनका मानना है कि राहुल एक करिश्माई और गतिशील नेता हैं जो शहर में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। राजेश सक्रिय रूप से राहुल की रैलियों में भाग लेकर, उनके अभियान पोस्टर प्रदर्शित करके और उनके बारे में सकारात्मक बातें फैलाकर उनका समर्थन करते हैं। राहुल के प्रति राजेश की अभिवृत्ति उनके व्यवहार को आकार देती है क्योंकि वह उत्साहपूर्वक उनके अभियान में भाग लेते हैं और दूसरों को उनके लिए वोट करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
विचार परिदृश्य:	इसके विपरीत, राजनगर की एक अन्य निवासी दीपा, उम्मीदवारों का मूल्याँकन करने के लिए एक विचारशील दृष्टिकोण अपनाती है। वह राहुल शर्मा और प्रिया देसाई दोनों की पिछली उपलब्धियों, राजनीतिक संबद्धता और प्रस्तावित नीतियों की आलोचनात्मक जाँच करती हैं। दीपा शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और अवसंरचना के विकास जैसे प्रमुख मुद्दों पर उम्मीदवारों के रुख पर विचार करती हैं। सावधानीपूर्वक विचार करने के बाद, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रिया देसाई की नीतियाँ शहर के लिए उनके अपने मूल्यों और आकांक्षाओं के साथ अधिक निकटता से मेल खाती हैं। प्रिया के प्रति गहरा भावनात्मक लगाव न होने के बावजूद, दीपा ने अपने विचारशील मूल्याँकन के आधार पर उन्हें वोट देने का फैसला किया।

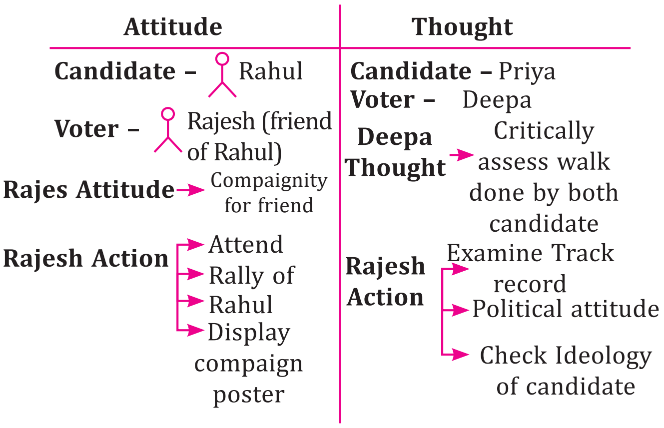

2.8 अभिवृत्ति और व्यवहार

- व्यवहार से तात्पर्य उस तरीके से है जिससे कोई व्यक्ति या जीव विभिन्न उत्तेजनाओं, स्थितियों या परिस्थितियों के जवाब में कार्य करता है या आचरण करता है।
- इसमें बोलना, हिलना-डुलना, भावनाओं को व्यक्त करना, निर्णय लेना और सामाजिक संपर्क में शामिल होना जैसी क्रियाएँ शामिल हो सकती हैं।

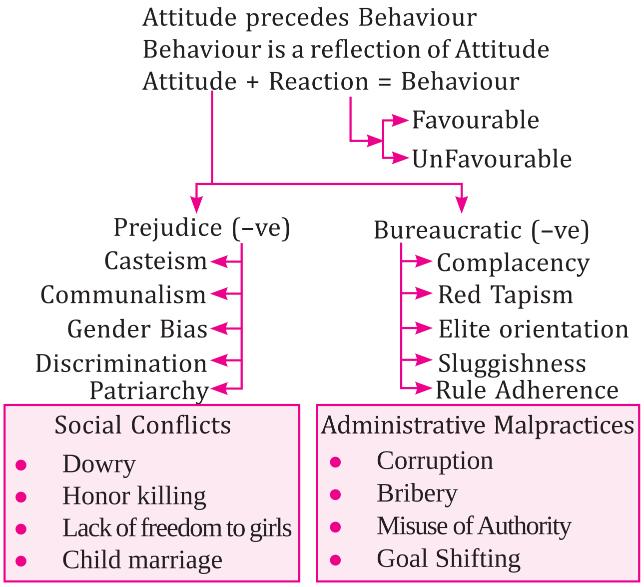

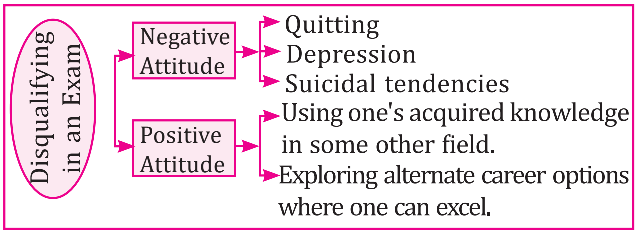

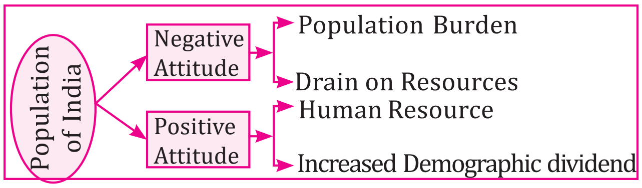

2.8.1 व्यवहार पर अभिवृत्ति का प्रभाव

- अभिवृत्ति को सामाजिक स्थितियों में कुछ तरीकों से व्यवहार करने की प्रवृत्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। अभिवृत्ति एक व्यक्तिगत विशेषता है, जबकि व्यवहार एक सामाजिक विशेषता है।
- **अभिवृत्तियाँ व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं:** अभिवृत्तियाँ व्यवहार के लिए मार्गदर्शन के रूप में कार्य करती हैं कि व्यक्ति कुछ स्थितियों को कैसे समझते हैं और प्रतिक्रिया देते हैं।

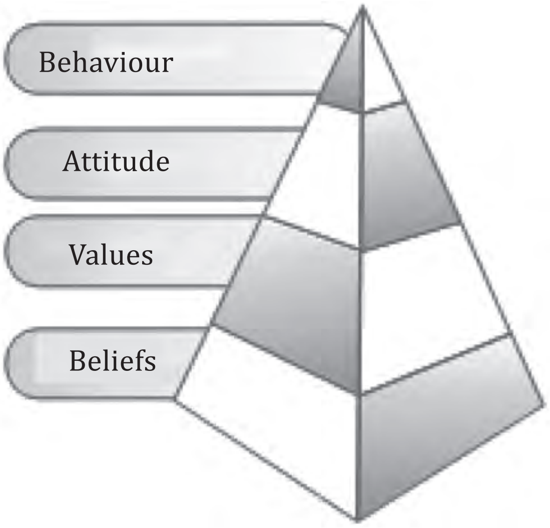

- **अभिवृत्तियाँ निर्णय लेने को प्रभावित करती हैं:** अभिवृत्तियाँ निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को प्रभावित करती हैं क्योंकि व्यक्ति अपनी पसंद को अपनी अभिवृत्तियों के साथ संरेखित करते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के कारण श्याम की फास्ट फूड के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति है, वह ज्यादातर समय ऐसे भोजन का सेवन करने से बचता है और स्वास्थ्यवर्द्धक विकल्प चुनता है।

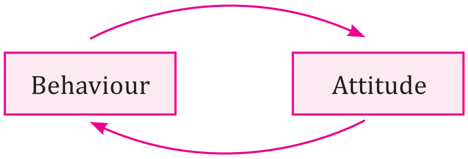

- **अभिवृत्तियाँ क्रिया को प्रभावित करती हैं:** अभिवृत्तियाँ कार्यों को सीधे तौर पर प्रभावित कर सकती हैं। जब व्यक्ति किसी कारण या मुद्दे के प्रति मजबूत अभिवृत्तियाँ रखते हैं, तो वे इसके समर्थन या वकालत करने के लिए कार्रवाई करने की अधिक संभावना रखते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** मैं पशु अधिकारों के बारे में भावुक हूँ, इसलिए, मैं विरोध प्रदर्शनों में सक्रिय रूप से भाग लूंगा या पशु कल्याण के मुद्दे का समर्थन करूंगा।
- **अभिवृत्तियाँ धारणाओं को आकार देती हैं:** अभिवृत्तियाँ यह निर्धारित करती हैं कि व्यक्ति जानकारी को कैसे समझते हैं और उसकी व्याख्या कैसे करते हैं। वे पूर्वाग्रह या फिल्टर(मत) बना सकते हैं जिसके माध्यम से लोग दुनिया को देखते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** संदीप की किसी विशेष राजनीतिक दल के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति है, वह सकारात्मक पहलुओं को खारिज करते हुए नीतियों को अधिक आलोचनात्मक दृष्टि से देख सकता है।
- **अभिवृत्तियाँ सामाजिक अंत:क्रियाओं को प्रभावित करती हैं:** अभिवृत्तियाँ सामाजिक अंत:क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे इसे प्रभावित कर सकती हैं कि व्यक्ति दूसरों के साथ कैसे बातचीत करते हैं, रिश्ते बनाते हैं और संचार में संलग्न होते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** विविध संस्कृतियों के प्रति सहिष्णु और समावेशी अभिवृत्ति वाले रोहित द्वारा विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को गले लगाने और उनका सम्मान करने की अधिक संभावना है।

व्यवहार पर अभिवृत्ति का प्रभाव	
अभिवृत्ति	**व्यवहार**
व्यक्तिगत स्तर	
• तन्दुरुस्त और स्वस्थ रहना।	• संतुलित आहार और उचित नींद लेना।
• ज्ञान प्राप्त करना।	• पढ़ना।
सामाजिक स्तर	
• लिंग के प्रति तटस्थ।	• लिंग संवेदीकरण।
• पर्यावरण की चिंता।	• वनरोपण अभियान।
प्रशासनिक स्तर	
• कमजोर वर्ग के प्रति सहानुभूति।	• शासन में प्रशासनिक नैतिकता और ईमानदारी का पालन।
• लोक सेवा और समाज कल्याण।	• संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता।

2.8.2 अभिवृत्ति-व्यवहार सुसंगति

- अभिवृत्ति-व्यवहार सुसंगति उस स्तर को संदर्भित करती है जिस तक अभिवृत्ति व्यवहार का पूर्वानुमान कर पाती है।
- अभिवृत्ति और व्यवहार के बीच संबंध जटिल होता है तथा यह स्थितिजन्य बाधाओं, सामाजिक मानदंडों और व्यक्तिगत विशेषताओं जैसे विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है।

Affective Component + Congitive component = Behaviour

चित्र: व्यवहार का निर्माण

- हालाँकि, **अभिवृत्ति-व्यवहार संरेखण के उदाहरण हो सकते हैं, बाहरी बाधाओं, परस्पर विरोधी प्रेरणाओं या अन्य हस्तक्षेप करने वाले कारकों के कारण** दृष्टिकोण और व्यवहार के बीच विसंगतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

अभिवृत्ति-व्यवहार में एकरूपता/सुसंगति	
अभिवृत्ति	**व्यवहार**
• अभिवृत्ति हमारी अनुभूति (ज्ञान या सूचना) का एक **आंतरिक घटक** है।	• व्यवहार किसी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति या प्रदर्शन है।
• अभिवृत्ति किसी **व्यक्ति के मानसिक दृष्टिकोण को संदर्भित करती है,** जिस तरह से वह किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में सोचता है या महसूस करता है।	• व्यवहार से तात्पर्य किसी व्यक्ति या समूह के अन्य व्यक्तियों के प्रति कार्यों और आचरण से है।
• यह अधिक **व्यक्तिगत है।**	• यह अधिक सामाजिक है।
• किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति मुख्य रूप से उसके जीवन के दौरान **प्राप्त अनुभवों और अवलोकनों पर आधारित होती है।**	• व्यक्ति का व्यवहार स्थिति एवं परिस्थितियों पर आधारित होता है।
• अभिवृत्ति किसी की भावनाओं, विचारों और विचारों को दर्शाती है।	• व्यवहार किसी की अभिवृत्ति को प्रतिबिंबित करता है क्योंकि कार्य हमारे विचारों का प्रतिबिंब होते हैं।
• पर्यावरण, अनुभव और नैतिक मूल्य जैसे कारक मुख्य रूप से अभिवृत्तियों को प्रभावित करते हैं।	• अभिवृत्तियाँ, चारित्रिक गुण तथा अंत:स्रावी और तंत्रिका प्रतिक्रियाओं जैसे जैविक कारक हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं।
• **उदाहरण:** ग्रामीण क्षेत्र में काम करने वाले एक सिविल सेवक ने देखा कि कई ग्रामीण जन गरीबी में जी रहे थे। उनके पास साफ पानी या स्वच्छता सुविधाओं तक पहुँच नहीं थी और उनके पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था। सिविल सेवक ने ग्रामीणों की बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुँच को बेहतर बनाने के लिए स्थानीय सरकार के साथ काम किया और उन्होंने ग्रामीण लोगों की आय उत्पन्न करने के तरीके खोजने में भी मदद की। सिविल सेवक के कार्यों से पता चला कि वह वास्तव में गरीबों के बारे में चिंतित थे और उनके जीवन को बेहतर बनाने में मदद करने के इच्छुक थे।	• **उदाहरण:** एक सरकारी कार्यालय में काम करने वाले एक सिविल सेवक को कई छोटे बच्चों वाले एक गरीब परिवार से एक आवेदन प्राप्त हुआ। सिविल सेवक को परिवार के प्रति सहानुभूति महसूस हुई और उसने उनके आवेदन की सावधानीपूर्वक समीक्षा करने के लिए समय लिया। उसने परिवार से उनकी स्थिति के बारे में भी पूछा और समुदाय में संसाधनों से जुड़ने में उनकी मदद की। सिविल सेवक के व्यवहार से पता चला कि वे वास्तव में परिवार की भलाई के बारे में चिंतित थे।

अभिवृत्ति निर्माण एवं परिवर्तन

प्रत्यक्ष अनुभव, समाजीकरण, शिक्षा और प्रेरक संदेशों के संपर्क जैसी विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से अभिवृत्तियों का निर्माण किया जा सकता है। समय के साथ अभिवृत्तियों को प्रभावित और संशोधित भी किया जा सकता है। **अभिवृत्ति परिवर्तन प्रेरक संचार, संज्ञानात्मक असंगति, सामाजिक प्रभाव या व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से हो सकता है जो मौजूदा अभिवृत्तियों को चुनौती देते हैं।**

Behaviour → Habit → Attitude → Value → Character → Destiny

कुल मिलाकर अभिवृत्तियों का संबंध विचार और व्यवहार दोनों से होता है। वे व्यक्तियों के सोचने और जानकारी की व्याख्या करने के तरीके को आकार देती हैं तथा वे व्यवहार संबंधी इरादों और कार्यों का मार्गदर्शन करती हैं। हालाँकि, यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि **अभिवृत्ति-व्यवहार संगति हमेशा पूर्ण नहीं होती है** और व्यक्तिगत कारकों तथा प्रासंगिक प्रभावों के आधार पर भिन्नताएँ हो सकती हैं।

2.9 अभिमत और अभिवृत्ति

- अभिमत किसी वस्तु के बारे में किसी व्यक्ति की सोच या विश्वास है, चाहे वह अच्छी हो या बुरी। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकता है।
  - **उदाहरण:** परमाणु हथियारों के नियंत्रण, पश्चिमी और पूर्वी दुनिया में जलवायु परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक जिम्मेदारी पर परस्पर विरोधी अभिमत हैं।

अभिमत	अभिवृत्ति
• यह फैसले की अभिव्यक्ति है।	• यह एक निश्चित तरीके से कार्य करने की प्रवृत्ति है।
• यह मौखिक या लिखित अभिव्यक्ति तक ही सीमित है।	• अभिवृत्ति का अनुमान मौखिक और गैर-मौखिक दोनों अभिव्यक्तियों से लगाया जाता है।
• यह तथ्यों या ज्ञान पर आधारित हो भी सकता है और नहीं भी।	• यह स्वयं की विश्वास प्रणाली से उत्पन्न होता है।
• अभिमत आम तौर पर स्वभाव से दूसरों के लिए उचित होता है।	• यह किसी व्यक्ति, स्थान या वातावरण आदि के प्रति स्वयं की पसंद या नापसंद से अधिक संबंधित है।
• **उदाहरण:** एक लेख के माध्यम से लोकतंत्र पर सकारात्मक अभिमत व्यक्त करता एक लेखक।	• **उदाहरण:** सरकार के विभिन्न रूपों का अध्ययन करके लेखक की लोकतंत्र के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है।

2.10 विश्वास और अभिवृत्ति

- विश्वास किसी चीज को सत्य या वास्तविक मानने का दृढ़ विश्वास या स्वीकृति है।
- ये **व्यक्तिगत अनुभवों, ज्ञान, सांस्कृतिक प्रभावों और सामाजिक संपर्कों के माध्यम से बनते हैं।**
- विश्वास धर्म, नैतिकता, राजनीति, विज्ञान और अन्य सहित कई प्रकार के विषयों से संबंधित हो सकता है।
- **उदाहरण:** आस्तिक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं, जबकि नास्तिक इसके अस्तित्व से इनकार करते हैं।

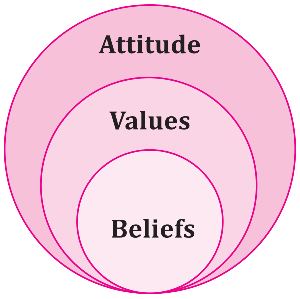

विश्वास	अभिवृत्ति
• यह एक ऐसा विचार है जिसे व्यक्ति सत्य मानता है।	• यह एक मानसिक स्वभाव है जिसका परिणाम एक विशेष व्यवहार होता है।
• यह पिछले अनुभव, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों या शिक्षा से उत्पन्न हो सकता है।	• यह हमारे आंतरिक मूल्यों और मान्यताओं से उत्पन्न होती है।
• विश्वास बदलने से अभिवृत्ति बदल सकती है।	• अभिवृत्ति बदलने से विश्वास में भी बदलाव आ सकता है।
• **उदाहरण:** एक व्यक्ति को किसी विशेष ईश्वर में विश्वास हो सकता है।	• **उदाहरण:** व्यक्ति का नियमित रूप से उस ईश्वर को प्रणाम करना।

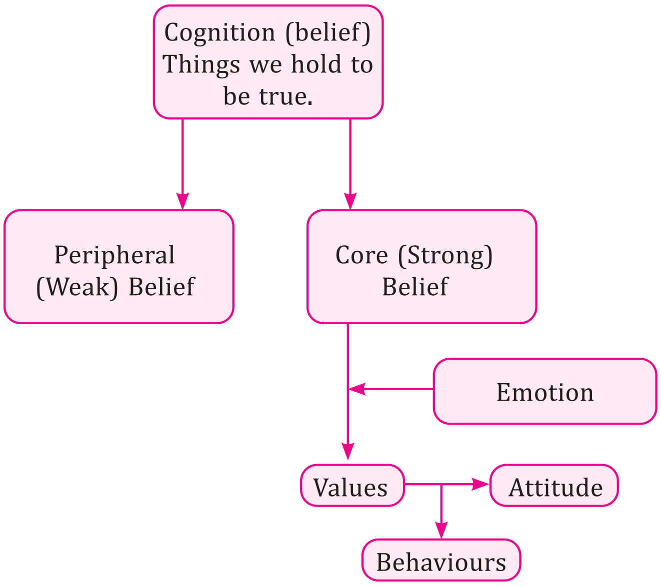

2.11 मूल्य और अभिवृत्ति

- मूल्य गहराई से स्थापित विश्वास और सिद्धांत हैं जो व्यक्तियों के व्यवहार और निर्णय लेने का मार्गदर्शन करते हैं, ये दर्शाते हैं कि जीवन में क्या महत्वपूर्ण और वांछनीय माना जाता है।
- उदाहरण: किसी व्यक्ति की ईमानदारी (मूल्य) उसे हमेशा सच बोलने के लिए मजबूर करती है, भले ही यह कठिन या असुविधाजनक हो।

मूल्य	अभिवृत्ति
• मूल मान्यताएँ और सिद्धांत।	• मूल्याँकनात्मक निर्णय और प्राथमिकताएँ
• स्थिर और टिकाऊ।	• परिवर्तन या संशोधन के अधीन।
• व्यवहार और निर्णय लेने को प्रभावित करता है।	• व्यवहार और विचारों की अभिव्यक्ति को प्रभावित करती है।

• किसी के चरित्र में गहराई से निहित।	• अनुभवों और सामाजिक प्रभावों द्वारा आकार दिया जाता है।
• **उदाहरण:** ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, न्याय।	• **उदाहरण:** किसी राजनीतिक उम्मीदवार के लिए समर्थन, किसी विशेष भोजन को पसंद/नापसंद करना।

उदाहरण: विचार और विश्वास बदलने से अभिवृत्ति में बदलाव

केस स्टडी: मेरे पड़ोस में एक समुदाय है जहाँ मानसिक स्वास्थ्य एक अत्यधिक कलंकित/लांछित विषय माना जाता है। मानसिक बीमारी के प्रति गलत धारणाएँ और नकारात्मक अभिवृत्तियाँ प्रचलित हुई, जिससे सामाजिक अलगाव हुआ और मानसिक स्वास्थ्य सहायता सेवाओं तक पहुँच सीमित हो गई। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने वाले लोगों को अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता था और आकलन किए जाने के डर से वे मदद लेने से झिझकते थे। उनकी विश्वास प्रणाली को बदलना बहुत मुश्किल काम है लेकिन अगर मुझे मौका दिया गया तो मैं निम्नलिखित उपाय लागू करूंगा।

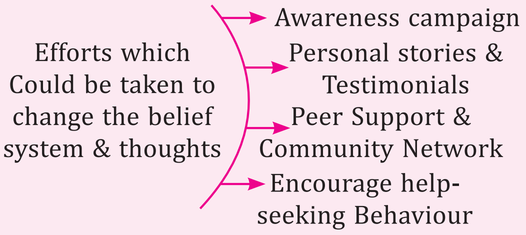

2.12 नैतिक अभिवृत्ति

- नैतिक अभिवृत्ति किसी व्यक्ति के नैतिक सिद्धांतों, मूल्यों और नैतिक मानकों के प्रति उसके मूल्याँकन, विश्वास और स्वभाव को संदर्भित करती है।
- इसमें नैतिक ढांचा शामिल है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय लेने तथा नैतिक और नीतिपरक मामलों में निर्णय का मार्गदर्शन करता है।
- सभी दृष्टिकोणों का संबंध नैतिकता से नहीं है। नैतिक अभिवृत्तियाँ व्यक्तिगत मूल्यों, सामाजिक मानदंडों, सांस्कृतिक कारकों और दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रभावित होती हैं।
    - **उदाहरण:** सांपों के प्रति राहुल की अभिवृत्ति का नैतिकता से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि यह डर से प्रेरित है। इसी प्रकार किसी विशेष व्यंजन के प्रति उसकी अभिवृत्ति केवल उसकी व्यक्तिगत वरीयता, पसंद/नापसंद को दर्शाती है। हालाँकि, लोकतंत्र के प्रति उसकी अभिवृत्ति में **नैतिक निहितार्थ** होंगे।
- **नकारात्मक पक्ष पर,** नैतिक अभिवृत्ति का उपयोग आतंकवाद के हिंसक कृत्यों को उचित ठहराने के लिए किया जा सकता है। यह परिवार, समाज, धर्म, शिक्षा आदि से आकार लेता है।
    - **उदाहरण:** ऑनर किलिंग के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को परिवार के गौरव को बचाने के आधार पर उचित ठहराया जाता है। विवाह पूर्व पति-पत्नी की तरह रहने के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रिश्तों को वैयक्तिकता और स्वतंत्रता के आधार पर उचित ठहरायी जाती है।

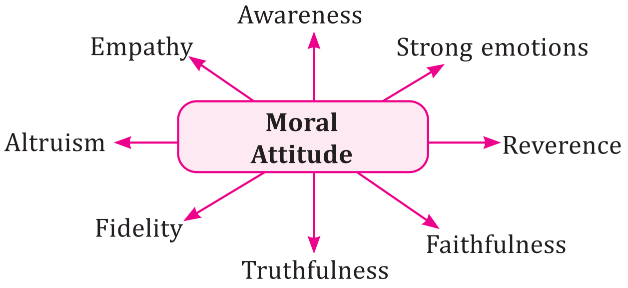

नैतिक अभिवृत्ति का महत्व:

- **व्यक्ति के विश्वास पर चिंतन:** नैतिक अभिवृत्ति किसी व्यक्ति के विश्वासों, मूल्यों तथा सही और गलत, अच्छे और बुरे एवं नैतिक रूप से स्वीकार्य या अस्वीकार्य के बारे में निर्णय को दर्शाती है।
- **नैतिक तर्क को आकार देना:** ये किसी के नैतिक तर्क को आकार देती हैं और उन स्थितियों में व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं जिनमें नैतिक दुविधाएँ या नैतिक विचार शामिल होते हैं।
- **सामाजिक महत्व:** सामाजिक एकता को बढ़ावा देने, निष्पक्षता को बढ़ावा देने तथा व्यक्तिगत और सामाजिक संदर्भों में नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए नैतिक अभिवृत्तियाँ आवश्यक हैं।
- **व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा:** व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा बनाए रखने के लिए नैतिक अभिवृत्ति आवश्यक है। यह चुनौतियों या प्रलोभनों का सामना करने पर भी अपने नैतिक मूल्यों के अनुसार कार्य करने के लिए एक व्यक्ति की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
    - किसी के नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखना स्वाभिमान, आत्म-सम्मान और प्रामाणिकता की भावना को बढ़ाता है।
- **व्यवसायों में नीतिपरक निर्णय लेना:** नैतिक अभिवृत्तियाँ उन व्यवसायों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं जिनमें नैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता होती है, जैसे- स्वास्थ्य देखभाल, कानून, शिक्षा और व्यवसाय।
    - मजबूत नैतिक अभिवृत्तियों वाले पेशेवर जटिल नैतिक चुनौतियों से निपटने, नैतिक विचारों को प्राथमिकता देने और जिनकी वे सेवा करते हैं उन लोगों के हितों को बनाए रखने वाले विकल्प चुनने के लिए, बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं।

उदाहरण: महान व्यक्तित्वों द्वारा प्रदर्शित नैतिक अभिवृत्तियाँ

- **सुकरात** और **प्लेटो में** नैतिक अभिवृत्तियाँ थीं जिसमें उनका मानना था कि अन्याय करने की तुलना में अन्याय सहना बेहतर है।
- अन्याय से लड़ने के एक उपकरण के तौर पर **अहिंसा में गाँधीजी का** मौलिक विश्वास था।

नैतिक दृष्टिकोण के आयाम:

- **नैतिक सिद्धांत और मूल्य:** नैतिक अभिवृत्तियाँ मौलिक सिद्धांतों और मूल्यों पर आधारित होती हैं जिन्हें व्यक्ति सही और गलत का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण मानते हैं। इन सिद्धांतों में निष्पक्षता, न्याय, ईमानदारी, करुणा, स्वायत्तता के लिए सम्मान और अखंडता शामिल हो सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** एक मजबूत नैतिक अभिवृत्ति रखने वाला एक सिविल सेवक निष्पक्षता को प्राथमिकता दे सकता है तथा सामाजिक और आर्थिक मामलों में समान व्यवहार की वकालत कर सकता है।
- **नीतिपरक निर्णय लेना:** नैतिक अभिवृत्तियाँ इस बात को प्रभावित करती हैं कि व्यक्ति नैतिक निर्णय लेने के तरीके को कैसे अपनाते हैं। वे एक नैतिक दिशा-निर्देश प्रदान करती हैं तथा व्यक्तियों को अपने नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों के अनुरूप विकल्प चुनने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** ईमानदारी के प्रति नैतिक अभिवृत्ति रखने वाला एक सिविल सेवक उन स्थितियों में भी सच्चाई को प्राथमिकता देगा जहाँ झूठ बोलना फायदेमंद लग सकता है।
- **नैतिक जिम्मेदारी:** नैतिक अभिवृत्ति में दूसरों के और समाज के प्रति नैतिक जिम्मेदारी की भावना शामिल होती है। नैतिक जिम्मेदारी के परिणामस्वरूप यह मूल्याँकन करने की आवश्यकता है कि किसी के कार्य दूसरों को कैसे प्रभावित कर सकते हैं तथा अपने निर्णयों के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने पर जोर दिया जाता है।
  - **उदाहरण के लिए,** सहानुभूति की नैतिक अभिवृत्ति वाला एक सिविल सेवक जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए सक्रिय रूप से धर्मार्थ गतिविधियों में संलग्न हो सकता है।
- **नैतिक विकास:** नैतिक अभिवृत्ति समय के साथ समाजीकरण, शिक्षा और व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से प्रकट और विकसित होती है।
  - जैसे-जैसे व्यक्ति परिपक्व होते हैं और नैतिक चिंतन में संलग्न होते हैं, नैतिक अभिवृत्तियाँ अधिक सूक्ष्म और परिष्कृत हो जाती हैं।
- **नैतिक साहस:** नैतिक अभिवृत्तियाँ नैतिक साहस के रूप में प्रकट हो सकती हैं, जिसमें किसी की नैतिक मान्यताओं के लिए खड़े होने और नैतिक चुनौतियों या गलत कार्यों के सामने कार्रवाई करने की इच्छा शामिल है।
  - **मजबूत नैतिक अभिवृत्तियों वाले व्यक्ति अन्याय या अनैतिक व्यवहार के खिलाफ बोलकर साहस का प्रदर्शन कर सकते हैं,** भले ही इसमें व्यक्तिगत जोखिम या प्रतिक्रिया शामिल हो।

मानवीय कार्यों पर नैतिक अभिवृत्ति का प्रभाव	
सकारात्मक	**नकारात्मक**
• परोपकारिता	• स्वयं सेवक नैतिकता
• स्वयंसेवा	• युद्ध
• अखंडता	• नरसंहार
• सामाजिक सेवा	• दंगे
• दान/परोपकार	• आतंकवाद

नैतिक अभिवृत्तियों के उदाहरण:

- **ईमानदारी:** नेहा एक ईमानदार पत्रकार है जो सच बोलने के महत्व में विश्वास करती है। वह लगातार जनता को सटीक और निष्पक्ष जानकारी प्रदान करने का प्रयास करती है, भले ही इसका मतलब शक्तिशाली निहित स्वार्थों को चुनौती देना हो।
- **करुणा:** एक समर्पित नर्स, ऋचा, मरीजों के साथ अपनी दैनिक बातचीत में करुणा का प्रतीक है। वह ध्यान से सुनती है, सांत्वना देती है और उनकी भलाई सुनिश्चित करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करती है, चुनौतीपूर्ण समय के दौरान सहायता का एक स्रोत प्रदान करती है।
- **न्याय:** मानवाधिकार वकील राहुल न्याय की प्रबल भावना से प्रेरित हैं। वह यह सुनिश्चित करने के लिए अथक संघर्ष करते हैं कि सीमांत समुदायों को कानूनी प्रतिनिधित्व तक समान पहुँच मिले, प्रणालीगत परिवर्तन की वकालत की जाए और भेदभावपूर्ण प्रथाओं को चुनौती दी जाए।
- **सत्यनिष्ठा:** एक नैतिकता से युक्त व्यावसायिक नेत्री, आयुषी, अपने निर्णय लेने में अटूट सत्यनिष्ठा प्रदर्शित करती है। वह भ्रष्ट आचरण में शामिल होने से इनकार करती है, अपने संगठन के भीतर पारदर्शिता को बढ़ावा देती है तथा अपने कर्मचारियों और हितधारकों के साथ निष्पक्षता एवं सम्मान के साथ व्यवहार करती है।
- **स्वायत्तता का सम्मान:** नागरिक अधिकार कार्यकर्ता नितिन व्यक्तिगत स्वायत्तता का सम्मान करने में दृढ़ता से विश्वास करते हैं। वह सीमांत समूहों के अधिकारों की वकालत करते हैं, उन्हें अपना पक्ष रखने के लिए सशक्त बनाते हैं और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से शामिल करते हैं जो उनके जीवन को प्रभावित करता है।

- पर्यावरणीय जिम्मेदारी: पर्यावरण वैज्ञानिक निधि पर्यावरणीय जिम्मेदारी की गहरी भावना रखती हैं। वह संधारणीय प्रथाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए लगन से काम करती हैं, संरक्षण पहल में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं और दूसरों को ग्रह की रक्षा हेतु कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

नैतिक अभिवृत्तियों का निहितार्थ:

सकारात्मक निहितार्थ	नकारात्मक निहितार्थ
• मजबूत भावनाओं से बंधा हुआ है। इसलिए, यह सामाजिक बहिष्कार के डर से होने वाले विचलित व्यवहारों को रोकता है, जैसे- बाल उत्पीड़न या अनाचार।	• लोग इसका उपयोग हिंसक व्यवहार और पागलपन को उचित ठहराने के लिए कर सकते हैं और फिर भी, समाज इसे स्वीकार करेगा क्योंकि नैतिक अभिवृत्ति मजबूत भावनाओं पर आधारित है।
• **उदाहरण:** व्यक्ति को परोपकारिता, स्वयंसेवा और समाज सेवा की ओर प्रेरित करता है।	• **उदाहरण:** किसी व्यक्ति को धार्मिक और क्षेत्रीय मुद्दों को सही ठहराने के लिए दंगों, नरसंहार और आतंकवाद की ओर प्रेरित करता है।
• नैतिक निर्णय लेने का मार्गदर्शन करता है।	• इसका परिणाम नैतिक निरपेक्षता और अनम्यता हो सकता है।
• सामाजिक एकता और विश्वास को बढ़ावा देता है।	• नैतिक धर्माभिमान और श्रेष्ठता को जन्म दे सकता है।
• व्यक्तिगत एवं सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल देता है।	• नैतिक पुलिसिंग और न्यायिक अभिवृत्ति को बढ़ावा मिल सकता है
• न्याय और निष्पक्षता की भावना को बढ़ावा देता है।	• नैतिक संघर्ष और दुविधाएँ पैदा कर सकता है।

सामाजिक मुद्दे से संबंधित नैतिक अभिवृत्ति: जलवायु परिवर्तन

केस स्टडी: मेरे मित्र, जॉन ने जलवायु परिवर्तन के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित कर ली है। उनका मानना है कि व्यक्तिगत कार्रवाई से कोई खास फर्क नहीं पड़ सकता और मीडिया इस मुद्दे को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती है। अब जलवायु परिवर्तन के प्रति उनकी नकारात्मक अभिवृत्ति को बदलना मेरे ऊपर है जो वास्तव में वास्तविक है।

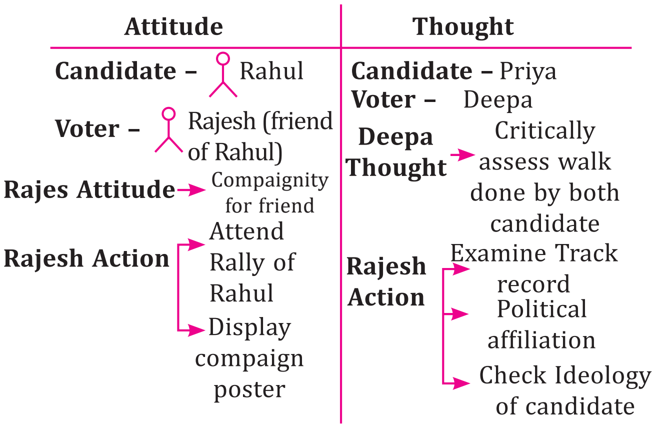

निष्कर्षत: नैतिक अभिवृत्तियाँ व्यक्तियों के विश्वासों, मूल्यों तथा नैतिक सिद्धांतों और नैतिक मानकों के प्रति स्वभाव को शामिल करती हैं। ये नैतिक निर्णय लेने, नैतिक जिम्मेदारी और नैतिक साहस का मार्गदर्शन करती हैं। नैतिक अभिवृत्तियों के उदाहरणों में ईमानदारी, करुणा, न्याय, सत्यनिष्ठा, स्वायत्तता के प्रति सम्मान और पर्यावरणीय जिम्मेदारी शामिल हैं। सकारात्मक नैतिक अभिवृत्तियों को अपनाने और बढ़ावा देने से, व्यक्ति अधिक नैतिक और सामंजस्यपूर्ण समाज में योगदान दे सकते हैं।

2.13 सामाजिक अभिवृत्ति

- यह एक व्यवहार प्रतिरूप, एक सामाजिक उत्तेजना के प्रति एक वातानुकूलित प्रतिक्रिया या प्रत्याशित प्रवृत्ति है। यह समाज, संस्कृति, संगठनों, संस्थानों आदि जैसी सामाजिक संस्थाओं के प्रति एक व्यक्ति का दृष्टिकोण है।
- इसे व्यक्तिगत अनुभवों और अवलोकनों द्वारा आकार दिया गया है। इससे पूर्वप्रवृत्तियाँ सीखी जा सकती हैं।

उदाहरण

एलजीबीटीक्यू समुदाय के प्रति **मुख्यधारा समाज** की अभिवृत्ति।

2.14 समाज के कमजोर वर्गों के प्रति अभिवृत्ति

कमजोर वर्गों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति:

- **सकारात्मक अभिवृत्ति,** व्यक्ति की सहानुभूति और देखभाल करने वाले स्वभाव को दर्शाती है। यह कमजोर और सीमांत वर्ग के प्रति करुणा का प्रतीक है।
- **सामाजिक समावेशन और समानता:** एक ऐसी अभिवृत्ति को अपनाना जो सामाजिक समावेशन और समानता को बढ़ावा देती है, कमजोर वर्गों के व्यक्तियों के अधिकारों और सम्मान को पहचानती है। इसमें समान अवसर, संसाधनों तक पहुँच और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भागीदारी सुनिश्चित करना शामिल है।

- **उदाहरण:** सकारात्मक कार्रवाई नीतियों का समर्थन करना जिसका उद्देश्य कुछ समुदायों के सामने आने वाले ऐतिहासिक नुकसानों को दूर करना है, जैसे कि शैक्षणिक संस्थानों या रोजगार में आरक्षण।

- **वकालत और समर्थन:** कमजोर वर्गों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति में उनके अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से वकालत करना, उनकी आवाज को बढ़ाना और उन्हें सशक्त बनाने के लिए सहायता प्रदान करना शामिल है। इसमें असमानता को कायम रखने वाली प्रणालीगत बाधाओं को पहचानना और चुनौती देना शामिल है।
    - **उदाहरण:** किसी मानवाधिकार संगठन में शामिल होना या उन अभियानों में भाग लेना, जो सीमांत समुदायों के अधिकारों और मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं।

कमजोर वर्गों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति:

- **भेदभाव और पूर्वाग्रह:** कमजोर वर्गों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति भेदभाव, रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह के रूप में प्रकट होती है। इसमें इन वर्गों के व्यक्तियों के साथ गलत व्यवहार करना, उन्हें अवसरों से वंचित करना या उनकी क्षमताओं या मूल्य के बारे में पक्षपातपूर्ण विश्वास रखना शामिल है।
    - **उदाहरण:** नस्लीय रूपरेखा में संलग्न होना या जाति, लिंग या विकलांगता के आधार पर भेदभावपूर्ण विचार व्यक्त करना।
- **उपेक्षा और उदासीनता:** कमजोर वर्गों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता उनके संघर्षों और चुनौतियों के प्रति चिंता की कमी या उपेक्षा को दर्शाती है। इसमें एक निष्क्रिय रुख शामिल है जहाँ व्यक्ति असमानता या अन्याय को संबोधित करने के लिए सक्रिय रूप से शामिल नहीं हो सकते हैं या कदम नहीं उठा सकते हैं।
    - **उदाहरण:** सामाजिक अन्याय की घटनाओं को नजरअंदाज करना या कमजोर समुदायों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर आँखें मूंद लेना।
- **कलंकीकरण और सीमांतीकरण:** नकारात्मक अभिवृत्ति कमजोर वर्गों को कलंकित करने और सीमांतीकरण करने, रूढ़िवादिता को मजबूत करने और उन्हें मुख्यधारा के समाज से अलग करने में योगदान कर सकती हैं। यह बहिष्करण और सीमित अवसरों के चक्र को कायम रखती है।
    - **उदाहरण:** सीमांत समुदायों के व्यक्तियों को उनकी सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर धमकाना या उनका बहिष्कार करना।

सिविल सेवक के लिए अभिवृत्ति का महत्व

- **दयालु रवैया:** सिविल सेवकों को कमजोर वर्गों के प्रति करुणा प्रदर्शित करनी चाहिए और उन्हें ऊपर उठाने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करना चाहिए।
- **सहिष्णुता:** सिविल सेवकों को कमजोर वर्गों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सहिष्णु होना चाहिए।
- **मौलिक अधिकारों से परिचित होना:** सिविल सेवकों को सीमांत नागरिकों के मौलिक अधिकारों के बारे में पता होना चाहिए।
- **सर्वोदय और अंत्योदय:** सिविल सेवकों को सभी के उत्थान की भावना से काम करना चाहिए, विशेषकर गरीबों के उत्थान की।
- **सक्रिय सहानुभूति:** सिविल सेवकों को कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।
- **रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों से बचना:** सिविल सेवकों को व्यक्तियों के प्रति अपने व्यवहार में पूर्वाग्रहों और रूढ़िवादिता से दूर रहना चाहिए।
    - **उदाहरण:** आईएएस अधिकारी अमित गुप्ता की पहल "डलिया (टोकरी) जलाओ" ने उत्तर प्रदेश के बदायूँ जिले में मैला ढोने की प्रथा को खत्म करने में मदद की।

2.15 पूर्वाग्रह

- इसमें पूर्व-निर्णय शामिल होते हैं जो आमतौर पर किसी समूह के सदस्यों के बारे में नकारात्मक होते हैं।
- यह एक समूह के सदस्यों के प्रति एक निराधार और अक्सर नकारात्मक अभिवृत्ति है। लोगों के व्यवहार पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है।
- यह एक ऐसी धारणा है जो तर्क या व्यक्तिगत अनुभव द्वारा समर्थित नहीं है। यह मुख्य रूप से किसी सामाजिक समूह में व्यक्ति की सदस्यता पर निर्भर है।
- पूर्वाग्रही अभिवृत्ति रखने वाले लोग समूह के प्रत्येक सदस्य को एक जैसा चित्रित करते हैं। यह अक्सर भेदभाव में तब्दील हो जाता है।
    - **उदाहरण:** पूर्वाग्रह कि महिलाएँ गाड़ी नहीं चला सकतीं, दलितों के पास योग्यता नहीं है, आदिवासी गंदे हैं आदि।

पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता के बीच अंतर

रूढ़िवादिता	पूर्वाग्रह
यह किसी व्यक्ति या लोगों के समूह के बारे में एक विचार है।	यह किसी व्यक्ति या समूह के बारे में अभिवृत्ति और भावनाएँ हैं।
यह प्रकृति में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों है।	यह नकारात्मक रवैया है।
उदाहरण: अमेरिका में भारतीय समुदाय के बारे में यह धारणा है कि वे बुद्धिमान हैं तथा गणित और कंप्यूटर में अच्छे हैं।	**उदाहरण:** अमेरिका में अश्वेत समुदाय के प्रति पूर्वाग्रह कि वे नशे के आदी हैं।

पूर्वाग्रह का प्रतिकार कैसे करें?

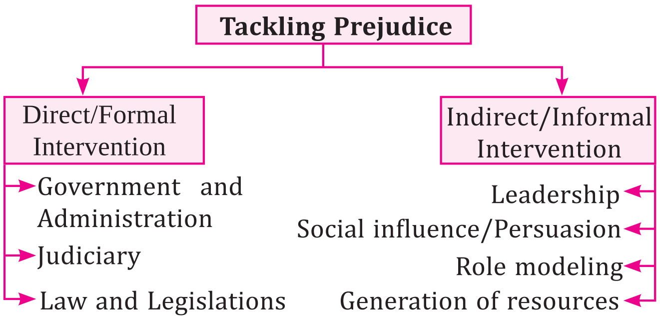

- **कारण और स्रोत की पहचान करना:** पूर्वाग्रह के मूल कारणों का पता लगाने के लिए उसकी उत्पत्ति का निर्धारण करना।
- **अधिगम पूर्वाग्रहों के अवसरों को कम करना:** पूर्वाग्रह को बढ़ावा देने वाली पक्षपाती जानकारी या वातावरण के संपर्क को कम करना।
- **पारस्परिक क्रिया और संवाद को प्रोत्साहित करना:** विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के लिए पारस्परिक क्रिया करने, संवाद में शामिल होने और अपने अनुभवों को साझा करने के अवसरों को सुगम बनाना। खुले विचारों वाली बातचीत को प्रोत्साहित करने से रूढ़ियों को चुनौती देने, परानुभूति को बढ़ावा देने और समझ के सेतु बनाने में मदद मिलती है।
- **रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों को चुनौती देना:** आलोचनात्मक सोच और रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों पर सवाल उठाने को प्रोत्साहित करना। व्यक्तियों को अपनी धारणाओं और मान्यताओं की जाँच करने के लिए प्रोत्साहित करना और विविध दृष्टिकोण तथा अनुभवों के संपर्क के माध्यम से उन्हें चुनौती देना।
- **समान अवसरों को बढ़ावा देना:** सभी व्यक्तियों के लिए समान अवसरों और समान व्यवहार की वकालत करना, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो। उन नीतियों और पहलों का समर्थन करना जिनका उद्देश्य प्रणालीगत पूर्वाग्रहों को खत्म करना एवं सभी के लिए समान अवसर बनाना है।
- **अचेतन पूर्वाग्रह को संबोधित करना:** अचेतन पूर्वाग्रहों के बारे में जागरूकता बढ़ाना, जो अक्सर हमारी धारणाओं और निर्णयों को प्रभावित करते हैं। व्यक्तियों को अपने स्वयं के पूर्वाग्रहों पर विचार करने तथा आत्म-जागरूकता और शिक्षा के माध्यम से उनके प्रभाव को कम करने के लिए कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **उदाहरण के आधार पर नेतृत्व करना:** प्रभाव की स्थिति में व्यक्तियों को समावेशी व्यवहार और अभिवृत्ति का प्रदर्शन करना चाहिए, दूसरों के अनुसरण के लिए एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए। नेताओं को अपने संगठनों और समुदायों में विविधता, निष्पक्षता और समावेशिता को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए।
- **सामुदायिक संलिप्तता:** सामुदायिक पहलों और गतिविधियों में भाग लेना,जो विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाते हैं। पूर्वाग्रह और भेदभाव को दूर करने के लिए सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग करना।

2.16 राजनीतिक अभिवृत्ति

- राजनीतिक अभिवृत्तियाँ राजनीतिक विचारधाराओं, नीतियों और प्रणालियों के प्रति हमारी मान्यताओं, मूल्यों और झुकाव को दर्शाती है। राजनीतिक अभिवृत्ति को समझना यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति अपने राजनीतिक व्यवहार को कैसे आकार देते हैं, नीतिगत विकल्प कैसे चुनते हैं और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में कैसे योगदान करते हैं।

राजनीतिक अभिवृत्ति के प्रकार	
सकारात्मक	**नकारात्मक**
किसी भी राजनीतिक विचारधारा या राजनीतिक दल के लिए उत्साह, आशा, देशभक्ति और प्रेम।	किसी भी राजनीतिक विचारधारा या राजनीतिक दल के प्रति आक्रोश, घृणा, अविश्वास, उदासीनता, चिंता और भय।

राजनीतिक अभिवृत्ति का गठन:

- राजनीतिक अभिवृत्ति कई कारकों से आकार लेती है, जिनमें पालन-पोषण, शिक्षा, समाजीकरण, व्यक्तिगत अनुभव और मीडिया के संपर्क शामिल हैं।
- परिवार, साथी और समुदाय राजनीतिक मूल्यों और विचारधाराओं को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इसके अलावा, सामाजिक घटनाएँ और राजनीतिक अभियान भी धारणाओं और विश्वासों को आकार देकर राजनीतिक अभिवृत्ति के निर्माण पर प्रभाव डाल सकते हैं।

राजनीतिक अभिवृत्ति का महत्व:

- राजनीतिक अभिवृत्ति आवश्यक है क्योंकि यह हमारे राजनीतिक दृष्टिकोण को आकार देती है, निर्णय लेने को प्रभावित करती है और राजनीतिक भागीदारी को प्रेरित करती है।
- यह राजनीतिक अवधारणाओं, दलों और नीतियों का मूल्याँकन करने तथा उनके साथ जुड़ने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है।
- अपनी राजनीतिक अभिवृत्ति को समझने से, हम अपने स्वयं के दृष्टिकोण में अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं और राजनीतिक परिदृश्य के बारे में जानने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हो जाते हैं।

वे लक्षण, जो हमारे राजनीतिक अभिविन्यास को प्रभावित करते हैं:

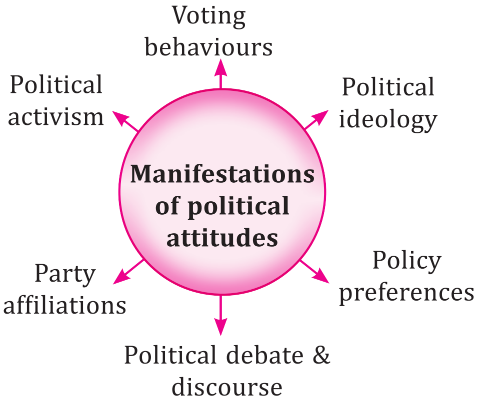

- **बहिर्मुखता:** यह सामाजिक और भौतिक दुनिया के लिए ऊर्जावान दृष्टिकोण है। इसमें सामाजिकता, गतिविधि, मुखरता और सकारात्मक संवेदनात्मकता जैसे लक्षण शामिल हैं।
- **सहमति:** यह एक समाज-समर्थक विशेषता है। इसमें परोपकार, कोमलता, विश्वास और विनम्रता जैसे लक्षण शामिल हैं।
- कर्त्तव्यनिष्ठा: यह कार्य और लक्ष्य-उन्मुख व्यवहार की सुविधा प्रदान करती है जैसे कि कार्य करने से पहले सोचना, मानदंडों और नियमों का पालन करना, योजना बनाना, संगठित करना आदि।
- **भावनात्मक स्थिरता:** भावनात्मक स्थिरता व्यक्ति को जीवन की समस्याओं को समझने का एक एकीकृत और संतुलित तरीका विकसित करने में सक्षम बनाती है। यह संगठनात्मक क्षमता और संरचित धारणा व्यक्ति को वास्तविकता-उन्मुख सोच, निर्णय और मूल्याँकन क्षमता विकसित करने में मदद करती है। इसका तात्पर्य सम स्वभाव से है।
- **अनुभव के प्रति खुलापन:** यह किसी व्यक्ति के अनुभवात्मक जीवन की चौड़ाई, गहराई, मौलिकता और जटिलता का वर्णन करता है।

हमारी राजनीतिक विचारधाराओं को प्रभावित करने वाले कारक:

- **धर्म:** धर्म हमारे नैतिक दृष्टिकोण को आकार देता है जो बदले में हमारी राजनीतिक अभिवृत्ति को आकार देता है।
  - **उदाहरण:** रामजन्म भूमि आंदोलन की पृष्ठभूमि में लोगों ने धार्मिक संबद्धता या धार्मिक मुद्दों पर अपने रुख के कारण विशेष राजनीतिक दलों के प्रति झुकाव विकसित किया। इसी तरह ज्ञानवापी (वाराणसी) और ईदगाह मस्जिद (मथुरा) की पृष्ठभूमि में धार्मिक पूजा स्थलों से संबंधित हालिया सार्वजनिक बहसों और इस मुद्दे पर विभिन्न राजनीतिक दलों के रुख ने सामाजिक राजनीतिक ध्रुवीकरण को जन्म दिया है।
- **आयु:** सामान्य अर्थों में वृद्ध लोग रूढ़िवादी होते हैं और युवा लोग उदार होते हैं और इस प्रकार एक विशेष विचारधारा के सदस्य होते हैं।
  - **उदाहरण:** युवा पीढ़ी उन राजनीतिक दलों का समर्थन करने की अधिक संभावना रखती है जो व्यक्तित्व और स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं और अपने घोषणा-पत्र में रोजगार तथा अर्थव्यवस्था को शामिल करने वाले दलों का समर्थन करते हैं, जबकि पुरानी पीढ़ी अक्सर अपने राजनीतिक घोषणा-पत्र में धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दों वाले राजनीतिक दलों का समर्थन पाती है।
- **आर्थिक स्थिति:** गरीब लोग समाजवादी विचारधारा की ओर झुकते हैं और अमीर लोग पूँजीवादी विचारधारा की ओर झुकते हैं।
  - **उदाहरण:** गरीब लोग उन दलों को वोट देने की अधिक संभावना रखते हैं जो उन्हें मुफ्त में सब्सिडी वाले भोजन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा आदि का वादा करते हैं; जबकि आर्थिक अभिजात वर्ग पूँजीवादी एजेंडे - व्यापार सुगमता, विदेशी निवेश को सुविधाजनक बनाने, निजीकरण और अर्थव्यवस्था के उदारीकरण का समर्थन करता है।
- **परिवार:** बच्चे अपने माता-पिता की विचारधारा का अनुकरण करते हैं।
- **शिक्षा:** स्कूल की विचारधारा और पाठ्यक्रम छात्रों की विचारधारा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
  - उदाहरण: चीनी शिक्षा प्रणाली साम्यवादी विचारधारा का समर्थन करती है और इसलिए वे लोकतांत्रिक देशों से घृणा करते हैं।
- **जाति:** एक व्यक्ति उस विचारधारा को अपनाने की संभावना रखता है जो उसकी जाति द्वारा समर्थित है।
  - **उदाहरण:** भारत में चुनाव अभी भी जाति के आधार पर लड़े जाते हैं। एक राजनेता द्वारा किसी जाति के उम्मीदवार को टिकट देने की अधिक संभावना होती है, जिसके पास किसी निर्वाचन क्षेत्र में बहुमत है।
- **जातीयता:** लोग अक्सर उस राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित होते हैं जो उनकी जातीयता का समर्थन करती है।
  - **उदाहरण:** द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम (डीएमके), शिरोमणि अकाली दल आदि राजनीतिक दल अपनी राजनीतिक विचारधारा जातीयता पर आधारित करते हैं।
- **सोशल मीडिया:** आ.ईटी. के युग में सोशल मीडिया लोगों की राजनीतिक विचारधाराओं को प्रभावित करने वाला प्रचार का एक प्रमुख साधन बन गया है।

- **उदाहरण:** वर्तमान में, सोशल मीडिया पर लोग समान विचारधारा वाले व्यक्तियों से घिरे रहते हैं और अपनी राजनीतिक विचारधारा को मजबूत करते हैं।

- **मनोवैज्ञानिक कारक:** कुछ व्यक्ति मनोवैज्ञानिक रूप से दूसरों की तुलना में उदारवाद या रूढ़िवाद के प्रति अधिक अनुकूलित होते हैं। उदारवादी होने के लिए अव्यवस्था के प्रति अत्यधिक सहनशीलता की आवश्यकता है।

राजनीतिक अभिवृत्ति के आयाम:

- **वैचारिक पहुँच:** राजनीतिक अभिवृत्ति उदारवाद, रूढ़िवाद, समाजवाद, मुक्तिवाद और बहुत कुछ सहित विचारधाराओं के एक स्पेक्ट्रम (वर्णक्रम) को फैलाती है। प्रत्येक विचारधारा मूल्यों, विश्वासों और नीतिगत प्राथमिकताओं के एक विशिष्ट समूह का प्रतिनिधित्व करती है, जो व्यक्तियों को उनकी राजनीतिक अभिवृत्ति को समझने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करती है।
- **नीति प्राथमिकताएँ:** वे इन मुद्दों को कैसे संबोधित किया जाना चाहिए, इस पर हमारी राय का मार्गदर्शन करती हैं, एक दृष्टि प्रदान करती हैं जिसके माध्यम से हम नीतिगत प्रस्तावों का मूल्याँकन करते हैं और निर्णय लेते हैं।
    - **उदाहरण:** भारत में, व्यक्तिगत नीति प्राथमिकताएँ धर्म, जाति, क्षेत्रीय पहचान और सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि जैसे कारकों के आधार पर भिन्न हो सकती हैं।
- **संस्थानों में भरोसा:** राजनीतिक दृष्टिकोण में सरकार, न्यायपालिका और मीडिया सहित राजनीतिक संस्थानों में हमारा भरोसा और विश्वास भी शामिल है।

समाज पर प्रभाव:

- राजनीतिक अभिवृत्तियाँ मतदान व्यवहार, राजनीतिक संबद्धता और हित समूहों के गठन का निर्धारण करती हैं।
- ये जनमत को प्रभावित करते हैं, सार्वजनिक नीति संबंधी बहसों को आकार देती हैं और सामाजिक आंदोलनों को चलाती हैं।
- इसके अलावा, राजनीतिक अभिवृत्तियाँ लोकतंत्र के कामकाज का अभिन्न अंग हैं क्योंकि ये नागरिकों को अपनी प्राथमिकताएँ व्यक्त करने और निर्वाचित अधिकारियों को जवाबदेह रखने में सक्षम बनाती हैं।

उद्विकास और परिवर्तन:

- राजनीतिक अभिवृत्तियां स्थिर नहीं हैं; ये समय के साथ विकसित और बदल सकती हैं। जैसे-जैसे समाज और परिस्थितियाँ बदलती हैं, व्यक्ति अपनी राजनीतिक मान्यताओं का पुनर्मूल्याँकन कर सकते हैं, जिससे उनकी अभिवृत्तियों और विचारधारा में बदलाव आता है। नए विचारों, अनुभवों या सम्मोहक तर्कों का प्रदर्शन राजनीतिक अभिवृत्तियों को चुनौती दे सकता है और नया आकार दे सकता है।

निष्कर्ष:

राजनीतिक अभिवृत्तियाँ विश्वासों, नीतिगत प्राथमिकताओं और राजनीतिक भागीदारी को आकार देती हैं। विविध दृष्टिकोण को समझना और उनका सम्मान करना समावेशी लोकतंत्र को बढ़ावा देता है। खुला संवाद, आलोचनात्मक सोच और परानुभूति, जीवंत विमर्श तथा सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देती है।

2.17 लोकतांत्रिक अभिवृत्ति

- यह सिविल सेवकों की उन अभिवृत्तियों को संदर्भित करती है जो निर्णय लेने में लोगों की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं। यह शक्ति या प्राधिकार के प्रतिनिधि मंडल को बढ़ावा देती हैं।
    - **उदाहरण:** भारतीय नौकरशाह शासन प्रक्रियाओं और निर्णय लेने में पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक भागीदारी सुनिश्चित करके एक लोकतांत्रिक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

विशेषताएँ: लोकतांत्रिक अभिवृत्ति में नियम और विनियमन के साथ-साथ करुणा, सहिष्णुता और समावेशिता पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- निर्णय जनमत पर आधारित होते हैं।
- बहुमत के विचार सही होते हैं।
- यह सबसे बड़ी संख्या में लोगों की संतुष्टि को अधिकतम करती है।
- यह निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा समर्थित होती है।

गुण	दोष
• यह लोगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती है। इसलिए, यह जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थानों को बढ़ावा देगी और मजबूत करेगी। • यह शासन को अधिक जवाबदेह बनाती है। • जनभागीदारी सुनिश्चित करती है। • कार्यक्रम के डिजाइन/अभिकल्प और कार्यान्वयन में लचीलापन लाती है। • इसके अंतर्गत अधिक पारदर्शिता और कुशल सार्वजनिक सेवा का वितरण होगा।	• एक व्यापक परामर्श निर्णय लेने की प्रक्रिया को धीमा और समय लेने वाला बनाती है। • समाज के हर वर्ग को संतुष्ट करने में कठिनाई होती है। कभी-कभी, इस तरह का रवैया विकास प्रक्रिया में बाधा बन जाता है। • **उदाहरण:** वन अधिनियम 2006 के तहत पर्यावरणीय मंजूरी के कारण अनुसूचित क्षेत्र में खनन और औद्योगिक विकास परियोजनाओं की मंजूरी में देरी।

2.18 नौकरशाही अभिवृत्ति

- एक नौकरशाही अभिवृत्ति एक मानसिकता या दृष्टिकोण को संदर्भित करती है जो एक संगठनात्मक या संस्थागत समायोजन के भीतर नियमों, प्रक्रियाओं और औपचारिकताओं के कठोर पालन की विशेषता है।
    - **उदाहरण:** कोई भी सरकारी एजेंसी परिवर्तन के प्रतिरोध और स्थापित प्रक्रियाओं को बाधित करने के डर से नवीन तकनीकों को अपनाने से इनकार करती है।
- यह तटस्थता, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता और गैर-पक्षपात पर आधारित है।
- नौकरशाही अभिवृत्ति की विशेषताएँ: कानून की सख्ती पर आधारित निर्णय, सभी नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करना तथा जनमत के महत्व की कमी निर्वाचित प्रतिनिधियों का विरोध करती है।

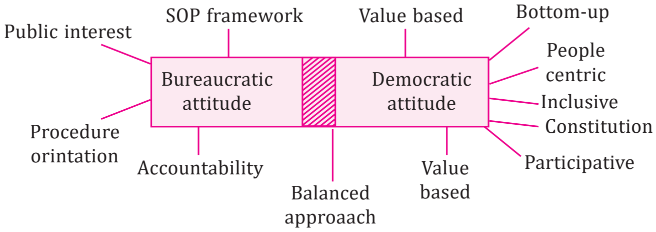

चित्र: लोकतांत्रिक और नौकरशाही अभिवृत्ति के बीच संतुलन दृष्टिकोण

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति	नौकरशाही अभिवृत्ति
• यह **सहभागी, मानवतावादी** और लचीले दृष्टिकोण और ऊर्ध्वगामी (उर्ध्वमुखी) निर्णय लेने पर आधारित है।	• यह **पदानुक्रमित अनुशासन,** आदेशों के प्रति अंतर्निहित आज्ञाकारिता, टॉप-डाउन (अधोमुखी) निर्देशों और नियम-बद्ध को दर्शाती है।
• यह जवाबदेही, लोगों की भागीदारी, पारदर्शिता, कानून के लचीलेपन और सार्वजनिक हित पर अधिक ध्यान केंद्रित करती है।	• यह नियमों, प्रक्रियाओं, टॉप-डाउन (शीर्ष-पाद) और केंद्रीकृत निर्णय लेने को मजबूत करने और उनका पालन करने पर केंद्रित है।
• यह लोगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देती है।	• नियम के रूप में आम लोगों के प्रति उदासीनता सर्वोच्च है, न कि नागरिक।
• यह पारदर्शिता और समावेशिता के मूल्यों पर आधारित है।	• यह वस्तुनिष्ठता एवं तटस्थता पर आधारित है।
• उदाहरण: जिन संस्थानों को एक समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जैसे- कल्याणकारी उपाय और सार्वजनिक सेवा प्रदान करने के लिए, एक लोकतांत्रिक अभिवृत्ति की आवश्यकता होती है। ○ नए लोक प्रबंधन जैसे नए नौकरशाही मॉडल (एनजेड)।	• **उदाहरण:** ऐसे कार्य, जहाँ श्रम का विभाजन व्यवस्थित है और आदेश संस्थागत है, नौकरशाही अभिवृत्ति में उपयोगिता पा सकते हैं। ○ ब्रिटिश युग की औपनिवेशिक नौकरशाही, वेबेरियन मॉडल आदि।

सरकारी कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए व्यवहार को बदलना। क्या करने की आवश्यकता है?

- **अभियान में सांस्कृतिक और सामाजिक परंपराओं का उपयोग किया जाना चाहिए:** उदाहरण के लिए, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के सफल कार्यान्वयन के लिए, हमारे ग्रंथों का संदर्भ लिया जा सकता है जहाँ महिलाओं को शक्ति के अवतार के रूप में पूजा जाता है।
- **चिंतन सत्र:** जहाँ सरकारी अभिकर्त्ता लोगों को कुछ लक्ष्यों के लिए पूर्व-प्रतिबद्ध कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, इसका उपयोग 'स्वच्छ भारत अभियान' में किया जा सकता है जहाँ स्वच्छाग्रही लोगों को स्वच्छता लक्ष्यों के लिए पूर्व-प्रतिबद्ध करेंगे।
- **लोगों को मूर्त परिणामों का एहसास कराना:** उन लोगों के उदाहरण दिखाकर, जो कार्यक्रम से लाभान्वित हुए हैं।
- **नागरिकों और सरकार के बीच भावनात्मक जुड़ाव का निर्माण:** सरकार का पारदर्शी संचार और सक्रिय जुड़ाव नागरिकों के साथ भावनात्मक जुड़ाव, विश्वास और सामाजिक प्रगति के लिए साझा जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देता है।

2.19 सामाजिक प्रभाव

- सामाजिक प्रभाव **उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा व्यक्तियों के विचार, भावनाएँ और व्यवहार दूसरों की उपस्थिति या कार्यों से प्रभावित होते हैं।**
- **यह हमारी अभिवृत्ति, विश्वासों और कार्यों पर अन्य लोगों का प्रभाव है।** सामाजिक प्रभाव विभिन्न रूपों में हो सकता है, जिसमें अनुरूपता, अनुपालन और आज्ञाकारिता शामिल हैं।

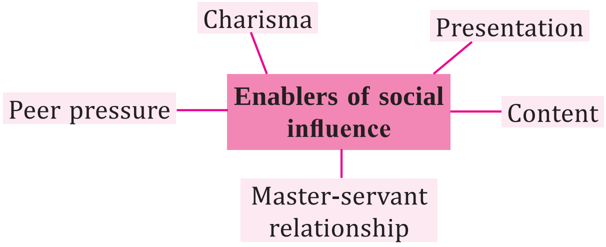

वे तरीके जिनसे व्यक्ति सामाजिक प्रभावों पर प्रतिक्रिया करते हैं:

- **अनुपालन:** एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरी तरह से आश्वस्त नहीं होता है, लेकिन सतह के स्तर पर सहमति दिखाता है।
  - **उदाहरण:** एक बातचीत में, एक प्रबंधक एक ऐसी टिप्पणी करता है जो एक परियोजना के परिणाम के संबंध में तर्कहीन लगती है। सहयोगी प्रबंधक आश्वस्त नहीं होता है, लेकिन अपने प्रबंधक का खंडन करने से बचता है। यहाँ सहयोगी प्रबंधक केवल अनुपालन दिखाता है।
- **पहचान:** इस मामले में, एक व्यक्ति,दूसरे प्रभावशाली व्यक्ति को अपना आदर्श मानता है।
  - **उदाहरण:** एक कॉलेज का छात्र पेप्सी पीता है क्योंकि उसका पसंदीदा सेलिब्रिटी इसका समर्थन करता है।
- **आंतरिककरण:** यहाँ दो व्यक्ति एक ही विश्वास प्रणाली साझा करते हैं। अनुपालन के लिए बनाए गए उदाहरण में यदि दूसरा व्यक्ति भी नस्लवादी टिप्पणी करता है, तो यह आंतरिककरण का मामला है।

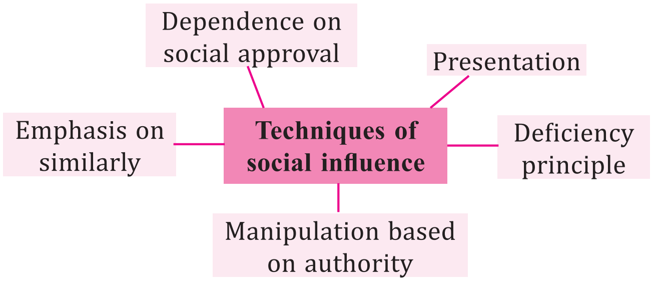

सामाजिक प्रभाव के प्रकार:

1. **मानक प्रभाव:** एक व्यक्ति पसंद किए जाने और स्वीकार किए जाने के लिए भीड़ का अनुसरण करता है। सामान्य मान्यताओं, मूल्यों, अभिवृत्ति और व्यवहार पर सहमत होने से, एक व्यक्ति अपनी स्वीकृति और जीवित रहने की संभावनाओं को बढ़ाता है।
2. **सूचनात्मक प्रभाव:** एक व्यक्ति भीड़ के साथ चलता है क्योंकि वह सोचता है कि भीड़ उससे अधिक जानती है।

सामाजिक प्रभाव के उदाहरण		
व्यक्ति A अपने दोस्तों को नई पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाने के लिए मनाता है, जिससे उनकी उपभोग की आदतों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।	**व्यक्ति B** का करिश्माई नेतृत्व एक समूह को स्वयंसेवा करने और एक स्थानीय दान कार्यक्रम के लिए धन जुटाने के लिए प्रेरित करता है।	**व्यक्ति C** के प्रभावशाली सोशल मीडिया पोस्ट से सार्वजनिक जागरूकता और जुड़ाव में वृद्धि होती है।

दो प्रकार की परिस्थितियाँ सूचनात्मक प्रभाव पैदा करती हैं:

1. **अस्पष्ट स्थितियाँ:** जब व्यक्ति नहीं जानते कि क्या करना है।
2. **संकट की स्थिति:** जब किसी व्यक्ति के पास यह सोचने का समय नहीं होता है कि क्या करना है। उदाहरण के लिए, भगदड़ के दौरान।

सामाजिक प्रभाव के सिद्धांत:

- **पारस्परिकता:** लोग जो प्राप्त करते हैं, उसे वापस दे देते हैं।
  - **उदाहरण:** एक-दूसरे का अभिवादन करते समय मुस्कुराहट का आदान-प्रदान करना- परस्पर सम्मान की भावना।
- **निरंतरता:** आम तौर पर, लोग अपने पिछले कार्यों, राय और दावों के अनुरूप होने की कोशिश करते हैं।
- **सामाजिक प्रमाण:** लोग अक्सर यह देखकर निर्णय लेते हैं कि इसी तरह के अवसरों पर दूसरों ने क्या किया है।
- **पसंद:** लोग अक्सर उन लोगों से प्रभावित होते हैं, जिन्हें वे पसंद करते हैं।
- **प्राधिकार:** वैध अधिकार वाले लोग दूसरों को प्रभावित करते हैं।
  - **उदाहरण:** रोल मॉडल, करिश्माई व्यक्तित्व।
- **अभाव:** वस्तुएँ और अवसर तब अधिक वांछनीय हो जाते हैं, जब वे कम सुलभ होते हैं।
  - **उदाहरण:** सीमित संस्करण या बिक्री के लिए अंतिम सप्ताह जैसे नारों का उपयोग तत्काल प्रभाव डालता प्रतीत होता है।

सार्वजनिक भावना संदर्भ: ओडिशा ट्रेन दुर्घटना

- ओडिशा के बालासोर जिले में हाल ही में हुई रेल दुर्घटना में लगभग 200 लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हो गए।
- बिना रुके काम करने वाले डॉक्टरों और अस्पताल के अन्य कर्मचारियों के अलावा, समाज भी सबसे अच्छे सहायकों में से एक बन गया।

- ट्रेन दुर्घटना ने ग्रामीणों के मानवीय पक्ष को दिखाया है जो रक्तदान करने के लिए चिकित्सा केंद्रों के बाहर बड़ी संख्या में कतार में खड़े थे। कुछ नागरिक समाज समूहों ने भी इस नेक काम में मदद की।
- जनता द्वारा की गई इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप आवश्यकता से अधिक रक्त उपलब्ध था।

मानदंड

- ये **समूह-आयोजित मान्यताएँ हैं** कि सदस्यों को किसी दिए गए संदर्भ में कैसे व्यवहार करना चाहिए।
- ये अनौपचारिक समझ हैं जो समाज के व्यवहार को नियंत्रित करती हैं।
  - **उदाहरण:** भारतीय समाज में पैर छूना सम्मान का प्रतीक माना जाता है।

निष्कर्ष:

कुल मिलाकर, सामाजिक प्रभाव मानव व्यवहार और निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह जानबूझकर या अनजाने में, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष माध्यम से घटित हो सकता है और यह हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। सामाजिक प्रभाव को समझने से हमें सामाजिक स्थितियों से निपटने, समूह की गतिशीलता को समझने तथा अपने स्वयं के मूल्यों एवं हमारे विचारों और कार्यों पर दूसरों के प्रभाव दोनों पर विचार करते हुए सूचित विकल्प बनाने में मदद मिलती है।

2.20 अनुनयन

- अनुनयन से तात्पर्य किसी विशेष विश्वास, अभिवृत्ति या व्यवहार को अपनाने के लिए किसी को प्रभावित करने या समझाने की प्रक्रिया से है। इसमें किसी की राय बदलने या उन्हें कोई विशिष्ट कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए संचार और तर्क-वितर्क तकनीकों का उपयोग करना शामिल है।
- अनुनयन मानव पारस्परिक क्रिया का एक मूलभूत पहलू है और विज्ञापन, विपणन, राजनीति तथा पारस्परिक संबंधों सहित विभिन्न क्षेत्रों में इसका उपयोग किया जाता है।

अनुनयन के तत्व:

- **स्रोत/संप्रेषक (अनुनयकर्त्ता):** प्रेरक संदेश देने वाले व्यक्ति या इकाई को स्रोत के रूप में जाना जाता है। स्रोत की विश्वसनीयता, विशेषज्ञता और संभावना अनुनयन की प्रभावशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।
- **संदेश:** संदेश की सामग्री और संरचना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक प्रेरक संदेश स्पष्ट, तार्किक और लक्षित दर्शकों के अनुरूप होना चाहिए। यह अक्सर अभिवृत्ति या व्यवहार को प्रभावित करने के लिए भावनाओं, मूल्यों और तर्क का सहारा लेता है।
- **श्रोतागण/दर्शक:** लक्षित दर्शकों की विशेषताओं, आवश्यकताओं और विश्वासों को समझना आवश्यक है। अनुनयन तकनीकों को दर्शकों की रुचियों, मूल्यों और प्रेरणाओं के साथ प्रतिध्वनित करने के लिए अनुकूलित किया जाना चाहिए।
- **संचार चौनल/माध्यम:** जिस माध्यम से संदेश दिया जाता है, वह अनुनयन को भी प्रभावित करता है। इसमें आमने-सामने की बातचीत, लिखित सामग्री, डिजिटल प्लेटफॉर्म या जनसंचार माध्यम चौनल शामिल हो सकते हैं।

अनुनयन का मामला

तार्किक अपील:	भावनात्मक अपील:	सामाजिक प्रमाण:
व्यक्ति A पारंपरिक जीवाश्म ईंधन पर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के लाभों के बारे में दूसरों को मनाने के लिए तथ्यों, आंकड़ों और विशेषज्ञ विचारों का उपयोग करके एक अच्छी तरह से शोध एवं तार्किक मामला बनाता है।	**व्यक्ति B** मानसिक स्वास्थ्य के साथ अपनी चुनौतियों के बारे में एक व्यक्तिगत कथा साझा करके एक भावनात्मक अपील करता है, ताकि लोगों से मानसिक कल्याण को प्राथमिकता देने और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने वाले प्रयासों का समर्थन करने का आग्रह किया जा सके।	**व्यक्ति C** खुश ग्राहकों या ग्राहकों से प्रशंसा-पत्र और सफलता की कहानियों का उपयोग करता है, ताकि दूसरों को किसी विशिष्ट उत्पाद या सेवा को आजमाने के लिए प्रेरित किया जा सके, इस बात पर जोर देते हुए कि इसने उनके जीवन में कैसे सुधार किया है।

अनुनयन के कार्य:

- **वर्तमान कठोर अभिवृत्ति को कमजोर करना:** जब दर्शकों की अभिवृत्ति विपरीत होती है, तो अनुनयन दर्शकों को वर्तमान अभिवृत्ति के साथ कम सहज बनाने में मदद कर सकता है। उदाहरण के लिए, श्री अब्दुल कलाम जी की महानता के बारे में बात करने से इस्लामोफोबिया वाले लोगों की मुसलमानों के प्रति कठोर अभिवृत्ति ढीली हो सकती है।
- **नैतिक प्रानुकूलन:** अनुनयन लोगों की सामाजिक अभिवृत्ति में बदलाव ला सकता है। उदाहरण के लिए, स्टेशन को साफ-सुथरा रखने की नियमित घोषणाएँ लोगों को अपना व्यवहार बदलने के लिए प्रेरित करती हैं।

- **प्रतिरोध को कम करना:** जब दर्शकों ने विचारों का मध्यम विरोध किया है, तो अनुनयन दर्शकों को तटस्थता की ओर ले जा सकता है।
- **अभिवृत्ति बदलना:** जब दर्शकों के पास कोई प्रतिबद्ध अभिवृत्ति नहीं है, तो अनुनयन अभिवृत्ति बदलने में मदद कर सकता है।
- **अभिवृत्ति को तीव्र करना:** जब दर्शकों की अभिवृत्ति समान हो, तो अनुनयन वर्तमान अभिवृत्ति को बढ़ा सकता है।
- **व्यवहार प्राप्त करना:** जब दर्शक अनुनयकर्त्ता के साथ दृढ़ता से तालमेल बिठाते हैं, तो अंतिम उद्देश्य दर्शकों को अभिनय करने के लिए प्रेरित करना होता है।

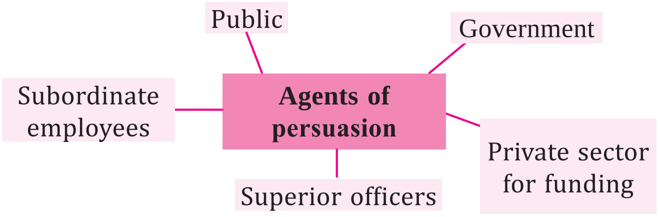

अनुनयन की विधियाँ:

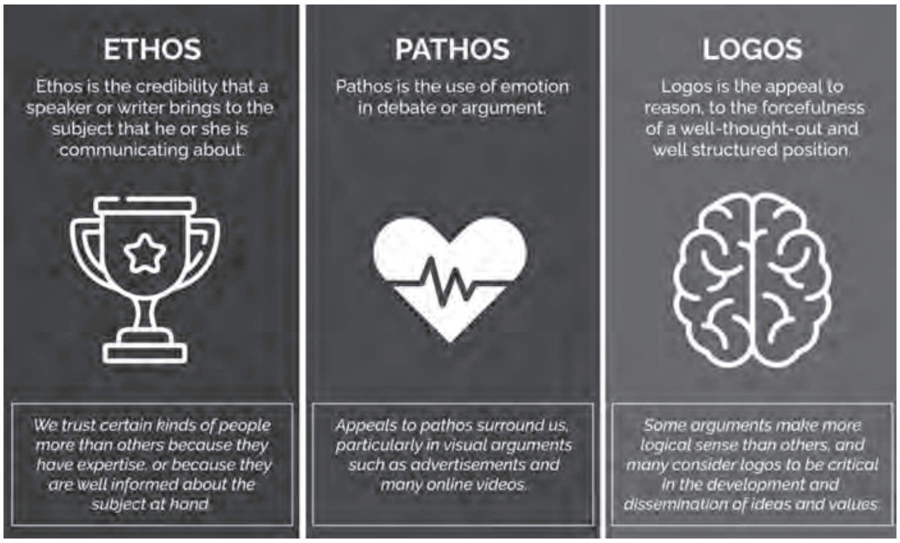

चित्र: अनुनयन के तरीके

- **तर्क द्वारा अपील (लोगस/शब्द):** इस विधि में दूसरों को मनाने के लिए तार्किक तर्क, साक्ष्य और तर्कसंगत तथ्य प्रस्तुत करना शामिल है। यह संदेश का समर्थन करने के लिए तथ्यों, आंकड़ों, विशेषज्ञों की राय और तार्किक निष्कर्षों पर निर्भर करता है।
  - **उदाहरण:** गाँधी जी ने ब्रिटिश लोगों के इस विश्वास में तार्किक खामियों की ओर इशारा करते हुए उनके कारण की अपील की कि बल, भारत पर शासन कर सकता है।
- **भावनाओं द्वारा अपील (पाथोस/करुणा):** इस विधि में दर्शकों की संवेदनाओं और भावनाओं को आकर्षित करना शामिल है। संवेदनात्मक अपील व्यक्तिगत उपाख्यानों का उपयोग करके या दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होने वाले शक्तिशाली आख्यानों का निर्माण करके कहानी कहने में प्रभावी हो सकती है।

उदाहरण: पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्रवाई करने के लिए दूसरों को मनाने के लिए जलवायु परिवर्तन से प्रभावित व्यक्तियों की दिल दहला देने वाली कहानियों का उपयोग करना है।

- **प्राधिकार द्वारा अपील (एथोस/लोकाचार):** इस विधि में संदेश का समर्थन करने के लिए विश्वसनीय स्रोतों, विशेषज्ञों या अधिकारियों का हवाला देना शामिल है। प्राधिकरण से अपील करना दूसरों को समझाने में प्रभावी हो सकता है, जब वे प्राधिकरण को जानकार और भरोसेमंद मानते हैं।
  - **उदाहरण:** नए चिकित्सा उपचार की प्रभावशीलता का समर्थन करने के लिए प्रसिद्ध वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों का हवाला देना।
  - **उद्धरण:** "इस क्षेत्र के अग्रणी विशेषज्ञ डॉ. जेन स्मिथ के अनुसार, इस उपचार ने नैदानिक परीक्षणों में उल्लेखनीय परिणाम दिखाए हैं।"
- **सामाजिक प्रमाण:** यह विधि इस सिद्धांत पर निर्भर करती है कि लोग दूसरों के कार्यों और विचारों से प्रभावित होते हैं। प्रशंसा-पत्र, समीक्षाएँ, समर्थन या केस स्टडी सामाजिक प्रमाण के उदाहरण हैं जिनका उपयोग राय प्रभावित करने के लिए किया जा सकता है।
  - **उदाहरण:** मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों के माध्यम से नागरिक अधिकार आंदोलन के लिए व्यापक समर्थन को उजागर करके, दूसरों को समानता के कारण में शामिल होने के लिए प्रेरित करके सामाजिक प्रमाण का उपयोग किया।

- **पारस्परिकता/अन्योन्यता:** यह विधि इस सिद्धांत पर आधारित है कि लोग प्राप्त उपकार या रियायतों को वापस करने के लिए बाध्य महसूस करते हैं। कुछ मूल्य की पेशकश करके या रियायत देकर, व्यक्ति दूसरों में ऋणग्रस्तता की भावना पैदा कर सकते हैं, जिससे उनके अनुरोधों या दृष्टिकोणों का अनुपालन करने की अधिक संभावना हो जाती है।
  - **उदाहरण:** संभावित ग्राहकों को किसी सॉफ्टवेयर उत्पाद का निःशुल्क परीक्षण प्रदान करना, पारस्परिकता की भावना पैदा करना और उनके निरंतर उपयोग की संभावना बढ़ाना।
- **अभाव:** यह विधि किसी उत्पाद, अवसर या विचार की सीमित उपलब्धता या कमी की धारणा का लाभ उठाती है। यह तात्कालिकता या चूकने के डर की भावना पैदा करती है, व्यक्तियों को तत्काल कार्रवाई करने या दुर्लभ संसाधन या लाभ को सुरक्षित करने के लिए अनुनयन संदेश को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है।
  - **उदाहरण:** तात्कालिकता की भावना पैदा करने और तत्काल कार्रवाई को प्रोत्साहित करने के लिए किसी उत्पाद या सेवा के लिए सीमित समय का प्रस्ताव बनाना।
- **कंट्रास्ट (तुलना) और फ्रेमिंग (निरूपण):** इस विधि में संदेश या जानकारी को इस तरह से तैयार करना शामिल है जो धारणा को प्रभावित करता है। एक तुलना या विरोधाभास प्रस्तुत करके, व्यक्तियों को संदेश या विकल्प को अधिक अनुकूल या लाभप्रद समझने के लिए राजी किया जा सकता है।
  - **उदाहरण:** वरीयता को प्रभावित करने के लिए एक के ऊपर दूसरे के लाभों पर जोर देते हुए, साथ-साथ दो विकल्प प्रस्तुत करना।

उदाहरण: केस स्टडी

XYZ नामक एक शहर की कल्पना करें, जहाँ आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से ने समाज के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है। वे विभिन्न माध्यमों से अपनी घृणा व्यक्त करते हैं, जैसे कि सार्वजनिक विरोध, आलोचना से भरे सोशल मीडिया अभियान तथा सरकार और सार्वजनिक संस्थानों के बारे में लगातार शिकायतें। इन व्यक्तियों के बीच प्रचलित भावना व्यवस्था के प्रति मोहभंग, अविश्वास और हताशा की है। इस मुद्दे को हल करने के लिए नियुक्त एक सिविल सेवक के रूप में, आपका लक्ष्य उनकी नकारात्मक अभिवृत्ति को बदलना तथा नागरिकों और समाज के बीच अधिक सकारात्मक एवं रचनात्मक संबंधों को बढ़ावा देना है।

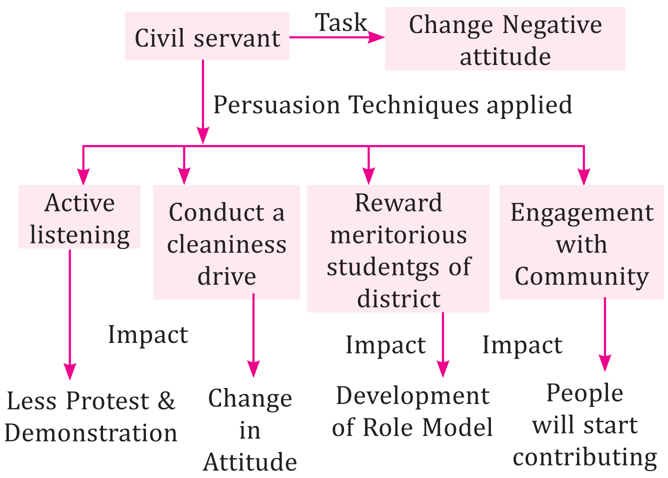

अनुनयन के नैतिक विचार:

- यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि दर्शकों के साथ छेड़छाड़ या धोखा दिए बिना, अनुनयन **तकनीकों का उपयोग** जिम्मेदारी से और पारदर्शी रूप से किया जाए।
- **स्वायत्तता के लिए सम्मान:** अनुनयन को व्यक्तियों की स्वायत्तता और स्वतंत्र इच्छा का सम्मान करना चाहिए। इसमें किसी की राय या निर्णय को उनकी इच्छा के खिलाफ प्रभावित करने के लिए जबरदस्ती, छलसाधन (विधि) या भ्रामक रणनीति का उपयोग शामिल नहीं होना चाहिए।
- **ईमानदारी और पारदर्शिता:** नैतिक अनुनयन के लिए जानकारी और तर्क प्रस्तुत करने में ईमानदारी एवं पारदर्शिता की आवश्यकता होती है। भ्रामक या झूठे दावों से बचते हुए, सटीक तथा विश्वसनीय जानकारी प्रदान करना महत्वपूर्ण है जो दूसरों को धोखा दे सकते हैं या छलसाधन (विधि) / हेरफेर कर सकते हैं।
- **सूचित सहमति:** किसी को मनाने का प्रयास करते समय, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि उनके पास सभी प्रासंगिक जानकारी तक पहुँच हो और उन्हें एक सूचित निर्णय लेने का अवसर हो। अनुनयन को किसी के ज्ञान की कमी का फायदा नहीं उठाना चाहिए या ऐसी रणनीति का उपयोग नहीं करना चाहिए जो तर्कपूर्ण निर्णय लेने की उनकी क्षमता को सीमित करती है।
- **विविध दृष्टिकोण के लिए सम्मान:** नैतिक अनुनयन विविध दृष्टिकोण और मूल्यों का सम्मान करता है। यह कुछ समूहों के भेदभाव या हाशिए पर जाने से बचने के लिए दर्शकों के व्यक्तिगत मतभेदों, मान्यताओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को स्वीकार करता है और उन पर विचार करता है।
- **संतुलित प्रस्तुति:** नैतिक अनुनयन में विषय या मुद्दे के बारे में एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करना शामिल है। यह प्रतिवाद या वैकल्पिक दृष्टिकोण को स्वीकार करता है और

प्रस्तुत करता है, जिससे व्यक्तियों को विभिन्न दृष्टिकोण का आलोचनात्मक मूल्याँकन करने तथा सूचित निर्णय लेने की अनुमति मिलती है।

- **भावनात्मक छलसाधन (विधि) से बचना:** अनुनयन केवल भावनात्मक छलसाधन (विधि) या अपीलों पर निर्भर नहीं होना चाहिए जो व्यक्तियों के डर, असुरक्षा या कमजोरियों का फायदा उठाते हैं। **यह तर्कसंगत और उचित तर्कों पर आधारित होना चाहिए जो तर्क एवं साक्ष्य को आकर्षित करते हैं।**

Case Study: Persuasion in Pandemic Phase

Persuasion in Pandemic

→ Credibility of Speaker → Prime minister himself

→ Credibility of Argument → To Fight COVID-19

→ Emotional Appeal → For Public Safety

अनुनयन के उदाहरण विभिन्न संदर्भों में पाए जा सकते हैं, जैसे कि:

- विज्ञापन अभियान, जिनका उद्देश्य उपभोक्ताओं को उत्पाद या सेवा खरीदने के लिए राजी करना है।
- राजनीतिक भाषण और अभियान,जो जनमत को प्रभावित करने और मत सुरक्षित करने की कोशिश करते हैं।
- सार्वजनिक सेवा घोषणाएँ, सीट बेल्ट पहनने या धूम्रपान छोड़ने जैसे व्यवहारों को प्रोत्साहित करती हैं।
- विक्रेता प्रेरक तकनीकों का उपयोग करते है, किसी सौदे को पूरा करना या ग्राहकों को राजी करना।
- पारस्परिक संचार, जहाँ व्यक्ति दूसरों की राय या कार्यों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।
- कुल मिलाकर, अनुनयन एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें कुशल संचार और मानव मनोविज्ञान की समझ शामिल है। इसका उपयोग अभिवृत्ति, विश्वास तथा व्यवहार को आकार देने के लिए किया जाता है,एवं इसका नैतिक और जिम्मेदार अनुप्रयोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक परिणाम ला सकता है।

TARES परीक्षण

- TARES परीक्षण नैतिक विकल्प चुनने और बचाव करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।
- नैतिक अनुनयन के पांच सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए **बेकर और मार्टिंसन (2001)** द्वारा परीक्षण विकसित किया गया था।
- यह ढाँचा उपयोगितावाद के सिद्धांत के तहत कार्य करता है, जो मानता है कि किसी कार्रवाई के परिणाम उसकी नैतिकता का मूल्याँकन करते समय कार्रवाई के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं।
- TARES **सत्यता** (संदेश की), **प्रामाणिकता** (अनुनयकर्त्ता की) **सम्मान** (अनुनयकर्त्ता के लिए) **समता** (अनुनयकर्त्ता अपील की) और **सामाजिक जिम्मेदारी** (सामान्य भलाई के लिए) का संक्षिप्त रूप है।

अनुनयन के और अधिक उदाहरण

- **कर चोरी से बचने के लिए आय का प्रकटीकरण:** ईमानदारों का सम्मान, ईमानदार करदाताओं को पुरस्कृत करना।
- **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ/सेल्फी विद डॉटर:** लड़कियों के प्रति लोगों की अभिवृत्ति बदलने के लिए।
- सरकारी सब्सिडी और मुफ्त वस्तुए छोड़ने के लिए #GiveItUp अभियान।
- जनता का ध्यान आकर्षित करने और अनुनयन के माध्यम से सार्वजनिक समर्थन इकट्ठा करने के प्रतीकात्मक साधन के रूप में **अर्थ आवर, पृथ्वी दिवस, वन दिवस** एवं **वन्यजीव दिवस को** चिह्नित करना।
- जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध वैश्विक नागरिकों को प्रेरित करना।

अनुनयन को प्रभावी बनाना:

- **अपने दर्शकों को जानना:** प्रभावी अनुनयन के लिए अपने दर्शकों को समझना महत्वपूर्ण है। अपने संदेश को तदनुसार तैयार करने के लिए उनके मूल्यों, विश्वासों और रुचियों पर शोध करना। विषय पर उनके ज्ञान के स्तर पर विचार करना और अपने तर्क इस तरह से तैयार करना,जो उनके अनुरूप हों।
- **विश्वसनीयता स्थापित करना:** अपने आप को जानकार और विश्वसनीय के रूप में प्रस्तुत करके विश्वास और विश्वसनीयता का निर्माण करना। अपने तर्कों का समर्थन करने के लिए साक्ष्य, तथ्यों और विशेषज्ञों की राय का उपयोग करना।

- **संवेदनाओं से अपील:** संवेदनाएँ अनुनयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सम्मोहक कहानियों, व्यक्तिगत उपाख्यानों या शक्तिशाली कल्पना का उपयोग करके अपने दर्शकों के संवेदनात्मक पहलू का लाभ उठाना।
- **सामाजिक प्रमाण का उपयोग करना:** लोग अक्सर इस बात से प्रभावित होते हैं कि दूसरे क्या सोचते हैं और क्या करते हैं। उन व्यक्तियों या समूहों के उदाहरण या प्रशंसा-पत्र प्रदान करके सामाजिक प्रमाण का उपयोग करना, जिन्होंने पहले ही आपके दृष्टिकोण को अपना लिया है या वांछित कार्रवाई की है। इससे पता चलता है कि दूसरों को आपका तर्क आकर्षक लगता है।
- **प्रतिवादों को संबोधित करना:** अपने दृष्टिकोण के प्रति संभावित प्रतिवादों या आपत्तियों को स्वीकार करना और उनका समाधान करना। अपने दर्शकों की चिंताओं का अनुमान लगाना और उन आपत्तियों का मुकाबला करने के लिए सबूत या तर्क प्रदान करना।
- **स्पष्ट लाभ प्रदान करना:** अपने दृष्टिकोण को स्वीकार करने या वांछित कार्रवाई करने के लाभों या फायदों को स्पष्ट रूप से बताना। दिखाना कि यह कैसे किसी समस्या का समाधान करेगा, उनके जीवन को बेहतर बनाएगा या उनके मूल्यों के साथ संरेखित करेगा। अपने अनुनयन को और अधिक सम्मोहक बनाने के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों लाभों पर प्रकाश डालना।
- **प्रेरक भाषा का उपयोग करना:** प्रेरक भाषा तकनीकों का उपयोग करके अपना संदेश तैयार करना। अपने तर्कों को यादगार और प्रभावशाली बनाने के लिए दोहराव, रूपक और ज्वलंत भाषा जैसे आलंकारिक उपकरणों का उपयोग करना। उत्साह और कार्रवाई को प्रेरित करने के लिए अपने संदेश को सकारात्मक और आशावादी स्वर में लिखना।
- **विजुअल एड्स (दृश्य साधन) का उपयोग करना:** दृश्य साधन; जैसे- चार्ट, ग्राफ और इन्फोग्राफिक्स, आपके प्रेरक संदेश को बढ़ा सकते हैं। वे जटिल जानकारी को सरल बनाने, डेटा को अधिक सुलभ बनाने और एक दृश्य प्रभाव बनाने में मदद करते हैं जो आपके तर्कों का समर्थन करता है। दृश्य आपके दर्शकों को संलग्न कर सकते हैं और तथा आपके संदेश को और अधिक यादगार बना सकते हैं।
- **सम्मानजनक संचार बनाए रखना:** अनुनयन प्रक्रिया के दौरान सम्मानजनक रहना और सकारात्मक लहजा बनाए रखना। विरोधी दृष्टिकोण पर हमला करने या उसे छोटा करने से बचना क्योंकि इससे रक्षात्मकता और प्रतिरोध हो सकता है।
- **अनुवर्ती कार्रवाई और सुदृढ़ीकरण:** अपना प्रेरक संदेश देने के बाद, प्रमुख बिंदुओं को सुदृढ़ करने और संवाद जारी रखने के लिए अपने दर्शकों के साथ अनुवर्ती कार्रवाई करना। किसी भी शेष प्रश्न या चिंताओं को संबोधित करना, यदि आवश्यक हो तो अतिरिक्त जानकारी प्रदान करना और उन्हें वांछित कार्रवाई करने के लाभों और कारणों को याद दिलाना।

अनुनयन का विरोध करने के तरीके:

- **अभिवृत्ति संरोपण:** जिस तरह एक कमजोर वायरस के संपर्क में आने वाला व्यक्ति किसी बीमारी के प्रति प्रतिरोधी हो जाता है, उसी तरह एक व्यक्ति जो प्रतिवाद के संपर्क में आ चुका है, उसमें अनुनयन के प्रति प्रतिरोध विकसित हो जाता है।
    - **उदाहरण:** छात्रों के एक समूह को एक विवादास्पद मुद्दे पर कई दृष्टिकोण और प्रतिवादों का सामना करना पड़ता है, जिससे वे पक्षपातपूर्ण जानकारी के खिलाफ प्रतिरोध विकसित कर सकते हैं और अपनी आलोचनात्मक सोच क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं।
- **पूर्व सूचना देना/चेतावनी:** जब किसी व्यक्ति को अनुनयन-विनय के प्रयासों के बारे में पूर्व सूचना दी जाती है, तो उसमें मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया विकसित हो जाती है जो उन्हें ऐसे प्रयासों का विरोध करने के लिए प्रेरित करती है।
- **प्रतीपगामी प्रभाव/बूमरैंग प्रभाव:** जब कोई व्यक्ति किसी अभिवृत्ति वस्तु के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया विकसित करता है, तो अनुनयन के प्रयास का समान रूप से मजबूत प्रतिक्रिया के साथ मुकाबला किया जाता है।
    - **उदाहरण:** कोविड-19 महामारी के दौरान चिकित्सा कर्मचारियों पर लोगों द्वारा हमला किया गया था क्योंकि उन्होंने बीमारी के उपचार के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति विकसित की थी।
- **संचय (सूचना या ज्ञान का):** एक स्वस्थ व्यक्ति जो अच्छी तरह से पढ़ा हुआ है और संज्ञानात्मक और सामाजिक संसाधनों से लैस है, वह अनुनयन का बेहतर ढंग से विरोध करने में सक्षम है।

2.21 प्रशासन और जनता (सार्वजनिक)

जनता के प्रति प्रशासन की अभिवृत्ति:

- **प्रशासकों और जनता के बीच व्यापक सांस्कृतिक अंतर:** चूँकि प्रशासक बड़े पैमाने पर उच्च मध्यम वर्ग से आते हैं तथा ग्रामीण जनता से निपटते हैं जो गरीब और अशिक्षित हैं।
- नौकरशाही बताती है कि लोग अपने अधिकारों से अनभिज्ञ हैं।
- **ज्ञान की कमी:** प्रशासकों को लगता है कि लोगों को नियमों और विनियमों की पर्याप्त जानकारी नहीं है।

- **राजनीतिक दबाव:** सिविल सेवकों की शिकायत है कि लोग राजनेताओं के माध्यम से उन पर दबाव बनाने की कोशिश करते हैं।
- **सहयोग की कमी:** उन्हें यह भी शिकायत है कि नागरिक समाज में बदलाव लाने में उनका सहयोग नहीं करते हैं।

सरकारी अधिकारी लक्षित समूह को मनाने में सक्षम क्यों नहीं हैं?

- **इसका कारण कुछ बाधाओं की उपस्थिति है:** अर्थ विज्ञान, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक बाधाएँ।
- **संचार बाधाएँ:** सार्वजनिक अधिकारी भाषा बाधाओं, सांस्कृतिक मतभेदों या जटिल शब्दजाल के कारण लक्षित समूह तक अपने संदेश को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। यदि संदेश को स्पष्ट रूप से और संबंधित तरीके से संप्रेषित नहीं किया जाता है, तो यह इच्छित दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होने में विफल हो सकता है।
- **अलग-अलग मूल्य और मान्यताएँ:** लक्षित समूह अलग-अलग मूल्य, मान्यताएँ और विचारधारा रख सकते है, जो सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा वकालत किए जा रहे संदेश या नीतियों के साथ असंगत हैं। दृष्टिकोण में ये अंतर प्रतिरोध पैदा कर सकते हैं और अनुनयन को चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं।
- **परानुभूति और समझ की कमी:** सार्वजनिक अधिकारी लक्षित समूह की चिंताओं, जरूरतों और आकांक्षाओं को समझने में विफल हो सकते हैं। उनके दृष्टिकोण के साथ परानुभूति के बिना और उनकी विशिष्ट चिंताओं को संबोधित किए बिना, उन्हें प्रभावी ढंग से राजी करना मुश्किल हो जाता है।

प्रशासकों के प्रति जनता की अभिवृत्ति

- प्रशासकों के खिलाफ भ्रष्टाचार, मामलों के निपटान में देरी, शोषण, पक्षपात आदि के बारे में सार्वजनिक शिकायतें।
- लोक अधिकारियों की सत्यनिष्ठा के बारे में जनता को संदेह है।
- उन्हें लगता है कि लोक अधिकारी किसी भी मानवीय विचार से रहित हैं।
- वे बिचौलियों के लिए गुंजाइश पैदा करते हैं जो बदले में उनका फायदा उठाते हैं।
- **संशयवाद और अविश्वास:** जनसंख्या का एक ऐसा वर्ग भी है जो भ्रष्टाचार, नौकरशाही लालफीताशाही और अक्षमता के कारण प्रशासकों के प्रति संशयपूर्ण या अविश्वासी हो सकता है। वे प्रशासकों को स्वयं सेवक और जनता की जरूरतों के प्रति अनुत्तरदायी मानते हैं।
- **असमानता और पूर्वाग्रह की धारणा:** समाज के कुछ वर्गों का मानना हो सकता है कि प्रशासक अपने निर्णय लेने में पूर्वाग्रह या पक्षपात प्रदर्शित करते हैं, जिससे असमान व्यवहार और अवसर देखने को मिलते हैं। यह धारणा जाति, धर्म या क्षेत्रीय असमानता जैसे कारकों से प्रभावित हो सकती है।

जनता और प्रशासन के बीच संबंध कैसे सुधारें?

- **प्रशासन में एक जनसंपर्क एजेंसी बनाना:** जनता और प्रशासन के बीच माध्यम के रूप में कार्य करना। (-सीपी भांबरी)
- **जनता को अपनी नकारात्मक भूमिका छोड़कर सकारात्मक भूमिका अपनानी चाहिए:** किसी भी सरकारी कार्यक्रम की सफलता के लिए नागरिकों का समर्थन और सहयोग जरूरी है।
- प्रशासन को जनता, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों से निरंतर संपर्क बनाए रखना चाहिए। (होता समिति)

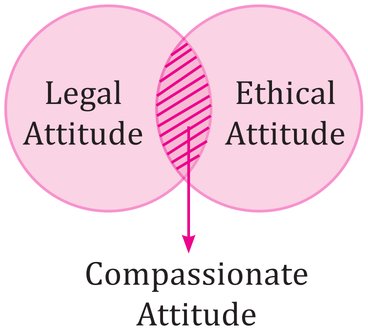

- सामाजिक लेखापरीक्षा, जिसमें लाभार्थियों से परियोजना का लेखापरीक्षण शामिल है।
- सार्वजनिक बैठकों को अनिवार्य बनाकर सिविल सेवकों तक पहुँच बढ़ाना।
- ई-गवर्नेंस, जो सरकार को नागरिकों के दरवाजे तक पहुँचाने में मदद करता है।
- नागरिकों को प्राप्त होने वाली सेवा की गुणवत्ता और शिकायत निवारण तंत्र के बारे में जागरूक करने के लिए नागरिक चार्टर।

अंत में, अनुनयन अच्छा या बुरा हो सकता है, इसलिए यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि यह अच्छे विचारों, उत्पादों और कारणों को बढ़ावा दे सकता है, लेकिन यदि इसका दुरुपयोग किया जाता है, तो यह जोड़-तोड़ और अनैतिक हो सकता है। किसी भी प्रेरक प्रयास को लोगों की स्वायत्तता और कल्याण का सम्मान करना चाहिए।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. अभिवृत्ति एक महत्वपूर्ण घटक है, जो मानव के विकास में निवेश (इनपुट) का काम करता है। ऐसी उपयुक्त अभिवृत्ति का विकास कैसे करें, जो एक लोक सेवक के लिए आवश्यक है? (2021)

2. निम्नलिखित उद्धरण आपके लिए क्या मायने रखते हैं?

(i) "प्रत्येक कार्य की सफलता से पहले उसे सैकड़ों कठिनाईयों से गुजरना पड़ता है। जो दृढ़निश्चयी हैं वे ही देर-सबेर प्रकाश को देख पाएंगे।" –स्वामी विवेकानंद (2021)

3. सकारात्मक अभिवृत्ति एक लोक सेवक की अनिवार्य विशेषता मानी जाती है जिसे प्रायः नितान्त दबाव में कार्य करना पड़ता है। एक व्यक्ति की सकारात्मक अभिवृत्ति में क्या योगदान देता है? (2020)

4. 'घृणा व्यक्ति की बुद्धिमत्ता और अन्त:करण के लिए संहारक है जो राष्ट्र के चित् को विषाक्त कर सकती है।" क्या आप इस विचार से सहमत हैं ? अपने उत्तर की तर्कसंगत व्याख्या करें। (2020)

5. नैतिक आचरण वाले तरुण लोग सक्रिय राजनीति में शामिल होने के लिए उत्सुक नहीं होते हैं। उनको सक्रिय राजनीति में अभिप्रेरित करने के लिए उपाय सुझाइए। (2017)

6. सामान्यत: साझा किए गए तथा व्यापक रूप से मोर्चाबंद नैतिक मूल्यों और दायित्वों के बिना न तो कानून, न तो लोकतंत्रीय सरकार, न ही बाजार अर्थव्यवस्था ठीक से कार्य कर पाएँगे। इस कथन से आप क्या समझते हैं? समकालीन समय के उदाहरण द्वारा समझाइए। (2017)

7. स्वच्छ भारत अभियान की सफलता में सामाजिक प्रभाव और अनुनय कैसे योगदान दे सकते हैं? (2016)

8. रक्षा सेवाओं के संदर्भ में, 'देशभक्ति' राष्ट्र की रक्षा में अपने जीवन का बलिदान देने की तत्परता की मांग करती है। आपके अनुसार, रोजमर्रा के नागरिक जीवन में देशभक्ति का क्या अर्थ है? उदाहरण सहित समझाइए और अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए। (2014)

9. अक्सर कहा जाता है कि 'राजनीति' और 'नैतिकता' एक साथ नहीं चलतीं। इस संबंध में आपकी क्या राय है? उदाहरण देकर अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए। (2013)

विगत वर्षों की केस स्टडी

10. जीवन, कार्य, अन्य व्यक्तियों एवं समाज के प्रति हमारी अभिवृतियां आमतौर पर अनजाने में परिवार एवं उस सामाजिक परिवेश के द्वारा रुपित हो जाती हैं, जिसमें हम बड़े होते हैं। अनजाने में नागरिकों के लिए अवांछनीय होते हैं।

(a) आज के शिक्षित भारतीयों में विद्यमान ऐसे अवांछनीय मूल्यों की विवेचना कीजिए।

(b) ऐसी अवांछनीय अभिवृत्तियों को कैसे बदला जा सकता है तथा लोक सेवाओं के लिए आवश्यक समझे जाने वाले सामाजिक-नैतिक मूल्यों को आकांक्षी तथा कार्यरत लोक सेवकों में किस प्रकार संवर्द्धित किया जा सकता है? (2016)

दृष्टिकोण

- इसमें शामिल नैतिक मुद्दों और हितधारकों की पहचान करें।
- जीवन, कार्य और समाज में अनजाने में आकार दी गई अभिवृत्तिओं और मूल्यों की खोज करें।
- आज के शिक्षित भारतीयों में प्रचलित अवांछनीय मूल्यों को पहचानें और उन पर चर्चा करें।
- आकांक्षी और सेवारत सिविल सेवकों में सामाजिक नैतिक मूल्यों को विकसित करने के लिए किए जाने वाले उपायों का सुझाव दीजिए।
- कार्रवाई के सर्वोत्तम संभव तरीके की पहचान कीजिए।

11. हाल में आपको एक जिले के जिला विकास अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया गया है। उसके बाद जल्दी ही आपने पाया कि आपके जिले के ग्रामीण इलाकों में लड़कियों को स्कूल भेजने के मुद्दे पर काफी तनाव है।

गाँव के बड़े महसूस करते हैं कि अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं क्योंकि लड़कियों को पढ़ाया जा रहा है और वे घर के सुरक्षित वातावरण के बाहर कदम रख रही हैं। उनका विचार यह है कि लड़कियों की न्यूनतम शिक्षा के साथ जल्दी से शादी कर दी जानी चाहिए। शिक्षा के बाद लड़कियाँ नौकरी के लिए भी स्पर्द्धा कर रही है, जो परंपरा से लड़कों का अनन्य क्षेत्र रहा है, और पुरूषों में बेरोजगारी में वृद्धि कर रही है।

युवा पीढ़ी महसूस करती है कि वर्तमान युग में, लड़कियों को शिक्षा और रोजगार तथा जीवन-निर्वाह के अन्य साधनों के समान अवसर प्राप्त होने चाहिए। समस्त इलाका वयोवृद्धों और युवाओं के बीच तथा उससे आगे दोनों पीढ़ियों में स्त्री-पुरुषों के बीच विभाजित है। आपको पता चलता है कि पंचायत या अन्य स्थानीय निकायों में या व्यस्त चौराहों पर भी, इस मुद्दे पर गरमागरम वाद-विवाद हो रहा है।

एक दिन आपको सूचना मिलती है कि एक अप्रिय घटना हुई है। कुछ लड़कियों के साथ छेड़खानी की गई जब वे स्कूलों के रास्ते में थीं। इस घटना के फलस्वरूप कई सामाजिक समूहों के बीच झगड़े हुए और कानून तथा व्यवस्था की समस्या पैदा हो गई। गरमागरम वाद-विवाद के बाद बड़े-बूढ़ों ने लड़कियों को स्कूल जाने की अनुमति न देने और जो परिवार उनके हुक्म का पालन नहीं करते हैं, ऐसे सभी परिवारों का सामाजिक बहिष्कार करने का संयुक्त निर्णय ले लिया।

(a) लड़कियों की शिक्षा में व्यवधान डाले बिना, लड़कियों की सुरक्षा को सुरिक्षत करने के लिए आप क्या कदम उठाएँगें?

(b) पीढियों के बीच संबंधों में समरसता सुनिश्चित करने के लिए आप गाँव के वयोवृद्धों की पितृतंत्रात्मक अभिवृत्ति का किस प्रकार प्रबंधन का और ढालने का कार्य करेंगे।

दृष्टिकोण

- उठाए जा सकने वाले विभिन्न कदमों के बारे में सोचिए।
- इस मुद्दे को हल करने के लिए तत्काल प्रतिक्रियाओं और दीर्घकालिक उपायों में कदमों को विभाजित कीजिए।
- इस समस्या को हल करने के लिए कुछ अभिनव कदमों के बारे में सोचिए।
- मातृसत्तात्मक अभिवृत्ति को बदलने के लिए सामाजिक प्रभाव और अनुनयन की दिशा में सोचिए।
- उन तरीकों या एजेंटों के बारे में सोचें जो गाँव के बुजुर्गों को प्रभावी ढंग से राजी कर सकते हैं।
- आपको गाँव की सोच और विश्वास प्रणाली को बदलने की दिशा में काम करना होगा।

12. लोक सेवकों की अपने कार्य के प्रति प्रदर्शित दो अलग-अलग प्रकारों की अभिवृत्तियों की पहचान अधिकारीतंत्रीय अभिवृत्ति और लोकतांत्रिक अभिवृत्ति के रूप में की गई है।

(a) इन दो पदों के बीच विभेदन कीजिए और उनके गुणों-अवगुणों को बताइए।

(b) अपने देश का तेजी से विकास की दृष्टि से बेहतर प्रशासन के निर्माण के लिए क्या दोनों में संतुलन स्थापित करना संभव है? (2015)

दृष्टिकोण

- पहले दोनों प्रकार की अभिवृत्तियों को परिभाषित कीजिए।
- गुण एवं दोष उदाहरण सहित लिखिए।
- सबसे पहले यह मत रखिए कि दोनों अभिवृत्तियाँ संतुलित हो सकती हैं या नहीं।
- उस स्थिति के आधार पर अपने तर्क दें और सुझाव दें कि इन अभिवृत्तियों को बनाए रखने से प्रशासन को बेहतर बनाया जा सकता है।

❖ ❖ ❖

3 सिविल सेवा के लिए अभिरूचि और आधारभूत मूल्य

''अभिरूचि ज्ञान और उपलब्धि के बीच का सेतु है।'' **–जॉन सी. मैक्सवेल**

पाठ्यक्रम
सिविल सेवा के लिए अभिरूचि और आधारभूत मूल्यः ईमानदारी, निष्पक्षता और गैर-पक्षपात, वस्तुनिष्ठता, लोक सेवा के प्रति समर्पण, कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति, सहिष्णुता और करुणा।

3.1 अभिरूचि

- सरल शब्दों में अभिरूचि से आशय, **एक स्वाभाविक प्रतिभा या किसी विशिष्ट कौशल या क्षमता के प्रति झुकाव है।** यह किसी विशेष क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने की संभावना या क्षमता है। उदाहरण के लिए, गणित में रुचि रखने वाले किसी व्यक्ति में जटिल गणितीय प्रश्नों को समझने और हल करने की स्वाभाविक क्षमता हो सकती है।

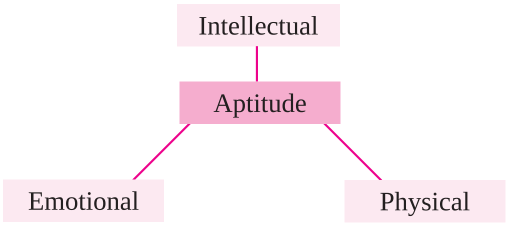

उदाहरण

- **मान लीजिए कि माया** एक सिविल सेवक है। माया को **एक दूरदराज के गांव में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एक परियोजना की देखरेख करने का काम सौंपा गया है।** अपना काम शुरू करने से पहले, माया **गांव की पानी की जरूरतों, संसाधनों की उपलब्धता और संभावित पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन करते हुए गहन शोध करती है।**
- **अपने विश्लेषण के दौरान,** माया को पता चलता है कि **एक निजी कंपनी ने काफी अधिक लागत पर आवश्यक बुनियादी ढाँचा प्रदान करने के प्रस्ताव के साथ उससे संपर्क किया है।** हालाँकि, नैतिक निर्णय लेने की माया की अभिरूचि उसे आगे विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करती है। उसे पता चलता है कि एक स्थानीय गैर-लाभकारी संगठन के पास कम लागत पर परियोजना को लागू करने की विशेषज्ञता और संसाधन हैं, जिससे गांव को आर्थिक रूप से लाभ होगा।
- निजी कंपनी चुनने के लिए विभिन्न स्रोतों से दबाव के बावजूद, माया नैतिक सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर कायम रहती है।
- अपनी अभिरूचि के आधार पर, वह विशेषज्ञों से परामर्श करती है, दीर्घकालिक प्रभावों पर विचार करती है, और अपने निर्णय के नैतिक प्रभावों का आकलन करती है। अंत में, **माया गैर-लाभकारी संगठन का चुनाव करती है,** क्योंकि यह निष्पक्षता, पारदर्शिता और लागत-प्रभावशीलता के सिद्धांतों के अनुरूप है।
- **माया का निर्णय नैतिक निर्णय लेने की उसकी अभिरूचि को दर्शाता है।** व्यक्तिगत हितों या बाहरी प्रभावों पर गांव के कल्याण को प्राथमिकता देकर, वह यह सुनिश्चित करती है कि परियोजना को नीतिपूर्वक पूरा किया जाए, जिससे आगे चलकर समुदाय को लाभ होगा। उसके कार्य विश्वास को प्रेरित करते हैं, सुशासन को बढ़ावा देते हैं और लोक प्रशासन के दायरे में नैतिक निर्णय लेने में अभिरूचि के महत्व को दर्शाते हैं।

3.2 अभिरूचि के प्रकार

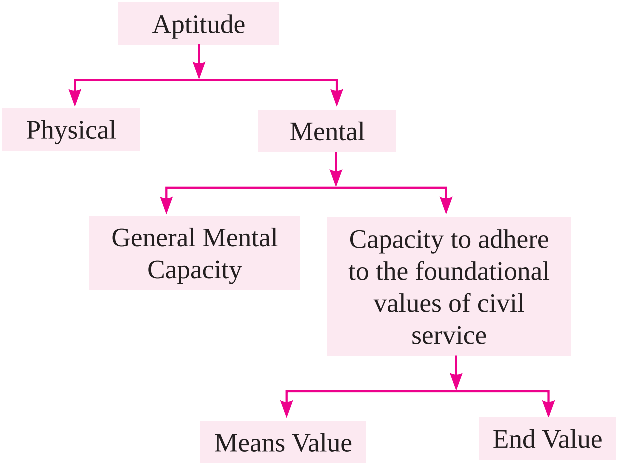

1. **शारीरिक अभिरूचि:** शारीरिक अभिरूचि से तात्पर्य किसी व्यक्ति की शारीरिक कार्यों या गतिविधियों को प्रभावी ढंग से करने की क्षमता से है। इसमें ताकत, सहनशक्ति, समन्वय, लचीलापन और समग्र शारीरिक स्वास्थ्य जैसे तत्व शामिल हैं।
   - शारीरिक अभिरूचि उन क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जिनमें शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है, जैसे खेल, शारीरिक श्रम वाली नौकरियां, या सैन्य सेवा।
   - **उदाहरण के लिए,** उसेन बोल्ट जैसा पेशेवर एथलीट जो असाधारण शारीरिक अभिरूचि प्रदर्शित करता है, उसके पास अपने चुने हुए खेल में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक ताकत, गति और चपलता है।
2. **मानसिक अभिरूचि:** मानसिक अभिरूचि से तात्पर्य किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक कार्यों और बौद्धिक गतिविधियों के लिए क्षमता है। इसमें तर्कशक्ति, स्मृति, समस्या-समाधान, ध्यान, रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच सहित विभिन्न मानसिक क्षमताएं शामिल हैं।
   - **मानसिक अभिरूचि शैक्षणिक प्रदर्शन, पेशेवर सफलता और बौद्धिक गतिविधियों** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
   - उदाहरण के लिए, एपीजे अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक, जिन्होंने मजबूत मानसिक अभिरूचि का प्रदर्शन किया, निश्चित रूप से असाधारण विश्लेषणात्मक कौशल, परिकल्पना क्षमता और विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों के बीच समन्वय स्थापित करने की क्षमता रखते होंगे।

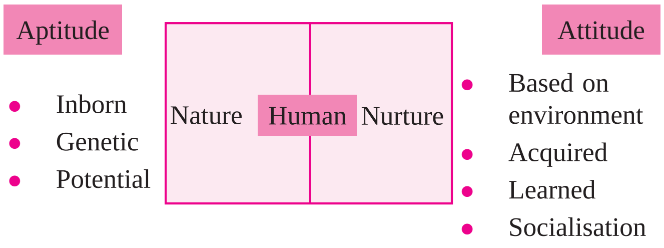

चित्र: अभिरूचि और मनोवृत्ति के बीच अंतर

3.3 अभिरूचि बनाम कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण

मानदंड	अभिरूचि	कौशल	मूल्य	दृष्टिकोण
परिभाषा	किसी विशिष्ट क्षेत्र के प्रति झुकाव।	अर्जित ज्ञान, योग्यताएँ और विशेषज्ञता।	व्यक्तिगत मान्यताएँ और सिद्धांत जो व्यवहार को निर्देशित करते हैं।	लोगों, घटनाओं या वस्तुओं के प्रति स्वभाव या मानसिकता।
आधार	जन्मजात योग्यताएँ और क्षमताएँ।	समय के साथ सीखना और विकास।	व्यक्तिगत मान्यताएं, पालन-पोषण और जीवन के अनुभव।	मान्यताओं, मूल्यों और अनुभवों पर आधारित।
अंतर्निहित	जन्म और प्रारंभिक अवस्था से उपस्थित।	शिक्षण, प्रशिक्षण और अभ्यास के माध्यम से विकसित।	व्यक्तिगत मान्यताओं और अनुभवों के माध्यम से विकसित।	व्यक्तिगत धारणा और व्याख्या के अधीन।
विकास	अभ्यास और अधिगम से इसे परिष्कृत और बेहतर किया जा सकता है।	प्रशिक्षण एवं अनुभव के माध्यम से विकसित किया जा सकता है।	सचेत प्रयास के माध्यम से इसे सुदृढ़ और विकसित किया जा सकता है।	सचेत प्रयास के माध्यम से विकसित और बेहतर किया जा सकता है।
नींव	कौशल प्राप्त करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।	कार्यों या गतिविधियों के लिए कौशल का उपयोग करता है।	एक सदाचरण और नैतिक आधार के रूप में कार्य करता है।	व्यवहार एवं कार्यों को प्रभावित करता है।
आयु	समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर	समय के साथ इसे बढ़ाया, अद्यतन या बदला जा सकता है।	आत्म-चिंतन के माध्यम से विकसित और आकार दिया जा सकता है।	अनुभवों और विकल्पों के आधार पर विकसित और बदल सकते हैं।
महत्त्व	विशेषज्ञता के संभावित क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है।	विशिष्ट कार्यों में प्रभावी कार्यनिष्पादन को सक्षम करता है।	नैतिक और नीतिपरक विकल्पों का मार्गदर्शन करता है, और चरित्र को परिभाषित करता है।	व्यक्तिगत विकास, संबंधों और सफलता को आकार देता है।

उदाहरण	संख्यात्मक अभिरूचि, मौखिक अभिरूचि, और स्थानिक अभिरूचि।	प्रोग्रामिंग कौशल, संचार कौशल, नेतृत्व कौशल।	ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सम्मान, करुणा।	सकारात्मक दृष्टिकोण, विकासात्मक मानसिकता, सहानुभूति।

3.3.1 अभिरूचि बनाम बुद्धिमत्ता, क्षमता और रुचि

मानदंड	अभिरूचि	बुद्धिमत्ता	क्षमता	रूचि
परिभाषा	स्वाभाविक प्रतिभा या किसी विशिष्ट क्षेत्र के प्रति झुकाव।	समझ, तर्कशक्ति और और समस्या-समाधान की संज्ञानात्मक क्षमता।	किसी विशिष्ट कार्य को करने में निपुणता या कुशलता।	व्यक्तिगत आनंद, जिज्ञासा, या किसी बात के प्रति जुनून।
आधार	जन्मजात योग्यताएँ और क्षमताएँ।	संज्ञानात्मक क्षमता और मानसिक क्षमताएं	सीखने और अभ्यास से अर्जित।	व्यक्तिगत प्राथमिकताएँ या झुकाव
प्रकृति	समय के साथ अपेक्षाकृत स्थिर	IQ परीक्षण और संज्ञानात्मक मूल्यांकन के माध्यम से मापा जा सकता है।	अभ्यास से विकसित और बेहतर किया जा सकता है।	समय के साथ परिवर्तन या विकास के अधीन।
विकास	अभ्यास और अधिगम से इसे परिष्कृत और बेहतर किया जा सकता है।	शिक्षा और बौद्धिक गतिविधियों के माध्यम से बढाया जा सकता है।	प्रशिक्षण और अनुभव से निखारा जा सकता है।	एक्सपोजर के माध्यम से अन्वेषित और विकसित किया जा सकता है।
अनुप्रयोग	विशिष्ट क्षेत्रों में कौशल और क्षमताओं से संबंधित है।	समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच और अधिगम के लिए अनुप्रयुक्त	विशिष्ट कार्यों या गतिविधियों हेतु उपयोग की जाती है।	किसी क्षेत्र विशेष में जुड़ाव और प्रेरणा बढ़ाता है।
प्रभाव	कार्यों और गतिविधियों में महारत हासिल करने में योगदान देता है।	शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता को प्रभावित करती है।	विशिष्ट डोमेन में प्रदर्शन और सफलता को प्रभावित करती है।	व्यक्तिगत विकल्पों और गतिविधियों का मार्गदर्शन करता है।
उदाहरण	मौखिक अभिरूचि, तार्किक अभिरूचि।	तार्किक-गणितीय बुद्धि, भाषाई बुद्धिमत्ता।	एथलेटिक क्षमता, संगीत क्षमता और कलात्मक क्षमता।	साहित्य, खेल, संगीत और फोटोग्राफी में रुचि।

3.4 अभिरूचि और सिविल सेवाएँ

- अभिरूचि सिविल सेवाओं में व्यक्तियों की पेशेवर भूमिकाओं में उनकी क्षमताओं और संभाव्यता को आकार देकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लोगों की अंतर्निहित प्रतिभा, कौशल और क्षमताओं को संदर्भित करता है, जो सिविल सेवा में सफलता के लिए आवश्यक हैं। अभिरूचि मूल्यांकन विशिष्ट भूमिकाओं के लिए सही अभिरूचि वाले व्यक्तियों की पहचान करने में मदद करता है, जिससे उनकी क्षमताओं और सेवा की आवश्यकताओं के बीच बेहतर तालमेल सुनिश्चित होता है।

Domain Competence + Emotional Intelligence + Ethical Behaviour + Attitude = Aptitude of Civil Servant

चित्र: मूल्य निर्माण अभिरूचि

सिविल सेवाओं में सामाजिक क्षमता के विकास में अभिरूचि की भूमिका

- **प्रभावी संचार और पारस्परिक कौशल:** प्रभावी संचार और पारस्परिक कौशल की अभिरूचि सिविल सेवकों को सहकर्मियों, हितधारकों और जनता के साथ मजबूत संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाती है।
  - **उदाहरण:** प्रभावी संचार अभिरूचि वाला एक सिविल सेवक विभिन्न समुदायों के साथ समन्वय बना सकता है, विश्वास और समझ को बढ़ावा दे सकता है। यह धार्मिक-संवेदनशील क्षेत्रों में सद्भाव स्थापित करने में सहायक हो सकता है।
- **टीम वर्क और सहयोग:** टीम वर्क और सहयोग के लिए अभिरूचि सिविल सेवकों को सहयोग और तालमेल को बढ़ावा देते हुए विविध टीमों में प्रभावी ढंग से कार्य करने में सक्षम बनाती है।
  - **उदाहरण:** टीम वर्क के लिए मजबूत अभिरूचि वाला एक सिविल सेवक परस्पर संबद्ध परियोजनाओं का नेतृत्व कर सकता है, विभिन्न विभागों के बीच समन्वय को बढ़ावा दे सकता है जैसे कि गुजरात में एक नया सेमीकंडक्टर कारखाना स्थापित करने के लिए काम करना।
- **सांस्कृतिक संवेदनशीलता और विविधता:** सांस्कृतिक संवेदनशीलता और विविधता की अभिरूचि सिविल सेवकों को विविध समुदायों के साथ जुड़ने और विभिन्न विचारों का सम्मान करने में सक्षम बनाती है।
  - **उदाहरण:** सांस्कृतिक संवेदनशीलता के प्रति गहरी अभिरूचि रखने वाला एक सिविल सेवक ऐसी नीतियां बना सकता है जो अंडमान निकोबार के आदिवासियों जैसे स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक विरासत का सम्मान और सुरक्षा करती हैं।
- **सार्वजनिक भाषण और प्रेरक संचार:** सार्वजनिक भाषण और प्रेरक संचार के लिए अभिरूचि सिविल सेवकों को प्रभावी ढंग से जनता तक संदेश पहुंचाने और नीतिगत बदलाव करने में सक्षम बनाती है।
  - **उदाहरण:** सार्वजनिक भाषण की गहन अभिरूचि रखने वाला एक सिविल सेवक क्षेत्र में स्वच्छता जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रभावशाली भाषण दे सकता है।

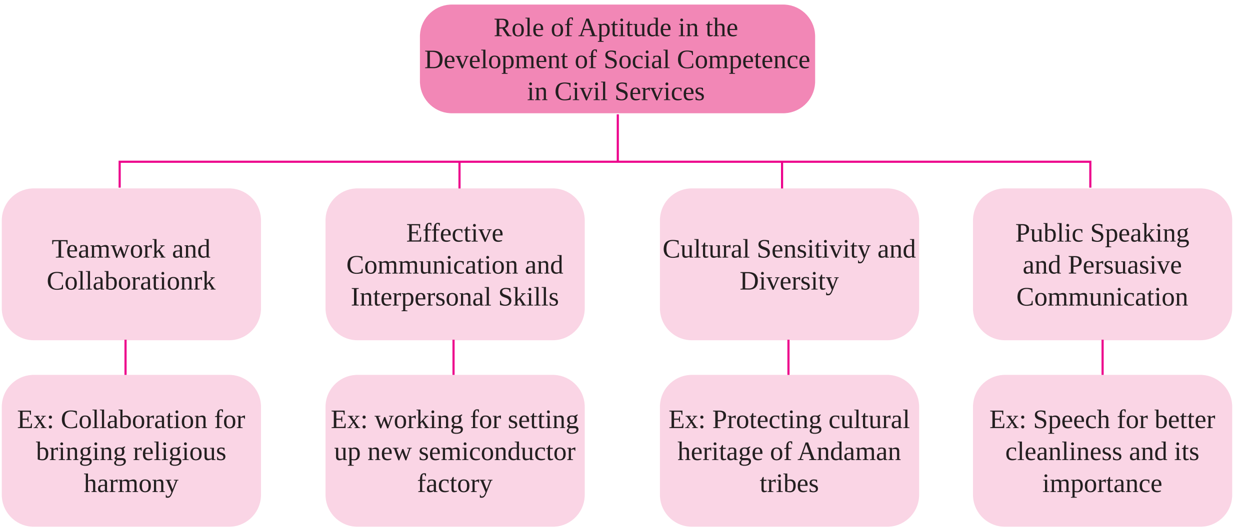

सिविल सेवाओं में नीतिपरक क्षमता के विकास में अभिरूचि की भूमिका

- **आलोचनात्मक सोच और नैतिक निर्णय:** आलोचनात्मक सोच और नैतिक निर्णय की अभिरूचि सिविल सेवकों को नैतिक निहितार्थों का आकलन करने और उनकी पेशेवर उत्तरदायित्व में सैद्धांतिक विकल्प चुनने का अधिकार देती है।
  - **उदाहरण:** आलोचनात्मक सोच रखने वाला एक सिविल सेवक सड़क निर्माण निविदा में हितों के संभावित टकराव की पहचान कर सकता है और उसका समाधान कर सकता है, जब उसका भाई उस क्षेत्र का बड़ा सड़क ठेकेदार है।
- **समानुभूति और करुणा:** समानुभूति और करुणा की अभिरूचि सिविल सेवकों को समावेशी और न्यायसंगत नीतियों को बढ़ावा देने, व्यक्तियों की जरूरतों और दृष्टिकोण पर विचार करने की अनुमति देती है।
  - **उदाहरण:** समानुभूति रखने वाला एक सिविल सेवक भिखारियों और रेहड़ी-पटरी वालों आदि के लिए ऐसे कल्याण कार्यक्रम बना सकता है जो उनके सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियों का समाधान करते हैं।

- **नैतिक नेतृत्व और निर्णय लेना:** नैतिक नेतृत्व और निर्णय लेने की अभिरूचि सिविल सेवकों को अपनी टीमों को प्रेरित करने और एक नैतिक कार्य संस्कृति बनाने की अनुमति देती है।
    - **उदाहरण:** नैतिक नेतृत्व के लिए मजबूत अभिरूचि वाला एक सिविल सेवक आचार संहिता स्थापित कर सकता है और किसी बड़ी कंपनी को विभाग के आंतरिक विवरण लीक करने या ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का पालन करने जैसी नैतिक दुविधाओं पर सहकर्मियों को मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।
- **सैद्धांतिक रुख अपनाना और अनैतिक आचरण को संबोधित करना:** नैतिक साहस की अभिरूचि सिविल सेवकों को चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी सैद्धांतिक रुख अपनाने और अनैतिक आचरण को संबोधित करने की शक्ति देती है।
    - **उदाहरण:** नैतिक साहस की अभिरूचि रखने वाला एक सिविल सेवक संगठन के भीतर नैतिक प्रथाओं की वकालत करते हुए भ्रष्टाचार या कदाचार को उजागर कर सकता है।

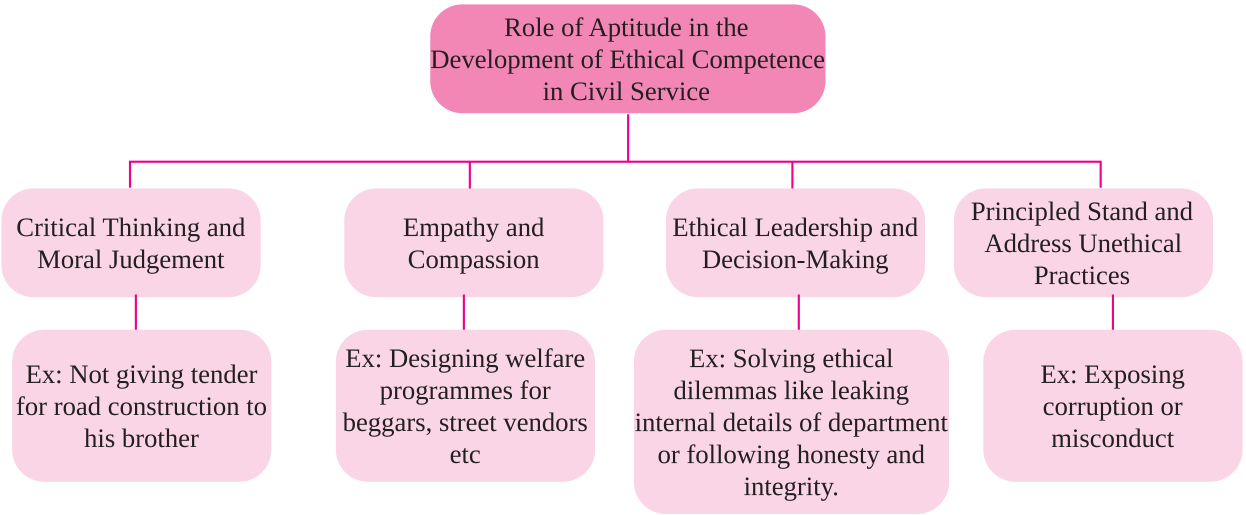

सिविल सेवाओं में पेशेवर क्षमता के विकास में अभिरूचि की भूमिका

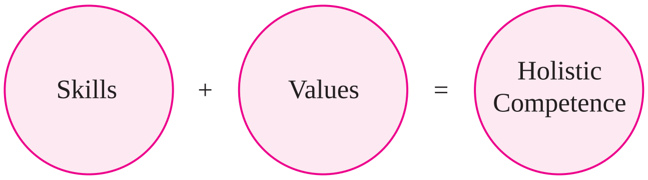

- **निरंतर अधिगम और व्यावसायिक विकास:** निरंतर अधिगम और पेशेवर विकास के लिए अभिरूचि सिविल सेवकों को विकसित नीतियों, प्रौद्योगिकियों और सर्वोत्तम प्रथाओं के साथ अद्यतन रखती है।
    - **उदाहरण:** एक मजबूत अभिरूचि वाला सिविल सेवक सीख सकता है कि शासन में एआई का उपयोग कैसे किया जाए या भारत में बैंकिंग प्रणाली के लिए ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग कैसे किया जाए।
- **समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक सोच:** समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक सोच की अभिरूचि सिविल सेवकों को उनके संबंधित क्षेत्रों में जटिल चुनौतियों की पहचान करने और उनका समाधान करने में सहायता करती है।
    - **उदाहरण:** समस्या-समाधान के लिए मजबूत अभिरूचि रखने वाला एक सिविल सेवक प्रशासन को समाधान प्रदान करके महानगरों में भारी यातायात की समस्या को हल करने के लिए अभिनव समाधान विकसित कर सकता है।
- **रणनीतिक योजना और संगठनात्मक प्रबंधन:** रणनीतिक योजना और संगठनात्मक प्रबंधन की अभिरूचि सिविल सेवकों को संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने और वांछित परिणाम प्राप्त करने में मदद करती है।
    - **उदाहरण:** रणनीतिक योजना के लिए मजबूत अभिरूचि वाला एक सिविल सेवक देश में घटते भूजल स्तर के मुद्दे को हल करने के लिए दीर्घकालिक नीतियां विकसित कर सकता है।

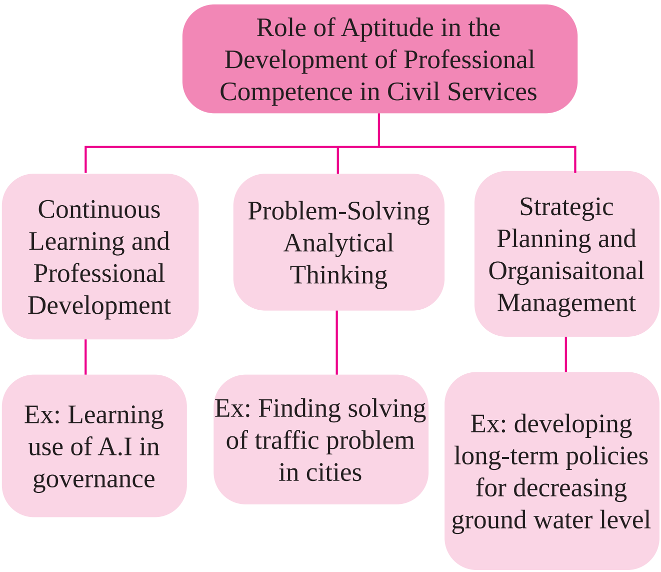

3.5 अन्य मूल्यों के साथ अभिरूचि का संबंध

- **अभिरूचि और सत्यनिष्ठा:** अभिरूचि नैतिक निर्णय लेने और किसी के कार्यों में सत्यनिष्ठा बनाए रखने की क्षमता को बढ़ाती है।
  - **उदाहरण:** वित्त या लेखांकन जैसे क्षेत्र में अभिरूचि रखने वाले श्री रमन वित्तीय पारदर्शिता, नैतिक प्रथाओं और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए अपने कौशल का उपयोग करके सत्यनिष्ठा का प्रदर्शन कर सकते हैं।
- **अभिरूचि और सहयोग:** अभिरूचि खुले दिमाग, लचीलेपन और दूसरों के साथ काम करने की इच्छा को बढ़ावा देकर प्रभावी टीम वर्क और सहयोग को बढ़ावा देती है।
  - **उदाहरण के लिए,** डिजाइन, कोडिंग और मार्केटिंग जैसी विभिन्न अभिरूचियों वाले सदस्यों वाली एक टीम अपनी-अपनी क्षमताओं का लाभ उठाकर नवीन उत्पाद या सेवाओं का निर्माण कर सकती है।
- **अभिरूचि और दृढ़ संकल्प:** अभिरूचि को दृढ़ संकल्प और दृढ़ता से बढ़ाया जा सकता है। जब व्यक्ति अपनी स्वाभाविक प्रतिभा को सुधारने और उत्कृष्टता प्राप्त करने की प्रबल इच्छा के साथ जोड़ते हैं, तो उनकी अभिरूचि बढ़ जाती है।
  - **उदाहरण के लिए,** मेरे दोस्त राज में स्कूल के समय में क्रिकेट की प्रतिभा थी। उसने दृढ़ संकल्प दिखाया और लगातार प्रयास किया, अब वह सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से आईपीएल टीम में खेल रहे हैं।
- **अभिरूचि और समानुभूति:** अभिरूचि दूसरों के दृष्टिकोण को समझने और उनसे जुड़नें में मदद करती है और समानुभूति और दयालुतापूर्ण निर्णय लेने को बढ़ावा देती है।
  - **उदाहरण के लिए,** काउंसलिंग या मनोविज्ञान के प्रति स्वाभाविक अभिरूचि वाली मिस रुचि, समानुभूति की एक मजबूत भावना के साथ, उन लोगों को प्रभावी ढंग से परामर्श देती हैं जिन्हें भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता होती है।
- **अभिरूचि और नेतृत्व:** अभिरूचि नेतृत्व कौशल विकसित करती है, जैसे प्रभावी संचार, निर्णय लेना और साझा लक्ष्यों के लिए दूसरों को प्रेरित करना।
  - जब मैं बिक्री विभाग के अंतर्गत एक कंपनी में काम कर रहा था तब मेरे उच्च अधिकारी ने प्रभावी संचार और रणनीतिक सोच कौशल का संयोजन किया, जिससे पूरी टीम को सकारात्मक बदलाव और सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा मिली।
- **अभिरूचि और व्यावसायिकता:** पेशेवर अभिरूचि, उत्कृष्टता और दक्षता के साथ भूमिका की अपेक्षाओं को पूरा करने की क्षमता में योगदान देती है।
- **अभिरूचि और जन सेवा:** अभिरूचि सिविल सेवकों को कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करने में सक्षम बनाकर गुणवत्तापूर्ण जन सेवाओं की प्रदायगी में सहयोग करती है।

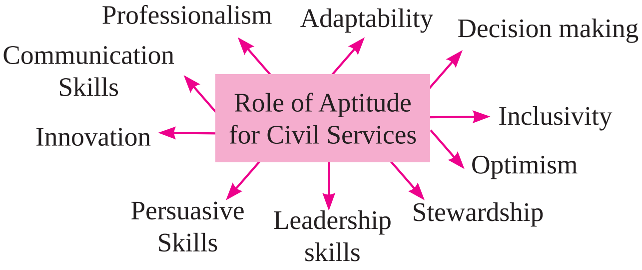

चित्र: सिविल सेवाओं के लिए अभिरूचि की भूमिका

सिविल सेवा सरकार की एक महत्वपूर्ण संस्था हैं जिन्हें नीति कार्यान्वयन और प्रभावी शासन और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का कार्य सौंपा गया है। इसके अलावा, वे राजनीतिक कार्यपालिका को परामर्श भी देते हैं। चूँकि अभिरूचि एक जन्मजात क्षमता है, इसलिए, कोई व्यक्ति किसी अभिरूचि को विकसित नहीं कर सकता है यदि यह किसी के मनोभौतिक तंत्र से पूरी तरह से अनुपस्थित है। कार्य निष्पादन के लिए, सिविल सेवकों के लिए अभिरूचि से परे की ये सेवाएँ आवश्यक हैं।

सिविल सेवकों के लिए मूलभूत मूल्य

- **मूल्य व्यक्तिगत सिद्धांत या गुण हैं** जो किसी व्यक्ति या समूह के निर्णय और व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं।
  - **उदाहरण:** मदर टेरेसा ने समानुभूति को सर्वोच्च मूल्य माना और जीवन भर इसका प्रदर्शन किया।

- सिविल सेवकों के लिए **मूलभूत मूल्य बुनियादी सिद्धांत और नैतिक मानक हैं जो उनकी लोक सेवा भूमिका में उनके व्यवहार और निर्णय लेने में मार्गदर्शन करते हैं।** ये मूल्य उनके पेशेवर आचरण का आधार बनते हैं और सत्यनिष्ठा को बनाए रखने, जन विश्वास को बढ़ावा देने और प्रभावी और उत्तरदायी शासन देने के लिए एक ढांचे के रूप में काम करते हैं।
- उन विशेषाधिकारों और अधिकारों के संबंध में एक **मानक सहमति प्रदान करते हैं जिनके नागरिक हकदार हैं।**
    - **उदाहरण:** करुणा के मूलभूत मूल्य ने आईएएस अधिकारी प्रशांत नायर को कंपैसनेट कोझिकोड परियोजना शुरू करने के लिए प्रेरित किया।

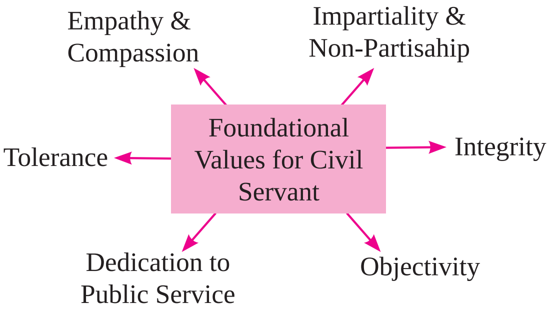

चित्र: सिविल सेवकों के लिए मूलभूत मूल्य

उदाहरण

पर्यावरण संरक्षण एजेंसी के लिए काम करने वाली सिविल सेवक नेहा से मिलिए। उनकी भूमिका में **उनके क्षेत्र में उद्योगों द्वारा पर्यावरण अनुपालन** सुनिश्चित करने के लिए नियमों की निगरानी करना और उन्हें लागू करना शामिल है।

नेहा गहन निरीक्षण और जांच करके **सत्यनिष्ठा कायम रखती है और यह सुनिश्चित करती है कि कंपनियां पर्यावरण मानकों और नियमों का पालन करें।** वह **किसी भी प्रकार की रिश्वतखोरी या प्रभाव को स्वीकार करने से इंकार करती है** जो उसके काम की सत्यनिष्ठा से समझौता कर सकता है।

निष्पक्षता नेहा के लिए एक महत्वपूर्ण मूल्य है, क्योंकि वह सभी व्यवसायों के साथ समान व्यवहार करती है, चाहे उनका आकार या प्रभाव कुछ भी हो। वह निष्पक्ष और उचित आकलन करती है, उल्लंघन की पहचान होने पर जुर्माना लगाती है या सुधारात्मक कार्रवाई करती है।

नेहा अपने निष्कर्षों, किए गए कार्यों और लिए गए निर्णयों का सावधानीपूर्वक दस्तावेजीकरण करके अपनी **जिम्मेदारी को गंभीरता से लेती है।** वह जानती है कि उसके कार्यों का सीधा प्रभाव पर्यावरण के संरक्षण और समुदाय के कल्याण पर पड़ता है।

एक **पेशेवर के रूप में,** नेहा नवीनतम पर्यावरण कानूनों और विनियमों से अद्यतन रहती हैं। वह अपनी विशेषज्ञता बढ़ाने और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सम्मेलनों में सक्रिय रूप से भाग लेती है ताकि उसके कार्य पर्यावरण संरक्षण में सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप हों।

नेहा औद्योगिक गतिविधियों से प्रभावित समुदायों का सम्मान करती हैं। वह सक्रिय रूप से हितधारकों के साथ जुड़ती है, उनकी चिंताओं को सुनती है और टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने की वकालत करती है। वह पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रभावी ढंग से संवाद करती है और व्यवसायों, सरकारी एजेंसियों और सामुदायिक समूहों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करती है।

मूलभूत मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से, नेहा पर्यावरण संरक्षण में योगदान देती है, समुदाय के स्वास्थ्य और हितों की रक्षा करती है, और पर्यावरण संरक्षण एजेंसी के कामकाज में जनता के विश्वास को कायम रखती है।

मूलभूत मूल्यों का विकास

- **केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियम,** 1964 और अखिल भारतीय सेवा (आचरण) नियम, 1968 में सत्यनिष्ठा और कर्तव्य के प्रति समर्पण जैसे मूल्यों का उल्लेख है।
- **मसौदा लोक सेवा विधेयक, 2007 में** संविधान के आदर्शों के प्रति निष्ठा, सुशासन को प्राथमिक लक्ष्य, अराजनीतिक कामकाज, वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता, निर्णय लेने में उत्तरदायित्व और पारदर्शिता, सिविल सेवकों का योग्यता-आधारित चयन, व्यय में अपव्यय का परिहार जैसे मूल्यों इत्यादि की गणना की गई है।
- **दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग की 10वीं रिपोर्ट में** संवैधानिक भावना को कायम रखने के अलावा सत्यनिष्ठा और आचरण के उच्चतम मानकों; निष्पक्षता और गैर-पक्षपातपूर्णता; सार्वजनिक सेवा के प्रति समर्पण; और कमजोर वर्गों के प्रति समानुभूति और करुणा जैसे मूल्यों की सिफारिश की गई है।
- **सार्वजनिक जीवन में नैतिक मानकों की समिति (नोलन समिति) ने 1995 में लोक जीवन के लिए** आचरण के सात मार्गदर्शक सिद्धांतों को परिभाषित किया, जो हैं: उत्तरदायित्व, निस्वार्थता, सत्यनिष्ठा, खुलापन, नेतृत्व, ईमानदारी और वस्तुनिष्ठता।

मूलभूत मूल्यों की आवश्यकता:

- **नैतिक ढाँचा:** मूलभूत मूल्य एक नैतिक ढाँचा प्रदान करते हैं जो लोगों और संगठनों के आचरण और निर्णय लेने का मार्गदर्शन करता है। वे नैतिक सिद्धांतों के रूप में कार्य करते

हैं जो ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देते हैं।

- **भरोसा और विश्वसनीयता:** मूलभूत मूल्य समाज के भीतर भरोसा और विश्वसनीयता बनाने में योगदान करते हैं। जब व्यक्ति और संस्थान इन मूल्यों को कायम रखते हैं, तो वे अपने कार्यों और इरादों में आत्मविश्वास और विश्वास पैदा करते हैं।
- **सुशासन:** वे उन सिद्धांतों और मानकों को स्थापित करते हैं जिनके द्वारा सरकारी और सार्वजनिक संस्थान संचालित होते हैं, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और संसाधनों के कुशल उपयोग को बढ़ावा देते हैं।
- **सामाजिक एकजुटता:** सहिष्णुता, सम्मान और समावेशिता जैसे मूल्य विभिन्न व्यक्तियों और समूहों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देकर सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं। वे एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहां विभिन्न विचारों को महत्व दिया जाता है, और भेदभाव और पूर्वाग्रह को कम किया जाता है।
- **संघर्ष समाधान:** मूलभूत मूल्य संघर्षों और विवादों को सुलझाने के लिए आधार प्रदान करते हैं। वे बातचीत, समझौता और शांतिपूर्ण बातचीत को बढ़ावा देते हैं, जिससे तनाव बढ़ने के बजाय समाधान की सुविधा मिलती है।
- **मानवाधिकार और न्याय:** गरिमा, समानता और न्याय जैसे मूल्य मानव अधिकारों के लिए मौलिक हैं। इन मूल्यों को कायम रखने से लोगों के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, और एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज को बढ़ावा मिलता है।

3.5.1 सत्यनिष्ठा

उद्धरण

''सत्यनिष्ठा सही कार्य कर रही होती है, तब भी जब कोई नहीं देख रहा हो।'' **–सीवी रमन**

''सत्यनिष्ठा चरित्र की आत्मा है।'' **–महात्मा गांधी**

- सत्यनिष्ठा एक व्यक्तिगत गुण है जिसका अर्थ है ईमानदार होना और मजबूत नैतिक सिद्धांत रखना। इसका अर्थ है उचित कार्य करना, भले ही वह कठिन या अलोकप्रिय हो। सत्यनिष्ठ लोग भरोसेमंद होते हैं। उन पर भरोसा किया जा सकता है कि वे अपने वादे निभाएंगे और जो कहेंगे उसे करेंगे।

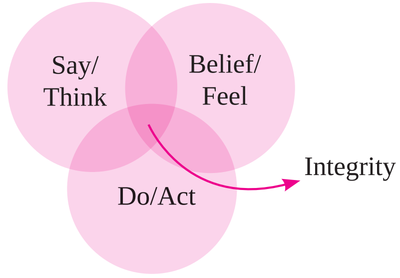

- **उदाहरण:**

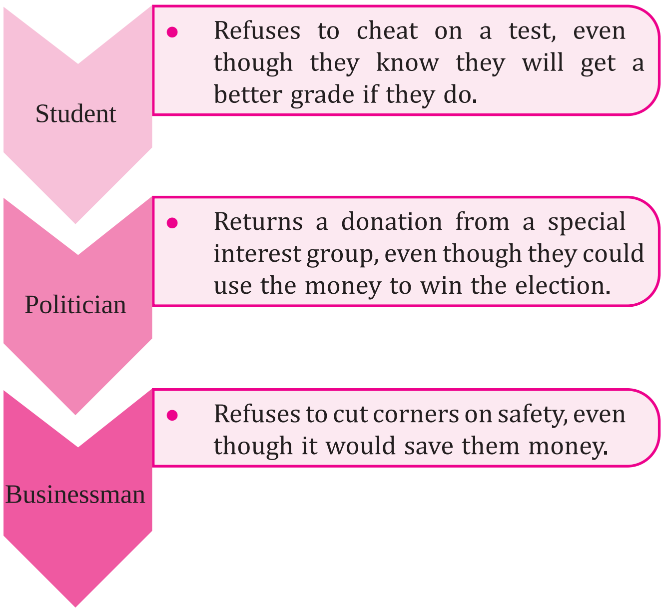

- **महत्त्व:**
  - **सामाजिक कल्याण:** सिविल सेवकों को समाज के प्रति अपार शक्तियाँ और उत्तरदायित्व प्रदान किए जाते हैं। उनकी निष्पक्षता और ईमानदारी सामाजिक कल्याण और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
  - **संवैधानिक दायित्व:** भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को बनाए रखना और उसकी रक्षा करना राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों में वर्णित है, इसलिए यह एक संवैधानिक और नैतिक दायित्व है।
  - **भ्रष्टाचार से लड़ना:** लोक प्रशासन में भ्रष्टाचार का मुकाबला करना आवश्यक है, जो कई लोगों को उचित अधिकारों से वंचित करता है और हमारे आर्थिक विकास में भी बाधा डालता है।
  - **समुदायिक आवश्यकताएँ:** लोक सेवकों के कार्यों का समुदाय के चरित्र पर सीधा असर पड़ता है, इसलिए उनमें सत्यनिष्ठा होनी चाहिए जो उन्हें गलत निर्णय लेने से रोकती है जो कि समाज को नुकसान पहुंचा सकते हैं।
  - **सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन:** वे नागरिकों के लाभ के लिए सार्वजनिक संसाधनों और उन्हें सौंपे गए धन के

प्रबंधन के लिए जिम्मेदार हैं। उदाहरण के लिए, विकास के लिए उपयोग की जाने वाली धनराशि करों के माध्यम से जुटाई गई है और इसका उपयोग सार्वजनिक कल्याण के लिए किया जाता है।

- **सुशासन:** सुशासन प्रदान करने, कर्मियों को ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम बनाने और बेहतर प्रशासन को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में सत्यनिष्ठा महत्वपूर्ण है। यह सुशासन के लिए और उत्तरदायित्व और पारदर्शिता के प्रतिरोध के कारण होने वाली विफलताओं को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **लक्ष्यों की प्राप्ति:** सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय और समाज में प्रतिष्ठा और अवसर की समानता के लक्ष्यों के विकास और उपलब्धि में सिविल सेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- **निष्पक्ष व्यवहार:** जनता और उनकी समस्याओं को अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं के अनुसार निष्पक्ष, कुशलतापूर्वक और संवेदनशील तरीके से निपटाने के लिए स्वभाव में सत्यनिष्ठा महत्वपूर्ण है।
- **शक्ति का दुरुपयोग नहीं:** यह सुनिश्चित करती है कि सिविल सेवक अपने निजी हित को आगे बढ़ाने के लिए अपने आधिकारिक पद का दुरुपयोग नहीं करते हैं, उदाहरण के लिए एफआईआर दर्ज करने के लिए पुलिस द्वारा रिश्वत लेना।
- **कर्तव्य पालन:** सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन विवेक के साथ करता है। जैसे पुलिसकर्मियों को निहत्थे शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने का आदेश दिया जाए तो, ईमानदार पुलिसकर्मी आदेश का पालन करेंगे पर सत्यनिष्ठ पुलिसकर्मी गोली चलाने से इनकार कर देंगे।

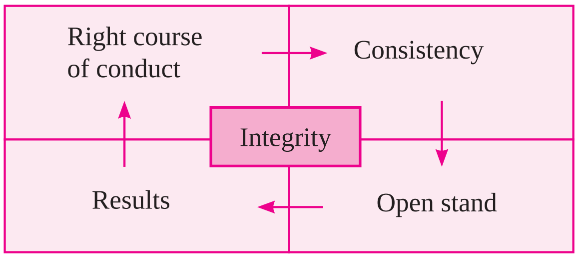

चित्र: सत्यनिष्ठा की चार-चरणीय प्रक्रिया

- **फायदे:**
  - **भरोसा:** लोग आप पर भरोसा करेंगे और आप पर विश्वास करने की अधिक संभावना होगी।
  - **सम्मान:** लोग आपकी सत्यनिष्ठा और नैतिक सिद्धांतों के लिए आपका सम्मान करेंगे।
  - **ईमानदारी:** आप यह जानते हुए स्वयं के साथ रह पाएंगे कि आपने सही काम किया है।
  - **मन की शांति:** आपको यह जानकर मानसिक शांति मिलेगी कि आप झूठ नहीं बोल रहे हैं।

- **सत्यनिष्ठा के प्रकार:**

सत्यनिष्ठा के प्रकार	परिभाषा	आधार	उदाहरण
संस्थागत सत्यनिष्ठा	संगठन या संस्था के भीतर नैतिक मानकों, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का पालन।	नैतिक मानदंड, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व।	एक स्वतंत्र आचार समिति की स्थापना।
व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा	व्यक्तिगत संबंधों, प्रतिबद्धताओं और जिम्मेदारियों में ईमानदारी, निरंतरता और नैतिक व्यवहार का प्रदर्शन करना।	अपने व्यक्तिगत जीवन में नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों को कायम रखना, भरोसेमंद होना और ईमानदारी से कार्य करना।	दोस्तों या परिवार के सदस्यों से किए गए वादे को निभाना कि आप यूपीएससी की तैयारी के लिए कड़ी मेहनत करेंगे और उस वादे के आधार पर आप घर से दूर होने के बावजूद परीक्षा में सफल होते हैं।
पेशेवर सत्यनिष्ठा	कार्यस्थल या पेशेवर संस्थानों में ईमानदारी, नैतिक व्यवहार और पेशेवर मानकों और मूल्यों का पालन करना।	पेशेवर आचरण में निष्पक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के सिद्धांतों को कायम रखना और सहकर्मियों, ग्राहकों और हितधारकों के साथ विश्वास और विश्वसनीयता बनाए रखना।	सिविल सेवकों का रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी या साहित्यिक चोरी जैसी अनैतिक गतिविधियों में शामिल होने से इनकार करते हुए, ग्राहकों या सहकर्मियों की गोपनीय जानकारी को सुरक्षित रखते हैं और उचित प्राधिकरण के बिना इसका खुलासा नहीं करते हैं।

नैतिक सत्यनिष्ठा	नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों का पालन करना, नैतिक विकल्प अपनाना और मान्यताओं और दृढ़ विश्वासों के अनुसार कार्य करना।	अपने नैतिक मूल्यों और कार्यों के बीच संतुलन प्रदर्शित करना, और जो नैतिक रूप से सही है उसके लिए खड़ा होना।	गैरकानूनी प्रथाओं में शामिल होने से इनकार करना, अन्याय या भेदभाव के खिलाफ बोलना और जरूरतमंदों के प्रति दया और सहानुभूति दिखाना।

सत्यनिष्ठा के बिना अन्य मूल्य अर्थहीन हैं:

सत्यनिष्ठा के बिना, अन्य मूल्य अर्थहीन हो सकते हैं क्योंकि उनमें ठोस आधार की कमी होती है और उनमें हेरफेर या उपेक्षा की आशंका होती है।

- **भरोसा:** यदि किसी व्यक्ति में सत्यनिष्ठा की कमी है और वह बार-बार वादे तोड़ता है या धोखापूर्ण व्यवहार करता है, तो भरोसा खत्म हो जाता है।
  - **उदाहरण के लिए,** एक प्रबंधक जो लगातार अपनी टीम के योगदान को स्वीकार किए बिना उसके काम का श्रेय लेता है, टीम के भीतर उसपर विश्वास कमजोर हो जाता है।
- **सम्मान:** जब किसी में सत्यनिष्ठा की कमी होती है, तो वे अपमानजनक या अनैतिक कार्यों में संलग्न हो सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** एक राजनेता जो भ्रष्ट आचरण या बेईमानी में लिप्त होता है वह जनता और अपने सहयोगियों का सम्मान खो देता है।
- **उत्तरदायित्व:** सत्यनिष्ठा के बिना, व्यक्ति अपने कार्यों के लिए उत्तरदायित्व से भाग सकता है, जिससे दंडमुक्ति की संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा।
  - **उदाहरण के लिए,** एक अधिकारी जो परिणामों का सामना किए बिना धन और वित्तीय अभिलेखों में हेराफेरी करता है, संगठन के भीतर उत्तरदायित्व की अवधारणा को कमजोर करता है।
- **विश्वसनीयता:** सत्यनिष्ठा का विश्वसनीयता से गहरा संबंध है। यदि किसी व्यक्ति में सत्यनिष्ठा की कमी है, तो उनके शब्द और कार्य विश्वसनीयता खो देते हैं, जिससे दूसरों के लिए उन पर भरोसा करना या विश्वास करना मुश्किल हो जाता है।
  - **उदाहरण के लिए,** एक विक्रेता जो किसी उत्पाद की क्षमताओं के बारे में लगातार झूठे दावे करता है, वह ग्राहकों के बीच विश्वसनीयता खो देता है।
- **नैतिक व्यवहार:** सत्यनिष्ठा नैतिक आचरण का मूल आधार है। जब किसी में सत्यनिष्ठा की कमी होती है, तो वे रिश्वत लेने या कमजोर व्यक्तियों का शोषण करने जैसी अनैतिक गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** एक स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर जिसने मेडिकल अभिलेखों में हेराफेरी की, वह मरीजों की भलाई और विश्वास को खतरे में डालता है।

सत्यनिष्ठा में शामिल हैं:

- नैतिक सिद्धांतों की सुदृढ़ता
- शुचिता
- ईमानदारी और लगन
- किसी के विचार, वाणी और कार्यों के बीच समन्वय
- तर्कसंगत सिद्धांतों के प्रति निष्ठा

सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा

- सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा का तात्पर्य सार्वजनिक पद पर आसीन या लोक सेवा में शामिल व्यक्तियों से अपेक्षित नैतिक आचरण और नैतिक ईमानदारी से है। इसमें आधिकारिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करते समय ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व के साथ कार्य करना शामिल है।
- **कार्मिक मंत्रालय:** कार्मिक मंत्रालय के अनुसार, सत्यनिष्ठा वाला व्यक्ति "हमेशा खुले, निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से व्यवहार करता है, अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करता है और लोक सेवा मूल्यों को बनाए रखने के लिए काम करता है।"
- **नोलन समिति:** सार्वजनिक जीवन में मानकों के सिद्धांतों पर गठित नोलन समिति के अनुसार, सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा का अर्थ है "सार्वजनिक पदों के धारकों को खुद को बाहरी व्यक्तियों या संगठनों के लिए किसी भी वित्तीय या अन्य दायित्व के अंतर्गत नहीं रखना चाहिए जो उन्हें अपने आधिकारिक कर्तव्यों के प्रदर्शन में प्रभावित कर सकते हैं।"
- **जनहित:** सत्यनिष्ठ सार्वजनिक अधिकारी जनहित में काम करने, आम भलाई को प्राथमिकता देने और व्यक्तिगत लाभ या बाहरी प्रभावों के बजाय सिद्धांतों और मूल्यों के आधार पर निर्णय लेने की मजबूत प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित होते हैं। वे उच्च स्तर की व्यावसायिकता बनाए रखते हैं, कानूनी और नैतिक मानकों का पालन करते हैं और हितों के टकराव से बचते हैं।
- **भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी से दूर रहना:** सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा का अर्थ किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार,

रिश्वतखोरी या अनुचित प्रभाव से बचना भी है जो सार्वजनिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता से समझौता कर सकता है।

- **विश्वास कायम रखना और प्रभावी संसाधन उपयोग:** इसके लिए नागरिकों द्वारा लोक अधिकारियों पर रखे गए विश्वास को कायम रखना और यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से और समाज के लाभ के लिए किया जाए।
- लोक प्रशासन में **'अनुपालन की नैतिकता'** और 'सत्यनिष्ठा की नैतिकता' के बीच अंतर करते हैं।
  - **अनुपालन की नैतिकता** लोक सेवकों को स्वतंत्र नैतिक सोच के बिना कानूनों, नियमों और विनियमों का सख्ती से पालन करने का निर्देश देने पर केंद्रित है। यह बाह्य रूप से लगाए गए आदेशों और निर्देशों पर जोर देता है।
  - **सत्यनिष्ठा की नैतिकता** का उद्देश्य सिविल सेवकों के नैतिक तर्क कौशल को विकसित करना है, जिससे वे स्वतंत्र रूप से नैतिक दुविधाओं का विश्लेषण कर सकें। यह केवल बाहरी आदेशों और दंडों पर निर्भर रहने के बजाय नैतिक चरित्र के आंतरिक विकास, आत्म-जिम्मेदारी और नैतिक मानदंडों के सक्रिय पालन पर जोर देता है।
- **उदाहरण:**
  - एसआर शंकरन (1934-2010) त्रिपुरा के मुख्य सचिव थे और उन्हें विभिन्न समूहों के गंभीर दबाव का सामना करते हुए बंधुआ मजदूरी उन्मूलन अधिनियम, 1976 को लागू करने में अपने योगदान के लिए जाना जाता है।
  - सत्येन्द्र दुबे ने एनएचएआई में भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ते हुए अपनी जान गंवा दी।
  - तिरुनेल्लई नारायण अय्यर शेषन भारत के 10वें मुख्य चुनाव आयुक्त (1990-96) थे, जिन्होंने देश में बड़े पैमाने पर कदाचार को समाप्त करके चुनाव सुधार किए और भारत के चुनाव आयोग के दर्जे और उपस्थिति को फिर से परिभाषित किया।

लोक सेवा में सत्यनिष्ठा का ह्रास

- **ऐतिहासिक कारक:** भारत में भ्रष्टाचार औपनिवेशिक शासन के दौरान उत्पन्न हुआ जब भारतीय अधिकारियों का कम वेतन के कारण भ्रष्ट आचरण आदत बन गया।
  - उदाहरण के लिए, कुख्यात 'बख्शीश' प्रणाली।
- **बदलाव:** तेजी से शहरीकरण और औद्योगीकरण ने भौतिक संपत्ति और आर्थिक शक्ति को सामाजिक स्थिति का प्रमुख निर्धारक बना दिया है, जिससे अपनी हैसियत बनाए रखने का प्रयास करने वाले सिविल सेवकों के बीच भ्रष्टाचार बढ़ गया है।
  - **उदाहरण के लिए,** ठेके देने के लिए रिश्वत स्वीकार करना।
- **आर्थिक कारक:** अपर्याप्त पारिश्रमिक और बढ़ती जीवनयापन लागत, जो विशेष रूप से वेतनभोगी वर्ग को प्रभावित करती है और इससे भ्रष्टाचार में बढ़ावा होता है क्योंकि व्यक्ति अपने वित्तीय संकटों की भरपाई करना चाहते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** लाइसेंस या परमिट जारी करना।
- **कमजोर जनमत:** लोग अक्सर भ्रष्टाचार की रिपोर्ट करने के बजाय रिश्वत की पेशकश का सहारा लेते हैं, जो भ्रष्ट प्रथाओं के खिलाफ एक मजबूत जनमत को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।
  - **उदाहरण के लिए,** कागजी कार्रवाई में तेजी लाने या जुर्माने से बचने के लिए रिश्वत देना।
- **जटिल सरकारी प्रक्रियाएँ:** विभिन्न सरकारी विभागों में बोझिल प्रक्रियाएँ बेईमान प्रथाओं और शक्ति के दुरुपयोग के अवसर पैदा करती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** नौकरशाह कागजी कार्रवाई में तेजी लाने या नियमों को दरकिनार करने के लिए रिश्वत की मांग करते हैं।
- **अप्रभावी भ्रष्टाचार विरोधी कानून:** पुराने कानून और भ्रष्टाचार के मामलों के लिए अपर्याप्त दंड से न्याय में देरी होती है और निर्णायक सुनवाई और सख्त दंडों के कार्यान्वयन की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरण के लिए,** मामलों को बिना निपटान के वर्षों तक खींचा जा रहा है।
- **लोक सेवाओं को संरक्षण:** भारतीय संविधान का अनुच्छेद 311, भ्रष्ट व्यक्तियों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई करने में उच्च अधिकारियों की अनिच्छा के साथ मिलकर, भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रभावी उपायों में बाधा डालता है।
  - **उदाहरण के लिए,** भ्रष्ट अधिकारियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई या तबादलों से बचाना।
- **हितों का टकराव:** अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिए वाणिज्यिक और औद्योगिक दिग्गजों और भ्रष्ट अधिकारियों के बीच मिलीभगत से भ्रष्ट आचरण को बढ़ावा मिलता है।
  - **उदाहरण के लिए,** व्यक्तिगत उपकार या वित्तीय रिश्वत के बदले में कंपनियों को ठेके देना।
- **दबाव समूहों का प्रभाव:** अपने समुदायों के लिए लाभ चाहने वाले दबाव समूह, जैसे कि व्यापार संघ और वाणिज्य

मंडल, प्रभाव डालकर और पक्षपात को बढ़ावा देकर भ्रष्टाचार में योगदान करते हैं।

- **उदाहरण के लिए,** मौद्रिक लाभ के बदले अनुकूल नीतियों या छूट की पैरवी करना।

सत्यनिष्ठा पर द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) की सिफारिशें

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) ने लोक प्रशासन प्रणाली में सुधार के लिए एक विस्तृत खाका तैयार किया। इसने निम्नलिखित सिफारिशें दीं:

- **एक व्यक्ति को करना चाहिए:** अपने कर्तव्यों के दौरान अर्जित जानकारी का उपयोग करके आधिकारिक पदों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, उपहार या आतिथ्य स्वीकार नहीं करना चाहिए जो उसके निर्णयों से समझौता कर सकता है, या प्राधिकार के बिना जानकारी का खुलासा नहीं करना चाहिए।
- **एक व्यक्ति को करना चाहिए:** अपने कर्तव्यों और दायित्वों को जिम्मेदारी से पूरा करना चाहिए, पेशेवर तरीके से कार्य करना चाहिए और जनता का विश्वास बनाए रखना चाहिए, यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सार्वजनिक धन और संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए, सार्वजनिक आचरण पारदर्शी और खुला हो, कानून और प्रशासनिक न्याय के अनुरूप हो।

सत्यनिष्ठा समझौता:

- सत्यनिष्ठा समझौता या इंटीग्रिटी पैक्ट एक सतर्कता उपकरण है जो संभावित विक्रेताओं/बोलीदाताओं और खरीदार के बीच एक समझौते की परिकल्पना करता है, जो दोनों पक्षों को अनुबंध के किसी भी पहलू पर कोई भ्रष्ट प्रभाव नहीं डालने के लिए प्रतिबद्ध करता है।
- इसके कार्यान्वयन को इंडिपेंडेंट एक्सटर्नल मॉनिटर्स (आईईएम) द्वारा सुनिश्चित किया जाता है जो निर्विवाद सत्यनिष्ठा के लोग हैं।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल (टीआई)

- ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल एक गैर-सरकारी वैश्विक संगठन है जो भ्रष्टाचार से लड़ने और शासन और सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।
- ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल उत्तरदायी और पारदर्शी प्रणालियों को बढ़ावा देने में ईमानदारी और नैतिक व्यवहार के महत्व पर जोर देता है।

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के बीच अंतर

मापदंड	ईमानदारी	सत्यनिष्ठा
परिभाषा	सच्चा होना और अपने कहे पर कायम रहना।	मूल्य तंत्र, विचार और कार्यों में एकरूपता।
सत्यता	झूठ बोलने से हमारी ईमानदारी समाप्त भी सकती है और नहीं भी।	सत्यनिष्ठा के लिए सत्यता पहली शर्त है।
आचरण	ईमानदारी वास्तविक आचरण को प्रतिबिंबित कर भी सकती है और नहीं भी।	वास्तविक आचरण में झलकना चाहिए.
परस्पर संबंध	सत्यनिष्ठा के बिना ईमानदार हो सकते हैं - केवल शब्द, कोई व्यवहार नहीं।	ईमानदारी के बिना यह संभव नहीं हो सकता; शब्दों और कार्यों में समन्वय होता है।
घटक	ईमानदारी सत्यनिष्ठा के घटकों में से एक है।	सत्यनिष्ठा, ईमानदारी का सुपरसेट है।
उदाहरणार्थ	लाल बहादुर शास्त्री अपनी ईमानदारी और नैतिक प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं। रेल मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान एक रेल दुर्घटना होने पर उन्होंने इस्तीफा दे दिया।	टीएन शेषन अपनी सत्यनिष्ठा के लिए जाने जाते थे।

- **सरदार पटेल** के शब्दों में, "भारत की एकता एक मजबूत और स्वतंत्र अखिल भारतीय सेवा पर निर्भर करती है जो स्वतंत्र रूप से अपनी राय व्यक्त कर सकती है और सुरक्षित महसूस करती है। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि मेहनत और ईमानदारी के माध्यम से प्राप्त कुशल, अनुशासित और संतुष्ट सेवा, लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रभावी प्रशासन के लिए आवश्यक है, सत्तावादी शासन से भी अधिक। इसलिए, सत्यनिष्ठा लोक जीवन में बहुत महत्व रखती है, जिससे सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा मिलता है।

ईमानदारी की दुकानें

- हाल ही में, स्टूडेंट पुलिस कैडेट (एसपीसी) परियोजना के हिस्से के रूप में केरल के लगभग 15 स्कूलों में 'ईमानदारी की दुकानें' खोली गईं।
- इसने छात्रों के लिए भरोसा, सच्चाई और सत्यनिष्ठा पर कुछ मूल्यवान शिक्षाओं पर ध्यान केंद्रित किया।
- इन दुकानों के काउंटरों पर कोई सेल्समैन नहीं होता है और छात्र प्रत्येक वस्तु के लिए पैसे मेज पर रखे कलेक्शन बॉक्स में डाल सकते हैं। वे अंदर जाकर अपनी पसंद की वस्तु चुन सकते हैं और प्रदर्शित मूल्य सूची के आधार पर उसके लिए भुगतान कर सकते हैं।

3.5.2 निष्पक्षता, गैर- पक्षपातपूर्णता और तटस्थता

उद्धरण

"गैर-पक्षपातपूर्णता हमारी मान्यताओं को त्यागने के बारे में नहीं है, बल्कि हमारे मतभेदों को दूर करने और आम समाधान निकालने के बारे में है जो पूरे समाज को लाभान्वित करता है।"

–बराक ओबामा

"निष्पक्षता न्याय की आत्मा है। इसके लिए हमें बिना किसी पूर्वाग्रह के न्याय करना, बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनना और निष्पक्षता और समानता के साथ कार्य करना आवश्यक है।"

–महात्मा गांधी

"तटस्थता हमें चीजों को विभिन्न कोणों से देखने और निजी पूर्वाग्रहों से प्रभावित हुए बिना सूचित निर्णय लेने की अनुमति देती है।"

–मलाला यूसुफजई

निष्पक्षता:

- निष्पक्षता का अर्थ निष्पक्ष एवं गैर-पक्षपाती होना है। यह एक या दूसरे पक्ष के साथ पक्षपात किए बिना निर्णय लेने का गुण है।
  - एक निष्पक्ष व्यक्ति सभी के साथ समान व्यवहार करता है और निजी भावनाओं, राय या बाहरी प्रभावों को अपने निर्णय में हस्तक्षेप नहीं करने देता है।
  - वे निष्पक्ष निर्णय लेने से पहले सभी दृष्टिकोणों और सबूतों पर विचार करते हुए तटस्थ और वस्तुनिष्ठ होने का प्रयास करते हैं।
  - निष्पक्षता यह सुनिश्चित करती है कि सभी को उचित मौका दिया जाए और निर्णय व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के बजाय योग्यता पर आधारित हों।
  - **उदाहरण:** कोई न्यायाधीश किसी व्यक्ति को केवल किसी समुदाय विशेष से होने या सोशल मीडिया रिपोर्टों के आधार पर दोषी नहीं मान सकता बल्कि उसे कानून की उचित प्रक्रिया का पालन करना पड़ता है।

परिदृश्य उदाहरण

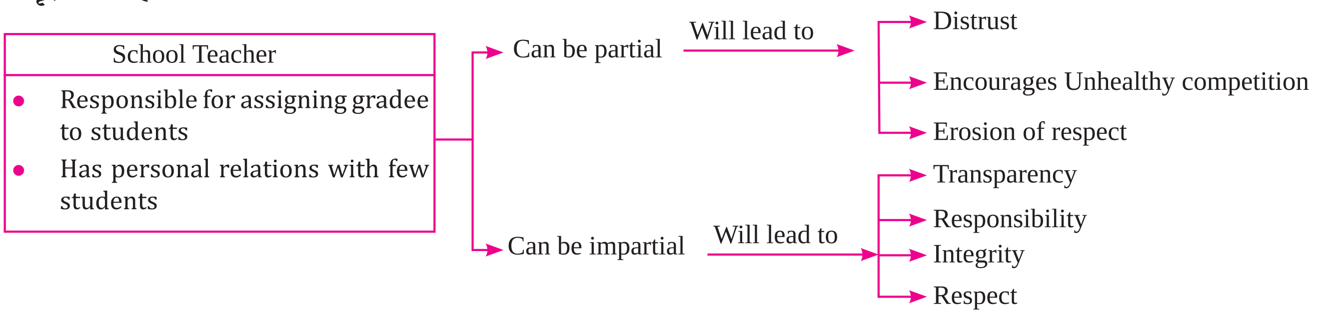

- **सिविल सेवकों के लिए निष्पक्षता:** सिविल सेवकों के लिए, निष्पक्षता दो अलग-अलग स्तरों पर काम करती है –
  - **राजनीतिक निष्पक्षता:** इसका तात्पर्य सिविल सेवकों की अपनी व्यक्तिगत राय के बावजूद, विभिन्न राजनीतिक विचारधारा वाली सरकारों में समान रूप से सेवा करना है।
  - **लोक निष्पक्षता:** इसका तात्पर्य यह है कि एक सिविल सेवक किसी व्यक्ति या हित विशेष के खिलाफ भेदभाव किए बिना निष्पक्ष, गैर-पक्षपातपूर्ण, उद्देश्यपूर्ण और न्यायसंगत तरीके से अपने दायित्वों को पूरा करता है।
- **निष्पक्षता का महत्व:**
  - **सही कार्रवाई:** एक सिविल सेवक किसी भी प्रकार के धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर दंगों, सांप्रदायिक हिंसा या ऐसी जटिल स्थिति के मामले में सही कार्रवाई करने में सक्षम होता है और निष्पक्षता कायम रखता है।
  - **निहित स्वार्थ:** भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, यदि सिविल सेवक निहित स्वार्थों के लिए बहुसंख्यकों के प्रति पक्षपाती हो जाता है, तो अल्पसंख्यकों की आवाज को दबाया जा सकता है। सिविल सेवकों को अल्पसंख्यकों की सुरक्षा करनी चाहिए।
  - **लोगों का कल्याण:** अधीनस्थों के मूल्यांकन में; योजनाओं, कार्यक्रमों की समीक्षा; की गई कार्रवाई की रिपोर्ट बनाने में, निष्पक्षता सिविल सेवकों को सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करने में सहायता करती है जो अंततः जनता के कल्याण के लिए सहायक होती है

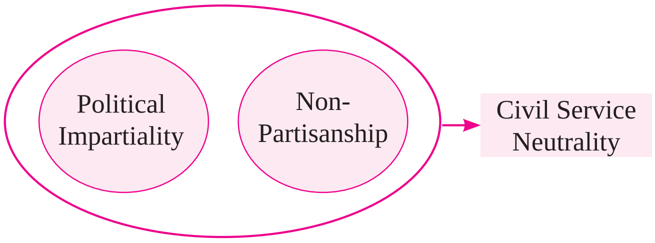

चित्र: सिविल सेवा में तटस्थता का महत्व

  - **मूल्यों को कायम रखना:** निष्पक्षता समानता, स्वतंत्रता, भाईचारे को कायम रखने; हाशिये पर पड़े तबके और अमीरों के बारें में बराबर सोचने में मदद करती है।

- **कार्य संस्कृति:** सकारात्मक एवं अनुकूल कार्य संस्कृति का निर्माण।
- **अन्य:** स्वयं को भाई-भतीजावाद,राजनीतिक-कॉर्पोरेट सांठगांठ; भ्रष्टाचार से मुक्त रखना।

गैर-पक्षपातपूर्णता

- **गैर-पक्षपात,** सरल शब्दों में, राजनीतिक मामलों या संबद्धताओं में निष्पक्ष और तटस्थ रहने को संदर्भित करता है।
  - इसका अर्थ है कि कोई व्यक्ति या संगठन निष्पक्ष रहता है और किसी विशेष राजनीतिक दल या विचारधारा का पक्ष नहीं लेता है।
  - इसके बजाय, वे व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या किसी विशेष राजनीतिक दल के प्रति निष्ठा के भाव से मुक्त होकर, मुद्दों और निर्णयों को निष्पक्षता से करते हैं।
  - गैर-पक्षपातपूर्णता निष्पक्षता, खुलापन और कई पहलुओं पर विचार करने की क्षमता को बढ़ावा देती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि निर्णय किसी विशेष राजनीतिक एजेंडे की पूर्ति के बजाय व्यापक समुदाय के सर्वोत्तम हित में किए जाते हैं।

परिदृश्य उदाहरण

मान लीजिए कोई **न्यायाधीश** एक ऐसे **अदालती** मामले **की अध्यक्षता कर रहा है जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों** के दो व्यक्ति शामिल हैं और जिनके बीच कानूनी विवाद हैं।

न्यायाधीश दोनों पक्षों द्वारा प्रस्तुत तर्कों को ध्यान से सुनता है, **सबूतों की जांच करता है, और कानून को वस्तुनिष्ठ और निष्पक्ष रूप से लागू करता है।**

किसी भी व्यक्तिगत राय या राजनीतिक झुकाव के बिना, न्यायाधीश पूरी कार्यवाही के दौरान निष्पक्ष रहते हैं, और यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय पूरी तरह से मामले की गुणदोषों और लागू कानूनों पर आधारित है।

निष्पक्षता के प्रति न्यायाधीश की प्रतिबद्धता दोनों पक्षों के लिए **समान व्यवहार और निष्पक्ष परिणाम की गारंटी देती है, चाहे उनकी राजनीतिक संबद्धता कुछ भी हो।**

- **उदाहरण:**
  - **टीएन शेषन को** मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में उनकी गैर-पक्षपातपूर्ण भूमिका के लिए याद किया जाता है।
- **गैर-पक्षपातपूर्णता का महत्व:**
  - **निष्पक्षता:** गैर-पक्षपातपूर्ण निर्णय व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या राजनीतिक संबद्धता से प्रभावित नहीं होते हैं। यह विधि जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, जहां न्याय सुनिश्चित करने के लिए निष्पक्ष निर्णय आवश्यक हैं।
  - **सटीकता:** गैर-पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग किसी विशेष राजनीतिक दल या विचारधारा को बढ़ावा देने की इच्छा से प्रभावित नहीं होती है। यह पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, जहां जनता को सूचित करने के लिए सटीक रिपोर्टिंग आवश्यक है।
  - **भरोसा:** क्योंकि जनता गैर-पक्षपातपूर्ण संस्थानों को निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ मानती है, इसलिए उनके ऊपर जनता का विश्वास अधिक होने की संभावना होती है। यह सरकार जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, जहां संस्थानों पर भरोसा उनकी प्रभावशीलता के लिए आवश्यक है।
  - **विश्वसनीयता:** गैर-पक्षपाती व्यक्तियों के विश्वसनीय होने की अधिक संभावना होती है, क्योंकि उन्हें निष्पक्ष और व्यावहारिक माना जाता है। यह शिक्षा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, जहां छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए विश्वसनीयता आवश्यक होती है।

गैर-पक्षपात सुनिश्चित करने के तरीके

- **केंद्रीय सिविल सेवा आचरण नियम, 1964, और अखिल भारतीय सेवा आचरण नियम, 1968:** वे सिविल सेवकों को जनता के साथ अपने व्यवहार में टाल-मटोल की रणनीति न अपनाते हुए अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाने के लिए कुछ दिशानिर्देश निर्धारित करते हैं।
- **आचार संहिता, 1997:** यह भारत में लोक सेवकों के लिए आचार संहिता लागू करने की पहली पहल थी, जिसे बेहतर प्रशासन की दिशा में एक कदम माना गया।

उद्धरण

"पक्षपात हमारा महान अभिशाप है। हम भी आसानी से मान लेते हैं कि हर चीज के दो पहलू होते हैं और यह हमारा कर्तव्य है कि हम एक या दूसरे पक्ष पर रहें।" **–जेम्स हार्वे रॉबिन्सन**

गैर पक्षपातपूर्णता	निष्पक्षता
• यह एक प्रकार का दृष्टिकोण है।	• किसी विशेष परिस्थिति में एक प्रकार का व्यवहार है।
• यह राजनीतिक कार्यपालिका के साथ सिविल सेवकों के संबंधों से संबंधित है और इस प्रकार यह एक संकीर्ण अवधारणा है। यह एक राजनीतिक तटस्थता है।	• यह न केवल राजनीतिक कार्यपालिका बल्कि लोगों के साथ भी सिविल सेवकों के संबंधों से संबंधित है और इस प्रकार एक व्यापक अवधारणा है।

तटस्थता

- तटस्थता का तात्पर्य **किसी संघर्ष या असहमति की स्थिति में निष्पक्ष रहना और किसी का पक्ष न लेना है।** इसका अर्थ है निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता की स्थिति बनाए रखना, विभिन्न पहलुओं या विकल्पों के निष्पक्ष मूल्यांकन की अनुमति देना।
  - तटस्थता में एक संतुलित और तटस्थ दृष्टिकोण के लिए **व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और विचारों को अलग रखना शामिल है।**
  - यह स्पष्ट और निष्पक्ष मूल्यांकन की अनुमति देता है, और यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय या कार्य पक्षपात या पूर्वाग्रह से प्रभावित नहीं हैं।
  - तटस्थता अक्सर मुक्त, वस्तुनिष्ठ और सभी पक्षों या दृष्टिकोणों के साथ समान व्यवहार करने से जुड़ी होती है।
  - सिविल सेवा तटस्थता का तात्पर्य **राजनीतिक निष्पक्षता से है।**
- **तटस्थता के प्रकार:**
  - **निष्क्रिय तटस्थता:** इसमें सिविल सेवक केवल राजनीतिक कार्यपालिका के आदेश की अनुपालना करते हैं और ऐसे में वे कुछ कानूनी या संवैधानिक प्रावधानों का उल्लंघन कर सकते हैं। इसलिए, यह अवांछनीय है क्योंकि यह प्रतिबद्ध नौकरशाही के विचार को जन्म देता है।
  - **सक्रिय तटस्थता:** अधिकारी किसी विशेष पक्ष का अनुसरण किए बिना वही करेंगे जो संविधान, कानून, नियम और कार्यालय नियम पुस्तिका आदि कहते हैं। इसकी अधिकता कभी-कभी सिविल सेवा सक्रियता को जन्म दे सकती है।

प्रतिबद्ध नौकरशाही

नकारात्मक पहलू	सकारात्मक पहलू
इसका तात्पर्य राजनीतिकृत नौकरशाही से है, जहां प्रशासनिक तंत्र केवल सत्ताधारी राजनीतिक दल के संकीर्ण हितों की पूर्ति करती है, उदाहरण के लिए नाजी जर्मनी का प्रशासनिक तंत्र।	इसका तात्पर्य यह है कि सिविल सेवक राज्य, संविधान, कानून आदि के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं और राजनीतिक कार्यपालिका के कार्यक्रमों में विश्वास रखते हैं बशर्ते कि वे राज्य, संविधान आदि के उद्देश्यों के साथ जुड़े हुए हों। इसमें वे सत्तारूढ़ दल के राजनीतिक दर्शन पर तकनीकी सलाह देते हैं।

संवैधानिक पदों की तटस्थता :

- हाल ही में संवैधानिक पदों जैसे राज्यपाल (महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल) और राज्य की विधानसभाओं के अध्यक्ष आदि की तटस्थता राजनीतिक तटस्थता के सिद्धांत के आधार पर सर्वोच्च न्यायालय की जांच के दायरे में आ गई है।
- **संवैधानिक पदों के मामले में तटस्थता के सिद्धांत का महत्व**
  - संवैधानिक विश्वास को कायम रखना जिसके लिए कार्यों में तटस्थता की आवश्यकता होती है।
  - संवैधानिक कार्यालयों में निहित शक्ति का किसी राजनीतिक पक्ष में झुकाव लोकतंत्र में राजनीतिक निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है।
  - वर्तमान में, सहकारी संघवाद की आवश्यकता है और संवैधानिक पदों की तटस्थता की अनुपस्थिति राज्यों और केंद्रों, जैसे पश्चिम बंगाल और केंद्र सरकार के बीच संघर्ष पैदा करती है।

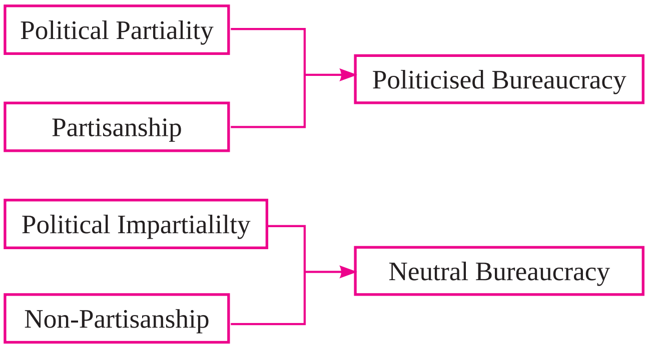

चित्र: तटस्थता का महत्व

- **तटस्थता की चुनौतियाँ:**
  - **स्वतंत्र संस्थाओं का अभाव:** स्थानांतरण, पदस्थापन एवं अन्य सेवा शर्तों के लिए स्वतंत्र संस्थाओं का अभाव है। परिणामस्वरूप, सिविल सेवक अपनी पसंदीदा पोस्टिंग और अन्य सुविधाएं पाने के लिए किसी न किसी राजनीतिक दल के साथ जुड़ जाते हैं।
  - **गोपनीयता:** आधिकारिक कामकाज में गोपनीयता, जिसके परिणामस्वरूप राजनीतिक कार्यपालिका और सिविल सेवकों के बीच अपनी गैरकानूनी संतुष्टि को पूरा करने के लिए एक सांठगांठ विकसित होती है।
  - **सेवा में और अंतर-सेवा प्रतिद्वंद्विता:** प्रत्येक सरकारी सेवा में भाषा, धर्म, जाति और क्षेत्र के आधार पर विभिन्न गुट होते हैं। अपने गुट के लिए पदोन्नति और सुविधाएं हासिल करने के लिए, वे राजनेताओं की इच्छा के आगे झुकते हैं।

- **गैरकानूनी राजनीतिक एजेंडे:** प्रतिबद्ध नौकरशाही की गलत धारणा, जहां सिविल सेवक एक विशेष राजनीतिक दल के राजनीतिक एजेंडे को पूरा करने की कोशिश करते हैं।
- **चुनाव और भ्रष्टाचार:** मंत्रियों को चुनाव अभियानों के वित्तपोषण के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता होती है, इसलिए वे एक सुविधाजनक अधीनस्थ अधिकारियों को प्राथमिकता देते हैं। बहुत से लोग ऐसे अधिकारी को पसंद नहीं करते जो निष्पक्ष और स्पष्ट सलाह देता है।

राजनीतिक तटस्थता संवैधानिक पदों के ऊपर निष्पक्षता, सहिष्णुता और विचारों की स्वतंत्रता के लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बनाए रखने की जिम्मेदारी डालती है और इन पदों पर बैठे व्यक्तियों का आचरण ऐसा होना चाहिए कि कोई राजनीतिक हस्तक्षेप न हो।

निष्पक्षता, गैर-पक्षपातपूर्णता और तटस्थता के बीच अंतर:

मानदंड	निष्पक्षता	गैर पक्षपातपूर्णता	तटस्थता
परिभाषा	सभी पक्षों या व्यक्तियों के साथ समान रूप से और बिना पक्षपात के व्यवहार करना, निर्णय लेने में निष्पक्षता सुनिश्चित करना।	राजनीतिक मामलों में निष्पक्ष और तटस्थ रहना और किसी का पक्ष लेते हुए दिखने से बचना।	वस्तुनिष्ठ एवं निष्पक्ष स्थिति बनाए रखना, किसी पक्ष का पक्ष न लेना या किसी भी स्थिति में पक्षपात न करना।
प्रासंगिकता	न्याय, शासन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं सहित विभिन्न क्षेत्रों में लागू होता है, जहां सभी पक्षों के साथ निष्पक्ष और समान व्यवहार आवश्यक है।	मुख्यरूप से राजनीतिक व्यवस्थाओं, लोक सेवा, और प्रशासनिक भूमिकाओं में प्रासंगिक है जहां किसी विशेष राजनीतिक समूह या पार्टी का पक्ष लिए बिना सार्वजनिक हित को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।	आम तौर पर उन स्थितियों में लागू होती है जहां तटस्थ दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जैसे संघर्षों में मध्यस्थता करना, बातचीत को सुविधाजनक बनाना, या निष्पक्ष रिपोर्टिंग सुनिश्चित करना।
उद्देश्य	किसी विशेष स्थिति या निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल सभी व्यक्तियों या पार्टियों के लिए निष्पक्षता, न्याय और समान व्यवहार सुनिश्चित करना।	किसी भी राजनीतिक दल के प्रति पक्षपात या पूर्वाग्रह से बचकर राजनीतिक प्रक्रियाओं और लोक सेवा में जन विश्वास, सत्यनिष्ठा और विश्वसनीयता को बढ़ावा देना।	एक संतुलित और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण की सुविधा प्रदान करना, उन स्थितियों में निष्पक्ष मूल्यांकन, निर्णय या कार्यों की अनुमति देना जहां पक्ष लेने से तटस्थता से समझौता हो सकता है।
प्रमुख लक्षण	निष्पक्ष निर्णय, सभी के लिए समान विचार, पूर्वाग्रह या दुराग्रह का अभाव, निष्पक्षता है।	राजनीतिक संबद्धता से स्वतंत्रता, पक्षपातपूर्ण हितों के प्रति तटस्थता और सार्वजनिक हित के प्रति प्रतिबद्धता।	वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन, व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या निहित स्वार्थों का अभाव, परस्पर विरोधी दलों या विचारों के प्रति तटस्थता।
उदाहरण	एक निष्पक्ष न्यायाधीश एक अदालती मामले की सुनवाई कर रहा है, जो अभियोजन और बचाव दोनों के साथ समान व्यवहार करता है और पूरी तरह से साक्ष्य और कानून पर आधारित निर्णय करता है।	एक लोक सेवक या सरकारी अधिकारी जो सत्ता में किसी भी राजनीतिक दल की परवाह किए बिना तटस्थ रहता है और जन हित की सेवा करता है।	दो परस्पर विरोधी पक्षों के बीच शांति वार्ता की सुविधा प्रदान करने वाला मध्यस्थ निष्पक्ष रुख बनाए रखता है और निष्पक्ष बातचीत सुनिश्चित करता है।

3.5.3 वस्तुनिष्ठता

> **उद्धरण**
>
> ''वस्तुनिष्ठता वह बौद्धिक कठोरता है जो हमें तथ्यों को राय से अलग करने में मदद करती है।'' **–फरीद जकारिया**

- वस्तुनिष्ठता से तात्पर्य **किसी चीज को समझते समय या उसका मूल्यांकन करते समय निष्पक्ष, न्यायोचित और व्यक्तिगत राय या भावनाओं से मुक्त होने के गुण से है।** इसमें व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या प्राथमिकताओं को किसी के निर्णय को प्रभावित करने की अनुमति दिए बिना, किसी स्थिति या जानकारी को निष्पक्ष रूप से देखना शामिल है।
  - **समानता के अंतिम मूल्य को प्राप्त करने के लिए** वस्तुनिष्ठता एक अर्थपूर्ण मूल्य है।

- वस्तुनिष्ठता के लिए तथ्यों और सबूतों की जांच करना, विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करना और व्यक्तिपरक भावनाओं के बजाय तार्किक तर्क के आधार पर निर्णय लेना आवश्यक है।
- यह एक तटस्थ दृष्टिकोण बनाए रखने और हमारे आसपास की दुनिया को समझने और व्याख्या करने में निष्पक्षता और सटीकता के लिए प्रयास करने के बारे में है।

- **नोलन समिति:** नोलन समिति के अनुसार, निष्पक्षता को सार्वजनिक जीवन में मूलभूत मूल्यों में से एक के रूप में रेखांकित किया गया है।
  - यह इस बात पर जोर देती है कि सार्वजनिक कार्यालय में व्यक्तियों को सार्वजनिक मामलों का संचालन करते समय निष्पक्षता प्रदर्शित करनी चाहिए, जैसे कि नियुक्तियाँ करना, अनुबंध देना और पुरस्कार और लाभ के लिए व्यक्तियों की सिफारिश करना।
  - समिति इस बात पर जोर देती है कि निर्णय किसी भी व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या पक्षपात से रहित, गुणदोष के आधार पर होने चाहिए।

उदाहरण

- भारत के औषधि महानियंत्रक ने जनता के दबाव के बावजूद कोविड-19 वैक्सीन की मंजूरी के लिए पर्याप्त डेटा सुनिश्चित किया।
- पक्षपात नहीं बल्कि गुणदोष के आधार पर अनुबंध देना, नियुक्तियाँ करना, और पुरस्कार और लाभ देना।

सिविल सेवक के लिए वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता:

- **निष्पक्षता:** वस्तुनिष्ठता सिविल सेवकों को बिना किसी पूर्वाग्रह या पक्षपात के अपना काम करने, सभी व्यक्तियों और मामलों के साथ समान व्यवहार करने में मदद करती है। यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय बिना किसी व्यक्तिगत या व्यक्तिपरक प्रभाव के गुणदोष के आधार पर हों।
- **जन विश्वास:** वस्तुनिष्ठता यह प्रदर्शित करके सिविल सेवा में जन विश्वास को बढ़ावा देती है कि निर्णय वस्तुनिष्ठ मानदंडों के आधार पर और जनता के सर्वोत्तम हित में किए जाते हैं। यह प्रशासनिक तंत्र की सत्यनिष्ठा और विश्वसनीयता को बनाए रखने में मदद करता है।
- **प्रभावी समस्या-समाधान:** वस्तुनिष्ठता सिविल सेवकों को सभी प्रासंगिक कारकों और साक्ष्यों पर विचार करते हुए स्थितियों और मुद्दों का निष्पक्ष रूप से विश्लेषण करने में सक्षम बनाती है। यह समस्याओं के मूल कारणों की पहचान करने और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या पूर्वकल्पित धारणाओं से मुक्त होकर उचित समाधान खोजने में मदद करती है।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** वस्तुनिष्ठता निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पारदर्शिता को बढ़ावा देती है, यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय अच्छी तरह से स्थापित, उचित और जांच का सामना कर सकने में सक्षम हैं। यह किए गए कार्यों के लिए स्पष्टीकरण और औचित्य की जवाबदेही को बढ़ाता है।
- **संगति और एकरूपता:** वस्तुनिष्ठता सिविल सेवा के भीतर सुसंगत मानकों और प्रथाओं को स्थापित करने में मदद करती है, यह सुनिश्चित करती है कि समान मामलों के साथ समान व्यवहार किया जाए। यह मनमाने या भेदभावपूर्ण निर्णय लेने के जोखिम को कम करता है, निष्पक्षता और समान व्यवहार को बढ़ावा देता है।
- **साक्ष्य-आधारित दृष्टिकोण:** वस्तुनिष्ठता सिविल सेवकों को अपने काम में वस्तुनिष्ठ साक्ष्य, आंकड़ों और विश्लेषण पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह तथ्यों के आधार पर सूचित निर्णय लेने, व्यक्तिगत राय या व्यक्तिपरक व्याख्याओं के प्रभाव को कम करने में मदद करती है।
- **व्यावसायिकता:** वस्तुनिष्ठता सिविल सेवकों के लिए पेशेवर आचरण का एक प्रमुख गुण है। यह जनहित की सेवा करने और सुशासन, नैतिकता और अखंडता के सिद्धांतों को बनाए रखने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

वस्तुनिष्ठता में अवश्य होना चाहिए	वस्तुनिष्ठता नहीं होनी चाहिए
साक्ष्यों, तथ्यों और विकल्पों को प्रस्तुत करते हुए जानकारी और सलाह प्रदान करना।	परामर्श देते समय या निर्णय लेते समय असुविधाजनक तथ्यों या प्रासंगिक विचारों को नजरअंदाज करना।
योग्यता के आधार पर निर्णय	लिए गए निर्णयों से उत्पन्न होने वाले कार्यों से बचना।
विशेषज्ञ और पेशेवर परामर्श का उचित ध्यान रखना।	

वस्तुनिष्ठता कैसे विकसित कर सकते हैं

- **पारदर्शिता:** आरटीआई अधिनियम के बेहतर कार्यान्वयन के साथ पारदर्शिता, जो यह सुनिश्चित करेगी कि निर्णय सनक के बजाय तथ्यों पर आधारित हों। पारदर्शिता और खुलापन निष्पक्षता के आश्वासन की अनुमति देता है।
- **सूचना प्रबंधन प्रणाली:** यह सुनिश्चित करेगी कि कोई भी संगठन घटनाओं, निर्णयों, सूचनाओं आदि का उचित रिकॉर्ड और दस्तावेज रखे। यह एक जांच के रूप में कार्य करेगा और साथ ही निर्णय लेने के लिए महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करेगा।
- **प्रशिक्षण:** प्रशिक्षण उन लोगों को सही मार्गदर्शन प्रदान करता है जो सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। इससे यह भी सुनिश्चित

होता है कि लोक सेवकों को पता है कि क्या करने की आवश्यकता है।

- **समालोचनात्मक सोच:** एक 'बाबा' में विश्वास रखने वाले एक केंद्रीय मंत्री के आदेश पर एएसआई ने उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में सोने की खोज शुरू की। उन्होंने उच्च अधिकारियों के आदेशों का आँख मूँद कर पालन करके समालोचनात्मक सोच की कमी दिखाई।
- **निर्णयों की समीक्षा करने का अधिकार:** न्यायिक/प्रशासनिक प्रक्रिया के भीतर, कराधान, भूमि अधिग्रहण आदि जैसे अपीलीय बोर्डों के लिए एक तंत्र होना चाहिए।
- **सुने जाने का अधिकार :** अक्सर अधिकारी लोगों की शिकायतें या राय ठीक से नहीं सुनते और वही करते हैं जो उनके मन में होता है। अतः नई योजनाओं में 'सामाजिक लेखापरीक्षा/जनसुनवाई' घटक होने चाहिए।

वस्तुनिष्ठता पर आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य

- **वेबेरियन मॉडल के अवशेष:** कुछ विद्वानों का तर्क है कि निष्पक्षता पर अत्यधिक जोर प्रशासन के पारंपरिक वेबेरियन मॉडल में निहित है, जिसके परिणामस्वरूप नौकरशाही उदासीन हो सकती है।
- उनका मानना है कि निष्पक्षता का कड़ाई से पालन निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में रचनात्मकता और नवीनता को दबा सकता है।
- **डेटा की सीमित उपलब्धता:** भारत जैसे विकासशील देश में, वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने के लिए पर्याप्त डेटा की उपलब्धता एक चुनौती हो सकती है। विश्वसनीय और व्यापक डेटा की कमी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सख्त निष्पक्षता के अनुप्रयोग में बाधा बन सकती है।
- **रचनात्मकता पर प्रतिबंध:** वस्तुनिष्ठता, अपने स्वभाव से, रचनात्मक सोच और वैकल्पिक समाधानों को हतोत्साहित करती है। उच्च स्तर पर निर्णय लेने के लिए अक्सर जटिल समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिपरक निर्णय और नवीन दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जबकि निचले स्तर के कार्यों के लिए निष्पक्षता को अधिक उपयुक्त माना जाता है जिसमें दोहराए जाने वाले कार्य शामिल होते हैं।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर जोर:** आलोचकों का तर्क है कि निष्पक्षता निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से भावनाओं को खत्म करने पर अत्यधिक जोर देती है। हालाँकि, समकालीन समझ यह मानती है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्यम से निर्णय लेने की सुविधा में भावनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, जिसमें उत्पादक तरीके से भावनाओं को पहचानना और उचित रूप से प्रबंधित करना शामिल है।

परिदृश्य उदाहरण

कल्पना करें कि एक सरकारी विभाग गरीबी उन्मूलन जैसे गंभीर सामाजिक मुद्दे के समाधान के लिए नीतियां बनाने के लिए जिम्मेदार है। इस विभाग में निर्णय लेने का पारंपरिक दृष्टिकोण सख्त निष्पक्षता पर आधारित है, जहां निर्णय पूरी तरह से सांख्यिकीय डेटा और संख्यात्मक संकेतकों के आधार पर किए जाते हैं।

हालाँकि, आलोचकों का तर्क है कि इस परिदृश्य में केवल निष्पक्षता पर निर्भर रहने से महत्वपूर्ण गुणात्मक पहलुओं और नवीन समाधानों की अनदेखी हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि डेटा गरीबी दर में गिरावट दिखाता है, लेकिन आबादी का एक बड़ा हिस्सा अभी भी आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहा है, तो एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से समस्या के समाधान पर विचार किया जा सकता है। इससे सहानुभूति की कमी हो सकती है और गरीबी के अंतर्निहित कारणों को संबोधित करने में विफलता हो सकती है।

इसके विपरीत, एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण जो व्यक्तिगत कहानियों, सामुदायिक अंतर्दृष्टि और रचनात्मक विचारों जैसे व्यक्तिपरक कारकों पर विचार करता है, अधिक व्यापक और प्रभावी समाधान प्रदान कर सकता है। भावनाओं को शामिल करके और सामाजिक संदर्भ की गहरी समझ से, निर्णयकर्ता ऐसी नीतियां विकसित कर सकते हैं जो गरीबी के मूल कारणों को संबोधित करती हैं और सकारात्मक बदलाव लाती हैं।

वस्तुनिष्ठता बनाम तटस्थता

वस्तुनिष्ठता	तटस्थता
तथ्यात्मक जानकारी और साक्ष्य के आधार पर निर्णय लेने पर ध्यान केंद्रित करता है।	इसमें निष्पक्ष रुख बनाए रखना और तरफदारी या पक्षपात से बचना शामिल है।
निर्णय लेने में व्यक्तिगत राय और भावनाओं से बचने पर जोर देता है।	पक्षपात दिखाए बिना तटस्थ स्थिति बनाए रखने की मांग करता है।
न्यायोचित और निष्पक्ष निर्णय लेने के लिए डेटा, अनुसंधान और वस्तुनिष्ठ मानदंडों पर निर्भर करता है।	प्राथमिकता या पूर्वाग्रह दिखाए बिना सभी पक्षों या व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करने की मांग करता है।

इसका उद्देश्य एक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण प्रदान करना और व्यक्तिपरक प्रभावों से बचना है।	इसका उद्देश्य उन स्थितियों में तटस्थ स्थिति बनाए रखना है जहां परस्पर विरोधी हित या राय शामिल हों।
विज्ञान, अनुसंधान और डेटा विश्लेषण सहित विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है।	अक्सर विवाचन, मध्यस्थता और संघर्ष समाधान जैसे संदर्भों में लागू किया जाता है।

लोक सेवा के प्रति समर्पण

- **समर्पण किसी विशेष गतिविधि,** व्यक्ति या उद्देश्य के लिए अपना समय, ध्यान, ऊर्जा या स्वयं को देने या लागू करने में सक्षम होने का गुण है। यह प्रतिबद्धता से भिन्न है, जो औपचारिक रूप से अनुगृहीत/बाध्य है, जबकि समर्पण जुनून के साथ एक प्रतिबद्धता है और कुछ आदर्शों से प्रेरित होकर कर्तव्य की भावना से निर्देशित होती है।
    - **'लोक सेवा के प्रति समर्पण'** का तात्पर्य जनता की भलाई को सर्वोपरि रखना है जो यह सुनिश्चित करेगा कि एक सिविल सेवक की कर्तव्य भावना उसकी आधिकारिक जिम्मेदारी के साथ एकीकृत हो।
- **उदाहरण:** के. विजय कुमार एक भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) अधिकारी थे। उन्होंने 1990 के दशक के अंत में विद्रोही समूह लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (एलटीटीई) का मुकाबला करने के लिए भारत के तमिलनाडु राज्य में स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

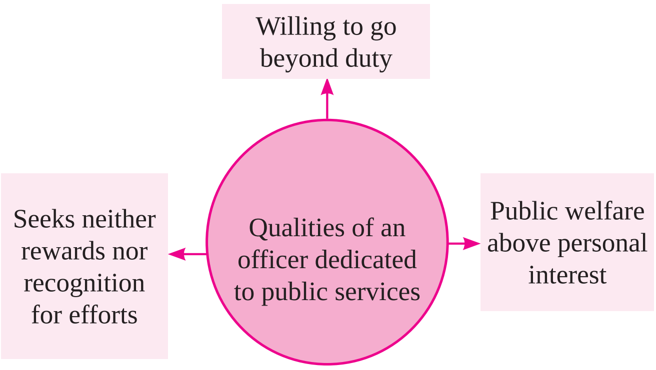

चित्र: लोक सेवाओं के लिए समर्पित एक अधिकारी के गुण

अपने जीवन के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियों और खतरों का सामना करने के बावजूद, कुमार ने क्षेत्र में कानून और व्यवस्था बनाए रखने की दिशा में अथक प्रयास किया। उन्होंने मैदान पर रहकर, अपनी टीम का आगे बढ़कर नेतृत्व करके और उग्रवाद का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने के लिए रणनीतिक योजनाएँ तैयार करके अत्यधिक समर्पण प्रदर्शित किया।

सार्वजनिक सेवा के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता जनता की सुरक्षा के लिए खुद को नुकसान पहुंचाने की उनकी इच्छा से स्पष्ट थी। उन्होंने समुदाय की भलाई और शांति सुनिश्चित करने के लिए, अक्सर व्यक्तिगत समय और आराम का त्याग करते हुए अथक प्रयास किया।

सार्वजनिक सेवा के प्रति कुमार के समर्पण ने उन्हें न केवल अपने साथी अधिकारियों से, बल्कि जिस जनता की उन्होंने सेवा की, उससे भी पहचान और सम्मान मिला।

- **महत्व:**
    - यह उन्हें अपना काम करते रहने के लिए प्रेरित रखता है, भले ही वह उबाऊ, अवांछित या थकाऊ हो।
    - इसकी अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि सिविल सेवकों को नियमित रूप से कठिन और विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।
    - यह सिविल सेवकों में उनकी नौकरी और लोगों के प्रति सहानुभूति लाता है।
    - संविधान के आदर्शों, जैसे न्याय, समानता आदि को साकार करने के लिए सार्वजनिक सेवा अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

नाम	विवरण
एसआर शंकरन	एसआर शंकरन एक भारतीय सिविल सेवक, सामाजिक कार्यकर्ता और त्रिपुरा राज्य के मुख्य सचिव थे, जिन्हें 1976 के बंधुआ मजदूरी उन्मूलन अधिनियम को लागू करने में उनके योगदान के लिए जाना जाता है, जिसने भारत में बंधुआ मजदूरी को समाप्त कर दिया।
अशोक खेमका	अपनी उच्च स्तर की ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के लिए जाने और सम्मानित किये जाते हैं। उन्हें गुड़गांव में अवैध भूमि सौदे को रद्द करने और सरकार के समक्ष कई अनियमितताएं सामने लाने के लिए जाना जाता है। इसके चलते उनके करियर में 50 से ज्यादा बार स्थानांतरण हो चुका है।
विनोद राय	सीएजी प्रमुख के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने 2जी घोटाला, कोयला घोटाला आदि जैसे कई घोटाले उजागर किये।

महेश भागवत	वह अपनी मित्रतापूर्ण पुलिसिंग के लिए जाने जाते हैं और सिविल सेवा परीक्षा के अभ्यर्थियों को नि:शुल्क प्रशिक्षण भी देते हैं।
आर्मस्ट्रांग पेम	सार्वजनिक सेवा के प्रति उनके समर्पण के लिए सबसे प्रतिष्ठित आईएएस पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
दुर्गा शक्ति नागपाल	अपने अधिकार क्षेत्र में भ्रष्टाचार और अवैध रेत खनन के खिलाफ बड़े पैमाने पर अभियान शुरू करने के बाद वह लोगों की नजर में आई।
प्रवीण कस्वां	भारतीय वन सेवा के एक अधिकारी, जो सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को संरक्षण और वानिकी के बारे में जागरूक करने के प्रयासों के लिए जाने जाते हैं।

3.5.4 सहिष्णुता

- सरल शब्दों में सहिष्णुता का **अर्थ है दूसरों के मतभेदों, विश्वासों और विचारों को स्वीकार करना और उनका सम्मान करना, भले ही वे हमसे भिन्न हों।** इसमें दूसरों के प्रति खुले विचारों वाला, समझदार और धैर्यवान होना शामिल है, चाहे उनकी जाति, धर्म, संस्कृति या पृष्ठभूमि कुछ भी हो। सहिष्णुता सद्भाव, सहानुभूति और विविध दृष्टिकोण और अनुभव वाले लोगों के साथ शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है।

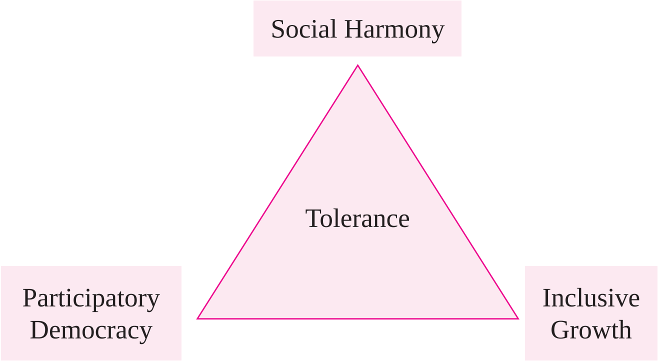

चित्र: सहनशीलता की त्रिमूर्ति

- **उदाहरण:** केशव देसिराजू एक आईएएस अधिकारी थे जिन्होंने भारत सरकार में विभिन्न पदों पर कार्य किया। देसिराजू हाशिए पर रहने वाले समुदायों के प्रति, विशेषकर स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में अपने समावेशी और सहिष्णु दृष्टिकोण के लिए जाने जाते थे।
  - भारत में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण विभाग के पूर्व सचिव के रूप में, उन्होंने एचआईवी/एड्स और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से प्रभावित लोगों सहित कमजोर लोगों के अधिकारों और कल्याण की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - देसिराजू ने इनसे जुड़े भेदभाव और अभिशाप को खत्म करने की दिशा में काम किया और समावेशी नीतियों और कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया।
  - जन स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने में सहिष्णुता और सहानुभूति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें एक अनुकरणीय सिविल सेवक बना दिया।

> **उद्धरण**
>
> "सहिष्णुता का अर्थ है हर इंसान को वे अधिकार देना जो आप अपने लिए चाहते हैं।" **–थॉमस पेन**

सहिष्णुता का महत्व:

- **शांति:** सहिष्णुता समाज में स्थायी शांति बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **मानव विकास:** मानव अधिकारों, बहुलवाद, लोकतंत्र और विधि के शासन को कायम रखती है, जिससे मानव विकास संभव होता है।
- **नवाचार:** नए आविष्कारों को सक्षम बनाता है और समाज में यथास्थिति को दूर करता है क्योंकि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सक्षम बनाता है।
- **समानता:** प्रत्येक व्यक्ति के नैतिक मूल्य को कायम रखती है क्योंकि जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार सभी व्यक्तियों का नैतिक मूल्य समान है।
- **लोक सेवा:** सिविल सेवकों को लोक सेवा में सक्षम बनाती है क्योंकि हमारे जैसे विविध समाज को सभी की समान रूप से सेवा की आवश्यकता है।
- **समावेशिता:** यह समाज में लोगों को उनके यौन रुझान की परवाह किए बिना समायोजित करता है। उदाहरण- एलजीबीटीक्यू समाज की स्वीकार्यता।
- **व्यापक सोच:** सिविल सेवकों की सोच को व्यापक बनाता है और न्याय, निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता जैसे मूल्यों को कायम रखता है।
- **अनुकूलनशीलता:** अपने राज्य के अलावा किसी अन्य राज्य में तैनात एक सिविल सेवक को अपनी सहिष्णु योग्यता के अनुरूप ढलने और लोगों की सेवा के लिए खुद को समर्पित करने में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।
- **धर्मनिरपेक्षता:** संविधान में निहित धर्मनिरपेक्षता के उच्च आदर्श को आगे बढ़ाने के लिए एक गुण के रूप में सहिष्णुता महत्वपूर्ण है। असहिष्णुता अन्याय और हिंसा को जन्म देती है जो सांस्कृतिक रूप से विविध राष्ट्र में संतुलित विकास के लिए घातक हैं।

- **साहस:** दूसरों के अधिकारों के लिए लड़ने का साहस – सहिष्णुता दूसरों को सम्मान देती है और इसलिए उनके अधिकारों के लिए लड़ने का साहस देती है जैसे एलजीबीटीक्यू समुदाय, अल्पसंख्यकों आदि के साथ नस्लीय भेदभाव के खिलाफ लड़ना।
- **बेहतर निर्णय:** सहनशीलता आवेगपूर्ण निर्णयों से बचती है। इससे समय बचता है और हानि तथा नुकसान को कम करने में मदद मिलती है। विभिन्न वर्गों के बीच स्वस्थ बहस और चर्चा की अनुमति देता है और इसके परिणाम लोकतांत्रिक होते हैं। शांति के समय में, लोगों को सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक रूप से आगे बढ़ने का मौका मिलता है।
- **वैयक्तिकता और विविधता:** सहिष्णुता एक ऐसे समाज का निर्माण करती है जिसमें लोग मूल्यवान और सम्मानित महसूस कर सकते हैं, और जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए जगह होती है, प्रत्येक व्यक्ति के अपने विचार, सोच और सपने होते हैं।
- **सम्मान:** सहिष्णुता वैयक्तिकता और विविधता की अनुमति देती है। यह आपसी सम्मान और जन कल्याण के बारे में है, न कि इस बारे में कि कौन सही है और कौन गलत है।
- **उदाहरण:**
  - एक सिविल सेवक बहुसांस्कृतिक कार्यक्रमों और समारोहों का आयोजन करके, विविध परंपराओं के लिए सहिष्णुता और प्रशंसा के माहौल को बढ़ावा देकर समुदाय के भीतर सांस्कृतिक समावेशिता को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है।
  - एक सिविल सेवक सार्वजनिक सुनवाई या सामुदायिक बैठकों के दौरान विभिन्न विचारों को ध्यान से सुनता है, यह सुनिश्चित करता है कि सभी के विचार सुने जाएं और नीतियां बनाते समय या निर्णय लेते समय विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार किया जाए।
  - एक सिविल सेवक दो विरोधी सामुदायिक समूहों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है, संवाद की सुविधा प्रदान करता है, सहानुभूति को बढ़ावा देता है, और एक ऐसा समाधान ढूंढता है जो उनकी चिंताओं को हल करता है और सद्भाव को बढ़ावा देता है।

विभिन्न स्तरों पर सहिष्णुता की भूमिका:

स्तर	भूमिका
व्यक्तिगत स्तर	• दूसरों का सम्मान करना और अपनी इच्छा दूसरों पर न थोपना सिखाता है। • **उदाहरण:** गोमांस समाज में एक समुदाय के लिए निषिद्ध हो सकता है लेकिन अगर यह किसी की संस्कृति का हिस्सा है तो यह हमारे दृष्टिकोण और सोच को व्यापक बनाने में मदद करता है।
सामाजिक स्तर	• शांति को बढ़ावा देता है। • **उदाहरण:** पूर्व पूर्वी पाकिस्तान में उर्दू लागू करने के कारण पाकिस्तान का विभाजन हुआ, जबकि भाषाई सहिष्णुता ने भारत में एकता को मजबूत किया है।
शासन स्तर	• वैधता बढ़ाता है और विभिन्न मुद्दों पर समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। • **उदाहरण:** जनजातीय पंचशील उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में लोकतंत्र को बढ़ावा देने में काफी हद तक मददगार रहा है।
अंतर्राष्ट्रीय स्तर	• शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देता है. • **उदाहरण:** इजराइल और अरब देशों के बीच सहिष्णुता की कमी के कारण इस क्षेत्र में अक्सर संघर्ष होते रहते हैं।

सहिष्णुता और स्वीकृति के बीच अंतर

Prohibition → Tolerance → Acceptance

सहनशीलता	स्वीकृति
विविध दृष्टिकोणों के प्रति खुले विचारों वाला होना	विविध दृष्टिकोणों को पूरी तरह से अपनाना
दूसरों को अलग-अलग आस्था की अनुमति देना	विभिन्न आस्थाओं को अपनाना और उन्हें मनाना
मतभेदों के बावजूद शांतिपूर्वक सह-अस्तित्व में रहना	मतभेदों को पूरी तरह से स्वीकार करना और एकीकृत करना
असुविधा या असहमति हो सकती है	बिना निर्णय या असुविधा के स्वीकार करना
परस्पर सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है	समावेशिता और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है

दायित्व की भावना पर आधारित होता है	वास्तविक समझ और प्रशंसा पर आधारित
व्यक्तिगत पूर्वाग्रह हो सकते हैं	दूसरों को बिना किसी पक्षपात के वैसे ही स्वीकार करना जैसे वे हैं
वास्तव में स्वीकार किए बिना सहन कर सकते हैं	बिना किसी शर्त या आपत्ति के स्वीकार करना
उदाहरण:मैं आपकी मान्यताओं के साथ रह सकता हूं भले ही मैं उनसे सहमत नहीं हूं।	उदाहरण : मैं आपकी मान्यताओं को आपका एक अभिन्न अंग मानकर स्वीकार करता हूं और उसका सम्मान करता हूं।

3.5.5 सहानुभूति और करुणा

उद्धरण

''करुणा कोई धार्मिक व्यवहार नहीं है, यह मानव व्यवहार है, यह विलासिता नहीं है, यह हमारी अपनी शांति और मानसिक स्थिरता के लिए आवश्यक है, यह मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है।'' **–दलाई लामा**

''सहानुभूति सबसे बड़ा गुण है। इससे सभी गुण प्रवाहित होते हैं। इसके बिना, सभी गुण एक कार्य हैं।'' **–एरिक जोर्न**

समानुभूति

- समानुभूति से तात्पर्य दूसरे के स्थान पर स्वयं की कल्पना करने और दूसरों की भावनाओं, इच्छाओं, विचारों और कार्यों को समझने की क्षमता से है या यह किसी अन्य व्यक्ति की भावनात्मक स्थिति और विचारों को समझने, अनुभव करने और प्रतिक्रिया करने का एक कार्य है।
  - इसमें स्वयं को किसी और के स्थान पर रखना, कल्पना करना कि वे कैसा महसूस कर रहे होंगे, और वास्तव में उनकी भावनाओं से जुड़ना शामिल है।
  - समानुभूति हमें दूसरों से जुड़ने, करुणा दिखाने और जरूरत पड़ने पर समर्थन या सहायता प्रदान करने की अनुमति देती है।
  - यह सहानुभूति से परे है, क्योंकि इसमें वास्तव में दूसरों की भावनाओं को समझना और उनके साथ तालमेल बिठाना शामिल है।

परिदृश्य उदाहरण

मान लीजिए कि सार्वजनिक परिवहन की देखरेख के लिए जिम्मेदार एक सरकारी अधिकारी है। एक दिन, उन्हें **एक दृष्टिबाधित व्यक्ति से शिकायत मिलती है**, जो **अपर्याप्त पहुंच साधनों के कारण बस प्रणाली का उपयोग करने में कठिनाइयों का सामना कर रहा है।** शिकायत को खारिज करने या सामान्य प्रतिक्रिया देने के बजाय, अधिकारी खुद को दृष्टिबाधित व्यक्ति की जगह पर रखकर सोचता है।

वह व्यक्ति की चुनौतियों को गहराई से समझने और उनके प्रत्यक्ष अनुभवों को सुनने के लिए उनके साथ एक बैठक की व्यवस्था करते हैं। अधिकारी विशेषज्ञों से भी परामर्श करता है और संभावित समाधानों की पहचान करने के लिए शोध करता है। परिणामस्वरूप, वह दृष्टिबाधित यात्रियों की सहायता के लिए ऑडियो घोषणाओं, स्पर्श संकेत और प्रशिक्षित कर्मचारियों को तैनात करने का प्रस्ताव करते हैं।

अपनी समानुभूति और समझ के माध्यम से, अधिकारी समस्या के समाधान और सार्वजनिक परिवहन प्रणाली की पहुंच में सुधार के लिए सक्रिय कदम उठाता है। इससे न केवल दृष्टिबाधित व्यक्तियों को लाभ होता है, बल्कि सभी यात्रियों के लिए अधिक समावेशी और सहभागी वातावरण भी बनता है।

- **समानुभूति के तीन तरीके:**
  - **भावात्मक समानुभूति:** दूसरों की भावनाओं को साझा करने की क्षमता।
  - **संज्ञानात्मक समानुभूति:** दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता।
  - **भावनात्मक समानुभूति:** किसी की भावनाओं को विनियमित करने की क्षमता।
- **सिविल सेवाओं में समानुभूति का महत्व:**
  - समानुभूति की कमी से दूसरों के विचारों की समझ संकीर्ण हो जाती है।
    - **उदाहरण** : लैंगिक समस्याओं से संबंधित मुद्दे, ट्रांसजेंडरों को होने वाले भेदभाव आदि जो सामाजिक अशांति का कारण बन सकते हैं।
  - समानुभूति जमीनी सच्चाई को समझने में मदद करती है जो नीति निर्माण और कार्यान्वयन में दिखाई देगी।
    - **उदाहरण** : जनजातियों में कुछ पारम्परिक मूल्य होते हैं जो सरकार के नियमों के विपरीत होते हैं। यहां लोक सेवकों में समानुभूति आदिवासी आबादी के लिए एक सहायक के रूप में कार्य करेगी।
  - नौकरशाही की प्रभावशीलता में वृद्धि क्योंकि वे नियम का पालन नही, बल्कि नियमों के पीछे की भावना, यानी लोगों के कल्याण का पालन करेंगे।

- समानुभूति हमें दूसरों की भावनाओं को समझने में मदद करती है और इस प्रकार हमारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सुधार करती है।

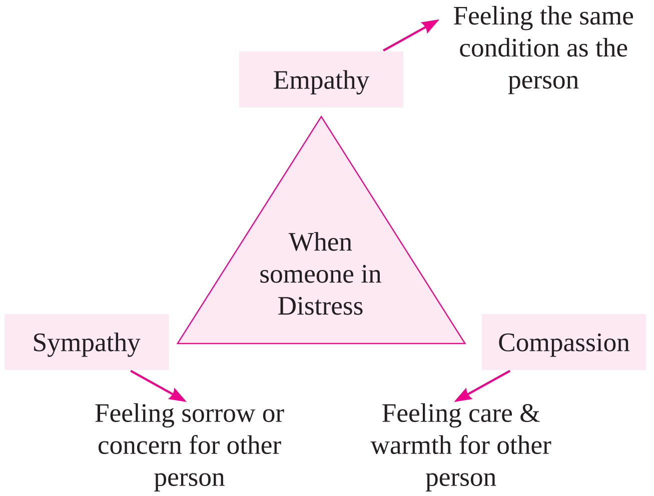

करुणा (समानुभूति + कार्रवाई)

- करुणा दूसरों की पीड़ा के प्रति समझ या समानुभूति है। साधारण समानुभूति से अधिक, करुणा आमतौर पर **'दूसरों की पीड़ा को कम करने की सक्रिय इच्छा'** को जन्म देती है।
    - इसमें दूसरों की पीड़ा को कम करने और दया, समझ और समर्थन दिखाने की वास्तविक इच्छा शामिल है।
    - करुणा दूसरों की भावनाओं और जरूरतों के प्रति संवेदनशील होने और किसी भी संभव तरीके से उनकी मदद करने के लिए कार्रवाई करने को तैयार रहने के बारे में है।
    - यह एक हार्दिक प्रतिक्रिया है जो सभी व्यक्तियों की साझा मानवता और परस्पर जुड़ाव की पहचान करती है, जो हमें जरूरत के समय दूसरों के प्रति परवाह और समानुभूति दिखाने के लिए प्रेरित करती है।

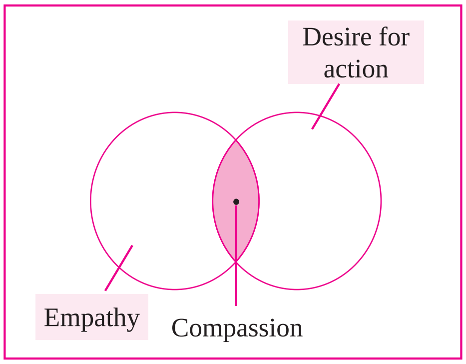

परिदृश्य उदाहरण

डॉ. प्रकाश आमटे और उनकी पत्नी डॉ. मंदाकिनी आमटे की कहानी है, जिन्होंने भारत के महाराष्ट्र के सुदूर जंगलों में आदिवासी समुदायों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। दोनों डॉक्टरों ने माडिया -गोंड आदिवासी लोगों के बीच रहने और उन्हें स्वास्थ्य देखभाल और सहायता प्रदान करने के लिए आरामदायक शहरी जीवन छोड़ दिया।

डॉ. प्रकाश और डॉ. मन्दाकिनी बिना किसी चिकित्सा सुविधा वाले सुदूर गांव हेमलकसा में एक अस्पताल स्थापित किया। उन्होंने आदिवासी लोगों को मुफ्त चिकित्सा सुविधा प्रदान की, विभिन्न बीमारियों, चोटों और विकलांगताओं का उपचार किया। उन्होंने आस-पास के गांवों में नियमित स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किए, उन लोगों तक भी पहुंचे जो अस्पताल नहीं जा सकते थे।

हालाँकि, उनकी करुणा स्वास्थ्य देखभाल से कहीं आगे तक थी। उन्होंने महसूस किया कि आदिवासी समुदाय गरीबी, अशिक्षा और बुनियादी सुविधाओं की कमी से जूझ रहे थे। अपनी चिकित्सा सेवाओं के अलावा, डॉ. प्रकाश और डॉ. मंदाकिनी ने आदिवासी लोगों के उत्थान के लिए विभिन्न विकासात्मक परियोजनाएं शुरू कीं। उन्होंने विकलांग व्यक्तियों के लिए स्कूल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र और पुनर्वास कार्यक्रम स्थापित किए।

जनजातीय समुदायों के कल्याण के प्रति उनकी करुणा और समर्पण ने उन्हें अत्यधिक सम्मान और प्रशंसा दिलाई। उनके निस्वार्थ कार्य ने न केवल स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा प्रदान की बल्कि आदिवासी संस्कृति को संरक्षित करने और समुदाय को सशक्त बनाने में भी मदद की।

- **उदाहरण:**
    - भरत वाटवानी को भारत में मानसिक रूप से बीमार लोगों को बचाने और पुनर्वास के लिए 2018 में रेमन मैग्सेसे पुरस्कार मिला।
    - आईपीएस अधिकारी महेश मुरलीधर भागवत को मानव तस्करी से निपटने के उनके अथक प्रयासों के लिए ट्रैफिकिंग इन पर्सन्स (टीआईपी) रिपोर्ट हीरोज अवार्ड 2017 से सम्मानित किया गया।
    - आईएएस अधिकारी स्वारोचिष सोमवंशी ने कुपोषित बच्चों को चिलचिलाती गर्मी से बचाने के लिए पोषण पुनर्वास केंद्रों में एयर कंडीशनर लगाकर उनकी भलाई को प्राथमिकता दी।

उद्धरण

"करुणा धर्म नामक वृक्ष के मूल में है।" **–भागवद गीता**

- **सिविल सेवकों के लिए करुणा का महत्व:**
  - सिविल सेवक परिवर्तन के कारक होते हैं और करुणा उन्हें लोगों की मदद करने और लोगों का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए प्रेरित करती है।
  - करुणा एक सिविल सेवक के दृष्टिकोण में उदारता, दयालुता और समझ जैसे अन्य सकारात्मक गुणों के साथ सुधार करती है।
  - यह जन-केंद्रित, मानवीय, मिलनसार प्रशासन के माध्यम से कुशल सेवा वितरण में योगदान देती है।
  - यह सिविल सेवकों को नागरिकों, विशेषकर संकटग्रस्त लोगों की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी बनाता है।
  - करुणा निस्वार्थता और बिना किसी स्वार्थ के देश, समाज और उसके लोगों के लिए सेवा की भावना भी पैदा करती है, जो सिविल सेवकों को प्रेरित रखती है।

विद्वेष, उदासीनता, सहानुभूति,समानुभूति और करुणा के बीच अंतर

Feeling → Sympathy → Empathy → Compassion → Action

विद्वेष	• लक्ष्य समूह के लिए नकारात्मक भावनाएँ (लेकिन घृणा नहीं)। • लक्ष्य समूह को कष्ट और असुविधा पहुँचाने का प्रयास।	• **उदाहरण:** यदि कोई भूखा व्यक्ति भोजन के लिए आपके पास आता है, तो आप मदद करने के बजाय उसे डांटते हैं।
उदासीनता	• आसक्ति का अभाव। • सामान्य रूप से उपेक्षा का व्यवहार, और दूसरों की जरूरतों के संबंध में अरुचि।	• **उदाहरण:** यदि कोई भूखा व्यक्ति भोजन के लिए आपके पास आता है, तो आप उसके प्रति उदासीन रहते हैं।
सहानुभूति	• दूसरों के संकट की स्वीकृति	• **उदाहरण:** यदि कोई भूखा व्यक्ति भोजन के लिए आपके पास आता है, तो आप उसे कोल्ड ड्रिंक, फ्रूटी इत्यादि प्रदान करते हैं, जबकि उस व्यक्ति को दाल -रोटी की आवश्यकता है।
समानुभूति	• उपलब्ध कराई जाने वाली सहायता संकटग्रस्त व्यक्ति/समूह की जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुसार होती है लेकिन सहायता के प्रति रुझान कुछ हद तक कम सक्रिय होता है।	• **उदाहरण :** यदि कोई भूखा व्यक्ति भोजन के लिए आपके पास आता है, तो आप उसे वह प्रदान करते हैं जिसकी उसे आवश्यकता है अर्थात दाल रोटी।
करुणा	• व्यक्ति से अलग लगाव। • समानुभूति + संकटग्रस्त लोगों की पीड़ा को कम करने की सक्रिय इच्छा।	• **उदाहरण :** यदि कोई भूखा व्यक्ति भोजन के लिए आपके पास आता है, तो आप उसे दाल-रोटी प्रदान करते हैं, लेकिन यह भी सुनिश्चित करते हैं कि उसे नियमित भोजन मिले और उसे इस तरह भीख न मांगनी पड़े।

3.5.6 अन्य महत्वपूर्ण मूल्य

अनुशासन	• अनुशासन, नियमों, दिशानिर्देशों और दिनचर्या का सुसंगत और व्यवस्थित तरीके से पालन करने की क्षमता को संदर्भित करता है। • इसमें आत्म-नियंत्रण, आज्ञाकारिता और स्थापित मानदंडों या अपेक्षाओं का पालन शामिल है। • बाधाओं या चुनौतियों का सामना करने पर भी कार्यों या व्यवहारों के प्रति प्रतिबद्ध दृढ़ संकल्प रहना। • वांछित लक्ष्यों और परिणामों को प्राप्त करने के लिए दैनिक जीवन, कार्य या किसी भी प्रयास में एक संरचित और संगठित दृष्टिकोण बनाए रखना।
दृढ़ता	• इसका अर्थ है किसी ऐसे कार्य हेतु निरंतर प्रयास और दृढ़ संकल्प जिसमें किसी को सफलता प्राप्त करने में कठिनाइयों या देरी का सामना करना पड़ रहा हो। • समाज में व्यवहारिक परिवर्तन (खुले में शौच, टीकाकरण के प्रति झिझक को दूर करना) लाने के प्रयासों में समय लगता है और दृढ़ता की आवश्यकता होती है।

विवेक	• इसका तात्पर्य तर्क के उपयोग से स्वयं पर नियंत्रण और अनुशासन रखने की क्षमता से है। बुद्धि, अंतर्दृष्टि और ज्ञान अक्सर विवेक से जुड़े होते हैं।
गोपनीयता	• इसका तात्पर्य सार्वजनिक दृष्टिकोण से व्यापक जनहित के लिए कुछ सूचनाओं और मामलों की गोपनीयता बनाए रखना है। • **उदाहरण:** सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 और आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम की धारा 8 व्यापक सार्वजनिक हित में गोपनीयता प्रदान करती है।
पारदर्शिता	• इसका तात्पर्य पारदर्शी निर्णय लेने के साथ-साथ सूचना साझा करने से है। दूसरे अर्थ में, इसमें कल्पनाशीलता और त्वरित पहुंच की प्रवृत्ति जैसी विशेषताएं शामिल हैं। • **पारदर्शिता पर नोलन रिपोर्ट:** सार्वजनिक पद धारकों को अपने सभी निर्णयों और कार्यों के बारे में जितना संभव हो उतना पारदर्शी होना चाहिए। उन्हें अपने निर्णयों के लिए कारण बताना चाहिए और जानकारी को केवल तभी छुपाना चाहिए जब व्यापक जनहित स्पष्ट रूप से इसकी मांग करे।
निस्वार्थता	• निस्वार्थता का अर्थ है जनहित की सेवा करना और उसे अपने स्वार्थ से ऊपर रखना। • **निःस्वार्थता पर नोलन रिपोर्ट:** लोक पद धारकों को केवल जनहित के संदर्भ में कार्य करना चाहिए। उन्हें अपने, अपने परिवार या अपने दोस्तों के लिए वित्तीय या अन्य लाभ प्राप्त करने के लिए ऐसा नहीं करना चाहिए। • **उदाहरण:** मदर टेरेसा ने स्वयं को पीड़ित और प्रताड़ित मानवता की निःस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित कर दिया।।

निष्कर्ष

सिविल सेवाओं के लिए मूलभूत मूल्य नीतिपरक आचरण और प्रभावशीलता को आकार देने में महत्वपूर्ण होते हैं। सत्यनिष्ठा ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करती है। निष्पक्षता उचित और न्यायसंगत व्यवहार को बढ़ावा देती है। तटस्थता पक्षपात से बचाती है। वस्तुनिष्ठता तर्कसंगत निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। सहिष्णुता समावेशिता और सम्मान को बढ़ावा देती है। समानुभूति और करुणा सिविल सेवकों को उत्तरदायी शासन के लिए लोगों की जरूरतों से जोड़ती है। साथ मिलकर, ये मूल्य सुशासन को कायम रखते हैं और समाज में सुधार लाते हैं।

परिभाषा और उदाहरणों का सारांश

सत्यनिष्ठा	**परिभाषा:** सत्यनिष्ठा का अर्थ है हर समय इच्छुक पक्षों के बीच समान स्थितियों में समान मानकों या नैतिक सिद्धांतों को अपनाना।
	उदाहरण : वरिष्ठ आईएएस अधिकारी, अशोक खेमका ने अपने विचारों, कार्यों में निरंतरता के साथ पेशेवर सत्यनिष्ठा दिखाई है और आचरण का सही तरीका चुना है।
नैतिक सत्यनिष्ठा	**परिभाषा :** यह नैतिकता या सही और गलत के मानकों के अनुप्रयोग में स्थिरता और ईमानदारी को संदर्भित करता है; इसका उपयोग दूसरों के साथ-साथ स्वयं को आंकने के लिए भी किया जाता है।
	उदाहरण : बुद्ध ने 'विचारों, शब्दों और कर्मों' की शुद्धता पर जोर दिया और इस नैतिक सिद्धांत के प्रति बिना शर्त प्रतिबद्धता दिखाई।
संस्थागत सत्यनिष्ठा	**परिभाषा :** किसी संगठन या संस्था के भीतर नैतिक मानकों, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का पालन।
	उदाहरण : हितों के टकराव से बचने और न्याय के सिद्धांतों के अनुरूप एक स्वतंत्र आचार समिति की स्थापना करना।
पेशेवर सत्यनिष्ठा	**परिभाषा :** इसका तात्पर्य आलोचना या प्रलोभन के बावजूद भी पेशेवर मूल्यों, मानकों और मानदंडों के अनुसार निरंतरता और इच्छा के साथ कार्य करना है।
	उदाहरण : संजीव चतुर्वेदी ने एम्स, दिल्ली के मुख्य सतर्कता अधिकारी के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान पेशेवर सत्यनिष्ठा दिखाई और कई बड़े घोटालों को उजागर किया।
ईमानदारी	**परिभाषा :** इसका सीधा-सा अर्थ है कि विचारों और कार्यों में वैसा ही प्रदर्शन करना जैसे वे वास्तव में हैं।
	सत्य को कायम रखना।
	तथ्यों से छेड़छाड़ न करना।

	निष्पक्ष, तर्कसंगत और सराहनीय निर्णय करना
	उदाहरण : रिश्वत न लेना एक अपेक्षित व्यवहार है। यदि वास्तव में कोई इसे कभी नहीं लेता तो यह ईमानदारी है। लोग काम में ईमानदारी के लिए उनका सम्मान करते हैं।
निष्पक्षता	**परिभाषा :** निष्पक्षता से तात्पर्य एक व्यक्ति या समूह का दूसरे से अधिक समर्थन न करने से है। इसका मानना है कि निर्णय पूर्वाग्रह, पूर्वापेक्षा या अनुपयुक्त कारणों से एक व्यक्ति या दूसरे व्यक्ति को लाभ पहुंचाने के बजाय वस्तुनिष्ठ मानकों पर आधारित होने चाहिए। **उदाहरण :** कोई न्यायाधीश किसी व्यक्ति को केवल किसी समुदाय विशेष से होने या सोशल मीडिया रिपोर्टों के आधार पर दोषी नहीं मान सकता और उसे कानून की उचित प्रक्रिया का पालन करना पड़ता है।
गैर पक्षपात	**परिभाषा :** गैर-पक्षपात से यह निष्कर्ष निकलता है कि अधिकारी को अपना कार्य बिना किसी डर या किसी राजनीतिक दल के पक्षपात के करना है। प्रशासक के मूल्य संविधान से निर्देशित होंगे, किसी राजनीतिक दल के दर्शन से नहीं। **उदाहरण :** सुनील अरोड़ा को मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में उनकी गैर-पक्षपातपूर्ण भूमिका के लिए याद किया जाता है।
तटस्थता	**परिभाषा :** तटस्थता राजनीतिक तटस्थता के विशिष्ट संदर्भ में है, अर्थात सिविल सेवकों और राजनीतिक कार्यपालिका के बीच संबंध। तटस्थता का तात्पर्य राजनीतिक कार्यपालिका को तथ्य, फीडबैक, राय आदि प्रदान करने में पक्षपाती न होना और राजनीतिक कार्यपालिका द्वारा आदेशित कार्यों को श्रमपूर्वक पूरा करना है, चाहे कोई भी राजनीतिक दल सत्ता में हो। **उदाहरण :** हाल के दिनों में, राज्यपाल (जैसे महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल), राज्य विधान सभाओं में अध्यक्ष जैसे विभिन्न संवैधानिक पदों की तटस्थता 'राजनीतिक तटस्थता के सिद्धांत' के आधार पर सर्वोच्च न्यायालय की जांच के दायरे में आ गई है।
वस्तुनिष्ठता	**परिभाषा :** वस्तुनिष्ठता के सिद्धांत का तात्पर्य है कि निर्णय और कार्य अवलोकन योग्य घटनाओं पर आधारित होने चाहिए और भावनाओं, पूर्वाग्रहों या व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से प्रभावित नहीं होने चाहिए। **उदाहरण :** भारत के औषधि महानियंत्रक ने जनता के दबाव के बावजूद कोविड-19 वैक्सीन के अनुमोदन के लिए पर्याप्त आंकड़े सुनिश्चित किए।
अमानता	**परिभाषा :** इसका मतलब है कि सिविल सेवक पर्दे के पीछे से काम करते हैं और मीडिया की सुर्खियों और जनता की नजरों से दूर रहते हैं। सिविल सेवकों को न तो सफलता का श्रेय दिया जाता है और न ही विफलता के लिए दोषी ठहराया जाता है। यह राजनीतिक कार्यपालिका की जिम्मेदारी है. **उदाहरण :** मुंदड़ा डील घोटाले (1957) में, छागला आयोग ने माना कि "मंत्री टीटी कृष्णमाचारी अपने सचिव (एच.एम.पटेल) के कार्यों के लिए संवैधानिक रूप से जिम्मेदार हैं और वह उनके पीछे छिप नहीं सकते या तर्कसंगतता के आधार पर इससे इनकार नहीं कर सकते।" नतीजतन, मंत्री ने इस्तीफा दे दिया।
जनसेवा के प्रति समर्पण	समर्पण किसी निश्चित कार्य के प्रति प्रतिबद्ध होने का गुण है। प्रतिबद्धता औपचारिक दायित्व है लेकिन समर्पण कर्तव्य और मूल्यों की भावना से निर्देशित होता है। इसलिए, समर्पण को "दृढ़ता के साथ प्रतिबद्धता की गुणवत्ता" के रूप में परिभाषित किया गया है।
दृढ़ता	**परिभाषा :** इसका अर्थ है किसी ऐसे कार्य हेतु निरंतर प्रयास और दृढ़ संकल्प जिसमें किसी को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा हो या सफलता प्राप्त करने में देरी हो रही हो। **उदाहरण :** समाज में व्यवहारिक परिवर्तन (खुले में शौच, टीकाकरण के प्रति झिझक को दूर करना) लाने के प्रयासों में समय लगता है और दृढ़ता की आवश्यकता होती है।
साहस	**परिभाषा :** साहस पीड़ा, दर्द, खतरे, अनिश्चितता, या धमकी का धैर्य और नैतिक दृढ़ विश्वास के साथ सामना करने का विकल्प और इच्छा है जो आवश्यक और नैतिक रूप से सही कार्रवाई को रेखांकित करता है। साहस सिर्फ शारीरिक बहादुरी नहीं है।

	उदाहरण : ओडिशा की मानसी बरिहा के साहस ने कोविड-19 के कारण हुए लॉकडाउन के दौरान तमिलनाडु के 30 भट्टों से 6000 प्रवासी श्रमिकों को बचाने में मदद की।
उत्तरदायित्व	**परिभाषा :** उत्तरदायित्व का तात्पर्य हर दिन आने वाले नए अवसरों और चुनौतियों और जनता की उभरती जरूरतों के प्रति चौकस रहने और प्रतिक्रिया देने से है।
	उदाहरण : स्टीव जॉब्स अपनी ईमेल आईडी अपने कर्मचारियों के साथ साझा करते थे और उनकी शिकायतों के लिए उपलब्ध रहते थे।
विवेक	**परिभाषा :** इसका तात्पर्य तर्क के उपयोग से स्वयं को नियंत्रित और अनुशासित करने की क्षमता से है। बुद्धि, अंतर्दृष्टि और ज्ञान अक्सर विवेक से जुड़े होते हैं।
	उदाहरण : सिविल सेवा में सार्वजनिक क्षेत्र में निर्णय लेना शामिल है। सिविल सेवकों को व्यावहारिक मामलों का व्यक्ति माना जाता है। वे लोगों के साथ काफी नियमित संपर्क में रहते हैं। सिविल सेवकों को गुमनाम और विवेकपूर्वक ढंग से मामलों से निपटना पड़ता है।
गोपनीयता	**परिभाषा :** इसका तात्पर्य व्यापक जनहित के लिए सार्वजनिक दृष्टिकोण से कुछ जानकारी, मामलों की गोपनीयता बनाए रखने से है।
	उदाहरण : सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 और आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम की धारा 8 व्यापक जनहित में गोपनीयता प्रदान करती है।
खुलापन	**परिभाषा :** इसका तात्पर्य पारदर्शी निर्णय लेने के साथ-साथ सूचना साझा करने से है। दूसरे अर्थ में, इसमें कल्पनाशीलता और त्वरित पहुंच की प्रवृत्ति जैसी विशेषताएं शामिल हैं।
	उदाहरण : आरटीआई सूचना तक पहुंच प्रदान करता है, जो गरीबों और समाज के कमजोर वर्गों को सार्वजनिक नीतियों और कार्यों के बारे में जानकारी मांगने और प्राप्त करने का अधिकार देता है, जिससे उनका कल्याण होता है।
निस्वार्थता	**परिभाषा :** निःस्वार्थता का अर्थ है जनहित में कार्य करना और उसे अपने स्वार्थ से ऊपर रखना है।
	उदाहरण : मदर टेरेसा ने स्वयं को पीड़ित एवं प्रताड़ित मानवता की निस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. बौद्धिक क्षमता और नैतिक गुणों के अलावा, समानुभूति और करुणा कुछ अन्य महत्वपूर्ण गुण हैं जो सिविल सेवकों को महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटने या महत्वपूर्ण निर्णय लेने में अधिक सक्षम होने की सुविधा प्रदान करते हैं। उपयुक्त उदाहरण सहित समझाइये। (150 शब्द) (2022)

2. सभी सिविल सेवकों को उपलब्ध कराए गए नियम और विनियम समान हैं, फिर भी कार्यनिष्पादन में अंतर होता है। सकारात्मक सोच वाले अधिकारी मामले के पक्ष में नियमों और विनियमों की व्याख्या करने और सफलता प्राप्त करने में सक्षम होते हैं, जबकि नकारात्मक सोच वाले अधिकारी मामले के विरुद्ध उन्हीं नियमों और विनियमों की व्याख्या करके लक्ष्य हासिल करने में असमर्थ होते हैं। उदाहरण सहित चर्चा कीजिए। (150 शब्द) (2022)

3. "सत्यनिष्ठा एक ऐसा मूल्य है जो मनुष्य को सशक्त बनाता है।" उपयुक्त उदाहरण सहित पुष्टि कीजिए। (150 शब्द) (2021)

4. क्या एक सफल सिविल सेवक बनने के लिए निष्पक्षता और गैर-पक्षपातपूर्णता को अपरिहार्य गुण माना जाना चाहिए? उदाहरण सहित चर्चा कीजिए। (150 शब्द) (2021)

5. एक प्रभावी लोक सेवक बनने के लिए आवश्यक दस अनिवार्य मूल्यों की पहचान कीजिए। लोक सेवकों में अनैतिक आचरण को रोकने के तरीकों एवं उपायों का वर्णन कीजिए। (150 शब्द) 2021

6. पाँच नैतिक गुणों की पहचान कीजिए जिनके आधार पर कोई एक सिविल सेवक के कार्यनिष्पादन की रूपरेखा तैयार कर सकता है। सूची में उनके शामिल किए जाने का औचित्य सिद्ध कीजिए। (150 शब्द) (2021)

7. 'लोक सेवक' शब्द से आप क्या समझते हैं? एक लोक सेवक की अपेक्षित भूमिका पर विचार कीजिए।(150 शब्द) (2019)

8. "नौकरी पर लोगों को रखते समय, आप तीन गुणों की तलाश करते हैं: सत्यनिष्ठा, बुद्धिमत्ता और ऊर्जा और यदि उनके पास पहला गुण नहीं है, तो बाकी दो आपको समाप्त कर देंगे।" - वारेन बफेट। वर्तमान परिदृश्य में इस कथन से आप क्या समझते हैं? व्याख्या कीजिए। (150 शब्द) (2018)

9. जनहित से क्या तात्पर्य है? लोकहित में सिविल सेवकों द्वारा अपनाए जाने वाले सिद्धांत और प्रक्रियाएँ क्या हैं? (150 शब्द) (2018)

10. सिविल सेवाओं के संदर्भ में सार्वभौमिक प्रकृति के तीन बुनियादी मूल्यों को बताइए और उनके महत्व पर प्रकाश डालिए। (150 शब्द) (2018)

11. सिविल सेवा के संदर्भ में निम्नलिखित की प्रासंगिकता की जाँच कीजिए: (ए) पारदर्शिता (बी) उत्तरदायित्व (सी) निष्पक्षता और न्याय (डी) दृढ़ विश्वास का साहस (ई) सेवा की भावना। (2017)

12. सत्यनिष्ठा के परीक्षणों में से एक है समझौता करने से पूर्ण इनकार। वास्तविक जीवन के उदाहरण के साथ व्याख्या कीजिए। (2017)

13. सार्वजनिक क्षेत्र में हितों का टकराव तब उत्पन्न होता है जब (ए) आधिकारिक कर्तव्य, (बी) सार्वजनिक हित, और (सी) व्यक्तिगत हित एक दूसरे के ऊपर प्राथमिकता ले रहे हों। प्रशासन में इस टकराव को कैसे हल किया जा सकता है? उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। (2016)

14. निष्पक्षता और गैर-पक्षपात को लोक सेवाओं में मूलभूत मूल्य क्यों माना जाना चाहिए, विशेषकर वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में? अपने उत्तर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (2015)

15. लोक सेवकों को 'हितों के टकराव' का सामना करने की संभावना है। 'हितों के टकराव' शब्द से आप क्या समझते हैं और यह लोक सेवकों के निर्णय लेने को कैसे प्रभावित होता है? यदि हितों के टकराव की स्थिति का सामना करना पड़े, तो आप इसे कैसे हल करेंगे? उदाहरणों की सहायता से समझाइये। (2015)

16. सार्वजनिक सेवा में विश्वसनीयता और धैर्य के गुण कैसे प्रकट होते हैं? उदाहरण सहित समझाइये। 2015

17. केवल कानून का अनुपालन ही पर्याप्त नहीं है, कर्तव्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए लोक सेवक में नैतिक मुद्दों के प्रति सुविकसित संवेदनशीलता भी होनी चाहिए। क्या आप सहमत हैं? दो उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए, जहां (i) कोई कार्य नैतिक रूप से सही है, लेकिन कानूनी रूप से नहीं और (ii) कोई कार्य कानूनी रूप से सही है, लेकिन नैतिक रूप से नहीं। (2015)

18. लोक सेवकों द्वारा अपने काम के प्रति प्रदर्शित दो अलग-अलग प्रकार के दृष्टिकोणों की पहचान की गई है: नौकरशाही रवैया और लोकतांत्रिक रवैया। ए) इन दोनों शब्दों के बीच अंतर कीजिए और उनके गुण और दोष लिखिए। बी) क्या हमारे देश के तेज विकास के लिए बेहतर प्रशासन बनाने के लिए दोनों को संतुलित करना संभव है? (2015)

19. लोक सेवा के संदर्भ में 'उत्तरदायित्व' का क्या अर्थ है? लोक सेवकों का व्यक्तिगत और सामूहिक उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं? (2014)

20. ज्ञान के बिना सत्यनिष्ठा निर्बल और अर्थहीन है, लेकिन सत्यनिष्ठा के बिना ज्ञान खतरनाक और भयानक है। इस कथन से आप क्या समझते हैं? आधुनिक सन्दर्भ से उदाहरण देकर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए। (2014)

21. लोक सेवकों पर भारी नैतिक जिम्मेदारी होती है क्योंकि वे सत्ता के पदों पर होते हैं, बड़ी मात्रा में सार्वजनिक धन को संभालते हैं, और उनके निर्णयों का समाज और पर्यावरण पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। ऐसी जिम्मेदारी संभालने के लिए अपनी नैतिक क्षमता में सुधार के लिए आपने क्या कदम उठाए हैं? (2014)

22. (a) लोक सेवा के संदर्भ में निम्न शब्दों से आप क्या समझते हैं? (250 शब्द 10 अंक)

    1. सत्यनिष्ठा
    2. अध्यवसाय
    3. सेवा-भाव
    4. प्रतिबद्धता
    5. साहसपूर्ण दृढ़ता

    (b) दो ऐसे अन्य गुण बताइए जिन्हें आप लोक सेवा के लिए महत्त्वपूर्ण समझते हैं। अपने उत्तर का औचित्य समझाइए। (100 शब्द 10 अंक)

केस स्टडी

1. सुनील एक युवा सिविल सेवक हैं और अपनी योग्यता, सत्यनिष्ठा, समर्पण और कठिन एवं कष्टसाध्य कार्यों को करने के लिए निरंतर प्रयास करने के लिए जाने जाते हैं। उनके प्रोफाइल को ध्यान में रखते हुए, उनके उच्च अधिकारियों ने उन्हें एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण और संवेदनशील कार्य संभालने के लिए चुना। उन्हें अवैध रेत खनन के लिए कुख्यात आदिवासी बहुल जिले में तैनात किया गया। वहां पर नदी तल से रेत निकालना और ट्रकों के माध्यम से ढुलाई करना और उसे काले बाजार में बेचना बड़े पैमाने पर होता था। वहां पर अवैध रेत खनन माफिया स्थानीय पदाधिकारियों और आदिवासी बाहुबलियों के समर्थन से काम कर रहा था, जो बदले में चुनिंदा गरीब आदिवासियों को रिश्वत देते थे और आदिवासियों को डरा धमका कर रखते थे। एक तेज तर्रार और ऊर्जावान अधिकारी होने के नाते सुनील ने जमीनी हकीकत और माफिया द्वारा कुटिल और

संदिग्ध तंत्र के माध्यम से अपनाई जाने वाली कार्यप्रणाली को तुरंत समझ लिया। पूछताछ करने पर उन्हें पता चला कि उनके अपने कार्यालय के कुछ कर्मचारी उनके साथ मिले हुए हैं और उन्होंने एक करीबी अपवित्र सांठगांठ कर रखी है। सुनील ने उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई शुरू की और रेत से भरे ट्रकों के अवैध संचालन पर छापेमारी शुरू कर दी। माफिया बौखला गया क्योंकि पहले कई अधिकारियों ने माफिया के खिलाफ ऐसे कदम नहीं उठाए थे। कार्यालय के कुछ कर्मचारी, जो कथित तौर पर माफिया के करीबी थे, ने उसे सूचित किया कि अधिकारी उस जिले में माफिया के अवैध रेत खनन कार्यों को खत्म करने के लिए दृढ़ संकल्पित है और इससे उन्हें अपूरणीय क्षति हो सकती है। माफिया उनका दुश्मन हो गया और जवाबी हमला शुरू कर दिया। आदिवासी बाहुबलियों और माफियाओं ने उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देनी शुरू कर दी। उनके परिवार (पत्नी और बूढ़ी मां) का पीछा किया गया और उन पर आभासी निगरानी रखी गई और इस तरह उन सभी को मानसिक यातना, पीड़ा और तनाव का सामना करना पड़ा। मामले ने तब गंभीर रूप धारण कर लिया जब एक बाहुबली उनके कार्यालय में आया और उन्हें धमकी दी कि वे छापेमारी आदि बंद कर दें, अन्यथा उनका हश्र उनके कुछ पूर्ववर्तियों से अलग नहीं होगा (दस वर्ष पहले माफिया ने एक अधिकारी को मार डाला था)।

1. इस स्थिति से निपटने के लिए सुनील के पास उपलब्ध विभिन्न विकल्पों की पहचान कीजिए।
2. अपने द्वारा सूचीबद्ध प्रत्येक विकल्प का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
3. आपके अनुसार उपरोक्त में से किसे अपनाना सुनील के लिए सबसे उपयुक्त होगा और क्यों? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए) (2021)

दृष्टिकोण

- इसमें शामिल नीतिगत मुद्दों की पहचान कीजिए।
- हितधारकों की पहचान कीजिए।
- सुनील के लिए उपलब्ध विभिन्न विकल्पों की पहचान कीजिए।
- इसके गुण और दोषों के आधार पर विकल्प तलाशिए।
- सबसे उपयुक्त कार्रवाई बताइए।

2. आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति में, राजनीतिक कार्यपालिका और स्थायी कार्यपालिका की अवधारणा है। निर्वाचित जन प्रतिनिधि राजनीतिक कार्यपालिका बनाते हैं और नौकरशाही स्थायी कार्यपालिका बनाती है। मंत्री नीतिगत निर्णय लेते हैं और नौकरशाह उन्हें क्रियान्वित करते हैं। आजादी के बाद शुरुआती दशकों में, स्थायी कार्यपालिका और राजनीतिक कार्यपालिका के बीच संबंध एक-दूसरे के क्षेत्र का अतिक्रमण किए बिना, आपसी समझ, सम्मान और सहयोग पर आधारित थे। हालाँकि, बाद के दशकों में स्थिति बदल गई है। ऐसे उदाहरण हैं, जब राजनीतिक कार्यपालिका स्थायी कार्यपालिका पर अपने एजेंडे का पालन करने के लिए जोर देती है। ईमानदार नौकरशाहों के प्रति सम्मान में गिरावट आई है। राजनीतिक कार्यपालिका में स्थानांतरण, पोस्टिंग आदि जैसे नियमित प्रशासनिक मामलों में शामिल होने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इस परिदृश्य में, 'नौकरशाही के राजनीतिकरण' की एक निश्चित प्रवृत्ति है। सामाजिक जीवन में बढ़ते भौतिकवाद और अर्जनशीलता ने स्थायी कार्यपालिका और राजनीतिक कार्यपालिका दोनों के नैतिक मूल्यों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। इस 'नौकरशाही के राजनीतिकरण' के क्या परिणाम हैं ? चर्चा कीजिए। (250 शब्द) (2019)

दृष्टिकोण

1. इसमें शामिल नीतिगत मुद्दों की पहचान कीजिए।
2. राजनीतिकरण आदि जैसे शब्दों की व्याख्या कीजिए।
3. व्याख्या कीजिए कि सामाजिक जीवन में बढ़ते भौतिकवाद और अर्जनशीलता ने किस प्रकार स्थायी कार्यपालिका और राजनीतिक कार्यपालिका दोनों के नैतिक मूल्यों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।
4. 'नौकरशाही के राजनीतिकरण' के परिणाम बताइए।
5. इससे निपटने के उपाय बताइए।

❖ ❖ ❖

4 भावनात्मक बुद्धिमत्ता

"भावनात्मक बुद्धिमत्ता मानव ऊर्जा, सूचना, संबंध और प्रभाव के स्रोत के रूप में भावनाओं की शक्ति और कौशल को समझने और प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमता है।"
–रॉबर्ट के. कूपर

पाठ्यक्रम
भावनात्मक बुद्धिमत्ताः अवधारणा, उनकी उपयोगिता, प्रशासन और शासन में अनुप्रयोग।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) का तात्पर्य 'अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, उनका दोहन करने, उन्हें कार्यों में लागू करने और उन्हें विनियमित और प्रबंधित करने की क्षमता से है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता को आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल के रूप में परिभाषित किया गया है। इसे मानव कामकाज का एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है जो जीवन के कई पहलुओं, जैसे संबंध, कार्य और कल्याण को प्रभावित करता है।
- इसे सर्वप्रथम 1990 **में जॉन मेयर और पीटर सलोवी जैसे शोधकर्ताओं** ने प्रतिपादित किया था। मनोवैज्ञानिक डैनियल गोलेमैन ने इस शब्द को लोकप्रिय बनाया।
- गोलेमैन ने सुझाव दिया कि भविष्य में की सफलता के लिए भावानात्मक बुद्धिमत्ता संज्ञानात्मक बुद्धि से दोगुना महत्वपूर्ण है। 80% वयस्क उपलब्धि भावानात्मक बुद्धिमत्ता से प्राप्त होती है।

भावनाओं की अवधारणा और घटक

- भावनात्मक बुद्धिमत्ता को समझने के लिए भावनाओं के सभी पहलुओं को समझना जरूरी है।
- भावना, जिसे एहसास या मनोदशा के रूप में भी जाना जाता है, एक सहज मानसिक स्थिति है।
- यह अनुभूति और व्यवहार के साथ-साथ दृष्टिकोण के तत्वों में से एक है।
- भावनाओं को आमतौर पर मजबूत, सकारात्मक या नकारात्मक माना जाता है। ये भावनाएं किसी व्यक्ति या वस्तु पर निर्देशित होती हैं। चीजों के प्रति हमारा दृष्टिकोण भावनाओं से प्रभावित होता है, जो कभी-कभी संज्ञान पर हावी हो सकता है।
- **उदाहरण के लिए,**
  - **सकारात्मक भावनाएंः** खुशी, मुस्कुराहट, हंसी, आदि
  - **नकारात्मक भावनाएंः** क्रोध, ईर्ष्या, घृणा, आदि।

- **भावनाओं के तीन अलग-अलग घटक होते हैंः**
  - **व्यक्तिपरक अनुभवः** सामाजिक मनोवैज्ञानिक खुशी, दुख, भय और क्रोध जैसी सार्वभौमिक भावनाओं की पहचान करते हैं, लेकिन ये अनुभव व्यक्तिपरक होते हैं और बहुत भिन्न हो सकते हैं। विभिन्न स्थितियों में मिश्रित भावनाएं आम होती हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** गुस्सा, जो हल्की झुंझलाहट से लेकर अंधा कर देने वाले गुस्से तक हो सकता है।
  - **शारीरिक प्रतिक्रियाः** शारीरिक प्रतिक्रिया से तात्पर्य भावनाओं के प्रति शरीर की प्रतिक्रिया से है, जिसमें पसीना आने से लेकर दिल की तेज धड़कन तक शामिल है।
  - **उदाहरण के लिए,** गुस्से में उच्च रक्तचाप।
  - **व्यवहारिक प्रतिक्रियाः** व्यवहारिक प्रतिक्रिया भावनाओं की वास्तविक अभिव्यक्ति को संदर्भित करती है। यह आंतरिक प्रतिक्रियाओं का बाहरी संकेत है। उदाहरण के लिए, खुशी में हम हंसते हैं या मुस्कुराते हैं जबकि दुःख में हम सुस्त लगते हैं और रो भी सकते हैं। हालांकि, यह व्यक्तिपरक है।
  - **उदाहरण के लिए,** जब एक मां अपने नवजात शिशु को देखती है, तो वह नम आंखों से अपनी खुशी व्यक्त कर सकती है।

भारतीय दर्शन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता

- **योग और ध्यान:** पतंजलि के योग सूत्र के अनुसार, योग आत्म-जागरूकता और भावनात्मक विनियमन को बढ़ावा देने के लिए ध्यान और माइंडफुलनेस अभ्यास पर जोर देता है। इसका उद्देश्य अधिक भावनात्मक संतुलन और बुद्धिमत्ता तक पहुंचना है।
- **वेदांत और आत्म-परीक्षण:** अद्वैत वेदांत दर्शन, विशेष रूप से, स्वयं की प्रकृति और भावनाओं से इसके संबंध की जांच करता है। यह भावनात्मक लचीलेपन को बढ़ावा देता है और भावनाओं से अलग होने की भावना पैदा करने में मदद करता है।
- **भक्ति और करुणा:** यह अभ्यास सहानुभूति और सभी प्राणियों के अंतर्संबंध की समझ को प्रोत्साहित करके भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सुधार करता है।
  - **ज्ञान और आत्म-चिंतन:** ज्ञान या ज्ञान का मार्ग, स्वयं पर आत्मनिरीक्षण और प्रतिबिंब पर जोर देता है। यह लोगों को अपने विचारों और भावनाओं सहित वास्तविकता की प्रकृति पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
  - **उदाहरण के लिए:** भगवद गीता के अनुसार, व्यक्ति का मन नियंत्रित और स्थिर होता है। इस प्रकार वह अपनी इंद्रियों को नियंत्रण में रखता है और सर्वोच्च आत्म पर केंद्रित रखता है।
- **कर्म और नि:स्वार्थ व्यवहार:** कर्म की अवधारणा नि:स्वार्थ व्यवहार की आवश्यकता पर जोर देती है।

भावनाओं के प्रकार

- **प्राथमिक और द्वितीयक भावनाएं:**
  - **प्राथमिक भावनाएं:** सबसे पहले व्यक्त करने के लिए, प्राथमिक भावनाएं किसी स्थिति के प्रति विशिष्ट और प्रत्यक्ष भावनात्मक प्रतिक्रियाएं होती हैं।
  - **द्वितीयक भावनाएं:** ये प्राथमिक भावनाओं के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रियाएं हैं।
- **सकारात्मक एवं नकारात्मक भावनाएं:**
  - **सकारात्मक भावनाएं:** वे भावनाएं जो अनुभव करने में आनंददायक हों, सकारात्मक भावनाएं हैं। वे नई संभावनाओं के लिए खुली हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** प्यार, खुशी, प्रसन्नता आदि।
  - **नकारात्मक भावनाएं:** वे भावनाएं जिन्हें अनुभव करना हमें आनंददायक नहीं लगता, वे नकारात्मक भावनाएं हैं।

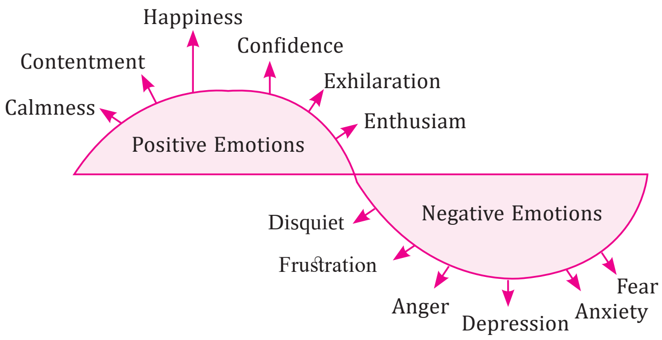

चित्र: सकारात्मक और नकारात्मक भावनाएं

- **उदाहरणार्थ दु:ख,** क्रोध, संकट आदि।

भावनाओं के कार्य

- **प्रेरणा और कार्रवाई:** भावनाएँ शक्तिशाली प्रेरक हैं जो नैतिक व्यवहार को संचालित करती हैं।
  - करुणा और सहानुभूति, उदाहरण के लिए, मेरे पड़ोस की एक महिला सड़क के कुत्तों के प्रति सकारात्मक भावनाओं से प्रेरित होकर दैनिक आधार पर स्थानीय कुत्तों को खाना खिलाती है।
  - नकारात्मक भावनाएं, जैसे अपराधबोध या शर्मिंदगी, अनैतिक व्यवहार को सही करने या भविष्य की कार्रवाई में संशोधन करने के लिए आंतरिक संकेतों के रूप में काम कर सकती हैं।
- **नैतिक जागरूकता और संवेदनशीलता:** भावनाएं नैतिक चिंताओं के बारे में हमारी जागरूकता को बढ़ाती हैं और विभिन्न स्थितियों में नैतिक आयामों को पहचानने में हमारी सहायता करती हैं।
- **नैतिक अंतर्ज्ञान:** भावनाएं नैतिक स्थितियों पर त्वरित और सहज प्रतिक्रिया प्रदान कर सकती हैं, जो हमारे प्रारंभिक नैतिक निर्णयों का मार्गदर्शन करती हैं। वे नैतिक सही या गलत होने की भावना प्रदान करते हैं जो हमारी तत्काल प्रतिक्रियाओं और नैतिक अंतर्ज्ञान को प्रभावित करते हैं, जटिल नैतिक दुविधाओं से निपटने में हमारी सहायता करते हैं।
- **नैतिक मूल्यांकन:** स्थितियों और कार्यों के नैतिक आयामों का आकलन करने में भावनाएं महत्वपूर्ण हैं। वे किसी घटना या व्यवहार के नैतिक महत्व का व्यक्तिपरक मूल्यांकन प्रदान करते हैं, नैतिक रूप से उचित या अनुचित क्या है, इसके बारे में हमारी धारणाओं का मार्गदर्शन करते हैं।
- **अंतर्वैयक्तिक कार्य:** भावनाएं हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं और निर्णय लेने में मदद करती हैं ताकि हम जीवित रह सकें और मनुष्य के रूप में कार्य कर सकें।
  - **उदाहरण:** खुशी रचनात्मक सोच को बढ़ावा देती है और नए विचारों को अनुमति देने के लिए हमारा ध्यान केंद्रित करती है।

- **सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य:** भावनाएं समाज और संस्कृतियों के निर्माण और रखरखाव में मदद करती हैं।
  - **उदाहरण:** विश्वास जैसी भावनाएं अक्सर एक सामाजिक गोंद के रूप में कार्य करती हैं जो समूहों को एक साथ रखती हैं। जैसे किसी सामान्य उद्देश्य के लिए गैर सरकारी संगठनों में काम करने वाले लोग।
- **निर्णय लेना:** भावनाएं तेजी से निर्णय लेने में सहायता करती हैं क्योंकि मजबूत नकारात्मक भावनाओं से जुड़े विकल्प पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं।
  - **उदाहरण:** किसी पारिवारिक मिलन समारोह में किसी रेस्तरां में खाना ऑर्डर करते समय मेरे परिवार का प्रत्येक सदस्य वह खाना ऑर्डर करता है जो उसे पसंद है।

Emotion Provoking event → Physiological response arousal → Cognitive appraisal to identify the cause of arousal → Subjective Experience Feeling → Behavioral response - how we show or react to our feeling

चित्र: भावना का तंत्र

भावना बनाम अनुभूति बनाम मनोदशा

	भावना	अनुभूति	मनोदशा
परिभाषा	उत्तेजनाओं या घटनाओं के प्रति प्रतिक्रियाएं जो तीव्र, संक्षिप्त और विशिष्ट होती हैं।	भावनाएं और विचार व्यक्तिपरक अनुभव लाती हैं।	लंबे समय तक चलने वाली और व्यापक भावनात्मक स्थितियां जो विशिष्ट घटनाओं के लिए कम विशिष्ट होती हैं।
अवधि	आमतौर पर, ये संक्षिप्त होते हैं, सेकंड से मिनट तक चलती हैं।	मिनटों से लेकर घंटों तक लंबे समय तक चल सकती है।	घंटों, दिनों या हफ्तों तक चल सकती है।
कारण	भावनात्मक प्रतिक्रियाएं विशिष्ट घटनाओं, स्थितियों या उत्तेजनाओं से उत्पन्न होती हैं।	व्यक्तिपरक अनुभव विचारों, विश्वासों या व्याख्याओं के कारण होते हैं।	आंतरिक कारक (जैसे, विचार, शारीरिक स्थिति) और बाहरी परिस्थितियां आम तौर पर प्रभावशाली होती हैं।
अभिव्यक्ति	शारीरिक उपस्थिति और अवलोकन योग्य व्यवहार (जैसे, चेहरे के भाव, शारीरिक भाषा) में परिवर्तन अक्सर देखे जाते हैं।	आंतरिक अनुभव और भावनाओं की व्यक्तिगत व्याख्याएँ हमेशा दिखाई नहीं देती हैं।	आम तौर पर बाहरी रूप से व्यक्त नहीं किया जाता है, लेकिन किसी के समग्र आचरण या स्वभाव पर प्रभाव पड़ सकता है।
उदाहरण	क्रोध, खुशी, भय, आश्चर्य, घृणा और उदासी।	खुशी, प्यार, अपराधबोध, शर्म, ईर्ष्या, गर्व।	सकारात्मक मनोदशा, नकारात्मक मनोदशा, शांति, चिड़चिड़ापन, उदासी।

भावना बनाम अनुभूति बनाम मनोदशा के बीच अंतर समझाने के लिए उदाहरण

अपने स्कूल के दिनों की कल्पना कीजिए जब आप छात्र थे। आप कक्षा में बैठे थे जब आपके शिक्षक ने अप्रत्याशित रूप से एक आश्चर्यजनक परीक्षा की घोषणा की। आइए देखें कि इस स्थिति में आपकी भावना, अनुभूति और मनोदशा कैसे प्रकट होती हैं:

Emotions
- Feeling of a sudden rush of anxiety and fear, accompanied by a racing heart and sweaty palms.

Feelings
- Feeling overwhelmed, worried about our preparedness for the test, and frustrated that we didn't have prior knowledge of it.

Mood
- If we receive positive feedback, our mood might become more positive and relieved.
- If we feel dissatisfied with our performance, our mood may turn more negative or disappointed.

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) के तत्व

डैनियल गोलेमैन के अनुसार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता के 5 तत्व हैं:

1. **आत्म-जागरूकता:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता में व्यक्ति अपनी भावनाओं के साथ सहज होते हैं और दूसरों पर उनके प्रभाव को समझते हैं। जिस तरह से आप महसूस करते हैं उसे समझना और स्वीकार करना अक्सर उस पर काबू पाने का पहला कदम होता है।
    - **उदाहरण:** एक कंपनी में एक प्रबंधक श्री खन्ना बहुत सुयोग्य व्यक्ति हैं लेकिन अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं। खन्ना जी को इस विशेषता के बारे में स्पष्ट रूप से पता नहीं है। वह अक्सर अपने व्यवहार के कारण दूसरों को नाराज करते हैं। वह अक्सर काम पूरा न होने, छुट्टी की मांग आदि पर अपने अधीनस्थों पर चिल्लाते नजर आते हैं। यदि उन्होंने अपने कनिष्ठों के काम को समय पर पूरा करने और नियमित काम करने का महत्व समझाने की कोशिश की होती, तो बेहतर परिणाम मिल सकते थे।
2. **स्व-नियमन:** गलतियों और रिश्तों को नुकसान से बचने के लिए आवेगों और भावनाओं पर नियंत्रण।
    - **उदाहरण:** गांधीजी का सत्याग्रह जिसमें गंभीर दमन के खिलाफ भी एक अहिंसक प्रदर्शनकारी बनना शामिल था, जो एक सत्याग्रही द्वारा भावनाओं और क्रोध पर आत्म-नियमन की मांग करता था।
3. **आंतरिक प्रेरणा:** गोलेमैन भौतिक पुरस्कारों के बजाय काम के प्रति जुनून का सुझाव देते हैं, भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सुधार करते हैं, जिससे निरंतर प्रेरणा, स्पष्ट निर्णय लेने और संगठनात्मक लक्ष्यों की समझ पैदा होती है।
    - **उदाहरण:** कोविड-19 महामारी ने डॉक्टरों पर भारी तनाव डाला और उन्हें मरीजों के लिए काम करते रहने के लिए आंतरिक प्रेरणा ढूंढनी पड़ी।

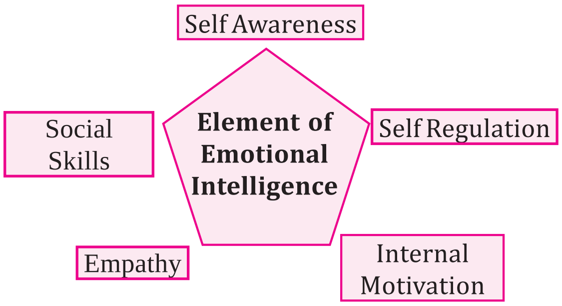

चित्र: भावनात्मक बुद्धिमत्ता के तत्व

4. **समानुभूति:** इसका तात्पर्य दूसरों की जगह पर होना है। समानुभूति स्वयं को उसकी स्थिति में रखकर दूसरों की स्थिति को समझने की मांग करती है।
    - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक को नियुक्त होने से पहले स्वयं एक आम आदमी होने के नाते आम नागरिकों की समस्याओं के प्रति समानुभूति रखनी चाहिए अन्यथा वह देश की जड़ों से जुड़ाव खो सकता है।
5. **सामाजिक कौशल:** गोलेमैन सामाजिक कौशल का वर्णन "एक उद्देश्य के साथ मित्रता" के रूप में वर्णित करते हैं। सामाजिक कौशल में मैत्रीपूर्ण, विनम्र और सम्मानजनक होना और व्यक्तिगत और संगठनात्मक लाभों के लिए स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देना एवम समग्र कल्याण को बढ़ाना शामिल है।
    - **उदाहरण:** अलीगढ़ के एसएसपी आकाश कुलहरि प्रदर्शनकारियों की भीड़ में निहत्थे चले गए और छात्रों से विरोध के अधिकार को पहचानते हुए शांतिपूर्ण रहने की अपील की। उन्होंने भीड़ को शांति प्रदान करने के लिए उत्कृष्ट सामाजिक कौशल का प्रदर्शन किया।

गोलेमैन के अनुसार, जो व्यक्ति इन विशेषताओं को अपनाते हैं, उन्हें ऐसा न करने वाले व्यक्तियों की तुलना में सफल होने की कहीं अधिक संभावना होती है। हालाँकि, व्यक्ति केवल इन कौशलों के साथ पैदा नहीं होते हैं बल्कि उन्हें सीखा जा सकता है।

भावनाओं का विनियमन

- **भावनाओं को पहचानना:** अपनी भावनाओं के प्रति जागरूक होना और उनके कारण और स्वरुप को समझना।
- **कारण को समझना:** उन स्थितियों, घटनाओं या विचारों की पहचान करना जो विशिष्ट भावनाएं पैदा करते हैं।
- **सामना करने की रणनीतियां अपनाना:** गहरी साँस लेना, सकारात्मक आत्म-चर्चा करना, या भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित और विनियमित करने के लिए समर्थन मांगना जैसी तकनीकों को अपनाना।

भावनाओं का प्रभाव

- **व्यवहारिक प्रभाव:** भावनाएं हमारे कार्यों, निर्णयों और दूसरों के साथ हमारे बातचीत करने के तरीके को प्रभावित करती हैं।
- **पारस्परिक प्रभाव:** भावनाएं हमारे संचार, सहानुभूति और दूसरों के साथ जुड़ने के तरीके को प्रभावित करके हमारे रिश्तों को प्रभावित करती हैं।
- **कल्याण प्रभाव:** भावनाएं हमारे मानसिक और भावनात्मक कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, समग्र जीवन संतुष्टि और खुशी को प्रभावित करती हैं।

4.1 सलोवी और मेयर की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चार स्तर

भावनाओं को समझना	भावनाओं के साथ तर्क करना	भावनाओं को समझना	भावनाओं का प्रबंधन
भावनाओं को समझने में पहला कदम उन्हें सटीक रूप से समझना है। कई मामलों में, इसमें शारीरिक भाषा और चेहरे के भाव जैसे अशाब्दिक संकेतों को समझना शामिल हो सकता है।	इसमें सोच और संज्ञानात्मक गतिविधि को बढ़ावा देने के लिए भावनाओं का उपयोग करना शामिल है। हम जिस पर ध्यान देते हैं और जिस पर प्रतिक्रिया करते हैं, उसे प्राथमिकता देने में भावनाएं मदद करती हैं। हम उन चीजों के प्रति भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया करते हैं जो हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं।	जिन भावनाओं को हम अनुभव करते हैं उनके कई प्रकार के अर्थ हो सकते हैं। यदि कोई गुस्से वाली भावनाएं व्यक्त कर रहा है, तो पर्यवेक्षक को उसके गुस्से का कारण और इसका क्या मतलब हो सकता है, इसकी व्याख्या करनी चाहिए।	यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भावनाओं को नियंत्रित करना, उचित प्रतिक्रिया देना और दूसरों की भावनाओं का जवाब देना भावनात्मक प्रबंधन के सभी महत्वपूर्ण पहलू हैं।

मार्शमैलो प्रयोग

- **मार्शमैलो प्रयोग,** जो छोटे बच्चों के साथ किया गया था, से पता चला कि जिन लोगों ने बड़े इनाम के पक्ष में तत्काल संतुष्टि का विरोध किया, उन्होंने जीवन में बेहतर प्रदर्शन किया।
- **इस प्रयोग में आत्म-नियमन,** आवेग नियंत्रण और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच संबंध पर प्रकाश डाला गया है।
- स्व-नियमन भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि यह लोगों को अपने आवेगों को प्रबंधित करने और दीर्घकालिक लक्ष्यों के आधार पर बेहतर निर्णय लेने की अनुमति देता है।
- व्यक्ति स्व-नियमन कौशल विकसित करके अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सुधार कर सकते हैं, जिससे बेहतर रिश्ते, शैक्षणिक या व्यावसायिक सफलता और समग्र कल्याण होता है।
- मार्शमैलो प्रयोग भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने और सकारात्मक जीवन परिणाम प्राप्त करने में आत्म-नियंत्रण और विलंबित संतुष्टि के मूल्य पर प्रकाश डालता है।

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोगों के लक्षण

- **तर्कसंगत निर्णय लेना:** अच्छे भावनात्मक गुणक वाला व्यक्ति अपने कार्यों के निहितार्थ को समझेगा और तर्कसंगत रूप से निर्णय लेगा।
  - **उदाहरण:** अंकित एक सिविल सेवक है। वह अपने जिले में सामाजिक कल्याण के लिए धन आवंटित करता है। वह एक व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद तर्कसंगत निर्णय लेता है।
- **बेहतर संचार कौशल:** जो लोग भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होते हैं वे दूसरों की बात सुनते हैं और प्रभावी ढंग से संवाद करना जानते हैं (गोलेमैन 1997)।
- **बेहतर समन्वय:** ईआई एक लोक सेवक को अधिक चौकस और सहानुभूतिपूर्ण बनाता है।
- **विघटनकारी भावनाओं का प्रबंधन:** उच्च दबाव वाले माहौल में काम करने वाले एक सिविल सेवक को अक्सर राजनीतिक दबाव, जीवन की धमकियों आदि का सामना करना पड़ता है।
- **बेहतर नीति कार्यान्वयन:** एक अध्ययन के अनुसार, ऐसे सहयोगियों के साथ काम करना जो स्वयं-जागरूक नहीं हैं, एक टीम की सफलता को आधा कर सकते हैं जबकि तनाव को भी बढ़ सकता है और प्रेरणा कम हो सकती है।

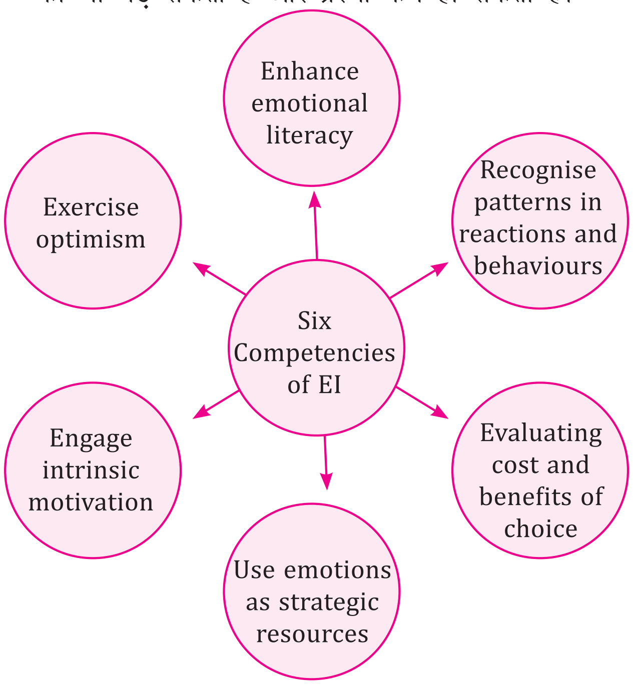

चित्र: ईआई की छह विशेषताएं

- **नेतृत्व को प्रोत्साहित करना:** हर चीज के केंद्र में आत्म-जागरूकता है। यह किसी की अपनी ताकत और खामियों को समझने के अलावा भावनाओं को पहचानने की क्षमता और किसी (लोक सेवक के) और उसकी टीम के प्रदर्शन पर उनके प्रभाव का वर्णन करता है।
- **प्रतिरुप की पहचान:** ईआई व्यक्ति में प्रभावी समस्या-समाधान या निर्णय लेने के लिए दूसरों के भावनात्मक प्रतिरुप, प्रतिक्रियाओं और व्यवहार को पहचानने की क्षमता होती है।

उदाहरण

एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के प्रबंधक राहुल से मिलें, जो विभिन्न स्थितियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के कई लक्षण प्रदर्शित करता है:

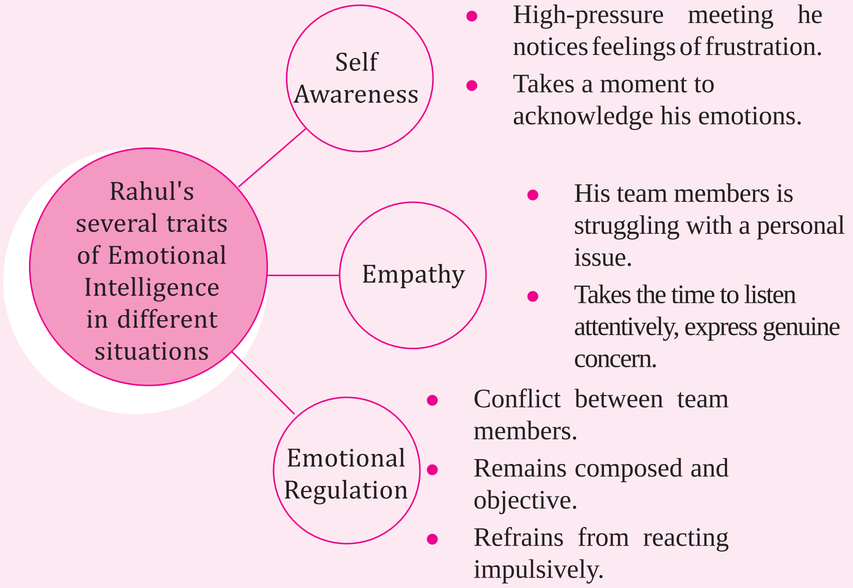

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) के विभिन्न मॉडल

- **क्षमता मॉडल:** ईआई का क्षमता मॉडल किसी व्यक्ति की भावनाओं को प्रभावी ढंग से समझने और प्रबंधित करने की क्षमता पर जोर देता है। यह भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संज्ञानात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालता है और ईआई को एक मानसिक क्षमता के रूप में मानता है। उच्च ईआई व्यक्ति भावनाओं को पहचानने, उनके कारणों को समझने और उनकी प्रतिक्रियाओं को विनियमित करने में कुशल होते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** उच्च ईआई वाले श्री राहुल चेहरे के भावों की व्याख्या करने और अपनी टीम के सदस्यों की भावनात्मक स्थिति का सटीक आकलन करने में उत्कृष्ट हैं।
- **विशिष्टता मॉडल:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) व्यक्तित्व लक्षणों का एक समूह है जो भावनाओं की धारणा और प्रबंधन को प्रभावित करता है। उच्च ईआई वाला व्यक्ति विभिन्न स्थितियों में भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, जो आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, समानुभूति और सामाजिक कौशल जैसे स्थिर लक्षणों पर ध्यान केंद्रित होते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** श्री राहुल संदर्भ की परवाह किए बिना लगातार दूसरों के प्रति समानुभूति और समझ प्रदर्शित करते हैं।
- **मिश्रित मॉडल:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) का मिश्रित मॉडल क्षमता और विशेषता मॉडल को जोड़ता है, जन्मजात क्षमताओं और सीखे गए कौशल को पहचानता है, और संज्ञानात्मक और व्यक्तित्व-आधारित पहलुओं को एकीकृत करते हुए बेहतर ईआई के लिए प्रशिक्षण और अभ्यास का सुझाव देता है।
  - **उदाहरण के लिए,** मिश्रित मॉडल के अनुसार, श्री राहुल में भावनाओं को समझने की प्राकृतिक क्षमता हो सकती है, साथ ही वे भावनाओं को प्रबंधित करने और प्रबंधन और उनकी टीम के सदस्यों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने में सीखे हुए कौशल का प्रदर्शन भी कर सकते हैं।

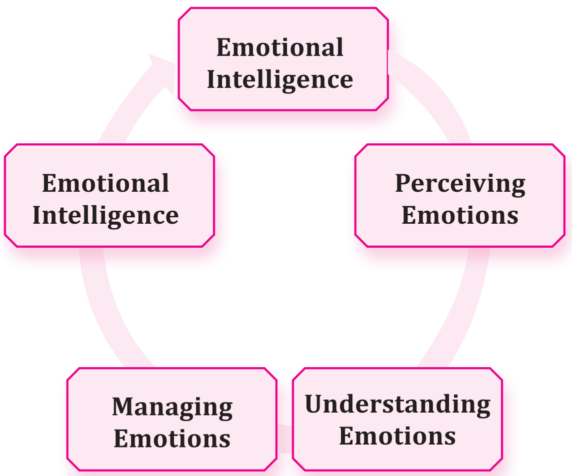

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) की बहुआयामी उपयोगिता

- **निजी जीवन में:**
  - **संघर्ष समाधान:** ईआई से युक्त लोग जटिल व्यक्तियों, लोगों के समूहों या तनावपूर्ण स्थितियों को कूटनीति से संभाल सकते हैं। यह सहयोगात्मक समाधान खोजने में सहायता करता है।

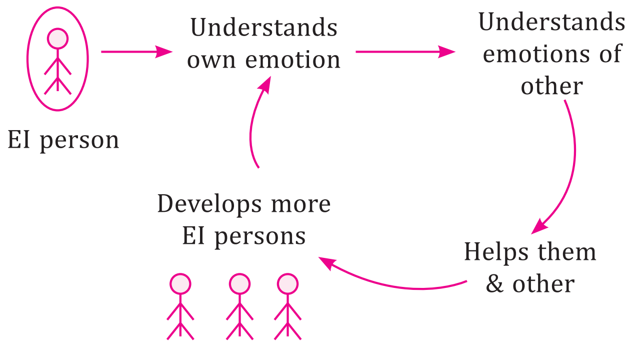

  - **मानसिक स्वास्थ्य:** यह हमें अपनी भावनाओं और तनाव को प्रबंधित करने में मदद करता है। यह हमें अवसाद और चिंता से बचाता है।
  - **निर्णय लेना:** शोधकर्ता इस बात से सहमत हैं कि एक अच्छे निर्णय की कुंजी किसी के निर्णय में सोच और भावना दोनों का संयोजन है।
  - **आशावाद:** यह हमारी नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है और किसी कार्य के लिए आशा और संभावना का उचित परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।
  - **व्यक्तिगत विकास:** शोध के माध्यम से यह पता चला है कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान लोग व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं। वे अपने जीवन में सकारात्मक बदलावों को स्वीकार करने के लिए काफी लचीले होते हैं।
  - **प्रेरणा:** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति अत्यधिक प्रेरित होते हैं और वे कभी-कभी विफलताओं से आसानी से निपट सकते हैं।
  - **आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच अंतर:** एक ईआई दिमाग उन चीजों के बीच अंतर करने में सक्षम है जिनकी उन्हें आवश्यकता है और जो चीजें वे चाहते हैं। यह विशिष्ट उपभोग को रोकता है।
  - **विश्वास का निर्माण:** ईआई विश्वास और गहरे संबंधों को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, किसी साथी के साथ व्यक्तिगत कमजोरियाँ साझा करने से भावनात्मक अंतरंगता बढ़ती है।
  - **लचीलेपन को बढ़ावा देना:** प्रतिकूल परिस्थितियों के मद्देनजर, ईआई लचीलेपन को बढ़ावा देकर सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रबंधित करने में मदद करता है।
- **सार्वजनिक जीवन में:**
  - **नेतृत्व:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता नेतृत्व क्षमताओं को बढ़ाती है, प्रभावी निर्णय लेने में सक्षम बनाती है, दूसरों को प्रेरित और प्रोत्साहित करती है और सहयोग को बढ़ावा देती है।
    - **उदाहरण:** महात्मा गांधी ने विविध दृष्टिकोणों के साथ सहानुभूति व्यक्त की, आम सहमति बनाई और प्रभावी ईआई का प्रदर्शन करते हुए करुणा के साथ नेतृत्व किया।
  - **सार्वजनिक भाषण और प्रभाव:** ईआई व्यक्तियों को अपने दर्शकों से प्रभावी ढंग से जुड़ने और संलग्न करने में मदद करता है।
    - **उदाहरण के लिए,** संदीप माहेश्वरी, दर्शकों के साथ अपने प्रभावी जुड़ाव के साथ उनकी समस्याओं के समाधान में उनका मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं।
  - **संघर्ष समाधान और बातचीत:** ईआई संघर्षों को सुलझाने और प्रभावी ढंग से बातचीत करने की सुविधा प्रदान करता है।
    - **उदाहरण** के तौर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कूटनीतिक बातचीत।
  - **संबंध बनाना और बनाए रखना:** ईआई सहकर्मियों, घटकों और हितधारकों के साथ मजबूत संबंध बनाने में सहायता करता है। यह सामुदायिक भावना को बढ़ावा देता है।
  - **आलोचना और दबाव से निपटना:** ईआई व्यक्तियों को आलोचना, सार्वजनिक जांच और उच्च दबाव वाली स्थितियों को संभालने के लिए लचीलेपन और भावनात्मक ताकत से लैस करता है।

- **समानुभूति:** ईआई जनता की जरूरतों और चिंताओं के प्रति समानुभूति और समझ को बढ़ावा देता है।

- **राजनीति में:**
  - **प्रभावी संचार:** उच्च-भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले राजनेता अपनी संचार शैलियों को अपनाकर विभिन्न सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक-आर्थिक समूहों से जुड़ सकते हैं।
    - **उदाहरण:** एक राजनेता ग्रामीण क्षेत्र में एक रैली को संबोधित करते हुए संबंधित भाषा और कहानियों का उपयोग कर रहा है जो स्थानीय समुदाय की भावनाओं और आकांक्षाओं से जुड़ती हैं।
  - **आम सहमति का निर्माण:** उच्च-भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले राजनेता आम सहमति बनाकर संघर्षों को सुलझा सकते हैं और राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ा सकते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** संयुक्त राष्ट्र में भारत के प्रतिनिधि ने आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक सामूहिक कार्रवाई के लिए आम सहमति बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई।
  - **समानुभूति और जमीनी स्तर पर जुड़ाव:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता राजनेताओं को सक्रिय रूप से सुनने और उनके साथ जुड़कर लोगों की चिंताओं को समझने में मदद करती है।
    - **उदाहरण:** राजनेता आपदा/अपराध/प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों से मिलने जाते हैं।
  - **सामाजिक विभाजन को संभालना:** सामाजिक, धार्मिक और जातिगत विभाजन भारत की राजनीति को आकार देते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता राजनेताओं को इन जटिलताओं से निपटने, सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देने और समुदायों को जोड़ने में मदद करती है।

- **प्रशासन में:**
  - **प्रभावी शासन:** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले प्रशासक भारतीय आबादी की विविध आवश्यकताओं और भावनाओं को समझ सकते हैं। वे विभिन्न क्षेत्रों, संस्कृतियों और सामाजिक आर्थिक समूहों की चिंताओं को संबोधित करते हुए समानुभूतिपूर्ण शासन में संलग्न हो सकते हैं।
    - **उदाहरण:** श्रीनगर के जिला कलेक्टर शाहिद इकबाल चौधरी ने कश्मीर के कमजोर गांवों में 320 पुल बनाए हैं। इससे हजारों लोगों और स्कूली बच्चों को कनेक्टिविटी मिली है। यात्रा की दूरी कम करने के अलावा, इस पहल से बाढ़ में जानमाल के नुकसान में भारी कमी आई है।

- **सांस्कृतिक संवेदनशीलता:** भारत बहुभाषी, धार्मिक और सांस्कृतिक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशासकों को इस विविधता का सम्मान करने, नीति निर्माण और कार्यान्वयन में समावेशिता और सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने में मदद करती है।
  - **उदाहरण:** सी.बी. मुथम्मा पहली महिला आईएफएस अधिकारी और राजदूत थीं। उन्हें लैंगिक मुद्दों और जाति संबंधी मुद्दों का सामना करना पड़ा। इस प्रकार, उन्होंने इन सभी से संघर्ष किया और एशिया, अफ्रीका और यूरोप जैसे विभिन्न स्थानों में अपनी पूरी ऊर्जा के साथ विभिन्न क्षमताओं में सेवा की।

- **सामुदायिक सहभागिता:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशासकों को स्थानीय समुदायों से जुड़ने में मदद करती है। क्षेत्रीय और सामुदायिक आवश्यकताओं, चिंताओं और आकांक्षाओं को समझने से प्रशासकों को भारत के लिए नीतियां और कार्यक्रम तैयार करने में मदद मिलती है।
  - **उदाहरण:** कैफे एबल पहल तमिलनाडु के थूथुकुडी में जिला कलेक्टर (डीसी) संदीप नंदूरी द्वारा शुरू की गई थी। आईएएस अधिकारी ने दिव्यांग व्यक्तियों के आत्मविश्वास, उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने और उनमें आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए एक कैफे की स्थापना की।

- **संघर्ष समाधान:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता विभिन्न प्रशासनिक सेटिंग्स में संघर्षों को सुलझाने और तनाव को प्रबंधित करने में मदद करती है। उच्च-ईआई प्रशासक अंतर-सामुदायिक विवादों में मध्यस्थता कर सकते हैं, संवाद को बढ़ावा दे सकते हैं और समझ को बढ़ावा दे सकते हैं।
  - **उदाहरण:** नोरोन्हा एक आईसीएस अधिकारी थे। उन्हें पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा सीधे गोवा के मुख्य नागरिक प्रशासक के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्होंने मध्य प्रदेश राज्य में सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **सार्वजनिक सेवा वितरण:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशासकों को समानुभूति और दक्षता के साथ सार्वजनिक सेवाएँ प्रदान करने में मदद करती है। नागरिकों की भावनात्मक जरूरतों को समझकर, प्रशासक सेवा वितरण तंत्र को डिजाइन और कार्यान्वित कर सकते हैं जो उत्तरदायी, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित हैं।
  - **उदाहरण:** जबकि ऑनलाइन पारिस्थितिकी तंत्र ऐप से भरा हुआ है, पुडुचेरी के जिला कलेक्टर डॉ. टी अरुण ने अपनी तरह का पहला ऐप बनाया, जिसने पुडुचेरी में तालाबों, झीलों और 206 किमी लंबी नहरों सहित 198 जल निकायों को पुनर्जीवित किया। "नीर पाधिवु" जियोटैगिंग, अद्वितीय आईडी नंबर, तालाबों और टैंकों पर

जीआईएस और अक्षांश और देशांतर के साथ जल निकायों को डिजिटल बनाता है।

- **संकट प्रबंधन:** भारत को प्राकृतिक आपदाओं, सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों और अन्य संकटों का सामना करना पड़ता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रभावित व्यक्तियों और समुदायों की भावनात्मक भलाई पर विचार करते समय प्रशासकों को करुणा, लचीलापन और त्वरित निर्णय लेने में मदद करती है।
  - **उदाहरण:** डॉ. राजेंद्र भारुद को नंदुरबार में एक दिन में हुई कोविड-19 की वृद्धि को 75 प्रतिशत तक कम करने और जिले को ऑक्सीजन की आवश्यकता के मामले में आत्मनिर्भर बनाने का गौरव प्राप्त है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के तत्व और सिविल सेवाओं में उनका उपयोग

- **आत्म-जागरूकता:** आत्म-जागरूकता वाले सिविल सेवकों को अपनी भावनाओं, शक्तियों, कमजोरियों और मूल्यों की गहरी समझ होती है, जो विभिन्न स्थितियों में प्रभावी भावनात्मक प्रबंधन को सक्षम बनाते हैं।
  - **उदाहरण:** आत्म-जागरूकता वाले सिविल सेवक शांत और संयमित चर्चा के लिए स्व-नियमन तकनीकों का अभ्यास करके उच्च दबाव वाली बैठकों के दौरान अधीरता का प्रबंधन कर सकते हैं।
- **स्व-नियमन:** स्व-नियमन वाले सिविल सेवक भावनात्मक संतुलन बनाए रखते हैं, बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं और तर्कसंगत निर्णय लेते हैं।
  - **उदाहरण:** सिविल सेवक द्वारा स्व-नियमन द्वारा गंभीर स्थिति में तर्कसंगत निर्णय लेना।
- **अभिप्रेरणा:** प्रेरित सिविल सेवकों में लचीलेपन और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ चुनौतियों पर काबू पाने, उद्देश्य, प्रतिबद्धता और उच्च मानकों की एक मजबूत भावना होती है।
  - **उदाहरण:** एक प्रेरित सिविल सेवक व्यापक सार्वजनिक हित के लिए नौकरशाही बाधाओं से परे एक कदम उठा रहा है।
- **समानुभूति:** समानुभूति भावनाओं और दृष्टिकोणों को समझने और साझा करने की क्षमता है, जो सिविल सेवकों को सक्रिय श्रवण, वास्तविक चिंता और विविध दृष्टिकोणों पर विचार करके नागरिकों, सहकर्मियों और हितधारकों से जुड़ने में सक्षम बनाती है।
  - **उदाहरण:** कोझिकोड के जिला कलेक्टर प्रशांत नायर ने अनुकंपा कोझिकोड की स्थापना की, जो एक स्वयंसेवक-संचालित परियोजना है जो विभिन्न प्रकार की सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करती है।
- **सामाजिक कौशल:** सिविल सेवकों में सामाजिक कौशल प्रभावी संचार, सहयोग और संबंध-निर्माण को सक्षम बनाता है, जिससे वे जटिल बातचीत को नेविगेट करने और विविध हितधारकों को प्रभावित करने में सक्षम होते हैं।
  - **उदाहरण:** आईएएस अधिकारी ओपी चौधरी ने शिक्षा पहल **'छू लो आसमान'** से कुशल श्रमिकों की उपलब्धता की कमी की समस्या का समाधान किया।
- **तनाव प्रबंधन:** भावनात्मक गुणक व्यक्ति को चिंताजनक स्थितियों में भावनाओं को प्रबंधित करने की अनुमति देता है, जो किसी के शारीरिक और मानसिक कल्याण को बनाए रखने में सहायता करता है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक को उच्च प्राधिकारी का दबाव होने पर भी तर्कसंगत निर्णय लेना पड़ता है।
- **अनुकूलनशीलता:** भावनात्मक गुणक वाले सिविल सेवक अपनी शांति, भावनाओं पर नियंत्रण आदि के कारण विभिन्न और यहां तक कि चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी अनुकूलन करने में सक्षम होते हैं।
  - **उदाहरण:** आईएएस अधिकारी स्मिता सभरवाल ने फंड योर सिटी नामक एक अभियान शुरू करके वित्तीय संकट का जवाब दिया, जिसमें उन्होंने निवासियों से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के निर्माण में मदद करने के लिए कहा।

संक्षेप में,

उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले सिविल सेवकों में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, प्रेरणा, सहानुभूति और सामाजिक कौशल होते हैं। इन आयामों को विकसित करके, वे अपने निर्णय लेने, संचार और संबंधों को बढ़ा सकते हैं, जिससे अधिक प्रभावी और समानुभूतिपूर्ण सार्वजनिक सेवा वितरण हो सकेगा।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) का विकास और सुधार

- **व्यक्तिगत स्तर पर:**
  - **आत्म-जागरूकता बढ़ाना:** विभिन्न स्थितियों के प्रति अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और उन प्रतिक्रियाओं के अंतर्निहित कारणों पर विचार करना चाहिए। इस प्रकार, माइंडफुलनेस जर्नलिंग और विश्वसनीय लोगों से इनपुट प्राप्त करना आत्म-जागरूकता बढ़ाने में मदद कर सकता है।
  - **भावनाओं को पहचाना और वर्गीकृत करना:** भावनात्मक शब्दावली बढ़ाने और भावनाओं को पहचानने

और वर्गीकृत करने की अपनी क्षमता में सुधार करना चाहिए।

- **भावनात्मक प्रबंधन:** सांस लेने के व्यायाम, ध्यान, शारीरिक व्यायाम, या विश्राम और तनाव कम करने को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों में संलग्न होना सभी इसका हिस्सा हो सकते हैं।
- **सक्रिय श्रोता:** दूसरों की भावनाओं को समझकर और साझा करके, सक्रिय रूप से सुनने का अभ्यास करके, वैकल्पिक दृष्टिकोण पर विचार करके और खुद को दूसरों के स्थान पर रखकर समानुभूति को बढ़ावा देना चाहिए।
- **संचार कौशल में सुधार:** बातचीत में मौखिक और गैर-मौखिक दोनों संकेतों पर ध्यान देते हुए सक्रिय श्रवण, अशाब्दिक संचार और मुखर बोलने का अभ्यास करके संचार कौशल को बढ़ाना चाहिए।
- **गलतियों से सीखना:** अपनी गलतियों से सीखें और विचार करें कि अपनी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं और व्यवहारों को कैसे सुधारें।
- **स्व-देखभाल को प्राथमिकता देना:** व्यायाम, शौक और मानसिक स्वास्थ्य सहायता के माध्यम से विश्राम, तनाव में कमी और अच्छे तकनीकों का अभ्यास करना चाहिए।

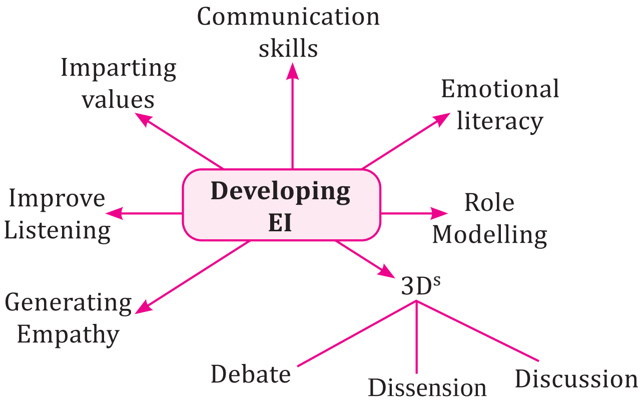

चित्र: ईआई का विकास

- **सिविल सेवकों में:**
  - **क्षमता निर्माण कार्यक्रम:** कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) सिविल सेवकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार के क्षमता निर्माण कार्यक्रम पेश करता है। इन कार्यक्रमों में शामिल विषयों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, पारस्परिक कौशल, संघर्ष समाधान और तनाव प्रबंधन के पाठ्यक्रम शामिल हैं।
  - **एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण (आईजीओटी):** कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय का आईजीओटी प्लेटफॉर्म भावनात्मक बुद्धिमत्ता और संबंधित कौशल पर ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल प्रदान करता है। सिविल सेवक अपने भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल को बेहतर बनाने के लिए इन मॉड्यूल का उपयोग कर सकते हैं।
  - **राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति:** सरकार ने राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति लागू की, जो सिविल सेवकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास पर जोर देती है। यह नीति प्रशिक्षण संस्थानों को अपने प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के तत्वों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
  - **समानुभूति प्रशिक्षण:** सिविल कर्मियों को सहानुभूति सिखाएं। सक्रिय रूप से सुनना, परिप्रेक्ष्य लेना और समानुभूति मदद कर सकती है। इसे बार-बार क्षेत्र के दौरों से हासिल किया जा सकता है।
    - **उदाहरण:** रोहिणी भजीभाकरे (सलेम जिले की जिला कलेक्टर), जो एक सीमांत किसान की बेटी हैं, जन-केंद्रित शासन के लिए जानी जाती हैं।
  - **प्रभावी संचार:** सक्रिय श्रवण, भावनात्मक अभिव्यक्ति और स्थितिजन्य संचार में प्रशिक्षण द्वारा सरकारी अधिकारियों में संचार कौशल में सुधार करना चाहिए।
    - **उदाहरण:** देश की संस्कृति और विभिन्न अन्य पहलुओं के बारे में उनकी समझ बढ़ाने के लिए आईएएस परिवीक्षार्थियों को भारत दर्शन में ले जाया जाता है।
  - **संघर्ष समाधान प्रशिक्षण:** सिविल कार्यकर्ताओं को संघर्ष समाधान, सहयोगात्मक समस्या-समाधान और विनम्र बातचीत, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और टीम वर्क को बढ़ाने में प्रशिक्षित करना चाहिए।
  - **नेतृत्व विकास:** प्रेरणादायक नेतृत्व, सहानुभूति और कार्यस्थल सकारात्मकता विकसित करने के लिए सरकारी कर्मचारियों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता-केंद्रित कार्यक्रम शुरु करना चाहिए।
  - **प्रदर्शन का निरंतर मूल्यांकन:** प्रदर्शन समीक्षा, कोचिंग और सहकर्मी प्रतिक्रिया के माध्यम से भावनात्मक बुद्धिमत्ता का आकलन करने के लिए नागरिक अधिकारियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
  - **सहायक कार्य वातावरण:** परामर्श और तनाव प्रबंधन कार्यक्रमों के माध्यम से भावनात्मक कल्याण और कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देना।
  - **अनुभवात्मक शिक्षा:** भावनात्मक और व्यवहारिक परिवर्तनों के लिए अनुभवात्मक शिक्षा और पारंपरिक कक्षाओं के बाहर जीवन गतिविधियों की आवश्यकता होती है। इसे शिक्षण हस्तांतरण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जिसका अर्थ है कि लोग प्रदर्शन सुधार

के लिए प्रशिक्षण में जो सीखते हैं उसका उपयोग कैसे करते हैं।

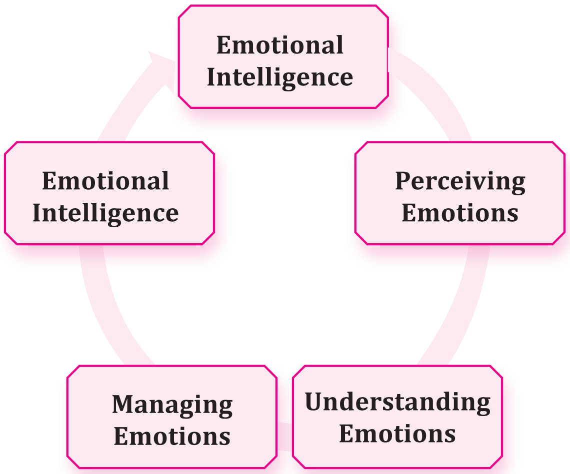

चित्र: ईआई का विकास

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का वास्तविक जीवन का उदाहरण:

एक सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करते समय मेरी मुलाकात पंकज नामक सहकर्मी से हुई। पंकज निजी जीवन में एक चुनौतीपूर्ण दौर का सामना कर रहे थे, जिसका असर उनके प्रदर्शन और स्वास्थ्य पर पड़ रहा था। मैंने उसके पीछे हटने, व्यवहार में चिड़चिड़ापन बढ़ने और कार्यशीलता में कमी देखी। मैंने निम्नलिखित कार्य किया (**भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित**):

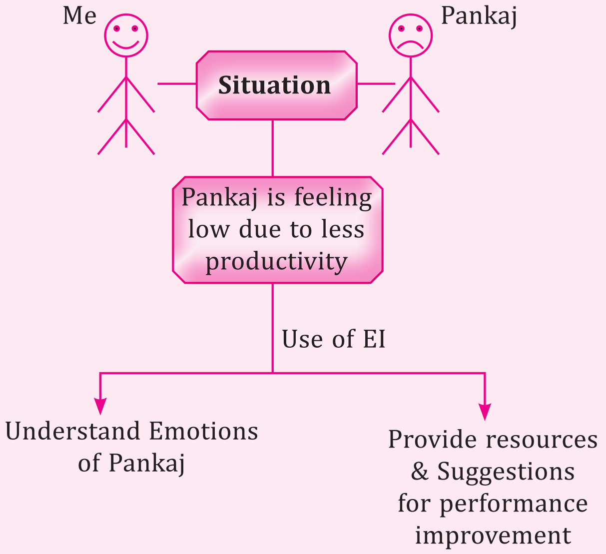

- प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) के विकास में चुनौतियां
- **काम का दबाव:** लोक सेवकों पर अत्यधिक काम का दबाव होता है जिससे "जो करना है करो" दृष्टिकोण का विकास होता है।
  - **उदाहरण,** भारी कमी और अप्राप्य रिक्तियों के कारण, लोक सेवकों पर काम का भारी दबाव है।
- **सांस्कृतिक अंतर:** नौकरशाहों और जनता के बीच सांस्कृतिक अंतर समानुभूति, समझ और संचार को कम करता है, जिससे संचार और समझ प्रभावित होती है।
  - **उदाहरण:** बिहार के एक नौकरशाह को केरल में तैनात होने पर सांस्कृतिक अंतर और सांस्कृतिक जागरूकता की कमी का सामना करना पड़ सकता है। इसे केवल समय के साथ सांस्कृतिक संवेदनशीलता से ही कम किया जा सकता है।
- **प्रशासन में प्रौद्योगिकी का समावेश:** प्रशासन में प्रौद्योगिकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता में बाधा डालती है, क्योंकि इसमें भावनाओं का अभाव है।
  - **उदाहरण:** झारखंड की एक लड़की संतोषी कुमारी की भूख के कारण मृत्यु हो गई। राशन कार्ड को आधार कार्ड से लिंक न कर पाने के कारण राशन देने से इंकार कर दिया गया।
- **अत्यधिक गुमनामी और पदानुक्रम:** नौकरशाही में गुमनामी मजबूत हो सकती है, लेकिन अत्यधिक पदानुक्रम और गुमनामी जिम्मेदारी लेने की प्रेरणा में बाधा बन सकती है।
  - **उदाहरण:** एक सरकारी अधिकारी उच्च अधिकारियों से आदेश की कमी का बहाना बनाकर किसी निराश्रित (पात्र लेकिन आवश्यक दस्तावेजों की कमी वाले) को पीडीएस लाभ देने से इनकार कर सकता है।
- **प्रशिक्षण का अभाव:** भारतीय नौकरशाही मुख्य रूप से तकनीकी कार्यों पर प्रशिक्षण देती है, इसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अभाव है, और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को बदलने में अनिच्छा का सामना करना पड़ता है।
  - **उदाहरण:** विशिष्ट भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण कार्यक्रमों या कार्यशालाओं की कमी के परिणामस्वरूप सहानुभूति, सक्रिय श्रवण और संघर्ष समाधान जैसी प्रमुख दक्षताओं के विकास में अंतर हो सकता है।
- **परिवर्तन का विरोध और एक पारंपरिक मानसिकता:** प्रशासन को परिवर्तन के प्रतिरोध के साथ-साथ एक पारंपरिक मानसिकता का भी सामना करना पड़ सकता है जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर पदानुक्रम और अधिकार को महत्व देता है। यह प्रतिरोध नए दृष्टिकोण अपनाने और भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने की पहल को अपनाने की इच्छा को बाधित कर सकता है।
  - **उदाहरण:** वरिष्ठ अधिकारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रथाओं को लागू करने के प्रति प्रतिरोधी हो सकते हैं क्योंकि

उनका मानना है कि वे अनावश्यक हैं या मौजूदा प्रणाली के विपरीत हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) का नकारात्मक उपयोग

- **दूसरों के साथ छेड़छाड़:** ईमानदारी के बिना दूसरों की भावनाओं को परखने और उनमें हेरफेर करने में माहिर व्यक्ति वास्तविक भावनाओं को गुप्त रख सकता है और दूसरों की अभिव्यक्तियों को छिपा सकता है।
  - **उदाहरण:** सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लोग संकट आदि जैसी भावनाओं का फायदा उठाकर दूसरे लोगों के साथ छेड़छाड़ करते हैं।
- **संचार की कमी:** अत्यधिक भावना विनियमन और कम सामाजिक कौशल के परिणामस्वरूप संचार संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।
  - **उदाहरण:** यदि कोई व्यक्ति (A) संचार कौशल में अच्छा नहीं है और किसी (B) से मिलते समय कोई भावना (जैसे मुस्कुराहट) नहीं दिखाता है, तो उस व्यक्ति (B) को व्यक्ति (A) से बात करने में कम रुचि होगी।
- **पूर्वानुमान शक्ति का अभाव:** एक और आलोचना यह है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता नौकरी के प्रदर्शन या नेतृत्व प्रभावशीलता जैसे महत्वपूर्ण परिणामों की लगातार भविष्यवाणी नहीं करती है। आलोचकों के अनुसार, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और वांछित परिणामों के बीच संबंध अक्सर कमजोर या असंगत होता है।
  - **उदाहरण:** उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्कोर वाले व्यक्ति हमेशा अपनी पेशेवर भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकते हैं या प्रभावी नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन नहीं कर सकते हैं।
- **कौशल से भ्रमित:** ईआई एक कौशल के बजाय एक वांछनीय नैतिक गुण है। एक अच्छी तरह से विकसित ईआई न केवल लक्ष्यों को पूरा करने के लिए एक सहायक उपकरण है, बल्कि दूसरों को हेरफेर करने के लिए एक अंधेरे पक्ष के हथियार के रूप में भी है।
- **बुद्धिमत्ता का एक रूप नहीं:** यह आलोचना इस बात पर जोर देती है कि वैज्ञानिक जांच के लिए रचनात्मक वैधता और निरंतरता की आवश्यकता होती है। ईआई से पहले, मनोवैज्ञानिकों ने सैद्धांतिक रूप से क्षमताओं और उपलब्धियों, कौशल और आदतों, दृष्टिकोण और मूल्यों, व्यक्तित्व लक्षणों और भावनात्मक स्थितियों को प्रतिष्ठित किया था। इस प्रकार, ईआई ऐसे शब्दों और परिभाषाओं को मिश्रित और भ्रमित भी कर सकता है।
- **अन्याय के प्रति सहनशीलता:** यदि किसी व्यक्ति का भावनाओं पर अत्यधिक नियंत्रण है तो वह अपनी उन भावनाओं को दबा सकता है जिनका झुकाव न्याय की ओर हो सकता है।
  - **उदाहरण:** एक व्यक्ति अपनी दया की भावना को नियंत्रित कर सकता है जब वह देखता है कि कोई व्यक्ति भोजन मांग रहे किसी गरीब व्यक्ति को डांट रहा है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के उदाहरण

- **सिविल सेवक के रूप में:** एक गरीब बुजुर्ग आदिवासी जोड़े को राशन वितरित करके, सिविल सेवक सुश्री पटेल भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करती हैं। सीमित आपूर्ति की नैतिक दुविधा का सामना करते हुए, वह करुणा, निष्पक्षता और सम्मान को प्राथमिकता देती है। वह सक्रिय रूप से सुनने, उनकी अनूठी जरूरतों को समझने और न्याय, समानुभूति और गरिमा के सिद्धांतों को कायम रखते हुए समान वितरण सुनिश्चित करती है।
- **फिल्म के किरदारों से:** बॉलीवुड फिल्म "डियर जिंदगी" में शाहरुख खान द्वारा निभाया गया किरदार डॉ. जहांगीर खान भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करता है। वह आलिया भट्ट द्वारा अभिनीत नायिका कायरा को उसकी भावनाओं की खोज करने, आत्म-जागरूकता पैदा करने और स्वस्थ रिश्ते विकसित करने, उनकी चिकित्सीय यात्रा के दौरान समानुभूति, समझ और करुणा का प्रदर्शन करने में मार्गदर्शन करता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) के लिए चुनौतियाँ

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस:** एआई पर बढ़ती निर्भरता सांस्कृतिक मतभेदों और भावनात्मक अभिव्यक्तियों को समझने में बाधा उत्पन्न करती है, जो एल्गोरिदम में पूर्वाग्रहों को उजागर करती है।
  - **उदाहरण:** संयुक्त राज्य अमेरिका में उपयोग की जाने वाली चेहरे की पहचान तकनीक रंग के लोगों के प्रति पक्षपाती रही है और विभिन्न रंगों के लोगों का गलत मिलान किया गया है।
- **अत्यधिक राजनीतिकरण:** अत्यधिक राजनीतिकरण से ईमानदार अधिकारियों पर जनता का दबाव बढ़ता है और राजनीतिक रूप से जुड़े अधिकारियों के बीच 'हाँ की भावना' बढ़ती है।
  - **उदाहरण:** भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने एक बाबा को मानने वाले केंद्रीय मंत्री के आदेश पर उत्तर प्रदेश में सोने की खोज शुरू की।

- **सोशल मीडिया और फर्जी खबरें:** सोशल मीडिया और फर्जी खबरें तर्कसंगतता को कम करती हैं, जिससे अधिकारियों पर त्वरित परिणाम देने का दबाव बढ़ता है।
  - **उदाहरण:** गुरुग्राम के रेयान इंटरनेशनल स्कूल मामले में, पुलिस ने त्वरित परिणाम दिखाने के लिए बस चालक पर आरोप लगाया, लेकिन बाद में मामला सीबीआई द्वारा अपने हाथ में लेने के बाद उसे रिहा कर दिया गया।
- **ऑनलाइन गेम और ऐप:** ऑनलाइन गेम बच्चों का समय बर्बाद करते हैं, खेल के पात्रों के आधार पर उनकी सोचने की प्रक्रिया और चरित्र विकास को आकार देते हैं।
  - **उदाहरण:** टिक टोक ऐप जिसने लोगों को बिना किसी महत्वपूर्ण सामग्री के केवल प्रचार के लिए वीडियो बनाने के लिए प्रेरित किया।
- **स्कूल में वर्चुअल कक्षाएं और गतिविधियां:** कोरोना काल के दौरान, छात्रों का इंटरनेट से जुड़ाव प्राकृतिक ईआई विकास में बाधा डालता है, जिससे वे वास्तविक दुनिया से अलग हो जाते हैं और उनके सीखने के अनुभवों पर असर पड़ता है।
  - **उदाहरण:** समूह कार्यक्रमों और खेलों का आयोजन नहीं किया जा रहा है जिससे टीम वर्क, नेतृत्व, करुणा आदि जैसे मूल्यों का दमन हो सकता है।
- **कठोर कानून:** सख्त आचार संहिता, नियम जो नौकरशाहों को मंत्रियों के निर्णयों के लिए बाध्य करते हैं और वे नाजायज मांगों को सिरे से खारिज नहीं कर सकते।
  - **उदाहरण:** पामोलिन ग्राफ्ट मामले में आरोपी केरल के पूर्व मुख्य सचिव जिजी थॉमसन को लगभग 15,000 टन पामोलिन आयात करने के सरकार के फैसले का पालन करना पड़ा।

भावनात्मक गुणक (ईक्यू)

- भावनात्मक गुणक (ईक्यू) किसी व्यक्ति की अपनी भावनाओं और दूसरों की भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता का एक माप है। यह एक प्रकार की **'भावनात्मक बुद्धिमत्ता'**।
  - **जैसे:** बौद्धिक गुणक किसी व्यक्ति की बुद्धि को मापता है, वैसे ही भावनात्मक गुणक किसी व्यक्ति के भावनात्मक कौशल को मापता है।
- यह अपने आप में और दूसरों के साथ हमारी बातचीत में भावनाओं के बारे में जागरूक होने और उन्हें अच्छी तरह से संभालने से संबंधित है।
- **उदाहरण:** मेरे स्कूल शिक्षक अपनी भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने, दूसरों के दृष्टिकोण को समझने और प्रभावी संचार और सहानुभूति के माध्यम से सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा देकर उच्च भावनात्मक गुणक (ईक्यू) प्रदर्शित करते हैं।

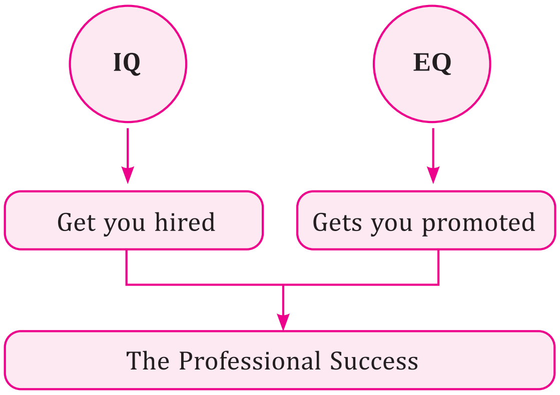

पैरामीटर	उच्च भावनात्मक गुणक	निम्न भावनात्मक गुणक
स्व जागरूकता	उच्च स्तर पर आत्म-जागरूकता, अपनी भावनाओं, शक्तियों और कमजोरियों को पहचानना और समझना।	आत्म-जागरूकता की कमी, अपनी भावनाओं और व्यवहार पर उनके प्रभाव को पहचानने और समझने में कठिनाई।
निर्णय लेना	निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भावनाओं और तर्कसंगतता को ध्यान में रखा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप अच्छी तरह से सूचित विकल्प प्राप्त होते हैं।	निर्णय लेने में भावनाओं को शामिल करने में कठिनाई, केवल तर्क पर निर्भर रहना, या भावनाओं से अत्यधिक प्रभावित होना।
नेतृत्व कौशल	मजबूत नेतृत्व क्षमता, दूसरों को प्रेरित करना और सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देना।	जब किसी नेता में दूसरों को प्रेरित करने और संलग्न करने की क्षमता का अभाव होता है, तो वह सीमित या असमर्थित व्यवहार प्रदर्शित कर सकता है।
अनुकूलन क्षमता	उच्च अनुकूलनशीलता, परिवर्तन को नेविगेट करने और लचीलेपन के साथ अनिश्चितता से निपटने की क्षमता के साथ।	परिवर्तन प्रतिरोध, नई परिस्थितियों के अनुकूल ढलने में कठिनाई, या अप्रत्याशित चुनौतियाँ।
समानुभूति	दूसरों के दृष्टिकोण और भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें समझने और उनके साथ समानुभूति रखने की मजबूत क्षमता।	समानुभूति की कमी, अन्य लोगों की भावनाओं और अनुभवों को समझने और उनसे जुड़ने में कठिनाई।

भावनात्मक गुणक (ईक्यू) की अवधारणा को स्पष्ट करने में मदद के लिए उदाहरण

- कल्पना कीजिए कि आपकी मित्र मीरा संघर्ष कर रही है। नौकरी छूटने के बाद से वह उदास है। उसका उच्च भावनात्मक गुणक है जिसके कारण आप देखते हैं कि मीरा दुखी और परेशान है।
- उच्च भावनात्मक गुणक वाले मित्र के रूप में, आपको मीरा का समर्थन करने की आवश्यकता है। आप कह सकते हैं, **'मीरा, आज तुम उदास लग रही हो। सब ठीक तो है?'** आप उसकी भावनाओं को स्वीकार करके दिखाते हैं कि आप उसकी परवाह करते हैं।
- मीरा अपनी हताशा और निराशा व्यक्त करती है। उसकी भावनाओं को सुनें और यह कहकर पुष्टि करें, **'नौकरी जाना दुख की बात है। परेशान होना सामान्य है।'** आप मीरा की भावनाओं को समझकर और समानुभूति रखकर उसका समर्थन करें।
- इसके बाद, आपका उच्च भावनात्मक गुणक मीरा को अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने में मदद करता है और उसे प्रोत्साहित करता है। आप कह सकते हैं, **'तुम्हारे पास कई मूल्यवान कौशल और अनुभव हैं। तुम्हें ये बाधाएं नहीं रोकेंगी। चलो नौकरी ढूंढने के तरीके के बारे में मिलकर सोचते हैं। तुम काबिल हो।'**
- आपकी सहानुभूति और प्रोत्साहन मीरा को प्रेरित करता है। वह आपकी दोस्ती को मजबूत करने, आपके समर्थन की सराहना करती है। आपका उच्च भावनात्मक गुणक मीरा को भावनात्मक रूप से, आत्मविश्वास वापस पाने और नई नौकरी खोजने में मदद करता है।
- आपके उच्च भावनात्मक गुणक ने आपको मीरा की भावनाओं को पहचानने, उसके साथ समानुभूति रखने और सकारात्मक प्रतिक्रिया देने में मदद की। इससे मीरा को मदद मिली और आपका रिश्ता मजबूत हुआ।

बौद्धिक गुणक (आईक्यू)

- बौद्धिक गुणक (आईक्यू) किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं को मापता है। यह उनकी सोच, तर्क, समस्या-समाधान और सीखने की क्षमताओं का आकलन करता है।
- यह किसी व्यक्ति के शैक्षणिक और संज्ञानात्मक प्रदर्शन को निर्धारित करता है, जो समस्याओं को प्रभावी ढंग से समझने, जुड़ने और हल करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है।

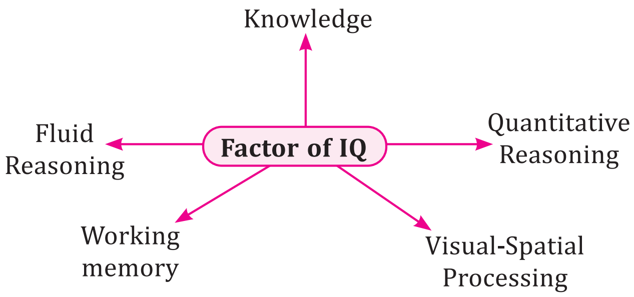

चित्र: आईक्यू के कारक

भावनात्मक गुणक और बौद्धिक गुणक के बीच अंतर

भावनात्मक गुणक (ईक्यू)	बौद्धिक गुणक (आईक्यू)
• किसी व्यक्ति की भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता को मापता है।	• किसी व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं और बुद्धिमत्ता को मापता है।
• आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और भावना विनियमन सहित भावनात्मक कौशल पर ध्यान केंद्रित करता है।	• तार्किक तर्क, समस्या-समाधान और स्मृति जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
• रिश्ते बनाने और बनाए रखने, संघर्षों को सुलझाने और प्रभावी संचार में मदद करता है।	• शैक्षणिक और संज्ञानात्मक प्रदर्शन, समस्या-समाधान और नई जानकारी सीखने में मदद करता है।
• किसी व्यक्ति की भावनात्मक बुद्धिमत्ता या "भावनात्मक तीव्रबुद्धि" को दर्शाता है।	• किसी व्यक्ति की बौद्धिक क्षमताओं या "संज्ञानात्मक बुद्धिमत्ता" को दर्शाता है।

• उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता सहानुभूति, अनुकूलनशीलता और लचीलेपन से जुड़ा है।	• उच्च बौद्धिक गुणक विश्लेषणात्मक सोच, शैक्षणिक सफलता और संज्ञानात्मक प्रदर्शन से जुड़ा है।
• आत्म-जागरूकता, सहानुभूति प्रशिक्षण और भावनात्मक विनियमन अभ्यास के माध्यम से विकसित और सुधार किया जा सकता है।	• आनुवंशिक और पर्यावरणीय प्रभाव के साथ अपेक्षाकृत स्थिर और कम लचीला माना जाता है।
• आवश्यक नहीं है कि यह उच्च बौद्धिक गुणक से संबंधित हो।	• जरूरी नहीं कि यह उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित हो।
• बौद्धिक गुणक -संबंधित कौशल के उदाहरण: भावनाओं को पहचानना, दूसरों के दृष्टिकोण को समझना और संघर्षों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना।	• बौद्धिक गुणक -संबंधित कौशल के उदाहरण: समस्या-समाधान, आलोचनात्मक सोच और तार्किक तर्क।

आइए बौद्धिक गुणक (आईक्यू) की अवधारणा को स्पष्ट करने में मदद के लिए एक उदाहरण पर विचार करें

- कल्पना कीजिए कि आकांक्षा और रीता गणित के दो परीक्षार्थी हैं। आकांक्षा का बौद्धिक गुणक उच्च है, जबकि रीता का औसत।
- इनका परीक्षण जटिल गणित प्रश्नों से शुरू होता है जिसके लिए आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान की आवश्यकता होती है। आकांशा की उच्च बुद्धि उसे समस्याओं का त्वरित विश्लेषण करने, अवधारणाओं को जोड़ने और प्रभावी समाधान खोजने की अनुमति देती है। वह समस्याओं को जल्दी और तार्किक रूप से हल करती है लेकिन त्रुटि-प्रवण रहती है।
- हालांकि, रीता का बौद्धिक गुणक औसत है जिसके कारण उसके लिए चीजें कठिन होती हैं। गणितीय सिद्धांत और एक व्यवस्थित दृष्टिकोण उनकी पद्धतियाँ हैं। वह समस्याओं को हल करने के लिए अच्छे तर्क का उपयोग करती है, भले ही इसमें अधिक समय लगे।
- यह उदाहरण आकांक्षा और रीता के बौद्धिक गुणक के अंतर को दर्शाता है। आकांक्षा का उच्च आईक्यू उसे समस्याओं को तेजी से हल करने में मदद करा है, जबकि रीता का औसत आईक्यू उसे धीमा कर देता है लेकिन सटीकता बनाए रखता है।
- **निष्कर्षत:** बौद्धिक गुणक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संयोजन से अच्छे परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में भावनाओं को प्रभावी ढंग से समझना, प्रबंधित करना और व्यक्त करना शामिल है जो प्रभावी और कुशल निर्णय लेने में मदद करता है। इसके विपरीत, बौद्धिक गुणक तेजी से निष्पादन और समस्या-समाधान में तेजी लाने में मदद करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता बनाम भावनात्मक बुद्धिमत्ता

अरस्तू

"कोई भी क्रोधित हो सकता है, यह आसान है; लेकिन सही व्यक्ति पर, और सही मात्रा में, और सही समय पर, और सही उद्देश्य के लिए, और सही तरीके से क्रोधित होना हर किसी के वश की बात नहीं है।" यह आसान नहीं है।''

पैरामीटर	कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई)	भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई)
परिभाषा	• एक मशीन या कंप्यूटर सिस्टम की मानव बुद्धि का अनुकरण करने और ऐसे कार्य करने की क्षमता जिनके लिए सामान्य रूप से मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है।	• अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और प्रबंधित करने की क्षमता, साथ ही विभिन्न स्थितियों में भावनाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता।
मानव अंत:क्रिया	• आवाज पहचानना, प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और चौटबॉट एआई सिस्टम को मनुष्यों के साथ बातचीत करने की अनुमति देते हैं, लेकिन उनमें भावनात्मक समझ और जुड़ाव का अभाव होता है।	• भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रभावी मानवीय संपर्क की अनुमति देता है, जैसे सक्रिय होकर सुनना, सहानुभूति, अशाब्दिक संकेतों को समझना और संबंध निर्माण।

निर्णय लेना	• एआई एल्गोरिदम भारी मात्रा में डेटा संसाधित करने और पूर्वनिर्धारित नियम प्रतिरुप के आधार पर तार्किक निर्णय लेने में सक्षम हैं।	• भावनात्मक बुद्धिमत्ता में निर्णय लेने में भावनाओं पर विचार करना, स्वयं और दूसरों पर भावनाओं के प्रभाव को पहचानना और सूचित निर्णय लेना शामिल है जो तर्कसंगतता और भावनात्मक कारकों दोनों को ध्यान में रखते हैं।
अनुप्रयोग	• स्वचालन, डेटा विश्लेषण, पूर्वानुमानित मॉडलिंग, रोबोटिक्स, आभासी सहायक और अन्य उद्योग सभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करते हैं।	• पारस्परिक संबंध, नेतृत्व, टीम वर्क, ग्राहक सेवा, संघर्ष समाधान, और समानुभूति और मानवीय भावनाओं की समझ की आवश्यकता वाली भूमिकाएं सभी ईआई से लाभान्वित होती हैं।
सीमाएं	• कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में मानव जैसी भावनात्मक समझ, अंतर्ज्ञान और व्यक्तिपरक अनुभवों का अभाव है, जिससे जटिल मानवीय भावनाओं और संदर्भों को पूरी तरह से समझने की इसकी क्षमता सीमित हो जाती है।	• ईआई में व्यक्तिगत अंतर मौजूद हैं, और इसके विकास के लिए समय, अभ्यास और आत्म-प्रतिबिंब की आवश्यकता होती है, जिनमें से सभी व्यक्तिपरक हो सकते हैं और वस्तुनिष्ठ रूप से मात्रा निर्धारित करना कठिन हो सकता है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता बनाम सहानुभूति बनाम समानुभूति

- **सहानुभूति:** यह स्वयं का महसूस किए बिना दूसरों की भावनाओं को समझने से संबंधित है। यह उस व्यक्ति के प्रति दया के साथ-साथ दया के समान भावना है जिसने किसी अवांछित परिदृश्य का सामना किया हो।
- **समानुभूति:** यह दूसरों के दृष्टिकोण से सोचने और महसूस करने से संबंधित है। समानुभूति और करुणा का प्रयोग अधिकतर एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है। जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था, **"बुद्धिमान दिमाग के बजाय दयालु हृदय वाले व्यक्ति को प्राथमिकता दें"।**

> - **Apathy:** Indifference
> - **Sympathy:** Kindness
> - **Empathy:** Experience
> - **Compassion:** Action

- सहानुभूति और समानुभूति में दूसरों की भावनाओं को पहचानना और उन पर प्रतिक्रिया देना शामिल है। दूसरी ओर, भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कौशल का एक व्यापक समूह शामिल होता है जिसमें आत्म-जागरूकता और स्वयं और दूसरों की भावनाओं को समझना और प्रबंधित करना दोनों शामिल हैं।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता केवल भावनाओं को स्वीकार करके आगे बढ़कर भावनात्मक जागरूकता, विनियमन और प्रभावी पारस्परिक कौशल विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **परिदृश्य:** एक मित्र की हाल ही नौकरी चली गई-

Feeling → Sympathy → Empathy → Compassion → Action

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई)	सहानुभूति	समानुभूति
इस परिदृश्य में उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाला व्यक्ति निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा: आत्म-जागरूकता: वे अपनी भावनाओं और नौकरी छूटने के बारे में अपने किसी भी पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा को पहचानेंगे। **स्व-नियमन:** वे अपनी भावनाओं को स्वयं प्रबंधित करेंगे और किसी भी नकारात्मक या आलोचनात्मक प्रतिक्रिया से बचते हुए संयमित रहेंगे।	**सहानुभूति:** मित्र की नौकरी छूटने पर सहानुभूतिपूर्ण प्रतिक्रिया में समान अनुभव साझा किए बिना चिंता, करुणा और समर्थन व्यक्त करना शामिल होगा। **उदाहरण:** एक सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति कह सकता है, "मुझे आपकी नौकरी के बारे में सुनकर दुख हुआ। यह वास्तव में दुखद है। यदि मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं या यदि आपको किसी से बात करनी है, तो मैं आपके साथ हूं।"	वे अपने मित्र पर नौकरी छूटने के प्रभाव को स्वीकार करते हुए सक्रिय रूप से अपने मित्र की भावनाओं को समझेंगे और साझा करेंगे। **सामाजिक कौशल:** वे अपने दोस्तों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करेंगे, सहायता प्रदान करेंगे, और यदि उपयुक्त हो तो संसाधन या मार्गदर्शन प्रदान करेंगे।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक अभिक्षमता

- सामाजिक अभिक्षमता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता एक दूसरे से संबंधित अवधारणाएं हैं जो किसी व्यक्ति की सामाजिक अंत:क्रिया को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने की क्षमता को प्रभावित करती हैं।
- **सामाजिक अभिक्षमता में संज्ञानात्मक क्षमताएं,** भावनात्मक प्रक्रियाएं, व्यवहार कौशल, सामाजिक जागरूकता और पारस्परिक संबंधों से संबंधित व्यक्तिगत और सांस्कृतिक मूल्य शामिल हैं।
- **यह उम्र,** व्यक्ति और स्थिति के आधार पर भिन्न होता है, जिससे यह पारस्परिक संबंधों का एक महत्वपूर्ण पहलू बन जाता है।
- **उदाहरण:** बार-बार धमकाने का शिकार होने के बावजूद, मैंने शांति से जवाब देकर, मुद्दे को दृढ़ता से संबोधित करके, भरोसेमंद व्यक्तियों से मदद मांगकर और दूसरों के लिए सहानुभूति बनाए रखकर सामाजिक क्षमता का प्रदर्शन किया है, जिससे एक अच्छा और समावेशी माहौल स्थापित हुआ है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक बुद्धिमत्ता

- **सामाजिक बुद्धिमत्ता (एसआई)** एक व्यक्ति की अन्य लोगों की भावनाओं को समझने और किसी दिए गए स्थिति में सबसे प्रभावी प्रतिक्रिया चुनने के लिए सूक्ष्म व्यवहार संकेतों को पढ़ने की क्षमता है।
- यह लोगों को सफलतापूर्वक संबंध बनाने और सामाजिक वातावरण में नेविगेट करने में सहायता करता है।

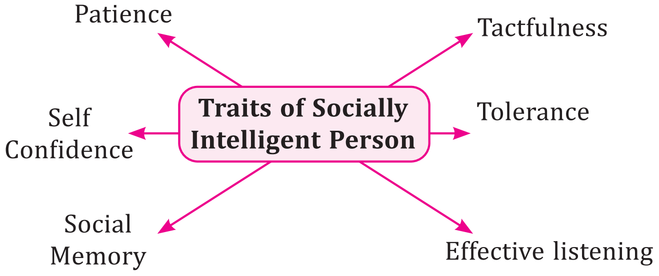

चित्र: सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति के लक्षण

- **उदाहरण:** महात्मा गांधी ने सामाजिक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया जब उन्होंने अहिंसा के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता का नेतृत्व करने का विकल्प चुना। उन्होंने माना कि हिंसा से केवल अधिक रक्तपात होगा। उन्हें अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अंग्रेजों के साथ संबंध स्थापित करना महत्वपूर्ण था। वह विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए अपने सामाजिक कौशल का उपयोग करने में सक्षम थे, जिससे अंतत: भारतीय स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

सामाजिक बुद्धिमत्ता के प्रमुख तत्व

- **मौखिक प्रवाह और संवादात्मक कौशल:** सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति संवेदनशीलता और उपयुक्तता बनाए रखते हुए विविध व्यक्तियों के साथ जुड़ सकते हैं।
  - **उदाहरण:** स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो में अपने व्याख्यान में **'अमेरिका की बहनों और भाइयों'** वाक्यांश का सूक्ष्मता के साथ प्रयोग किया।
- **सामाजिक भूमिकाओं, नियमों और स्क्रिप्ट का ज्ञान:** सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति विभिन्न भूमिकाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करते हैं और सामाजिक मानदंडों को समझते हैं।
  - **उदाहरण:** गांधीजी स्वतंत्रता-पूर्व भारत में महिलाओं के लिए निर्धारित सामाजिक भूमिकाओं से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने उन्हें स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की अनुमति देने के लिए एक उचित रणनीति तैयार की।
- **सुनने का प्रभावी कौशल:** सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति अच्छे श्रोता होते हैं और उनका दृष्टिकोण सकारात्मक होता है, जिससे वे दूसरों के साथ मजबूत संबंध बनाते हैं।
  - **उदाहरण:** पूर्व राष्ट्रपति के.आर. नारायणन एचआईवी संक्रमित व्यक्ति से हाथ मिलाने वाले और सकारात्मक रवैया दिखाने वाले पहले सार्वजनिक व्यक्ति (उपराष्ट्रपति के रूप में) बने।
- **प्रभाव प्रबंधन कौशल:** सामाजिक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति अपनी छवि और प्रामाणिकता को प्रभावी ढंग से संतुलित करते हैं।
  - **उदाहरण:** बेंगलुरु के डिप्टी कमिश्नर चेतन सिंह राठौड़ ने प्रदर्शनकारियों से बात की और उन्हें शांत करने के लिए राष्ट्रगान गाया।
- **संघर्ष समाधान:** सामाजिक बुद्धिमत्ता के लिए संघर्ष समाधान कौशल की आवश्यकता होती है। इसमें रचनात्मक रूप से संघर्षों का प्रबंधन और समाधान करना, उचित समाधान ढूंढना और सकारात्मक संबंधों को बनाए रखते हुए असहमति या विवादों को प्रभावी ढंग से सुलझाना शामिल है।
  - **उदाहरण:** एक बैठक की सुविधा प्रदान करना जिसमें विरोधी पक्ष अपनी चिंताओं को व्यक्त करते हैं, सक्रिय रूप से प्रत्येक व्यक्ति के दृष्टिकोण को सुनते हैं, और पारस्परिक रूप से लाभप्रद समाधान तक पहुंचने में उनकी सहायता करते हैं।
- **संबंध निर्माण:** रिश्तों का विकास और पोषण करना सामाजिक बुद्धिमत्ता का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध बनाना और बनाए रखना, विश्वास पैदा

करना और सामाजिक संपर्क की गतिशीलता को समझना शामिल है।

- **उदाहरण:** सहकर्मियों के साथ सक्रिय जुड़ाव, सामाजिक कार्यक्रमों में उपस्थिति और उनके जीवन और कार्य में वास्तविक रुचि के माध्यम से एक मजबूत पेशेवर नेटवर्क का निर्माण करना।

- **सामाजिक अनुकूलनशीलता:** सामाजिक संदर्भ और विभिन्न व्यक्तियों या समूहों की आवश्यकताओं के जवाब में किसी के व्यवहार और संचार शैली को समायोजित करने की क्षमता को सामाजिक अनुकूलनशीलता कहा जाता है। इसमें विभिन्न सामाजिक स्थितियों में अनुकूलनीय, लचीला और खुले विचारों वाला होना शामिल है।
  - **उदाहरण:** विविध समूह के लोगों की प्राथमिकताओं और सांस्कृतिक मानदंडों को समायोजित करने के लिए अपनी संचार शैली और लहजे को संशोधित करना एक उदाहरण है।
- **अंतर्ज्ञान और सामाजिक संवेदनशीलता:** सामाजिक बुद्धिमत्ता अंतर्ज्ञान और सामाजिक संवेदनशीलता से प्रभावित होती है। इसमें सामाजिक गतिशीलता की सहज समझ, अनकहे संकेतों के प्रति संवेदनशील होना और किसी स्थिति के भावनात्मक माहौल का सटीक आकलन करना शामिल है।
  - **उदाहरण:** एक बैठक में तनाव का पता लगाना और अंतर्निहित चिंताओं को संबोधित करके और खुले और सम्मानजनक संचार को प्रोत्साहित करके इसे कम करना।

सामाजिक बुद्धिमत्ता का उदाहरण

- **फिल्म के चरित्र से:** बॉलीवुड फिल्म ''3 इडियट्स'' में आमिर खान द्वारा निभाया गया किरदार रैंचो, सामाजिक बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करता है। वह सामाजिक बाधाओं को पार करते हुए, जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों से सहजता से जुड़ता है। अपनी समावेशी मानसिकता के माध्यम से, वह टीम वर्क, समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है, व्यक्तिगत और शैक्षणिक विकास के लिए सामंजस्यपूर्ण और सहायक वातावरण को बढ़ावा देते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित प्रमुख शब्दावली और परिभाषा

- **भावनात्मक लचीलापन:** असफलताओं से उबरने, परिवर्तन के अनुकूल होने और तनाव और प्रतिकूल परिस्थितियों से प्रभावी ढंग से निपटने की क्षमता। इसमें सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखना, आशावादी बने रहना और तनावपूर्ण स्थितियों में भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होना शामिल है।
- **भावनात्मक जागरूकता:** स्वयं और दूसरों में भावनाओं को पहचानने और समझने की क्षमता। भावनाओं की बेहतर समझ हासिल करने के लिए, चेहरे के भाव, शारीरिक भाषा और मौखिक स्वर जैसे भावनात्मक संकेतों को पहचानना आवश्यक है।
- **भावनात्मक विनियमन:** आवेगी या विनाशकारी प्रतिक्रियाओं से बचने के लिए किसी की भावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रबंधित और नियंत्रित करने की क्षमता। भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए, यह गहरी साँस लेने, विश्राम तकनीक और संज्ञानात्मक रीफ्रेमिंग जैसी तकनीकों को नियोजित करता है।
- **सामाजिक कौशल:** सामाजिक कौशल में सकारात्मक रिश्ते बनाने और बनाए रखने, प्रभावी ढंग से संवाद करने और दूसरों के साथ सहयोग करने की क्षमता शामिल है। सक्रिय रूप से सुनना, संघर्ष समाधान, टीम वर्क, और प्रभावी मौखिक और गैर-मौखिक संचार सभी आवश्यक हैं।
- **भावनात्मक चपलता:** इसे तेजी से बदलती और अप्रत्याशित दुनिया में अपनी भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं को नेविगेट करने और अनुकूलित करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें बाधाओं और असफलताओं के सामने अनुकूलनशील, खुले दिमाग वाला और लचीला होना शामिल है।
- **सहानुभूतिपूर्ण नेतृत्व:** एक नेतृत्व शैली जो कर्मचारियों या टीम के सदस्यों की भावनाओं और अनुभवों को समझने और उनके साथ जुड़ने पर जोर देती है। सहानुभूतिशील नेता सक्रिय रूप से सुनते हैं, वास्तविक चिंता दिखाते हैं, और एक सहायक और समावेशी कार्य वातावरण को बढ़ावा देते हैं।
- **भावनात्मक कल्याण:** इसे भावनात्मक रूप से स्वस्थ और लचीला होने की स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है। इसमें तनाव से निपटना, सकारात्मक रहना और किसी के व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में पूर्णता और उद्देश्य की भावना पैदा करना शामिल है।
- **भावनात्मक रूप से बुद्धिमान की नियुक्ति:** नौकरी के उम्मीदवारों का उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ-साथ उनके तकनीकी कौशल के आधार पर मूल्यांकन और चयन करने का अभ्यास। नियोक्ता समझते हैं कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लोग टीम वर्क, सहयोग और पारस्परिक संबंधों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण:** व्यक्तियों या संगठनों को उनके भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल को विकसित करने और सुधारने में मदद करने के लिए डिजाइन किए गए कार्यक्रम या हस्तक्षेप। संचार, टीम वर्क और समग्र भावनात्मक कल्याण में सुधार के लक्ष्य के साथ ये पाठ्यक्रम अक्सर

आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सहानुभूति और सामाजिक कौशल पर जोर देते हैं।

- **शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** शैक्षिक व्यवस्था में भावनात्मक बुद्धिमत्ता दक्षताओं का समावेश। शिक्षकों द्वारा छात्रों की शैक्षणिक सफलता और व्यक्तिगत विकास में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को महत्वपूर्ण माना जाता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक कौशल, सहानुभूति और लचीलेपन में सुधार कर सकता है।
- **कार्यस्थल में भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** पेशेवर व्यवस्था में भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल का अनुप्रयोग। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले कर्मचारियों को नियोक्ताओं द्वारा महत्व दिया जाता है क्योंकि वे कार्यस्थल की गतिशीलता को प्रभावी ढंग से नेविगेट कर सकते हैं, संघर्षों का प्रबंधन कर सकते हैं और सहकर्मियों और ग्राहकों के साथ सकारात्मक संबंध बना सकते हैं।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानसिक स्वास्थ्य:** भावनात्मक बुद्धिमत्ता और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंधों की एक परीक्षा। शोध के अनुसार, उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लोग अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानसिक स्वास्थ्य परिणाम बेहतर होते हैं और मानसिक स्वास्थ्य विकारों का जोखिम कम होता है।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता और विविधता:** विविध भावनात्मक अनुभवों, दृष्टिकोणों और सांस्कृतिक संदर्भों को पहचानना और उनकी सराहना करना। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने का अर्थ है विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों की भावनात्मक जरूरतों और अनुभवों के प्रति संवेदनशील होना, साथ ही एक समावेशी और न्यायसंगत वातावरण को बढ़ावा देना।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता और प्रौद्योगिकी:** इस बात की जांच करना कि प्रौद्योगिकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को कैसे प्रभावित करती है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी हमारे जीवन को आकार दे रही है, भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल को बेहतर बनाने और डिजिटल व्याकुलता या ऑनलाइन संचार गतिशीलता जैसी संभावित चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कैसे करें, यह सीखने में रुचि बढ़ रही है।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. बुद्धिमत्ता यह जानने में निहित है कि क्या मानना है और क्या अनदेखा करना है। एक अधिकारी का अपने सामने मौजूद मुख्य मुद्दों की अनदेखी करते हुए परिधि में ही उलझे रहना, नौकरशाही में कोई दुर्लभ बात नहीं है। (2022)
2. विवेक के संकट के मामले में क्या भावनात्मक बुद्धिमत्ता उस नैतिक या नैतिक रुख से समझौता किए बिना उस पर काबू पाने में मदद करती है जिसका आप पालन करने की संभावना रखते हैं? आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (2021)
3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) के मुख्य घटक क्या हैं? क्या उन्हें सीखा जा सकता है? चर्चा कीजिए। (2020)
4. "भावनात्मक बुद्धिमत्ता आपकी भावनाओं को आपके विरुद्ध करने के बजाय आपके लिए काम करने की क्षमता है।" क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत हैं? चर्चा कीजिए। (2019)
5. वर्तमान संदर्भ में आपके लिए इन उद्धरणों का क्या अर्थ है: "क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं" - महात्मा गांधी। (2018)
6. "एक अच्छा काम करने में, हर उस चीज की अनुमति है जो स्पष्ट रूप से या स्पष्ट निहितार्थ से निषिद्ध नहीं है"। एक लोक सेवक द्वारा अपने कर्तव्यों के निर्वहन के संदर्भ में उपयुक्त उदाहरणों के साथ कथन का परीक्षण कीजिए। (2018)
7. आप प्रशासनिक प्रथाओं में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को कैसे लागू करेंगे? (2017)
8. क्रोध एक हानिकारक नकारात्मक भावना है। यह निजी जीवन और कामकाजी जीवन दोनों के लिए हानिकारक है। (a) चर्चा कीजिए कि यह किस प्रकार नकारात्मक भावनाओं और अवांछनीय व्यवहारों को जन्म देता है। (b) इसे कैसे प्रबंधित और नियंत्रित किया जा सकता है? (2016)
9. सभी मनुष्य सुख की आकांक्षा रखते हैं। क्या आप सहमत हैं? आपके लिए सुख का क्या मतलब है? उदाहरण सहित समझाइये। (2014)
10. भावनात्मक बुद्धिमत्ता क्या है और इसे लोगों में कैसे विकसित किया जा सकता है? यह किसी व्यक्ति को नैतिक निर्णय लेने में कैसे मदद करता है? (2013)
11. 'अंतरात्मा की आवाज' शब्द से आप क्या समझते हैं? अंतरात्मा की आवाज सुनने के लिए आप खुद को कैसे तैयार करते हैं? (2013)
12. 'विवेक के संकट' से क्या तात्पर्य है? अपने जीवन की एक घटना बताइए जब आपके सामने ऐसा संकट आया था और आपने उसका समाधान कैसे किया। (2013)

केस स्टडी

1. पवन पिछले दस वर्षों से राज्य सरकार में एक अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। नियमित स्थानांतरण के तहत उन्हें दूसरे विभाग में तैनात किया गया था। वह पांच अन्य सहयोगियों के साथ एक नए कार्यालय में शामिल हुए। कार्यालय का प्रमुख कार्यालय के कामकाज से परिचित एक वरिष्ठ अधिकारी था।

सामान्य पूछताछ के दौरान, पवन को पता चला कि उसका वरिष्ठ अधिकारी एक कठिन और असंवेदनशील व्यक्ति होने की प्रतिष्ठा रखता है, जिसका अपना पारिवारिक जीवन अशांत है। शुरू में तो सब ठीक लग रहा था। हालाँकि, कुछ समय बाद पवन को लगा कि वरिष्ठ अधिकारी उसे अपमानित करता और कभी-कभी कुछ अनुचित भी करता। बैठकों में पवन जो भी सुझाव दिए या विचार व्यक्त किए, उन्हें सिरे से खारिज कर दिया गया और वरिष्ठ अधिकारी दूसरों की उपस्थिति में नाराजगी व्यक्त किए। यह बॉस की कार्यशैली का एक प्रतिरुप न बन गया कि उसे खराब छवि में दिखाया जाए, उसकी कमियों को उजागर किया जाए और उसे सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाए। यह स्पष्ट हो गया कि हालांकि काम से संबंधित कोई गंभीर समस्याएँ/कमियां नहीं थीं, लेकिन वरिष्ठ अधिकारी हमेशा किसी न किसी बहाने से उसे डांटते और चिल्लाते रहते थे। लगातार उत्पीड़न और सार्वजनिक आलोचना के कारण पवन ने आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान और संतुलन खो दिया। पवन को एहसास हुआ कि उसके वरिष्ठ अधिकारी के साथ उसके संबंध अधिक विषाक्त होते जा रहे थे और इसके कारण, वह लगातार परेशान और चिंतित रहने लगा था। उनका मन नकारात्मकता से भरा हुआ था। इससे उन्हें मानसिक यातना और पीड़ा हुई। आखरिकार इसका उनके निजी और पारिवारिक जीवन पर बुरा असर पड़ा। अब वह घर पर भी प्रसन्न, खुश और संतुष्ट नहीं थे। बल्कि बिना किसी कारण के वह अपनी पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों पर अपना आपा खो देते थे। पारिवारिक वातावरण अब सुखद एवं सौहार्दपूर्ण नहीं रहा। उनकी पत्नी जो हमेशा उनका साथ देती थीं, वह भी उनकी नकारात्मकता और शत्रुतापूर्ण व्यवहार का शिकार हो गई। कार्यालय में उत्पीड़न और अपमान के कारण उनके जीवन से आराम और खुशी लगभग गायब हो गई। इस प्रकार, इससे उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा।

(*a*) इस स्थिति से निपटने के लिए पवन के पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(*b*) कार्यालय और घर में शांति, सुकून और अनुकूल वातावरण लाने के लिए पवन को क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिए?

(*c*) एक बाहरी व्यक्ति के रूप में, इस स्थिति से उबरने और कार्य प्रदर्शन, मानसिक और भावनात्मक स्वच्छता में सुधार के लिए बॉस और अधीनस्थ दोनों के लिए आपके क्या सुझाव हैं?

(*d*) उपरोक्त परिदृश्य में, आप सरकारी कार्यालयों में विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों के लिए किस प्रकार के प्रशिक्षण का सुझाव देंगे? (2021 यूपीएससी मुख्य परीक्षा)

दृष्टिकोण

- **परिचयः** मुद्दे की पहचान, भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अनुपस्थिति, वरिष्ठ नागरिकों और हितधारकों द्वारा अधिकार का दुरुपयोग जैसे नैतिक पहलू।
- **मुख्य भागः** खाद्य कंपनी के सुरक्षा मानकों और स्वास्थ्य मानदंडों के उल्लंघन के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों की पहचान करना। चर्चा कीजिए कि पवन को विभिन्न स्थानों पर क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। केस में शामिल नैतिक दुविधाओं की पहचान करना।
- **निष्कर्षः** उपलब्ध विकल्पों और खाद्य कंपनी द्वारा की जाने वाली अपेक्षित कार्रवाई पर प्रकाश डालना।

2. आप गंभीर प्राकृतिक आपदा से प्रभावित क्षेत्र में बचाव अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं। हजारों लोग बेघर हो गए हैं और भोजन, पीने के पानी और अन्य बुनियादी सुविधाओं से वंचित हो गए हैं। भारी वर्षा और आपूर्ति मार्गों के क्षतिग्रस्त होने से बचाव कार्य बाधित हो गया है। सीमित बचाव कार्यों में देरी से स्थानीय लोग गुस्से में हैं। जब आपकी टीम प्रभावित क्षेत्र में पहुंचती है तो वहां मौजूद लोग टीम के कुछ सदस्यों के साथ धक्का-मुक्की और मारपीट भी करते हैं। आपकी टीम का एक सदस्य गंभीर रूप से घायल भी हो गया है। इस संकट का सामना करते हुए, टीम के कुछ सदस्य अपनी जान को खतरा होने के डर से ऑपरेशन बंद करने का अनुरोध कर रहे हैं।

   ऐसी कठिन परिस्थितियों में आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? एक लोक सेवक के उन गुणों की जांच कीजिए जिनकी उस स्थिति से निपटने के लिए आवश्यकता होगी। (2019 यूपीएससी मुख्य परीक्षा)

दृष्टिकोण

- **परिचयः** मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- **मुख्य भागः** बचाव अभियान में चुनौतियों का विश्लेषण। योग्यता के अनुसार विभिन्न संभावित विकल्पों/प्रतिक्रियाओं की खोज करना। लोक सेवक के गुणों की परीक्षा।
- **निष्कर्षः** कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनकर स्थिति का जवाब दें।

3. डॉ. एक्स एक शहर के अग्रणी चिकित्सक हैं। उन्होंने एक धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की है जिसके माध्यम से वह समाज के सभी वर्गों की चिकित्सा आवश्यकताओं को पूरा

करने के लिए शहर में एक सुपर-स्पेशियलिटी अस्पताल स्थापित करने की योजना बना रहे हैं। संयोग से, राज्य का वह हिस्सा वर्षों से उपेक्षित रहा है। प्रस्तावित अस्पताल क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगा। आप उस क्षेत्र की कर जांच एजेंसी का नेतृत्व कर रहे हैं। डॉक्टर के क्लिनिक के निरीक्षण के दौरान आपके अधिकारियों को कुछ बड़ी अनियमितताएं मिलीं। उनमें से कुछ ठोस आधार हैं जिसके परिणामस्वरूप कर में काफी वृद्धि हुई है जिसका भुगतान उन्हें अब करना चाहिए। डॉक्टर सहयोगी है। वह तुरंत कर का भुगतान करने का वचन देता है। हालाँकि, उनके कर अनुपालन में कुछ अन्य कमियाँ हैं जो पूरी तरह से तकनीकी प्रकृति की हैं। यदि इन तकनीकी चूकों पर एजेंसी द्वारा कार्रवाई की जाती है, तो डॉक्टर का काफी समय और ऊर्जा उन मुद्दों पर खर्च हो जाएगी जो इतने गंभीर, अत्यावश्यक या यहां तक कि कर संग्रह प्रक्रिया के लिए सहायक नहीं हैं। इसके अलावा, पूरी संभावना है कि इससे अस्पताल के निर्माण की संभावनाएं प्रभावित होंगी।

आपके सामने दो विकल्प हैं:

(*a*) व्यापक दृष्टिकोण अपनाते हुए, पर्याप्त कर अनुपालन सुनिश्चित कीजिए और उन चूकों की अनदेखी कीजिए जो केवल तकनीकी प्रकृति की हैं।

(*b*) केस को सख्ती से आगे बढ़ाएं और सभी मोर्चों पर आगे बढ़ें, चाहे वह महत्वपूर्ण हो या केवल तकनीकी।

कर एजेंसी के प्रमुख के रूप में, आप कौन सी कार्रवाई का विकल्प चुनेंगे और क्यों?

(2018 यूपीएससी मुख्य परीक्षा)

दृष्टिकोण

- **परिचय:** मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- **मुख्य भाग:** मामले में शामिल उद्देश्य और व्यक्तिपरक मुद्दों का विश्लेषण करना - कर अनुपालन अनियमितताएं और डॉक्टर की मंशा।
- वास्तविक बनाम इच्छित उद्देश्य की पहचान करना।
- पहचान पूछताछ और व्यक्तिपरक विश्लेषण।
- विभिन्न संभावित विकल्पों की खोज करना और योग्यता के अनुसार उनका मूल्यांकन करना।
- **निष्कर्ष:** कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनकर स्थिति का जवाब दें।

4. आप किसी संगठन के मानव संसाधन विभाग के प्रमुख हैं। एक दिन एक कर्मचारी की ड्यूटी पर मृत्यु हो गई। उनका परिवार मुआवजे की मांग कर रहा था। हालाँकि, कंपनी ने मुआवजा देने से इनकार कर दिया क्योंकि जाँच में पता चला कि दुर्घटना के समय वह नशे में था। कंपनी के कर्मचारी मृतक के परिवार को मुआवजा देने की मांग को लेकर हड़ताल पर चले गये। प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष ने आपकी अनुशंसा मांगी है। आप प्रबंधन को क्या सिफारिशें देंगे? प्रत्येक अनुशंसा के गुण और दोषों पर चर्चा कीजिए। (20 अंक) (250 शब्द) (2017 यूपीएससी मुख्य परीक्षा)

दृष्टिकोण

- **परिचय:** मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- **मुख्य भाग:** प्रस्तावों के गुण और दोषों के आधार पर प्रबंधन को सिफारिशें करना।
- **निष्कर्ष:** सर्वोत्तम कार्रवाई की पहचान करना।

❖ ❖ ❖

5 भारत और दुनिया के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान

"अगर मुझसे पूछा जाए कि किस आकाश के नीचे मानव मन ने अपने कुछ सबसे अच्छे उपहारों को पूरी तरह से विकसित किया है, जीवन की सबसे बड़ी समस्याओं पर गहराई से विचार किया है, और उनमें से कुछ के समाधान खोजे हैं जो प्लेटो और कांट का अध्ययन करने वालों के लिए भी ध्यान देने योग्य हैं, तो मुझे भारत की ओर इशारा करना चाहिए।" **–मैक्स मुलर**

पाठयक्रम
भारत और दुनिया के नैतिक विचारकों और दार्शनिकों का योगदान।

5.1 पश्चिमी दर्शन और पश्चिमी विचारक

दर्शन: अर्थ और अवधारणा

- फिलॉसफी ग्रीक शब्द-फिलोसोफिया से लिया गया है जिसका अर्थ है 'ज्ञान (प्रज्ञा) के प्रति अनुराग' जोकि पूर्व-सुकराती विचारक पाइथागोरस (छठी शताब्दी ईसा पूर्व) द्वारा गढ़ा गया।
- दर्शन हमारे आसपास की दुनिया के बारे में सोचने और सवाल पूछने का एक तरीका है। यह हमारे विचारों और तर्क का उपयोग करके चीजों को समझने की कोशिश करने के बारे में है।
  - कल्पना कीजिए कि आप इस बारे में उत्सुक हैं कि चीजें क्यों होती हैं या क्या सही और गलत है। दर्शन एक उपकरण की तरह है जो आपको उन सवालों का पता लगाने और जवाब खोजने में मदद करता है।
- प्राचीन ग्रीस में, सुकरात और प्लेटो जैसे महान दार्शनिक थे। उन्होंने जीवन, ज्ञान और हमें कैसे जीना चाहिए, इसके बारे में गहराई से सोचने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल किया। उन्होंने बड़े सवाल पूछे जैसे "जीवन का अर्थ क्या है?" या "हम कैसे जानते हैं कि क्या सच है?"
- दर्शन आज भी महत्वपूर्ण है। यह हमें खुद को, दुनिया को और इसमें हमारी जगह को समझने में मदद करता है। यह एक गाइड की तरह है जो हमें चीजों की समझ बनाने और अच्छे निर्णय लेने में मदद करता है।
  - उदाहरण के लिए, मान लें कि आपके पास एक दोस्त है जो इस बारे में बहस कर रहा है कि झूठ बोलना सही है या नहीं। दर्शन आपको यह सोचने में मदद करेगा कि सच बोलना क्यों महत्वपूर्ण है और झूठ बोलने के परिणाम क्या हो सकते हैं। यह आपको यह पता लगाने में मदद करेगा कि आपको क्या लगता है कि क्या करना सही है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो प्रकृति और उस समाज में कार्य कारण संबंध को समझने की कोशिश करता है जिसमें वह रहता है।

5.2 पश्चिमी विचारक

5.2.1 सुकरात

- उनका जन्म 470 ईसा पूर्व एथेंस में हुआ था और उस समय के सार्वजनिक हस्तियों और अधिकारियों के साथ उनके संवाद और बहस के लिए जाने जाते हैं। इस तकनीक को मैयूटिक्स कहा जाता है।

सुकरात का दर्शन

- सुकरात को उनकी सोक्रेटिक विधि के लिए जाना जाता है, जो पूछताछ और संवाद का एक रूप है जिसमें आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करने और आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए जांच प्रश्न पूछना शामिल है। इस पद्धति के माध्यम से, सुकरात ने लोगों की धारणाओं को चुनौती देने, विसंगतियों को प्रकट करने और गहरी सच्चाइयों तक पहुंचने का लक्ष्य रखा।
  - **कार्यान्वयन:** सिविल सेवाओं के संदर्भ में, नौकरशाह और प्रशासक खुले संवाद को बढ़ावा देने, तर्कसंगत जांच में संलग्न होने और अच्छी तरह से सूचित निर्णय लेने के लिए सोक्रेटिक विधि का उपयोग कर सकते हैं।
  - **उदाहरण:** नीतिगत चर्चाओं के दौरान, सिविल सेवक पूरी तरह से विश्लेषण को प्रोत्साहित करने और समाधान पर पहुंचने से पहले विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करने के लिए जांच प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं।

- सुकरात ने प्रसिद्ध रूप से दावा किया कि वह बुद्धिमान था क्योंकि वह जानता था कि वह सब कुछ नहीं जानता था। उसने अपने ज्ञान की सीमाओं को स्वीकार किया और "सुकराती अज्ञानता" की स्थिति को गले लगा लिया, यह मानते हुए कि सीखने के लिए हमेशा और अधिक होता है।
  - **कार्यान्वयन:** सिविल सेवा में, यह दर्शन सिविल सेवकों को एक विनम्र और ग्रहणशील दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, यह मानते हुए कि समझने और खोजने के लिए हमेशा अधिक होता है।
  - **उदाहरण:** सिविल सेवकों को यह स्वीकार करना चाहिए कि उनके पास विकास के लिए जगह है और नए दृष्टिकोण और विचारों के लिए खुले रहें।
- **सद्‌गुण नैतिकता:** सुकरात ने नैतिक सद्‌गुण और नैतिक आचरण के महत्व पर जोर दिया। उनका मानना था कि ज्ञान और आत्म-निरीक्षण की खोज को सदाचारी चरित्र विकसित करने और खुद को नैतिक रूप से बेहतर बनाने की दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए। सुकरात ने तर्क दिया कि मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य यूडेमोनिया प्राप्त करना है, जिसका अनुवाद अक्सर "समृद्ध" या "अच्छी तरह से जीना" के रूप में किया जाता है।
  - **कार्यान्वयन:** सिविल सेवाओं के दायरे में, लोक सेवकों से नैतिक मूल्यों को बनाए रखने, अखंडता का प्रदर्शन करने और जनता की भलाई को प्राथमिकता देने की उम्मीद की जाती है।
  - उदाहरण के लिए, सद्‌गुण नैतिकता का पालन करने वाला एक सिविल सेवक भ्रष्ट प्रथाओं का विरोध कर सकता है, न्यायसंगत कार्य कर सकता है, और ऐसे निर्णय ले सकता है जो व्यक्तिगत लाभ के बजाय समाज के लिए दीर्घकालिक लाभों पर विचार करते हैं।
- **परीक्षित जीवन:** सुकरात ने आत्म-चिंतन और आत्म-ज्ञान की खोज की वकालत की। सुकरात ने प्रसिद्ध रूप से घोषणा की थी कि "अपरिक्षित जीवन जीने लायक नहीं है।" उनका मानना था कि सार्थक और पूर्ण जीवन जीने के लिए व्यक्तियों को अपने विश्वासों, मूल्यों और कार्यों पर लगातार सवाल उठाना चाहिए और उनकी जांच करनी चाहिए। सुकरात ने आत्मनिरीक्षण और आत्म-जागरूकता को प्रोत्साहित करते हुए तर्क दिया कि व्यक्तिगत विकास और नैतिक विकास के लिए आत्म-ज्ञान आवश्यक है।
  - **कार्यान्वयन:** सिविल सेवा के संदर्भ में, सिविल सेवक अपने उद्देश्यों, पूर्वाग्रहों और व्यक्तिगत मूल्यों का आकलन करने के लिए नियमित आत्मनिरीक्षण में संलग्न हो सकते हैं। अपने स्वयं के कार्यों और विश्वासों की गंभीर जांच करके, वे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनके निर्णय और नीतियां निष्पक्ष और न्याय के सिद्धांतों के साथ संरेखित हैं।
- **समानता और न्याय:** सुकरात ने समानता और न्याय के आदर्शों पर जोर दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति के पास आंतरिक मूल्य होता है और उसके साथ निष्पक्षता और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। सुकरात ने तर्क दिया कि न्याय में प्रत्येक व्यक्ति को वह देना शामिल है जो वे देय हैं और यह सुनिश्चित करना कि कानून और सामाजिक संरचनाएं समानता और न्याय परायणता के सिद्धांतों पर आधारित हैं।
  - **कार्यान्वयन:** भारत की सिविल सेवाओं में, यह दर्शन लोक सेवकों को सभी नागरिकों के लिए निष्पक्षता, समावेशिता और समान उपचार के लिए प्रयास करने का आह्वान करता है।
  - उदाहरण के लिए, सिविल सेवक उन नीतियों को लागू करने की दिशा में काम कर सकते हैं जो सामाजिक असमानताओं को कम करते हैं, सार्वजनिक सेवाओं तक समान पहुंच प्रदान करते हैं, और संसाधनों के वितरण में न्याय के सिद्धांतों को बनाए रखते हैं।

सुकरात के दर्शन और इसके अनुप्रयोग का उदाहरण

राहुल नाम का एक व्यक्ति है जो पर्यावरण संरक्षण के बारे में भावुक है। सुकरात के आत्म-परीक्षा और ज्ञान की खोज पर जोर देने से प्रेरित होकर, राहुल ने अपने स्थानीय समुदाय के सामने आने वाली पारिस्थितिक चुनौतियों को समझने का फैसला किया।

राहुल आलोचनात्मक सोच में संलग्न होने और अपने क्षेत्र को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय मुद्दों पर शोध करने से शुरू करते हैं। वह विशेषज्ञों से ज्ञान की तलाश करता है, वैज्ञानिक साहित्य पढ़ता है, और स्थायी प्रथाओं पर सामुदायिक कार्यशालाओं में भाग लेता है। ज्ञान की इस खोज के माध्यम से, राहुल पारिस्थितिक चुनौतियों और संभावित समाधानों की व्यापक समझ विकसित करते हैं।

नैतिक सद्‌गुण पर सुकरात के ध्यान केंद्रित करने से प्रेरित, राहुल स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अपनी जीवन शैली में बदलाव को लागू करना शुरू कर देता है। वह रीसाइक्लिंग, ऊर्जा संरक्षण और सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने जैसी पर्यावरण के अनुकूल आदतों को अपनाकर अपने कार्बन पदचिह्न को कम करता है। वह अपने ज्ञान और अनुभवों को दूसरों के साथ भी साझा करता है, उन्हें समान प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

जैसे-जैसे राहुल पर्यावरण संरक्षण में अपनी भागीदारी को गहरा करता है, उन्हें संतुष्टि और खुशी का अनुभव होता है। वह जो नैतिक कार्य करता है वह सुकरात के एक सदाचारी जीवन जीने और समुदाय और पर्यावरण दोनों की भलाई में योगदान देने के दर्शन के साथ संरेखित होता है। ज्ञान का पीछा करके, नैतिक सद्गुण का अभ्यास करके, और सकारात्मक प्रभाव बनाने का प्रयास करके, राहुल पर्यावरणीय स्थिरता के लिए अपनी प्रतिबद्धता में उद्देश्य, संतोष और खुशी की भावना पाते हैं।

यह उदाहरण दर्शाता है कि सुकरात के दर्शन को वास्तविक जीवन स्थितियों पर कैसे लागू किया जा सकता है, जहां ज्ञान, नैतिक सद्गुण और सामान्य शुभ की खोज से व्यक्तिगत खुशी और पूर्ति की भावना हो सकती है।

5.2.2 प्लेटो

- प्लेटो एक प्राचीन ग्रीक दार्शनिक थे जिनका जन्म ग्रीक इतिहास के शास्त्रीय काल के दौरान एथेंस में हुआ था। प्लेटो ने एथेंस में अकादमी की स्थापना की, एक दार्शनिक स्कूल जहां उन्होंने दार्शनिक सिद्धांतों को पढ़ाया जो प्लैटोवाद के रूप में जाना जाने लगा।

प्लेटो का दर्शन

- **गुफा का रूपक:** प्लेटो की गुफा का रूपक एक कहानी है जो एक कैदी की अज्ञानता से आत्मज्ञान तक की यात्रा को दर्शाती है। रूपक में, कैदियों को एक अंधेरी गुफा के अंदर जंजीरों से बांधा जाता है, एक दीवार का सामना करना पड़ता है और केवल उनके पीछे आग द्वारा डाली गई वस्तुओं की छाया देखने में सक्षम होता है। कैदी जो गुफा से बचता है और बाहरी दुनिया को देखता है, वह दार्शनिक का प्रतिनिधित्व करता है जो ज्ञान प्राप्त करता है और भौतिक क्षेत्र की सीमित समझ को पार करता है।
  - **कार्यान्वयन:** गुफा का रूपक एक ऐसे व्यक्ति पर लागू किया जा सकता है जो विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों के सीमित संपर्क के साथ एक बंद और प्रतिबंधात्मक वातावरण में बड़ा हुआ है। जब यह व्यक्ति नए ज्ञान और अनुभवों के संपर्क में आता है, तो वे एक परिवर्तनकारी यात्रा से गुजरते हैं, अज्ञानता के रूपक "गुफा" से बचते हैं और दुनिया की अपनी समझ का विस्तार करते हैं।
- **आकार का सिद्धांत:** प्लेटो के आकार का सिद्धांत बताता है कि प्रत्यय या संप्रत्यय की एक परिपूर्ण दुनिया है जो हमारे द्वारा देखी जाने वाली भौतिक दुनिया से अलग मौजूद है। इस परिपूर्ण दुनिया में, सुंदरता, न्याय और सत्य जैसी चीजों के आदर्श संस्करण हैं।
  - उदाहरण के लिए, आइए एक सर्कल की अवधारणा के बारे में सोचें। भौतिक दुनिया में, हम वृत्त खींच सकते हैं, लेकिन वे कभी भी पूरी तरह से गोल नहीं होते हैं। हालांकि, प्लेटो के अनुसार, एक सर्कल का एक आदर्श रूप है जो रूपों की दुनिया में मौजूद है। भौतिक संसार में हम जो भी वृत्त देखते हैं, वह उस आदर्श रूप की अपूर्ण प्रतिलिपि मात्र है।
  - **कार्यान्वयन:** भारत में, देवताओं या देवताओं की अवधारणा में एक समान विचार देखा जा सकता है। लोग शिव, विष्णु या लक्ष्मी जैसे देवताओं में विश्वास करते हैं, जो शक्ति, प्रेम या समृद्धि जैसे पूर्ण गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन देवताओं को उन गुणों के आदर्श रूपों के रूप में देखा जाता है।
- **दार्शनिक-राजा:** प्लेटो का मानना था कि आदर्श राज्य को दार्शनिक-राजाओं द्वारा शासित किया जाना चाहिए जिनके पास बुद्धिमत्ता, ज्ञान और रूपों की गहरी समझ है। ये दार्शनिक-राजा तर्क के साथ शासन करेंगे, अपने स्वयं के हित के बजाय पूरे समाज की भलाई और न्याय का पीछा करेंगे। प्लेटो ने तर्क दिया कि केवल दार्शनिक-राजाओं के माध्यम से एक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज प्राप्त किया जा सकता है।
- **आदर्श राज्य और न्याय:** प्लेटो ने दार्शनिक-राजाओं द्वारा शासित एक आदर्श राज्य की कल्पना की, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। प्लेटो की आदर्श स्थिति में, व्यक्तियों को उनकी प्राकृतिक क्षमताओं और योग्यताओं के आधार पर भूमिकाएं सौंपी जाएंगी, जिससे एक सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण होगा जहां प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देता है।
  - **उदाहरण:** प्लेटो के अनुसार, न्याय तब प्राप्त होता है जब प्रत्येक व्यक्ति समाज में अपनी उचित भूमिका को पूरा करता है, और दार्शनिक-राजा बुद्धिमत्ता और ज्ञान के साथ शासन करते हैं।
- **ज्ञान का सिद्धांत (ज्ञान-मीमांसा):** प्लेटो के ज्ञान के सिद्धांत से पता चलता है कि सच्चा ज्ञान संवेदी अनुभव से नहीं बल्कि तर्कसंगत जांच और चिंतन के माध्यम से प्राप्त होता है। प्लेटो के अनुसार, ज्ञान का उच्चतम रूप रूपों का ज्ञान है – परिपूर्ण और अपरिवर्तनीय आदर्श जो भौतिक दुनिया से परे मौजूद हैं। संवेदी धारणा केवल राय या विश्वास प्रदान करती है जो त्रुटिपूर्ण या परिवर्तन के अधीन हो सकती है।
  - **उदाहरण:** कल्पना करें कि एक व्यक्ति विभिन्न आकारों, आकृतियों और सामग्रियों की विभिन्न कुर्सियों का सामना कर रहा है। प्लेटो के अनुसार, वे केवल संवेदी धारणा के आधार पर एक कुर्सी की प्रकृति के बारे में राय रख सकते हैं। हालांकि, कुर्सी के आदर्श रूप के सच्चे ज्ञान में सामान्य सार या सही कुर्सियों को पहचानना शामिल होगा जो सभी भौतिक कुर्सियों की नकल करते हैं।

5.2.3 अरस्तू

- अरस्तू प्राचीन ग्रीस के एक दार्शनिक और बहुज्ञ थे। उनका लेखन प्राकृतिक विज्ञान, दर्शन, भाषा विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, मनोविज्ञान और कला तक फैला हुआ है

अरस्तू का दर्शन:

- **सद्गुण नैतिकता:** अरस्तू का मानना था कि एक अच्छा और पूर्ण जीवन जीने की कुंजी गुणों की खेती में निहित है। सद्गुण सकारात्मक चरित्र लक्षण हैं जो व्यक्तियों को नैतिक उत्कृष्टता और संतुलन का जीवन जीने में सक्षम बनाते हैं। अरस्तू ने साहस, दया, ईमानदारी और संयम जैसे गुणों को मानव उत्कर्ष के लिए महत्वपूर्ण माना।

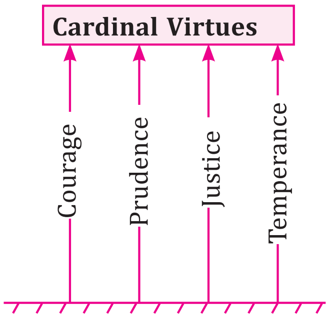

  - **उदाहरण:** माया नाम का एक व्यक्ति जो लगातार दूसरों के प्रति दया और करुणा के कृत्यों का प्रदर्शन करता है। माया एक स्थानीय आश्रय में स्वयंसेवक हैं, जरूरतमंद लोगों की मदद कर रहे हैं और उनके संघर्षों के प्रति सहानुभूति दिखा रहे हैं। दया के गुण को मूर्त रूप देकर, माया न केवल उन लोगों के जीवन को बेहतर बनाती है जिनकी वह मदद करती है, बल्कि व्यक्तिगत पूर्ति और नैतिक भलाई की भावना का भी अनुभव करती है।
- **मध्यम मार्ग** (Golden Mean)**:** अरस्तू ने प्रस्तावित किया कि सद्गुण दो चरम सीमाओं के बीच होते हैं, जिन्हें विकारों के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अधिकता और कमी के बीच "मध्यम मार्ग" या मध्यम और संतुलित दृष्टिकोण खोजने की वकालत की। अरस्तू के अनुसार अतिवादी व्यवहारों के मध्य में सद्कार्य एवं व्यवहार पाये जाते हैं।
  - **उदाहरण:** चलो साहस का सद्गुण लेते हैं। अरस्तू का सुझाव है कि साहस लापरवाही (अत्यधिक बहादुरी) और कायरता (बहादुरी की कमी) के बीच निहित है। एक व्यक्ति जो साहस के सुनहरे अर्थ का प्रदर्शन करता है, जब आवश्यक हो तो बहादुरी से कार्य करता है, लेकिन अनावश्यक जोखिम या मूर्खता के बिंदु तक नहीं। वे अत्यधिक सतर्क होने और अत्यधिक लापरवाह होने के बीच संतुलन पाते हैं।
- **प्रयोजनवाद और उद्देश्यपूर्ण जीवन:** अरस्तू का मानना था कि प्रकृति में हर चीज का एक उद्देश्य या अंतिम लक्ष्य (टेलोस) होता है। उन्होंने तर्क दिया कि मनुष्य का एक विशिष्ट उद्देश्य है – अपनी क्षमता को पूरा करने और यूडेमोनिया प्राप्त करने के लिए कारण का उपयोग करना, जिसे अक्सर "उत्कर्ष" या "अच्छे जीवन" के रूप में अनुवादित किया जाता है। अरस्तू के अनुसार, यूडेमोनिया (कल्याण, खुशी) पुण्य की खोज और अपनी उच्चतम क्षमताओं की प्राप्ति के माध्यम से प्राप्त की जाती है।
  - **उदाहरण:** रोहित को संगीत का शौक है और वह एक कुशल संगीतकार बनने के लिए अपना जीवन समर्पित करता है। रोहित घंटों अभ्यास करते हैं, संगीत सिद्धांत का अध्ययन करते हैं, और प्रदर्शन करते हैं। अपने जुनून का पीछा करके और अपनी संगीत क्षमताओं को विकसित करके, रोहित एक संगीतकार के रूप में अपने प्रयोजन या उद्देश्य को पूरा करता है। अपने समर्पण के माध्यम से, वह पूर्ति, उपलब्धि और यूडेयमोनिया की भावना का अनुभव करता है।
- **प्राकृतिक कानून:** अरस्तू का प्राकृतिक कानून का विचार इस विश्वास में निहित है कि प्रकृति में एक अंतर्निहित आदेश और उद्देश्य है जो मानव आचरण का मार्गदर्शन करता है। अरस्तू के अनुसार, मनुष्य में खुशी की तलाश करने और तर्क के अनुसार जीने के लिए एक स्वाभाविक झुकाव है। उनका मानना था कि तर्क के माध्यम से, व्यक्ति प्राकृतिक कानूनों को समझ सकते हैं जो मानव व्यवहार और समाज के उचित कामकाज को नियंत्रित करते हैं।

गोल्डन मीन के सिद्धांत का उदाहरण: विलंबित विकास परियोजना मामला

- श्री एस पाटिल, एक भारतीय सिविल सेवक, एक विकास परियोजना को मंजूरी देने के लिए जिम्मेदार हैं जो रोजगार पैदा करेगा और जंगल के एक बड़े हिस्से को साफ करते हुए स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा। परियोजना विवादास्पद है और कई लोगों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।
- दो चरम सीमाओं के बीच एक मध्यम स्थिति खोजने के लिए, श्री पाटिल सावधानीपूर्वक परियोजना के पक्षों और विपक्षों पर विचार करते हैं, हितधारकों के साथ मिलते हैं और इसके पर्यावरणीय प्रभाव पर शोध करते हैं।

- आखिरकार, वह कुछ संशोधनों के साथ परियोजना को मंजूरी देता है, जिससे डेवलपर्स को परियोजना के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और एक नए वन्यजीव अभयारण्य के लिए भूमि अलग रखने की आवश्यकता होती है।
- यह निर्णय सही नहीं है, लेकिन यह एक निष्पक्ष और संतुलित है, जो सभी हितधारकों के सर्वोत्तम हितों को सुनिश्चित करता है।
- गोल्डन मीन के सिद्धांत को लागू करके, सिविल सेवक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनके निर्णय निष्पक्ष, न्यायपूर्ण और नैतिक हैं।

दर्शन शास्त्र का अनुप्रयोग:

- **नैतिकता और सद्गुण नैतिकता-आधारित दृष्टिकोण:** सद्गुणों और नैतिक चरित्र पर अरस्तू के जोर का नैतिक सिद्धांतों और रूपरेखाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उनके विचार लागू नैतिकता, पेशेवर नैतिकता और चरित्र शिक्षा जैसे क्षेत्रों में प्रभावशाली रहे हैं। सद्गुण नैतिकता का दृष्टिकोण, जो एक अच्छा जीवन जीने के लिए सद्गुणों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है, अरस्तू के दर्शन से प्रेरणा लेता है।
- **शिक्षा:** अरस्तू के दर्शन ने शैक्षिक सिद्धांतों और प्रथाओं को प्रभावित किया है। सद्गुणों के विकास और चरित्र विकसित करने के महत्व में उनके विश्वास ने स्कूलों में चरित्र शिक्षा और नैतिक विकास के दृष्टिकोण को सूचित किया है। शिक्षक अक्सर छात्रों में दयालुता, ईमानदारी और लचीलापन जैसे सद्गुणों को स्थापित करने का प्रयास करते हैं, जो अरस्तू के नैतिक उत्कृष्टता पर जोर देने से आकर्षित होते हैं।
- **नेतृत्व और प्रबंधन:** नेतृत्व पर अरस्तू के विचार प्रबंधन और संगठनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में लागू किए गए हैं। ज्ञान, निष्पक्षता और साहस जैसे सद्गुणों को प्रदर्शित करने वाले एक सद्गुणी नेता की उनकी अवधारणा ने नेतृत्व सिद्धांतों और प्रथाओं को प्रभावित किया है। संगठन अक्सर उन नेताओं की तलाश करते हैं जो इन सद्गुणों को मूर्त रूप देते हैं और नैतिक आचरण और दीर्घकालिक सफलता को बढ़ावा देते हैं।
- **राजनीतिक सिद्धांत:** अरस्तू के राजनीतिक दर्शन का राजनीतिक सिद्धांत और शासन पर स्थायी प्रभाव पड़ा है। आदर्श राज्य, नागरिकों की भूमिका और संतुलित और न्यायपूर्ण समाज के महत्व पर उनके विचारों ने सदियों से राजनीतिक विचारकों को प्रभावित किया है। लोकतंत्र, कानून का शासन और लोक-कल्याण जैसी अवधारणाएं अरस्तू के कार्यों में अपनी जड़ें पाती हैं।
- **अनुप्रयुक्त विज्ञान:** जीव विज्ञान और भौतिकी जैसे विभिन्न वैज्ञानिक विषयों में अरस्तू के योगदान का स्थायी प्रभाव पड़ा है। जबकि उनके कुछ विशिष्ट वैज्ञानिक सिद्धांतों को पार कर लिया गया है, अवलोकन, वर्गीकरण और तार्किक विचार की उनकी पद्धति ने वैज्ञानिक जांच और अनुसंधान की नींव रखी।
- **व्यक्तिगत विकास:** अरस्तू का दर्शन व्यक्तिगत विकास और आत्म-सुधार के लिए अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन प्रदान करता है। तर्क, आत्म-निरिक्षण और सद्गुणों की खोज पर उनका जोर किसी के चरित्र को विकसित करने और अधिक पूर्ण जीवन जीने के लिए लागू किया जा सकता है।

अरस्तू के दर्शन की आलोचना:

- **मन-शरीर समस्या और द्वैतवाद:** आत्मा को शरीर से अलग करने की अरस्तू की धारणा की उसके द्वैतवादी चरित्र के लिए आलोचना की गई है, जो मन और शरीर की अंतर्संबंध और अन्योन्याश्रयता की व्याख्या करने में विफल है।
- **अपर्याप्त अनुभवजन्य विधि:** आलोचकों का तर्क है कि अरस्तू की निगमन और सीमित अनुभवजन्यअवलोकनों पर निर्भरता ने अधिक कठोर वैज्ञानिक पद्धति के विकास में बाधा उत्पन्न की, जो तब से आधुनिक वैज्ञानिक जांच के लिए महत्वपूर्ण बन गई है।
- अरस्तू के नैतिक ढांचे में सांस्कृतिक सापेक्षतावाद की आलोचना की गई है क्योंकि यह स्पष्ट सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत नहीं देता है और इसके बजाय इंगित करता है कि गुण और नैतिकता संदर्भ-निर्भर हैं और कुछ समूहों या संस्कृतियों से संबंधित हैं।
- **महिलाओं और दासों को बाहर रखा गया है:** अरस्तू के दर्शन में महिलाओं और दासों को पूर्ण नागरिकता से बाहर रखने और अनुचित सामाजिक प्रणालियों को बनाए रखने के लिए आलोचना की गई है, विशेष रूप से राजनीतिक भागीदारी और प्राणियों के पदानुक्रम पर उनके विचार।
- **असमानता और पदानुक्रम:** कुछ विरोधियों का तर्क है कि अरस्तू की प्राकृतिक पदानुक्रमों की मान्यता, जैसे शासकों और शासितों के बीच विभाजन, दमनकारी शक्ति संबंधों को बढ़ावा देती है और सामाजिक विकास और समानता में बाधा डालती है।
- **उद्देश्यवाद और पदार्थवाद:** आलोचकों का तर्क है कि अरस्तू का पदार्थवादी परिप्रेक्ष्य, जो चीजों और घटनाओं के लिए निश्चित सार और उद्देश्यों को जोड़ता है, वास्तविकता के गतिशील और विकासशील चरित्र की हमारी समझ में बाधा डालता है।
- **उद्देश्यवाद:** अरस्तू के दर्शन का उद्देश्यवादी परिप्रेक्ष्य, जो बताता है कि प्रकृति में हर चीज का एक पूर्वनिर्धारित उद्देश्य

है, अनुभवजन्य प्रमाण की कमी और मानवकेंद्रित धारणाओं पर निर्भर होने के लिए आलोचना की गई है।

5.2.4 इमैनुअल कांट

- इमैनुअल कांट एक जर्मन दार्शनिक और प्रमुख प्रबुद्ध विचारक थे। कांट, जो कोनिग्जबर्ग में पैदा हुए थे। ज्ञानमीमांसा, तत्वमीमांसा, नीतिशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र में उनके व्यापक और व्यवस्थित कार्यों के लिए उन्हें आधुनिक पश्चिमी दर्शन में सबसे प्रभावशाली शख्सियतों में से एक माना जाता है।
- कांट की नैतिकता का विवरण उनकी तीन पुस्तकों – **द फाउंडेशन ऑफ मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स** (1785), **द क्रिटिक ऑफ प्रैक्टिकल रीजन** (1788), और **द मेटाफिजिक्स ऑफ मोरल्स** (1798) में डीऑन्टोलॉजिकल परंपराओं में फिट बैठता है।
- कांट नैतिकता के पारंपरिक सिद्धांतों (सद्गुण सिद्धांतों और परिणामवादियों) को खारिज करते हैं और तर्क देते हैं कि नैतिक कार्य नैतिकता के सर्वोच्च सिद्धांत पर आधारित हैं जो उद्देश्यपूर्ण, तर्कसंगत और स्वतंत्र रूप से चुना गया है।
- कांट 'निरपेक्ष आदेश' को नैतिक दायित्व का एकमात्र संभव मानक मानते हैं।

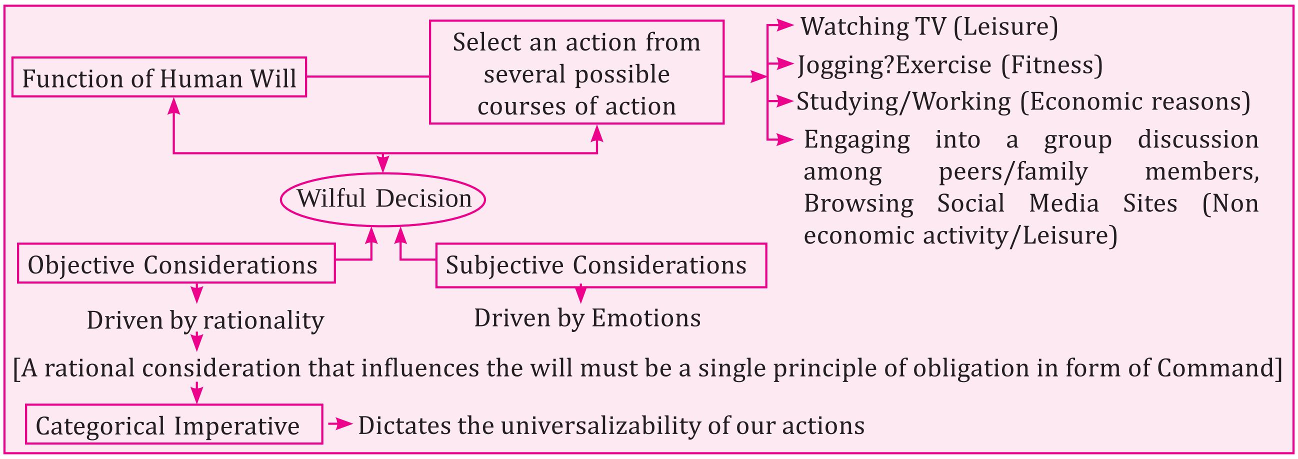

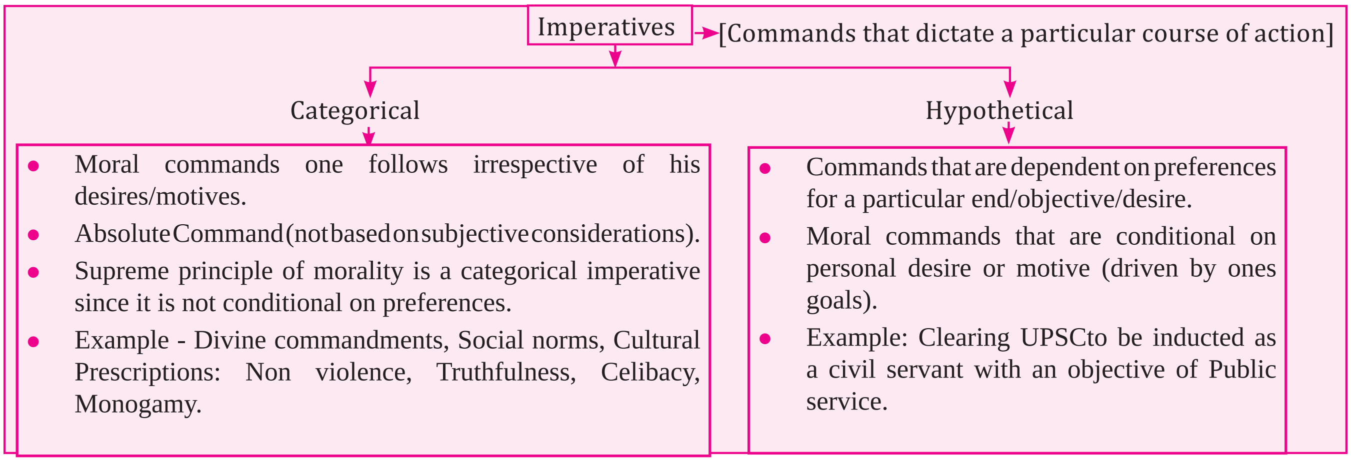

कांट का दर्शन:

- **निरपेक्ष आदेश:** निरपेक्ष आदेश का शाब्दिक अर्थ – एक बिना शर्त नैतिक दायित्व जो सभी परिस्थितियों में बाध्यकारी है और किसी व्यक्ति के झुकाव या उद्देश्य पर निर्भर नहीं है। कांट का दर्शन 'पिरपेक्ष आदेश' की अवधारणा के आसपास केंद्रित है, जो एक नैतिक सिद्धांत है जो नैतिक निर्णय लेने का मार्गदर्शन करता है। कांट के अनुसार, किसी को इस तरह से कार्य करना चाहिए कि उनके कार्यों के पीछे नैतिक सिद्धांत को विरोधाभास के बिना सार्वभौमिक रूप से लागू किया जा सके।
- **चार निरपेक्ष आदेश हैं:**
  1. दूसरों के साथ वह व्यवहार न करें जो आप नहीं चाहते कि दूसरे आपके साथ करें।
  2. उन सिद्धांतों के अनुसार कार्य करें जिन्हें सार्वभौमिक कानूनों के रूप में स्थापित किया जा सकता है।
  3. लोगों को साध्य के साधन के रूप में उपयोग न करें।

4. मानवीय कार्यों से समग्र रूप से समाज को लाभ होना चाहिए।

- **उदाहरण:** संदीप को एक नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ता है। उसके पास या तो किसी दोस्त की रक्षा के लिए झूठ बोलने या सच बताने और संभावित रूप से अपने दोस्त की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का विकल्प है। कांट की निरपेक्ष आदेश के लिए संदीप को यह विचार करने की आवश्यकता होगी कि क्या झूठ बोलना सभी स्थितियों में नैतिक रूप से उचित हो सकता है। यदि झूठ को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है, तो यह एक विरोधाभास को जन्म देगा जहां सच्चाई अपना मूल्य खो देती है। इसलिए, कांत के अनुसार, संदीप को सच बोलने को प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि इसे सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत के रूप में लागू किया जा सकता है।

- **नैतिक स्वायत्तता और कर्तव्य:** कांट ने नैतिक स्वायत्तता के महत्व पर जोर दिया, जो बाहरी प्रभावों या इच्छाओं के बजाय तर्कसंगतता और सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों के आधार पर नैतिक निर्णय लेने की क्षमता है। उनका मानना था कि व्यक्तिगत इच्छाओं या परिणामों के बावजूद, तर्कसंगत और नैतिक सिद्धांतों के अनुसार कार्य करना व्यक्तियों का नैतिक कर्तव्य है।
  - **उदाहरण:** समृद्धि को एक खोया हुआ बटुआ मिलता है जिसमें बड़ी राशि होती है। यद्यपि समृद्धि आसानी से अपने लिए पैसा रख सकती थी, कांट का दर्शन उसे नैतिक कर्तव्य से बाहर कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा। समृद्धि अपने सही मालिक को बटुआ वापस करने के लिए मजबूर महसूस करेगी, क्योंकि वह मानती है कि ईमानदारी और दूसरों के संपत्ति के अधिकारों का सम्मान करना सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत हैं जो व्यक्तिगत इच्छाओं या तत्काल लाभों से परे हैं।

- **व्यावहारिक बुद्धि और शुभ संकल्प:** व्यावहारिक बुद्धि के महत्व और सद्भावना से कार्य करने के विचार में विश्वास करते थे। कांत के अनुसार, नैतिक कार्यों को तर्कसंगतता और नैतिक रूप से सही करने के इरादे से निर्देशित किया जाना चाहिए, व्यक्तिगत हितों या बाहरी परिणामों की परवाह किए बिना।
  - **उदाहरण:** करण एक स्थानीय बेघर आश्रय में स्वयंसेवक हैं। स्वयंसेवा के लिए करण की प्रेरणा व्यक्तिगत लाभ या मान्यता से प्रेरित नहीं है, बल्कि जरूरतमंद लोगों की मदद करने की वास्तविक इच्छा से प्रेरित है। कांट करण के कार्यों को नैतिक रूप से सराहनीय मानेंगे क्योंकि वे व्यावहारिक कारण और नैतिक रूप से सही काम करने की अच्छी इच्छा से निर्देशित होते हैं।

- **सार्वभौमिकता और नैतिक दायित्व:** कांट ने तर्क दिया कि नैतिक सिद्धांतों को सार्वभौमिक रूप से लागू होना चाहिए। कार्यों का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि क्या उन्हें विरोधाभास के बिना एक सार्वभौमिक नियम के रूप में लगातार लागू किया जा सकता है। नैतिक दायित्व उन सिद्धांतों की तर्कसंगत मान्यता से उत्पन्न होते हैं जिन्हें लगातार बरकरार रखा जा सकता है।
  - **उदाहरण:** अहमद एक दुकान से चोरी करने पर विचार करता है क्योंकि वह इसके लिए भुगतान किए बिना एक विशेष वस्तु चाहता है। कांट के दर्शन को लागू करते हुए, अहमद यह पहचान लेगा कि अगर चोरी को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है, तो यह निजी संपत्ति की अवधारणा को कमजोर करेगा और विरोधाभासों को जन्म देगा। इसलिए, अहमद स्वीकार करेगा कि चोरी करना नैतिक रूप से गलत है और इस तरह के व्यवहार में शामिल होने से बचें।

- **साध्यों के साम्राज्य और मानव की गरिमा:** कांट सभी व्यक्तियों की अंतर्निहित गरिमा में विश्वास करते थे। उन्होंने तर्क दिया कि मनुष्यों को अपनी स्वायत्तता और नैतिक मूल्य का सम्मान करते हुए अपने आप में साध्य के रूप में माना जाना चाहिए। यह परिप्रेक्ष्य निष्पक्षता, समानता और प्रत्येक व्यक्ति के मूल्य की मान्यता के महत्व पर जोर देता है।
  - **उदाहरण:** एक विविध समाज में, कांत का दर्शन व्यक्तियों के निष्पक्ष और समान उपचार की वकालत करेगा, चाहे उनकी जाति, लिंग या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो। इसका मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति की स्वायत्तता का सम्मान करना, समान अवसर सुनिश्चित करना, और एक न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देना जहां सभी व्यक्तियों के साथ गरिमा के साथ व्यवहार किया जाता है और उनके अधिकारों की रक्षा की जाती है।

टेलिओलॉजिकल दृष्टिकोण:

- "टेलोस" एक प्राचीन ग्रीक शब्द है जिसका अर्थ है "अंत," "पूर्ति," "पूर्णता," "लक्ष्य," और इसी तरह। टेलीलॉजी एक दर्शन है जो मानता है कि किसी के कार्यों के परिणाम इस बात का अंतिम निर्णय हैं कि कार्रवाई सही थी या गलत।

कर्तव्यवादी और उद्देश्यवादी सिद्धांतों के बीच अंतर

कर्तव्यवादी नीतिशास्त्र (कर्तव्य-आधारित)	उद्देश्यवादी नीतिशास्त्र (परिणाम-उन्मुख)
• परिणामों के बजाय नैतिक दायित्वों पर ध्यान केंद्रित करें।	• अपने कार्यों के परिणामों पर विचार करें।
• परिणामों की तुलना में इरादों को प्राथमिकता देता है	• इरादों पर परिणामों को प्राथमिकता देता है
• नैतिक मूल्य की तुलना में नैतिक कर्तव्य अधिक महत्वपूर्ण हैं।	• कर्तव्यों पर नैतिक मूल्य को प्राथमिकता दी जाती है।
• व्यक्तिगत इरादे महत्वपूर्ण हैं।	• व्यक्तिगत इरादे अप्रासंगिक हैं।
• कार्यों की शुद्धता उनकी अच्छाई से पहले आती है।	• कार्यों की शुद्धता उनकी अच्छाई से निर्धारित होती है।
• एक व्यक्ति की नैतिक स्थिति पर केंद्रित है	• कार्य की नैतिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करता है
• नैतिक जिम्मेदारियों का एक नकारात्मक सूत्रीकरण होता है।	• नैतिक जिम्मेदारियों का एक सकारात्मक सूत्रीकरण होता है।
• व्यक्तिगत प्राथमिकताएं अप्रासंगिक हैं।	• अपने और अन्य लोगों के हितों के लिए समान विचार
• परिभाषा के अनुसार कार्य या तो नैतिक या अनैतिक हैं।	• कार्यों के परिणामों का उपयोग उनका मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है।

कर्तव्यवादी और उद्देश्यवादी सिद्धांतों पर आधारित उदाहरण

- **आदमी सड़क किनारे सो रहे कुत्ते को लात मारता है:** मान लीजिए कि एक आदमी सड़क किनारे सो रहे कुत्ते को लात मारता है।
  - कुत्ता रोता है और भाग जाता है। कुछ क्षण बाद, एक कार इतनी तेजी से सड़क पर आती है कि वह निश्चित रूप से कुत्ते को मार देती अगर वह अभी भी वहां पड़ा होता।
- **परिप्रेक्ष्य: कर्तव्यवादी परिप्रेक्ष्य** कहते हैं, आदमी की कार्रवाई खराब थी क्योंकि कुत्तों को लात मारना क्रूर है, लेकिन **उद्देश्यवादी परिप्रेक्ष्य** के अनुसार, उसकी कार्रवाई अच्छी थी, क्योंकि इसने कुत्ते के जीवन को बचाया।

निष्कर्ष:

- आपराधिक न्याय प्रणाली में, यह सुनिश्चित करने के लिए एक कर्तव्यवादी दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है कि सजा किए गए अपराध के लिए आनुपातिक और उपयुक्त है। दूसरी ओर, उद्देश्यवादी दृष्टिकोण का उपयोग अदालतों द्वारा किसी भी कानून, उसके उद्देश्य, दिशा या डिजाइन की व्याख्या करने के लिए किया जाता है।

5.2.5 जेरेमी बेंथम

- जेरेमी बेंथम (1747-1832) एक ब्रिटिश दार्शनिक, न्यायविद् और समाज सुधारक थे जिन्हें व्यापक रूप से आधुनिक उपयोगितावाद का जनक माना जाता है। बेंथम ने इस सिद्धांत को अपने दर्शन के "मौलिक सिद्धांत" के रूप में परिभाषित किया कि "अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख ही सही और गलत का माप है"।

बेंथम का दर्शन

- **उपयोगितावाद:** बेंथम का दर्शन उपयोगितावाद के आसपास केंद्रित है, जो मानता है कि कार्यों का मूल्यांकन उनकी उपयोगिता या उनके द्वारा उत्पन्न खुशी की मात्रा बनाम उनके कारण होने वाली पीड़ा या दर्द की मात्रा के आधार पर किया जाना चाहिए। किसी कार्रवाई का नैतिक मूल्य इसके परिणामों और इससे प्रभावित व्यक्तियों की भलाई पर इसके समग्र प्रभाव से निर्धारित होता है।
  - **उदाहरण:** एक कंपनी की कल्पना करें जो विचार कर रही है कि सतत प्रथाओं में निवेश करना है या नहीं। बेंथम के उपयोगितावाद के अनुसार, कंपनी को सतत प्रथाओं को अपनाने के संभावित लाभों और हानि का आकलन करना चाहिए। वे पर्यावरण पर प्रभाव, कर्मचारियों की भलाई और ग्राहकों की संतुष्टि का मूल्यांकन करेंगे। पर्यावरणीय नुकसान में कमी और हितधारक संतुष्टि में सुधार सहित समग्र उपयोगिता पर विचार करके, कंपनी एक निर्णय ले सकती है जो उपयोगितावादी सिद्धांतों के साथ संरेखित है।
  - **अधिकतम सुख का सिद्धांत:** बेंथम का दर्शन 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' के सिद्धांत द्वारा निर्देशित है। किसी कार्रवाई का नैतिक मूल्य खुशी या आनंद को अधिकतम करने और कार्रवाई से प्रभावित लोगों की सबसे बड़ी संख्या के लिए पीड़ा या दर्द को कम करने की क्षमता से निर्धारित होता है।
  - **उदाहरण:** मान लीजिए कि कोई सरकार शिक्षा से संबंधित सार्वजनिक नीति पर निर्णय ले रही है। बेंथम के

'अधिकतम सुख' का सिद्धांत का उपयोग करते हुए, सरकार विभिन्न हितधारकों, जैसे छात्रों, शिक्षकों, माता-पिता और व्यापक समुदाय पर नीति के संभावित प्रभाव पर विचार करेगी। वे आकलन करेंगे कि नीति गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच कैसे बढ़ा सकती है, शैक्षिक परिणामों में सुधार कर सकती है, और समग्र सामाजिक कल्याण में योगदान दे सकती है।

- **मात्रात्मक दृष्टिकोण:** बेंथम का दर्शन नैतिकता के लिए एक मात्रात्मक दृष्टिकोण लेता है, जहां खुशी और दर्द को मापा जाता है और किसी कार्रवाई के नैतिक मूल्य को निर्धारित करने के लिए तुलना की जाती है। उनका मानना था कि आनंद और दर्द का आकलन उनकी तीव्रता, अवधि, निश्चितता और उनके समग्र प्रभाव की गणना करने के लिए अन्य कारकों के संदर्भ में किया जा सकता है।
  - **उदाहरण:** मान लीजिए कि एक नगर परिषद एक नए पार्क के स्थान पर निर्णय ले रही है। बेंथम के मात्रात्मक दृष्टिकोण में मनोरंजक अवसरों, शारीरिक व्यायाम और बेहतर मानसिक कल्याण के संदर्भ में समुदाय के सदस्यों द्वारा प्राप्त संभावित आनंद का आकलन करना शामिल होगा। वे ध्वनि प्रदूषण में संभावित कमी और हरित स्थानों के निर्माण पर भी विचार करेंगे। मात्रात्मक रूप से किसी भी संभावित नकारात्मक परिणामों के खिलाफ उत्पन्न समग्र आनंद की तुलना करके, परिषद एक निर्णय ले सकती है जो समग्र उपयोगिता को अधिकतम करती है।
- **हेडोनिक कैलकुलस:** बेंथम ने "हेडोनिक कैलकुलस" की अवधारणा विकसित की, जो किसी कार्रवाई या नीति की समग्र खुशी या उपयोगिता की गणना करने की एक विधि है। इसमें समग्र कल्याण पर उनके शुद्ध प्रभाव को निर्धारित करने के लिए तीव्रता, अवधि, निश्चितता और खुशी और दर्द के अन्य कारकों पर विचार करना शामिल है।
  - **उदाहरण:** सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों को निधि देने के लिए उच्च आय वाले व्यक्तियों पर करों को बढ़ाने की नीति पर विचार करने वाली सरकार पर विचार करें। बेंथम के हेडोनिक कैलकुलस का उपयोग करते हुए, वे बेहतर सामाजिक कल्याण और हाशिए की आबादी के बीच पीड़ा में कमी से प्राप्त संभावित आनंद का मूल्यांकन करेंगे। वे उच्च आय वाले व्यक्तियों के लिए उच्च करों के कारण होने वाले दर्द का भी आकलन करेंगे। इन कारकों को तौलकर, सरकार एक निर्णय ले सकती है जो समग्र उपयोगिता को अधिकतम करती है।

उपयोगितावाद

- उपयोगितावाद एक नैतिक सिद्धांत है जो उन कार्यों की वकालत करता है जो खुशी या आनंद को बढ़ावा देते हैं जबकि उन कार्यों का विरोध करते हैं जो दुख या नुकसान का कारण बनते हैं।
- एक उपयोगितावादी दर्शन सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक निर्णय लेते समय समग्र रूप से समाज की बेहतरी का लक्ष्य रखेगा।

5.2.6 जे एस मिल

- जॉन स्टुअर्ट मिल एक अंग्रेजी दार्शनिक, राजनीतिक अर्थशास्त्री, संसद सदस्य और सिविल सेवक थे। शास्त्रीय उदारवाद के इतिहास में सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक, उन्होंने सामाजिक सिद्धांत, राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक अर्थव्यवस्था में व्यापक रूप से योगदान दिया।

मिल का दर्शन:

- **उपयोगितावाद:** बेंथम की तरह, मिल का दर्शन उपयोगितावाद पर आधारित है, जो सुख को अधिकतम करने और सबसे बड़ी संख्या में लोगों के लिए दु:ख को कम करने का प्रयास करता है। हालांकि, मिल के उपयोगितावाद के संस्करण में सुख के गुणात्मक पहलुओं पर अधिक जोर दिया गया है, उच्च या अधिक परिष्कृत सुखों को निम्न या आधार सुखों की तुलना में अधिक मूल्यवान माना जाता है।
  - **उदाहरण:** एक व्यक्ति जो अपने सप्ताहांत को वीडियो गेम खेलने या स्थानीय चौरिटी में स्वयंसेवा करने के बीच निर्णय लेता है। मिल के उपयोगितावाद के अनुसार, उन्हें प्रत्येक विकल्प की सुख के गुणात्मक पहलुओं पर विचार करना चाहिए। स्वयंसेवा पूर्ति की गहरी भावना ला सकती है, दूसरों की भलाई में योगदान कर सकती है, और उच्च नैतिक मूल्यों के साथ संरेखित हो सकती है, जिससे यह केवल व्यक्तिगत मनोरंजन की तुलना में अधिक मूल्यवान और वांछनीय विकल्प बन सकता है।
- **उपयोगिता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सिद्धांत:** मिल ने नैतिक निर्णयों के मार्गदर्शन में उपयोगिता के सिद्धांत पर जोर दिया, लेकिन उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तियों को अपनी खुशियों को पाने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए जब तक कि यह दूसरों को नुकसान न पहुंचाए।
  - **उदाहरण:** भारत जैसा समाज समलैंगिक विवाह के वैधीकरण पर विचार कर रहा है। मिल का दर्शन समान-लिंग विवाह को वैध बनाने का समर्थन करेगा, क्योंकि यह उन व्यक्तियों को स्वतंत्रता और खुशी देगा जो ऐसे विवाह में प्रवेश करना चाहते हैं। जब तक उसका मिलना दूसरों को नुकसान नहीं पहुंचाता है, तब तक यह

व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांत के साथ संरेखित होता है और समग्र सुख को बढ़ावा देता है।

- **नुकसान का सिद्धांत:** मिल ने नुकसान के सिद्धांत को पेश किया, जिसमें कहा गया है कि व्यक्तियों को अपनी इच्छानुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए जब तक कि उनके कार्य दूसरों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। उन्होंने तर्क दिया कि समाज को केवल व्यक्तियों के कार्यों में हस्तक्षेप करना चाहिए जब दूसरों को स्पष्ट और प्रत्यक्ष नुकसान होता है।
  - **उदाहरण:** शराब या ड्रग्स जैसे पदार्थों के विनियमन पर विचार करते समय, मिल के नुकसान सिद्धांत का सुझाव होगा कि समाज को केवल तभी हस्तक्षेप करना चाहिए जब इन पदार्थों की खपत या उपयोग से दूसरों को नुकसान हो। व्यक्तियों को अपनी पसंद बनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए जब तक कि वे दूसरों के अधिकारों या कल्याण का उल्लंघन नहीं करते हैं।
- **व्यक्तिगत विकास और विविधता:** मिल ने मानव सुख को बढ़ावा देने में व्यक्तिगत विकास और विविधता के महत्व को मान्यता दी। उन्होंने तर्क दिया कि विभिन्न प्रकार की राय और दृष्टिकोण की अनुमति देना बौद्धिक और नैतिक विकास में योगदान देता है।
  - **उदाहरण:** शिक्षा के संदर्भ में, मिल का दर्शन एक समावेशी और विविध पाठ्यक्रम का समर्थन करेगा जो छात्रों को विचारों, संस्कृतियों और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रृंखला को उजागर करता है। यह महत्वपूर्ण सोच कौशल के विकास की अनुमति देता है, सहानुभूति को बढ़ावा देता है, और अधिक जीवंत और बौद्धिक रूप से समृद्ध समाज को बढ़ावा देता है।
- **उच्च और निम्न सुख:** मिल ने उच्च और निम्न सुखों के बीच अंतर किया, मन और बुद्धि के उच्च सुखों को कम शारीरिक या कामुक सुखों की तुलना में अधिक मूल्यवान माना। उन्होंने तर्क दिया कि बौद्धिक, नैतिक और सौंदर्य सुखों का पीछा करने से अधिक समग्र खुशी मिलती है।
  - **उदाहरण:** मान लीजिए कि किसी व्यक्ति के पास, शाम को किसी रियलिटी टीवी शो देखने या दर्शन पर विचारोत्तेजक व्याख्यान में भाग लेने के बीच विकल्प है। मिल के अनुसार, व्याख्यान एक उच्च आनंद प्रदान करता है क्योंकि यह मन को संलग्न करता है, बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है, और दीर्घकालिक सुख में योगदान देता है, जबकि टीवी शो कम आनंद प्रदान करते हैं जो तत्काल लेकिन क्षणिक सुख प्रदान करते हैं।
- **मात्रा पर गुणवत्ता:** जबकि बेंथम के उपयोगितावाद ने समग्र सुख या आनंद के अधिकतमकरण पर जोर दिया, मिल ने तर्क दिया कि आनंद की गुणवत्ता मात्रा से अधिक महत्वपूर्ण है। उनका मानना था कि बौद्धिक और नैतिक सुख, जो मन के उच्च संकायों को संलग्न करते हैं, कम शारीरिक सुखों की तुलना में अधिक स्थायी और सार्थक खुशी प्रदान करते हैं।
  - मिल के अनुसार, एक क्लासिक उपन्यास पढ़ना वीडियो गेम खेलने की तुलना में उच्च गुणवत्ता वाला आनंद माना जा सकता है। एक अच्छी तरह से लिखे गए उपन्यास को पढ़ने का अनुभव मन को संलग्न करता है, कल्पना को उत्तेजित करता है, और प्रतिबिंब और व्यक्तिगत विकास के अवसर प्रदान करता है।

5.2.7 थॉमस हॉब्स

पूर्ण स्वतंत्रता युद्ध को आमंत्रित करती है, और समर्पण युद्ध के खिलाफ एक अच्छी रोकथाम है। **–हॉब्स**

- थॉमस हॉब्स इंग्लैंड के एक दार्शनिक थे। हॉब्स को उनकी पुस्तक **लेवियाथन** (1651) के लिए जाना जाता है, जिसमें 'सामाजिक अनुबंध सिद्धांत' का एक प्रभावशाली सूत्रीकरण शामिल है।

अनुबंधवाद

- अनुबंध महत्वपूर्ण समझौते हैं जो लोग एक दूसरे के साथ करते हैं। वे हमें नियमों और अपेक्षाओं को निर्धारित करने में मदद करते हैं कि हमें कैसे व्यवहार करना चाहिए और बातचीत करनी चाहिए। जब हम एक अनुबंध का पालन करते हैं, तो इसका मतलब है कि हम अपने वादे निभा रहे हैं और वही कर रहे हैं जो हम करने के लिए सहमत हुए थे।
- इस सिद्धांत के अनुसार, यदि हम दूसरों के साथ किए गए समझौतों पर टिके रहते हैं, तो हमारे व्यवहार को नैतिक माना जाता है। यह कहने का एक तरीका है कि आपने जो करने का वादा किया था उसे करना अच्छा है।
- कभी-कभी, एक विशेष प्रकार का अनुबंध होता है जिसे सामाजिक अनुबंध कहा जाता है। यह तब होता है जब सरकार या राज्य अपने लोगों के साथ एक समझौता करते हैं। सरकार की लोगों के प्रति कुछ जिम्मेदारियां, या कर्तव्य हैं, और लोगों के पास सरकार के प्रति दायित्व भी हैं।
- एक महत्वपूर्ण व्यक्ति जिसने इस विचार के बारे में बात की वह हॉब्स था। उनका मानना था कि लोग अपने स्वयं के हित में कार्य करते हैं, जिसका अर्थ है कि वे ऐसे काम करते हैं जो खुद को लाभ पहुंचाते हैं। अनुबंधवाद में, नैतिकता को एक सहकारी गतिविधि के रूप में देखा जाता है जहां लोग अपने स्वयं के हित के लिए एक साथ काम करते हैं। यह कहने जैसा है कि उन चीजों को करना अच्छा है जो आपके और दूसरों दोनों के लिए सहायक हैं।

थॉमस हॉब्स का दर्शन

दर्शन	विवरण
मानव प्रकृति	• उनके अनुसार, मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वार्थी, क्रूर, हत्यारा और आत्म-संरक्षण से प्रेरित हैं। • नतीजतन, वे शांति और स्थिरता बनाए रखने में असमर्थ हैं। इसे संबोधित करने के लिए, लोग एक राज्य या सरकार बनाने के लिए एक सामाजिक अनुबंध के माध्यम से एक साथ आते हैं। • उदाहरण: एक गंभीर चक्रवात या बाढ़ के बाद, जहां संसाधन दुर्लभ हो जाते हैं, लोग जमाखोरी या संघर्ष में संलग्न हो सकते हैं क्योंकि वे अपने और अपने परिवारों के लिए आवश्यक आपूर्ति सुरक्षित करने का प्रयास करते हैं। यह व्यवहार हॉब्स के इस दृष्टिकोण को दर्शाता है कि मनुष्य, अपने जन्मजात स्वार्थ से प्रेरित, संकट के समय सांप्रदायिक सहयोग पर अपने अस्तित्व और कल्याण को प्राथमिकता दे सकते हैं जब संसाधन दुर्लभ होते हैं और सामाजिक ताना-बाना तनावपूर्ण होता है।
प्रकृति की अवस्था	• उनका मानना था कि प्रकृति की स्थिति में, मनुष्य अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए दुर्लभ संसाधनों के लिए निरंतर संघर्ष में संलग्न है। यह संघर्ष युद्ध की स्थिति को जन्म दे सकता है, जहां संघर्ष और प्रतिस्पर्धा प्रबल होती है। • उदाहरण: रवांडा नरसंहार: रवांडा नरसंहार एक भयानक घटना थी जिसमें केवल 100 दिनों में 800,000 से अधिक लोग मारे गए थे। नरसंहार जातीय घृणा से प्रेरित था, और यह भूमि जैसे दुर्लभ संसाधनों के नियंत्रण के लिए संघर्ष से बढ़ गया था।
लेवियाथन राज्य	• हॉब्स द्वारा कल्पना की गई लेवियाथन राज्य, व्यवस्था बनाए रखने, कानूनों को लागू करने और व्यक्तियों को नुकसान से बचाने की क्षमता के साथ एक सर्व-शक्तिशाली संप्रभु प्राधिकरण है। • वह विशिष्ट प्रावधानों के साथ एक लेवियाथन राज्य की वकालत करता है। • शासन करने की पूर्ण शक्ति • लोगों को राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने का अधिकार नहीं है • लोगों के पास पूर्ण अधिकार नहीं हैं • नागरिकों में आज्ञाकारिता को बढ़ावा देने के लिए राज्य को नागरिक शिक्षा पर जोर देना चाहिए • उदाहरण: उत्तर कोरिया में किम जोंग-उन: उत्तर कोरिया में किम जोंग-उन के शासन को एक लेवियाथन राज्य का आधुनिक उदाहरण माना जा सकता है। • सरकार के पास पूर्ण शक्ति है, असंतोष और विद्रोह को दबा दिया जाता है, नागरिकों के पास पूर्ण अधिकार नहीं होते हैं, और नागरिक शिक्षा का उपयोग आबादी के बीच आज्ञाकारिता को प्रेरित करने के लिए किया जाता है।

थॉमस हॉब्स के दर्शन की प्रासंगिकता:

- **अंतर्राष्ट्रीय संबंध और राजनीतिक यथार्थवाद:** आत्म-संरक्षण और राष्ट्रों के प्रतिस्पर्धी चरित्र पर हॉब्स का ध्यान अंतर्राष्ट्रीय मामलों में यथार्थवादी विचारों के साथ प्रतिध्वनित होता है।
- **नैतिक और राजनीतिक जिम्मेदारियां:** हॉब्स की थीसिस कि व्यक्तियों को एक संप्रभु प्राधिकरण के अधीन होने की नैतिक और राजनीतिक आवश्यकता है, राजनीतिक शक्ति की वैधता और व्यक्तिगत अधिकारों की सीमाओं पर बहस के लिए प्रासंगिक है।
- **राजनीति और सामाजिक अनुबंध:** हॉब्स का संप्रभुता और सामाजिक अनुबंध का दर्शन वर्तमान राजनीतिक सिद्धांत और शासन के मुद्दों के लिए प्रासंगिक है।
- **प्रकृति की स्थिति और मानव प्रकृति:** निरंतर संघर्ष और युद्ध की स्थिति के रूप में प्रकृति की स्थिति की हॉब्स की छवि सामाजिक व्यवस्था के महत्व और शांति और स्थिरता को बनाए रखने में सरकार की भूमिका के बारे में चिंताओं से मेल खाती है।
- **आत्म-हित और इच्छा:** हॉब्स का मानव स्वभाव का दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से स्व-हित से प्रेरित है और नुकसान से बचने की इच्छा व्यक्तिगत उद्देश्यों और खुशी की खोज पर आधुनिक तर्कों के लिए प्रासंगिक है।
- **अनुभवजन्य पद्धति और भौतिकवाद:** हॉब्स का भौतिकवादी दर्शन मानव व्यवहार और सामाजिक घटनाओं को समझने के लिए वैज्ञानिक और अनुभवजन्य दृष्टिकोण के लिए प्रासंगिक है।

थॉमस हॉब्स के दर्शन की आलोचना:

- **लोगों की संप्रभुता की कमी:** हॉब्स के राजनीतिक सिद्धांत की अलोकतांत्रिक होने और निर्णय लेने में नागरिक भागीदारी को सीमित करने के लिए आलोचना की गई है।
- **नैतिकता के लिए निहितार्थ:** हॉब्स के नैतिक ढांचे की परिणामवादी होने और अधिकारों, न्याय और समानता पर आधारित नैतिक आदर्शों को कमजोर करने के लिए आलोचना की गई है।
- **अधिनायकवाद के साथ निरपेक्षता:** मजबूत संप्रभु सत्ता पर हॉब्स के ध्यान की आलोचना अधिनायकवाद को बढ़ावा देने और कुछ लोगों के हाथों में सत्ता के सुदृढ़ीकरण के लिए की गई है।
- **प्रकृति की स्थिति और मानव प्रकृति:** हॉब्स द्वारा प्रकृति को आंतरिक रूप से अराजक और हिंसक के रूप में चित्रित करने की मानव व्यवहार को अतिसरलीकृत करने और सहयोग, दान की संभावनाओं और नैतिक भावनाओं की उपस्थिति की अनदेखी करने के लिए आलोचना की गई है।
- **अहंवाद और व्यक्तिवाद:** मानव स्वभाव की जटिलता को नजरअंदाज करने के लिए व्यक्तियों की मौलिक प्रेरणाओं के रूप में स्व-हित और आत्म-संरक्षण पर हॉब्स के जोर की आलोचना की गई है।
- **मानव उत्कर्ष का दायरा सीमित है:** भौतिक कल्याण और सुरक्षा पर हॉब्स के जोर की मानव उत्कर्ष के अन्य महत्वपूर्ण घटकों, जैसे व्यक्तिगत पूर्ति, आध्यात्मिक मूल्यों और बुनियादी अस्तित्व से परे उच्च उद्देश्यों की खोज की अनदेखी के लिए आलोचना की गई है।

सामाजिक अनुबंध

- राज्य एक पारस्परिक समझौते के माध्यम से सरकार (राज्य) और नागरिकों के बीच एक अनुबंध का परिणाम है जहां नागरिक अपने कुछ सामान्य अधिकारों को आत्मसमर्पण करते हैं और संप्रभु राज्य द्वारा उन्हें आश्वासन दिए गए व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा और सार्वजनिक सेवाओं के प्रावधान के बदले में करों के भुगतान के साथ कानूनों का पालन करने के लिए सहमत होते हैं।
- एक सरकार केवल तभी वैध है जब वह सामाजिक अनुबंध और सहमति समझौते से मेल खाती है।

5.2.8 जॉन लॉक

- जॉन लॉक (1632-1704) एक अंग्रेज दार्शनिक और चिकित्सक थे, जिन्हें व्यापक रूप से सबसे प्रभावशाली प्रबुद्ध विचारकों में से एक माना जाता है और उन्हें अक्सर "उदारवाद के पिता" के रूप में जाना जाता है।
- लॉक को, फ्रांसिस बेकन की परंपरा में पहले ब्रिटिश अनुभववादियों में से एक माना जाता है, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है।
- उनके कार्य का ज्ञानमीमांसा और राजनीतिक दर्शन के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

जॉन लॉक का दर्शन		
दर्शन	**विवरण**	**उदाहरण**
स्वतंत्रता	• लॉक ने सहमति से स्वतंत्रता और शासन की वकालत की। उन्होंने "जीवन-स्वतंत्रता-संपत्ति" को प्रत्येक व्यक्ति के तीन प्राकृतिक अधिकारों के रूप में पहचाना।	• संविधान के संस्थापकों ने अनुच्छेद 19 और 21 में जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार को शामिल किया है।
कोई पितृसत्ता नहीं	• लॉक ने महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया और उनके लिए समान अवसरों का आह्वान किया।	• भारत में श्रम सुधारों का उद्देश्य लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करना और कार्यबल में महिलाओं के लिए समान वेतन और अवसर सुनिश्चित करना है। • बीसीसीआई द्वारा महिला क्रिकेट टीमों को समान मैच फीस का भुगतान करने की हालिया घोषणा।
संपत्ति	• लॉक के अनुसार, व्यक्तियों को अपने स्वयं के श्रम के माध्यम से संपत्ति प्राप्त करने और रखने का प्राकृतिक अधिकार है।	• जब कोई आविष्कारक या निर्माता एक नया आविष्कार, सॉफ्टवेयर, कलात्मक कार्य, या बौद्धिक संपदा का कोई भी रूप विकसित करता है, तो उन्हें स्वामित्व का दावा करने और अपने निर्माण के लाभों का आनंद लेने का अधिकार है।
सहिष्णुता	• लॉक ने अल्पसंख्यक अधिकारों का समर्थन किया और एक विषम समाज की वकालत की जहां विभिन्न संस्कृतियों के लोग सह-अस्तित्व में हैं।	• धार्मिक मान्यताओं में अंतर के बावजूद, हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध और अन्य लोग भारत में उत्पीड़न या भेदभाव के बिना अपने-अपने धर्मों का पालन करते हुए साथ-साथ रहते हैं।

5.2.9 रूसो

- जीन-जैक्स रूसो (1844-1910) जिनेवा के एक दार्शनिक, लेखक और संगीतकार थे। उनके राजनीतिक दर्शन ने यूरोप के ज्ञानोदय के युग की प्रगति के साथ-साथ फ्रांसीसी क्रांति के पहलुओं और आधुनिक राजनीतिक, आर्थिक और शैक्षिक विचारों के विकास को प्रभावित किया।

रूसो का दर्शन

दर्शन	विवरण	उदाहरण
आदमी की स्वतंत्रता	• मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन सामाजिक जंजीरों से बंधा होता है। • एक आदमी सोच सकता है कि वह दूसरों का मालिक है, लेकिन वह उनसे अधिक गुलाम बना हुआ है।	• एक बच्चा स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन अपने परिवार, स्कूल पाठ्यक्रम, सरकार के कानूनों के पालन और अंतर्राष्ट्रीय कानूनों (आव्रजन, वीजा और नागरिकता) के अनुपालन के लिए जिम्मेदारियों से बंधा होता है, जो व्यक्तियों पर लगाए गए जंजीरों को दर्शाता है।
सामान्य इच्छा	• लोकतंत्र में जनता परम सत्ता होती है और संप्रभुता लोगों और उनकी सामूहिक इच्छा के भीतर होती है।	• लोकतंत्र सामूहिक इच्छाशक्ति का सबसे बड़ा उदाहरण है जहां लोगों का वोट यह निर्धारित करता है कि कौन सत्ता में आने वाला है।
संपत्ति	• निजी संपत्ति के विचार को खारिज करते हुए, यह वकालत की जाती है कि धन को केवल बुनियादी जरूरतों को पूरा करना चाहिए, जो समाजवाद की ओर झुकाव का संकेत देता है।	• भारत में भूमि सुधारों के हिस्से के रूप में हदबंदी के कार्यान्वयन का उद्देश्य निजी धन संचय को सीमित करना और भूमि का पुनर्वितरण करना है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर किसी को अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए पर्याप्त भूमि तक पहुंच हो।
शिक्षा	• शिक्षा पुस्तकों से औपचारिक शिक्षा के बजाय प्रकृति के माध्यम से प्राप्त की जानी चाहिए।	• रवींद्रनाथ टैगोर की शांतिनिकेतन, बच्चों के लिए प्रकृति के निकट संपर्क में बड़े होने के लिए एक स्वतंत्र और निडर वातावरण बनाने के विचार पर आधारित है।

5.2.10 जॉन रॉल्स

- जॉन बॉर्डली रॉल्स (1921-2002) संयुक्त राज्य अमेरिका के एक नैतिक, कानूनी और राजनीतिक दार्शनिक थे। 1999 में, उन्हें तर्क और दर्शन के लिए शॉक पुरस्कार के साथ-साथ राष्ट्रीय मानविकी पदक भी मिला।
- जॉन रॉल्स को 'समकालीन संविदावाद' के जनक के रूप में जाना जाता है और वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के सबसे प्रभावशाली अमेरिकी दार्शनिक हैं। उनके दर्शन को रॉल्सियनवाद भी कहा जाता है।

Rawl's Concept of Social Justice

- First Principle
  - Concerns Political Institutions
    - Freedom of speech and Expression
    - Human Rights
    - Rights of Private individuals corporations or workers to own private property
    - Basic liberties could be limited for the sake of liberty.
- Second Principle
  - Concerns Socio-economic Institutions
    - They are attached to offices and positions open to all under conditions of fair equality of opportunity
    - They are to be to the greatest benefit of the least advantaged members of society-Difference Principle

जॉन रॉल्स का दर्शन

विषय	मुख्य बिंदु	उदाहरण
समानता	• प्रत्येक अमीर और गरीब व्यक्ति को समान बुनियादी अधिकार होने चाहिए, जैसे स्वतंत्रता, वोट देने का अधिकार और सार्वजनिक पद संभालने का अधिकार। • अधिकांश देशों में इन अधिकारों को राजनीतिक अधिकार कहा जाता है।	• कई देशों में विवाह समानता की मान्यता यह सुनिश्चित करती है कि समान-लिंग वाले जोड़ों के पास समान अधिकार और कानूनी सुरक्षा है जो पहले विपरीत-लिंग वाले जोड़ों के लिए अनन्य थी। यह समान मूल अधिकारों के सिद्धांत और गैर-भेदभाव के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है भारत में तीन तलाक को अवैध बनाकर महिलाओं को दी गई समानता भी एक उदाहरण है।
विभेदक समानता	• व्यक्तियों (अमीर बनाम गरीब) के बीच फायदे और नुकसान में अंतर के कारण, समाज में उनकी स्थिति के आधार पर विभिन्न अधिकारों का आनंद लिया जाता है।	• कुछ समाज इन मतभेदों को आरक्षण कहते हैं, जबकि अन्य इन्हें सकारात्मक भेदभाव कहते हैं। • प्रगतिशील कर निर्धारण, गरीबों को सामाजिक लाभ प्रदान करने वाले सरकारी कार्यक्रम।
न्याय का सिद्धांत	• न्याय निर्णय लेने में उपयोग किया जाने वाला एक मानक है जिसमें बिना किसी पूर्वाग्रह के तथ्यों पर विचार करना शामिल है। • इसे "अज्ञान का पर्दा" या "मूल स्थिति" के रूप में भी जाना जाता है।	• सकारात्मक कार्रवाई कार्यक्रम, मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा।
अज्ञानता का पर्दा	• सामाजिक अनुबंध सिद्धांत का एक घटक, अज्ञानता का पर्दा, हमें निष्पक्षता के लिए विचारों का मूल्यांकन करने की अनुमति देता है। • कोई नहीं जानता कि अज्ञानता के पर्दे के पीछे वे कौन हैं। • उन्हें अपने सामाजिक वर्ग, अपने लाभों, अपनी कमियों या यहां तक कि अपने व्यक्तित्व के बारे में कोई जानकारी नहीं है।	• अज्ञान के परदे को समझने के लिए, कल्पना करें कि आप पर दोस्तों के साथ साझा करने के लिए पिज्ज़ा काटने का कार्य दिया गया है। • आप एक टुकड़ा खाने वाले आखिरी व्यक्ति होंगे। आप यथासंभव सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त करना चाहते हैं, और ऐसा करने का एकमात्र तरीका सभी स्लाइसों को एक ही आकार का बनाना है।
चिंतनशील संतुलन	• चिंतनशील संतुलन बुनियादी सिद्धांतों और विशिष्ट आकलनों के बीच जानबूझकर पारस्परिक समायोजन की प्रक्रिया द्वारा पहुंचे विश्वासों के संग्रह के बीच संतुलन या सुसंगतता की स्थिति है।	• यदि किसी को चोरी के आरोप में जेल में डाल दिया गया है, तो किसी अन्य चोर को रिहा कर देना असंगत और अनैतिक होगा यदि दोनों मामले सभी महत्वपूर्ण तरीकों से समान हैं। • इसी तरह, यदि हम बिना स्पष्टीकरण के एक व्यक्ति के साथ दूसरे से बेहतर व्यवहार करते हैं, तो हम पर भेदभाव का आरोप लगाया जा सकता है। • गर्भपात, मृत्युदंड, पशु अधिकार।

'अज्ञानता के पर्दे' का उदाहरण

- राजीव, हिमालय के एक छोटे से शहर का एक गरीब आदमी था, जो कभी भी बाहरी दुनिया के संपर्क में नहीं आया था और उसके पास ज्यादा शिक्षा भी नहीं थी।
- एक दिन, एक अजनबी उनके पास आया और उन्हें समाज के लिए नियम बनाने का मौका दिया।
- राजीव उन मूल्यों को चुनना चाहते थे जिनसे हर किसी को फायदा हो, भले ही उनकी पृष्ठभूमि कुछ भी हो, भले ही उन्हें दुनिया के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी।
- उन्होंने गरीबों की जरूरतों, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल के महत्व और पर्यावरण की रक्षा के बारे में सोचा।
- अंत में, उन्होंने ऐसे आदर्शों पर निर्णय लिया जो समान अवसर प्रदान करेंगे, जैसे सभी के लिए शिक्षा और उचित कर, साथ ही पर्यावरण का ख्याल रखना और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना।
- उस अजनबी ने राजीव के फैसले को मंजूरी दे दी, जिससे उनके मन में यह सवाल उठने लगा कि भविष्य में समाज कैसा होना चाहिए।
- राजीव को एहसास हुआ कि उनका जन्म किसी भी सामाजिक वर्ग में हो सकता है, इसलिए वह गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के अधिकारों की रक्षा करना चाहते थे।
- समाज में अपनी स्थिति न जानने की अवधारणा ने राजीव को निष्पक्ष और निष्पक्ष विकल्प चुनने में मदद की, भले ही इससे उन्हें सीधे तौर पर कोई फायदा न हुआ हो।

न्याय के सिद्धांत की आलोचना:

- **व्यवहार्यता और कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दे:** आलोचकों को वास्तविक दुनिया की परिस्थितियों में रॉल्स के सिद्धांत को लागू करने की व्यवहार्यता पर संदेह है।
- **गैर-पश्चिमी दृष्टिकोणों की उपेक्षा:** आलोचकों का तर्क है कि न्याय का सिद्धांत पश्चिम-केंद्रित है और इसमें गैर-पश्चिमी दृष्टिकोण शामिल नहीं हो सकते हैं।
- **व्यक्तिगत अधिकारों का बलिदान किया जाता है:** आलोचकों का तर्क है कि रॉल्स का सिद्धांत सामाजिक समानता के लिए व्यक्तिगत अधिकारों का बलिदान कर सकता है।
- **योग्यता पर अपर्याप्त ध्यान:** आलोचकों का तर्क है कि रॉल्स का सिद्धांत सामाजिक और आर्थिक परिणाम बनाने में योग्यता के महत्व को पूरी तरह से संबोधित नहीं करता है।
- **न्याय की एकल अवधारणा को लागू करना:** आलोचकों का तर्क है कि रॉल्स का सिद्धांत न्याय की एक ही अवधारणा को लागू करता है जो अन्य दृष्टिकोणों की उपेक्षा करता है।
- **पुनर्वितरण पर अत्यधिक जोर दिया गया है:** आलोचकों का तर्क है कि रॉल्स का सिद्धांत पुनर्वितरण पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है और आर्थिक विकास की उपेक्षा करता है।

समकालीन संविदावाद

- समकालीन संविदावाद एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जो नैतिक और राजनीतिक प्रणालियों को आकार देने में सामाजिक अनुबंधों और समझौतों के महत्व पर जोर देता है।
- यह न्यायसंगत और स्थिर समाज के निर्माण में सहयोग, निष्पक्षता और पारस्परिक लाभ के महत्व पर जोर देता है।
- जॉन रॉल्स और थॉमस स्कैनलॉन जैसे विद्वानों ने मूल स्थिति, अज्ञानता का पर्दा और उचित समझौते की अवधारणा जैसे विचारों पर विचार करके इस ढांचे में योगदान दिया है।
- आधुनिक संविदावाद उन नैतिक और राजनीतिक सिद्धांतों के लिए आधार तैयार करना चाहता है जो व्यक्तिगत अधिकारों, सामाजिक सहयोग और सामान्य हितों की खोज को प्राथमिकता देते हैं।

5.2.11 मैक्स वेबर

- मैक्सिमिलियन कार्ल एमिल वेबर (1864 - 1920) एक जर्मन समाजशास्त्री, इतिहासकार, वकील और राजनीतिक अर्थशास्त्री थे जिन्हें समकालीन पश्चिमी समाज के विकास के सबसे प्रभावशाली विचारकों में से एक माना जाता है।
- उनके विचारों का सामाजिक सिद्धांत और अनुसंधान पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। जबकि वेबर खुद को समाजशास्त्री नहीं मानते थे, उन्हें कार्ल मार्क्स और एमिल दुर्खीम के साथ समाजशास्त्र के संस्थापकों में से एक माना जाता है।

वेबर का दर्शन

- **वर्स्टेहेन (समझ):** वेबर व्यक्ति द्वारा अपने क्रिया से जुड़े व्यक्तिपरक अर्थों को समझकर सामाजिक क्रिया को समझने के महत्व में विश्वास करते थे।
  - उदाहरण के लिए, विरोध आंदोलनों का अध्ययन करने में, वेबर के वर्स्टेहेन के दर्शन को नियोजित करने वाले समाजशास्त्री प्रदर्शनकारियों की प्रेरणाओं, मूल्यों और विश्वासों को समझने की कोशिश करेंगे, बजाय उनके बाहरी व्यवहारों की जांच करने के। अपने कार्यों के पीछे के कारणों को समझकर, समाजशास्त्री खेल में सामाजिक

गतिशीलता और व्यापक सामाजिक मुद्दों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं।

- **आदर्श प्रारूप:** वेबर ने जटिल सामाजिक घटनाओं को समझने और विश्लेषण करने के लिए "आदर्श प्रारूप" की अवधारणा पेश की। एक आदर्श प्रारूप एक सामाजिक घटना की आवश्यक विशेषताओं का एक अमूर्त प्रतिनिधित्व है।
  - उदाहरण के लिए, लोकतंत्र की अवधारणा का अध्ययन करने में, एक आदर्श प्रारूप का निर्माण किया जा सकता है जिसमें स्वतंत्र चुनाव, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और नागरिक स्वतंत्रता की सुरक्षा जैसे प्रमुख तत्व शामिल हैं। यह आदर्श प्रारूप शोधकर्ताओं को लोकतंत्र के वास्तविक दुनिया के उदाहरणों की पहचान और तुलना करने में मदद करता है, आदर्श से समानता और विचलन को उजागर करता है।
- **नौकरशाही:** वेबर ने बड़े पैमाने पर नौकरशाही और समाज पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में उनकी तर्कसंगतता और दक्षता को मान्यता दी, लेकिन संभावित मुद्दों की भी पहचान की, जैसे कि एक अवैयक्तिक और कठोर प्रणाली का उद्भव।
  - नौकरशाही का एक उदाहरण स्पष्ट पदानुक्रम, मानकीकृत प्रक्रियाओं और विशेष भूमिकाओं के साथ एक सरकारी एजेंसी है। जबकि नौकरशाही दक्षता और व्यवस्था लाती है, यह लालफीताशाही और लचीलेपन की कमी को भी जन्म दे सकती है।
- **प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद:** वेबर ने प्रोटेस्टेंटवाद और पूंजीवाद के उदय के बीच संबंध का पता लगाया। उन्होंने तर्क दिया कि कुछ प्रोटेस्टेंट धार्मिक मूल्य, जैसे प्रोटेस्टेंट कार्य नैतिकता, जो कड़ी मेहनत, अनुशासन और मितव्ययिता पर जोर देती है, ने पूंजीवादी भावना के विकास में योगदान दिया।
  - इसका एक उदाहरण प्रोटेस्टेंट सुधार के इतिहास में देखा जा सकता है, जहां मितव्ययिता, आत्म-अनुशासन और परिश्रम के धार्मिक मूल्यों को आर्थिक सफलता और धन के संचय और औद्योगिक पूंजीवाद के विकास को बढ़ावा देने में सहायक माना जाता था।
- **सामाजिक क्रिया और सामाजिक व्यवस्था:** वेबर ने विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रिया के बीच अंतर किया, जो सामाजिक व्यवस्था को आकार देने वाले व्यक्तियों के कार्य और व्यवहार हैं।
  - उदाहरण के लिए, मूल्य-तर्कसंगत क्रिया कुछ मूल्यों या सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता से प्रेरित होती है। एक व्यक्ति जो कर्तव्य की भावना से सार्वजनिक सेवा में अपना करियर बनाना चुनता है और अधिक से अधिक भलाई में योगदान करने की इच्छा मूल्य-तर्कसंगत क्रिया को प्रदर्शित करता है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक क्रियाओं को समझकर, समाजशास्त्री विश्लेषण कर सकते हैं कि वे सामाजिक संरचनाओं के गठन और रखरखाव में कैसे योगदान करते हैं।
- **मूल्य तटस्थता:** वेबर ने सामाजिक विज्ञान में मूल्य तटस्थता की वकालत की, यह सुझाव देते हुए कि शोधकर्ताओं को अपने व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों को उनके उद्देश्य विश्लेषण से अलग करने का प्रयास करना चाहिए।
  - उदाहरण के लिए, धार्मिक प्रथाओं का अध्ययन करते समय, वेबर के मूल्य तटस्थता के दर्शन का पालन करने वाले समाजशास्त्री का उद्देश्य अपने स्वयं के निर्णय या पूर्वाग्रहों को लागू किए बिना एक धार्मिक समूह की प्रथाओं और विश्वासों को समझना होगा। निष्पक्षता बनाए रखने से, शोधकर्ता सामाजिक घटनाओं की स्पष्ट और अधिक निष्पक्ष समझ प्रदान कर सकते हैं।

5.2.12 जेम्स मैडिसन

- जेम्स मैडिसन जूनियर (1751-1836) एक अमेरिकी राजनेता, राजनयिक और संस्थापक पिता थे, जिन्होंने 1809 से 1817 तक देश के चौथे राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया था। मैडिसन को संयुक्त राज्य अमेरिका के संविधान और बिल ऑफ राइट्स के निर्माण और प्रचार में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए "संविधान के पिता" के रूप में जाना जाता है।

जेम्स मैडिसन का दर्शन

- **गणतंत्रवाद:** मैडिसन सरकार के एक गणतांत्रिक रूप में विश्वास करते थे, जहां सत्ता लोगों द्वारा आयोजित की जाती है और निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से प्रयोग की जाती है। उन्होंने निर्णय लेने की प्रक्रिया में नागरिक भागीदारी और सार्वजनिक विचार-विमर्श के महत्व पर जोर दिया।
  - **उदाहरण:** भारत एक संसदीय गणराज्य के रूप में कार्य करता है, जहां शक्ति लोगों में निहित है। भारतीय नागरिकों को नियमित चुनावों के माध्यम से मतदान करने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार है, जो सरकार के विभिन्न स्तरों पर अपने प्रतिनिधियों को चुनने में अपनी आवाज का प्रयोग करते हैं।
- **शक्तियों का पृथक्करण:** मैडिसन ने शक्तियों के पृथक्करण की वकालत की, जिसमें विभिन्न शाखाओं (विधायी, कार्यकारी और न्यायिक) के बीच सरकारी प्राधिकरण को विभाजित करना शामिल है। यह अलगाव शक्ति की केन्द्रीकरण को

रोकने और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा के लिए नियंत्रण और संतुलन की एक प्रणाली के रूप में कार्य करता है।

- **उदाहरण:** भारतीय संविधान सरकार की तीन अलग-अलग शाखाओं की स्थापना करता है: विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। विधायिका, जिसे संसद के रूप में जाना जाता है, कानून बनाने के लिए जिम्मेदार है, कार्यकारी शाखा राष्ट्रपति और मंत्रिपरिषद के माध्यम से उन कानूनों को निष्पादित करती है, और सर्वोच्च न्यायालय की अध्यक्षता वाली न्यायपालिका कानूनों की व्याख्या करती है और उनकी संवैधानिकता सुनिश्चित करती है। शक्तियों का यह पृथक्करण नियंत्रण और संतुलन की प्रणाली को बनाए रखने में मदद करता है।

- **संघवाद:** मैडिसन ने संघवाद की अवधारणा का समर्थन किया, जिसमें केंद्र सरकार और क्षेत्रीय या राज्य सरकारों के बीच शक्ति का विभाजन शामिल है। उनका मानना था कि सरकार के दो स्तरों के बीच शक्ति का संतुलन व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा में मदद करता है और अत्याचार को रोकता है।
  - **उदाहरण:** भारत एक संघीय प्रणाली का पालन करता है जहां शक्ति केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच विभाजित होती है।
- **व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा:** मैडिसन व्यक्तिगत अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा के प्रबल समर्थक थे। वह संभावित सरकारी अतिक्रमण से व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा के महत्व में विश्वास करते थे।
  - **उदाहरण:** भारत के संविधान में मौलिक अधिकारों की एक व्यापक सूची शामिल है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करती है।

5.2.13 मैकियावेली

- मैकियावेली (1469-1527) एक इतालवी पुनर्जागरण इतिहासकार, राजनीतिज्ञ, राजनयिक, दार्शनिक, मानवतावादी और लेखक थे। उन्होंने 1513 में अपनी सबसे प्रसिद्ध कृति **'द प्रिंस'** लिखी। मैकियावेली के लिए, सामाजिक राजनीतिक जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना और धारण करना है।

5.3 मैकियावेली का दर्शन

दर्शन	विवरण	अनुप्रयोग और उदाहरण
शेर और लोमड़ी के गुणों का संयोजन	मैकियावेली शासकों को सलाह देते हैं कि वे शेर (शक्ति और बल) और लोमड़ी (चालाक और दूरदर्शिता) दोनों के गुणों को धारण करें।	एक शासक अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और सत्ता बनाए रखने के लिए छल और अवसरवाद सहित रणनीतिक रणनीति का उपयोग कर सकता है।
लोगों की लोकप्रियता जीतना	मैकियावेली शासकों को अपनी प्रजा से लोकप्रियता, सद्भावना और स्नेह प्राप्त करने की सलाह देते हैं।	शासकों को लोगों के समर्थन को बनाए रखने और संभावित अशांति या विरोध को रोकने के लिए लोगों के कल्याण और संतुष्टि को प्राथमिकता देनी चाहिए।
बुद्धिमान लोगों की परिषद	मैकियावेली ने शासकों को सलाह दी है कि वे खुद को बुद्धिमान सलाहकारों के साथ घेर लें जो सच बोल सकते हैं।	शासकों को जानकार और ईमानदार व्यक्तियों की सलाह लेनी चाहिए ताकि वे सूचित निर्णय ले सकें और अलगाव या चाटुकारिता के नुकसान से बच सकें।
भावना-मुक्त निर्णय	मैकियावेली का सुझाव है कि शासकों को गणनात्मक, अवसरवादी होना चाहिए और भावनाओं से प्रभावित नहीं होना चाहिए।	शासकों को रणनीतिक रूप से भावनाओं का लाभ उठाना चाहिए और निर्णय लेने के लिए एक शांत और तर्कसंगत दृष्टिकोण बनाए रखते हुए, राज्य के लाभ के लिए सार्वजनिक भावनाओं का फायदा उठाना चाहिए।

भारतीय दर्शन

- भारतीय दर्शन में दार्शनिक विचारों की एक समृद्ध और विविध परंपरा शामिल है जो भारतीय उपमहाद्वीप में हजारों वर्षों में विकसित हुई है। ये दर्शन अस्तित्व की प्रकृति, ज्ञान, नैतिकता और मानव जीवन के उद्देश्य के बारे में मौलिक प्रश्नों में उतरते हैं। यहाँ कुछ प्रमुख भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय दिया गया है:
- **हिंदू दर्शन:** हिंदू दर्शन वेदांत, योग और सांख्य सहित विचार के विभिन्न स्कूलों को शामिल करता है। वेदांत उपनिषदों जैसे पवित्र ग्रंथों के अध्ययन के माध्यम से परम वास्तविकता और स्वयं की प्रकृति की पड़ताल करता है। योग दर्शन आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति के लिए शरीर, मन और आत्मा के मिलन पर जोर देता है। सांख्य दर्शन वास्तविकता की द्वैतवादी प्रकृति और अस्तित्व के भौतिक और आध्यात्मिक पहलुओं के विश्लेषण की पड़ताल करता है।
- **बौद्ध दर्शन:** गौतम बुद्ध द्वारा स्थापित बौद्ध धर्म, पीड़ा को दूर करने और आत्मज्ञान प्राप्त करने के साधन के रूप में चार

आर्य सत्यों और अष्टांगिक मार्ग पर जोर देता है। बौद्ध दर्शन नश्वरता, अनात्म और चेतना की परिवर्तनशील प्रकृति जैसी अवधारणाओं की पड़ताल करता है। बौद्ध दर्शन के स्कूलों में थेरवाद, महायान और वज्रयान शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक अद्वितीय अंतर्दृष्टि और प्रथाओं की पेशकश करता है।

- **जैन दर्शनः** महावीर द्वारा स्थापित जैन धर्म, मुक्ति की खोज और अहिंसा के नैतिक सिद्धांत पर केंद्रित है। जैन दर्शन कर्म की अवधारणाओं, जन्म और मृत्यु के चक्र और अहिंसा, सत्य और तपस्या के माध्यम से आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग की खोज करता है।
- **सिख दर्शनः** गुरु नानक द्वारा स्थापित सिख धर्म ईश्वर के प्रति समर्पण, समानता और सामाजिक न्याय पर जोर देता है। सिख दर्शन नैतिक जीवन, निस्वार्थ सेवा और आध्यात्मिक विकास की निरंतर खोज के महत्व पर जोर देता है।

कर्म का सिद्धांत

- जब कोई आत्मा किसी भौतिक शरीर से जुड़ी होती है, तो उससे दैवीय नियमों का पालन करने और कुछ कार्य करने की अपेक्षा की जाती है।
- मान्यता यह है कि अच्छे कर्म करने से सुख मिलता है, जबकि बुरे कर्म करने से दुख मिलता है।
- मानव आत्मा शाश्वत है और निरंतर कर्मो में लगी रहती है, और वह अपने कर्मों के परिणामों को भोगने से बच नहीं सकती। यह जो देता है वही प्राप्त करता है।

5.3.1 हिंदू दर्शन और नैतिक परिप्रेक्ष्य के महत्वपूर्ण स्कूल

यहां धर्म शब्द का अर्थ केवल धर्म नहीं है; बल्कि यह कर्तव्य, दायित्व और धार्मिकता का प्रतीक है।

Schools of Hindu Philospphy

Orthodox Schools

- Samkhya
- Yoga
- Nyaya
- Vaisheshika
- Purva Mimamsa
- Uttara Mimamsa

Heterodox Schools

- Buddhism
- Jainism
- Ajivika
- Charvaka

- **न्यायः** न्याय भारतीय दर्शन का एक स्कूल है जो तर्क और ज्ञानमीमांसा पर केंद्रित है। नैतिक दृष्टिकोण से, न्याय नैतिक व्यवहार के मार्गदर्शन में सही ज्ञान और समझ के महत्व पर जोर देता है। यह दावा करता है कि नैतिक निर्णय ठोस तर्क और साक्ष्य पर आधारित होने चाहिए।
- **वैशेषिकः** वैशेषिक एक दार्शनिक स्कूल है जो तत्वमीमांसा और वास्तविकता की प्रकृति की खोज करता है। नैतिक दृष्टिकोण से, वैशेषिक नैतिक जिम्मेदारी और जवाबदेही की अवधारणा पर जोर देता है। यह दावा करता है कि व्यक्ति अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं और उन्हें नैतिक सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने का प्रयास करना चाहिए।
- **सांख्यः** सांख्य दर्शन का एक द्वैतवादी स्कूल है जो अस्तित्व की प्रकृति और पदार्थ और चेतना के बीच अंतर पर प्रकाश डालता है। नैतिक दृष्टिकोण से, सांख्य ज्ञान और आत्म-बोध के माध्यम से मुक्ति (मोक्ष) की अवधारणा पर प्रकाश डालता है। यह आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए भौतिक इच्छाओं और आसक्तियों से परे जाने की आवश्यकता पर जोर देता है।
- **योगः** योग एक दार्शनिक और व्यावहारिक स्कूल है जो ब्रह्मांडीय चेतना (ब्राह्मण) के साथ व्यक्तिगत स्व (आत्मा) के मिलन पर केंद्रित है। नैतिक दृष्टिकोण से, योग पथ के अभिन्न अंग के रूप में नैतिक मूल्यों और नैतिक आचरण पर जोर देता है। यह संतुलित और नैतिक जीवन जीने के लिए आत्म-अनुशासन, आत्म-नियंत्रण और सद्गुणों के विकास की वकालत करता है।
- **पूर्व मीमांसाः** पूर्व मीमांसा दर्शनशास्त्र का एक स्कूल है जो मुख्य रूप से वैदिक अनुष्ठानों और ग्रंथों की व्याख्या से संबंधित है। नैतिक दृष्टिकोण से, पूर्व मीमांसा वेदों में निर्धारित अनुष्ठानों और आदेशों के अनुसार किसी के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों (स्वधर्म) को निभाने पर महत्वपूर्ण जोर देती है।
- **उत्तर मीमांसा (वेदांत):** वेदांत दर्शनशास्त्र का एक स्कूल है जो उपनिषदों और वेदों के अध्ययन और व्याख्या पर केंद्रित है। नैतिक दृष्टिकोण से, वेदांत धर्म (धार्मिकता), अहिंसा (अहिंसा) और निस्वार्थ सेवा के सिद्धांतों पर जोर देता है। यह किसी के वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति और स्वयं और दूसरों के भीतर देवत्व की पहचान पर जोर देता है, जिससे नैतिक आचरण और करुणा पैदा होती है।

भारतीय दर्शन के ये छह स्कूल नैतिकता और नैतिक आचरण पर अलग-अलग दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

5.3.2 रामायण और महाभारत का सार

चरित्र	नैतिक सबक
राम	• **विवाह:** अपनी पत्नी के प्रति वफादारी प्रदर्शित करना। • **सामाजिक संविदावाद:** जनता/प्रजा के साथ संबंधों को महत्व देना। • **शासन:** परिवार से ऊपर जनता को प्राथमिकता देना। • **मित्रता:** हनुमान जी के साथ मित्रवत व्यवहार करना।
दशरथ और कैकेयी	• **भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** अत्यधिक भावनाओं से प्रभावित हुए बिना निर्णय लेना। • **सामाजिक प्रभाव:** सकारात्मक और नकारात्मक दोनों सामाजिक प्रभावों के महत्व पर प्रकाश डालना।
रावण	• **लालच:** सत्ता की अत्यधिक इच्छा और नैतिक निर्णय की कमी के परिणामों का चित्रण। • **ज्ञान और बुद्धि:** नैतिक बौद्धिकता के महत्व पर जोर देना।
भीष्म	• **धर्म:** किसी के कर्तव्य और धार्मिकता को कायम रखना।
अर्जुन और कृष्ण	• **सकारात्मक सोच:** हर स्थिति में समाधान और सकारात्मकता खोजना। • **संविदावाद:** अपनी बात रखने और दायित्वों को पूरा करने के महत्व को समझना। • **टेलीओलॉजिकल एथिक्स:** कार्यों के नैतिक स्वरूप को निर्धारित करने के लिए उनके परिणामों पर विचार करना।
शबरी	• **समर्पण और धैर्य:** अटूट समर्पण और धैर्य का प्रदर्शन करना। • **प्रेम, संतुष्टि और खुशी:** भगवान राम की सेवा में शाश्वत खुशी और संतुष्टि पाना। • **समानता और सम्मान:** शबरी के प्रति भगवान राम का समान व्यवहार और सम्मान।
जटायु	• **जिम्मेदारी:** सीमाओं को जानते हुए भी अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना।

5.3.3 रामायण की शिक्षाएं

- **धर्म का मार्ग चुनना:** रावण के छोटे भाई विभीषण ने राम के खिलाफ लड़ाई में अपने भाई की मदद न करने का विकल्प चुना। वह अच्छी तरह जानता था कि उसके भाई ने एक महिला का अपहरण करके अपराध किया है।
- **कितने भी शक्तिशाली हो जाएं, परंतु विनम्र बने रहें:** भगवान हनुमान अकेले ही रावण की सेना का सामना करने की क्षमता रखते थे। हालाँकि, उन्होंने भगवान राम की दिव्यता के प्रति समर्पित होकर उन्हें आवश्यक कार्य करने दिया।
- **सत्य की हमेशा जीत होती है:** रामायण का मूल संदेश यह है कि बुराई चाहे कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, अच्छाई उस पर सदैव विजय प्राप्त करेगी।
  - सत्य की हमेशा जीत होती है, व्यक्ति में सदैव नेक हृदय एवं उत्कृष्ट आदर्श विद्यमान होने चाहिए।
- **एकता जीवन में किसी भी कठिनाई को दूर कर सकती है:** एकता कठिन परिस्थितियों में भी हमें सफलता की मार्ग पर ले जाती है।
- **कर्तव्य के प्रति गहन रूप से प्रतिबद्ध रहना:** राम न केवल सीता के पति थे, बल्कि अयोध्या के राजा भी थे और राजा की जिम्मेदारी अपनी प्रजा को प्रसन्न रखना है।
  - परिणामस्वरूप, उन्हें जनता की खातिर अपनी पत्नी को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि उन्होंने उनकी सतीत्व पर संदेह जताया था।
  - एक पति के रूप में वह अपनी पत्नी के प्रति कर्तव्यबद्ध थे। लेकिन एक राजा के रूप में, उन्हें अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं से पहले अपनी प्रजा की इच्छाओं के बारे में सोचना था।
- **सभी के साथ समान व्यवहार करना:** भगवान राम ने सभी के साथ समान व्यवहार किया, जिससे उन्होंने सभी का प्यार और सम्मान हासिल किया।
  - जब शबरी (ऋषि की बेटी) ने उन्हें जूठे बेर के फल दिए, तो उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के उन्हें खा लिया। वह हमेशा दूसरों के प्रति दयालु और विनम्र थे।
  - हमें इस गुण को गहराई तक सीखना चाहिए। हमें हमेशा सभी के साथ समान व्यवहार करना चाहिए और पद, लिंग, उम्र या जाति के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- **हमेशा उत्कृष्ट संगति रखना:** ऐसा कहा जाता है कि आपका परिवेश आपको वैसा बनाता है जैसा आप हैं। रामायण में भी उत्कृष्ट संगति के महत्व पर जोर दिया गया है।

- दशरथ की तीसरी पत्नी, रानी कैकेयी, राम को अपने बेटे से भी अधिक प्यार करती थी, लेकिन उनकी दासी मंथरा ने उनके मन में विष भर दिया, और परिणामस्वरूप, कैकेयी ने राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास मांगा।
- एक बुरा व्यक्ति आपके अंदर की सभी अच्छाइयों को नष्ट कर सकता है, यही कारण है कि हमें लगातार अच्छी संगति बनाए रखने की आवश्यकता है ताकि हम समय के साथ सुधार कर सकें।

5.3.4 भगवद-गीता द्वारा दी गई नैतिक शिक्षा

- **सत्य की जीत होगी:** हमेशा शक्तिशाली साधन होगा, और सत्य को कभी छिपाया नहीं जा सकता।
  - उदाहरण के लिए त्वचा का रंग एक जैविक कारण है, लेकिन नस्लवाद एक सामाजिक समस्या है। पश्चिमी शक्तियों ने इस वास्तविकता को छिपाने का प्रयास किया, लेकिन दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला की रंगभेद विरोधी लड़ाई ने अंततः दिखाया कि नस्ल एक सामाजिक समस्या मात्र है।
- **कर्तव्य और सेवा:** भगवद गीता सेवा और समर्पण की भावना के साथ अपने कर्तव्यों को पूरा करने के महत्व पर जोर देती है। सिविल सेवकों की जिम्मेदारी है कि वे जनता की सेवा करें और समाज के कल्याण के लिए काम करें।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक लगन से अपने कर्तव्यों का पालन करता है, जैसे कानून व्यवस्था बनाए रखना, जन सेवाएं उपलब्ध्य कराना, या ऐसी नीतियां लागू करना जो समाज में हाशिए पर रहने वाले वर्गों का उत्थान करती हैं। वे निस्वार्थ सेवा के सिद्धांत को अपनाते हुए, व्यक्तिगत हितों पर जनता की भलाई को प्राथमिकता देते हैं।
- **नीतिगत निर्णय लेना:** गीता धार्मिकता और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर नीतिगत निर्णय लेने का मूल्य सिखाती है। सिविल सेवकों को अक्सर जटिल निर्णयों का सामना करना पड़ता है जिनके लिए नीतिगत निर्णय और समाज पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव पर विचार करने की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है जहां उन्हें भ्रष्ट आचरण का पालन करने या ईमानदारी बनाए रखने के बीच विकल्प चुनना होगा। अपने कार्यों को नैतिक सिद्धांतों के साथ जोड़कर, वे ऐसे निर्णय लेते हैं जो जनता की भलाई को प्राथमिकता देते हैं, भले ही इसका अर्थ चुनौतियों का सामना करना या प्रचलित मानदंडों के खिलाफ जाना हो।
- **परिणामों के प्रति अनासक्ति:** गीता परिणामों के प्रति आसक्ति के बिना अपने कर्तव्यों का पालन करने के महत्व पर जोर देती है। सिविल सेवकों को अपनी जिम्मेदारियों पर ध्यान केंद्रित करने और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं या मान्यता से प्रभावित हुए बिना अपने कर्तव्यों का पालन करने की आवश्यकता होती है।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक केवल व्यक्तिगत लाभ या राजनीतिक पहचान से प्रेरित होने के बजाय, किसी परियोजना या नीति कार्यान्वयन पर अथक परिश्रम करता है, और उन लोगों के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करता है जिनकी वह सेवा करता है।
- **समानता और निष्पक्षता:** गीता समानता और निष्पक्षता के आदर्शों को बढ़ावा देती है। सिविल सेवकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सभी नागरिकों के साथ समान सम्मान से व्यवहार करें, जन सेवाओं की डिलीवरी में निष्पक्षता सुनिश्चित करें और न्याय के सिद्धांतों को कायम रखें।
  - उदाहरण: एक सिविल सेवक जाति, पंथ या सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बावजूद सरकारी सेवाओं और संसाधनों तक समान पहुंच सुनिश्चित करता है। वह भेदभाव को समाप्त करने का प्रयास करता है और एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज बनाने की दिशा में काम करता है।
- **आत्म-चिंतन और आत्म-सुधार:** गीता लोगों को आत्म-चिंतन और निरंतर आत्म-सुधार में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करती है। सिविल सेवकों से अपने कार्यों पर विचार करने, अनुभवों से सीखने और ऐसे गुण विकसित करने की अपेक्षा की जाती है जो उनकी प्रभावशीलता और नैतिक आचरण में योगदान करते हैं।
  - **उदाहरण:** एक सिविल सेवक नियमित रूप से अपना आत्म-मूल्यांकन करता रहता है, सहकर्मियों और नागरिकों से प्रतिक्रिया लेता है, और पेशेवर विकास कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेता है। उनका लक्ष्य जनता की बेहतर सेवा करने के लिए अपने कौशल, ज्ञान और नीतिगत जागरूकता को बढ़ाना है।

5.3.5 इस्लामी नीतिशास्त्र

- जीवन के एक व्यापक तरीके के रूप में इस्लाम एक संपूर्ण नैतिक प्रणाली को समाहित करता है जो इसके वैश्विक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- इस्लाम मानता है कि नैतिकता पद सापेक्ष नहीं हैं, और इसके बजाय, एक सार्वभौमिक मानक को परिभाषित करते हैं जिसके द्वारा कार्यों को नैतिक या अनैतिक माना जा सकता है।
- इस्लाम की नैतिक प्रणाली न केवल नैतिकता को परिभाषित करता है, बल्कि व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर इसे प्राप्त करने के लिए मानव जाति का मार्गदर्शन भी करती है।

नीतिगत परिप्रेक्ष्य में इस्लाम के सिद्धांत

तौहीद (एकता); एहतिराम (सम्मान); इखलास (ईमानदारी); हया (नम्रता); इक्तिसाद (संयम/विनम्रता); धिक्र (स्मरण); इल्म (ज्ञान की खोज)

- इस्लामी दृष्टिकोण से, मानव जीवन का उद्देश्य ईश्वरीय इच्छा के अनुरूप इस सांसारिक जीवन में ईश्वर और उसके बताए गए सिद्धांतों (आदेशों) के प्रति पूर्ण समर्पण है, और इस तरह इस संसार में शांति प्राप्त करना और जीवन में स्थायी सफलता प्राप्त करना है।
- मुस्लिम कुरान और पैगंबर (हदीस) की परंपराओं को अपने नैतिक मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं।
- व्यवहार के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत वह है जिसे कुरान अल अमल अस्सलिह - नेक काम के रूप में संदर्भित करता है। यह शब्द सभी कर्मों को शामिल करता है, न कि केवल इबादत के बाहरी कामकाज को।
- एक मुसलमान से अपेक्षित कुछ प्राथमिक चारित्रिक लक्षण हैं धर्मपरायणता, विनम्रता और ईश्वर के प्रति उत्तरदायित्व की गहरी भावना।
- ईश्वर के प्रति आस्था और निरंतर जागरूकता न्याय के दिन मनुष्य को आचरण में नैतिक और भक्ति और समर्पण के साथ इरादों में ईमानदार होने में सक्षम बनाती है।
- सदाचार और अच्छे आचरण की कुंजी ईश्वर के साथ एक मजबूत रिश्ता है, जो हर समय और हर जगह सब कुछ देखता है। वह दिलों के रहस्यों और सभी कार्यों के पीछे के इरादों को जानता है।
- इसलिए, इस्लाम सभी परिस्थितियों में नैतिक व्यवहार का आदेश देता है ; जब कोई नहीं जानता तो ईश्वर को हर बात की जानकारी होती है। दुनिया को धोखा देना संभव हो सकता है, लेकिन सृष्टिकर्ता को धोखा देना संभव नहीं है।
- इस्लाम में दान सबसे सराहनीय कार्यों में से एक है।
  - जकात/जकात, वार्षिक दान जो एक निश्चित स्तर से ऊपर धन अर्जित करने वाले प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य है, इस्लाम के बुनियादी सिद्धांतों में से एक है।
- इस्लाम नैतिकता और उसे बढ़ाने वाले मामलों का समर्थन करता है, और भ्रष्टाचार और इसे फैलाने वाले मामलों का विरोध करता है। इस्लाम में निषेधाज्ञाओं और निषेधों को इसी आलोक में देखा जाना चाहिए।

इस्लाम में निहित नैतिक मूल्य

- दयालुता • दान • निष्पक्षता और न्याय
- क्षमा • ईमानदारी • अपने वादे निभाना
- धैर्य • सामाजिक समानता • क्रोध पर नियंत्रण रखना
- व्यवस्था • माता-पिता एवं बड़ों का आदर करना

5.4 भारतीय दार्शनिक

- भारतीय दार्शनिकों ने दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- इन विद्वानों में बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध जैसे प्राचीन ऋषियों से लेकर आदि शंकर, जिन्होंने हिंदू दर्शन को पुनर्जीवित किया, सत्ता, चेतना और नैतिकता की मौलिक अवधारणाओं का अध्ययन किया।
- स्वामी विवेकानन्द और जिद्दू कृष्णमूर्ति विश्व को भारतीय दर्शन का परिचय दिया, जबकि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दर्शन और लेखन का संयोजन किया।
- उनकी शिक्षाएँ कई लोगों को प्रेरित और प्रभावित करती रहती हैं, सत्ता की प्रकृति और आंतरिक शांति की खोज में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

5.4.1 महात्मा बुद्ध

- गौतम बुद्ध एक तपस्वी, धार्मिक नेता और शिक्षक थे जो ईसा पूर्व छठी और पाँचवीं शताब्दी के बीच प्राचीन भारत में थे। उनकी शिक्षाएँ बौद्ध दर्शन, रीति-रिवाजों और धर्म का आधार बन गई।
- बौद्ध नीतिशास्त्र न तो मनुष्य द्वारा अपने उपयोगितावादी उद्देश्यों के लिए बनाए गए मनमाने मानदंड हैं, न ही उन्हें मनमाने ढंग से लागू किया जाता है।
- बौद्ध नीतिशास्त्र मानव निर्मित नियमों या सामाजिक प्रथाओं पर आधारित नहीं है। यह बदलती सामाजिक परंपराओं पर नहीं, बल्कि प्रकृति के शाश्वत नियमों पर आधारित है।
- **बौद्ध नीतिशास्त्र:** यह निर्धारित करती है कि कोई गतिविधि उसके उद्देश्य के आधार पर लाभदायक या हानिकारक है।
  - लालच, नफरत या स्वार्थ से प्रेरित कार्यों को हानिकारक माना जाता है और उन्हें अकुसाल कम्मा कहा जाता है।
  - कुसाल कम्मा दान, प्रेम और ज्ञान के सिद्धांतों पर केंद्रित अच्छे और पुण्य कार्यों को संदर्भित करता है।

बुद्ध द्वारा कहे गए वाक्य

- घृणा घृणा से नहीं, प्रेम से ही समाप्त होती है; यह शाश्वत नियम है।
- आप जो कहते हैं वह नहीं बल्कि आप जो करते हैं वह आपको परिभाषित करता है।
- कोई व्यक्ति इसलिए बुद्धिमान नहीं कहलाता कि वह बार-बार बोलता है; लेकिन यदि वह शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण और निडर है तो वह वास्तव में बुद्धिमान कहलाता है।
- मन और शरीर दोनों के स्वास्थ्य का रहस्य अतीत के लिए शोक करना या भविष्य के बारे में चिंता करना नहीं है, बल्कि वर्तमान क्षण को बुद्धिमानी और ईमानदारी से जीना है।

बौद्ध धर्म के अनुसार जीवन के लिए आवश्यक तीन बातें	अष्टांगिक मार्ग
1. **ज्ञान (प्रज्ञा):** यह सम्यक दृष्टिकोण से आता है, और यह सम्यक इरादे की ओर ले जाता है। 2. **नैतिक आचरण (शील):** सम्यक दृष्टिकोण और इरादे नैतिक आचरण के मार्गदर्शक हैं - सम्यक वाणी, सम्यक आचरण, सम्यक आजीविका और सम्यक प्रयास। 3. **एकाग्रता (समाधि):** इसका केंद्र सम्यक सचेतन और सम्यक ध्यान के लिए 'आत्म-गतिविधि' है। जब ज्ञान, नैतिकता और एकाग्रता जीवन का एक तरीका बन जाते हैं; व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त होता है।	1. सम्यक ज्ञान (या विचार) 2. सम्यक संकल्प 3. सम्यक वाणी 4. सम्यक आचरण (या कार्य) 5. सम्यक आजीविका 6. सम्यक प्रयास 7. सम्यक सचेतन, और 8. सम्यक ध्यान (या एकाग्रता)

चार आर्य सत्य:

1. **दुख का सत्य:** हम चाहे कितना भी संघर्ष कर लें, हमें चरम सुख या संतुष्टि नहीं मिल पाती है। दुख हमारे बीच साझा किया जाने वाला सामान्य बंधन है। इसलिए कष्ट ही हमारे अस्तित्व का वास्तविक सत्य है।
2. **अत्यधिक इच्छा:** तृष्णा, अत्यधिक इच्छाएं और वास्तविकता के बारे में अज्ञानता ही दुख का कारण है।
3. **दुख के अंत का सत्य:** यदि इच्छा समाप्त हो जाएगी, तभी दुख रुक जाएगा। यह अवस्था जब सभी इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं, बौद्ध धर्म में इसे "निर्वाण" कहा जाता है।
4. **दु:खों के अंत का मार्ग:** इस मार्ग को अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। यह सांसारिक सुख और कष्टदायक तपस्या के बीच एक मध्य मार्ग पर जोर देता है।

पंचशील (पांच परिहार्य)

बौद्ध धर्म अपने अनुयाइयों को सभ्य समुदायों में एक साथ रहने के लिए स्वेच्छा से पांच शिक्षाओं को अपनाने का आग्रह करता है। ये हैं - हिंसा न करना, चोरी न करना, झूठ न बोलना, यौन दुराचार न करना और मादक पदार्थों का सेवन न करना।

आधुनिक समय में प्रासंगिकता:

- **सचेतन:** जैसा कि बुद्ध ने सिखाया था, आधुनिक दुनिया में सचेतन का अभ्यास प्रमुखता से बढ़ा है।
  - यह वर्तमान की जागरूकता पैदा करने, तनाव कम करने, ध्यान और जन कल्याण में सुधार के लिए उपयोगी तरीके प्रदान करता है।
  - यह हमें आधुनिक जीवन के व्यतिक्रमों और उलझनों को अधिक स्पष्टता और आंतरिक शांति के साथ हल करने में सक्षम बनाता है।
- **मध्य मार्ग:** बुद्ध द्वारा सामंजस्य स्थापित करने और अतिवाद से बचने पर ध्यान अब विशेष रूप से प्रासंगिक है।
  - मध्यम मार्ग हमें ध्रुवीकरण और अतिवाद की विशेषता वाले समाज में अपने विचारों, कार्यों और दृष्टिकोणों में संयम, सद्भाव और संतुलित दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह करता है।
- **पीड़ा से शिक्षाएँ:** दु:ख और उसका कारण, रोध और मुक्ति का मार्ग आज के परिवेश में अत्यंत महत्वपूर्ण है।
  - वे हमें कष्ट की व्यापकता की याद दिलाते हैं और इसके कारणों को समझने और उस पर काबू पाने के लिए एक साधन हैं।
- **सब कुछ अस्थायी है:** अनित्यता पर बुद्ध की शिक्षा हमें बताती है कि सब कुछ अस्थायी और परिवर्तनशील है।
  - यह शिक्षा हमें तेजी से और हमेशा बदलती दुनिया में सामंजस्य, अनुकूलन और अस्तित्व के अल्पकालिक पहलू के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने का आग्रह करती है।
- **करुणा:** करुणा पर बुद्ध की शिक्षाएं दया, सहानुभूति और दूसरों की भलाई के मूल्यों पर जोर देती हैं। करुणा ऐसे समाज में व्यक्तियों और समूहों के बीच समझ पैदा कर सकती

है, बाधाओं को दूर कर सकती है और शांति को बढ़ावा दे सकती है जो अक्सर विभाजित और सहानुभूति की कमी वाला दिखाई देता है।

कौटिल्य

- **कौटिल्य/चाणक्य** (375–283 ईसा पूर्व) प्राचीन भारत के एक शिक्षक, लेखक, रणनीतिकार, दार्शनिक, अर्थशास्त्री, न्यायविद और राज सलाहकार थे। पारंपरिक रूप से उन्हें प्राचीन भारतीय राजनीतिक ग्रंथ अर्थशास्त्र के लेखक कौटिल्य या विष्णुगुप्त के रूप में पहचाना जाता है।

कौटिल्य का दर्शन:

Seven Prakritis (Saptangas) are constitutive of the State	
1. Swamin	Ruler
2. Amatya	Ministers
3. Janapada	Territory and Population
4. Durga	Fort/Capital city
5. Kosa	Treasury
6. Danda	Coercive power of the state/ Punitive justice
7. Mitra	Ally

- **शासन व्यवस्था:** राजा की खुशी उसकी प्रजा की खुशी में निहित होती है। उसका ध्यान कल्याणकारी राज्य पर होना चाहिए।
  - **"यथा राजा तथा प्रजा"** राजा की ईमानदारी, दक्षता और उत्तरदायित्व के महत्व पर प्रकाश डालती है।
- **राजऋषि की अवधारणा:** एक आदर्श नेता राजा और ऋषि का मिश्रण होता है।
  - एक राजा की तरह, वह गतिशील, सक्रिय और निर्णय लेने की क्षमता रखता है।
  - साथ ही उसे एक ऋषि की तरह बुद्धिमान बनकर संसार के आध्यात्मिक और उच्च स्तर से जुड़ने में सक्षम होना चाहिए और दर्शन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
  - उसमें आमंत्रण प्रकृति, आत्म-संयम और आत्मा, बुद्धि और अंतर्ज्ञान और उत्साह का गुण होना चाहिए।
- **विज्ञान शक्ति का एक स्रोत:** उन्होंने इस बात की वकालत की कि विज्ञान शक्ति का एक बड़ा स्रोत है। उनका मानना था कि 'शक्ति ताकत है और यह वह ताकत है जो मन को बदल देती है।'
- **यथार्थवादी राजनीति और व्यावहारिकता:** कौटिल्य का दर्शन शासन के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण पर जोर देता है, जहां शासक आदर्शवादी धारणाओं पर राज्य की स्थिरता और कल्याण को प्राथमिकता देते हैं। यह राजनीतिक वास्तविकताओं के आधार पर व्यावहारिक निर्णय लेने की आवश्यकता को पहचानता है।
  - **उदाहरण:** आधुनिक समय में, राजनीतिक नेता अक्सर यथार्थवादी राजनीतियों का उपयोग करते हैं, जैसे गठबंधन बनाना या उन देशों के साथ राजनयिक वार्ता में शामिल होना, जिनकी विचारधाराएं परस्पर विरोधी हो सकती हैं। ये कार्रवाइयां राष्ट्रीय हितों की व्यावहारिक प्राप्ति और स्थिरता के संरक्षण से प्रेरित होती हैं।
- **राजकाज और शासन:** कौटिल्य का दर्शन प्रभावी राजकाज और शासन पर जोर देता है, जिसमें प्रशासन, कानून और अर्थशास्त्र से संबंधित सिद्धांत शामिल हैं। यह इस बारे में मार्गदर्शन करता है कि शासक राज्य के कुशल कामकाज को कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं और सामाजिक व्यवस्था बनाए रख सकते हैं।
  - **उदाहरण:** कई देशों में प्रशासनिक और नौकरशाही तंत्र कौटिल्य के शासन सिद्धांतों से प्रेरणा लेते हैं। इन तंत्रों का उद्देश्य निर्णय लेने और सार्वजनिक सेवा प्रदायन में दक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना है।
- **शक्ति और कूटनीति का उपयोग:** कौटिल्य ने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में शक्ति और कूटनीति के महत्व को पहचाना। उनका दर्शन सुझाव देता है कि शासकों को अपने राज्यों के हितों की रक्षा और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए रणनीतियां अपनानी चाहिए।
  - **उदाहरण:** अंतरराष्ट्रीय संबंधों में, देश अक्सर अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए राजनयिक वार्ता में संलग्न होते हैं, सैन्य बलों को तैनात करते हैं, या आर्थिक लाभ का उपयोग करते हैं। ये कार्य कौटिल्य के दर्शन में उल्लिखित शक्ति और कूटनीति के सिद्धांतों को दर्शाते हैं।
- **जासूसी और आसूचना:** कौटिल्य का दर्शन शासन और निर्णय लेने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में जासूसी और आसूचना की भूमिका पर जोर देता है। यह सूचित विकल्प चुनने और संभावित खतरों को कम करने के लिए जानकारी की आवश्यकता को पहचानता है।
  - **उदाहरण:** दुनिया भर की सरकारों के पास खुफिया एजेंसियां हैं और संभावित सुरक्षा खतरों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने, अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम की निगरानी करने और राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए खुफिया अभियान चलाती हैं। ये कार्रवाइयां खुफिया जानकारी एकत्र करने पर कौटिल्य के जोर के अनुरूप हैं।
- **नीतिशास्त्र और नैतिक शासन:** कौटिल्य का दर्शन जहां राजनीति की व्यावहारिक वास्तविकताओं को स्वीकार करता है, वहीं यह नीतिगत आचरण और नैतिक शासन के महत्व

को भी स्वीकार करता है। यह लोक कल्याण की वकालत करता है और सही कार्य करने को कायम रखता है।

- **उदाहरण:** समकालीन शासन में, नेताओं से नैतिक मानकों का पालन करने और नैतिक नेतृत्व दर्शाने की अपेक्षा की जाती है। सामाजिक कल्याण, भ्रष्टाचार से लड़ने और मानवाधिकारों की रक्षा करने वाली नीतियां कौटिल्य दर्शन से प्रभावित नीतिगत शासन के सिद्धांतों को दर्शाती हैं।

आधुनिक समय में प्रासंगिकता:

कौटिल्य के सुशासन के संकेतक

एक आदर्श राजा को अपने व्यक्तित्व को कर्तव्यों के साथ जोड़ना चाहिए। **–निर्वैयक्तिकता**

एक आदर्श राजा को लक्ष्य चूके बिना अति से बचना चाहिए। **–मध्यममार्ग/मध्यम मार्ग**

राजा और लोक सेवकों को निश्चित वेतन और भत्ते मिलने चाहिए। **–भ्रष्टाचार से बचना**

राजा और सेवकों का मुख्य कर्तव्य कानून और व्यवस्था बनाए रखना है। चोरी और भ्रष्टाचार से होने वाली हानि की भरपाई राजा और उसके सेवक के वेतन से की जानी चाहिए। **–उत्तरदायित्व**

राजा का एक महत्वपूर्ण कर्तव्य भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ निवारक और दंडात्मक उपाय करना है। **–न्याय**

मंत्रियों के स्थान पर अच्छे मंत्रियों को लाना। **–स्थानान्तरण और फेरबदल**

राजा और मंत्रियों के लिए आचार संहिता। **–अनुशासन प्रिय**

अमात्यों की नियुक्ति जिनका चयन योग्यता के आधार पर होता था। **–नौकरशाही**

5.4.2 तिरुवल्लुवर

- **तिरुवल्लुवर, या वल्लुवर, एक प्रसिद्ध तमिल कवि और दार्शनिक थे।**
- उन्हें प्रमुख रूप से उनकी रचना **"तिरुक्कुरल"** के लिए जाना जाता है, जो नीतिशास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र के साथ-साथ प्रेम पर लिखे गए दोहों का संग्रह है।
- इस रचना को तमिल साहित्य का एक उत्कृष्ट और व्यापक रूप से प्रशंसित कार्य माना जाता है।
- राजनीति में तिरुवल्लुवर का योगदान सभी लोगों के कल्याण के लिए वर्तमान लोकतांत्रिक शासन पर लागू होता है।

तिरुवल्लुवर का दर्शन:

- **क्षमा:** प्रतिशोध आपको थोड़े समय के लिए खुशी देगा, लेकिन धैर्य और क्षमा आपको जीवन भर खुशी देगी।
- **सम्यक वाणी:** यहां तक कि आग से होने वाली पीड़ा ठीक हो जाती है परन्तु वाणी से होने वाली पीड़ा कभी ठीक नहीं होती।
- **राष्ट्र-देश:** एक राष्ट्र को पाँच आवश्यक कारकों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए: भलाई, समृद्धि, सुरक्षा और उत्पादन।
- **सत्यता:** यहां तक कि एक झूठ को भी सच माना जा सकता है यदि वह हानिकारक न हो और उसके स्पष्ट फायदे हों।
- **ईश्वर और धर्म:** ईश्वर और भाग्य न भी चाहें तो भी आपके सच्चे प्रयास ही सफल होंगे।
- **अनुप्रयोग:** तिरुवल्लुवर का वैश्विक विचार लोगों, समुदायों और देशों के बीच वर्तमान प्रतिकार और प्रतिशोध के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। तिरुवल्लुवर के विचार को नास्तिकों द्वारा अधिक सफलता प्राप्त करने, गांधी की दूसरों को उनकी अज्ञानता के लिए क्षमा करने की क्षमता और बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग जैसे उदाहरणों से सहयोग मिलता है।

संत रविदास

- रविदास, मध्य काल में एक प्रमुख हिंदू संत और दार्शनिक थे। निम्न आय वाले परिवार से आने के बावजूद उनमें कोई हीन भावना नहीं थी। उन्होंने अच्छाई को बुराई में बदला।
- **धर्म पर दृष्टिकोण:**
  - वह धर्म को एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता मानते हैं।
  - मनुष्य की धार्मिक प्रवृत्ति भूख-प्यास से भिन्न होती है।
  - उनके अनुसार, यदि आत्म-बोध आत्मा का प्रकाश है, तो आत्म-नकार आत्मा का अंधकार है।
  - वह अंधकार में एकत्रित लोगों को उनके भाग्य की ओर ले जा सकते हैं।
  - रविदास उन धार्मिक मान्यताओं की आलोचना करते हैं जो मानवीय तर्क के अनुरूप नहीं हैं।
  - वह व्यर्थ धार्मिक आडंबरों का विरोध करते हैं।
  - रविदास भक्ति से जुड़े अंधविश्वासों से घृणा करते हैं। उनकी अधिकांश प्रतिबद्धता सेवा में थी।
- **मानव अस्तित्व:**
  - रविदास के अनुसार, मानव अस्तित्व विशेष है और अच्छे कार्यों के परिणामस्वरूप अर्जित किया गया है।
  - अपना जीवन सर्वोच्च मानवीय इच्छाओं तक पहुँचने के लिए समर्पित करना चाहिए, जो अनुशासन की नैतिक संहिता का पालन करके ही प्राप्त किया जा सकता है।

- रविदास अपने शिष्यों को अहंकार, क्रोध, लालच, मोह, ईर्ष्या और इच्छा के दोषों से ऊपर उठने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- नियतिवाद के अभाव में ही सच्ची स्वतंत्रता प्राप्त हो सकती है।
- तर्क, धर्म और चिंतन सभी को उच्च प्राथमिकता दी गई है।
- तर्क विश्वसनीय एवं महत्वपूर्ण है। रविदास के दर्शन की मुख्य विशेषताएं आत्म-उत्थान और पूर्ण स्वतंत्रता के सिद्धांत हैं।

5.4.3 स्वामी विवेकानंद

- स्वामी विवेकानन्द (1863 – 1902) एक भारतीय हिंदू संत, दार्शनिक, लेखक और धार्मिक शिक्षक थे। उन्होंने पश्चिमी दुनिया को वेदांत और योग से परिचित कराने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें हिंदू धर्म को एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय धर्म के स्तर तक पहुंचाने और अंतरधार्मिक जागरूकता को बढ़ावा देने का श्रेय दिया जाता है।

स्वामी विवेकानन्द का दर्शन:

- **शिक्षा:** जनता को जागृत करने के लिए उन्होंने राम-कृष्ण मिशन और अंतत: राम-कृष्ण मठ की स्थापना की। उन्होंने कमजोर आध्यात्मिक मान्यताओं की आलोचना की और धार्मिक तर्क की बात की।
- **भाईचारा:** विश्व धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण के माध्यम से, उन्होंने भारतीयों और दुनिया भर के लोगों के बीच भाईचारे को बढ़ावा दिया।
- **बुद्धिवाद या ज्ञान मीमांसा:** वह भारत में एक बुद्धिवादी आंदोलन के प्रणेता और वेदांत दर्शन के अनुयायी थे। एक खुशहाल जीवन के लिए, उन्होंने पश्चिमी और भारतीय विचारों के संश्लेषण की बात की।
- **एकता और सार्वभौमिक भाईचारा:** स्वामी विवेकानन्द ने सभी प्राणियों की अंतर्निहित एकता पर जोर दिया और सार्वभौमिक भाईचारे के विचार को बढ़ावा दिया। उनका मानना था कि बाहरी मतभेदों से परे, सभी व्यक्तियों को जोड़ने वाला देवत्व एक आम सूत्र है।
- **मानवता की सेवा:** स्वामी विवेकानन्द ने मानवता की नि:स्वार्थ सेवा की अवधारणा पर जोर दिया। उनका मानना था कि सच्ची आध्यात्मिकता करुणा, सामाजिक सेवा और वंचितों के उत्थान के माध्यम से व्यक्त की जाती है।
- **विज्ञान और अध्यात्म का एकीकरण:** स्वामी विवेकानन्द ने विज्ञान और अध्यात्म के सामंजस्यपूर्ण एकीकरण की वकालत की। उनका मानना था कि दुनिया की समग्र समझ प्रदान करने के लिए वैज्ञानिक प्रगति और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को एक-दूसरे का पूरक होना चाहिए।
- **शक्ति और आत्मविश्वास:** स्वामी विवेकानन्द ने आंतरिक शक्ति, आत्मविश्वास और निडरता के विकास पर जोर दिया। उनका मानना था कि व्यक्तियों को अपनी सीमाओं को पार करना चाहिए और अपनी वास्तविक क्षमता का एहसास करना चाहिए।
- **युवा सशक्तिकरण:** स्वामी विवेकानन्द सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र-निर्माण के एजेंट के रूप में युवाओं की शक्ति में विश्वास करते थे। उन्होंने अपनी ऊर्जा और आदर्शवाद को रचनात्मक और महान कार्यों की ओर लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया।

वर्तमान समय में प्रासंगिकता:

- **सहआस्तित्व, सहिष्णुता और आपसी समझ:** स्वामी विवेकानन्द का सहआस्तित्व, सहिष्णुता और आपसी समझ का संदेश, धार्मिक मतभेदों के बावजूद, आज की दुनिया में महत्वपूर्ण है, जहां धार्मिक विवाद और उग्रवाद लगातार चुनौतियां बने हुए हैं।
- **शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज:** उनकी शिक्षाएँ एक अधिक शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण समाज में योगदान दे सकती हैं जिसमें अन्य धर्मों, संस्कृतियों और विचारधाराओं को मान्यता दी जाती है और उन्हें महत्व दिया जाता है।
- **भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा:** विवेकानन्द की शिक्षाएँ भावी पीढ़ियों को भारत की समृद्ध आध्यात्मिक विरासत और वर्तमान दुनिया में पुरानी आध्यात्मिक परंपराओं के महत्व के लिए प्रेरित कर सकती हैं।
- **भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं की प्रासंगिकता:** वह पश्चिमी दुनिया में भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं की प्रासंगिकता पर जोर देने वाले पहले लोगों में से एक थे, और उनकी शिक्षाएं और प्रयास युवाओं को इसे बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
- **विचार और शिक्षाएँ:** स्वामी विवेकानन्द के विचार और शिक्षाएँ आज भी युवाओं के लिए बहुत प्रासंगिक हैं। आत्मनिर्भरता, धार्मिक एकता और शिक्षा की आवश्यकता का उनका संदेश सभी महत्वपूर्ण शिक्षाएं हैं जो युवाओं को आधुनिक दुनिया की बाधाओं और संभावनाओं का प्रबंधन करने में सहायक हो सकती हैं।

हम परामर्श और प्रेरणा के लिए इस महान आध्यात्मिक गुरू की ओर देख सकते हैं क्योंकि हम लगातार विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

5.4.4 मोहनदास करमचंद गांधी

गांधीजी का मंत्र

जब भी आप भ्रम में हों, या जब अहंकार बहुत अधिक हो जाए, तो सबसे गरीब और कमजोर पुरूष/महिला का चेहरा याद कीजिए, जिसे आपने देखा हो, और खुद से पूछिए, क्या आप जो कदम उठाने जा रहे हैं, वह उसके लिए उपयोगी होगा। क्या इससे भूखे और आध्यात्मिक कमी वाले लाखों लोगों को स्वराज मिलेगा? फिर आपका अहंकार स्वत: ही दूर हो जाएगा।

महात्मा गांधी की महत्वपूर्ण शिक्षाएँ:

- **अहिंसा:** गांधी का अहिंसा का सिद्धांत शांतिपूर्ण तरीकों के माध्यम से संघर्षों को हल करने और विचार, वाणी और आचरण में हिंसा को दूर करने पर जोर देता है। उनका मानना था कि अहिंसा एक शक्तिशाली अस्त्र है जो व्यक्तियों और समाज को बदल सकती है।
  - **प्रासंगिकता:** आज की दुनिया में, जहां विभिन्न स्तरों पर संघर्ष और तनाव है, अहिंसा और शांतिपूर्ण प्रतिरोध पर गांधी की शिक्षाएं सामाजिक न्याय, मानवाधिकार और संघर्ष समाधान के लिए आंदोलनों को प्रेरित करती रहती हैं।
- **सच्चाई और ईमानदारी:** गांधीजी ने जीवन के सभी पहलुओं में सच्चाई और ईमानदारी के महत्व पर जोर दिया। वह कठिन परिस्थितियों में भी सच बोलने और व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी बरतने में विश्वास करते थे।
  - **प्रासंगिकता:** असत्य जानकारी और धोखे के युग में, सत्य और ईमानदारी पर गांधी की शिक्षाएं हमें ईमानदारी, पारदर्शिता और भरोसे के महत्व की याद दिलाती हैं। एक न्यायपूर्ण और नैतिक समाज के निर्माण के लिए लोक चर्चा और व्यक्तिगत संबंधों में सच्चाई को बरकरार रखना महत्वपूर्ण है।
- **सत्याग्रह:** सत्याग्रह अहिंसक प्रतिरोध का एक दर्शन और तरीका है जिसे गांधीजी ने विकसित किया था। इसमें अन्याय का सामना करने और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सत्य, आत्म-बलिदान और अहिंसक कार्यों की शक्ति का उपयोग करना शामिल है।
  - **प्रासंगिकता:** गांधी की सत्याग्रह की अवधारणा अन्याय, उत्पीड़न और असमानता के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध और नागरिक प्रतिरोध में संलग्न आंदोलनों और व्यक्तियों को प्रेरित करती है। यह सत्य और अहिंसा आधारित सामूहिक कार्रवाई की शक्ति पर जोर देता है।
- **सादगी और न्यूनतमवाद:** गांधीजी एक सरल और न्यूनतम जीवन शैली जीते थे, भौतिकवाद को कम करने और अल्प साधनों के साथ रहने के महत्व पर जोर देते थे। उनका मानना था कि सच्चा धन भौतिक संपत्ति के बजाय संतुष्टि और आंतरिक समृद्धि में निहित है।
  - **प्रासंगिकता:** उपभोक्तावादी समाज में, सादगी और अल्पवाद पर गांधी की शिक्षाएं हमें भौतिक संपदा से परे मूल्यों को प्राथमिकता देने की याद दिलाती हैं। जीवन का अधिक टिकाऊ और सचेत तरीका अपनाने से निजी कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान मिल सकता है।
- **समानता और सामाजिक न्याय:** गांधी ने जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक-आर्थिक स्थिति के निरपेक्ष सभी लोगों के बीच समानता की वकालत की। उन्होंने भेदभाव, अस्पृश्यता और अन्य प्रकार के सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
  - **प्रासंगिकता:** समानता और सामाजिक न्याय पर गांधी की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं। वे समान अधिकारों, लैंगिक समानता, समावेशिता और सभी रूपों में भेदभाव के उन्मूलन के लिए प्रयास करने वाले आंदोलनों और व्यक्तियों को प्रेरित करते हैं।
- **पर-सेवा:** गांधी ने दूसरों की निस्वार्थ सेवा और समाज के कल्याण के महत्व पर जोर दिया। वह हाशिए पर गए लोगों के उत्थान और सभी की भलाई के लिए काम करने में विश्वास करते थे।
  - **प्रासंगिकता:** सेवा और करुणा पर गांधी की शिक्षाएं परोपकार, सामुदायिक विकास और सामाजिक सेवा पहल में शामिल व्यक्तियों और संगठनों का मार्गदर्शन करती हैं। वे हमें समाज में सकारात्मक योगदान देने और पीड़ा कम करने के हमारे सामूहिक उत्तरदायित्व की याद दिलाते हैं।

ट्रस्टीशिप या न्यासिता:

- धनवान लोगों को लोगों के कल्याण को ध्यान रखते हुए ट्रस्ट के ट्रस्टी के रूप में कार्य करना चाहिए।
- **ट्रस्टीशिप की अवधारणा** यह स्पष्ट करती है कि धन और संसाधन, चाहे उनका "मालिक" कोई भी हो, उन्हें समाज और उसके पूरे लोगों की बेहतरी में मदद करनी चाहिए, और यह उन लोगों पर जिम्मेदारी डालता है जिनके पास ऐसा करने के लिए धन है।
- यह उनकी अहिंसा विचारधारा का प्रत्यक्ष अवतार है, अर्थात प्रभावशाली को बाहरी दबाव से मजबूर होकर, अपनी इच्छा से ऐसा करना होगा।
- हालाँकि, लंबे समय में, और जिस समाज में हम रहते हैं उसकी वास्तविकताओं में, यह रणनीति अधिक टिकाऊ होगी।

ट्रस्टीशिप विचार की प्रासंगिकता:

Relevance of Trusteeship
- Development models centred around preservation of nature.
- Corporate Social Responsibility.
- Addressing Income Inequality and Poverty.
- Channelisation of revenue for social welfare.

- **असमानता की व्यापकता:** हाल ही में ऑक्सफैम के एक शोध जिसका शीर्षक "इनइक्वलिटी किल्स" है, ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और भारत दोनों में, कोविड महामारी के कारण बढ़े आर्थिक अंतर पर प्रकाश डाला है। असमानता के परिणामस्वरूप हर चार सेकंड में कम से कम एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।
- **पर्यावरण का क्षय:** ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन विश्व की जलवायु को प्रभावित कर रहा है और विभिन्न प्रकार की विनाशकारी आपदाएँ और बीमारियाँ पैदा कर रहा है।
- **प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन:** खनिज, तेल, गैस और कोयला गैर-नवीकरणीय संसाधन हैं। कच्चे माल और ऊर्जा स्रोतों के रूप में उनका उपयोग पृथ्वी के भंडार को समाप्त कर देता है।

ट्रस्टीशिप 21वीं सदी की विभिन्न चुनौतियों का समाधान प्रदान करती है:

- **सतत उपभोग:** दूसरों को नुकसान पहुँचाए बिना केवल उतना ही उपभोग करें जो आवश्यक हो।
- **श्रम की गरिमा:** अच्छा न्यूनतम जीवनयापन वेतन और दयालु कार्य परिस्थितियाँ प्रदान करना।
- **उचित संपत्ति संवितरण:** गरीबों के सामाजिक कल्याण की देखभाल करना समृद्ध लोगों का नैतिक दायित्व है।
- **मानव जीवन का संवर्धन:** गांधी की ट्रस्टीशिप अवधारणा के केंद्र में मानव जीवन का विकास, उत्थान और संवर्धन है, न कि मानव और सामाजिक मूल्यों के लिए न्यूनतम सम्मान के साथ उच्च स्तर का जीवन।

सर्वोदय:

"व्यक्ति की भलाई सभी के कल्याण में निहित है। समावेशी विकास के पीछे यही मूल विचार है।"

- 'सर्वोदय' दो शब्दों 'सर्व' और 'उदय' से मिलकर बना है। यह सबके उत्थान के अर्थ को दर्शाता है। यह 'सभी की भलाई', 'सभी की सेवा' और 'सभी का कल्याण' आदि का अर्थ भी देता है। इसका संबंध गांधीवादी समाजवाद से है। इसका उद्देश्य सभी का सामाजिक-आर्थिक विकास है। दर्शन का आधार सामान्यता है अर्थात जो कार्य किसी व्यक्ति विशेष या समूह विशेष के लिए नहीं बल्कि सभी के लिए किया जाता है
- निम्नलिखित उदाहरण 'सर्वोदय' दर्शन को प्रदर्शित करते हैं:
  - (a) आत्मनिर्भर ग्रामीण नेटवर्क का निर्माण जिसमें उत्पादन का प्राथमिक लक्ष्य स्व-उपभोग है।
  - (b) पारिवारिक बंधनों को बढ़ावा देना जो रक्त संबंधों से परे हों।
  - (c) सभी को समान रूप से प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए और स्वतंत्रता के मूल्य को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
  - (d) प्रेम, भाईचारा, सत्य, अहिंसा और आत्मोत्सर्ग की भावना सभी लोगों में व्याप्त होगी। अहिंसा समाज की नींव होगी।
  - (e) वहां कोई दलीय व्यवस्था या बहुमत का नियंत्रण नहीं होगा और समाज बहुमत अत्याचार की बुराई से मुक्त हो जाएगा।
  - (f) राजनीति अब सत्ता का साधन नहीं, बल्कि सेवा का साधन होगी।

सत्याग्रह:

- **सत्याग्रह के सिद्धांत का उद्भव उपनिषदों** के साथ-साथ ही बुद्ध, महावीर और लियो टॉल्स्टॉय और जॉन रस्किन जैसे कई अन्य महान लोगों की शिक्षाओं में देखा जा सकता है।
- **साधन और उद्देश्य:** गांधी के सत्याग्रह के दर्शन को अहिंसक प्रतिरोध या सविनय अवज्ञा के एक तरीके के रूप में समझा जा सकता है जो सत्य और अहिंसा की शक्ति के माध्यम से अन्याय का सामना करने और सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।
- **उदाहरण:** आइए एक ऐसे दृश्य पर विचार करें जहां एक समुदाय को विकास परियोजना के कारण अपने घरों से अनुचित बेदखली का सामना करना पड़ रहा है। हिंसा या आक्रामक टकराव का सहारा लेने के बजाय, समुदाय ने सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। वे शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करते हैं, धरना या भूख हड़ताल जैसे सविनय अवज्ञा के कार्यों में शामिल होते हैं, और अहिंसक तरीकों से अपने उद्देश्य के बारे में जागरूकता बढ़ाते हैं।

सत्याग्रह के स्तंभ (नैतिक पहलू) - सत्याग्रह के तीन स्तंभ:

Three Pillars of Satyagraha
- Satya
- Ahimsa
- Tapasya

- सत्य के लिए गांधीवादी खोज अहिंसा की नींव पर टिकी हुई है।
- विवाद समाधान के लिए महात्मा गांधी ने सत्याग्रह का उपयोग किया [सत्य पर आग्रह या सत्य के लिए प्रेरणा] जिसके तीन स्तंभ हैं:

1. **सत्य – जिसका अर्थ है मुक्तता, ईमानदारी और निष्पक्षता:**
   (a) प्रत्येक व्यक्ति के विचार और मान्यताएँ सत्य दर्शाती हैं;
   (b) सत्य को और जानने के लिए हमें अपने सत्य को सहयोगपूर्वक साझा करना चाहिए; इसका तात्पर्य संवाद करने की इच्छा और ऐसा करने के दृढ़ संकल्प से है।
2. **अहिंसा – दूसरों को चोट पहुंचाने से इनकार:**
   (a) अहिंसा को हमारे सत्य को संप्रेषित करने और साझा करने की हमारी इच्छा से परिभाषित किया गया है।
   (b) हिंसा से चर्चा के माध्यम बंद हो जाते हैं; अहिंसा की अवधारणा अधिकांश प्रमुख धर्मों में दिखाई देती है, जिसका अर्थ है कि यद्यपि अधिकांश लोग इसका अभ्यास नहीं करते हैं, फिर भी इसे एक आदर्श के रूप में सम्मान दिया जाता है; अहिंसा हमारी चिंता की अभिव्यक्ति है कि हमारी अपनी और अन्य लोगों की मानवता प्रकट हो और उसका सम्मान किया जाए।
   (c) और अहिंसा के लिए हमें अपने विरोधियों से सच्चा प्रेम करना सीखना चाहिए।
3. **तपस्या – आत्मोत्सर्ग की इच्छा:**

- (a) एक सत्याग्रही को अपने प्रतिद्वंद्वी पर इस तरह के बलिदान या पीड़ा को थोपने के बजाय, संघर्ष के कारण होने वाले किसी भी बलिदान या पीड़ा को सहन करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
   (b) सत्याग्रही को लगातार विरोधियों को बचने का रास्ता दिखाना चाहिए।
   (c) इसका उद्देश्य सत्य और न्याय की व्यापकता को उजागर करना है, न कि प्रतिद्वंद्वी को हराना।

गांधी जी द्वारा सत्याग्रह का प्रयोग:

- **आध्यात्मिक बल का हथियार:** अन्याय के विरोध में सत्याग्रह को आध्यात्मिक बल का अस्त्र भी माना गया है।
- **जीवन के एक तरीके के रूप में:** गांधी जी ने सत्याग्रह को जीवन के एक तरीके के रूप में देखा, उन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, सरकारी सत्ता को चुनौती देने और लोगों के आम लाभ के लिए विविध लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सत्याग्रह को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था।
- **आंदोलन:** 1930 का सविनय अवज्ञा आंदोलन, जो दांडी में नमक कानून के उल्लंघन के साथ शुरू हुआ, और भारत छोड़ो आंदोलन गांधीजी और उनके सहयोगियों द्वारा सत्याग्रह को आत्मिक बल के हथियार के रूप में इस्तेमाल करने के उत्कृष्ट उदाहरण थे।

वर्तमान समय में सत्याग्रह की प्रासंगिकता:

- **औद्योगिक प्रतिष्ठानों में विवादों के समाधान के लिए:** औद्योगिक व्यवस्था में असहमति और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए अन्य रणनीतियों का एक व्यवहार्य विकल्प होगा।
- **रूस-यूक्रेन युद्ध जैसी युद्ध स्थितियों को हल करने के लिए:** रूस-यूक्रेन संघर्ष जैसी युद्ध परिस्थितियों को हल करने के लिए, यथासंभव सबसे आसान तरीके से सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का अभ्यास करना निस्संदेह शांति और सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।
- **भ्रष्टाचार और भौतिकवाद की ओर दौड़ को कम करने के लिए:** आज की सामाजिक-आर्थिक राजनीतिक व्यवस्था में, व्यक्ति को धन, सुख और शक्ति के प्रभाव से दूर करने की तत्काल आवश्यकता है।
- **भ्रष्टाचार और भौतिकवाद की दौड़ को कम करने के लिए:** जहां भी उद्देश्य धन, कल्याण और प्रगति है, सत्य और अहिंसा हमेशा लाभकारी होंगे, क्योंकि सत्य और अहिंसा के बिना, कोई शांति नहीं हो सकती है, और शांति के बिना, कोई विकास नहीं हो सकता है।

राजनीति पर गांधी के विचार:

- **राजनीति का उद्देश्य:** वह राजनीति का अंतिम उद्देश्य मानव जाति के संपूर्ण कल्याण का माध्यम मानते हैं और इसलिए इसमें हिंसा, क्रूरता, अन्याय और उत्पीड़न के लिए कोई जगह नहीं है। यदि अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए प्राप्ति का माध्यम समानता, अच्छे और शुद्ध, नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है, तो यह अनिवार्य है।
- **समकालीन राजनीति को शालीन बनाना:** गांधीजी का मुख्य लक्ष्य क्रोध, शत्रुता और हठवाद को दूर करके समकालीन राजनीति को शालीन बनाना था।
- **सामूहिक शक्ति को संगठित करना:** उनकी अहिंसक राजनीति सामूहिक शक्ति को इस तरह संगठित करने की रणनीति थी जो अनुकरणीय और अनूठे तरीके से नैतिक शिक्षा प्रदान करती है।
- **राजनीति और नैतिकता या धर्म:** गांधीजी ने हमेशा राजनीति को नैतिकता या धर्म के रूप में देखा, और उन्होंने राजनीति को बौद्धिक कार्य की बजाय हार्दिक श्रम के रूप में देखा।
- **समर्पित और प्रतिबद्ध राजनीतिक:** उन्होंने एक समर्पित और प्रतिबद्ध राजनीतिक लोकाचार की वकालत की जिसने राजनीति में "गलत कार्यों" की आवश्यकता को खारिज कर दिया।

गांधीजी की ग्यारह प्रतिज्ञाएँ:

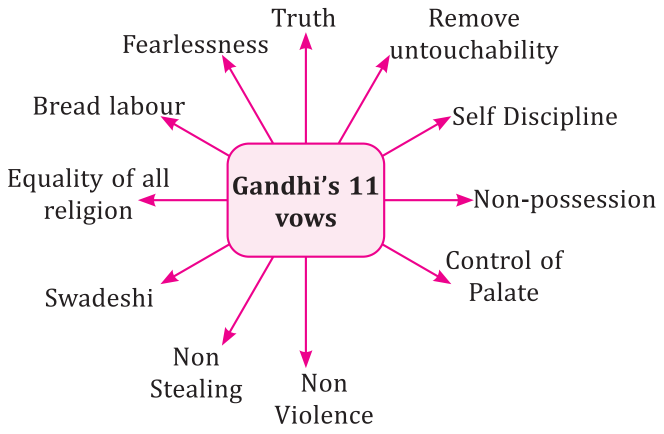

- **गांधीजी के सात पाप:**
  - गांधी जी ने अपने साप्ताहिक पत्र **"यंग इंडिया"** में इन सात पापों का उल्लेख किया था।

पापों का प्रकार	उदाहरण
सिद्धांत विहीन राजनीति	• धर्म आधारित वोट बैंक की राजनीति। • राजनेताओं द्वारा व्यक्तिगत लाभ के लिए किये गये झूठे वादे। • राजनीतिक पद की खरीद-फरोख्त।
काम के बिना धन (परिश्रम रहित धनोपार्जन)	• प्रॉपर्टी की खरीद-फरोख्त पर दलाल भारी मात्रा में कमीशन लेते हैं। • कुछ उदाहरणों में कई राजनेताओं और सिविल सेवकों द्वारा रिश्वत, व्यक्तिगत उपहार स्वीकार करना।
विवेक रहित सुख	• दीर्घकालिक परिणामों पर विचार किए बिना व्यक्तिगत सुख या सुविधा की इच्छा से प्रेरित होकर वनों की कटाई, प्रदूषण और अति उपभोग जैसी गतिविधियाँ इस सामाजिक पाप को दर्शाती हैं। • नीतिगत और नैतिक निहितार्थों पर विचार किए बिना, अवैध जुआ गतिविधियाँ, जैसे खेलों या ताश के खेल पर सट्टा लगाना।
चरित्र विहीन ज्ञान	• सामूहिक विनाश के हथियार बनाने के लिए वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग। • अल्ट्रासाउंड परीक्षणों का उपयोग करके कन्या भ्रूण हत्या के कारण "महिलाओं के कम होने" के हालिया मामले। • शैक्षणिक धोखाधड़ी जैसे साहित्यिक चोरी, अनुसंधान आंकड़ों की जालसाजी, या दूसरों को गुमराह करने के लिए जानकारी में हेरफेर करना।
मानवता रहित विज्ञान	• यूक्रेन और रूस के बीच मिसाइलों का प्रयोग। • जासूसी के लिए प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग।
नैतिकता रहित व्यापार	• अनैतिक व्यावसायिक प्रथाएँ, जैसे शोषणकारी श्रम स्थितियाँ, अनैतिक आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, या आक्रामक मूल्य निर्धारण रणनीतियाँ। • अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक वस्तुओं की जमाखोरी करके उनकी कीमत बढ़ा देना। • सिर्फ पैसा कमाने के लिए घटिया उत्पाद बेचना। • आक्रामक ऋण और शोषणकारी ऋण।
त्याग रहित धर्म	• सभी धर्मों में धार्मिक कट्टरवाद सांप्रदायिक तनाव को जन्म देता है जैसा कि हाल ही में फ्रांस में देखा गया है। • हिंसा भड़काने, कुछ समूहों के खिलाफ भेदभाव करने या नफरत को बढ़ावा देने के लिए धर्म का उपयोग करना धार्मिक शिक्षाओं में निस्वार्थता और त्याग के मूल सिद्धांतों का खंडन करता है।

अच्छे जीवन पर गांधीजी के विचार:

- **समाज सेवा:** नि:स्वार्थ सामाजिक कार्य गांधी जी के लिए आध्यात्मिक उत्थान और तृप्ति की प्रबल भावना का स्रोत था। गांधीजी के अनुसार, "अपने को खोजने का सबसे अच्छा तरीका स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना है।"
- **स्वच्छता:** गांधीजी के अनुसार, "ईश्वरभक्ति के ठीक बाद स्वच्छता का स्थान है" स्वच्छता और स्वस्थता मानसिक कल्याण और सकारात्मक विचारों को बढ़ावा देती है। इसके अलावा, गांधी जी ने इस अवधारणा का उपयोग करके स्वच्छता और इसलिए मैला ढोने की प्रथा और अस्पृश्यता की समस्या को हल करने का प्रयास किया।
- **नशा:** गांधी जी ने शराब पर प्रतिबंध लगाने के लिए अभियान चलाया और नशे की निंदा की। यह हमारी आत्मा, बुद्धि और भावनाओं को प्रदूषित करता है और अनैतिक व्यवहार को बढ़ावा देता है।
- **तपस्या:** गांधी जी न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ संयमित जीवन की वकालत करते थे। वह ज्ञान, नैतिकता, आस्था आदि जैसी उच्च-स्तरीय इच्छाओं को पूरा करने में विश्वास करते थे। इसके अलावा, गांधी जी ने कहा कि जब भारत के

अधिकांश लोग गरीबी और भूख से पीड़ित हों तब भौतिक विलासिता उनकी अंतरात्मा के विरूद्ध है।

- **परोपकारिता:** गांधी जी ने परोपकारिता को न केवल एक स्वैच्छिक अच्छे कार्य के रूप में बल्कि एक न्यायपूर्ण और टिकाऊ सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के लिए संपन्न लोगों के लिए एक दायित्व के रूप में भी बढ़ावा दिया। गांधी जी के अनुयायी विनोबा भावे ने इसे भूदान आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाया।

सिविल सेवा में गांधीवाद

समावेशी नीतियां तैयार करना: एक सिविल सेवक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सरकारी नीतियों का लाभ सबसे जरूरतमंद तक पहुंचे। गांधीजी का अंत्योदय के माध्यम से सर्वोदय का दृष्टिकोण तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कल्याणकारी नीतियां समावेशी और सुनिर्देशित हों।

संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग: सभी सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से किया जाना चाहिए। सार्वजनिक धन के कम उपयोग और दुरुपयोग को रोकना सिविल सेवकों का कर्तव्य है।

हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए विशेष प्रावधान: एक सिविल सेवक को यह सोचना चाहिए कि उसके कार्यों से समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों को कैसे लाभ होगा।

लगातार सार्वजनिक आलोचना से निपटना: सिविल सेवक अपने कार्यों के लिए लगातार सार्वजनिक आलोचना के अधीन रहते हैं। एक सिविल सेवक को ऐसे निर्णय लेना बंद नहीं करना चाहिए जिससे गरीबों और वंचितों को फायदा हो, भले ही इसके लिए उसे आलोचना का सामना करना पड़े।

गांधी और सतत विकास लक्ष्य:

पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराती है, लेकिन किसी के लालच को पूरा करने के लिए नहीं। **–महात्मा गांधी**

- एसडीजी को वहनीयता पर जोर देने के कारण जाना जाता है। स्थिरता का यह विचार गांधीजी की शिक्षाओं में भी प्रमुखता से आता है।

हम आज जो करते हैं, वही हमारा भविष्य है। हमें प्राकृतिक संसाधनों - **जल, वायु, भूमि** - को अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में नहीं देखना चाहिए।

- गांधीजी प्राकृतिक संसाधनों को हमारी अगली पीढ़ी द्वारा दिया गया ऋण मानते थे।
- गांधी का मानना था कि प्रौद्योगिकी और नवाचार को लोगों की सेवा में लगाया जाना चाहिए और रोजगार की व्यापक संभावनाएं पैदा करनी चाहिए; इसका उपयोग लोगों को नौकरियों से निकालने और कुछ लोगों के लिए मुनाफा कमाने के साधन के रूप में नहीं किया जाना चाहिए।
- उन्होंने ग्रामीण रोजगार और लघु उद्योगों को गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण क्षेत्रों को शहरी क्षेत्रों के बराबर लाने और विकास को स्थानीय बनाने के साधन के रूप में देखा।
- गांधी जी सतत उपभोग और उत्पादन के व्यक्तिगत अभ्यास के प्रतीक थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया की स्थिरता के लिए, व्यक्तिगत जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है जैसा कि एसडीजी में अनुमान लगाया गया है।
- गांधी चाहते थे कि मनुष्य स्वयं इस प्रक्रिया में प्रमुख परिवर्तन कारक बनें। इसी तरह का विचार एसडीजी में अंतर्निहित है; परिवर्तन का सिद्धांत।

सतत विकास एजेंडा, 2030 की प्रमुख आकांक्षा को इसके सूत्रवाक्य 'लीव नो वन बिहाइंड' द्वारा दर्शाया गया है। गांधी जी का विचार था, किसी समाज की प्रगति सबसे संवेदनशील और सबसे कमजोर लोगों की स्थिति से निर्धारित होनी चाहिए।

5.4.5 अमर्त्य सेन

अमर्त्य कुमार सेन एक भारतीय अर्थशास्त्री और दार्शनिक हैं, जिन्होंने 1972 से भारत, इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका में अध्यापन और कार्य किया है। **उनके कुछ विचार इस प्रकार हैं:**

- **समाज कल्याण:** सरकार को सामूहिक वृद्धि और विकास के लिए निजी अधिकारों के साथ-साथ अल्पसंख्यक आकांक्षाओं के मुद्दे पर भी ध्यान देना चाहिए।
- **मानव विकास:** उन्होंने प्रस्ताव दिया कि सरकारों को आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, खाद्य वितरण और अन्य सामाजिक परिवर्तनों को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **क्षमता दृष्टिकोण:** मौद्रिक संदर्भ में मूल्यांकन करने के बजाय, सरकार और लोगों को कौशल, मूल्यों और कल्याण के लिए नैतिकता के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- **अनुप्रयोग:** उनके विचारों को संग्रहीत किया गया है, और संयुक्त राष्ट्र ने जीडीपी और जीएनपी जैसे आर्थिक विकास मानदंडों को मजबूत के लिए मानव विकास सूचकांक बनाया है।

5.4.6 रवीन्द्रनाथ टैगोर

- बंगाल के कवि, लेखक, नाटककार, संगीतकार, दार्शनिक, समाज सुधारक और चित्रकार रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई, 1861 को कलकत्ता में हुआ था। उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी की आरंभ में, उन्होंने बंगाली साहित्य और संगीत के साथ-साथ भारतीय कला में परिवर्तन लाने के लिए प्रासंगिक आधुनिकतावाद का इस्तेमाल किया।

- **शिक्षा पर टैगोर के विचार:** टैगोर ने एक ऐसी पुस्तक की कल्पना की जिसमें पूर्वी और पश्चिमी आदर्शों का सम्मिश्रण हो। उन्होंने भारतीय दर्शन का अध्यात्मवाद और पश्चिमी लोगों का प्रगतिशील दृष्टिकोण को मिलाया।
- **प्रकृतिवादी:** टैगोर एक प्रकृतिवादी थे, और प्रकृति सर्वोत्तम शिक्षक है। प्रकृति विद्यार्थियों को वे परिस्थितियाँ प्रदान करेगी जिसकी उन्हें सीखने की आवश्यकता है।
  - विद्यार्थी पर कुछ भी सीखने के लिए कोई बाहरी दबाव नहीं होना चाहिए। प्रकृति उसके व्यक्तित्व और दृष्टिकोण को ढालेगी।
- **शिक्षा में नए मानक:** टैगोर ने पहली बार बच्चों के लिए पुस्तक- केंद्रित शिक्षा को अस्वीकार करके भारतीय शिक्षा में एक नया मानक स्थापित किया।
- **व्यावहारिक और वास्तविक शिक्षा:** टैगोर का मानना था कि शिक्षा कृत्रिम और अकादमिक के बजाय व्यावहारिक और वास्तविक होनी चाहिए। शिक्षा को निस्संदेह शिक्षार्थी की रचनात्मक क्षमता में सुधार करना चाहिए।
- **शैक्षिक कार्यक्रम में ललित कलाएँ:** टैगोर ने अपने शैक्षिक कार्यक्रम में ललित कलाओं को उच्च महत्व दिया। खेल, नृत्य, संगीत, रंगमंच, चित्रकला आदि जैसी गतिविधियाँ शिक्षाप्रद मानी जाती थीं।
- **शिक्षा के माध्यम से गरीबी उन्मूलन:** टैगोर हमारे देश की ग्रामीण गरीबी से अवगत थे। परिणामस्वरूप, उन्होंने शिक्षा के माध्यम से इसे दूर करने की मांग की। विभिन्न शिल्पों में प्राप्त व्यावहारिक प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप छात्र अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ कारीगर बन जाएंगे।

तुलनात्मक विश्लेषण: गांधी और टैगोर

समानताएँ	अंतर
• अंतर सांस्कृतिक दृष्टिकोण और प्रभाव था।	• गांधीजी ने चरखा और स्वदेशी पर जोर दिया और टैगोर वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण में विश्वास करते थे।
• जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण के आलोचक (दोनों औद्योगिक क्रांति के आलोचक थे)।	• गांधीजी भारत-केंद्रित राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे ; जबकि प्रथम विश्व युद्ध के बाद टैगोर का दृष्टिकोण बदल गया; जब उन्हें एहसास हुआ कि राष्ट्रवाद ने मानवता के बुनियादी आदर्शों और धन और जमीन पर कब्जा करने के तरीके का उल्लंघन किया।
• जीवन के आध्यात्मिक आयामों पर बल दिया।	• गांधीजी ने आत्मनिर्भरता की वकालत की; टैगोर ने प्रेम और सहयोग पर आधारित स्वदेशी समाज का प्रयोग किया।
• प्रकृति के अनुरूप रहने पर जोर दिया- पर्यावरणीय स्थिरता।	
• व्यावसायिक शिक्षा के समर्थकों ने शिक्षा के पश्चिमी मॉडल का विरोध किया।	

कबीर

- संत कबीर दास का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में हुआ था। वह 15वीं सदी के रहस्यवादी कवि, संत और समाज सुधारक थे जो भक्ति आंदोलन के प्रबल समर्थक थे।
- **सहिष्णुता पर कबीर के विचार:** संत कबीर ने भारतीय समुदायों, अर्थात् हिंदू और मुसलमानों, जो बहुसंख्यक थे, को एकजुट करने का प्रयास किया।
  - **उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही मिट्टी के बने हैं** "जैसी उपमाओं का प्रयोग किया।
  - उनकी शिक्षाएं अब विशेष रूप से प्रासंगिक हैं जब दुनिया भर में धार्मिक संघर्ष बढ़ रहे हैं।
- **ज्ञान पर कबीर के विचार:** कबीर ज्ञान के विकास पर जोर दिया।
  - "अगर मैं सच बोलता हूं, तो लोग मुझे मारने के लिए दौड़ पड़ते हैं, लेकिन अगर मैं झूठ बोलता हूं, तो वे मुझ पर भरोसा करते हैं," ऐसा वह अपने दोहों के साथ विस्तार से बताते हैं।
  - यह स्वयं के लिए प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता को दर्शाता है।
  - वर्तमान समय में भी, कई लोग कड़वी सच्चाई से उद्वेलित हैं, लेकिन अपने विचारों के अनुरूप झूठ और मध्यमता को सहन करने को तैयार हैं।
- **जाति व्यवस्था और कुप्रथा विरोधी:** कबीर जाति व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे।
  - उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर ने सबको समान बनाया है।

- उन्होंने अपने शिष्यों को छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना आदि अमानवीय प्रथाओं को त्यागने के लिए प्रोत्साहित किया।
- वह पत्थर की मूर्तियों की पूजा और कई देवी-देवताओं की पूजा के साथ-साथ धार्मिक अनुष्ठानों और समारोहों के भी विरोधी थे।

- **करुणा:** कबीर पाखंड के कट्टर विरोधी थे और दोहरे मानदंड रखने वालों को स्वीकार नहीं करते थे।
  - उन्होंने लगातार अन्य जीवों के प्रति दया और शुद्ध प्रेम को बढ़ावा दिया। जिसकी आजकल थोड़ी कमी है।
- **भाईचारे की अटूट कड़ी:** उन्होंने अपने आसपास आदर्शों और विश्वासों को कायम रखने वाले सभ्य लोगों को साथ रखने की आवश्यकता को रेखांकित किया, और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रेम ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो पूरी मानव जाति को भाईचारे की अटूट कड़ी में एकजुट करने में सक्षम है।
  - उन्होंने सभी से शत्रुता त्याग कर सभी के प्रति प्रेम अपनाने का आह्वान किया। अत्यधिक उपभोक्तावाद आज दुनिया पर भारी पड़ रहा है।

5.4.7 राजा राम मोहन राय

- **वेदांत दर्शन:** उन्होंने वेदांत दर्शन को पुनर्जीवित करके हिंदू धर्म को रूढ़िवाद और अंधविश्वास से मुक्त करने का प्रयास किया। उन्होंने आवश्यक धार्मिक सिद्धांतों के रूप में ज्ञान, आत्मज्ञान और आध्यात्मिकता की वकालत की।
- **मानवतावाद और मानवीय मूल्य:** रॉय शांति, शालीनता, दयालुता और न्याय जैसे मानवीय मूल्यों के कट्टर समर्थक थे। उन्होंने गरीबों, कमजोरों और हाशिये पर पड़े लोगों के कल्याण के लिए काम किया क्योंकि उनका मानना था कि हर किसी को खुशहाल जीवन जीने का अधिकार है।
- **शिक्षा:** रॉय एक शिक्षाविद् थे जिन्होंने पश्चिमी तकनीकी शिक्षा को पारंपरिक भारतीय पाठ्यक्रम में शामिल करने की वकालत की। उन्होंने बंगाल में 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की और हिंदू कॉलेज की स्थापना में डेविड हेयर का सहयोग किया।
- **एकेश्वरवाद:** रॉय ने ईश्वर की एक होने की घोषणा की और कहा कि सभी धर्म एक ही अंतिम सत्य और मोक्ष के अलग-अलग रास्ते हैं।
- **सर्वदेशीयवाद:** रॉय विभिन्न राष्ट्रों के लोगों को एक बड़े परिवार की उप-इकाइयों के रूप में देखते थे जो एक दूसरे पर निर्भर हैं और उन्हें लोक कल्याण के लिए मिलकर काम करना चाहिए। रॉय ने फ्रांसीसी राष्ट्रवादियों का समर्थन किया और इंग्लैंड जाने के लिए समुद्र पार न करने की परंपरा का उल्लंघन करने वाले पहले व्यक्ति थे।
- **तर्कवाद और आधुनिकता:** रूसो की तरह, रॉय ने सर्वोत्तम कार्य को निर्धारित करने में परंपरा और अंधविश्वास की तुलना में तर्क और तर्कसंगतता को अधिक महत्वपूर्ण माना। रॉय को "आधुनिक भारत के जनक" के रूप में जाना जाता है क्योंकि उन्होंने सामाजिक परिवर्तन और उत्थान के एक साधन के रूप में आधुनिक शिक्षा पर जोर दिया था।
- **सुधारवादी:** रॉय सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक प्रगति और राष्ट्रीय समृद्धि प्राप्त करने का साधन मानते थे।
  - उन्होंने लोगों को संगठित करके, सरकार से पैरवी करके, शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना करके, स्वयंसेवी संगठन बनाकर सामाजिक परिवर्तन के लिए कार्य किया।
  - रॉय ने महिलाओं की समस्याओं जैसे विधवा पुनर्विवाह, सहमति की उम्र, सती प्रथा आदि का समाधान करने की वकालत की।
  - इससे सती प्रथा पर रोक और बहुविवाह पर रोक जैसे सुधारात्मक कानून पारित हुए।

5.4.8 ईश्वरचंद विद्यासागर

- **मानवतावाद और क्षमता:** उन्होंने जोर दिया कि नैतिक व्यवहार मानवीय गरिमा का सम्मान करता है और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने की अनुमति देता है।
  - प्रत्येक मनुष्य की कुछ बुनियादी आवश्यकताएँ और अधिकार होते हैं जिन्हें पूरा किया जाना चाहिए।
  - मनुष्य को परंपरा की साधारण वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि अपने भाग्य नियंत्रक के रूप में देखा जा सकता है।
- **शिक्षा का महत्व:** विद्यासागर शिक्षा को लोगों और समाज की प्रगति की कुंजी के रूप में देखते थे।
  - विद्यासागर ने सोचा कि अध्ययन और विचारों को व्यापक बनाना लोगों में सम्मान और स्वतंत्रता की भावना पैदा करने का सबसे अच्छा तरीका है, जो उन्हें स्वतंत्रता और विकास के लिए प्रेरित करता है।
  - विद्यासागर ने इस कारण से निचली जातियों और वंचितों के लिए एक संस्कृत कॉलेज की स्थापना की।
- **सुधारवादी:** उन्होंने सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की पूर्वापेक्षा माना।
  - उनका मानना था कि नेतृत्व करना और प्रगति के लिए प्रयास करना शिक्षित और सक्षम लोगों का दायित्व है।
- **लैंगिक समानता:** विद्यासागर एक करूणा हृदय और सामाजिक चिंतक थे। वह लैंगिक समानता के लिए सामाजिक परिवर्तनों में अग्रणी थे।

- उन्होंने विधवा पुनर्विवाह, बालिका शिक्षा और बहुविवाह और बाल विवाह को समाप्त करने की वकालत की।

- **विद्वान और शिक्षक:** उनके व्यापक और गहन शैक्षणिक ज्ञान के लिए उन्हें 'विद्यासागर' (ज्ञान का महासागर) उपनाम से सम्मानित किया गया था।
  - उन्होंने बोर्नो पोरिचॉय जैसी प्रसिद्ध रचनाएँ भी लिखीं। विद्यासागर संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य थे और उन्होंने कई शैक्षिक और प्रशासनिक सुधार किये।
  - उन्होंने जेईडी बेथ्यून की 1849 में, पहला महिला स्कूल, बेथ्यून स्कूल स्थापित करने में भी मदद की।

5.4.9 डॉ बीआर अंबेडकर

- डॉ. बीआर अंबेडकर भारतीय संविधान के प्राथमिक वास्तुकारों में से एक थे। वह एक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और उत्कृष्ट न्यायविद् थे। छुआछूत और जातिगत सीमाओं जैसी समस्याओं को खत्म करने के अम्बेडकर के प्रयास उत्कृष्ट थे। अपने पूरे जीवन में, दलितों और अन्य सामाजिक रूप से वंचित समूहों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।
- **अंतिम, खोए हुए और सबसे कम:** अंबेडकर ने 'अंतिम, खोए हुए और सबसे कम' लोगों के लिए न्याय की मांग की और भारत के हिंदू अछूतों और अन्य जातियों के एक प्रकार के क्रांतिकारी नेता के रूप में उभरे।
- **शूद्र कौन थे:** उन्होंने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था, जिसने ब्राह्मणों और अन्य उच्च जातियों द्वारा शूद्रों और अछूतों को उद्धृत करने के लिए माहौल प्रदान किया, भारत में सामाजिक न्याय की किसी भी कमी का आधार थी।
- **सामाजिक निष्पक्षता प्राप्त करना:** उनका विचार था कि जाति उन्मूलन के माध्यम से सामाजिक निष्पक्षता प्राप्त किए बिना भारत में कोई भी लोकतंत्र स्थापित नहीं किया जा सकता है।
  - परिणामस्वरूप, उन्होंने एक ऐसा पद चुना जो कांग्रेस और गांधी दोनों के बिल्कुल विपरीत था।
- **सामाजिक न्याय का अभाव:** उनका मानना था कि जाति व्यवस्था के परिणामस्वरूप सामाजिक न्याय की कमी को उच्च जातियों द्वारा कभी भी समाप्त नहीं किया जाएगा क्योंकि यह उनके हितों की पूर्ति करती है, और किसी भी पश्चिमी शैली की प्रणाली द्वारा भी नहीं क्योंकि विधायिका से लेकर सभी संस्थाएँ न्यायपालिका पर उच्च जातियों का वर्चस्व होगा जो यह सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्था में हेरफेर और नियंत्रण करेंगे कि शूद्रों और अछूतों का उत्थान न हो।
- **आर्थिक शोषण:** उनका यह भी मानना था कि चूँकि जाति व्यवस्था की आर्थिक शोषणकारी बुनियाद से ऊंची जातियों को बहुत फायदा हुआ, इसलिए वे कभी भी स्थिति को बदलने के लिए तैयार नहीं होंगे।
- **संवैधानिक गारंटी:** इसीलिए उन्होंने विधायिका से लेकर अदालतों तक लोकतांत्रिक संस्थाओं में निचली जातियों और दलितों के लिए संवैधानिक गारंटी और सीधी भागीदारी की मांग की।

समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18), जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 21), बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19), राजनीतिक अधिकार (वयस्क मताधिकार और चुनावी प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार) और विभिन्न माध्यमों से सामाजिक समावेशन को डॉ. अम्बेडकर द्वारा जातिगत पहचान, लिंग, नस्ल या मूल की परवाह किए बिना सभी के लिए बुनियादी प्राकृतिक और मानवाधिकार सुनिश्चित करने के लिए भारतीय संविधान में शामिल किया गया था।

जाति पहचान और सामाजिक दृष्टिकोण पर अम्बेडकर के विचार:

- दलित शब्द ज्योतिबा फुले द्वारा गढ़ा गया था, फलस्वरूप उत्पीड़न के इस प्रतीक को अम्बेडकर ने अस्वीकार कर दिया (हाल ही में इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दायर की गई हैं कि सार्वजनिक उपयोग में अनुसूचित जाति का नाम प्रतिस्थापित किया जाए); जिन्होंने हिंदू समाज के भीतर आर्थिक और शैक्षिक रूप से निराश हिंदुओं को अलग करने के लिए गोलमेज सम्मेलन (1930 के दशक) और उस अवधि के दौरान आयोजित जनगणना के दौरान बाहरी जातियां या बहिष्कृत जातियां जैसे शब्दों का प्रस्ताव रखा था।
- यह अनुभव करना आम बात है कि कुछ नाम कुछ राष्ट्रों और भावनाओं से जुड़ जाते हैं, जो मनुष्यों और चीजों के प्रति किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण को निर्धारित करते हैं। (जाति का उन्मूलन, अम्बेडकर, 1936), ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य जैसे शब्द और शूद्र जाति-आधारित पदानुक्रम (किसी के जन्म के कारण) पर आधारित एक सामाजिक पहचान से जुड़े हैं।
- पुराने नाम को जारी रखना सुधार को निरर्थक बनाना है; चतुर्वर्ण को अनुमति देना सामाजिक विभाजन का सूचक है।
- अछूतों के प्रति ऊंची जाति के हिंदुओं का सामाजिक रवैया नाम में ही अंतर्निहित है (हिंदुओं से दूर, अंबेडकर द्वारा निबंध)।
- अछूत जानते हैं कि जाति/व्यवसाय-आधारित पहचान नामों को जारी रखने से उन्हें सामाजिक पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ता है; इसलिए वे रविदास, बाल्मीकि जैसे नामों को रखना पसंद करते हैं या आदिद्रविदास जो सुरक्षात्मक मलिनकिरण से गुजरने की प्रक्रिया से जुड़ा हो सकता है।

5.4.10 वल्लभभाई पटेल

- **बुनियादी अधिकार और स्वतंत्रता:** उनका दृढ़ विश्वास था कि बुनियादी अधिकार और स्वतंत्रता व्यक्तिगत और राष्ट्रीय विकास दोनों के लिए महत्वपूर्ण थे।
- **शोषण और सत्ता की मनमानी:** उन्होंने लगातार शोषण, सरकार के अनुचित करों और रियासतों में कुप्रबंधन की आलोचना की।
- **मनमाने ढंग से जब्ती का विरोध किया:** उन्होंने संपत्ति की अन्यायपूर्ण जब्ती का विरोध किया और भूमि सुधार और महत्वपूर्ण व्यवसायों के राष्ट्रीयकरण पर नियमों की वकालत की।
- **हिंदू धर्म को आधुनिक बनाया:** हिंदू धर्म को आधुनिक बनाने और अन्य धर्मों के व्यक्तियों की सुरक्षा के उनके प्रयासों ने धार्मिक स्वतंत्रता की उनकी इच्छा को प्रदर्शित किया।
- **राजनीतिक मूल्य प्रणाली:** परिणामस्वरूप, उनकी राजनीतिक मूल्य प्रणाली उदारवाद, रूढ़िवाद और कल्याण का एक उत्कृष्ट मिश्रण थी।
- **राष्ट्रवाद और देशभक्ति:** उनके विचार में, राज्य का गठन और रखरखाव राष्ट्रवाद और देशभक्ति की मजबूत भावना से हुआ था।
- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता:** यह संविधान के प्रावधानों के अनुरूप था, एक राष्ट्र-राज्य बनाना था, उन्होंने पिछड़े समुदायों और महिलाओं की मुक्ति के लिए दबाव डाला, और गांधीवादी रचनात्मक कार्यक्रम के माध्यम से हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए और सामाजिक एकीकरण और राजनीतिक लामबंदी के लिए उच्च जातियाँ का उन्होंने कुशलतापूर्वक उपयोग किया।
- **भावना और कार्य में मानवतावादी:** उन्होंने एक राष्ट्र को ऐसे देश के रूप में परिभाषित किया जो "संरचना में लोकतांत्रिक, नींव में राष्ट्रवादी, और भावना और कार्य में मानवतावादी हो।" पटेल ने शराब के सेवन, अस्पृश्यता, जातिगत पूर्वाग्रह और महिलाओं की स्वतंत्रता के खिलाफ गुजरात और अन्य जगहों पर जोरदार अभियान चलाया।

5.4.11 एपीजे अब्दुल कलाम

- अवुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम बीआर एक भारतीय एयरोस्पेस वैज्ञानिक और राजनेता थे, जिन्होंने 2002 से 2007 तक भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। उनका जन्म और पालन-पोषण तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ और उन्होंने भौतिकी और एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का अध्ययन किया।
- **शासन:** कलाम के अनुसार, इसे इस बात से मापा जाता है कि यह लोगों की मांगों के प्रति कितना सक्रिय और उत्तरदायी है।
  - शासन को व्यक्तियों को नैतिक रूप से ईमानदार, बौद्धिक रूप से श्रेष्ठ और उच्च गुणवत्ता वाला जीवन जीने में सहायता करनी चाहिए।
  - यह ज्ञान अर्जन और संवर्धन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
- कलाम ने एक सामाजिक ग्रिड विकसित करने का सुझाव दिया जिसमें एक ज्ञान ग्रिड, स्वास्थ्य ग्रिड और ई-गवर्नेंस ग्रिड शामिल हैं जो पूरा ग्रिड में फीड करते हैं।

ज्ञान ग्रिड
यह नागरिकों को लोकतांत्रिक तरीके से उचित ज्ञान के साथ सशक्त बनाएगा, जिससे एक ज्ञान समाज का विकास सुनिश्चित होगा।
स्वास्थ्य ग्रिड
गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ जरूरतमंदों तक पहुंचे। इससे उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होगी और व्यक्तिगत उत्पादकता में वृद्धि होगी। इससे देश का विकास तेजी से होगा।
ई-गवर्नेंस ग्रिड
सरकारी सेवाओं में पारदर्शिता आएगी और यह सुनिश्चित होगा कि वे मात्रा या गुणवत्ता में कमी किए बिना सभी लोगों तक समान रूप से पहुंचें।

कलाम की पाँच सूत्री शपथ-

1. मैं जिस क्षेत्र में सेवा करता हूं वहां के लोगों में शत-प्रतिशत साक्षरता सुनिश्चित करने का प्रयास करूंगा, साथ ही किसी भी बच्चे को स्कूल से दूर नहीं रहने दूंगा।
2. मैं महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने और लड़कियों और लड़कों के लिए लैंगिक समानता हासिल करने का प्रयास करूंगा।
3. मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि कोई भी मुझे भ्रष्टाचार के लालच में फंसने के लिए राजी न कर सके।
4. मैं किसी भी जिले में अपने कार्यकाल के दौरान कम से कम एक लाख पेड़ लगाऊंगा और उनका रखरखाव करूंगा।
5. मैं उस जिले में कम से कम पांच PURA परिसरों को पूरा करने का प्रयास करूंगा जहां मुझे नियुक्त किया गया है, साथ ही ग्रामीण कंपनियों की स्थापना के माध्यम से कम से कम 25% आबादी के लिए नौकरी की संभावनाएं पैदा करूंगा।

कलाम के अनुसार, सिविल सेवकों को पतंजलि के प्रेरक शब्दों को हमेशा याद रखना चाहिए (योग सूत्र से)

जब आप किसी महान उद्देश्य, किसी असाधारण परियोजना से प्रेरित होते हैं, तो आपके सभी विचार अपने बंधन तोड़ देते हैं: आपका मन सीमाओं को पार कर जाता है, आपकी चेतना हर दिशा में फैल जाती है, और आप खुद को एक नई, महान और अद्भुत दुनिया में पाते हैं। सुप्त शक्तियाँ, क्षमताएँ और प्रतिभाएँ जीवित हो जाती हैं, और आप अपने आप को उससे कहीं अधिक महान व्यक्ति पाते हैं जितना आपने कभी सपने में भी नहीं सोचा था।

5.5 भारतीय प्रशासक

5.5.1 ई श्रीधरन

- एलट्टुवलापिल श्रीधरन भारतीय राज्य केरल के एक भारतीय इंजीनियर और राजनीतिज्ञ हैं। उन्हें भारत में सार्वजनिक परिवहन का चेहरा बदलने का श्रेय दिया जाता है
- उन्हें "भारत का मेट्रो मैन" भी कहा जाता है, उन्होंने भारत में सार्वजनिक परिवहन को फिर से परिभाषित करने की दिशा में काम किया।
- **साम्यता:** उनके सफल उद्यमों में से एक दिल्ली मेट्रो था, जहां उन्होंने सभी के लिए उचित टिकट और महिलाओं के लिए सुरक्षित परिवहन की पेशकश की।
- **कार्यस्थल नैतिकता:** उनका तर्क है, "कार्यस्थल नैतिकता एक मजबूरी है, विकल्प नहीं।" उन्होंने कार्यस्थल में समयबद्धता, व्यावसायिकता और योग्यता की आवश्यकता पर बल दिया।
- **दृढ़ता:** गेज की पसंद पर रेल मंत्री के साथ असहमति के बावजूद, वह उच्चतम स्तर के कोंकण रेलवे का निर्माण करने में सफल रहे। अपनी लगन और दृढ़ता से उन्होंने मंत्री को मना लिया।

5.5.2 टीएन शेषन

- वह तमिलनाडु कैडर के एक आईएएस अधिकारी थे जिन्होंने भारत में चुनावी प्रणाली पर अपने प्राधिकार की मुहर लगाई।
- **नेतृत्व:** उन्होंने कई चुनावी गड़बड़ियों का पता लगाया, जिनमें दोषपूर्ण चुनाव नामावली, बूथ पर कब्जा, चुनाव प्रचार आदि शामिल हैं। इसके बाद उन्होंने सभी तत्वों पर दृढ़ता से काम किया और अधिकारियों के अनुसरण के लिए मानक स्थापित किए।
- **अनुशासन:** वह कानून के प्रति अपनी अडिग प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे। उन्होंने सुनिश्चित किया कि उनके सहयोगी कर्मी और राजनेता नियमों का पालन करें।
  - उदाहरण के लिए, 1994 में, उन्होंने प्रधान मंत्री को चुनावी कदाचार के लिए दो मौजूदा कैबिनेट मंत्रियों को बर्खास्त करने की सिफारिश की।
  - उनकी पद्धति को शून्य विलंब और शून्य कमी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता था।
- **नवोन्मेषी:** वह चुनावों के दौरान आदर्श आचार संहिता को प्रभावी ढंग से लागू करने वाले पहले व्यक्ति थे, जो अब भारतीय चुनावों की एक अभिन्न विशेषता बन गई है।

5.5.3 डॉ टी अरुण, आईएएस

- **इनोवेटिव, टेक्नोक्रेट:** उन्होंने एक ऐप बनाया जिसका उपयोग पुडुचेरी में तालाबों, झीलों और 206 किलोमीटर लंबी नहरों सहित 198 जल सुविधाओं को पुनर्जीवित करने के लिए किया गया है। यह ऐप 'नीर पधिवु' जियोटैगिंग, अद्वितीय आईडी नंबर, तालाबों पर जीआईएस और अक्षांश और देशांतर निर्देशांक द्वारा जल निकायों के डिजिटलीकरण में सहायता करता है।
- **पर्यावरणविद्:** रिमोट सेंसिंग उपग्रहों का उपयोग करके, ऐप भूजल स्तर, मिट्टी की नमी की मात्रा और आकार की स्थिति को अपडेट करता है। कार्यक्रम न केवल कायाकल्प प्रक्रिया को तेज करने में मदद करता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि लोग जल निकायों को प्रदूषित न करें या अतिक्रमण न करें।

5.5.4 एस सीरम संभाशिवा

- **करुणा:** उन्होंने दया भाव से आश्रय गृहों की स्थापना और संचालन के लिए उदयम चौरिटेबल सोसाइटी की स्थापना की। उनका एक उद्देश्य राज्य की 'नम्मुडे कोझिकोड' विकास परियोजना के हिस्से के रूप में सड़क पर रहने वालों के लिए आश्रय गृह उपलब्ध कराना था। पिछले 18 महीनों में, इस पहल ने लगभग 1,500 बेघर लोगों को सड़कों से हटाकर विभिन्न आश्रय घरों में पहुंचाया है।
- **कर्तव्यपरायणता, सेवा के प्रति समर्पण और करुणा:** इसके अलावा, जिला प्रशासन ने बेघरों को उनके परिवारों से मिलाने के साथ-साथ कौशल प्रशिक्षण और नौकरी के अवसर प्रदान करने की जिम्मेदारी भी ली।
- **मानवता:** लगभग 1,000 कैदियों को अन्य चीजों के अलावा बाल कटाने, सर्जरी, परामर्श और चिकित्सा जांच के माध्यम से उनकी भलाई के लिए भोजन और देखभाल प्रदान की गई।

- **नवोन्मेषी और दयालु:** जिनके पास आईडी कार्ड नहीं थे उन्हें नए कार्ड दिए गए, और उन्हें स्थिर आय अर्जित करने में सहायता के लिए एक साक्षरता कार्यक्रम, 'ज्ञानोदयम' के साथ-साथ प्रमाणन परीक्षा भी आयोजित की गई।

5.5.5 शालिनी अग्रवाल

- **नवोन्मेषी विचार:** वडोदरा में पानी की गंभीर कमी की समस्या के समाधान के लिए, उन्होंने स्कूलों में वर्षा जल संचयन स्थापित करने का एक सरल समाधान तैयार किया, जिससे लाखों छात्रों को हर साल 10 करोड़ लीटर पानी बचाने में मदद मिली।
- **वर्षा काल निधि:** इसे 2020 में लॉन्च किया गया था, और यह छत से वर्षा जल एकत्र करता है और इसे पाइप के माध्यम से जमीन में एक कक्ष में भेजता है। फिर बोरवेल में पानी को चौम्बर द्वारा फिल्टर करके रिसाया जाता है, जिससे प्रत्यक्ष भूजल पुनर्भरण सुनिश्चित होता है।
- **नेतृत्व:** "पूरे वडोदरा में विभिन्न कार्यशालाएँ, प्रतियोगिताएँ और कार्यक्रम आयोजित किए गए, जहाँ बच्चों ने ब्रांड एंबेसडर के रूप में काम किया और लोगों को संरक्षण के महत्व पर शिक्षित किया गया।

5.5.6 डॉ आदर्श सिंह

- **नेतृत्व:** उन्होंने ग्रामीणों को जागरूक करने, अतिक्रमण हटाने, कचरा डंपिंग कम करने और नदी तट पर खुले में शौच पर रोक लगाने जैसे कदम उठाए। जिला अधिकारी ने निवासियों को खुले में शौच और नदी में कचरा निपटान के बारे में भी शिक्षित किया।
- **आयोजक, नवोन्मेषी विचार:** उन्होंने लॉकडाउन का उपयोग जिले की एक मरती हुई नदी को पुनर्जीवित करने के लिए किया, जिसमें उन लोगों को रोजगार दिया गया, जिन्होंने कोविड-19 महामारी के कारण अपनी आजीविका खो दी थी।
- **विवेक:** ऐसे समय में जब बहुत से लोग अपनी नौकरियाँ खो रहे थे और बड़े पैमाने पर वेतन कटौती का सामना कर रहे थे, डॉ आदर्श ने पर्यावरण संकट का समाधान करने के साथ-साथ रोजगार सृजन के अवसर का भी लाभ उठाया।

5.5.7 अनुपम शर्मा

- **समझदारी:** बायोगैस संयंत्र मां शारदा देवी मंदिर प्रबंधन समिति के वृद्धाश्रम की कुछ जरूरतों को पूरा करने में मदद करता है, जहां यह निवासियों के लिए सुबह और शाम की चाय तैयार करने के लिए पर्याप्त गैस उत्पन्न करता है। यह परिसर में उत्पन्न होने वाले गीले कचरे को कम करने में भी मदद करता है।
- **नेतृत्व:** लक्ष्य ग्रामीणों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करना था और साथ ही उत्पन्न प्लास्टिक कचरे का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना था।
- **अभिनव दृष्टिकोण:** वन विभाग ने लगभग पाँच लाख पौधे लगाए, जिनमें से प्रत्येक प्लास्टिक की थैली में लपेटा हुआ आया।
- **पर्यावरण के अनुकूल:** इस तथ्य के बावजूद कि लगभग 5,000 किलो प्लास्टिक कचरा जमा हो गया था, यह पर्यावरणीय उद्देश्यों के लिए समर्पण का भाव परिलक्षित करता है। इसके परिणामस्वरूप मैहर के तीन गांवों के लिए दीर्घकालिक रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए 5000 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे का उपयोग किया गया।

5.5.8 धर्म सिंह मीणा

- **पर्यावरण के लिए चिंता:** उत्तराखंड और हिमालय उपमहाद्वीप में प्राकृतिक झरनों का लुप्त होना चिंता का कारण है। प्रभागीय वन अधिकारी धरम सिंह मीणा ने इस पर ध्यान दिया और इसका समाधान करने का निर्णय लिया।
- **नेतृत्व:** उन्होंने और उनकी टीम ने टिहरी गढ़वाल में 66 हिमालयी झरनों को पुनर्जीवित करने का कार्य किया जो 23 गांवों में एक लाख से अधिक लोगों को स्थायी जल आपूर्ति प्रदान कर रहा है।

5.5.9 दामोदर गौतम सवांग

- **समावेशी:** महिलाओं के लिए दिशा मोबाइल ऐप जारी किया गया और पांच महीनों में इसके 12.57 लाख डाउनलोड हुए।
- **टेक्नोक्रेट और इनोवेटर:** भारत के शीर्ष डीजीपी नामित, उन्होंने आंध्र पुलिस विभाग में विभिन्न तकनीकी नवाचारों को लागू किया है जिससे एफआईआर, शिकायतें और एसओएस अनुरोध दर्ज करना आसान और तेज हो गया है।
- **खुलापन और जवाबदेही:** प्रौद्योगिकी की प्रगति ने विभागों में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने में सहायता की है। अधिकारी द्वारा एक नई फाइल प्रबंधन प्रणाली की शुरूआत से जांच की गति और 85 प्रतिशत मामलों को पूरा करने में सहायता मिली।
- **जन-केंद्रित और उपयोगकर्ता-अनुकूल:** एपी पुलिस सेवा नामक एक मोबाइल एप्लिकेशन स्थापित किया गया था, और पांच महीनों के भीतर, 2,64,000 एफआईआर डाउनलोड की गई।

5.5.10 डॉ संग्राम सिंह पाटिल

- **करुणा:** पुलिस अधीक्षक डॉ. संग्राम सिंह पाटिल द्वारा शुरू किया गया एक कार्यक्रम जिसने गुट्टी कोया आदिवासी

जनजाति के 5000 से अधिक सदस्यों को स्वास्थ्य देखभाल में बेहतर पहुंच प्राप्त करने में सहायता की है।

- **प्रभावी संसाधन प्रबंधन:** 2019 से, डॉ संग्राम ने जिले की 100 से अधिक बस्तियों के 5,000 से अधिक आदिवासियों को पोषण की कमी, हीमोग्लोबिन, त्वचा और अन्य संबंधित बीमारियों जैसी विभिन्न चिंताओं से निपटने में सहायता की है।
    - इस अधिकारी के प्रयासों से आदिवासी समुदाय के सदस्यों को 7 लाख रुपये की चिकित्सा सहायता प्राप्त हुई है।

5.5.11 सांथा शीला नायर

- **सांथा शीला नायर:** 1973 बैच की आईएएस अधिकारी, नायर को एक कुशल प्रशासक माना जाता है। उन्हें 2000 के दशक की शुरुआत में वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाकर, प्रत्येक घर में विशेष टैंक और पाइप स्थापित करके चेन्नई को जल संकट से बचाने का श्रेय दिया जाता है।

5.5.12 अरुणा सुंदरराजन

- **एक बिजनेसवुमन की तरह सोचती है:** फोर्ब्स पत्रिका ने केरल कैडर की इस आईएएस अधिकारी को "एक ऐसी आईएएस अधिकारी जो एक बिजनेसवुमन की तरह सोचती है" के रूप में ख्याति मिली है। आईटी सचिव के रूप में, उन्होंने केरल में ई-गवर्नेंस को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कुदुम्बश्री परियोजना का भी नेतृत्व किया, जो अब महिला सशक्तिकरण का एक चमकदार उदाहरण है, जो कामकाजी वर्ग की महिलाओं के लिए दीर्घकालिक रोजगार के अवसर पैदा कर रही है।

5.5.13 स्मिता सभरवाल

- **पीपुल्स ऑफिसर:** उन्हें "पीपुल्स ऑफिसर" भी कहा जाता है।
- **अपने शहर को फंड करें:** वारंगल में नगर आयुक्त के रूप में काम करते हुए, उन्होंने "फंड योर सिटी" योजना शुरू की, जिसके माध्यम से निजी भागीदारी के तहत बड़ी संख्या में सार्वजनिक उपयोगिताओं, जैसे फुटब्रिज, ट्रैफिक जंक्शन, पार्क और बस स्टॉप का निर्माण किया गया।

5.5.14 रजनी सेखड़ी सिब्बल

- **साहस:** राज्य में प्राथमिक शिक्षा निदेशक के रूप में, उन्होंने सरकार के दबाव का सामना किया और जेबीटी भर्ती घोटाले का पर्दाफाश किया।
- **ईमानदारी:** इस घोटाले में रिश्वत देने वालों को नौकरी देने के लिए शिक्षकों की चयन सूची में बदलाव किया गया था। जब सिब्बल से पूछा गया कि क्या वह धोखाधड़ी में एक पक्ष थी, तो अपने कनिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में, सिब्बल ने मूल सूची वाली अलमारी को मोटी सूती पट्टियों से बंद कर दिया और सील कर दिया। उन्होंने उनसे विभिन्न स्थानों पर पट्टियों पर हस्ताक्षर करने और सबूत के तौर पर तस्वीरें लेने के लिए भी कहा।

5.5.15 डी सुब्बा राव

सुब्बाराव आरबीआई के 22वें गवर्नर थे।

- **वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता:** भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में, उन्होंने वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता और ग्राम आउटरीच कार्यक्रमों का निरीक्षण किया।
- **नई त्रिलम्मा:** उन्होंने रॉबर्ट मुंडेल और मार्कस फ्लेमिंग की "इम्पॉसिबल ट्रिनिटी" के विपरीत, सेंट्रल बैंकरों की नई त्रिलम्मा पर एक सिद्धांत भी विकसित किया, जिसे "होली ट्रिनिटी" कहा गया।
- **A Brief History of Time:** वह स्टीफन हॉकिंग की प्रशंसित पुस्तक, "A Brief History of Time" की समीक्षा करने वाले पहले व्यक्ति थे।

5.5.16 भूपेश चौधरी

- **मिर्च की खेती करने वाले किसानों की दुर्दशा:** मिजोरम के सबसे दक्षिणी जिले सियाहा में किसानों की स्थिति भारत के अन्य भागों के किसानों से अलग नहीं थी।
- **मुद्दे:** अन्यायपूर्ण बाजार दरों और भंडारण सुविधाओं की कमी जैसे मुद्दों से परेशान होकर, ये किसान मिर्च की सबसे बेहतरीन किस्मों में से एक - बर्ड्स आई, को किसी भी दर पर बेच रहे थे।
- **मुद्दे को सुलझाने के लिए कदम उठाया गया:** यह तब तक था जब तक सियाहा जिले के पूर्व उपायुक्त (डीसी) भूपेश चौधरी ने हस्तक्षेप नहीं किया।
- **पैकेज्ड मिर्च पाउडर:** दो साल तेजी से आगे बढ़े, और किसान अब उत्पादित पैकेज्ड मिर्च पाउडर 700/800 रुपये प्रति किलोग्राम पर बेच रहे हैं, जबकि पहले ताजी मिर्च की दर 50-100 रुपये प्रति किलोग्राम थी।
- **बेहतर स्थिति:** आज, जिले में 280 से अधिक किसान लगभग 102,580 किलोग्राम ताजी मिर्च उगाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप लगभग 3,200 किलोग्राम सूखी मिर्च प्राप्त होती है।

5.5.17 अंशुल गुप्ता

- **अस्पताल का पुनर्निर्माण:** एक आईएएस अधिकारी, अंशुल गुप्ता, महामारी से बहुत पहले चुपचाप एक जर्जर अस्पताल को एक सस्ते स्वास्थ्य क्लिनिक में बदल रहे थे।

- **इंडियन रेड क्रॉस हॉस्पिटल की समस्याएं:** जब उन्होंने 2019 में इंदौर के महू छावनी के सब डिविजनल मजिस्ट्रेट (एसडीएम) के रूप में पदभार संभाला, तो उन्हें इंडियन रेड क्रॉस हॉस्पिटल (IRCH) की कई समस्याओं से अवगत कराया गया।
  - "ऐसे कई मुद्दे थे जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी, जिनमें नर्सों और डॉक्टरों की कमी से लेकर अनियमित कार्यसूची, अपर्याप्त चिकित्सा सुविधाएं और बुनियादी निदान सेवाएं और बड़े पैमाने पर रिश्वतखोरी शामिल थी।"
  - बाद में अस्पताल को एक कोविड-19 देखभाल सुविधा में बदल दिया गया।
- **कोरोना वायरस से लड़ाई:** 'अस्पताल की सुविधाओं और पारदर्शी प्रबंधन ने कोरोना वायरस से लड़ने में लोगों का आकलन किया था।'

5.5.18 ओम कसेरा

- **एनईईटी और जेईई आवेदक:** 2012 बैच के आईएएस अधिकारी ओम प्रकाश कसेरा, जो वर्तमान में जिला कलेक्टर के रूप में कार्यरत हैं, के पास दैनिक आधार पर एनईईटी और जेईई आवेदकों के चिंतित माता-पिता और प्रोफेसरों के फोन आते थे।
- **मानसिक और भावनात्मक कल्याण:** ओम चिंतित थे कि लॉकडाउन छात्रों के मानसिक और भावनात्मक कल्याण को खराब कर देगा, जो पहले से ही कठिन परीक्षाओं की तैयारी के दौरान अकेलेपन और चिंता जैसी चिंताओं से पीड़ित थे।
- **घर वापसी:** ओम और उनकी प्रशासन टीम ने पूरे विचार-विमर्श के बाद पूरे भारत में 50,000 बच्चों को निकालने और उन्हें सुरक्षित घर लौटने में सहायता करने के लिए एक सटीक रणनीति तैयार की। "छात्रों का पहला समूह 17 अप्रैल को और अंतिम 12 मई को रवाना हुआ।"
- **थैंक्यूडीएमकोटा:** इसे मनाने के लिए छात्रों ने जून में एक दिन के लिए ट्विटर पर हैशटैग # थैंक्यूडीएमकोटा का इस्तेमाल किया।

5.5.19 हर्षिका सिंह

- **असंतुलित लिंगानुपात:** हर्षिका सिंह ने मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में एक कलेक्टर के रूप में असंतुलित लिंग अनुपात के साथ-साथ महिलाओं में उच्च मातृ मृत्यु दर, स्वच्छता की कमी और साक्षरता जैसी अन्य लिंग संबंधी चिंताओं को देखा।
- **सभी महिला विद्यालयों की स्थापना:** 2012 बैच के आईएएस अधिकारी ने 35 ग्राम पंचायतों में सभी महिला विद्यालयों की स्थापना करके बदलाव लाने का वादा किया।
- **महिला ड्रॉपआउट को कम करना:** उन्होंने बुजुर्ग महिलाओं और ड्रॉपआउट करने वाली महिलाओं को संगठित करने में मदद करने के लिए स्थानीय महिलाओं को ट्यूटर के रूप में नियुक्त किया।
- **परिचयात्मक शैक्षणिक पाठ्यक्रम:** हर्षिका ने एक परिचयात्मक शैक्षणिक पाठ्यक्रम बनाया जो नाम लिखना, हस्ताक्षर करना सीखना, बुनियादी अंकगणित और सामान्य स्वास्थ्य और स्वच्छता जागरूकता जैसे कौशल पर केंद्रित है।
- **उपस्थिति बढ़ाना:** दो महीने के पाठ्यक्रम में, प्रत्येक स्कूल में औसतन 20-30 महिलाएँ थीं जो सप्ताह में तीन से चार दिन एक घंटे के पाठ में ईमानदारी से भाग लेती थीं।

5.5.20 रमेश घोलप

- **9 साल के बच्चे को बचाया:** झारखंड के बोकारो जिले के बेरमो के सब डिविजनल मजिस्ट्रेट रमेश घोलप ने 2015 में सुमित नामक 9 साल के बच्चे को बचाया।
- **बच्चों का नामांकन:** तब से, उन्होंने कई स्कूल प्रणालियों में लगभग 35 बच्चों का नामांकन कराया है। रमेश वर्तमान में कोडरमा के उपायुक्त हैं, जहां उन्होंने पांच बच्चों का नामांकन सरकारी आवासीय विद्यालयों में कराया है।
- **महत्वपूर्ण कागजी कार्रवाई:** इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने सरकारी लाभ प्राप्त करने के लिए आधार और राशन कार्ड जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेज प्राप्त करने में भी युवाओं की सहायता की। उन्होंने खुद को सपना कुमारी, एक अनाथ 11 वर्षीय लड़की का अभिभावक भी नियुक्त किया है।

5.6 प्रशासन एवं नेतृत्व

- **प्रशासन:** इसे सहमत लक्ष्यों को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए दूसरों के साथ और उनके माध्यम से काम करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। यह मुख्य रूप से मौजूदा उपकरणों और संरचनाओं का उपयोग करके वस्तुनिष्ठ प्रक्रियाओं, दिशानिर्देशों, नीतियों आदि के कार्यान्वयन से संबंधित है।
- **नेतृत्व:** इसका संबंध मानव और भौतिक संसाधनों के निर्देशन और नियंत्रण से है ताकि मूल्य पैदा किया जा सके और समकालीन समय और प्रौद्योगिकी के अनुसार संरचनाएं विकसित की जा सकें और इस प्रकार परिभाषित लक्ष्यों और उद्देश्यों से बेहतर प्रदर्शन किया जा सके।
- **उदाहरण:** जबकि एक प्रशासक ने सड़क निर्माण के लिए सरकार द्वारा धनराशि जारी करने का इंतजार किया होगा, आर्मस्ट्रांग पेम ने क्राउडफंडिंग के माध्यम से 100 किमी लंबी सड़क का निर्माण किया।
- **क्षमता विकास और प्रशिक्षण:** भारत में सुशासन के लिए कुशल प्रशासकों और नेताओं का विकास करना महत्वपूर्ण

है। प्रशासकों को जटिल परिस्थितियों का सामना करने और सफलतापूर्वक नेतृत्व करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान प्रदान करने के लिए निरंतर क्षमता विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है।

- **सार्वजनिक भागीदारी और जुड़ाव:** हाल के वर्षों में प्रशासन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सार्वजनिक भागीदारी और भागीदारी पर जोर बढ़ रहा है। भारतीय संदर्भ में, प्रभावी नेता वे हैं जो नागरिकों को सक्रिय रूप से शामिल करते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं, और नीति निर्माण और कार्यान्वयन में उनकी प्रतिक्रिया को शामिल करते हैं।
- **समावेशन और विविधता:** भारत कई भाषाओं, आस्थाओं और रीति-रिवाजों वाला एक विविध देश है। भारत में सफल प्रशासन और नेतृत्व को इस विविधता के बारे में जागरूकता और सराहना के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों के लिए समावेशन और निष्पक्ष विकास के प्रति प्रतिबद्धता की आवश्यकता है।
- **नीति कार्यान्वयन और राजनीतिक इच्छाशक्ति:** भारत में प्रभावी प्रशासन और नेतृत्व नीतियों और सुधारों को लागू करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति पर निर्भर है। परिवर्तन को बढ़ावा देने, नौकरशाही बाधाओं को दूर करने और सरकारी परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता है।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता:** भारतीय प्रशासन और नेतृत्व में जवाबदेही और पारदर्शिता तेजी से महत्वपूर्ण होती जा रही है। नेताओं को जनता के प्रति जिम्मेदार होना आवश्यक है, सूचना का अधिकार अधिनियम जैसी प्रणालियाँ व्यक्तियों को सरकारी जानकारी प्राप्त करने की अनुमति देती हैं।
- **राजनीतिक प्रशासन:** भारतीय परिवेश में प्रशासन और नेतृत्व एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। राजनीतिक नेताओं के पास पर्याप्त प्रशासनिक अधिकार होते हैं, और कुशल प्रशासन सभी स्तरों पर सरकार के सुचारू संचालन के लिए महत्वपूर्ण है।
- **नौकरशाही संरचना:** भारत में एक सुस्थापित नौकरशाही संरचना है जो प्रशासन और नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) एक प्रतिष्ठित सरकारी सेवा है जो देश भर में प्रशासनिक नौकरियों को भरने के लिए उत्कृष्ट प्रतिभा की तलाश करती है।
- **विकेंद्रीकरण और स्थानीय शासन:** भारत में, शक्ति और अधिकार केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और स्थानीय संस्थाओं जैसे नगर पालिकाओं और पंचायतों के बीच विभाजित हैं। कुशल सेवा वितरण और शासन की गारंटी के लिए, प्रभावी प्रशासन के लिए सभी स्तरों पर मजबूत नेतृत्व की आवश्यकता होती है।

5.7 प्रशासक, प्रबंधक और नेता

- **प्रशासक:** यह वह व्यक्ति होता है जो संगठन की रणनीतिक दृष्टि बनाने के लिए जिम्मेदार है। एक प्रशासक एक संगठनात्मक संरचना तैयार करता है और दीर्घकालिक योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **प्रबंधक:** यह वह व्यक्ति है जो प्रशासक के दृष्टिकोण को संचालन योजनाओं में बदलने और तैयार संगठनात्मक संरचना में काम करने वाले कर्मियों को निर्देशित करने और पर्यवेक्षण करने के लिए जिम्मेदार है।
- **नेता:** यह वह व्यक्ति है जो दूसरों को मार्गदर्शन और प्रेरित करता है जिसमें कभी-कभी प्रबंधक भी शामिल हो सकते हैं। वे दूरदृष्टि-उन्मुख होते हैं और टीम को सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

5.7.1 प्रबंधक और नेतृत्व के बीच अंतर

पैरामीटर	प्रबंधक	नेतृत्व
आउटलुक	• निष्क्रिय दृष्टिकोण जो बताए गए उद्देश्य तक सीमित है।	• महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण; वे नई संरचना या प्रक्रियाएँ आरंभ करते हैं।
नियुक्ति	• इन्हें आम तौर पर नियुक्त किया जाता है।	• उन्हें नियुक्त किया जा सकता है या वे किसी समूह के भीतर से उभर सकते हैं।
लक्ष्यों के प्रति दृष्टिकोण	• लक्ष्यों के प्रति अवैयक्तिक, एकदिशात्मक दृष्टिकोण	• व्यक्तिगत भागीदारी, लक्ष्यों के प्रति समग्र दृष्टिकोण
जन प्रबंधन	• लोगों के साथ कम भावनात्मक जुड़ाव, बातचीत लोगों को सौंपी गई विशिष्ट भूमिकाओं तक ही सीमित है।	• लोगों के साथ उच्च भावनात्मक जुड़ाव; कभी-कभी, कई लोग सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धी और प्रेरणादायक भावनाओं का आह्वान करते हैं।

निष्कर्ष

विचारकों और दार्शनिकों ने अपने सिद्धांतों और दर्शन के माध्यम से, इसमें से तर्कसंगत मूल्यों को निकालने के लिए एक मजबूत नैतिक और बौद्धिक आधार प्रदान किया और उनका योगदान विशेष रूप से शासन के क्षेत्र में और सामान्य रूप से समाज में अधिक नैतिक परिप्रेक्ष्य लाने की दिशा में अग्रणी रहा है।

विगत वर्ष के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. "हर काम को सफल होने से पहले सैकड़ों कठिनाइयों से गुजरना पड़ता है।" जो लोग दृढ़ रहेंगे, वे देर-सबेर प्रकाश देखेंगे। –स्वामी विवेकानन्द (150 शब्द) (2021)
2. "हम बाहरी दुनिया में तब तक शांति नहीं प्राप्त कर सकते जब तक कि हम अपने भीतर शांति प्राप्त नहीं कर लेते।" –दलाई लामा (150 शब्द) (2021)
3. परस्पर निर्भरता के बिना जीवन का कोई मतलब नहीं है। हमें एक-दूसरे की जरूरत है, और जितनी जल्दी हम यह सीख लेंगे, यह हम सभी के लिए बेहतर होगा। –एरिक एरिकसन शब्द (150 शब्द) (2021)
4. बुद्ध की कौन-सी शिक्षाएँ आज सबसे अधिक प्रासंगिक हैं और क्यों? चर्चा कीजिए। (2020)
5. भारत में लैंगिक असमानता के लिए जिम्मेदार मुख्य कारक क्या हैं? इस संबंध में सावित्रीबाई फुले के योगदान की चर्चा कीजिए। (2020)
6. "किसी की निंदा न करें: यदि आप मदद के लिए हाथ बढ़ा सकते हैं तो ऐसा करें।" यदि नहीं तो आप हाथ जोडिऐ अपने भाइयों को आशीर्वाद दो और उन्हें उनके मार्ग पर जाने दो।" –स्वामी विवेकानन्द (2020)
7. "खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका खुद को दूसरों की सेवा में खो देना है।" –महात्मा गांधी (2020)
8. "नैतिकता की एक प्रणाली जो सापेक्ष भावनात्मक मूल्यों पर आधारित है, एक मात्र भ्रम है, एक पूरी तरह से अशिष्ट अवधारणा है जिसमें कुछ भी युक्तिसंगत नहीं है और कुछ भी सच नहीं है।" –सुकरात (2020)
9. "एक अपरीक्षित जीवन जीने लायक नहीं है।" –सुकरात (2019)
10. "मनुष्य केवल अपने विचारों का उत्पाद है।" वह जो सोचता है, वह बन जाता है।" –एमके गांधी (2019)
11. "जहाँ हृदय में धार्मिकता है, वहाँ चरित्र में सुंदरता है।" जब चरित्र में सुंदरता होती है, तो घर में सद्भाव रहता है। जब घर में सद्भाव होता है, तो राष्ट्र में व्यवस्था होती है। जब राष्ट्र में व्यवस्था होती है, तो विश्व में शांति होती है।" –एपीजे अब्दुल कलाम (2019)
12. "महान महत्वाकांक्षा एक महान चरित्र का जुनून है। इससे संपन्न लोग बहुत अच्छे या बहुत बुरे कार्य कर सकते हैं। सब कुछ उन सिद्धांतों पर निर्भर करता है जो उन्हें निर्देशित करते हैं। –नेपोलियन बोनापार्ट। उदाहरण देते हुए उन शासकों का उल्लेख करें (i) जिन्होंने समाज और देश को नुकसान पहुंचाया, (ii) जिन्होंने समाज और देश के विकास के लिए काम किया। (2017)
13. महात्मा गांधी की सात पापों की अवधारणा पर चर्चा कीजिए। (2016)
14. भारतीय संदर्भ में जॉन रॉल्स की सामाजिक न्याय की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए। (2016)
15. भ्रष्टाचार के कारण सरकारी खजाने का दुरुपयोग, प्रशासनिक अक्षमता तथा राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है। कौटिल्य के विचारों पर चर्चा कीजिए। (2016)
16. मैक्स वेबर ने कहा कि जिस तरह के नैतिक मानदंड हम व्यक्तिगत विवेक के मामलों पर लागू करते हैं, उसे सार्वजनिक प्रशासन पर लागू करना बुद्धिमानी नहीं है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि राज्य नौकरशाही की अपनी स्वतंत्र नौकरशाही नैतिकता हो सकती है। इस कथन का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। (2016)
17. "कमजोर कभी माफ नहीं कर सकते; क्षमा ताकतवर की विशेषता है।" (2015)
18. हम उस बच्चे को आसानी से माफ कर सकते हैं जो अंधेरे से डरता है; जीवन की असली त्रासदी तब होती है जब लोग रोशनी से डरते हैं। (2015)
19. जीवन में नैतिक आचरण के संदर्भ में किस प्रख्यात व्यक्तित्व ने आपको सबसे अधिक प्रेरित किया है? उनकी शिक्षाओं का सार बताएं, विशिष्ट उदाहरण दें और वर्णन करें कि आप इन शिक्षाओं को अपने नैतिक विकास के लिए कैसे लागू करने में सक्षम हैं। (2014)
20. इस धरती पर हर किसी की जरूरतों के लिए काफी कुछ है लेकिन किसी के लालच के लिए नहीं –महात्मा गांधी (2013)
21. लगभग सभी मनुष्य प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं, लेकिन यदि आप किसी व्यक्ति के चरित्र का परीक्षण करना चाहते हैं, तो उसे शक्ति दें - अब्राहम लिंकन (2013)
22. मैं उसे बहादुर मानता हूँ जो अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त करता है बजाय उस व्यक्ति को जिसने अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त की है –अरस्तू (2013)
23. एक व्यक्ति की भलाई सभी की भलाई में निहित है।" इस कथन से आप क्या समझते हैं? इस सिद्धांत को सार्वजनिक जीवन में कैसे लागू किया जा सकता है? (2013)

❖ ❖ ❖

6 लोक प्रशासन में लोक/नागरिक सेवा मूल्य और नैतिकता

"केवल एक वृहत सरकार ही अंततः मायने नहीं रखती है बल्कि महत्वपूर्ण है कि प्रशासन में नैतिकता के समावेश को एक बेहतर सरकार ही सुनिश्चित कर सकती है। इसमें कोई भी संदेह नहीं होना चाहिए कि प्रशासन में नैतिकता को कायम रखने में सहनशीलता, ईमानदारी, वफादारी, प्रसन्नता, शिष्टाचार और इसी तरह के अन्य गुणों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।" **–पॉल एच. एप्पलबी**

पाठ्यक्रम
लोक प्रशासन में सार्वजनिक/नागरिक सेवा मूल्य और नैतिकताः स्थिति और समस्याएं; सरकारी और निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ; नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानून, नियम, विनियम और अंतःकरण; उत्तरदायित्व और नैतिक शासन; शासन में नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ बनाना; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और वित्त पोषण में नैतिक मुद्दे; निगम से संबंधित शासन प्रणाली।

लोक प्रशासन का अर्थ

- लोक प्रशासन अध्ययन और अभ्यास के क्षेत्र को संदर्भित करता है, जो सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों और सेवाओं के प्रबंधन और कार्यान्वयन पर केंद्रित है।
- सार्वजनिक लक्ष्यों को प्राप्त करने और समाज के हितों की सेवा के लिए सार्वजनिक संसाधनों का नियोजन, आयोजन, समन्वयन और नियंत्रण शामिल है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने लोक प्रशासन को सार्वजनिक कानून के विस्तृत और व्यवस्थित निष्पादन के रूप में परिभाषित किया है। उन्होंने सरकारी संस्थानों को दो अलग-अलग क्षेत्रों- प्रशासन और राजनीति में विभाजित किया है।
- लोक प्रशासन में नीति निर्माण, बजट, कार्मिक प्रबंधन, सार्वजनिक सेवा वितरण और नियामक निरीक्षण जैसी विभिन्न गतिविधियाँ भी शामिल हैं।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य प्रभावी और कुशल शासन सुनिश्चित करना, सार्वजनिक कल्याण को बढ़ावा देना और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करना है।

लोक प्रशासन की बुनियादी विशेषताएँ

- **तटस्थ प्रणालीः** लोक प्रशासन राजनीतिक संबद्धता से स्वतंत्र होकर राज्य और सार्वजनिक हितों की सेवा करने एवं निर्णय लेने तथा कार्यों में निष्पक्षता के सिद्धांतों को बनाए रखने के लिए तटस्थ रूप से काम करता है।
- **सामूहिक दृढ़इच्छाः** यह राज्य के उद्देश्यों और सार्वजनिक हित पर ध्यान केंद्रित करते हुए, कानूनों और विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए लोगों की सामूहिक इच्छा के अनुरूप होती है।
- **नीति क्रियान्वयनः** यह नीतियां भी बनाता है और लागू करता है, उनके विकास, कार्यान्वयन और वांछित परिणाम प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह नीति डिजाइन करने और प्रभावी कार्यवाही के बीच के अंतर को कम करता है, जिससे नीतियों का मूर्त परिणामों के रूप में प्रकटीकरण सुनिश्चित होता है।
- **सार्वजनिक भागीदारीः** सार्वजनिक प्रशासन नागरिकों की आवश्यकताओं के प्रति समावेशिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
- **सामाजिक समानताः** यह निष्पक्षता, सामाजिक न्याय और सेवाओं तक समान पहुंच को बढ़ावा देने और सामाजिक असमानताओं को संबोधित करने का प्रयास करता है।
- **कार्यकारी शाखा में संकेंद्रणः** लोक प्रशासन सभी सरकारी शाखाओं तक विस्तृत है, लेकिन आम तौर पर यह कार्यकारी शाखा के भीतर केंद्रित है, जो दिन-प्रतिदिन के प्रशासन के लिए उत्तरदायी है। इस शाखा में सार्वजनिक प्रशासक नीति कार्यान्वयन, सेवा वितरण और नियामक कार्यों की देखरेख करते हैं।
- **जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने का लक्ष्यः** इसका उद्देश्य बेहतर सार्वजनिक सेवाओं और बुनियादी ढांचे के माध्यम से समाज की बेहतरी की दिशा में काम करते हुए, नियामक निरीक्षण, आवश्यक सेवाएं प्रदान करके और सामाजिक जरूरतों को संबोधित करके नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।
- **सार्वजनिक क्षेत्र पर जोरः** सार्वजनिक प्रशासन लाभ कमाने के बजाय सार्वजनिक क्षेत्र को प्राथमिकता देकर, जनता के कल्याण पर ध्यान केंद्रित करके और सामाजिक जिम्मेदारी

और जवाबदेही के साथ काम करके निजी प्रशासन से खुद को पृथक करता है।

सार्वजनिक और निजी प्रशासन के बीच अंतर

प्रशासन	नौकरशाही
प्रशासन राज्य के एक स्थायी पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है, जो नीतियों को कार्यवाही में बदलने के लिए जिम्मेदार है। इसमें राजनीतिक अधिकारियों सहित सरकार के सभी उपकरण शामिल हैं।	नौकरशाही नियुक्त अधिकारियों के आधार पर नागरिक सेवाओं को इंगित करती है, जिन्हें सामान्य शैक्षणिक उपलब्धि के आधार पर चुना जाता है। इसलिए वे प्रकृति में सामान्यज्ञ होते हैं और इसकी विशेषताओं में पदानुक्रम, नियमों की एक प्रणाली, निष्पक्षता और तटस्थता शामिल हैं।

सार्वजनिक प्रशासन को निजी प्रशासन से अलग करने वाले सिद्धांत

- प्रशासन सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थागत व्यवस्था में होता है,जबकि लोक प्रशासन का संबंध सरकारी प्रशासन से है तो वहाँ निजी प्रशासन का संबंध निजी व्यावसायिक संगठनों के प्रशासन से है।

सार्वजनिक प्रशासन को निजी प्रशासन से अलग करने वाले चार सिद्धांत	
एकरूपता का सिद्धांत	• सार्वजनिक प्रशासन **सामान्य और समान कानूनों और विनियमों के तहत संचालित होता है**, जबकि निजी प्रशासन व्यक्तिगत व्यवसायों के लिए विशिष्ट विभिन्न नियमों और विनियमों के अधीन होता है। • **उदाहरण:** सीआरपीसी कानून सभी पर समान रूप से लागू होते हैं।
बाह्य वित्तीय नियंत्रण का सिद्धांत	• लोक प्रशासन विधायी निकायों द्वारा बाहरी वित्तीय नियंत्रण के अधीन है, जो सरकारी राजस्व और व्यय की देखरेख करते हैं। इसके विपरीत, निजी प्रशासन का संगठन के भीतर आंतरिक वित्तीय नियंत्रण होता है। • **उदाहरण:** हमारे पास वित्त का नियमित ऑडिट करने के लिए CAG के रूप में एक संवैधानिक निकाय है।
मंत्रिस्तरीय उत्तरदायित्व का सिद्धांत	• लोक प्रशासन अपने राजनीतिक वरिष्ठों और अंततः उन लोगों के प्रति जवाबदेह है, जिनकी वह सेवा करता है। निजी प्रशासन अपने शेयरधारकों या मालिकों के प्रति जवाबदेह है। • **उदाहरण:** हमारी संसद में प्रश्नकाल ऐसी जिम्मेदारी सुनिश्चित करता है।

सीमांत प्रतिफल का सिद्धांत	• निजी प्रशासन का लक्ष्य लाभप्रदता है तो वहीं सार्वजनिक प्रशासन के उद्देश्यों को केवल मौद्रिक संदर्भ में नहीं मापा जा सकता है। लोक प्रशासन जनता की भलाई और वित्तीय लाभ से परे सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करता है। • **उदाहरण:** रेलवे और एयरलाइंस के किरायों की तुलना करें, इससे लाभप्रदता में अंतर पता चलता है।

सार्वजनिक सेवा मूल्य

यह लोक सेवकों के आचरण और व्यवहार को आकार देता है। ये सिद्धांत सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वालों की मूल मान्यताओं और जिम्मेदारियों को दर्शाते हैं।

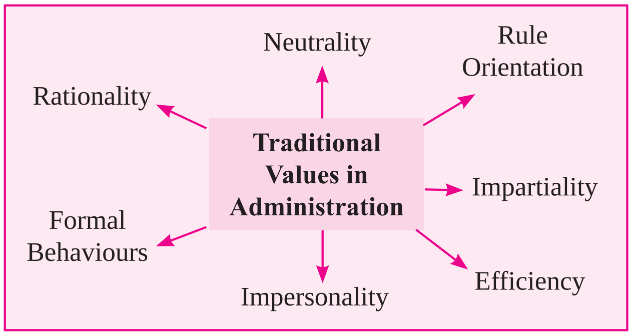

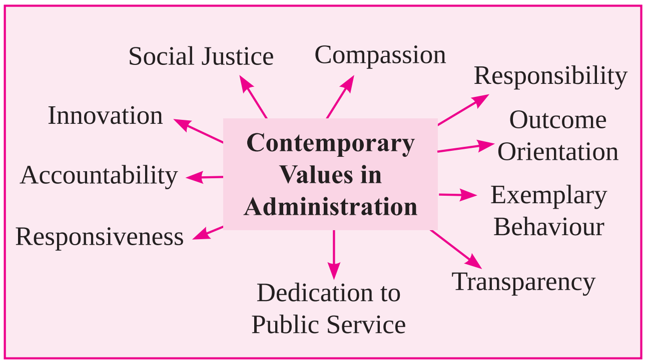

लोक प्रशासन के कुछ प्रमुख मूल्य निम्नलिखित हैं:

- **सार्वजनिक हित के प्रति प्रतिबद्धता:** लोक सेवकों को जनता की सेवा करने और उनकी भलाई में वृद्धि करने हेतु समर्पित होना चाहिए। वे व्यक्तिगत या विशेष हितों से अधिक उन लोगों की जरूरतों और कल्याण को प्राथमिकता देते हैं, जिनकी वे सेवा करते हैं।
- **सत्यनिष्ठा को कायम रखना:** लोक सेवकों से सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण के उच्चतम मानकों को बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। उन्हें हितों के टकराव, भ्रष्टाचार और अनैतिक व्यवहार से बचते हुए ईमानदारी, पारदर्शिता और जिम्मेदारी से काम करने की जरूरत है।

- **निष्पक्षता और न्यायसंगति:** लोक सेवकों को सभी व्यक्तियों और समूहों के साथ निष्पक्ष और बिना पक्षपात के व्यवहार करना चाहिए। उन्हें वस्तुनिष्ठ मानदंडों के आधार पर निर्णय लेना चाहिए, सेवाओं और अवसरों तक समान पहुंच सुनिश्चित करनी चाहिए और पक्षपात या भेदभाव से बचना चाहिए।
- **उत्तरदायित्व और जिम्मेदारी:** लोक सेवक अपने कार्यों और निर्णयों के लिए जवाबदेह हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने काम के परिणामों की जिम्मेदारी लें, अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पारदर्शी रहें, और जनता और प्रासंगिक हितधारकों के सामने अपनी पसंद को उचित ठहराएँ।
- **कानून और संविधान का सम्मान:** लोक सेवक अपने काम को नियंत्रित करने वाले कानूनों, विनियमों और संवैधानिक प्रावधानों का पालन करते हैं। वे व्यक्तिगत अधिकारों का सम्मान और सुरक्षा करते हैं, कानून के शासन को कायम रखते हैं और उचित प्रक्रिया सुनिश्चित करते हैं।
- **प्रभावी और कुशल सेवा प्रदायगी:** लोक सेवक जनता को सेवाएँ प्रदान करने में प्रभावशीलता और दक्षता के लिए प्रयास करते हैं। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे संसाधनों का जिम्मेदारीपूर्वक प्रबंधन करें, लागत-प्रभावशीलता की तलाश करें और सेवा वितरण में निरंतर सुधार के लिए प्रयास करें।
- **व्यावसायिकता और योग्यता:** लोक सेवकों को विशेषज्ञता के अपने क्षेत्रों में उच्च स्तर की व्यावसायिकता और योग्यता बनाए रखने की आवश्यकता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ज्ञान और कौशल को लगातार अद्यतन करें, पेशेवर मानकों का पालन करें और अपने प्रदर्शन में सुधार करने का प्रयास करें।
- **पारदर्शिता और खुलापन:** लोक सेवकों को जनता को सुलभ और समय पर जानकारी प्रदान करके पारदर्शिता को बढ़ावा देना चाहिए। उन्हें खुली बातचीत में शामिल होने, सार्वजनिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में जवाबदेही सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है।
- **नैतिक नेतृत्व:** नेतृत्वकर्ता की भूमिका में लोक प्रशासक नैतिक भूमिका मॉडल के रूप में कार्य करते हैं। उनसे नैतिक व्यवहार प्रदर्शित करने, अपने संगठनों के भीतर एक नैतिक संस्कृति को बढ़ावा देने और नैतिक चिंताओं की रिपोर्टिंग और समाधान के लिए तंत्र स्थापित करने की अपेक्षा की जाती है।
- **विविधता और समावेशन का सम्मान:** लोक सेवक उन व्यक्तियों और समुदायों की विविधता को महत्व देते हैं और उनका सम्मान करते हैं, जिनकी वे सेवा करते हैं। वे समावेशिता को अपनाते हैं, समान व्यवहार सुनिश्चित करते हैं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में विविधता को बढ़ावा देते हैं।

उदाहरण: एक उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी एक प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजना की देखरेख के लिए जिम्मेदार है। वह निम्नलिखित तरीकों से विभिन्न सार्वजनिक सेवा मूल्यों का पालन कर सकता है:

मूल्य	उदाहरण
सत्यनिष्ठा को कायम रखना	सरकारी अधिकारी सुशासन और नैतिकता के सिद्धांतों के आधार पर निर्णय ले सकते हैं। वह ईमानदारी के उच्चतम मानकों को बनाए रखते हुए हितों के टकराव और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह से बचते हैं।
निष्पक्षता एवं न्यायसंगति	अधिकारी विभिन्न हितधारकों से इनपुट पर विचार कर सकता है और एक प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजना से संबंधित निर्णय लेने में न्यायसंगत उपचार और न्याय सुनिश्चित कर सकता है।
उत्तरदायित्व और जिम्मेदारी	अधिकारी जनता को नियमित प्रगति अपडेट, वित्तीय रिपोर्ट और परियोजना मूल्यांकन प्रदान करता है। परियोजना के परिणामों का स्वामित्व लेता है और चुनौतियों या असफलताओं का तुरंत समाधान करता है।
पारदर्शिता और खुलापन	अधिकारी जनता के साथ परियोजना के बारे में प्रासंगिक जानकारी और डेटा साझा करके, एक खुली और समावेशी निर्णय लेने की प्रक्रिया को बढ़ावा देकर पारदर्शिता सुनिश्चित करता है।
नैतिक नेतृत्व	अधिकारी अपनी टीम के लिए एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करते हैं, ईमानदारी, व्यावसायिकता और नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं, और व्यक्तिगत लाभ या राजनीतिक उद्देश्यों पर जनता की भलाई को प्राथमिकता देते हैं।

सार्वजनिक प्रशासन में नैतिकता की आवश्यकता

लोक प्रशासन में नैतिकता निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है:

- **कुशल संसाधन उपयोग:** नैतिकता यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग भ्रष्टाचार या दुरुपयोग के बिना कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से किया जाए। नैतिक प्रथाएँ सार्वजनिक प्रशासकों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाती हैं, पारदर्शिता और जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन को बढ़ावा देती हैं।

- **सामाजिक न्याय:** संविधान और राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों में उल्लिखित सामाजिक न्याय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए नैतिक लोक प्रशासन आवश्यक है। यह समाज के कमजोर वर्गों के लिए समानता और समता सुनिश्चित करने के साथ ही समावेशिता और निष्पक्षता को बढ़ावा देता है।

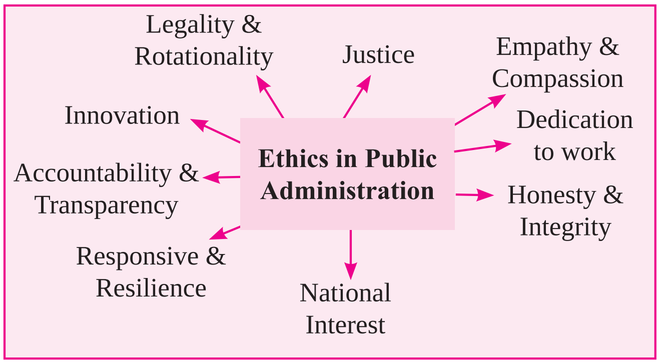

- **दुविधाओं का समाधान:** जैसे-जैसे सार्वजनिक प्रशासन अधिक जटिल होता जाता है, नैतिक सिद्धांत प्रशासकों को बार-बार आने वाली दुविधाओं को हल करने में मार्गदर्शन करते हैं। नैतिक निर्णय-प्रक्रिया जनता की भलाई को प्राथमिकता देती है, संघर्षों का समाधान करती है और सामाजिक मूल्यों को कायम रखती है।
- **निर्णयन:** लोक प्रशासन में नैतिक निर्णय लेने में निष्पक्षता, तटस्थता और न्याय शामिल होता है। इसमें व्यक्तिगत लाभ पर सामूहिक हितों को प्राथमिकता देना शामिल है। ऐसे निर्णयों से समाज को सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।
- **सार्वजनिक विश्वास:** नैतिक लोक प्रशासन लोगों के बीच विश्वास और भरोसे को बढ़ावा देता है। जब प्रशासक सक्षमता, निष्पक्षता, ईमानदारी और निष्ठा प्रदर्शित करते हैं, तो इससे सार्वजनिक सेवाओं की प्रभावशीलता में जनता का विश्वास बढ़ता है।
- **सामाजिक पूंजी:** नैतिक लोक प्रशासन विश्वसनीयता स्थापित करता है और नागरिक समाज के साथ सहयोग को बढ़ावा देता है, जिससे देश के भीतर सामाजिक पूंजी का विकास होता है। यह सहयोग प्रशासन और नागरिकों के बीच संबंधों को मजबूत करता है, नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन को सुविधाजनक बनाता है।
- **सर्वोदय/अंत्योदय:** नैतिक लोक प्रशासन समाज के गरीब और कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति और करुणा को अपनाता है। यह सामाजिक समस्याओं की बेहतर समझ को बढ़ावा देता है और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के उत्थान के लिए समाधान खोजने में सहायता करता है।
  - एक उल्लेखनीय उदाहरण आईएएस अधिकारी एस. शंकरन द्वारा बंधुआ श्रम उन्मूलन अधिनियम का कार्यान्वयन है, जो सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।
- **भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद को कम करना:** नैतिकता सार्वजनिक प्रशासन में भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद से निपटने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। नैतिक मानक निष्पक्षता, अखंडता और योग्यता को बढ़ावा देते हैं, पक्षपात, रिश्वतखोरी और सार्वजनिक विश्वास को कमजोर करने वाली अनैतिक प्रथाओं के जोखिम को कम करते हैं।
- **कानून के शासन को कायम रखना:** लोक प्रशासन में नैतिकता कानून के शासन का पालन सुनिश्चित करती है। प्रशासक कानूनी ढांचे, विनियमों और संवैधानिक प्रावधानों का पालन करने, जवाबदेही को बढ़ावा देने और प्रशासनिक प्रणाली की अखंडता को बनाए रखने के लिए नैतिक सिद्धांतों से बंधे होते हैं।
- **संघर्ष समाधान और आम सहमति निर्माण:** नैतिक सिद्धांत सार्वजनिक प्रशासकों को संवाद, आम सहमति निर्माण और सामान्य भलाई को प्राथमिकता देने के माध्यम से संघर्षों को हल करने में मार्गदर्शन करते हैं, जिसका लक्ष्य ऐसे न्यायसंगत समाधानों का लक्ष्य रखना है जो समग्र रूप से समाज को लाभ पहुंचाते हैं।
- **सतत विकास:** नैतिक लोक प्रशासन दीर्घकालिक पर्यावरणीय, सामाजिक और आर्थिक प्रभावों पर विचार करके, भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधन संरक्षण, सामाजिक कल्याण और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करके सतत विकास को प्राथमिकता देता है।

भारतीय लोक प्रशासन में नैतिकता की स्थिति

- **भारतीय प्रशासन में नैतिकता विकसित करने के प्रावधानों में शामिल हैं:**
  - **केंद्रीय सेवा आचरण नियम, 1964:** ये नियम सिविल सेवकों के लिए क्या करें और क्या न करें की रूपरेखा तैयार करते हैं, उनके काम में पूर्ण सत्यनिष्ठा, कर्तव्य के प्रति समर्पण और राजनीतिक तटस्थता के महत्व पर जोर देते हैं।
  - **अखिल भारतीय सेवा आचरण नियम, 1968:** ये नियम भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), भारतीय पुलिस सेवा (IPS), और भारतीय वन सेवा (IFoS) के अधिकारियों पर लागू होते हैं। वे उच्च नैतिक मानकों, अखंडता, ईमानदारी, राजनीतिक तटस्थता, योग्यता-आधारित निर्णय लेने, निष्पक्षता, निष्पक्षता, जवाबदेही और पारदर्शिता की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।
    - **आचार संहिता, 1997:** भारत में लोक सेवकों के लिए आचार संहिता लागू करने का यह पहला प्रयास

था, जिसका उद्देश्य बेहतर प्रशासन को बढ़ावा देना था। हालाँकि, इसे विशेष रूप से लोक सेवकों के लिए जारी नहीं किया गया था, जिससे इसका प्रभाव सीमित हो गया।

- ये प्रावधान लोक सेवकों के लिए दिशानिर्देश के रूप में काम करते हैं, जो नैतिक आचरण, व्यावसायिकता और उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों में सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता और जवाबदेही के सिद्धांतों के पालन के महत्व पर जोर देते हैं।
- भारतीय प्रशासन की नैतिक नींव को मजबूत करने के लिए इन नियमों का प्रभावी कार्यान्वयन और प्रवर्तन सुनिश्चित करना आवश्यक है।

भारतीय प्रशासन में नैतिकता की समस्याएँ

भारतीय प्रशासन में नैतिकता से जुड़ी समस्याओं में शामिल हैं:

- **सीमित नैतिक साक्षरता:** कई प्रशासकों में नैतिक मुद्दों की व्यापक समझ का अभाव है, वे केवल नियम पुस्तिकाओं पर निर्भर रहते हैं और निर्णय लेने को प्रभावित करने वाले व्यापक सांस्कृतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय कारकों की उपेक्षा करते हैं।
- **गोपनीयता:** सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के अस्तित्व के बावजूद, भारतीय प्रशासन के भीतर अत्यधिक गोपनीयता की संस्कृति बनी हुई है, अक्सर आरटीआई अधिनियम के प्रावधानों के तहत भी जानकारी तक पहुंच से इनकार किया जाता है।
- **सामाजिक दबाव:** प्रशासकों को अपने परिवारों, रिश्तेदारों, साथियों और अन्य लोगों से अनुचित मांगों का सामना करना पड़ता है, जो नैतिक निर्णय लेने से समझौता कर सकते हैं।
- **राजनीतिक प्रभाव:** नौकरशाह अपने राजनीतिक वरिष्ठों के प्रति जवाबदेह होते हैं, जिसके कारण कभी-कभी वे ऐसे निर्णय लेते हैं जो आर्थिक अंतःकरण पर राजनीतिक अत्यावश्यकताओं और अल्पकालिक लक्ष्यों को प्राथमिकता देते हैं।
- **शिकायत निवारण तंत्र का अभाव:** प्रशासनिक कमियों के संबंध में संगठित जनमत की कमी देखी जाती है, जिसके कारण जनता के बीच उनके अधिकारों के संबंध और अधिकारियों के खिलाफ शिकायत दर्ज करने के तंत्र के बारे में जागरूकता की कमी है।
- **सूचना का सार्वजानिक हो जाना अथवा लीक हो जाना:** अधिकारी कभी-कभी गोपनीयता बनाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप लंबित कर वृद्धि या कर्मचारियों की लागत में कटौती के उपायों जैसी संवेदनशील जानकारी जनता के बीच लीक हो जाती है।
- **अपर्याप्त व्हिसलब्लोअर संरक्षण:** यद्यपि व्हिसलब्लोअर संरक्षण अधिनियम, 2014 लागू है तथापि व्हिसिलब्लोअर को अक्सर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, अतः शिकायतकर्ताओं के खिलाफ जवाबी कार्यवाही करने वाले लोक सेवकों के खिलाफ मजबूत दंड प्रावधान की आवश्यकता है।
- **प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की कमी:** शिक्षा और व्यावसायिक विकास में नैतिकता पर अपर्याप्त जोर सार्वजनिक प्रशासकों के बीच नैतिक जागरूकता, निर्णय लेने के कौशल और पेशेवर आचरण को बाधित करता है, जो व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।
- **लापरवाही:** कुछ सार्वजनिक अधिकारी या तो अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारियों को पूरा करने में विफल रहते हैं या उन्हें लापरवाही से निभाते हैं, जिससे राज्य और समुदाय को नुकसान होता है। यह लापरवाही अक्सर अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के प्रति रुचि की कमी से उत्पन्न होती है।
- **भ्रष्टाचार:** अनिवार्य कार्य को करने हेतु भी रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार आम साधन के रूप में प्रचलित हो गए हैं, जिससे सरकारी विभागों के भीतर अनैतिक प्रथाओं की व्यापक संस्कृति बन गई है।
  - **उदाहरण के लिए,** भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक, 2022 में भारत को 85वां स्थान दिया गया है।
- **कमजोर प्रवर्तन तंत्र:** सार्वजनिक प्रशासन में नैतिक आचरण का कमजोर प्रवर्तन जवाबदेही को कमजोर करता है और मौजूदा नियमों के बावजूद दण्ड से मुक्ति की संस्कृति को बढ़ावा देता है। अनैतिक व्यवहार को रोकने के लिए कड़ी निगरानी और अनुशासनात्मक कार्रवाइयां महत्वपूर्ण हैं।
- **सार्वजनिक भागीदारी का अभाव:** निर्णय लेने और नीति निर्माण में सीमित सार्वजनिक भागीदारी नैतिक शासन में बाधा डालती है। व्यापक नागरिक सहभागिता सार्वजनिक प्रशासन में समावेशिता और पारदर्शिता को बढ़ावा देती है।

भारतीय प्रशासन में नैतिक चुनौतियाँ

भारतीय प्रशासन में नैतिक मुद्दे प्रचलित हैं और सरकार के कामकाज को प्रभावित करते हैं। इन मुद्दों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- **विवेकाधीन शक्तियों का दुरुपयोग:** विवेकाधीन शक्तियों का उपयोग अक्सर व्यक्तिगत लाभ के लिए किया जाता है, जिससे पक्षपात होता है और सार्वजनिक कल्याण की उपेक्षा होती है।
- **नियमों और विनियमों को अनुचित महत्व:** नियमों और विनियमों के अनुपालन पर अत्यधिक ध्यान देने से लालफीताशाही पैदा होती है जिससे न्याय और निष्पक्षता में

बाधा आती है।उचित कर्तव्य की जगह नौकरी की जबाबदेही ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।

- **खराब पुरस्कार और सजा तंत्र:** पक्षपात और राजनीतिक संबंध पुरस्कार और दंड निर्धारित करते हैं तथा योग्यता-आधारित प्रशासन को अप्रभावी बनाते हैं।
- **संचार की कमी:** भारतीय प्रशासन बंद संचार और सीमित सार्वजनिक जुड़ाव से ग्रस्त है। कठोर पदानुक्रमित संरचनाएँ प्रभावी संचार को और भी बाधित करती हैं।
- **उदासीनता की प्रवृत्ति:** प्रशासक अक्सर कार्यों को एक विभाग से दूसरे विभाग में स्थानांतरित करके चुनौतीपूर्ण स्थितियों से निपटने से बचते हैं, जिससे सक्रिय समस्या-समाधान की कमी हो जाती है।
- **संरक्षण:** राजनीतिक संरक्षण प्रशासकों की नियुक्ति को प्रभावित करता है, उच्च स्तर पर ऐसा विशेष रूप से देखा जाता है। नियामक निकायों में सेवानिवृत्ति के बाद के कार्य अक्सर योग्यता के बजाय राजनीतिक संबंधों पर आधारित होते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** नियामक और अन्य निकायों में वरिष्ठ अधिकारियों को सेवानिवृत्ति के बाद का कार्यभार बड़े पैमाने पर राजनीतिक संरक्षण के आधार पर दिया जाता है।
- **अत्यधिक सुरक्षा:** संविधान के अनुच्छेद 311 द्वारा प्रदान किए गए अत्यधिक सुरक्षा प्रावधान जवाबदेही को कम करते हैं और अनुशासनात्मक उपायों के प्रभावी प्रवर्तन में बाधा डालते हैं।
- **गलत कल्पना वाले लक्ष्य:** कुछ लक्ष्यों को प्राप्त करने से जुड़े प्रोत्साहन अनजाने में नकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे प्रशासन के नैतिक ढांचे से समझौता हो सकता है।
  - **उदाहरण के लिए,** ओडिशा में उत्कल ग्रामीण बैंक के प्रबंधक ने जनधन खाते से पैसे निकालने के लिए 100 वर्षीय महिला के भौतिक सत्यापन पर जोर दिया।
- **भाई-भतीजावाद:** भाई- भतीजावाद की प्रथा से जहां व्यक्तियों को सार्वजनिक पदों पर नियुक्त करने में व्यक्तिगत संबंध योग्यता पर हावी हो जाते हैं और ये सार्वजनिक सेवा की गुणवत्ता और निष्पक्षता को नष्ट कर देते हैं।
- **करुणा की कमी:** भारतीय प्रशासन में निर्णय लेने की प्रक्रिया अक्सर व्यक्तियों की भावनाओं और सुविधा पर विचार करने के बजाय नियमों और प्रक्रियाओं के कठोर पालन को प्राथमिकता देती है, जिसके परिणामस्वरूप सहानुभूति की कमी देखी जाती है और कभी कभी न्याय भी बेहतर तरीके से नहीं हो पाता है।
- **परिणामों को अधिक महत्व देना:** नैतिक प्रक्रियाओं के बजाय अंतिम परिणामों को अत्यधिक महत्व देने से सिद्धांतों से समझौता हो सकता है और अनैतिक प्रथाओं में संलग्न हो सकता है।
  - **उदाहरण के लिए,** किसी दवा कंपनी द्वारा विकसित दवा को प्रमाणित करना, भले ही उसने अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल किया हो।
- **पैरवी:** दबाव समूह महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव डालते हैं, जिससे उनके हितों की पूर्ति होती है, भले ही वे दीर्घकालिक रूप से लाभकारी न हों। राजनीतिक दबाव अक्सर प्रशासकों को उनकी माँगें मानने के लिए मजबूर करता है।
  - **उदाहरण के लिए,** विभिन्न राजनीतिक दलों ने किसानों के लिए ऋण माफी की मांग की है।
- **हितों का टकराव:** प्रशासनिक प्रक्रियाओं की अखंडता की रक्षा करने और सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा व्यक्तिगत या वित्तीय हितों को निर्णय लेने से समझौता करने से रोकने के लिए हितों के टकराव की पहचान करने और प्रबंधन करने के लिए मजबूत तंत्र आवश्यक हैं।
- **लिंग पूर्वाग्रह और भेदभाव:** नैतिक लोक प्रशासन को लिंग-उत्तरदायी नीतियों को बढ़ावा देने और सभी लिंगों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने, समानता और समावेशिता के सिद्धांतों को बढ़ावा देकर लिंग पूर्वाग्रहों और भेदभावपूर्ण प्रथाओं को संबोधित करने की आवश्यकता है।

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (Administrative Reforms Commission) की टिप्पणियाँ

द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) ने भारतीय प्रशासन में नैतिक मुद्दों के संबंध में कई टिप्पणियाँ की हैं, जिनमें शामिल हैं

- भ्रष्टाचार एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। नौकरशाही के शीर्ष स्तर पर ऐसा विशेष रूप से देखने को मिलता है।
- लोक सेवक नागरिकों की शिकायतों को दूर करने में प्रतिबद्धता की कमी दिखाते हैं।
- लालफीताशाही और जटिल प्रक्रियाएँ नागरिकों के लिए कठिनाइयों का कारण बनती हैं।
- दुर्लभ जवाबदेही जहाँ उच्च अधिकारियों से की गई शिकायतों को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है।
- कई लोक पदाधिकारियों का रवैया अहंकार और उदासीनता युक्त होता है।
- अधिकारियों के बार-बार स्थानांतरण से उनकी प्रभावशीलता और जवाबदेही कम हो जाती है।
- राजनेताओं और नौकरशाहों के बीच सांठगांठ का अस्तित्व।

लोक सेवकों के अनैतिक व्यवहार के कारण

लोक सेवकों के अनैतिक व्यवहार के कारणों को विभिन्न कारकों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है:

- **ऐतिहासिक संदर्भ:** औपनिवेशिक विरासत और विरासत में मिली नौकरशाही संरचना नैतिक शासन के बजाय नियंत्रण और शोषण पर केंद्रित थी।
- **सामाजिक संदर्भ:** भारतीय समाज में भ्रष्टाचार सामान्य हो गया है, इसके आसपास नकारात्मक धारणाएं कम हो गई हैं।
  - **भारत भ्रष्टाचार सर्वेक्षण 2019 के अनुसार,** 51% उत्तरदाताओं ने रिश्वत देने की बात स्वीकार की।
- **कानूनी-न्यायिक संदर्भ:** पुराने कानून और सिविल सेवकों के लिए नैतिक चिंताओं के संबंध में विशिष्ट दिशानिर्देशों की कमी, जैसे कि 1861 का भारतीय पुलिस अधिनियम।
- **राजनीतिक संदर्भ:** राजनीति में अपराधियों की घुसपैठ ने अनैतिक लोक सेवकों के साथ गठजोड़ पैदा कर दिया है, जिससे वे नैतिक माहौल में भी अनैतिकता की ओर अग्रसर है।
  - **लोकसभा चुनावों में,** 159 संसद सदस्यों के खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले होने की सूचना मिली थी, जिनमें बलात्कार, हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध के आरोप शामिल थे।
- **संगठनात्मक पहलू:** नौकरशाही का व्यापक विस्तार राजनीतिक कार्यपालिका के लिए इसे प्रभावी ढंग से प्रबंधित और नियंत्रित करना चुनौतीपूर्ण बना देता है।
- **अत्यधिक सुरक्षा:** भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम और संविधान के अनुच्छेद 311 जैसे अधिनियमों में सुरक्षा के लिए प्रावधानों का अक्सर भ्रष्ट और अनैतिक सिविल सेवकों द्वारा दुरुपयोग किया जाता है।

सरकारी और निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ

- नैतिक दुविधाएँ उन स्थितियों को संदर्भित करती हैं, जहाँ व्यक्तियों को दो या दो से अधिक विकल्पों के बीच चयन का सामना करना पड़ता है, जिनमें से कोई भी विकल्प व्याप्त समस्या को पूरी तरह से हल नहीं करता है।
- ये दुविधाएँ एक मानसिक संघर्ष पैदा करती हैं क्योंकि उनमें नैतिक अनिवार्यताएँ शामिल होती हैं, जहाँ एक का पालन करने से दूसरे का उल्लंघन होता है। ऐसी स्थितियों में, व्यक्तियों को कठिन निर्णयों का सामना करना पड़ता है, जिन पर सावधानीपूर्वक विचार करने और नैतिक सिद्धांतों पर विचार करने की आवश्यकता होती है।
- सरकारी और निजी दोनों संस्थानों में नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है।

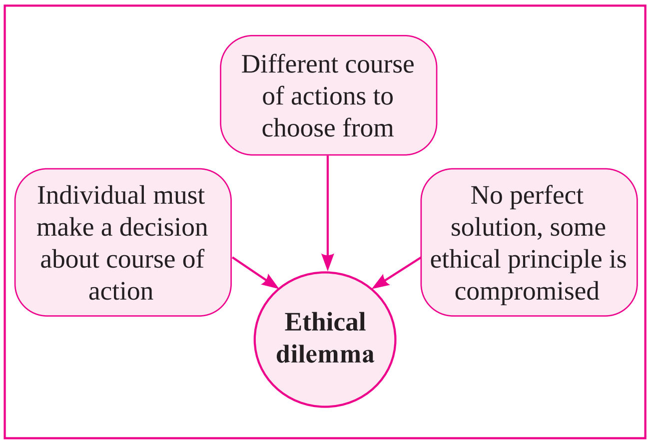

चित्र: किसी स्थिति को नैतिक दुविधा बनाने के लिए तीन आवश्यक शर्तें

- इन स्थितियों में सामना की जाने वाली कुछ नैतिक दुविधाओं के कुछ उदाहरण यहां दिए गए हैं:

सरकारी और निजी संस्थानों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएँ	
सरकारी संस्थान	• राजनीतिक कार्यालय धारकों और सार्वजनिक हित के प्रति वफादारी को संतुलित करना: सिविल सेवकों को तब दुविधा का सामना करना पड़ सकता है, जब राजनीतिक नेताओं के प्रति उनकी वफादारी जनता के सर्वोत्तम हितों की सेवा करने के उनके दायित्व से टकराती है। • **गोपनीयता और पारदर्शिता के मध्य संतुलन बनाए रखना:** सरकारी अधिकारी अक्सर संवेदनशील जानकारी संभालते हैं, जिन्हें गोपनीय रखा जाना चाहिए। हालाँकि, जब गोपनीयता की आवश्यकता के कारण पारदर्शिता और जवाबदेही से समझौता किया जाता है तो उन्हें दुविधा का सामना करना पड़ सकता है। • **व्यक्तिगत नैतिकता बनाम संगठनात्मक मांगों को कायम रखना:** सिविल सेवकों को ऐसी स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, जहां संगठनात्मक मांगें या नीतियां उनकी व्यक्तिगत नैतिक मान्यताओं के साथ संघर्ष करती हैं, जिससे उन्हें कठिन विकल्प चुनने की आवश्यकता होती है। • **व्यक्तिगत लागत नैतिक दुविधाएँ (Personal Cost Ethical Dilemmas):** यह तब घटित होती हैं जब नैतिक आचरण का अनुपालन करने पर निर्णय लेने वाले को एक महत्वपूर्ण व्यक्तिगत कीमत चुकानी पड़ती है, जैसे कि उनकी स्थिति को खतरे में डालना, अवसरों को खोना, या रिश्तों में तनाव पैदा करना।

	• **'सही बनाम गलत' नैतिक दुविधाः** यह वास्तविक नैतिक मूल्यों के परस्पर विरोधी समुच्चयों से उत्पन्न होती हैं, जहाँ कोई स्पष्ट सही या गलत विकल्प नहीं होता है। उदाहरणों में सार्वजनिक सेवा में पारदर्शिता और गोपनीयता के बीच संघर्ष या कानून लागू करते समय न्याय और दया के बीच चयन शामिल है। • **संयुक्त नैतिक दुविधाएंः** इसमें वो स्थितियाँ शामिल हैं, जहाँ एक लोक सेवक को सही बनाम सही और व्यक्तिगत लागत नैतिक दुविधाओं के संयोजन का सामना करना पड़ता है, जो एक जटिल चुनौती पेश करता है, जिसके लिए विरोधाभासी मूल्यों और व्यक्तिगत परिणामों को संतुलित करने की आवश्यकता होती है।
निजी संस्थान	• लाभ अधिकतमकरण और सामाजिक उत्तरदायित्व को संतुलित करनाः निजी संगठनों को तब दुविधाओं का सामना करना पड़ सकता है जब लाभ की उनकी खोज नैतिक रूप से कार्य करने और उनके कार्यों के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार करने की उनकी जिम्मेदारी से टकराती है। • **व्हिसलब्लोअर्स की रक्षा बनाम संगठनात्मक अखंडता बनाए रखनाः** निजी संस्थानों में कर्मचारियों को संगठन के भीतर अनैतिक प्रथाओं का पता चलने पर दुविधा का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें यह तय करना होगा कि गलत काम की रिपोर्ट करनी है या नहीं, जिससे उन्हें संभावित रूप से प्रतिशोध का सामना करना पड़ सकता है या संगठन की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँच सकता है। • **ग्राहक संतुष्टि और नैतिक मानकों को संतुलित करनाः** निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को दुविधा का सामना करना पड़ सकता है, जब उन्हें नैतिक विचारों पर ग्राहक संतुष्टि को प्राथमिकता देने के दबाव का सामना करना पड़ता है, जैसे कि भ्रामक जानकारी प्रदान करना या उत्पाद की गुणवत्ता से समझौता करना।

- सरकारी और निजी दोनों संस्थानों में, परस्पर विरोधी मूल्यों, दायित्वों और जिम्मेदारियों के कारण नैतिक दुविधाएँ उत्पन्न होती हैं।
- इन दुविधाओं को हल करने के लिए नैतिक सिद्धांतों, कानूनी दायित्वों और कार्रवाई के विभिन्न तरीकों के संभावित परिणामों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

लोक सेवकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएँ

- लोक सेवकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएँ अक्सर जटिल होती हैं और उनके पेशेवर दायित्वों और सार्वजनिक हित पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होती है।

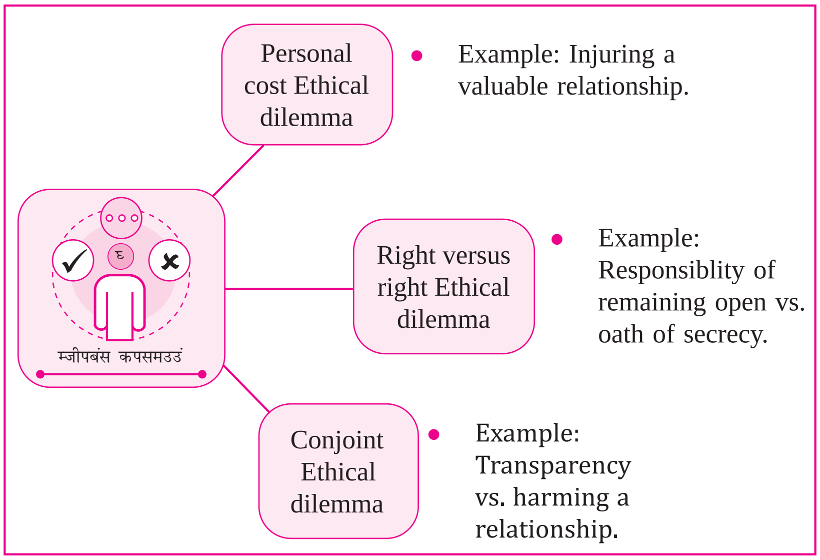

चित्रः लोक सेवकों द्वारा सामना की जाने वाली नैतिक दुविधाएँ

- **लोक सेवकों द्वारा सामना की जाने वाली कुछ सामान्य नैतिक दुविधाएँ नीचे उल्लिखित हैं:**
  - **हितों का टकरावः** लोक सेवकों को निजी और सार्वजनिक हितों के बीच टकराव का सामना करना पड़ता है, जो व्यक्तिगत संबंधों, वित्तीय हितों या पिछले संगठनों से प्रभावित होते हैं, जिससे उनके निर्णय लेने में पूर्वाग्रह उत्पन्न होता है।

उदाहरण के लिए स्वर्गीय अरुण जेटली जी ने वोडाफोन मामले को नहीं संभाला था क्योंकि उनके हितों का टकराव उत्पन्न हो रहा था क्योंकि वे पहले वोडाफोन के सलाहकार थे।

- **परस्पर विरोधी मूल्य:** लोक सेवकों को दुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जब उनके व्यक्तिगत मूल्य सार्वजनिक प्रशासन के मूल्यों के साथ टकराते हैं, जिससे उनकी व्यावसायिक जिम्मेदारियों के साथ अपनी मान्यताओं को समेटने की उनकी क्षमता को चुनौती मिलती है।

  उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक निजता के अधिकार के प्रति उच्च सम्मान के कारण आधार के उपयोग के खिलाफ हो सकता है, लेकिन उसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के लिए इसका उपयोग करना पड़ सकता है।

- **वरिष्ठों द्वारा थोपी गई नैतिक दुविधाएँ:** लोक सेवकों को अक्सर नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जब उन्हें अपने पेशेवर नैतिकता को वरिष्ठों की मांगों के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ता है, जो अधिकार के प्रति आज्ञाकारिता के साथ नैतिक अखंडता को संतुलित करने की चुनौती को उजागर करता है।

  उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक ऋण माफी के खिलाफ हो सकता है लेकिन वरिष्ठों के आदेशों के कारण उसे आदेश का पालन करना होगा।

- **आचार संहिता का अनुपालन:** लोक सेवक नैतिक दुविधाओं से जूझते हैं, जब उनकी व्यक्तिगत प्रेरणा या पुरस्कारों की स्वीकृति आचार संहिता के निर्धारित दिशानिर्देशों से टकराती है, जिससे वे बंधे होते हैं।

  उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक की राय हो सकती है कि छोटे उपहार उसके कर्तव्य को पूरा करने के लिए प्रेरणा के रूप में कार्य करते हैं लेकिन यह आचार संहिता के विरुद्ध है।

- **व्यावसायिक प्रतिबद्धता बनाम लोक कल्याण:** लोक सेवकों को जनता की तत्काल जरूरतों और कल्याण के साथ नियमों और प्रक्रियाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को संतुलित करते समय दुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए निष्पक्षता, न्याय और जवाबदेही पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होती है।

  उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक दस्तावेजी सबूत की कमी के कारण एक निराश्रित व्यक्ति को सरकारी अधिकार देने से इनकार कर सकता है।

- **गोपनीयता और पारदर्शिता:** लोक सेवकों को पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करते हुए संवेदनशील जानकारी की गोपनीयता बनाए रखने के संबंध में दुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसके लिए गोपनीयता और जनता के जानकारी तक पहुंचने के अधिकार के बीच संतुलन की आवश्यकता होती है।

  उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक से परस्पर विरोधी मांगें उत्पन्न सकती हैं, जो सूचना के अधिकार के साथ-साथ आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के निम्नलिखित प्रावधानों से चिंतित है।

- **सीमित संसाधन और प्राथमिकता:** प्रतिस्पर्धी मांगों के बीच सीमित संसाधनों का आवंटन करते समय लोक सेवकों को नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उन्हें जनता की जरूरतों और कल्याण पर विचार करते समय कुछ कार्यक्रमों या सेवाओं को प्राथमिकता देने की आवश्यकता होती है।

- इन नैतिक दुविधाओं को हल करने के लिए लोक सेवकों को नैतिक तर्क में संलग्न होने, प्रासंगिक नीतियों और विनियमों से मार्गदर्शन लेने, सहकर्मियों या वरिष्ठों से परामर्श करने और सार्वजनिक हित पर अपने कार्यों के संभावित परिणामों पर विचार करने की आवश्यकता होती है।
- लोक सेवकों के लिए अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही के सिद्धांतों को बनाए रखना आवश्यक है।

शासन में नैतिक दुविधाओं का समाधान

शासन में नैतिक दुविधाओं के समाधान में कई प्रमुख पहलू शामिल हैं:

- The provisions of Indian Constitution.
- Democratic accountability of administration.
- The rule of law and the principle of legality.
- Professional integrity, impartiality and neutrality.
- Larger public good.
- Responsiveness to society.

- **सार्वजनिक हित को प्राथमिकता देना:** सार्वजनिक अधिकारियों को निर्णय लेते समय या कार्यवाही करते समय अपने स्वयं के हित पर जनता के कल्याण और भलाई को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **संपूर्ण मूल्यांकन:** सभी उपलब्ध विकल्पों और उनके संभावित परिणामों पर विचार करके नैतिक दुविधाओं का सावधानीपूर्वक

मूल्यांकन किया जाना चाहिए। व्यापक विश्लेषण उस निर्णय को चुनने में मदद करता है, जो समग्र लाभ को अधिकतम करता है और नुकसान को कम करता है।

- **निष्पक्षता:** नैतिक दुविधाओं का सामना करने पर लोक सेवकों को निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ रहना चाहिए। निष्पक्षता और न्याय सुनिश्चित करने वाले तटस्थ रेफरी के समान, पक्षपात या व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के बिना निर्णय लिए जाने चाहिए।
- **गांधी के जंतर (Talisman) का उपयोग करना:** सबसे कमजोर लोगों पर उनके प्रभाव के आधार पर कार्यों का आकलन करने के महात्मा गांधी के सिद्धांत का पालन करते हुए, समाज के सबसे कमजोर व्यक्तियों या समूहों पर निर्णय के प्रभाव पर विचार करना चाहिए।
- **अंत:करण का उपयोग करना:** किसी के अंत:करण पर विचार अवश्य करें, लेकिन यह ध्यान रखें कि यह हमेशा सटीक या विश्वसनीय नहीं हो सकता है। कार्यवाही का सही तरीका सुनिश्चित करने के लिए किसी के अंत:करण के पीछे के नैतिक तर्क का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है।
- **लक्ष्यों का एकीकरण:** व्यक्तिगत, संगठनात्मक और सामाजिक लक्ष्यों को एकीकृत करने से नैतिक दुविधाओं को कम करने में मदद मिल सकती है। ऐसा समाधान ढूंढना चाहिए जो सभी हितधारकों के व्यापक उद्देश्यों के अनुरूप हो, सद्भाव को बढ़ावा दे सकता हो और संघर्षों को कम कर सकता हो।
- **कानून के शासन और वैधता का पालन:** शासन में कानून का शासन आवश्यक है। लोक सेवकों को कानूनी ढांचे के भीतर कार्य करना चाहिए और स्थापित नियमों और विनियमों का पालन करना चाहिए। वैधता और वैधानिकता के सिद्धांतों को कायम रखने से नैतिक मानकों को बनाए रखने में मदद मिलती है और नैतिक दुविधाओं के दौरान निर्णय लेने में मार्गदर्शन मिलता है।
- **हितधारक जुड़ाव:** प्रासंगिक हितधारकों को शामिल करना और उनका इनपुट मांगना मूल्यवान दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। विशेषज्ञों, प्रभावित व्यक्तियों या समूहों और जनता के साथ परामर्श बेहतर निर्णय लेने और प्रक्रिया में विश्वास को बढ़ावा देने में योगदान दे सकता है।
- **नैतिक दिशानिर्देश और आचार संहिता:** लोक सेवकों को उनकी भूमिकाओं के लिए स्थापित नैतिक दिशानिर्देशों और आचार संहिता का पालन करना चाहिए। ये ढाँचे नैतिक व्यवहार के लिए सिद्धांत और मानक प्रदान करते हैं, सार्वजनिक अधिकारियों को दुविधाओं से निपटने और अपने कार्यों में ईमानदारी बनाए रखने में मदद करते हैं।
- **नैतिक प्रशिक्षण और शिक्षा:** नैतिक सिद्धांतों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर निरंतर प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करना लोक सेवकों को नैतिक दुविधाओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के लिए आवश्यक उपकरणों से लैस कर सकता है। नैतिक जागरूकता और क्षमता को बढ़ावा देना शासन ढांचे के भीतर नैतिक निर्णय लेने को बढ़ाता है।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता:** नैतिक दुविधाओं को हल करने में जवाबदेही और पारदर्शिता के सिद्धांतों को कायम रखना महत्वपूर्ण है। लोक सेवकों को अपने कार्यों और निर्णयों के लिए जवाबदेह होना चाहिए, और निर्णय लेने की प्रक्रिया में पारदर्शिता विश्वास बनाने और हितों के संभावित टकराव को कम करने में मदद कर सकती है।
- **मूल्यांकन और चिंतन:** पिछले निर्णयों और उनके परिणामों पर नियमित मूल्यांकन और चिंतन भविष्य की नैतिक दुविधाओं के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। सफलताओं और असफलताओं दोनों के अनुभवों से सीखकर नैतिक शासन प्रथाओं में निरंतर सुधार में योगदान दिया जा सकता है।
- **नैतिक निरीक्षण तंत्र:** नैतिक समितियों या लोकपाल कार्यालयों जैसे मजबूत निरीक्षण तंत्र को लागू करने से नैतिक चिंताओं को दूर करने, मार्गदर्शन प्रदान करने और शासन में नैतिक मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है। ये तंत्र जवाबदेही को बढ़ावा देते हैं और नैतिक दुविधाओं के समाधान का समर्थन करते हैं।

Process of Resolving Ethical dilemma

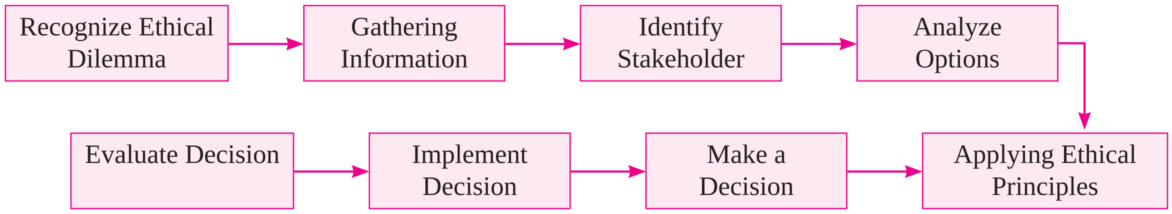

"किसी संगठन में नैतिकता सबसे ऊपर से शुरू होनी चाहिए। यह नेतृत्व का मुद्दा है और मुख्य कार्यकारी को एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए।''

–एडवर्ड हेनेसी

निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ

निजी संस्थानों में नैतिक दुविधाएँ उद्योग, कंपनी संस्कृति और विशिष्ट परिस्थितियों के आधार पर भिन्न हो सकती हैं। कुछ सामान्य नैतिक चिंताएँ और दुविधाएँ जिनका निजी संस्थानों को सामना करना पड़ सकता है, निम्नलिखित हैं:

- **लागत में कटौती और कर्मचारी स्वास्थ्य/सुरक्षा को संतुलित करना:** खर्चों को कम करने और कार्यस्थल में कर्मचारियों की भलाई और सुरक्षा को प्राथमिकता देने के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए संघर्ष करना।
- **गोपनीयता और प्रौद्योगिकी का उपयोग:** उनके गोपनीयता अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए वैध व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए कर्मचारी गतिविधियों की निगरानी की नैतिक दुविधा से निपटना।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** विश्वास, विश्वसनीयता और नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए ईमानदारी, सटीक रिपोर्टिंग और स्पष्ट संचार के सिद्धांतों को कायम रखना।
- **आतंरिक व्यापार:** निजी संस्थानों में तब एक नैतिक मुद्दा उत्पन्न होता है, जब कंपनी के अधिकारी स्टॉक ट्रेडिंग में शामिल होने के लिए कंपनी के बारे में गोपनीय जानकारी का गलत तरीके से उपयोग करके अनुचित लाभ प्राप्त करते हैं, जिससे निवेशकों को नुकसान होता है।
- **उचित कामकाजी स्थितियाँ:** प्रतिस्पर्धी वेतन और लाभों सहित उचित व्यवहार सुनिश्चित करना, और एक गैर-भेदभावपूर्ण कार्य वातावरण बनाना जो विविधता और कर्मचारी कल्याण को बढ़ावा देता है।
- **नैतिकता और मूल्य-आधारित दुविधाएं:** कार्यस्थल में नैतिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए हितों के टकराव का प्रबंधन करना और विविध दृष्टिकोण, मूल्यों और सांस्कृतिक मतभेदों को दूर करना।
  - **उदाहरण के लिए,** बीसीसीआई के नैतिक अधिकारी ने रूपा को हितों के टकराव का नोटिस दिया गुरुनाथ तमिलनाडु क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष और साथ ही इंडिया सीमेंट्स लिमिटेड (चेन्नई सुपर किंग्स की मूल कंपनी) के निदेशक हैं। उन्हें आईसीएल एवं चेन्नई सुपर किंग्स क्रिकेट लिमिटेड (सीएसकेसीएल) के साथ घनिष्ठ संबंध के लिए अप्रत्यक्ष रूप से हितों के टकराव का दोषी पाया गया है।
- **पर्यावरणीय प्रभाव:** नैतिक रूप से जिम्मेदार विकल्प चुनना जो स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, भले ही इसमें अतिरिक्त लागत लगे या व्यावसायिक प्रथाओं में महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता हो।
- **निगम प्रशासन और नेतृत्व:** संगठन के सभी स्तरों पर अखंडता और नैतिक मानकों को बनाए रखने के लिए मजबूत नैतिक निर्णय लेने की रूपरेखा स्थापित करना, जवाबदेही को बढ़ावा देना और हितों के टकराव से बचना।
- **निगम सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर):** सार्थक सामाजिक पहल में संलग्न होना, सामुदायिक विकास में योगदान देना और सामाजिक चुनौतियों का समाधान करना।
- **डेटा गोपनीयता और सुरक्षा:** ग्राहकों और कर्मचारियों की व्यक्तिगत और संवेदनशील जानकारी को अनधिकृत पहुंच, उल्लंघन या दुरुपयोग से बचाना।
- **आपूर्ति श्रृंखला नैतिकता:** संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला में नैतिक प्रथाओं को सुनिश्चित करना, जिसमें आपूर्तिकर्ताओं के साथ उचित व्यवहार, जिम्मेदार सोर्सिंग और जबरन श्रम या शोषणकारी प्रथाओं के उपयोग से बचना शामिल है।
- **वरिष्ठ के प्रति वफादारी बनाम संगठन की वफादारी:** कर्मचारियों को अक्सर तब नैतिक चिंताओं का सामना करना पड़ता है जब उन्हें अपने तत्काल वरिष्ठ की वफादारी और समग्र संगठन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के बीच संतुलन बैठाना पड़ता है।
- **लेखांकन धोखाधड़ी:** निजी संस्थानों में, अनैतिक व्यवहार तब उत्पन्न होता है जब कंपनियां निवेशकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से, बेहतर वित्तीय परिणाम पेश करने के लिए जानबूझकर राजस्व बढ़ाकर या खर्चों में हेरफेर करके लेखांकन धोखाधड़ी में संलग्न होती हैं।
- **नैतिक विपणन और विज्ञापन:** विज्ञापन और विपणन प्रथाओं में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को कायम रखना, झूठे या भ्रामक दावों से बचना और नैतिक अनुनय की सीमाओं का सम्मान करना।
  - **उदाहरण के लिए,** एक ईमानदार सेल्समैन को दोषपूर्ण चिकित्सा उत्पाद बेचना पड़ सकता है, जो रोगी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।
- **सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव:** जिम्मेदारी से, पारदर्शी तरीके से और कंपनी के मूल्यों के अनुरूप सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव का प्रयोग करना, ऐसे कार्यों से बचना जो लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को नुकसान पहुंचा सकते हैं या अनुचित प्रभाव पैदा कर सकते हैं।

चिंताओं के समाधान के तरीके

- **नैतिक ढाँचे और आचार संहिता की स्थापना:** निजी संस्थान व्यापक ढाँचे और आचार संहिता विकसित करते हैं,

जो संगठन के भीतर नैतिक निर्णय लेने और व्यवहार के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश प्रदान करते हैं।

- **नैतिकता प्रशिक्षण और शिक्षा प्रदान करना:** नैतिक जागरूकता, निर्णय लेने के कौशल और नैतिक दुविधाओं की समझ बढ़ाने के लिए कार्यक्रमों में निवेश करना।
- **नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को लागू करना:** संरचित प्रक्रियाएं स्थापित करना जो नैतिक निहितार्थों पर विचार करें, हितधारक प्रभावों का मूल्यांकन करना और निर्णयों को नैतिक सिद्धांतों के साथ संरेखित करना।
- **उपभोक्ता संरक्षण:** उपभोक्ताओं की सुरक्षा और अधिकारों को प्राथमिकता देना, भ्रामक प्रथाओं से बचना और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करना।
- **व्हिसिलब्लोअर तंत्र की स्थापना:** निजी संस्थान के कर्मचारियों के लिए अनैतिक व्यवहार की गोपनीय रूप से रिपोर्ट करने या नैतिक उल्लंघनों के बारे में चिंताएं उठाने, प्रतिशोध से सुरक्षा सुनिश्चित करने और नैतिक दुविधाओं के समाधान को सक्षम करने के लिए मार्ग तैयार करना।
- **नैतिक ऑडिट और निगरानी करना:** नैतिक जोखिमों की पहचान करने, अनुपालन सुनिश्चित करने और दुविधाओं को सक्रिय रूप से संबोधित करने के लिए प्रथाओं का नियमित रूप से मूल्यांकन करना।
- **हितधारकों को शामिल करना:** कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और समुदायों को उनके दृष्टिकोण को समझने और नैतिक मुद्दों का समाधान करने के लिए सक्रिय रूप से शामिल करना।
- **उद्योग संघों के साथ सहयोग करना:** सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने, चुनौतियों पर चर्चा करने और उद्योग-व्यापी नैतिक मानकों को विकसित करने के लिए साथियों और संघों के साथ साझेदारी करना।
- **नैतिक नेतृत्व को बढ़ावा देना:** नेताओं को नैतिक भूमिका मॉडल के रूप में रखते हुए सभी स्तरों पर सत्यनिष्ठा, जवाबदेही और नैतिक निर्णय लेने की संस्कृति को बढ़ावा देना।

नैतिक चिंताओं को दूर करने के लिए निजी संस्थानों में अपनाया गया सिद्धांत	
नैतिक सापेक्षवाद	• बहुराष्ट्रीय निगम जिस मेजबान देश में काम करते हैं, वहां के सांस्कृतिक और नैतिक मानदंडों को अपना सकते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें स्थानीय बाजार में प्रसार करने की अनुमति देता है लेकिन अगर यह सार्वभौमिक नैतिक मानकों से समझौता करता है तो इससे नैतिक चिंताएँ पैदा हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, मैकडॉनल्ड्स भारत में बीफ और पोर्क बर्गर नहीं बेचता है। • नैतिक सापेक्षवाद मेजबान देश के बाजार में अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम बनाता है लेकिन अगर इसमें बाल श्रम जैसे सार्वभौमिक नैतिक मानदंडों के विपरीत प्रथाएं शामिल हैं तो यह कंपनी की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकता है।
नैतिक सार्वभौमिकता	• निजी संस्थान नैतिक मानकों के एक समुच्चय का पालन करते हैं, जो उन सभी देशों में सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं, जहां वे सच्चाई की तरह व्यवसाय करते हैं, और ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण सेवा सार्वभौमिक नैतिकता है। यह दृष्टिकोण निरंतरता और उच्च नैतिक जिम्मेदारी पर जोर देता है लेकिन सांस्कृतिक विविधता के सम्मान में चुनौतियों का सामना कर सकता है। • नैतिक सार्वभौमिकता उच्च नैतिक जिम्मेदारी और मानवाधिकारों के सख्त पालन को कायम रखती है लेकिन कुछ मामलों में इसे सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को थोपने के रूप में माना जा सकता है।

नैतिक निर्णय लेने के लिए एक सामान्य रूपरेखा

चित्र: नैतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया

- **नैतिक दुविधा को पहचानना और परिभाषित करना:** मौजूदा नैतिक मुद्दे को स्पष्ट रूप से स्पष्ट करना और इसमें शामिल परस्पर विरोधी मूल्यों या सिद्धांतों की पहचान करना। हितधारकों और निर्णय के संभावित प्रभाव पर विचार करना।
- **प्रासंगिक जानकारी इकट्ठा करें:** नैतिक दुविधा से संबंधित सभी प्रासंगिक तथ्य, डेटा और जानकारी एकत्र करना। इसमें स्थिति पर लागू होने वाले कानूनों, विनियमों, नीतियों और पेशेवर आचार संहिता को समझना शामिल हो सकता है।

- **विकल्पों को पहचानें और उनका मूल्यांकन करना:** कार्यवाही के संभावित पाठ्यक्रमों की एक श्रृंखला तैयार करना जो नैतिक दुविधा का समाधान कर सकें। प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन उसके संभावित परिणामों, जोखिमों और लाभों के आधार करने के साथ ही यह ध्यान रखना कि यह नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों के साथ कैसे संरेखित होता है।
- **नैतिक सिद्धांतों को लागू करना:** स्थिति का विश्लेषण करने और निर्णय लेने में मार्गदर्शन करने के लिए नैतिक सिद्धांतों का उपयोग करना। सामान्य नैतिक सिद्धांतों में उपयोगितावाद (समग्र खुशी को अधिकतम करना), धर्मशास्त्रीय नैतिकता या डोन्टोलॉजी (कर्तव्यों और नैतिक नियमों के आधार पर कार्य करना), और सदाचार नैतिकता (व्यक्तिगत चरित्र और गुणों पर ध्यान केंद्रित करना) शामिल हैं।
- **हितधारकों के दृष्टिकोण पर विचार करना:** निर्णय से प्रभावित सभी हितधारकों के दृष्टिकोण और हितों को ध्यान में रखना। विभिन्न व्यक्तियों, समूहों या व्यापक समाज पर संभावित प्रभावों पर विचार करना।
- **निर्णयन और कार्यवाही:** विकल्पों के मूल्यांकन के आधार पर, कार्रवाई का वह तरीका चुनना, जो नैतिक दुविधा का सबसे अच्छा समाधान करता हो और नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों को कायम रखता हो। कार्यान्वयन के लिए एक योजना विकसित करना और निर्णय को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करना।
- **चिंतन करना और सीखना:** निर्णय को लागू करने के बाद इसके परिणामों पर विचार करना। निर्णय की प्रभावशीलता का आकलन करना और भविष्य में नैतिक निर्णय लेने के लिए सीखे गए किसी भी सबक पर विचार करना।

नौकरशाही नैतिकता और सार्वजनिक नैतिकता के बीच एक विरोधाभास

- सार्वजनिक प्रशासन और नौकरशाही प्रणालियों के क्षेत्र के लिए विशिष्ट नैतिक विचारों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को संदर्भित करती है।
- **यह मानता है कि नौकरशाही संदर्भ में,** निर्णय लेना संगठनात्मक लक्ष्यों, कानूनी ढांचे, प्रक्रियात्मक आवश्यकताओं और कुशल कामकाज की आवश्यकता जैसे कारकों से प्रभावित हो सकता है।
- नौकरशाही नैतिकता स्वीकार करती है कि सार्वजनिक प्रशासन में नैतिक और नैतिक मानदंडों के अनुप्रयोग में व्यक्तिगत अंत:करण की तुलना में अलग-अलग विचार हो सकते हैं।
- **दूसरी ओर,** सार्वजनिक नैतिकता उन नैतिक मानकों और सिद्धांतों को संदर्भित करती है, जिन्हें आम तौर पर बड़े पैमाने पर समाज द्वारा स्वीकार किया जाता है।
- **सार्वजनिक नैतिकता में वे मूल्य,** विश्वास और मानदंड शामिल हैं, जो व्यक्तियों के व्यवहार को निर्देशित करते हैं।
- **समाज के भीतर क्या सही है और क्या गलत,** उचित और निष्पक्ष है, की साझा समझ को दर्शाता है।

नौकरशाही नैतिकता और सार्वजनिक नैतिकता के बीच अंतर को निम्नलिखित तरीकों से समझा जा सकता है:

- **संदर्भ और फोकस:** नौकरशाही नैतिकता नौकरशाही प्रणाली के भीतर संगठनात्मक लक्ष्यों और दक्षता को प्राप्त करने पर केंद्रित है, जबकि सार्वजनिक नैतिकता व्यापक सामाजिक मुद्दों और आम भलाई को संबोधित करती है।
- **बाधाएं और लेन-देन (Constraints and Trade-offs):** नौकरशाही नैतिकता सीमित संसाधनों और कानूनी ढांचे जैसे विशिष्ट बाधाओं और लेन-देन के भीतर संचालित होती है, जबकि सार्वजनिक नैतिकता कारकों और मूल्यों की एक विस्तृत श्रृंखला पर विचार करती है।
- **जवाबदेही:** नौकरशाही नैतिकता संगठनात्मक जवाबदेही संरचनाओं के अधीन है, जबकि सार्वजनिक नैतिकता सामाजिक मानदंडों, कानूनी प्रणालियों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू की जाती है।
- **हितों को संतुलित करना:** नौकरशाही नैतिकता में दक्षता और कानूनी अनुपालन जैसे प्रतिस्पर्धी हितों को संतुलित करना शामिल है, जबकि सार्वजनिक नैतिकता निष्पक्षता, न्याय, समानता और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा पर जोर देती है।
- हालाँकि नौकरशाही नैतिकता और सार्वजनिक नैतिकता के अलग-अलग विचार हो सकते हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वे पूरी तरह से अलग संस्थाएँ नहीं हैं।
- **नौकरशाही प्रणालियाँ अंततः** सार्वजनिक हित की सेवा के लिए मौजूद हैं और उन्हें व्यापक सामाजिक मूल्यों और नैतिक मानदंडों के अनुरूप होना चाहिए।
- चुनौती लोक प्रशासन की अनूठी मांगों और सार्वजनिक नैतिकता को रेखांकित करने वाले नैतिक सिद्धांतों के बीच संतुलन बनाने में है।
- **इसे नैतिक ढांचे,** दिशानिर्देशों और जवाबदेही तंत्रों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है, जो नौकरशाही निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के भीतर पारदर्शिता, अखंडता और जवाबदेही को बढ़ावा देते हैं।

हितों का टकराव

- **"हितों का टकराव"** उस स्थिति को संदर्भित करता है, जहां एक लोक सेवक के व्यक्तिगत हित या दायित्व, चाहे वित्तीय, पेशेवर या व्यक्तिगत, उनके आधिकारिक कर्तव्यों या जिम्मेदारियों के साथ टकराव होते हैं।

- **यह तब होता है,** जब किसी लोक सेवक के निजी हित उनकी निर्णय लेने की प्रक्रिया को अनुचित तरीके से प्रभावित या समझौता कर सकते हैं, जिससे संभावित पूर्वाग्रह या अनुचित लाभ हो सकता है।

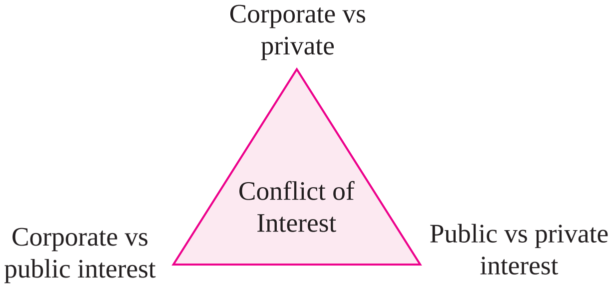

- लोक सेवकों की निर्णय लेने की प्रक्रिया में हितों का टकराव विभिन्न तरीकों से प्रकट हो सकता है। ये कुछ सामान्य अभिव्यक्तियों में शामिल हैं:
  - **वित्तीय हित:** जब किसी लोक सेवक की कोई व्यक्तिगत वित्तीय हिस्सेदारी या संस्था होती है, जो उनकी आधिकारिक क्षमता में लिए गए निर्णय से प्रभावित हो सकती है। उदाहरण के लिए, एक सार्वजनिक अधिकारी किसी कंपनी को अनुबंध देने में शामिल होता है, जिसमें उनका या उनके परिवार के सदस्यों का वित्तीय हित होता है।
  - **व्यक्तिगत संबंध:** जब व्यक्तिगत संबंध, जैसे पारिवारिक या घनिष्ठ मित्रता, किसी लोक सेवक के निर्णय या निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक लोक सेवक सरकारी संसाधनों के आवंटन में अपने मित्र के व्यावसायिक हितों का पक्ष लेता है।
  - **रोजगार के बाद की चिंताएँ:** सार्वजनिक सेवा छोड़ने के बाद, पूर्व लोक सेवकों के पास दायित्व या वित्तीय संबंध हो सकते हैं, जो पद पर रहते हुए उनके कार्यों या निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। इस स्थिति को अक्सर "परिक्रामी दरवाजा (revolving door)" समस्या के रूप में जाना जाता है।
- **हितों के टकराव की स्थिति को हल करने के लिए,** लोक सेवकों के लिए ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ कार्य करना महत्वपूर्ण है।

निम्नलिखित कदम ऐसे विवादों से निपटने में मदद कर सकते हैं:

- **प्रकटीकरण:** लोक सेवकों को हितों के किसी भी संभावित टकराव के बारे में अपने वरिष्ठों, सहकर्मियों या उपयुक्त प्राधिकारियों को बताना चाहिए। यह पारदर्शिता को बढ़ावा देता है और स्थिति का मूल्यांकन करने की अनुमति देता है।
- **अलग होना:** यदि हितों का टकराव उत्पन्न होता है, तो एक लोक सेवक को किसी भी निर्णय लेने की प्रक्रिया से खुद को अलग करने पर विचार करना चाहिएद्य जिसमें सीधे तौर पर उनके व्यक्तिगत हित शामिल हों। यह निष्पक्षता सुनिश्चित करता है और जनता का विश्वास बनाए रखता है।

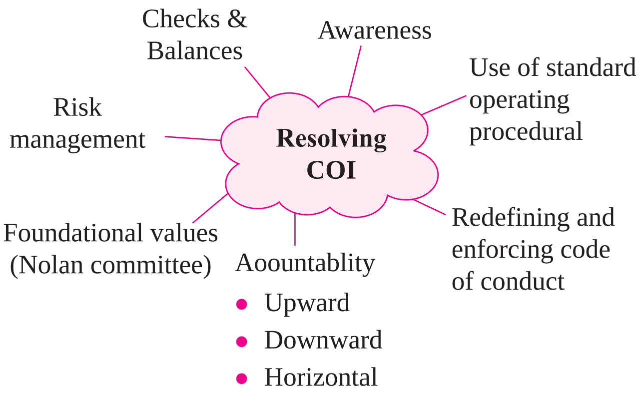

- **नैतिक मार्गदर्शन:** नैतिक दिशानिर्देशों और आचार संहिता का पालन आवश्यक है। लोक सेवकों को स्थापित नियमों का पालन करना चाहिए, जो हितों के टकराव को नियंत्रित करते हैं और व्यक्तिगत लाभ के बजाय जनता के सर्वोत्तम हित में निर्णय लेते हैं।
- **स्वतंत्र समीक्षा:** कुछ मामलों में, किसी नैतिक समिति या निरीक्षण निकाय से स्वतंत्र समीक्षा या राय मांगने से हितों के टकराव को उचित तरीके से संभालने के बारे में मार्गदर्शन मिल सकता है।
- **इन चरणों का पालन करके,** लोक सेवक हितों के टकराव से निपट सकते हैं और अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की अखंडता को बनाए रख सकते हैं, अंतत: व्यक्तिगत विचारों से ऊपर जनता के हित की सेवा कर सकते हैं।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानून, नियम और विनियम

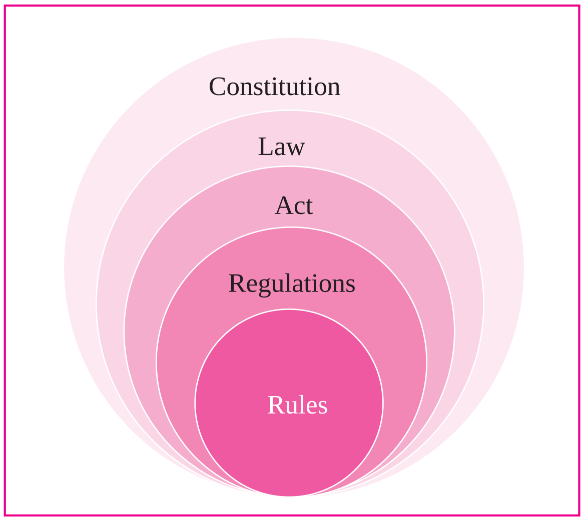

- ये स्वीकार्य व्यवहार के लिए एक रूपरेखा प्रदान करके और कानूनी सीमाओं को परिभाषित करके नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

- **वे समाज के भीतर निष्पक्षता,** न्याय और व्यक्तिगत और सामूहिक हितों की सुरक्षा को बढ़ावा देते हैं।
- **ये कानूनी ढाँचे विभिन्न सामाजिक मुद्दों,** सार्वजनिक कल्याण और व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा का समाधान करते हैं।
- **जबकि कानून बाध्यकारी मानक निर्धारित करते हैं,** नियम और विनियम उन्हें विशिष्ट क्षेत्रों के लिए व्यावहारिक दिशानिर्देशों में परिवर्तित करते हैं।
- **हालाँकि,** नैतिक निर्णय लेने का दायरा कानूनी आवश्यकताओं से परे है, जिसके लिए मूल्यों, सिद्धांतों और सामाजिक अपेक्षाओं पर विचार करना आवश्यक है।

कानूनः

- **कानून औपचारिक नियम होते हैं,** जो विधायी रूप से अधिनियमित किए गए हैं और समाज के भीतर सभी पर लागू होते हैं।
- **इन्हें सरकार द्वारा विधायी प्रक्रिया के माध्यम से बनाया और लागू किया जाता है,** जिसमें न्यायपालिका, विधायिका और सार्वजनिक अधिकारी शामिल होते हैं।
- कानून एक विशिष्ट संहिता में लिखे जाते हैं और उन्हें लागू करने से पहले मतदान सहित विभिन्न प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है।
- वे व्यक्तियों की भलाई और अधिकारों की रक्षा करने और लोगों और सरकार के बीच संबंधों को विनियमित करने के लिए तैयार किए गए हैं।
- **कानून न्यायिक प्रणाली द्वारा लागू किए जाते हैं,** और जो व्यक्ति उन्हें तोड़ते हैं उन्हें जुर्माना, कारावास या सामुदायिक सेवा जैसे कानूनी परिणामों का सामना करना पड़ सकता है।
- **कानून विभिन्न प्रकार के होते हैं,** जैसे आपराधिक कानून, नागरिक कानून और अंतर्राष्ट्रीय कानून।

नियम

- नियम विशिष्ट स्थितियों को नियंत्रित करने के लिए व्यक्तियों या संगठनों द्वारा बनाए गए दिशानिर्देश या आचार संहिता हैं।
- वे कानूनों की तुलना में अधिक लचीले होते हैं और अक्सर विशिष्ट समूहों या संस्थानों के भीतर लागू किए जाते हैं।
- नियम किसी संगठन या समुदाय के भीतर व्यवस्था, सद्भाव और सुचारू कामकाज बनाए रखने के लिए तैयार किए जाते हैं।
- वे अधिक अनौपचारिक हो सकते हैं और बदलती परिस्थितियों के आधार पर उन्हें अनुकूलित या समायोजित किया जा सकता है।
- नियम आमतौर पर उस व्यक्ति या इकाई द्वारा लागू किए जाते हैं, जो उन्हें बनाता है और उसके परिणाम भी उस इकाई द्वारा निर्धारित हो सकते हैं।
- नियम तोड़ने पर कानून तोड़ने की तुलना में कम गंभीर परिणाम हो सकते हैं और यह संदर्भ और नियम लागू करने वाले प्राधिकारी के आधार पर भिन्न हो सकते हैं।

विनियम

- **विनियम,** कानूनों से प्राप्त विस्तृत और विशिष्ट उपकरण, आचरण को आकार देने और कानूनी ढांचे के भीतर अनुपालन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- कानूनों के कार्यान्वयन और कार्यान्वयन के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करने के लिए, अक्सर विभिन्न विभागों के माध्यम से कार्यकारी शाखा द्वारा बनाए जाते हैं।
- **कानूनों के विपरीत,** जो एक व्यापक ढांचा स्थापित करते हैं, नियम विशिष्ट विषयों की पेचीदगियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसका उद्देश्य कानूनी प्रणाली के भीतर सुचारू कामकाज को सुविधाजनक बनाना और जटिलताओं का समाधान करना है।
- **जिम्मेदारियों को बनाने,** सीमित करने और आवंटित करने से, नियम समाज के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करने के लिए महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।

कानून और नियम के बीच अंतर

पैमाना	कानून	नियम
उद्देश्य	नियम आमतौर पर व्यक्तिगत भलाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं।	कानून का उद्देश्य सार्वजनिक भलाई को बढ़ावा और सार्वजनिक हितों की सेवा करना है।
अधिकार	सरकार या विधायी निकायों द्वारा निर्धारित कानूनी रूप से बाध्यकारी नियम।	संगठनों या व्यक्तियों द्वारा स्थापित दिशानिर्देश या आचार संहिता।
प्रयोज्यता	किसी अधिकार क्षेत्र या समाज के भीतर सभी पर लागू होता है।	किसी विशेष समूह, संगठन या स्थिति के लिए विशिष्ट हो सकता है।
प्रवर्तनीयता	न्यायिक प्रणाली के माध्यम से औपचारिक और प्रवर्तनीय।	कम औपचारिक और आम तौर पर आंतरिक तंत्र या सामाजिक मानदंडों के माध्यम से लागू किया जाता है।

निर्माण प्रक्रिया	विधायी प्रक्रियाओं द्वारा बनाया गया, जिसमें मतदान और अनुमोदन शामिल है।	किसी औपचारिक विधायी प्रक्रिया के बिना व्यक्तियों या संगठनों द्वारा बनाया गया।
उद्देश्य	इसका उद्देश्य व्यवहार को विनियमित करना और समाज में व्यवस्था बनाए रखना है।	किसी विशिष्ट संदर्भ या संगठन के भीतर सुचारू कामकाज की सुविधा के लिए डिजाइन किया गया।
परिणाम	कानूनों का उल्लंघन करने पर जुर्माना या कारावास जैसे कानूनी परिणाम हो सकते हैं।	नियमों को तोड़ने पर प्रवर्तन इकाई द्वारा निर्धारित परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानून, नियम और विनियम

कानून, नियम और विनियम नैतिक मार्गदर्शन के महत्वपूर्ण स्रोतों के रूप में कार्य करते हैं, ये जवाबदेही सुनिश्चित करते हैं और विभिन्न तंत्रों के माध्यम से एक न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देते हैं:

- **विवेकाधीन शक्तियों का विनियमन:** ये ढाँचे लोक सेवकों के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश स्थापित करते हैं, विवेकाधीन शक्तियों के दुरुपयोग को रोकते हैं और निष्पक्ष शासन को बढ़ावा देते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** केंद्रीय सिविल सेवा आचरण नियम, 1964, प्राधिकार के दुरुपयोग को रोकने के लिए नैतिक मानदंडों की रूपरेखा तैयार करता है।
- **कार्यवाही और निष्क्रियता पर नियंत्रण:** वे सकारात्मक प्रोत्साहन और नकारात्मक निवारक प्रदान करते हैं, व्यक्तियों को वांछित व्यवहार की ओर निर्देशित करते हैं और अनैतिक कार्यों को रोकते हैं।
  - भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम भ्रष्टाचार को हतोत्साहित करता है, जबकि महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम पारदर्शिता के लिए सामाजिक लेखा परीक्षा को बढ़ावा देता है।
- **सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना:** कानून, नियम और विनियम समानता और स्वतंत्रता जैसे आधुनिक मानवाधिकार सिद्धांतों को कायम रखते हैं, और अधिक न्यायसंगत समाज में योगदान देते हैं।
  - **नागरिक अधिकार निवारण अधिनियम:** 1955, सामाजिक न्याय की रक्षा करते हुए, अस्पृश्यता पर रोक लगाता है।
- **मानवाधिकार संरक्षण:** सहानुभूति और करुणा को बढ़ावा देकर, ये कानूनी ढांचे मानवाधिकारों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं।
  - मोटर वाहन संशोधन अधिनियम, 2019, अच्छे लोगों को दीवानी या आपराधिक मामलों से बचाता है, करुणा और सहायता की संस्कृति को बढ़ावा देता है।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कानूनों, नियमों और विनियमों की सीमाएं

- **प्रवर्तन का अभाव:** अपर्याप्त प्रवर्तन कानूनों, नियमों और विनियमों द्वारा प्रदान किए गए नैतिक मार्गदर्शन को कमजोर कर देता है, जिससे अनैतिक व्यवहार जारी रहता है।
  - **उदाहरण के लिए,** 2015 में, वोक्सवैगन को अपने डीजल वाहनों में ऐसे सॉफ्टवेयर स्थापित करते हुए पाया गया था, जो उत्सर्जन परीक्षणों में धोखाधड़ी करते थे। इससे वाहनों को कानून द्वारा अनुमति से 40 गुना अधिक प्रदूषक उत्सर्जित करने की अनुमति मिल गई। वोक्सवैगन वर्षों तक इससे बच निकलने में सफल रहा क्योंकि उत्सर्जन नियमों के प्रवर्तन में कमी थी। उत्सर्जन नियमों को लागू करने के लिए पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के पास वोक्सवैगन के अनुपालन की पर्याप्त निगरानी करने के लिए संसाधन नहीं थे। परिणामस्वरूप, वोक्सवैगन उन वाहनों की बिक्री जारी रखने में सक्षम रहा जो पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे थे।
- **टाल-मटोल की प्रवृत्ति:** व्यक्ति और संगठन कानूनों, नियमों और विनियमों की प्रभावशीलता को कम करते हुए नैतिक मानकों को दरकिनार या दरकिनार करने का प्रयास कर सकते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** मनी लॉन्ड्रिंग, साइबर अपराध आदि।
- **कमियां ढूंढना:** कानूनों, नियमों और विनियमों में परिदृश्यों की अधूरी कवरेज का फायदा उठाया जा सकता है, जिससे अनैतिक प्रथाओं को घटित होने में मदद मिल सकती है।
  - **उदाहरण के लिए,** 2G स्पेक्ट्रम मामला इस बात का उदाहरण है कि कैसे कानून की खामियों का फायदा उठाकर अनैतिक गतिविधियों को अंजाम दिया जा सकता है। 2008 में, भारत सरकार ने दूरसंचार कंपनियों को 2जी स्पेक्ट्रम लाइसेंस की नीलामी की। हालाँकि, लाइसेंस के लिए आरक्षित मूल्य कैसे निर्धारित किया जाए, इस पर सरकार के पास कोई स्पष्ट नीति नहीं थी। इस खामी का फायदा कुछ टेलीकॉम कंपनियों ने उठाया, जिन्होंने लाइसेंस के लिए अपेक्षा से काफी

कम भुगतान किया। परिणामस्वरूप, सरकार को अरबों डॉलर के राजस्व का नुकसान हुआ।

- **सीमित दायरा:** कानून, नियम और विनियम अक्सर विशिष्ट क्षेत्रों या उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे उभरते मुद्दों या क्षेत्रों के लिए नैतिक मार्गदर्शन में अंतराल रह जाता है, जिन्हें पर्याप्त रूप से कवर नहीं किया जाता है।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत में सोशल मीडिया के विनियमन की कमी, गिग इकॉनमी।
- **अनम्यता:** कानूनों, नियमों और विनियमों की स्थिर प्रकृति समाज में उभरती नैतिक चुनौतियों और प्रगति के अनुकूल होने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकती है, जिससे पुराना या अप्रभावी मार्गदर्शन हो सकता है।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत में डेटा सुरक्षा पर पुराने कानून, भारत में श्रम अधिकारों पर स्थिर कानून।
- **अनपेक्षित परिणाम:** अच्छे इरादों के बावजूद, कानूनों, नियमों और विनियमों के कभी-कभी अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं, जो नैतिक विचारों के साथ टकराव पैदा कर सकते हैं या नई नैतिक दुविधाएँ पैदा कर सकते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत में 500 और 1000 रुपये के नोटों के विमुद्रीकरण के कई अनपेक्षित परिणाम हुए, जैसे अर्थव्यवस्था में व्यवधान और गरीबों को होने वाली कठिनाई।
- **नकारात्मक धारणा:** कुछ नियमों के प्रति प्रतिरोध या नकारात्मक दृष्टिकोण गैर-अनुपालन और नैतिक व्यवहार की उपेक्षा का कारण बन सकता है।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत में पर्यावरण नियमों का विरोध अक्सर इस धारणा पर आधारित होता है कि पर्यावरण नियमों का पालन अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाएगा।
- **सांस्कृतिक सापेक्षवाद:** कानूनों, नियमों और विनियमों में अंतर्निहित नैतिक मानक विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोणों के साथ संरेखित नहीं हो सकते हैं, जिससे विभिन्न समाजों और संदर्भों में सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों को लागू करने में चुनौतियाँ पैदा होती हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत में कालीन उद्योग में बाल श्रम का उपयोग।
- **जटिलता और अतिनियमन:** अत्यधिक जटिलता और नियमों की बहुतायत भ्रम और अनुपालन बोझ पैदा कर सकती है, जिससे व्यक्तियों और संगठनों के लिए नैतिक निर्णय प्रभावी ढंग से लेना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
    - **उदाहरण के लिए,** भारत में फार्मास्युटिकल उद्योग को नियंत्रित करने वाले नियमों का चक्रव्यूह।
- सामाजिक परिपक्वता की कमी: नैतिक मानकों को अपनाने के लिए समाज की तत्परता और परिपक्वता कानूनों, नियमों और विनियमों की प्रभावशीलता को प्रभावित करती है।
    - **उदाहरण के लिए,** मुस्लिम समाज के कुछ वर्गों द्वारा तीन तलाक कानून का विरोध, और हिंदू समाज के कुछ वर्गों द्वारा सबरीमाला मामले पर उच्चतम न्यायालय के फैसले का विरोध।
- **व्यक्तिगत जवाबदेही का अभाव:** केवल बाहरी नियमों पर निर्भर रहने से नैतिक व्यवहार के लिए व्यक्तिगत जवाबदेही कम हो सकती है क्योंकि व्यक्ति व्यक्तिगत नैतिक निर्णय लेने के बजाय कानूनी अनुपालन की जिम्मेदारी को टाल सकते हैं।
- **नैतिक रूप से अस्पष्ट क्षेत्रों के लिए अपर्याप्त मार्गदर्शन:** कानून, नियम और विनियम उन स्थितियों में स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं, जहां नैतिक विकल्प व्यक्तिपरक होते हैं या नैतिक दुविधाएं शामिल होती हैं, जिनके लिए गहन प्रतिबिंब और नैतिक तर्क की आवश्यकता होती है।
- **अपर्याप्त संसाधन:** नैतिक मानकों पर प्रवर्तन, निगरानी और शिक्षा के लिए सीमित संसाधन नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने में कानूनों, नियमों और विनियमों की प्रभावशीलता को कमजोर कर सकते हैं।
- **नैतिक मूल्यों में बदलाव:** नैतिक मूल्य और सामाजिक मानदंड समय के साथ विकसित होते हैं, और कानून, नियम और विनियम हमेशा इन बदलावों के साथ तालमेल नहीं रख पाते हैं, जिससे नैतिक मार्गदर्शन में अंतराल पैदा होता है।

नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में अंतःकरण

उद्धरण

- "न्याय की अदालतों से भी ऊंची एक अदालत है और वह अंतरात्मा की अदालत है। यह अन्य सभी अदालतों का स्थान लेता है।" **–महात्मा गांधी**
- "यदि आप प्रतिदिन अपने आप से बात करते हैं तो आप अपने अंदर से एक बेहतर इंसान निकाल सकते हैं"। इसलिए उसकी जिंदगी में कहीं न कहीं जगह बनाना बेहद जरूरी है। **–स्वामी विवेकानन्द**
- "नैतिकता मनुष्य की वह गतिविधि है, जो उसके स्वयं के व्यक्तित्व की आंतरिक पूर्णता को सुरक्षित करने के लिए निर्देशित होती है।" **–अल्बर्ट श्वित्जर**

- **अंतःकरण, कानूनों और नियमों के दायरे से परे चला जाता है,** क्योंकि यह विशिष्ट कार्यों पर नैतिक निर्णय लागू करता है। यह एक व्यक्तिगत नैतिक दिशा-निर्देश के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों को उनके व्यवहार की सही या गलत का निर्धारण करने में मार्गदर्शन करता है।

- कानूनों और नियमों के विपरीत, अंत:करण बाहरी रूप से थोपा नहीं जाता है बल्कि व्यक्ति की नैतिकता की आंतरिक भावना से उत्पन्न होता है।
- यह व्यक्तिगत मूल्यों, विश्वासों और अनुभवों से आकार लेता है, जो इसे प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तिपरक और अद्वितीय बनाता है।
- चेतना में केवल भावनाओं या भावनाओं पर निर्भर रहने के बजाय बौद्धिक निर्णय लेना शामिल है। इसमें व्यक्तियों को अपने कार्यों के नैतिक निहितार्थों का मूल्यांकन करने के लिए आत्म-चिंतन और आलोचनात्मक सोच में संलग्न होने की आवश्यकता होती है।
- व्यवहार के लिए एक सामान्य रूपरेखा प्रदान करते हैं, चेतना व्यक्तियों को नैतिक जटिलताओं और नैतिक धूसर क्षेत्रों से निपटने में मदद करता है, जहां विशिष्ट मार्गदर्शन की कमी हो सकती है।
- चेतना पालन-पोषण, संस्कृति और व्यक्तिगत मान्यताओं सहित विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है, लेकिन यह आत्म-परीक्षा और नए ज्ञान और दृष्टिकोण के एकीकरण के माध्यम से व्यक्तिगत विकास और नैतिक विकास की भी अनुमति देता है।
- चेतना व्यक्तियों को उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराता है और किसी का व्यवहार उनके नैतिक मूल्यों के अनुरूप है या नहीं, इसके आधार पर अपराध या संतुष्टि की भावना पैदा हो सकती है।
- अमूर्त सिद्धांतों और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच अंतर को पाटकर अंत:करण नैतिक निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे व्यक्तियों को अपने कार्यों को सही और गलत की अपनी व्यक्तिगत समझ के साथ संरेखित करने की अनुमति मिलती है।
- अंत:करण नैतिकता से जुड़ा हुआ है और व्यावहारिक स्थितियों से निपटने के दौरान सामने आता है। यह निम्नलिखित तरीके से नैतिक मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में कार्य करता है:
  - **नैतिक दुविधाओं का समाधान:** अंत:करण हमारे नैतिक और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर सही निर्णय लेने में मदद करता है और इस प्रकार नैतिक दुविधाओं को हल करने में मदद करता है।
  - **हितों के टकराव से बचना:** अंत:करण व्यक्ति के अंतर्निहित नैतिक मूल्यों की याद दिलाता है और हमें हितों के टकराव से बचने में मदद करता है।
  - **उदाहरण:** एक नैतिक पेशेवर भाई-भतीजावाद, पक्षपात आदि की संभावनाओं से बचने के लिए अपने रिश्तेदारों के हितों के टकराव का सामना करने पर पेशेवर मूल्यों को प्राथमिकता देगा।
  - **दोषपूर्ण अंत:करण:** जिस व्यक्ति ने कुछ गलत किया है वह अपने अंत:करण से निकलने वाले दर्द या अपराध को महसूस करता है।
  - **उदाहरण:** यातायात नियमों को तोड़ने वाला कोई बाइक चालक किसी दुर्घटना का कारण बनने या यातायात में हंगामा खड़ा करने या नियमों का पालन न करने के कारण पास से गुजर रही एम्बुलेंस में देरी करने के बाद दोषी महसूस कर सकता है। आचरण से अंत:करण का संकट पैदा हो सकता है और आंतरिक चिंतन से उसके व्यवहार में सुधार हो सकता है।
  - **घृणित व्यवहार:** एक व्यक्ति ऐसी स्थिति में कम प्रेरणा और भागीदारी दिखा सकता है, जो उसके अंत:करण के विरुद्ध है और इस प्रकार वह नैतिक रूप से सही रास्ता अपनाने के लिए इच्छुक होगा।
  - **उदाहरण:** एक पुलिस अधिकारी को शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन पर लाठीचार्ज करने के लिए प्रेरणा की कमी हो सकती है। यदि वह उसकी अंतरात्मा के खिलाफ है, भले ही ऐसा करने का आदेश दिया गया हो।

कानून और अंत:करण के बीच अंतर

पैमाना	कानून	अंत:करण
स्रोत	शासी निकायों द्वारा निर्मित व प्रवर्तित	व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों के माध्यम से विकसित
प्रकृति	बाहरी, कानूनी रूप से लागू नियम	आंतरिक, व्यक्तिगत नैतिक दिशा-निर्देश, किसी व्यक्ति का आंतरिक दर्पण।
आधार	उद्देश्यपूर्ण एवं मानकीकृत	प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यक्तिपरक और अद्वितीय
प्रकार्य	विशिष्ट एवं अनुदेशात्मक	मूल्यांकनात्मक एवं चिंतनशील
प्रवर्तन	बाह्य तंत्रों के माध्यम से लागू किया गया	स्व-आरोपित और स्व-विनियमित
केंद्र	बाहरी व्यवहार और परिणामों पर ध्यान देना	आंतरिक नैतिक निर्णय और सिद्धांतों पर ध्यान देना
सलाह	व्यवहार के लिए एक सामान्य रूपरेखा प्रदान करता है	नैतिक जटिलताओं से निपटने में व्यक्तियों का मार्गदर्शन करता है

अनुपालन	अनुपालन न करने के परिणाम	मूल्यों के साथ संरेखण पर आधारित अपराधबोध या संतुष्टि की भावनाएँ
सीमाएँ	नैतिक बारीकियों को संबोधित करने में सीमित किया जा सकता है	व्यक्तिगत विकास और नैतिक विकास
जिम्मेदारी	अनुपालन के लिए बाहरी प्रवर्तन की आवश्यकता होती है	व्यक्तिगत जिम्मेदारी और जवाबदेही

'अंतःकरण' पर दार्शनिक बहस

- विभिन्न दार्शनिकों ने अंतःकरण की प्रकृति और भूमिका पर विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। **यहां उनके दृष्टिकोण हैं:**
  - (a) **जॉन लॉक:** अंतःकरण को जन्मजात सिद्धांतों के प्रमाण के रूप में देखा जाता है, लेकिन बहस इस बात को लेकर उठती है कि क्या ये सिद्धांत नैतिक पूर्णता प्रदान करते हैं? और क्या वे प्रकृति में उद्देश्यपूर्ण या व्यक्तिपरक हैं? व्यक्तिगत अंतःकरण पर आधारित कार्यों की विविधता उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठाती है।
  - (b) **थॉमस हॉब्स:** गलतफहमी की संभावना को ध्यान में रखते हुए, पूरी तरह से अंतःकरण के आधार पर बनाई गई राय, भले ही ईमानदारी से रखी गई हो, पर हमेशा निर्विवाद रूप से भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत अंतःकरण की भ्रांति के लिए आलोचनात्मक परीक्षण की आवश्यकता है।
  - (c) **एरिच फ्रॉम:** अंतःकरण को एक आत्म-चिंतनशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो व्यक्तियों को उनकी पूरी क्षमता का एहसास करने की दिशा में मार्गदर्शन करता है। यह हमारे प्रामाणिक स्व की आवाज का प्रतिनिधित्व करता है, जो हमें व्यक्तिगत विकास और आत्म-बोध की ओर ले जाता है।
  - (d) **इमैनुएल कांट:** आलोचनात्मक अंतःकरण की अवधारणा पेश की गई है, जिसकी तुलना एक मानसिक अदालत से की जाती है, जो विचारों और कार्यों का मूल्यांकन करती है। किसी के अंतःकरण का अनुसरण करने से उत्पन्न आंतरिक शांति अच्छे कर्म करने के लिए प्राथमिक प्रेरणा नहीं होनी चाहिएद्य इसके बजाय, नैतिक कार्यों को कर्तव्य की भावना से किया जाना चाहिए।
- यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि कर्तव्यनिष्ठ निर्णय उनकी सापेक्षतावादी प्रकृति के कारण गलत हो सकते हैं। इसे स्वीकार करने में असफल होने से अंतःकरण के साथ छेड़छाड़ हो सकती है, जिससे गैर-पुण्य और स्वार्थी कार्यों के लिए अनुचित औचित्य प्रदान किया जा सकता है।
- पर्याप्त बाहरी, परोपकार और मानक औचित्य के बिना, अंतःकरण को नैतिक रूप से अंधा माना जा सकता है जो कि संभावित रूप से व्यक्तियों और संपूर्ण मानवता दोनों के लिए खतरनाक हो सकता है।
- निर्णय लेने में अंतःकरण के जिम्मेदार उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए नैतिक विचार-विमर्श और व्यापक नैतिक ढांचे पर विचार आवश्यक है।
- ये दार्शनिक दृष्टिकोण अंतःकरण की जटिलता और महत्व को उजागर करते हैं, किसी के अंतःकरण की व्याख्या और उसे लागू करने में महत्वपूर्ण विश्लेषण, आत्म-प्रतिबिंब और नैतिक तर्क की आवश्यकता पर जोर देते हैं।

पूर्ववर्ती अंतःकरण और परिणामी अंतःकरण

पूर्ववर्ती अंतःकरण:	• पूर्ववर्ती अंतःकरण वह है, जो भविष्य के कार्यों के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, हमें उन्हें करने या उनसे बचने के लिए प्रेरित करता है। • **उदाहरण:** एक व्यक्ति संभावित पश्चाताप के कारण लाल सिग्नल पर रुक जाता है। नैतिकता में, एक पूर्ववर्ती अंतःकरण जो हमारे भविष्य के कार्यों के लिए मार्गदर्शक है, अधिक महत्वपूर्ण है।
परिणामी अंतःकरण:	• परिणामी अंतःकरण वह है, जो हमारे पिछले कार्यों के न्यायाधीश के रूप में कार्य करता है और हमारे आत्म-अनुमोदन या पिछले कार्यों के पश्चाताप के स्रोत के रूप में कार्य करता है। • **उदाहरण:** एक व्यक्ति लाल सिग्नल पार कर जाता है और फिर दोषी महसूस करता है।

नैतिक निर्णय लेने की मार्गदर्शिका

नैतिक निर्णय लेने में मार्गदर्शक के रूप में अंतःकरण की भूमिका के संबंध में यहां कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं:

- **अंतःकरण पर परिप्रेक्ष्य:** प्रारंभिक ईसाई मान्यताओं में इसकी उत्पत्ति से लेकर मन के एक भाग के रूप में मनोवैज्ञानिक विचारों तक अंतःकरण पर विभिन्न दृष्टिकोण हैं। सिगमंड फ्रायड ने अंतरात्मा की व्याख्या में वैज्ञानिक ज्ञान पर जोर दिया, जबकि धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण व्यक्तिगत अनुभवों और पालन-पोषण के कारण नैतिक मूल्यों की व्यक्तिपरकता को उजागर करते हैं।
- **नैतिक निर्णय लेना:** जब नैतिक निर्णय की बात आती है तो नैतिक निर्णय लेने का उद्देश्य सर्वोत्तम विकल्प बनाने में सहायता करना है। धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण में सही मार्ग

निर्धारित करने की स्पष्ट पद्धति का अभाव हो सकता है, जबकि धार्मिक दृष्टिकोण, जैसे कि सेंट पॉल की अंतरात्मा की सार्वभौमिक अवधारणा, इसे सभी व्यक्तियों के लिए सुलभ एक नैतिक मार्गदर्शक के रूप में देखते हैं।

- **जवाबदेही और अंतःकरण:** नैतिक मार्गदर्शक के रूप में अंतःकरण का उपयोग करना सही काम करने के विश्वास के तहत किए गए अपराधों के लिए जवाबदेही पर सवाल उठाता है। यदि उनकी अंतरात्मा ने उन्हें गुमराह किया हो तो इससे व्यक्तियों को जिम्मेदार ठहराने में जटिलताएँ पैदा होती हैं।
- **सेंट ऑगस्टीन का दृष्टिकोण:** सेंट ऑगस्टीन ने अंतरात्मा को ईश्वर की आवाज के रूप में देखा, जो व्यक्तियों को सही और गलत कार्यों को समझने के लिए मार्गदर्शन करती थी। उनके अनुसार, अंतःकरण हमें हमेशा अच्छे की ओर और बुरे से दूर ले जाता है। धार्मिक दृष्टिकोण से, अंतःकरण को नैतिक निर्णय लेने के लिए एक विश्वसनीय मार्गदर्शक माना जाता है।
- **अलग-अलग दृष्टिकोण:** जबकि धार्मिक विचार अंतःकरण की विश्वसनीयता पर जोर देते हैं, धर्मनिरपेक्षतावादियों को आपत्ति हो सकती है और वे इसकी सीमाओं को उजागर कर सकते हैं। नैतिक निर्णय लेने के मार्गदर्शक के रूप में अंतःकरण की भूमिका पर सहमति किसी के विश्वास और दार्शनिक रुख के आधार पर भिन्न हो सकती है।

अंतःकरण: नौकरशाहों, राजनेताओं और नागरिकों के लिए नैतिक मार्गदर्शन

- नौकरशाहों, राजनेताओं और नागरिकों के लिए नैतिक निर्णय लेने का मार्गदर्शन करने में अंतःकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **इन संदर्भों में अंतःकरण के प्रभाव के संबंध में मुख्य बिंदु यहां दिए गए हैं:**
  (a) **राजनीतिक नेता:** अंतःकरण राजनीतिक नेताओं के लिए एक नैतिक दिशा सूचक यंत्र के रूप में कार्य करता है। यह उन्हें भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और स्वार्थ का विरोध करने में मदद कर सकता है। उन्हें समाज के सर्वोत्तम हित में कार्य करने और संवैधानिक सिद्धांतों को बनाए रखने का आग्रह कर सकता है। राजनीतिक नेताओं को व्यक्तिगत लाभ के बजाय उन नागरिकों की जरूरतों को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिन्होंने उन्हें चुना है।

  (b) **नौकरशाही स्तर:** नौकरशाहों को यह तय करते समय नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ता है कि क्या आदेश का आँख बंद करके पालन करना चाहिए या स्वतंत्र निर्णय लेना चाहिए। अंतरात्मा एक मार्गदर्शक आवाज के रूप में कार्य करती है, जो उन्हें राष्ट्र की सेवा करने और अखंडता और ईमानदारी बनाए रखने के उनके कर्तव्य की याद दिलाती है। नौकरशाह नागरिकों और राजनेताओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं और उनके लिए नैतिक सिद्धांतों का पालन आवश्यक है।

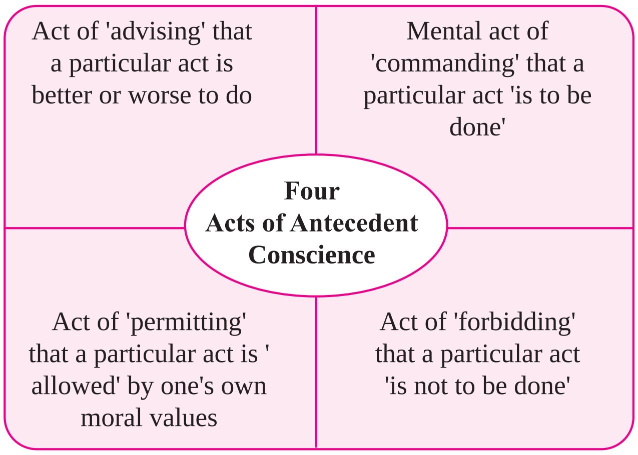

  (c) **बड़े पैमाने पर नागरिक:** सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर नागरिक अंतःकरण समाज की स्थिति को आकार देने में महत्वपूर्ण है। यह नागरिकों को चुनावों में सक्रिय रूप से भाग लेने, अलोकतांत्रिक प्रथाओं के खिलाफ असहमति जताने और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनकर, नागरिक भीड़ के न्याय को रोक सकते हैं और अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा दे सकते हैं।

  (d) **उत्कृष्टता के लिए प्रयास:** अंतःकरण व्यक्तियों और संस्थानों को उत्कृष्टता और निरंतर सुधार के लिए प्रोत्साहित करता है। यह नैतिक पतन को रोकने में मदद करता है और शासकीय संस्थानों में विश्वास बहाल करता है। किसी के अंतःकरण से जुड़े सिद्धांतों और मूल्यों को कायम रखना समाज की बेहतरी में योगदान दे सकता है।

अंतःकरण का संकट

- शब्द "अंतःकरण का संकट" **किसी व्यक्ति द्वारा अनुभव की गई आंतरिक संघर्ष या उथल-पुथल की स्थिति को संदर्भित करता है, जब उनके व्यक्तिगत नैतिक सिद्धांत बाहरी दबावों या अपेक्षाओं, कर्तव्य या उस कार्य से टकराते हैं, जिसे करने की उनसे अपेक्षा की जाती है।**
- यह एक ऐसी स्थिति है, जहां किसी व्यक्ति की सही और गलत की समझ, उनके मूल्यों और उनकी नैतिक मान्यताओं को चुनौती दी जाती है, जिससे परेशानी होती है और निर्णय लेने या अपने अंतःकरण के अनुरूप कार्य करने में संघर्ष होता है।
- सार्वजनिक क्षेत्र में, अंतःकरण का संकट विभिन्न तरीकों से प्रकट हो सकता है। **कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:**

- **नैतिक निर्णय लेना:** व्यक्ति स्वयं को कठिन विकल्पों से जूझता हुआ पा सकते हैं, जिसके लिए उन्हें अपने व्यक्तिगत मूल्यों को सामाजिक अपेक्षाओं या संस्थागत मांगों के विरुद्ध तौलना होगा। यह आंतरिक संघर्ष सार्वजनिक नीति निर्णय लेते समय, विवादास्पद मुद्दों पर रुख अपनाते समय, या नैतिक दुविधाओं से निपटते समय प्रकट हो सकता है।
- **नैतिक नेतृत्व:** सार्वजनिक क्षेत्र में नेताओं को अक्सर अंत:करण के संकट का सामना करना पड़ता है, जब उनके निर्णय दूसरों की भलाई पर प्रभाव डालते हैं। व्यापक नैतिक निहितार्थों पर विचार करते हुए, वे सवाल कर सकते हैं कि क्या व्यक्तिगत लाभ या शक्ति को प्राथमिकता दी जाए या अपने घटकों के सर्वोत्तम हित में कार्य किया जाए।
- **सविनय अवज्ञा:** कुछ परिस्थितियों में, व्यक्ति कथित अन्याय या अनैतिक प्रथाओं के खिलाफ विरोध करने के लिए सविनय अवज्ञा के कार्यों में शामिल होने के लिए मजबूर महसूस कर सकते हैं। इसमें मौजूदा प्रणालियों या नीतियों को चुनौती देने के लिए अहिंसक प्रतिरोध, सार्वजनिक प्रदर्शन या सक्रियता के अन्य रूप शामिल हो सकते हैं।
- **नैतिक विवाद:** मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और पर्यावरण जैसे नैतिक मुद्दों पर सार्वजनिक बहस और विवाद अंत:करण के संकट को जन्म दे सकते हैं। लोग अपने व्यक्तिगत मूल्यों को प्रचलित विचारों या सामाजिक मानदंडों के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए संघर्ष करते हैं।
- **सार्वजनिक सेवा और जवाबदेही:** सार्वजनिक अधिकारियों और नेताओं को अक्सर विरोधाभासी अपेक्षाओं या दबावों का सामना करने पर अंत:करण के संकट का सामना करना पड़ता है। राजनीतिक दबावों या समझौतावादी स्थितियों के साथ व्यक्तिगत ईमानदारी और सार्वजनिक हित के प्रति प्रतिबद्धता को संतुलित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **मुखबिरी:** संगठनों या संस्थानों के भीतर भ्रष्टाचार, कदाचार, या अनैतिक व्यवहार के उदाहरण व्यक्तियों को अंत:करण के संकट का सामना करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। वे इस दुविधा का सामना करते हैं कि गलत काम को उजागर करें, व्यक्तिगत और व्यावसायिक नतीजों का जोखिम उठाएं या चुप रहें।
- **नैतिक सक्रियता:** सार्वजनिक हस्तियाँ या नागरिक जो सामाजिक न्याय, मानवाधिकार या पर्यावरणीय स्थिरता की वकालत करते हैं, उन्हें प्रणालीगत मुद्दों या सार्वजनिक उदासीनता का सामना करते समय अंत:करण के संकट का अनुभव हो सकता है। वे अपने दृढ़ विश्वास और सार्थक परिवर्तन लाने में आने वाली बाधाओं के बीच तनाव से जूझ सकते हैं।

- सार्वजनिक क्षेत्र में अंत:करण का संकट तब उत्पन्न होता है जब व्यक्ति नैतिक दुविधाओं, नैतिक विवादों, जवाबदेही चुनौतियों या ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जो उनके व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों को चुनौती देते हैं।
- इससे आंतरिक उथल-पुथल, नैतिक संकट और किसी की ईमानदारी और नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखते हुए जटिल निर्णय लेने में संघर्ष हो सकता है।

विवेक का संकट

- शब्द "विवेक का संकट" किसी व्यक्ति द्वारा अनुभव किये गई आंतरिक संघर्ष या असमंजस्य की स्थिति को संदर्भित करता है जब उनके व्यक्तिगत नैतिक सिद्धांत बाहरी दबावों या अपेक्षाओं, कर्तव्य या उस कार्य से टकराते हैं जिसे करने की उनसे अपेक्षा की जाती है।
- यह एक ऐसी स्थिति है जहां किसी व्यक्ति की सही और गलत की समझ, उनके मूल्यों और उनकी नैतिक मान्यताओं को चुनौती देती है, जिससे परेशानी होती है और निर्णय लेने या अपने विवेक के अनुरूप कार्य करने में संघर्ष होता है।
- सार्वजनिक क्षेत्र में, विवेक का संकट विभिन्न तरीकों से प्रकट हो सकता है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:
  - **नैतिक निर्णय लेना:** व्यक्ति स्वयं को कठिन विकल्पों से जूझता हुआ पा सकते हैं जिसके लिए उन्हें अपने व्यक्तिगत मूल्यों को सामाजिक अपेक्षाओं या संस्थागत मांगों के विरुद्ध तौलना होगा। यह आंतरिक संघर्ष सार्वजनिक नीति निर्णय लेते समय, विवादास्पद मुद्दों पर रुख अपनाते समय, या नैतिक दुविधाओं से निपटते समय प्रकट हो सकता है।
  - **नैतिक नेतृत्व:** सार्वजनिक क्षेत्र में नेताओं को अक्सर विवेक के संकट का सामना करना पड़ता है जब उनके निर्णय दूसरों के हितों पर प्रभाव डालते हैं। व्यापक नैतिक निहितार्थों पर विचार करते हुए, वे सवाल कर सकते हैं कि क्या व्यक्तिगत लाभ या शक्ति को प्राथमिकता दी जाए या अपने घटकों के सर्वोत्तम हित में कार्य किया जाए।
  - **सविनय अवज्ञा:** कुछ परिस्थितियों में, व्यक्ति कथित अन्याय या अनैतिक प्रथाओं के खिलाफ विरोध करने के लिए सविनय अवज्ञा के कार्यों में शामिल होने के लिए मजबूर महसूस कर सकते हैं। इसमें मौजूदा प्रणालियों या नीतियों को चुनौती देने के लिए अहिंसक प्रतिरोध, सार्वजनिक प्रदर्शन या सक्रियता के अन्य रूप शामिल हो सकते हैं।

- **नैतिक विवाद:** मानवाधिकार, सामाजिक न्याय और पर्यावरण जैसे नैतिक मुद्दों पर सार्वजनिक बहस और विवाद विवेक के संकट को जन्म दे सकते हैं। लोग अपने व्यक्तिगत मूल्यों को प्रचलित विचारों या सामाजिक मानदंडों के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए संघर्ष करते हैं।
- **सार्वजनिक सेवा और जवाबदेही:** सार्वजनिक अधिकारियों और नेताओं को अक्सर विरोधाभासी अपेक्षाओं या दबावों का सामना करने पर विवेक के संकट का सामना करना पड़ता है। राजनीतिक दबावों या समझौतावादी स्थितियों के साथ व्यक्तिगत ईमानदारी और सार्वजनिक हित के प्रति प्रतिबद्धता को संतुलित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **व्हिसिलब्लोविंग:** संगठनों या संस्थानों के भीतर भ्रष्टाचार, कदाचार, या अनैतिक व्यवहार के उदाहरण व्यक्तियों को विवेक के संकट का सामना करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। वे इस दुविधा का सामना करते हैं कि गलत काम को उजागर करें, व्यक्तिगत और व्यावसायिक नतीजों का जोखिम उठाएं या चुप रहें।
- **नैतिक सक्रियता:** सार्वजनिक हस्तियाँ या नागरिक जो सामाजिक न्याय, मानवाधिकार या पर्यावरणीय स्थिरता की वकालत करते हैं, उन्हें प्रणालीगत मुद्दों या सार्वजनिक उदासीनता का सामना करते समय विवेक के संकट का अनुभव हो सकता है। वे अपने दृढ़ विश्वास और सार्थक परिवर्तन लाने में आने वाली बाधाओं के बीच तनाव से जूझ सकते हैं।

- सार्वजनिक क्षेत्र में विवेक का संकट तब उत्पन्न होता है जब व्यक्ति नैतिक दुविधाओं, नैतिक विवादों, जवाबदेही चुनौतियों या ऐसी स्थितियों का सामना करते हैं जो उनके व्यक्तिगत मूल्यों और विश्वासों को चुनौती देते हैं।
- इससे आंतरिक उथल-पुथल, नैतिक संकट और किसी की ईमानदारी और नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखते हुए जटिल निर्णय लेने में संघर्ष हो सकता है।

विवेक के संकट का समाधान

विवेक के संकट को हल करने के लिए आत्मनिरीक्षण, नैतिक तर्क और साहसी निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। यहां कुछ कदम दिए गए हैं जो व्यक्तियों को ऐसे संकट से निपटने और उसका समाधान करने में मदद कर सकते हैं:

- **मूल्यों पर चिंतन करना:** अपने मूल मूल्यों और सिद्धांतों को स्पष्ट करने और समझने के लिए समय निकालें। इस बात पर विचार करें कि आपके लिए सबसे ज्यादा क्या मायने रखता है, आपकी मान्यताएँ या आपके द्वारा बनाए रखे जाने वाले नैतिक मानक।
- **सूचनाओं का संग्रहण करना:** मौजूदा मुद्दे से संबंधित प्रासंगिक जानकारी और दृष्टिकोण की तलाश करें। स्थिति, इसके निहितार्थ और कार्रवाई के संभावित तरीकों की व्यापक समझ हासिल करने के लिए आलोचनात्मक सोच और अनुसंधान में संलग्न रहें।
- **मार्गदर्शन प्राप्त करना:** विश्वसनीय सलाहकारों, सलाहकारों या संबंधित क्षेत्र में विशेषज्ञता वाले व्यक्तियों से परामर्श लें। ऐसे लोगों के साथ चर्चा में शामिल हों जो आपकी समझ को व्यापक बनाने के लिए विविध दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।
- **नैतिक ढाँचे:** अपने आप को नैतिक ढाँचों या सिद्धांतों से परिचित कराएं जो निर्णय लेने में मार्गदर्शन कर सकते हैं, जैसे उपयोगितावाद, धर्मशास्त्र, या सदाचार नैतिकता। ये ढाँचे किसी स्थिति के नैतिक आयामों का विश्लेषण करने के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान कर सकते हैं।
- **परिणामों का मूल्यांकन करना:** विभिन्न विकल्पों और कार्यों के संभावित परिणामों पर विचार करें। हितधारकों, व्यापक समुदाय और अपनी नैतिक अखंडता पर प्रभाव का आकलन करें। अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिणामों को संतुलित करें और सर्वोत्तम समग्र नैतिक भलाई के लिए प्रयास करें।
- **अंतरात्मा से परामर्श लेना:** अपनी आंतरिक आवाज, अंतर्ज्ञान या विवेक को सुनें। अपनी आंतरिक भावनाओं और व्यक्तिगत विश्वासों पर ध्यान दें। अपनी नैतिक प्रवृत्ति पर भरोसा रखें, लेकिन यह भी आलोचनात्मक रूप से मूल्यांकन करें कि क्या वे तर्कसंगत नैतिक सिद्धांतों पर आधारित हैं।
- **साहसी कार्रवाई:** एक बार जब आप अपने मूल्यों और नैतिक विश्लेषण के अनुरूप निर्णय पर पहुंच जाएं, तो उस पर कार्रवाई करने का साहस जुटाएं। अपने नैतिक रुख को कायम रखने से उत्पन्न होने वाली संभावित चुनौतियों, प्रतिरोध या व्यक्तिगत बलिदानों का सामना करने के लिए तैयार रहें।
- **संवाद और जुड़ाव:** उन लोगों के साथ खुले संवाद में शामिल हों जो आपके निर्णय में शामिल हो सकते हैं या प्रभावित हो सकते हैं। जब संभव हो तो समान आधार तलाशें, समझ विकसित करें और सहयोग को बढ़ावा दें। रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए खुले रहते हुए अपने तर्क और इरादों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करें। ऐसी स्थितियों में वरिष्ठ, सहकर्मी और समान स्थिति के अनुभव वाले लोग विशेष रूप से बहुत मददगार हो सकते हैं।
- **निरंतर अनुभवों से सीखना:** अनुभव से विकास और सीखने के अवसर को अपनाएं। अपने निर्णयों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों परिणामों पर विचार करें और भविष्य में अपने नैतिक निर्णय लेने के कौशल को निखारने के लिए उनका उपयोग करें।

- **संवैधानिक नैतिकता:** मानवतावाद के विचार विवेक के संकट की स्थितियों में संविधान के सिद्धांत और मानवाधिकार मार्गदर्शक साबित हो सकते हैं।

क्या अंतरात्मा नैतिक व्यवहार के लिए एक पूर्ण मार्गदर्शक है?

नहीं, विवेक नैतिक व्यवहार का पूर्ण मार्गदर्शक नहीं है। ऐसे कई कारक हैं जो इसकी विश्वसनीयता और प्रभावशीलता को सीमित कर सकते हैं:

- **विवेक का संकट:** ऐसी स्थितियाँ होती हैं जहाँ किसी व्यक्ति का विवेक स्पष्ट नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करने में विफल हो सकता है। अस्पष्ट परिस्थितियाँ, परस्पर विरोधी मूल्य, या परस्पर विरोधी कर्तव्य विवेक का संकट पैदा कर सकते हैं, जिससे व्यक्ति अनिश्चित हो जाता है कि क्या सही है और क्या गलत।
- **विवेक का गलत प्रशिक्षण:** नैतिक शिक्षा और आदत निर्माण से विवेक विकसित होता है। यदि किसी को अनैतिक व्यवहार का पालन करने के लिए प्रशिक्षित या अनुकूलित किया गया है, तो उनका विवेक उन्हें नैतिक विकल्पों के प्रति विश्वसनीय रूप से मार्गदर्शन नहीं कर सकता है।
- **नैतिकता/संस्कृतियों का प्रभाव:** विवेक किसी विशेष समाज या वातावरण की नैतिकता और सांस्कृतिक मानदंडों से प्रभावित होता है। विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग नैतिक दृष्टिकोण हो सकते हैं, और किसी व्यक्ति का विवेक सामाजिक मानदंडों के साथ संरेखित हो सकता है, भले ही वे मानदंड नैतिक रूप से संदिग्ध हों।
  - **उदाहरण के लिए,** यदि किसी व्यक्ति का पालन-पोषण पितृसत्तात्मक परिवेश में हुआ है तो महिलाओं के प्रति उसके व्यवहार के प्रति उसकी अंतरात्मा नैतिक मार्गदर्शन प्रदान नहीं करेगी।
- **सामाजिक दबाव का प्रभाव:** सामाजिक या व्यावसायिक दबावों से विवेक प्रभावित या अतिरंजित हो सकता है। सामाजिक अस्वीकृति का डर, पेशेवर परिणाम, या साथियों का दबाव किसी व्यक्ति के नैतिक निर्णय से समझौता कर सकता है और उन्हें अपने विवेक के विरुद्ध कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

ये कारक दर्शाते हैं कि विवेक सीमाओं के अधीन है और विभिन्न बाहरी कारकों से प्रभावित हो सकता है। हालाँकि, विवेक नैतिक निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, नैतिक व्यवहार के लिए अधिक व्यापक और विश्वसनीय मार्गदर्शिका सुनिश्चित करने के लिए इसे आलोचनात्मक सोच, नैतिक तर्क और नैतिक सिद्धांतों पर विचार के साथ पूरक किया जाना चाहिए।

जवाबदेही और नैतिक शासन

- सार्वजनिक अधिकारियों को अपने कार्यों तथा अधिकारों के प्रति जवाबदेह ठहराने की अवधारणा में एक ऐसी प्रक्रिया शामिल है जिसके माध्यम से उनके कार्यों और विकल्पों की बारीकी से जांच की जाती है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे अपनी जिम्मेदारियों, दायित्वों और नौकरी के कर्तव्यों को पूरा करते हैं।
- **जवाबदेही में दो मुख्य पहलू शामिल हैं:**
  1. **उत्तरदायित्व:** सार्वजनिक अधिकारियों को अपने निर्णयों और कार्यों के लिए जवाबदेह होना चाहिए। उन्हें अपनी पसंद और व्यवहार के संबंध में जनता और निरीक्षण संस्थानों को स्पष्टीकरण और औचित्य प्रदान करना चाहिए। यह पारदर्शिता सत्ता के दुरुपयोग को रोकने में मदद करती है और जिम्मेदार आचरण को बढ़ावा देती है।
  2. **प्रवर्तन या लागू करना:** जवाबदेही के लिए अनुचित कार्यों या स्थापित नियमों के उल्लंघन के परिणामों को लागू करने के लिए तंत्र के अस्तित्व की आवश्यकता होती है। सार्वजनिक और जवाबदेह संस्थानों दोनों के पास व्यवहार को सुधारने के उपाय करने और व्यक्तियों या संगठनों को जवाबदेह बनाने का अधिकार होना चाहिए।

Answerability + Enforceability = Accountability

जवाबदेही की आवश्यकता

- **लोकतांत्रिक शासन:** जवाबदेही सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक अधिकारी लोगों के प्रति जवाबदेह हों, लोकतांत्रिक सिद्धांतों और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा दें।
- **सार्वजनिक विश्वास:** जवाबदेही अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह बनाकर और किसी भी गलत काम को संबोधित करके सरकार में जनता के विश्वास और विश्वास को बढ़ाती है।
- **स्पष्टता और दक्षता:** जवाबदेही के लिए स्पष्ट कार्य विनिर्देशों, समयसीमा और संसाधन आवंटन की आवश्यकता होती है, जिससे शासन की प्रभावशीलता और दक्षता में सुधार होता है।
- **अनियमितताओं की रोकथाम:** जवाबदेही प्रशासनिक अनियमितताओं और नीतियों के अनुचित कार्यान्वयन को रोकने में मदद करती है, जिससे बेहतर शासन परिणामों में योगदान मिलता है।
- **उपचारात्मक कार्रवाई:** जवाबदेही गलतियों या कदाचार की पहचान और सुधार में सक्षम बनाती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि अधिकारियों को उत्तरदायी ठहराया जाता है और सुधारात्मक उपाय किए जाते हैं।

- **पारदर्शिता:** जवाबदेही निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पारदर्शिता को बढ़ावा देती है, नागरिकों को शासन में हितधारक बनाती है और विश्वास को बढ़ावा देती है।
- **फीडबैक तंत्र:** जवाबदेही एक फीडबैक तंत्र स्थापित करती है जहां लाभार्थियों की चिंताएं और फीडबैक निर्णय निर्माताओं तक पहुंच सकते हैं, जिससे उत्तरदायी शासन की सुविधा मिलती है।

जवाबदेही का महत्व

- **सत्ता के दुरुपयोग पर नियंत्रण:** उत्तरदायित्व और प्रवर्तन तंत्र सार्वजनिक अधिकारियों को अत्याचारी बनने और जनता के सर्वोत्तम हितों के खिलाफ काम करने से रोकते हैं।
- **हितों के टकराव पर नियंत्रण:** जवाबदेही स्वीकार्य कार्यों की सीमाओं को परिभाषित करने, हितों के टकराव की संभावना को कम करने और सार्वजनिक अधिकारियों को जनता के हित में कार्य करने को सुनिश्चित करने में मदद करती है।

चित्र: जवाबदेही के आयाम

- **सार्वजनिक हित की सेवा:** सार्वजनिक सेवाओं का उद्देश्य जनता को लाभ पहुंचाना है, और जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि अधिकारी जनता की जरूरतों के अनुसार कार्य करें और अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हों।
- **न्याय और समानता:** जवाबदेही लोक सेवकों को उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराकर न्याय, समानता और संवैधानिक आदर्शों की प्राप्ति को बढ़ावा देती है।
- **सार्वजनिक सेवाओं की वैधता:** जवाबदेही यह सुनिश्चित करके सार्वजनिक सेवा के प्रति वफादारी को बढ़ावा देती है कि कार्यों पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाता है और मनमानी और गलत धारणा वाली नीतियों को रोका जाता है।

जवाबदेही के प्रकार

- **क्षैतिज जवाबदेही:** राज्य संस्थाएँ सत्ता के दुरुपयोग और भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अन्य सरकारी एजेंसियों की देखरेख और विनियमन करती हैं।
  - उदाहरणों में आंतरिक लेखापरीक्षा, लोकपाल कार्यालय और प्रशासनिक अदालतें शामिल हैं।
- **लंबवत जवाबदेही:** नागरिक, नागरिक समाज और मीडिया नीचे से ऊपर तक सार्वजनिक अधिकारियों को जवाबदेह बनाते हैं।
  - इसमें चुनाव, सार्वजनिक सुनवाई, नागरिक प्रतिक्रिया, मीडिया जांच और सार्वजनिक भागीदारी जैसे तंत्र शामिल हैं। यह सुशासन मानकों के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करता है और सत्ता के दुरुपयोग को रोकता है।
- **राजनीतिक जवाबदेही:** व्यक्तिगत मंत्रिस्तरीय जिम्मेदारी राजनीतिक नेताओं को उनके मंत्रालयों के निर्णयों और कार्यों के लिए जवाबदेह बनाती है।
  - इस्तीफा, बर्खास्तगी और राजनीतिक परिणाम विफलताओं या कदाचार के सामान्य परिणाम हैं। यह राजनीतिक नेताओं के कार्यों में पारदर्शिता और परिणाम सुनिश्चित करता है।
- **सामाजिक जवाबदेही:** नागरिकों और नागरिक समाज द्वारा संचालित, इसमें सार्वजनिक अधिकारियों की सक्रिय भागीदारी और निगरानी शामिल है।
  - नागरिक-नेतृत्व वाले ऑडिट, भागीदारी प्रक्रियाओं और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से, यह जवाबदेही सुनिश्चित करता है और निर्णय लेने को प्रभावित करता है।

आंतरिक और बाह्य जवाबदेही

- **बाहरी (कार्यपालिका के बाहर):** संसद, न्यायपालिका, लोकपाल, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और केंद्रीय सतर्कता आयोग बाहरी जवाबदेही तंत्र के रूप में कार्य करते हैं जो पारदर्शिता, वैधता और उचित शासन सुनिश्चित करने के लिए कार्यकारी शाखा के कार्यों की देखरेख और निगरानी करते हैं।
- **आंतरिक (कार्यकारी के भीतर):** कार्यकारी शाखा के भीतर आंतरिक जवाबदेही तंत्र में वरिष्ठ अधिकारी शामिल होते हैं जो इनाम और दंड, अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं और प्रदर्शन प्रबंधन प्रणालियों को लागू करते हैं। आंतरिक ऑडिट और शिकायत निवारण तंत्र भी जवाबदेही को बढ़ावा देने और आंतरिक मुद्दों को संबोधित करने में भूमिका निभाते हैं।

वे संस्थाएँ और तंत्र जो जवाबदेही को बढ़ावा देते हैं

राज्य के बाहर (ऊर्ध्वाधर)	• **चुनाव:** चुनावी प्रक्रिया नागरिकों को मतदान और अपने प्रतिनिधियों को चुनने के माध्यम से सार्वजनिक अधिकारियों को जवाबदेह बनाने की अनुमति देती है। • **सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम:** यह नागरिकों को पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देते हुए सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा रखी गई जानकारी तक पहुंचने का अधिकार देता है। • **नागरिक निरीक्षण समितियाँ:** ये समितियाँ सरकारी कार्यों और नीतियों की निगरानी और मूल्यांकन में नागरिकों को शामिल करती हैं।

	• **नागरिक समाज/प्रहरी निकाय:** गैर-सरकारी संगठन और नागरिक समाज समूह पारदर्शिता और सुशासन की वकालत करके सरकार को जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। • **मीडिया:** स्वतंत्र मीडिया संगठन सरकारी गतिविधियों पर रिपोर्टिंग करके और किसी भी गलत काम को उजागर करके एक निगरानीकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। • **सेवा वितरण सर्वेक्षण:** नागरिकों के बीच किए गए सर्वेक्षण सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता और प्रभावशीलता का आकलन करते हैं, प्रदर्शन और जवाबदेही पर प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं। • **नागरिक चार्टर:** ये दस्तावेज नागरिकों के अधिकारों और हकदारियों को रेखांकित करते हैं और जवाबदेही को बढ़ावा देते हुए सेवा वितरण के लिए मानक निर्धारित करते हैं।
राज्य के भीतर (क्षैतिज)	• **वरिष्ठ अधिकारी:** वे पुरस्कार और दंड प्रणालियों, अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं और प्रदर्शन प्रबंधन के माध्यम से कार्यकारी शाखा के भीतर जवाबदेही लागू करते हैं। • **सीबीआई/पुलिस/सतर्कता:** ये एजेंसियां सरकार के भीतर भ्रष्टाचार, कदाचार और नियमों और विनियमों के उल्लंघन के खिलाफ जांच करती हैं और कार्रवाई करती हैं। • **आंतरिक लेखापरीक्षा:** आंतरिक लेखापरीक्षा इकाइयां अनुपालन सुनिश्चित करने और किसी भी अनियमितता की पहचान करने के लिए सरकारी विभागों की वित्तीय और परिचालन प्रक्रियाओं का मूल्यांकन करती हैं। • **शिकायत निवारण तंत्र:** भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम और आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम जैसे तंत्र शिकायतों, शिकायतों और भ्रष्टाचार या कुप्रशासन के मामलों का समाधान करते हैं। • **ई-गवर्नेंस तंत्र:** प्रगति और राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (एनईजीपी) जैसे मंच सरकारी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, दक्षता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हैं।

जवाबदेही और उत्तरदायित्व के बीच अंतर

पैमाना	जवाबदेही	उत्तरदायित्व
परिभाषा	किसी कार्य या कार्रवाई के परिणाम के लिए जवाबदेह होना।	कोई कर्तव्य या कार्य सौंपा या सौंपा जाना और उसे पूरा करने का दायित्व होना।
केंद्र	परिणाम	कर्तव्य या कार्य।
प्रकृति	किसी बाहरी स्रोत से लगाया या सौंपा गया।	स्वेच्छा से ग्रहण किया या प्रत्यायोजित किया जानेवाला।
क्षेत्र	व्यापक और विस्तारित	विशिष्ट और केंद्रित
स्तर	आमतौर पर उच्च-स्तरीय भूमिकाओं या पदों से जुड़ा होता है।	विभिन्न स्तरों और पदों से संबद्ध किया जा सकता है।
स्वामित्व	सफलताओं और असफलताओं सहित परिणाम का स्वामित्व लेना।	किसी कार्य को पूरा करने या कर्तव्य को पूरा करने का स्वामित्व लेना।
फैसला-निर्माण	इसमें निर्णय लेना या निर्णय लेने का अधिकार होना शामिल हो सकता है।	इसमें दूसरों द्वारा लिए गए निर्णयों को क्रियान्वित करना शामिल हो सकता है।
उत्तरदायित्व	व्यक्तिगत भागीदारी की परवाह किए बिना, परिणामों या परिणामों के लिए उत्तर देना।	सौंपे गए कार्यों या कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उत्तर देना।
महत्त्व	अंतिम परिणाम और हितधारकों पर प्रभाव पर जोर देता है।	विशिष्ट कार्यों या कर्तव्यों को पूरा करने पर जोर देता है।
स्थानांतरण	स्थानांतरित या प्रत्यायोजित नहीं किया जा सकता।	दूसरों को हस्तांतरित या प्रत्यायोजित किया जा सकता है।

जवाबदेही सुनिश्चित करने के तरीके और साधन

- **हितधारकों की भागीदारी:** सार्वजनिक अधिकारियों से उनके आधिकारिक कर्तव्यों के बारे में सवाल करने के लिए

हितधारकों को सशक्त बनाना जवाबदेही को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, मनरेगा के तहत सोशल ऑडिट जैसी पहल में सार्वजनिक कार्यक्रमों के प्रदर्शन का आकलन करने में हितधारकों को शामिल करना शामिल है।

- **पारदर्शिता और सक्रिय प्रकटीकरण:** सूचना का अधिकार (आरटीआई) कानूनों के प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से पारदर्शिता को बढ़ावा देना सार्वजनिक अधिकारियों को कानून और संविधान का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। सूचना का सक्रिय प्रकटीकरण जनता को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करता है और उन्हें उन अधिकारों की पूर्ति पर सवाल उठाने में मदद करता है।
- **स्वतंत्र न्यायपालिका:** कानून के शासन को कायम रखना न्यायपालिका की स्वतंत्रता और प्रभावशीलता पर निर्भर करता है। प्रक्रिया ज्ञापन और ई-अदालतों के उपयोग जैसे उपाय जवाबदेही सुनिश्चित करने में न्यायपालिका की भूमिका को मजबूत कर सकते हैं।
- **आवधिक चुनाव:** चुनाव लोकतंत्र में जवाबदेही की अंतिम अभिव्यक्ति के रूप में कार्य करते हैं। वे जनता को उसके प्रदर्शन के आधार पर सरकार को पुरस्कृत या दंडित करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे सत्ता में बैठे लोगों पर नियंत्रण मिलता है। चुनाव सुधार और जागरूक एवं परिपक्व मतदाता जवाबदेही में योगदान करते हैं।

शासन में नैतिक मूल्यों का सुदृढीकरण

सुशासन प्रशासन और लोगों दोनों की जिम्मेदारी लेने की क्षमता पर निर्भर करता है। **–पीएम नरेंद्र मोदी।**

- **शासन:** यूएनडीपी के अनुसार, शासन का तात्पर्य किसी देश के मामलों के प्रबंधन के लिए राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक प्राधिकरण के प्रयोग से है। इसमें सरकारों, संस्थानों और प्राधिकारी पदों पर बैठे व्यक्तियों द्वारा की गई निर्णय लेने की प्रक्रियाएं, नीतियां और कार्य शामिल हैं।

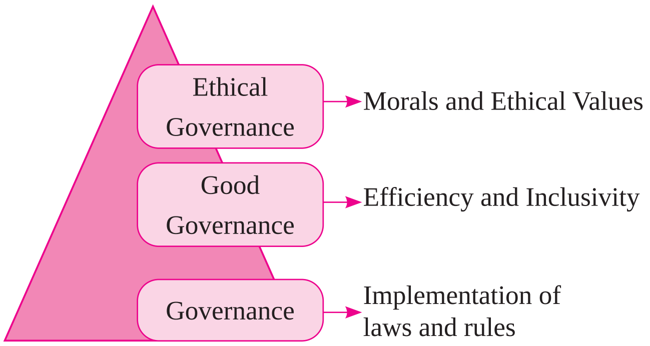

- **सुशासन:** विश्व बैंक सुशासन को उस तरीके के रूप में परिभाषित करता है जिसमें विकास के लिए देश के आर्थिक और सामाजिक संसाधनों के प्रबंधन में शक्ति का प्रयोग किया जाता है। यह प्रभावी और जवाबदेह संस्थानों, पारदर्शिता, कानून के शासन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नागरिकों की समावेशी भागीदारी की आवश्यकता पर जोर देता है।
- **संयुक्त राष्ट्र द्वारा सुशासन के आठ सिद्धांत:**
  1. **भागीदारी:** यह सिद्धांत शासन प्रक्रियाओं में महिलाओं, समाज के कमजोर वर्गों और हाशिए पर रहने वाले समूहों सहित सभी लोगों को शामिल करने के महत्व पर जोर देता है। यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने में उनकी आवाज सुनी जाए और उस पर विचार किया जाए।
  2. **कानून का शासन:** सुशासन के लिए कानूनी ढांचे के निष्पक्ष प्रवर्तन और अल्पसंख्यकों और कमजोर आबादी सहित मानव अधिकारों की सुरक्षा की आवश्यकता होती है। यह सुनिश्चित करता है कि कानून सभी व्यक्तियों पर समान रूप से लागू हों।

  3. **सर्वसम्मति उन्मुखी:** शासन का उद्देश्य पूरे समुदाय के सर्वोत्तम हितों की सेवा करने वाले निर्णयों तक पहुंचने के लिए विभिन्न हितों में मध्यस्थता और सामंजस्य स्थापित करना होना चाहिए। यह विभिन्न हितधारकों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देता है।
  4. **पारदर्शिता:** यह सिद्धांत जनता को आसानी से समझने योग्य रूप में पर्याप्त जानकारी प्रदान करने पर जोर देता है। पारदर्शिता निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में खुलापन, जवाबदेही और सार्वजनिक जांच सुनिश्चित करती है।
  5. **जवाबदेही:** सुशासन के लिए संस्थानों और नेताओं को नागरिकों की जरूरतों, चिंताओं और शिकायतों के प्रति उत्तरदायी होना आवश्यक है। इसमें नागरिक शिकायतों को संबोधित करना और उनका निवारण करना, समय पर और कुशल सेवाएं प्रदान करना और नागरिक-उन्मुख नीतियों को बढ़ावा देना शामिल है।
  6. **प्रभावी और कुशल:** शासन के परिणामस्वरूप संस्थानों के निपटान में संसाधनों का प्रभावी और कुशल उपयोग होना चाहिए। इसका लक्ष्य इष्टतम परिणाम प्राप्त करना और जनता को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करना है।
  7. **न्यायसंगत और समावेशी:** सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि सभी व्यक्ति और समूह शामिल महसूस

करें, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनकी हिस्सेदारी हो और अवसरों और संसाधनों तक उनकी समान पहुंच हो। यह निष्पक्षता को बढ़ावा देता है और असमानताओं को कम करता है।

8. **जवाबदेह:** जवाबदेही सुशासन का एक मूलभूत सिद्धांत है। इसमें कार्यों, निर्णयों, नीतियों और उनके परिणामों को स्वीकार करना और जिम्मेदारी लेना शामिल है। जवाबदेही शासन प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, अखंडता और विश्वास सुनिश्चित करती है।

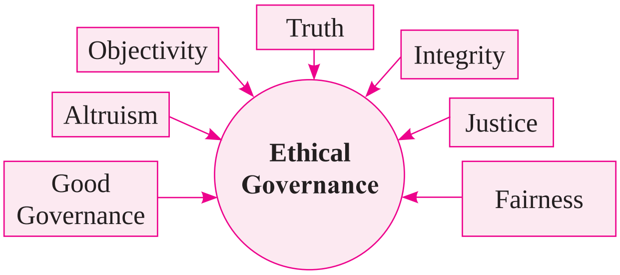

चित्र: नैतिक शासन के पहलू

- **नैतिक शासन:** नैतिक शासन सार्वभौमिक मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों के पालन को प्राथमिकता देता है, यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय और कार्य सच्चाई, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और सार्वजनिक हित द्वारा निर्देशित हों, अखंडता, विश्वास और मामलों के प्रभावी प्रबंधन को बढ़ावा दें।

नैतिक शासन का महत्व

भारत जैसे विशाल जनसंख्या और सीमित संसाधनों वाले देश में नैतिक शासन का महत्वपूर्ण महत्व है। यह शासन के कई प्रमुख पहलुओं के लिए आधार के रूप में कार्य करता है:

- **सामाजिक न्याय:** नैतिक शासन सामाजिक न्याय की संवैधानिक दृष्टि के अनुरूप है, असमानताओं को कम करने और सभी नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।
- **जनता का विश्वास:** सत्य और पारदर्शिता को बरकरार रखते हुए, नैतिक शासन जनता के विश्वास, सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देता है।
    - सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 जैसी पहल पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाती है।
- **मानवाधिकारों को कायम रखना:** नैतिक शासन सभी व्यक्तियों, विशेष रूप से समाज के हाशिए पर और कमजोर वर्गों के लिए बुनियादी मानवाधिकारों की सुरक्षा और पूर्ति को प्राथमिकता देता है।
    - राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम जैसे कानून जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन तक पहुंच सुनिश्चित करते हैं।
- **सार्वभौमिक मूल्य प्रणाली:** निष्पक्षता और निष्पक्षता में निहित नैतिक शासन, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं, नियुक्तियों और संसाधन आवंटन में भाई-भतीजावाद और पक्षपात का मुकाबला करता है।
- **दक्षता:** ईमानदारी और नैतिक आचरण द्वारा निर्देशित नैतिक शासन, यह सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक संसाधनों का उपयोग प्रभावी ढंग से और कुशलता से किया जाए, जिससे भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन का जोखिम कम हो।
- **करुणा:** नैतिक शासन समाज के गरीबों और कमजोर वर्गों की जरूरतों पर विशेष ध्यान देते हुए करुणा पर जोर देता है। किफायती किराये की आवास योजना जैसी पहल का उद्देश्य प्रवासी श्रमिकों के लिए किफायती आवास प्रदान करना है।

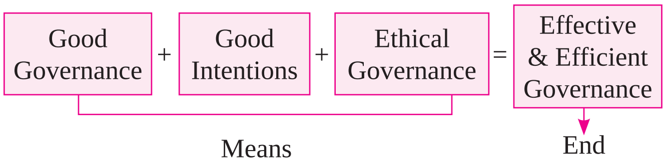

> जहां पारदर्शिता से भ्रष्टाचार कम होता है, वहीं सुशासन पारदर्शिता से आगे बढ़कर खुलापन प्राप्त करता है। खुलेपन का अर्थ है निर्णय लेने की प्रक्रिया में हितधारकों को शामिल करना। पारदर्शिता सूचना का अधिकार है जबकि खुलापन भागीदारी का अधिकार है। **–पीएम नरेंद्र मोदी**

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और वित्त पोषण में नैतिक मुद्दे

- अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता **सार्वभौमिक मानकों और मूल्यों के एक समूह को संदर्भित करती है** जो राष्ट्रों के अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में उनके व्यवहार और कार्यों का मार्गदर्शन और विनियमन करते हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** अधिकांश देश बुनियादी सिद्धांतों के एक समूह के रूप में बुनियादी मानवाधिकारों को कायम रखते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।
- अंतरराष्ट्रीय संबंधों और फंडिंग में नैतिक मुद्दे जटिल और बहुआयामी हैं, जो वैश्विक मामलों में निष्पक्षता, न्याय और जवाबदेही के सिद्धांतों के लिए चुनौतियां पैदा करते हैं।
- ये मुद्दे मानवीय सहायता, आर्थिक विकास, पर्यावरण संबंधी चिंताएँ, मानवाधिकार और भू-राजनीतिक शक्ति गतिशीलता जैसे विविध संदर्भों से उत्पन्न होते हैं।
- वैश्विक स्तर पर स्थिरता, सहयोग और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए इन नैतिक चिंताओं को संबोधित करना महत्वपूर्ण है।

अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता का महत्व

अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता का महत्व बहुआयामी है और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहां इसके महत्व का विस्तृत विवरण दिया गया है:

- **जिम्मेदारी:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता समृद्ध राष्ट्रों को कम विकसित देशों की प्रगति में योगदान देने और मानव विकास के लिए साझा जिम्मेदारी सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार ठहराती है।
  - **उदाहरण:** पेरिस जलवायु समझौता और सामान्य, लेकिन विभेदित जिम्मेदारियाँ (सीबीडीआर सिद्धांत)।
- **मानवीय नैतिकता:** अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता विज्ञान, रक्षा और सुरक्षा में प्रगति को मानव अधिकारों का उल्लंघन करने से रोकती है, हथियार के दुरुपयोग को रोकने के लिए एमटीसीआर और ऑस्ट्रेलिया समूह जैसे संगठनों के माध्यम से सहयोग को बढ़ावा देती है।
- **करुणा:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता चुनौतीपूर्ण समय के दौरान राष्ट्रों के बीच एकजुटता को बढ़ावा देती है, जिसका उदाहरण गरीब राष्ट्रों को COVID-19 टीकाकरण प्रदान करने के लिए सहयोग है।

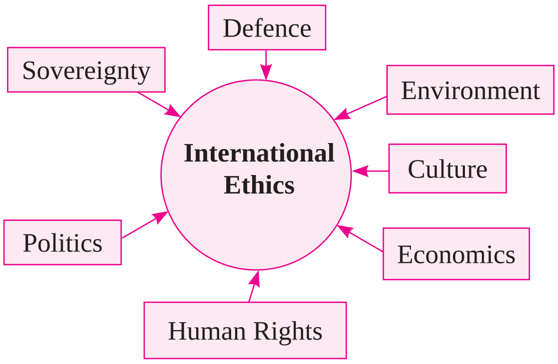

- **शांति और सद्भाव:** अंतरराष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण आचरण और समानता को बढ़ावा देती है, जिसका उदाहरण शांति के लिए वैश्विक प्रयास के रूप में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना है।
- **वैधता:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता नैतिक सिद्धांतों और अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के पालन के आधार पर राष्ट्रों को वैधता प्रदान करती है, जबकि उल्लंघन करने वालों को अंतर्राष्ट्रीय वैधता खोने का जोखिम होता है, जैसा कि अफगानिस्तान में तालिबान के साथ देखा गया है।
- **मानवाधिकार संरक्षण:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता राष्ट्रों को मानवाधिकारों को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करती है, जिसका उदाहरण शरणार्थी संकटों को संबोधित करने और लैंगिक समानता की वकालत करने में सहयोग है।
- **वैश्विक समस्याओं का समाधान:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता आतंकवाद जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए राष्ट्रों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों को प्रोत्साहित करती है, जैसा कि खुफिया जानकारी साझा करने और समन्वित कार्यों के माध्यम से देखा जाता है।
- **व्यावसायिक नैतिकता:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता सुनिश्चित करती है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ नैतिक रूप से काम करें, उचित करों का भुगतान करें और वैश्विक न्यूनतम कर समझौते और आधार क्षरण और लाभ स्थानांतरणसे निपटने जैसी पहलों के साथ समाज में योगदान करें।
- **नस्लवाद:** अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता राष्ट्रों को नीतियों से नस्लवाद को मिटाने के लिए मजबूर करती है, अंतर्राष्ट्रीय दबाव दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद को समाप्त करने में भूमिका निभाता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिक चिंताएँ

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिक चिंताओं में उन मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो राष्ट्रों के बीच बातचीत और वैश्विक समुदायों पर उनके प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। ये चिंताएँ वैश्विक चुनौतियों से निपटने में नैतिक विचारों और जिम्मेदार कार्यों की आवश्यकता को दर्शाती हैं। यहाँ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में कुछ प्रमुख नैतिक चिंताएँ हैं:

- **जिम्मेदारी और समानता का अभाव:** जलवायु परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक रूप से जिम्मेदार विकसित देश अक्सर अपने कार्यों के लिए पर्याप्त जिम्मेदारी लेने में विफल रहते हैं। जवाबदेही की यह कमी विकासशील और अल्प विकसित देशों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है, जो इसके कारणों में महत्वपूर्ण योगदान दिए बिना जलवायु परिवर्तन के परिणामों का खामियाजा भुगतते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता: संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन जैसे दुनिया के कुछ सबसे बड़े ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जकों ने अभी तक समझौते की पुष्टि नहीं की है। प्रमुख देशों द्वारा अनुसमर्थन की यह कमी पेरिस समझौते की प्रभावशीलता और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की इसकी क्षमता को कमजोर करती है।
- **वैश्विक गरीबी:** समृद्ध और गरीब राष्ट्रों के बीच तीव्र अंतर समान संसाधन वितरण और बुनियादी मानवाधिकारों तक पहुंच के बारे में नैतिक प्रश्न उठाता है। जबकि अमीर देशों में लोग प्रचुर संसाधनों और एक शानदार जीवन शैली का आनंद लेते हैं, गरीब देशों में लोगों के पास अक्सर भोजन, स्वच्छ पानी, स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा जैसी सबसे बुनियादी आवश्यकताओं तक भी पहुंच नहीं होती है।
  - **उदाहरण के लिए,** विश्व बैंक की अत्यधिक गरीबी की परिभाषा: विश्व बैंक अत्यधिक गरीबी को प्रति दिन +1.90 से कम पर जीवन यापन करने के रूप

में परिभाषित करता है। विश्व बैंक के अनुसार, 2015 में 689 मिलियन लोग अत्यधिक गरीबी में रह रहे थे। हालाँकि, यह संख्या आज अधिक होने की संभावना है, क्योंकि COVID-19 महामारी ने लाखों और लोगों को गरीबी में धकेल दिया है।

- **तीसरी दुनिया के प्रति उदासीनता:** संकट के समय में, देश वैश्विक हितों पर अपने स्वयं के हितों को प्राथमिकता देते हैं। यह आत्म-केंद्रित दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में बाधा डाल सकता है, संघर्षों को बढ़ा सकता है और गरीबी, जलवायु परिवर्तन और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के सामूहिक प्रयासों में बाधा डाल सकता है।
  - **उदाहरण के लिए,** रोहिंग्या शरणार्थी संकट तब उभरा जब 2017 में म्यांमार की सेना ने रोहिंग्या अल्पसंख्यकों पर अत्याचार किया, जिसके कारण उनका बांग्लादेश में विस्थापन हुआ। अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया अपर्याप्त रही है एवं देश रोहिंग्या शरणार्थियों को स्वीकार करने में झिझक रहे हैं। इसे रोहिंग्या के साथ विश्वासघात और वैश्विक एकजुटता की विफलता के रूप में देखा गया है।
- **जवाबदेही का अभाव:** वैश्विक संस्थाएँ अक्सर जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष करती हैं, विशेषकर शक्तिशाली देशों के बीच। जवाबदेही की इस कमी के कारण अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन, मानवाधिकारों का हनन और वैश्विक शासन प्रणालियों में विश्वास का ह्रास हो सकता है।
  - **उदाहरण के लिए,** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद संयुक्त राष्ट्र के भीतर सैन्य कार्रवाई और प्रतिबंधों पर अधिकार रखने वाली प्रभावशाली संस्था है। हालाँकि, इसे जवाबदेही की कमी के लिए आलोचना का सामना करना पड़ता है, जिसमें कुछ देशों द्वारा मानवाधिकारों के हनन को संबोधित करने में विफलता भी शामिल है।
- **स्वार्थ:** राष्ट्र अक्सर वैश्विक समुदाय की सामूहिक भलाई पर अपने स्वयं के संकीर्ण स्वार्थों को प्राथमिकता देते हैं। इसे बाजार की कीमतों में हेरफेर करने के लिए ओपेक देशों द्वारा कच्चे तेल के नियंत्रित उत्पादन या COVID-19 टीकों के लिए पेटेंट छूट पर आम सहमति की कमी, जीवन रक्षक उपचारों तक समान पहुंच में बाधा जैसी कार्रवाइयों के रूप में देखा जा सकता है।
- **सार्वभौमिक मानकों का अभाव:** अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सार्वभौमिक मानकों के अभाव के परिणामस्वरूप अक्सर निर्णय लेने में असंगतता होती है और वैश्विक सिद्धांतों पर राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी जाती है।
  - मानवाधिकारों या अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के उल्लंघन के बावजूद सहयोगियों का समर्थन या रक्षा करते हैं।
- **नस्लवाद:** नस्लवाद दुनिया भर में एक व्यापक समस्या बनी हुई है, कई समाजों में नस्ल या जातीयता के आधार पर प्रणालीगत भेदभाव और असमान व्यवहार जारी है। नस्लवाद को संबोधित करने के लिए समानता, समावेशिता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थानों सहित सभी स्तरों पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।
  - **उदाहरण के लिए,** ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन विश्व स्तर पर काले लोगों के खिलाफ नस्लवाद और पुलिस की बर्बरता का विरोध करता है। इसने नस्लवाद के बारे में जागरूकता बढ़ाई है और कॉन्फेडरेट मूर्तियों को हटाने जैसे बदलावों को जन्म दिया है। हालाँकि, नस्लवाद अभी भीकायम है, और इसके उन्मूलन हेतु और प्रयासों की आवश्यकता है।
- **कमजोर होती वैश्विक संस्थाएँ:** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित वैश्विक संस्थाओं में वर्तमान वास्तविकताओं को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करने और समकालीन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने के लिए सुधार की आवश्यकता है। समय पर सुधारों और बदलती भू-राजनीतिक गतिशीलता के प्रति अनुकूलन की कमी वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने में इन संस्थानों की वैधता और प्रभावशीलता को कमजोर कर सकती है।
  - **उदाहरण के लिए,** डब्ल्यूटीओ ने उच्च कार्बन उत्सर्जन वाले देशों में उत्पादित वस्तुओं पर टैरिफ लगाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया है। इस निर्णय की पर्यावरण समूहों द्वारा आलोचना की गई है, जिनका तर्क है कि इससे जलवायु परिवर्तन से निपटना और अधिक कठिन हो जाएगा।
- **संकट और सहयोग की आवश्यकता वाले समय में नैतिकता का अभाव:** निष्पक्षता, न्याय, मानवाधिकार और पर्यावरणीय स्थिरता जैसे सिद्धांतों द्वारा निर्देशित नैतिक निर्णय अक्सर राजनीतिक विचारों और अल्पकालिक हितों से कमजोर हो जाते हैं। यह वैश्विक समस्याओं का स्थायी और न्यायसंगत समाधान खोजने की क्षमता से समझौता करता है।
  - **उदाहरण के लिए,** कुछ देशों ने COVID-19 टीकों की जमाखोरी कर ली है, जबकि अन्य ने वायरस के बारे में डेटा साझा करने से इनकार कर दिया है। इससे प्रभावी टीके और उपचार विकसित करना अधिक कठिन हो गया है और इससे महामारी लंबी हो गई है।

अंतर्राष्ट्रीय निधियन में नैतिक मुद्दे

अंतर्राष्ट्रीय फंडिंग का तात्पर्य अमीर और उन्नत देशों द्वारा गरीब देशों को विकासात्मक, सुरक्षा और अन्य उद्देश्यों के लिए दी जाने वाली सहायता से है। हालाँकि, यह सहायता निम्नलिखित नैतिक मुद्दे प्रस्तुत करती है:

- **राष्ट्रों की संप्रभुता को नष्ट करना:** फंडिंग पर दाता की शर्तें प्राप्तकर्ता देशों की संप्रभुता और निर्णय लेने पर उल्लंघन कर सकती हैं।
  - **उदाहरण:** आईएमएफ ने 1991 में वित्तीय संकट के दौरान भारत पर विशिष्ट नीतियां लागू कीं।
- **मजबूरी का फायदा उठाना:** शक्तिशाली देश अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए प्राप्तकर्ता राष्ट्रों की कमजोरियों का फायदा उठा सकते हैं।
  - **उदाहरण:** चीन की ऋण-जाल कूटनीति गरीब देशों में बुनियादी ढांचे की जरूरतों का फायदा उठा रही है।
- **एनजीओ को फंडिंग:** एनजीओ को फंडिंग प्रदान करने वाले दाता देश चिंता पैदा कर सकते हैं यदि यह उनके अपने हितों की पूर्ति करता है या प्राप्तकर्ता देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता है।
  - **उदाहरण:** यह आरोप लगाया गया है कि कुछ गैर सरकारी संगठनों को भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के लिए धन प्राप्त हुआ।
- **क्लिनिकल परीक्षण:** धन उपलब्ध कराते हुए गरीब देशों में क्लिनिकल परीक्षण आयोजित करना सूचित सहमति और प्रतिभागियों के अधिकारों की सुरक्षा के बारे में नैतिक प्रश्न उठा सकता है।
  - **उदाहरण:** गरीब अफ्रीकी देश बड़ी दवा कंपनियों के क्लिनिकल परीक्षणों के केंद्र रहे हैं।
- **नव-उपनिवेशवाद:** अंतर्राष्ट्रीय फंडिंग और बाजार रणनीति आर्थिक निर्भरता स्थापित करके और स्थानीय संस्कृतियों को नष्ट करके नव-उपनिवेशवाद को बढ़ावा दे सकती है।
  - **उदाहरण:** बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर प्राप्तकर्ता देशों में पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा देने का आरोप लगाया गया।
- **आतंक वित्तपोषण:** अवैध फंडिंग चौनलों का उपयोग आतंकवाद के वित्तपोषण या मनी लॉन्ड्रिंग के लिए किया जा सकता है, जिससे सुरक्षा जोखिम पैदा हो सकता है और नैतिक सिद्धांतों का उल्लंघन हो सकता है।
  - **उदाहरण:** आतंकवादी गतिविधियों और काले धन को इधर-उधर करने के लिए अंतरराष्ट्रीय फंडिंग के दुरुपयोग के उदाहरण

अंतर्राष्ट्रीय नैतिक मुद्दों से निपटने के लिए वैश्विक प्रयास

मुद्दे और वैश्विक प्रयास

मानवाधिकार उल्लंघन के मुद्दे

- **राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है:** राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप अक्सर मानवाधिकारों का हनन होता है।
- **विदेश नीति के एक उपकरण के रूप में आतंकवाद:** कुछ राज्य अपनी विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में आतंकवाद को नियोजित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान का लश्कर और जैश-ए-मोहम्मद को समर्थन या ईरान का हिजबुल्लाह को समर्थन।
- **शरणार्थी मुद्दा:** यूरोपीय देशों ने युद्धग्रस्त क्षेत्रों से भागने वाले शरणार्थियों के लिए अपनी सीमाएं बंद कर दी हैं, जिससे कमजोर आबादी आवश्यक सुरक्षा और समर्थन के बिना रह गई है।

वैश्विक प्रयास

- **मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (यूडीएचआर):** यूडीएचआर मौलिक अधिकारों और स्वतंत्रता की रूपरेखा तैयार करता है जिसके सभी व्यक्ति हकदार हैं, जिसमें नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार शामिल हैं।
- **मानवाधिकार परिषद और मानवाधिकार उच्चायुक्त का कार्यालय (ओएचसीएचआर):** मानवाधिकार परिषद, ओएचसीएचआर के साथ, दुनिया भर में मानवाधिकारों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने, उल्लंघनों की जांच करने और कार्रवाई के लिए सिफारिशें करने के लिए काम करती है।
- **एमनेस्टी इंटरनेशनल:** मानवाधिकारों की वकालत करने वाले स्वयंसेवकों का एक अंतरराष्ट्रीय संगठन, एमनेस्टी इंटरनेशनल मानवाधिकारों के हनन, जागरूकता बढ़ाने और बदलाव के लिए दबाव डालने पर स्वतंत्र रिपोर्ट तैयार करता है।
- **देशों के प्रयास:** भारत और बांग्लादेश जैसे देशों ने शरणार्थी संकट से निपटने के लिए मानवीय दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हुए रोहिंग्या शरणार्थियों को आश्रय और सहायता प्रदान की है।

- **मानवीय सहायता:** वैश्विक प्रयास भोजन की कमी और अन्य तत्काल जरूरतों के जवाब में आवश्यक वस्तुएं और सहायता प्रदान करके अफगानिस्तान जैसे संघर्ष क्षेत्रों में कठिनाई को कम करने पर केंद्रित हैं।
- **संयुक्त राष्ट्र शांति सेना:** संघर्ष क्षेत्रों में शांति और सद्भाव स्थापित करने के लिए तैनात, संयुक्त राष्ट्र शांति सेना मिशन मानवाधिकारों की रक्षा और कमजोर आबादी की रक्षा करने में मदद करते हैं।

जलवायु परिवर्तन के मुद्दे

- **अंतर्राष्ट्रीय समानता संबंधी चिंताएँ:** जलवायु परिवर्तन के लिए सबसे कम जिम्मेदार और इसके प्रभावों से निपटने की सीमित आर्थिक क्षमता वाले देश अक्सर सबसे अधिक प्रभावित होते हैं, जैसा कि मार्शल द्वीप समूह के मामले में देखा गया है।
- **सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियाँ:** जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने में वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के बीच और विकसित और विकासशील देशों के बीच जिम्मेदारियों को परिभाषित करने और अलग-अलग करने में चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।
- **जलवायु परिवर्तन पर संदेह:** कुछ व्यक्ति या समूह जलवायु परिवर्तन की वास्तविकता को नकारते हैं या उसकी उपेक्षा करते हैं, जिससे इस मुद्दे के समाधान के वैश्विक प्रयासों में बाधा आती है।

वैश्विक प्रयास

- **मजबूत जलवायु कार्रवाई के लिए प्रतिबद्धता:** देश जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए महत्वपूर्ण कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जिसमें स्थायी जीवन शैली, सचेत उपभोग और अपशिष्ट में कमी को बढ़ावा देना शामिल है।
- **वित्तीय उपकरण:** धन जुटाने और टिकाऊ प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न वित्तीय तंत्र, जैसे कि प्रदूषक वेतन सिद्धांत, कार्बन टैक्स, ऊर्जा बचत प्रमाणपत्र और हरित बांड, अपनाए जाते हैं।
- **मिशन इनोवेशन:** यह स्वच्छ ऊर्जा नवाचार में तेजी लाने के लिए 22 देशों और यूरोपीय संघ को शामिल करने वाली एक वैश्विक पहल है जिसमें पांच वर्षों में सरकारों के स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान एवं विकास निवेश को दोगुना करने की प्रतिबद्धता शामिल है।
- **आर्थिक विकास को उत्सर्जन से अलग करना:** प्रयास ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करते हुए, सतत विकास को बढ़ावा देते हुए आर्थिक विकास प्राप्त करने पर केंद्रित हैं।
- **ग्लासगो जलवायु शिखर सम्मेलन:** प्रमुख देशों ने कार्बन तटस्थ बनने के लिए अपने लक्ष्यों का खुलासा किया है, और जलवायु वित्त और जलवायु वित्त वितरण योजना के संबंध में चर्चा हुई है।
- **स्वच्छ विकास तंत्र (सीडीएम):** उत्सर्जन में कमी लाने के लिए क्योटो प्रोटोकॉल के तहत स्थापित एक बाजार तंत्र, विकसित देशों को विकासशील देशों में उत्सर्जन-कटौती परियोजनाओं को लागू करने और प्रमाणित उत्सर्जन कटौती (सीईआर) क्रेडिट अर्जित करने की अनुमति देता है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों पर ध्यान:** सहयोग को सुविधाजनक बनाने और जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना पर जोर दिया गया है।
- **हरित आवरण को बढ़ाना:** हरित आवरण का विस्तार करने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को अवशोषित करने के लिए अधिक कार्बन सिंक बनाने के प्रयास किए जाते हैं।

अन्य मामले

- **कोविड-19 जैसी जूनोटिक बीमारियाँ:** जूनोटिक बीमारियों का उद्भव और प्रसार वैश्विक चुनौतियाँ पैदा करता है, जिसके लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और तैयारी की आवश्यकता होती है।
- **अत्यधिक मछली पकड़ना:** मछली पकड़ने की अस्थिर प्रथाओं के कारण समुद्री संसाधनों की कमी से पारिस्थितिकी तंत्र और दुनिया भर में मछली पकड़ने वाले समुदायों की आजीविका को खतरा है।
- **प्लास्टिक कचरे का संचय:** महासागरों और स्थलीय वातावरण में प्लास्टिक कचरे के अत्यधिक संचय से वन्यजीवों, पारिस्थितिक तंत्र और मानव स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।
- **अंतरिक्ष मलबे का संचय:** अंतरिक्ष मलबे का प्रसार उपग्रहों और अंतरिक्ष गतिविधियों के लिए जोखिम पैदा करता है, जिससे अंतरिक्ष मलबे को कम करने और प्रबंधित करने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता होती है।

वैश्विक प्रयास

- **जूनोटिक रोगों की निगरानी करने वाला WHO पैनल:** विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जूनोटिक रोगों की निगरानी करने, वैश्विक तैयारियों को बढ़ाने और समन्वित प्रतिक्रियाओं की सुविधा के लिए एक पैनल की स्थापना की है।

- **टीका विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** जूनोटिक रोगों से निपटने के लिए टीके विकसित करने के लिए सहयोगात्मक प्रयास चल रहे हैं, जैसा कि कोविड-19 की वैश्विक प्रतिक्रिया में देखा गया है।
- **पेटेंट छूट के लिए रूपरेखा:** आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल प्रौद्योगिकियों तक समान पहुंच सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, कोविड-19 जैसी जूनोटिक बीमारियों के लिए दवाओं, टीकों और चिकित्सा उपकरणों से संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकारों को माफ करने के संबंध में चर्चा चल रही है।
- **आईपीआर के प्रवर्तन के लिए दिशानिर्देश:** विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) ने नवाचार की रक्षा और महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों तक पहुंच सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाते हुए बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रवर्तन के लिए दिशानिर्देश स्थापित किए हैं।
- **अनिवार्य लाइसेंसिंग:** आपात स्थिति में, अनिवार्य लाइसेंसिंग को लागू करने का प्रावधान है, जिससे देशों को सार्वजनिक स्वास्थ्य संकटों से निपटने के लिए आवश्यक दवाओं और प्रौद्योगिकियों के उत्पादन के लिए लाइसेंस देने की अनुमति मिलती है।

अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता सार्वभौमिक मूल्यों का एक समूह है जो राष्ट्र-राज्यों के कार्यों और व्यवहारों को नियंत्रित करता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राज्य को कर्ता कहा जाता है। इसलिए, सभी निर्णयों को राज्य के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए इसे और आगे बढ़ाना चाहिए (मैकियावेलियन नैतिकता) लेकिन इसे नैतिकता के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

निगमित शासन

- कैडबरी समिति के अनुसार, निगमित प्रशासन वह प्रणाली है जिसके द्वारा कंपनियों को निर्देशित और नियंत्रित किया जाता है ताकि इसे सभी हितधारकों और बड़े पैमाने पर समाज के सर्वोत्तम हित में चलाया जा सके।
- यह प्रणालियों, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों का एक समूह है जो निगमित निष्पक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना सुनिश्चित करता है।
- किसी कंपनी के प्रभावी प्रबंधन और निरीक्षण के लिए निगमित प्रशासन महत्वपूर्ण है।
- इसमें संरचनाएं, तंत्र और प्रथाएं शामिल हैं जो निगमित संस्थाओं के व्यवहार और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं का मार्गदर्शन और विनियमन करती हैं।
- निगमित प्रशासन का प्राथमिक उद्देश्य शेयरधारकों, कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और व्यापक समुदाय सहित विभिन्न हितधारकों के हितों की रक्षा करना है।

- **उदाहरण:** एक कंपनी का निदेशक मंडल एक नई फर्म के संभावित अधिग्रहण पर विचार करने के लिए बैठक करता है। बोर्ड के सदस्य इसे मंजूरी देने के लिए मतदान करने से पहले लेनदेन के जोखिमों और लाभों का सावधानीपूर्वक मूल्यांकन करते हैं। चूँकि बोर्ड कंपनी के शेयरधारकों के सर्वोत्तम हित में काम कर रहा है, इसलिए अधिग्रहण प्रक्रिया सभी हितधारकों को ध्यान में रखते हुए की जाती है, यह उत्कृष्ट निगमित प्रशासन का एक उदाहरण है।

चित्र: निगमित प्रशासन के सिद्धांत

निगमित शासन के प्रमुख तत्व

- **निदेशक मंडल:** बोर्ड निगमित प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, रणनीतिक दिशा प्रदान करता है और जवाबदेही सुनिश्चित करता है। यह शीर्ष अधिकारियों की नियुक्ति, प्रदर्शन की निगरानी और महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार है। इसके अलावा, निगमित कामकाज में ईमानदारी सुनिश्चित करने के लिए अब स्वतंत्र निदेशकों की नियुक्ति की जाती है।
- **शेयरधारक अधिकार:** निगमित प्रशासन शेयरधारक अधिकारों की सुरक्षा पर जोर देता है, जिसमें वोट देने, जानकारी तक पहुंचने और निवेश पर उचित रिटर्न प्राप्त करने का अधिकार शामिल है। शेयरधारकों के पास कंपनी के निर्णयों को प्रभावित करने और प्रबंधन को जवाबदेह ठहराने की शक्ति होती है।
- **नैतिकता और सत्यनिष्ठा:** निगमित प्रशासन किसी संगठन के भीतर नैतिक व्यवहार और सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देता है। इसमें आचार संहिता स्थापित करना, कानूनों और विनियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना और पारदर्शिता, ईमानदारी और निष्पक्षता की संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है।

- उदाहरण: एक कंपनी का निदेशक मंडल शेयरधारकों के सर्वोत्तम हित में कार्य करके, हितों के टकराव से बचकर और अपने निर्णय लेने में पारदर्शी होकर उच्चतम नैतिक मानकों को कायम रखता है।

- **पारदर्शिता और प्रकटीकरण:** कंपनियों से अपेक्षा की जाती है कि वे शेयरधारकों और हितधारकों को समय पर और सटीक जानकारी प्रदान करें। पारदर्शिता में वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम और अन्य भौतिक जानकारी का स्पष्ट संचार शामिल है। प्रकटीकरण की आवश्यकताएं विभिन्न न्यायालयों में अलग-अलग होती हैं लेकिन आम तौर पर इसका उद्देश्य निवेशकों का विश्वास और बाजार दक्षता बढ़ाना होता है।
- **जोखिम प्रबंधन:** प्रभावी निगमित प्रशासन में उन जोखिमों की पहचान करना और प्रबंधन करना शामिल है जो कंपनी के प्रदर्शन और प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकते हैं। इसमें जोखिम मूल्यांकन प्रक्रियाओं, आंतरिक नियंत्रण और जोखिम शमन रणनीतियों को लागू करना शामिल है।
- **जवाबदेही और लेखा परीक्षण:** निगमित प्रशासन अधिकारियों और बोर्ड के प्रदर्शन की निगरानी और मूल्यांकन के लिए तंत्र स्थापित करके जवाबदेही पर जोर देता है। बाहरी लेखा परीक्षक वित्तीय पारदर्शिता सुनिश्चित करने और कंपनी के वित्तीय विवरणों का स्वतंत्र सत्यापन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **हितधारक जुड़ाव:** अच्छा निगमित प्रशासन सभी हितधारकों के हितों पर विचार करता है और उनके साथ बातचीत और जुड़ाव को प्रोत्साहित करता है। इसमें कर्मचारी, ग्राहक, आपूर्तिकर्ता, स्थानीय समुदाय और कंपनी के संचालन से प्रभावित अन्य संबंधित पक्ष शामिल हैं।

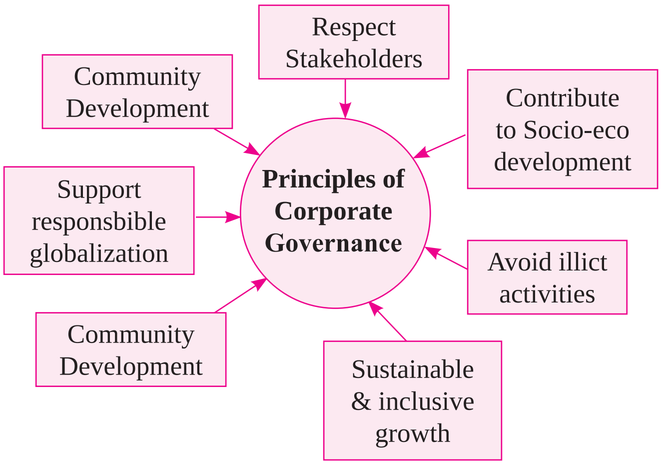

अच्छे निगमित शासन का महत्व

निगमित प्रशासन का महत्व महत्वपूर्ण है और इसे विभिन्न पहलुओं में देखा जा सकता है:

- **शेयरधारक अधिकारों की सुरक्षा:** यह शेयरधारकों के हितों की रक्षा करता है और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में आवाज प्रदान करता है।

4 Pillart of Corporate Governance	
Fairness	Protection of shareholders' right, equitable treatment and redressal of violations
Independence	Minimise or avoid conflict of interest and independent directors and advisors
Accountability	Management is accountable to board and board to shareholders
Transparency	Timely accurate disclosure on all material matters

- **निवेशकों का बढ़ा हुआ विश्वास:** सुशासन प्रथाएँ पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक आचरण को बढ़ावा देती हैं, जो निवेशकों को आकर्षित करती हैं और कंपनी में उनका विश्वास बढ़ाती हैं।
- **बेहतर वित्तीय प्रदर्शन:** प्रभावी प्रशासन जोखिमों को कम करके, परिचालन दक्षता को बढ़ाकर और पूंजी को आकर्षित करके बेहतर वित्तीय प्रदर्शन और दीर्घकालिक स्थिरता में योगदान देता है।
- **हितधारक विश्वास और प्रतिष्ठा:** मजबूत निगमित प्रशासन कर्मचारियों, ग्राहकों और समुदाय सहित हितधारकों के बीच विश्वास को बढ़ावा देता है, जो कंपनी की प्रतिष्ठा और ब्रांड मूल्य को बढ़ाता है।
- **कानूनी और नियामक आवश्यकताओं का अनुपालन:** सुशासन कानूनों, विनियमों और निगमित प्रशासन कोडों का अनुपालन सुनिश्चित करता है, जिससे कानूनी और प्रतिष्ठित मुद्दों का जोखिम कम हो जाता है।
- **कुशल निर्णय लेना:** स्पष्ट शासन संरचनाएं और प्रक्रियाएं कुशल निर्णय लेने में सक्षम बनाती हैं, जिससे बाजार में बदलावों के अवसर पर त्वरित प्रतिक्रिया देने की सुविधा मिलती है।
- **दीर्घकालिक मूल्य निर्माण:** निगमित प्रशासन दीर्घकालिक रणनीतिक लक्ष्यों के साथ अल्पकालिक उद्देश्यों को संतुलित करते हुए स्थायी विकास और मूल्य निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **प्रीमियम:** सुशासित कंपनियां बाजार में प्रीमियम कमाती हैं, निवेशक अपनी विश्वसनीयता और कम जोखिम के कारण शेयरों के लिए अधिक भुगतान करने को तैयार रहते हैं।

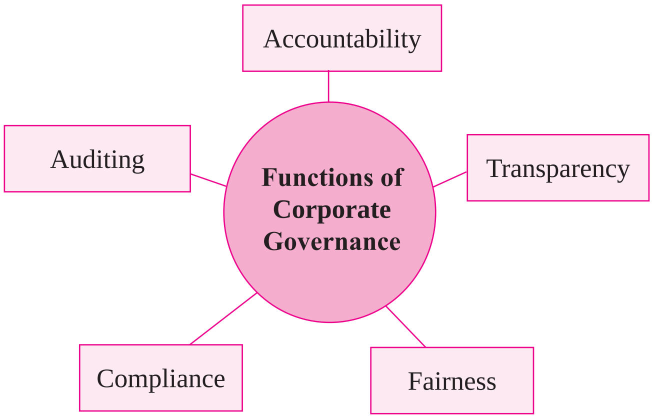

- **विदेशी निवेश:** पारदर्शी और जवाबदेह निगमित प्रथाएँ विदेशी निवेश को आकर्षित करती हैं, क्योंकि वे एक अच्छी तरह से प्रबंधित इकाई का विश्वास और आश्वासन प्रदान करती हैं।
- **कमजोर कानूनों के लिए मुआवजा:** मजबूत फर्म-स्तरीय प्रशासन निगमित कानूनों या उनके प्रवर्तन में कमियों को दूर कर सकता है, क्योंकि यह अखंडता और निष्पक्षता को कायम रखता है।
- **भ्रष्टाचार का शमन:** प्रभावी शासन संरचनाएं और नीतियां धोखाधड़ी और घोटालों की संभावना को कम करती हैं, नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देती हैं और भ्रष्टाचार के जोखिम को कम करती हैं।
- **निगमित स्थिरता:** हितधारक-केंद्रित शासन विश्वास बनाता है और कंपनी के कार्यों को अपेक्षाओं और जरूरतों के साथ जोड़कर दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करता है।
- **भाई-भतीजावाद पर अंकुश:** सुशासन प्रथाएं योग्यता और समान अवसरों को महत्व देती हैं, निर्णय लेने में भाई-भतीजावाद और पक्षपात पर अंकुश लगाती हैं।
- **आंतरिक जांच और संतुलन:** मजबूत प्रशासन कुप्रबंधन, हितों के टकराव और संसाधनों के दुरुपयोग को रोकने, जवाबदेही और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए तंत्र स्थापित करता है।

भारत में निगमित प्रशासन के मुद्दे

- **गठजोड़:** कंपनियां निवेशकों, नियामकों और हितधारकों को धोखा देने के लिए लेखा परीक्षकों के साथ मिलीभगत करती हैं, जैसा कि सत्यम घोटाले और डीएचएफएल मामले जैसे मामलों में देखा गया है।
- **उच्च जोखिम:** कंपनी के मालिक अपनी व्यक्तिगत क्षमता में महत्वपूर्ण जोखिम उठा रहे हैं और चुकाने में असमर्थ हैं, जैसे कि कैफे कॉफी डे मामले में वी. सिद्धार्थ।
- **प्रमोटर-नेतृत्व वाला बोर्ड:** प्रमोटरों की अध्यक्षता वाले बोर्ड, जिससे संभावित हितों का टकराव होता है और निर्णय लेने में स्वतंत्रता की कमी होती है, जिसका उदाहरण जेट एयरवेज में नरेश गोयल ने प्रस्तुत किया है।
- **निगरानी की कमी:** कमजोर प्रवर्तन तंत्र और वैधानिक परिवर्तनों के बावजूद खराब निगरानी, ऋण देने वाले संस्थानों में पक्षपात की अनुमति देती है (उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई बैंक, चंदा कोचर मामला)।
- **स्वतंत्रता का अभाव:** स्वतंत्र निदेशकों को निर्णय लेने में दबाव और सीमाओं का सामना करना पड़ता है, जैसा कि टाटा-मिस्त्री मामले में देखा गया।
- **क्रोनी कैपिटलिज्म:** करीबी सहयोगियों को पारस्परिक लाभ दिया गया, जिससे अनुचित लाभ हुआ, जैसे कि कोयला घोटाले में कैप्टिव कोयला ब्लॉक आवंटन।
- **क्रेडिट रेटिंग मुद्दे:** हितों का टकराव, सूचना अंतराल और गैर-रेटिंग व्यवसाय क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों की विश्वसनीयता को प्रभावित करते हैं, जैसा कि हाल के आईएल एंड एफएस संकट में देखा गया है।

भारत में नैतिक निगमित प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा उपाय और पहल

- **कंपनी अधिनियम, 2013:** भारत में कंपनियों के निगमितन, निर्माण और कामकाज को नियंत्रित करता है, शेयरधारकों को सशक्त बनाता है और निगमित प्रशासन के लिए उच्च मूल्यों पर जोर देता है।
- **प्रतिभूति अनुबंध (विनियमन) अधिनियम, 1956:** इसका उद्देश्य व्यापारिक लेनदेन को विनियमित करके प्रतिभूतियों में अवांछित लेनदेन को रोकना है।
- **भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग:** प्रतिस्पर्धा संस्कृति को बढ़ावा देने और बनाए रखने, एकाधिकारवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने और निष्पक्ष और नवीन व्यावसायिक प्रथाओं को प्रेरित करने के लिए स्थापित किया गया।
- **राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण:** नागरिक प्रकृति के निगमित विवादों से निपटता है और दिवाला और दिवालियापन संहिता के तहत निर्णायक प्राधिकारी के रूप में कार्य करता है।
- **लेखांकन मानक:** वित्तीय रिपोर्टिंग में संरचना लाने और लेखांकन नीतियों, नकदी-प्रवाह विवरण, संबंधित-पार्टी प्रकटीकरण और बहुत कुछ के प्रकटीकरण को अनिवार्य करने के लिए भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट्स संस्थान द्वारा जारी किया गया।
- **भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) दिशानिर्देश:** नियामक प्राधिकरण सूचीबद्ध कंपनियों की देखरेख करता है, निवेशकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विनियम, नियम और दिशानिर्देश जारी करता है।

- **सचिवीय मानक:** कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार कंपनी सचिवों के लिए मानक स्थापित करने के लिए भारतीय कंपनी सचिव संस्थान (आईसीएसआई) द्वारा जारी किया जाता है।

भारत में निगमित प्रशासन से संबंधित समितियाँ

कुमार मंगलम बिड़ला समिति रिपोर्ट (2000)	• इसने निदेशक मंडल में कार्यकारी और गैर-कार्यकारी निदेशकों के उचित मिश्रण के महत्व पर जोर दिया। • कम से कम तीन स्वतंत्र निदेशकों वाली एक लेखापरीक्षा समिति की स्थापना की सिफारिश की गई। • निदेशकों और वरिष्ठ प्रबंधन का पारिश्रमिक निर्धारित करने के लिए एक पारिश्रमिक समिति का सुझाव दिया गया था। • निदेशक मंडल को प्रति वर्ष न्यूनतम चार बैठकें आयोजित करने की सिफारिश की गई थी। • शेयरधारकों को उनके निवेश के संबंध में व्यापक जानकारी प्रदान की जानी थी।
नरेस एच चंद्रा समिति (2002)	• इसने लेखा परीक्षा ग्राहकों के लिए कुछ गैर-लेखा परीक्षा सेवाओं, जैसे मूल्यांकन सेवाओं और आंतरिक लेखा परीक्षा पर प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की। • लेखा परीक्षकों का एक अनिवार्य रोटेशन प्रस्तावित किया गया था, जिसमें ऑडिट साझेदार और टीम के कम से कम पचास प्रतिशत सदस्यों को हर पांच साल में घुमाया जाना था। • ऑडिट फर्मों को ऑडिट संलग्नता की शर्तों से सहमत होने से पहले ऑडिट समिति या निदेशक मंडल को स्वतंत्रता का वार्षिक प्रमाणन प्रदान करना आवश्यक किया जाना था।
नारायण मूर्ति समिति (2003)	• इसने लेखा परीक्षा समितियों की जिम्मेदारियों को मजबूत करने की सिफारिश की, जिसमें कम से कम एक सदस्य को वित्तीय रूप से जानकार होना और दूसरे सदस्य को लेखांकन या संबंधित वित्तीय प्रबंधन दक्षता रखने की आवश्यकता शामिल है। • समिति ने वित्तीय खुलासों की गुणवत्ता में सुधार पर जोर दिया, विशेष रूप से संबंधित पक्ष लेनदेन से संबंधित।
उदय कोटक समिति (2017)	• इसने शक्ति संतुलन और बढ़ी हुई जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए चेयरपर्सन और सीईओ/एमडी की भूमिकाओं को अलग करने की सिफारिश की। • समिति ने अति प्रतिबद्धता को रोकने और प्रभावी बोर्ड भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक व्यक्ति के लिए आठ निदेशकों की अधिकतम सीमा का प्रस्ताव रखा। • पारदर्शिता और निष्पक्षता बढ़ाने के लिए सूचीबद्ध कंपनियों में कम से कम आधे बोर्ड सदस्यों का स्वतंत्र निदेशक होना आवश्यक था। • समिति ने स्वतंत्र निदेशकों के लिए न्यूनतम योग्यता अनिवार्य करने और उनके प्रासंगिक कौशल और विशेषज्ञता का खुलासा करने का सुझाव दिया। • इसने कॉरपोरेट कदाचार की रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित करने के लिए व्हिसलब्लोअर्स को प्रतिरक्षा प्रदान करने के लिए सेबी (भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड) को शक्तियां देने का प्रस्ताव रखा। • समिति ने सिफारिश की कि सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को बेहतर निगमित प्रशासन प्रथाओं को सुनिश्चित करने के लिए नोडल मंत्रालयों के बजाय सूचीबद्ध नियमों द्वारा शासित किया जाना चाहिए। • उन्नत प्रकटीकरण आवश्यकताओं का सुझाव दिया गया, जैसे कि फंड उपयोग, ऑडिटर क्रेडेंशियल्स, ऑडिट फीस और अन्य प्रासंगिक जानकारी का पूरा खुलासा।

निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)

> "निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व - आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ तरीके से व्यवसाय संचालित करने के लिए एक कंपनी की अपने हितधारकों के प्रति प्रतिबद्धता है। बड़े पैमाने पर, और बड़े पैमाने पर खरीद-फरोख्त के साथ, समग्र रूप से समाज गुणक मूल्य प्रभावों का लाभार्थी है।
>
> **–हेंड्रिथ वानलोन स्मिथ जूनियर, मेफ्लावर-प्लायमाउथ के सीईओ**

- निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) एक अवधारणा है जो अपने कर्मचारियों, उनके परिवारों, स्थानीय समुदायों और बड़े पैमाने पर समाज के लिए जीवन की गुणवत्ता में सुधार

करते हुए नैतिक रूप से व्यवहार करने और आर्थिक विकास में योगदान देने की कंपनी की प्रतिबद्धता पर जोर देती है।

- इसमें कंपनियों द्वारा अपने कानूनी दायित्वों से परे जाकर समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए की गई स्वैच्छिक कार्रवाइयां और पहल शामिल हैं।
- भारत में कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत, सीएसआर के प्रावधान धारा 135 में उल्लिखित हैं।
- यह प्रावधान विशिष्ट मानदंडों को पूरा करने वाली कंपनियों पर लागू होता है, जैसे कि 500 करोड़ रुपये या उससे अधिक का शुद्ध मूल्य, 1,000 करोड़ रुपये या उससे अधिक का कारोबार, या 5 करोड़ रुपये या उससे अधिक का शुद्ध लाभ।
- पिछले तीन वर्षों में अपने औसत शुद्ध लाभ का कम से कम 2% सीएसआर गतिविधियों पर खर्च करना अनिवार्य है।

ऐसी गतिविधियाँ जिन्हें सीएसआर के रूप में लिया जा सकता है

- शिक्षा का प्रचार-प्रसार
- अत्यधिक भुखमरी और गरीबी का उन्मूलन
- लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण
- बाल मृत्यु दर को कम करना और मातृ स्वास्थ्य में सुधार करना
- एचआईवी-एड्स, मलेरिया और अन्य बीमारियों से लड़ना
- पर्यावरण स्थिरता
- सामाजिक व्यवसाय परियोजनाएँ
- रोजगार व्यावसायिक कौशल को बढ़ाना
- विज्ञान, प्रौद्योगिकी और चिकित्सा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान।
- केंद्र या राज्य या किसी राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियों द्वारा वित्त पोषित इनक्यूबेटर।

- **उदाहरण:** भारत में ब्रुक कॉरपोरेशन स्कूलों के निर्माण, व्यावसायिक प्रशिक्षण देने, स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने और सतत कृषि को बढ़ावा देने के माध्यम से निगमित सामाजिक जिम्मेदारी निभाता है। ये परियोजनाएँ समावेशी विकास और दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा देते हुए ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाती हैं। एबीसी कॉर्पोरेशन स्थानीय संगठनों के साथ सहयोग करके, सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहित करके और सभी के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करके गरीब व्यक्तियों के जीवन को प्रभावी ढंग से प्रभावित करता है।

कंपनी (सीएसआर नीति) संशोधन नियम, 2021

- निम्नलिखित गतिविधियों को सीएसआर से बाहर रखा गया है:
  - गतिविधियाँ सीएसआर गतिविधियों से बाहर रखकर व्यवसाय के सामान्य क्रम में की जाती हैं;
  - भारत के बाहर की गई गतिविधियाँ;
  - राजनीतिक दलों को योगदान;
  - कंपनी के कर्मचारियों को लाभ पहुँचाने वाली गतिविधियाँ;
  - प्रायोजन के आधार पर कंपनी द्वारा समर्थित गतिविधियाँ;
  - वैधानिक दायित्व को पूरा करने के लिए की गई गतिविधियाँ।
- डिजाइन और मूल्यांकन के लिए बाहरी संगठन की नियुक्ति की अनुमति।
- कंपनियों को एक वार्षिक कार्य योजना बनाकर कंपनी के बोर्ड को सौंपनी होगी।
- कंपनियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रशासनिक ओवरहेड कुल सीएसआर व्यय का 5% से अधिक न हो।
- अधिशेष का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए नहीं किया जा सकता है।
- 10 करोड़ 3 वित्तीय वर्ष से अधिक के सीएसआर दायित्व वाली कंपनियों को प्रभाव मूल्यांकन करने के लिए एक स्वतंत्र एजेंसी को नियुक्त करना होगा।
- वेबसाइट पर सीएसआर परियोजनाओं का अनिवार्य खुलासा।

निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व का महत्व

- **नैतिक अपील:** सीएसआर गांधीजी केन्यासिता के सिद्धांत के अनुरूप है, जो कंपनियों से जिम्मेदार और नैतिक नागरिकों के रूप में कार्य करने का आग्रह करता है।
- **संतुष्टि:** कंपनियों को न केवल अपने शेयरधारकों बल्कि अन्य हितधारकों को भी संतुष्ट करने का लक्ष्य रखना चाहिए जो कंपनी के संचालन और पर्यावरण से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं।
- **सार्वजनिक छवि:** सीएसआर गतिविधियों में संलग्न कंपनियां अक्सर सकारात्मक ब्रांड छवि और जनता की नजरों में अच्छी प्रतिष्ठा का आनंद लेती हैं। TATA ग्रुप ऑफ कंपनीज अपनी सीएसआरपहलों के कारण एक मजबूत सार्वजनिक छवि वाले संगठन का एक उदाहरण है।
- **लाइसेंस:** सीएसआर कंपनियों को स्थानीय समुदायों का विश्वास और समर्थन हासिल करने में मदद करता है। सामुदायिक विकास के लिए संसाधन आवंटित करके, कंपनियाँ

उन समुदायों की भलाई के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती हैं जिनमें वे काम करती हैं।

- **उपभोक्ताओं का भरोसा:** कई उपभोक्ता सक्रिय रूप से ऐसी कंपनियों की तलाश करते हैं जो धर्मार्थ कार्यों का समर्थन करती हैं। इसलिए, सीएसआर ग्राहकों को आकर्षित करता है।
- **लाभप्रदता:** सीएसआर गतिविधियाँ किसी कंपनी की लाभप्रदता में योगदान कर सकती हैं। नैतिक आचरण और सामाजिक रूप से जिम्मेदार प्रथाएं उपभोक्ता के क्रय निर्णयों को प्रभावित करती हैं, जिससे ग्राहक निष्ठा और बाजार हिस्सेदारी में वृद्धि होती है।
- **प्रतिस्पर्धात्मक लाभ:** जो कंपनियाँ सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती हैं, वे अपने प्रतिस्पर्धियों से खुद को अलग कर सकती हैं और सामाजिक रूप से जागरूक उपभोक्ताओं को आकर्षित कर सकती हैं।
- **कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाना:** सीएसआर प्रथाओं का कर्मचारियों के मनोबल पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब कर्मचारी अपनी कंपनी को सामाजिक रूप से जिम्मेदार गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न होते देखते हैं, तो यह कंपनी की सहानुभूति और मूल्यों में उनके विश्वास को मजबूत करता है, जिससे उच्च नौकरी संतुष्टि मिलती है।

निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) से संबंधित मुद्दे:-

- **खराब कार्यान्वयन:** कई कंपनियों में सीएसआर को लागू करने में रणनीतिक सोच और नवीनता का अभाव है। सीएसआर को अक्सर सार्थक प्रभाव वाले बड़े लक्ष्य के बजाय महज एक धर्मार्थ प्रयास के रूप में देखा जाता है।
- **मजबूत नीति का अभाव:** दीर्घकालिक और अच्छी तरह से परिभाषित सीएसआर नीति का अभाव प्रभावी सीएसआर कार्यान्वयन में बाधा डालता है। स्पष्ट दिशा के बिना, सीएसआर खर्च वांछित उद्देश्यों के अनुरूप नहीं हो सकता है।
- **गतिविधियों का दोहराव:** समन्वय के बिना समान सीएसआर गतिविधियों में शामिल होने वाली विभिन्न कंपनियां सहयोगात्मक दृष्टिकोण के बजाय प्रतिस्पर्धी हो सकती हैं। इससे प्रयासों का दोहराव होता है और प्रभाव खंडित होता है।
- **अतिरिक्त निगमित कर के रूप में देखा जाना:** कुछ लोग सीएसआर दायित्व को 2% कर के रूप में देखते हैं जिसे कंपनियों को सामाजिक विकास के लिए स्वैच्छिक योगदान के रूप में मानने के बजाय खर्च करने की आवश्यकता होती है।
- **व्यय का विषम पैटर्न:** सीएसआर प्रयास महत्वपूर्ण सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों को संबोधित करने पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय मुख्य रूप से कंपनी के परिचालन परिप्रेक्ष्य और सुविधा द्वारा संचालित हो सकते हैं।

आगे की राह

- **वार्षिक पुरस्कार:** कंपनियों को उनकी अनुकरणीय सीएसआर गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित करने के लिए वार्षिक पुरस्कारों की स्थापना करके उन्हें कंपनी के आकार के आधार पर वर्गीकृत किया जाना चाहिए।
- **जवाबदेही:** कंपनियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी सीएसआर गतिविधियों के स्पष्ट उद्देश्य और मापने योग्य लक्ष्य हों। प्रगति पर नजर रखने के लिए मजबूत निगरानी और मूल्यांकन तंत्र मौजूद होना चाहिए।
- **सहयोग:** कंपनियों को स्थानीय जरूरतों की गहरी समझ हासिल करने और प्रभावी सीएसआर पहल को लागू करने में उनकी विशेषज्ञता का लाभ उठाने के लिए स्थानीय गैर सरकारी संगठनों और सामुदायिक संगठनों के साथ सहयोग करना चाहिए।
- **अधिक जागरूकता:** सीएसआर के बारे में जागरूकता बढाया जाना चाहिए। ऐसा विशेष रूप से जमीनी स्तर पर होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि स्थानीय समुदायों को निगमित मुनाफे से सामाजिक विकास का उचित हिस्सा मिले।

इंजेती श्रीनिवास समिति की सिफारिशें

- सीएसआर व्यय को कर कटौती योग्य बनाया जाना चाहिए।
- कंपनियों को खर्च न की गई धनराशि को तीन से पांच साल तक आगे ले जाने की अनुमति दिया जाना चाहिए।
- कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची 7 को सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए।
- स्थानीय क्षेत्र प्राथमिकताओं को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।
- 5 करोड़ या उससे अधिक के सीएसआर दायित्वों के लिए प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन शुरू किया जाना चाहिए।
- एमसीए पोर्टल पर कार्यान्वयन एजेंसियों का पंजीकरण किया जाना चाहिए।
- योगदानकर्ताओं, लाभार्थियों और एजेंसियों को जोड़ने के लिए एक सीएसआर विनिमय पोर्टल विकसित किया जाना चाहिए।
- सामाजिक लाभ बांड में सीएसआर की अनुमति दिया जाना चाहिए।
- सामाजिक प्रभाव वाली कंपनियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

- इन मुद्दों को संबोधित करने और सुझाए गए उपायों को लागू करने से, सीएसआर निगमित सामाजिक जिम्मेदारी के लिए एक अधिक प्रभावशाली और अच्छी तरह से संरचित दृष्टिकोण बन सकता है, जिससे कंपनियों और समाज दोनों को लाभ होगा।

कुछ समसामयिक मुद्दे/मामला प्रकरण

भारत में शराबबंदी

- भारत में शराबखोरी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, जिन राज्यों में शराब पर प्रतिबंध है, वहां जहरीली शराब के सेवन से होने वाली मौतों पर चिंताएं बढ़ रही हैं।
- इसके अलावा, शराब की खपत में समग्र वृद्धि सामाजिक प्रगति की दिशा पर सवाल उठाती है।

मुख्य अभिकर्ता:

- **राज्य सरकारें:** सार्वजनिक स्वास्थ्य विचारों के साथ शराब व्यवसाय से राजस्व सृजन को संतुलित करते हुए, प्रतिबंध और विनियमों सहित शराब नीतियों को लागू करने के लिए जिम्मेदार हैं।
- **व्यक्ति और समुदाय:** ये शराब के सेवन में संलग्न होते हैं और स्वास्थ्य जोखिमों और संभावित सामाजिक परिणामों का सामना करते हैं।
- **शराब उद्योग:** ये मादक पेय पदार्थों के उत्पादन, विपणन और बिक्री में शामिल हैं।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राधिकरण:** पुरानी बीमारियों, हिंसा और सड़क दुर्घटनाओं सहित शराब के सेवन से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को लेकर चिंतित हैं।
- **समाज और सांस्कृतिक मानदंड:** शराब की खपत पर अलग-अलग सामाजिक दृष्टिकोण, इसे सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठानों का एक हिस्सा मानने से लेकर शराबबंदी की वकालत करने तक सीमित है।

नैतिक मुद्दे:

- **व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सार्वजनिक स्वास्थ्य को संतुलित करना:** शराब के सेवन के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बनाए रखने और सार्वजनिक स्वास्थ्य मामलों में हस्तक्षेप करने के बीच संतुलन बनाना।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** शराब से जुड़े स्वास्थ्य परिणामों, सामाजिक हिंसा और सड़क दुर्घटनाओं से जुड़ी नैतिक दुविधाएँ।
- **राजस्व बनाम कमजोर व्यक्ति:** शराब व्यवसाय से उत्पन्न राजस्व और शराब के नुकसान से कमजोर व्यक्तियों की सुरक्षा के बीच संघर्ष के प्रबंधन में नैतिक विचार।
- **जिम्मेदार विपणन और समझदार शराब पीना:** अल्कोहल उत्पादों के विपणन और जिम्मेदार और मध्यम पीने की प्रथाओं को बढ़ावा देने के संबंध में नैतिक चिंताएं।
- **अवैध शराब व्यवसायों का मुकाबला:** वैध उद्योग वाले नौकरियों की सुरक्षा करते हुए अवैध शराब व्यवसायों के विकास को संबोधित करना।
- **सामाजिक मानदंड बनाम व्यक्तिगत विवेक:** शराब की खपत से संबंधित सामाजिक मानदंडों को लागू करने और व्यक्तियों के व्यक्तिगत विवेक का सम्मान करने के बीच नैतिक दुविधाओं को दूर करना।
- **विविध सामाजिक दृष्टिकोण:** शराब की खपत पर अलग-अलग सामाजिक दृष्टिकोण को समझना और संबोधित करना, जिसमें सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठानों से लेकर शराबबंदी की वकालत तक शामिल है।

आगे की राह:

- **विचारशील निर्णय लेना:** शराबबंदी को संबोधित करने के लिए नीतियां और हस्तक्षेप तैयार करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक जिम्मेदारी को ध्यान में रखना।
- **नैतिक सिद्धांतों को कायम रखना:** यह सुनिश्चित करना कि शराबबंदी से निपटने की रणनीतियाँ नैतिक मानकों और कानूनी ढाँचे का पालन करें।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप:** जागरूकता अभियान, शिक्षा और शराब से संबंधित मुद्दों के इलाज तक पहुंच जैसी प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल को प्राथमिकता देना।
- **जिम्मेदार उद्योग प्रथाएं:** अल्कोहल उद्योग के भीतर जिम्मेदार विपणन, जवाबदेही और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देना।
- **कानून प्रवर्तन और नौकरी सुरक्षा:** वैध उद्योग नौकरियों की सुरक्षा करते हुए अवैध शराब कारोबार से निपटने के लिए कानून प्रवर्तन प्रयासों को मजबूत करना।
- **शिक्षा और जागरूकता:** शराब के दुरुपयोग के स्वास्थ्य जोखिमों और परिणामों के बारे में जानकारी देकर व्यक्तियों को सशक्त बनाना।
- **सहायता और पुनर्वास:** शराब की लत से जूझ रहे व्यक्तियों के लिए सहायता प्रणाली, परामर्श और पुनर्वास कार्यक्रम प्रदान करना।

कार्य संस्कृति में परिवर्तन:

- हाल के दिनों में, विभिन्न कारकों से प्रभावित होकर कार्य संस्कृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। ये परिवर्तन कार्यबल की बढ़ती जरूरतों, प्रौद्योगिकी में प्रगति और COVID-19 महामारी के प्रभाव से प्रेरित हैं। आइए देखे गए परिवर्तनों के बारे में जानें:
  - लंबे समय तक काम के घंटे
  - दूरस्थ कार्य में उल्लेखनीय वृद्धि
  - ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को तेजी से अपनाया जाना

- प्रौद्योगिकी-सक्षम निगरानी
- कर्मचारी कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देना
- दूरस्थ सहयोग और डिजिटल टूल की ओर बदलाव
- आवश्यकता-आधारित पारस्परिक संचार

परिणाम:

- **प्रोत्साहन कारी संस्कृति:** स्टार्टअप संस्कृति के प्रभाव ने कार्य के प्रति प्रोत्साहन की मानसिकता को जन्म दिया है, जो कर्मचारियों को अत्यधिक काम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- **चुपचाप छोड़ना:** धुंधली सीमाएँ और अतिरिक्त समय तक काम करने के परिणामस्वरूप कर्मचारी न्यूनतम कार्य करते हैं, कार्य सीमाएँ निर्धारित करते हैं, या अतिरिक्त मुआवजे की माँग करते हैं।
- **शांतिपूर्ण निष्कासन:** कुछ कंपनियां अप्रिय कार्य वातावरण बनाती हैं और कर्मचारियों को बिना बर्खास्तगी के नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य करती हैं।
- **मून लाइटिंग (Moon Lighting):** दूरस्थ कार्य और प्रौद्योगिकी प्रगति ने मून लाइटिंग (Moon Lighting) बढ़ा दी है, जहां कर्मचारी अपने नियमित रोजगार के बाहर अतिरिक्त नौकरियां लेते हैं।

नैतिक चिंताएं:

- **स्वास्थ्य और चिंता:** प्रौद्योगिकी पर बढ़ती निर्भरता और लंबे समय तक काम करने से कर्मचारी के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और चिंताजनक स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
- **समुदाय की भावना में गिरावट:** दूरस्थ कार्य और हाइब्रिड मॉडल से कर्मचारियों के बीच समुदाय और जुड़ाव की भावना कम हो सकती है।
- **अपारदर्शिता और निष्पक्षता:** चुपचाप कार्य छोड़ने और चुपचाप निकाल देने जैसी प्रथाएँ खुले संचार में बाधा डालती हैं और नियोक्ता तथा कर्मचारियों के मध्य विश्वास को खत्म करती हैं, जिससे पारदर्शिता और निष्पक्षता के बारे में चिंताएँ बढ़ जाती हैं।
- **स्वास्थ्य जोखिम:** काम के बढ़े हुए घंटे स्ट्रोक और हृदय रोग जैसी स्वास्थ्य समस्याओं से जुड़े हैं।

आगे की राह:

- **मूल्य-आधारित कार्य संस्कृति:** स्वस्थ कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिए मानवीय संबंध, विश्वास, भलाई और जिम्मेदार प्रौद्योगिकी के उपयोग को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए।
- **नैतिक प्रौद्योगिकी उपयोग:** डिजिटलीकरण के लाभों को गोपनीयता, सुरक्षा और स्वस्थ प्रौद्योगिकी प्रथाओं के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।
- **कर्मचारी कल्याण:** शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए व कार्य-जीवन संतुलन और समग्र कल्याण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **पारदर्शी संचार:** संगठनों के भीतर पारदर्शिता, निष्पक्षता और आपसी सम्मान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- **स्वास्थ्य जोखिमों को संबोधित करना:** उचित नीतियों और सहायता प्रणालियों के माध्यम से लंबे समय तक काम करने से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को कम किया जाना चाहिए।

विरोध की नैतिकता

- रकार द्वारा शुरू की गई अग्निवीर योजना (2022) का उद्देश्य व्यक्तियों को त्रि-सेवाओं में भर्ती करना था, लेकिन कम कार्यकाल और पेंशन लाभों की अनुपस्थिति की चिंताओं के कारण इच्छुक उम्मीदवारों के विरोध का सामना करना पड़ा।

मुख्य अभिकर्ता:

- **इच्छुक उम्मीदवार:** त्रि-सेवाओं में शामिल होने के इच्छुक व्यक्ति जिन्होंने अग्निवीर योजना का विरोध किया, बेहतर नियमों और शर्तों के लिए अपनी चिंताओं और मांगों को व्यक्त किया।
- **सरकारी अधिकारी:** अग्निवीर योजना को लागू करने और प्रदर्शनकारियों द्वारा उठाई गई चिंताओं को दूर करने के लिए जिम्मेदार हैं।
- **आम जनता:** विरोध प्रदर्शनों से प्रभावित, जिसमें दैनिक जीवन में व्यवधान, सार्वजनिक संपत्ति को संभावित नुकसान और प्रदर्शनकारियों के नैतिक आचरण के बारे में चिंताएं शामिल हैं।

नैतिक मुद्दे:

- **विरोध का अधिकार बनाम नैतिक आचरण:** प्रदर्शनकारियों ने विरोध करने के अपने संवैधानिक अधिकार का प्रयोग किया, लेकिन नैतिक चिंताएं तब पैदा हुई जब कुछ लोग हिंसक या विनाशकारी व्यवहार में शामिल हुए, प्रदर्शनों के शांतिपूर्ण इरादे को कमजोर किया और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाया।
- **नागरिक कर्तव्य और जिम्मेदार कार्रवाई:** प्रदर्शनकारियों का कर्तव्य था कि वे सार्वजनिक और निजी संपत्ति की रक्षा करें और अभिव्यक्ति के अहिंसक साधनों को बढ़ावा दें। नैतिक आचरण के लिए उन्हें हिंसा या विनाश का सहारा लेने के बजाय नागरिक जिम्मेदारियों को निभाने और शांतिपूर्ण बातचीत में शामिल होने की आवश्यकता थी।
- **अधिकारों और जिम्मेदारियों का संतुलन:** प्रदर्शनकारियों को अपनी शिकायतें व्यक्त करने का अधिकार था, लेकिन आम जनता सहित दूसरों पर उनके कार्यों के प्रभाव पर विचार करने की भी उनकी जिम्मेदारी थी। नैतिक विरोध के लिए अपने अधिकारों का प्रयोग करने और दूसरों के अधिकारों और भलाई का सम्मान करने के बीच संतुलन खोजने की आवश्यकता है।

- **लोकतांत्रिक नैतिकता को कायम रखना:** भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शांतिपूर्ण सभा और प्रदर्शन का अधिकार लोकतांत्रिक नैतिकता के मूलभूत तत्व हैं। प्रदर्शनकारियों और अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने की जरूरत थी कि सामाजिक व्यवस्था और सार्वजनिक सुरक्षा बनाए रखते हुए इन अधिकारों का सम्मान किया जाए।

समाधान और आगे की राह:

- **संवाद और जुड़ाव:** सरकार और प्रदर्शनकारी नेताओं को प्रदर्शनकारियों द्वारा उठाई गई चिंताओं को दूर करने और पारस्परिक रूप से सहमत समाधान खोजने के लिए रचनात्मक बातचीत करनी चाहिए। यह दृष्टिकोण नैतिक आचरण और शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देता है।
- **नैतिक विरोध संस्कृति को बढ़ावा देना:** विरोध आंदोलनों को अपने रैंकों के भीतर अहिंसा, समावेशिता, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देना चाहिए। यह एक नैतिक वातावरण को बढ़ावा देता है जो शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सामाजिक सद्भाव के सिद्धांतों को कायम रखता है।
- **शिक्षा और जागरूकता:** नैतिक विरोध प्रथाओं और नागरिक जिम्मेदारियों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने से व्यक्तियों को प्रदर्शनों के दौरान जिम्मेदार आचरण के महत्व को समझने में मदद मिल सकती है। शिक्षा कार्यक्रम विरोध के नैतिक आयामों पर जोर दे सकते हैं और अभिव्यक्ति के शांतिपूर्ण साधनों को प्रोत्साहित कर सकते हैं।
- **कानूनी और सामाजिक जवाबदेही:** विरोध प्रदर्शन के दौरान किसी भी अनैतिक या अवैध कार्रवाई के लिए व्यक्तियों को जिम्मेदार ठहराने के लिए अधिकारियों को मौजूदा कानूनों को लागू करना चाहिए। यह विनाशकारी व्यवहार को रोक सकता है और विरोध समुदाय के भीतर नैतिक आचरण की संस्कृति को बढ़ावा दे सकता है।

निष्कर्ष:

- संगठनों को अपनी कार्य संस्कृति को बदलकर बदलती गतिशीलता के अनुरूप ढलना होगा। लचीलेपन, समावेशन और नवाचार को अपनाने से कर्मचारी जुड़ाव, उत्पादकता और कल्याण बढ़ता है, जिसके परिणामस्वरूप दीर्घकालिक सफलता और प्रतिस्पर्धात्मकता मिलती है।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. 'शक्ति की इच्छा अस्तित्व रखती है, लेकिन इसे तर्कसंगतता और नैतिक कर्तव्य के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित करने के साथ-साथ वश में किया जा सकता है।' अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संदर्भ में इस कथन का परीक्षण करें। (2020)
2. 'अंतरात्मा के संकट' से क्या तात्पर्य है? यह सार्वजनिक क्षेत्र में कैसे प्रकट होता है? (2019)
3. लोक प्रशासन में नैतिक दुविधाओं को हल करने की प्रक्रिया की व्याख्या करें। (2018)
4. शक्ति, शांति और सुरक्षा को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का आधार माना जाता है। स्पष्ट करें। (2017)
5. सार्वजनिक क्षेत्र में हितों का टकराव तब उत्पन्न होता है जब (a) आधिकारिक कर्तव्य, (b) सार्वजनिक हित, और (c) व्यक्तिगत हित एक दूसरे के ऊपर प्राथमिकता ले रहे हों। प्रशासन में इस संघर्ष को कैसे हल किया जा सकता है? उदाहरण सहित वर्णन करें। (2017)
6. निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व कंपनियों को अधिक लाभदायक और सतत बनाती है। विश्लेषण करें। (2017)
7. "मैक्स वेबर ने कहा कि जिस तरह के नैतिक और नैतिक मानदंड हम व्यक्तिगत विवेक के मामलों पर लागू करते हैं, उसे सार्वजनिक प्रशासन पर लागू करना बुद्धिमानी नहीं है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि राज्य की नौकरशाही की अपनी स्वतंत्र नौकरशाही नैतिकता हो सकती है। इस कथन का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। (2016)
8. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर, अधिकांश देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध अन्य देशों के हितों की परवाह किए बिना अपने स्वयं के राष्ट्रीय हित को बढ़ावा देने की नीति से संचालित होते हैं। इससे राष्ट्रों के बीच संघर्ष और तनाव पैदा हुआ। नैतिक विचार ऐसे तनावों को सुलझाने में कैसे मदद कर सकता है? विशिष्ट उदाहरणों सहित चर्चा करें। (2015)
9. लोक सेवकों को "हित संघर्ष" के मुद्दों का सामना करना पड़ सकता है। आप "हित संघर्ष" शब्द के बारे में क्या समझते हैं और यह लोक सेवकों के निर्णय लेने में कैसे प्रकट होता है? यदि हितों के टकराव की स्थिति का सामना करना पड़े तो आप इसे कैसे हल करेंगे? उदाहरणों की सहायता से समझाइये। (2015)
10. नैतिकता मानव जीवन में क्या बढ़ावा देना चाहती है? लोक प्रशासन में यह अधिक महत्वपूर्ण क्यों है? (2014)
11. सार्वजनिक सेवा के संदर्भ में 'जवाबदेही' का क्या अर्थ है? लोक सेवकों की व्यक्तिगत और सामूहिक जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय अपनाए जा सकते हैं? (2014)
12. 'अंतरात्मा के संकट' से क्या तात्पर्य है? अपने जीवन की एक घटना बताइए जब आपके सामने ऐसा संकट आया था और आपने उसका समाधान कैसे किया। (2013)
13. 'अंतरात्मा की आवाज' शब्द से आप क्या समझते हैं? अंतरात्मा की आवाज सुनने के लिए आप खुद को कैसे तैयार करते हैं? (2013)

❖ ❖ ❖

7 शासन में शुचिता

पाठ्यक्रम

शासन में शुचिता: लोक सेवा की अवधारणा; शासन और शुचिता का दार्शनिक आधार; सरकार में सूचना साझा करना और पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नैतिकता के नियम, आचार संहिता, नागरिक अधिकार पत्र, कार्य संस्कृति, सेवा अदायगी की गुणवत्ता, सार्वजनिक धन का उपयोग, भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ।

- **कुशल एवं प्रभावी शासन प्रणाली और सामाजिक आर्थिक विकास के लिए** शासन में शुचिता आवश्यक एवं बुनियादी शर्त है।
- सरकार में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए **भ्रष्टाचार का न होना अत्यंत आवश्यक है।**
- **इस हेतु आवश्यक अन्य बातों में,** सार्वजनिक जीवन के सभी पहलुओं को नियंत्रित करने वाले प्रभावी कानून, नियम और विनियम, साथ ही उन कानूनों का प्रभावी एवं न्यायसंगत कार्यान्वयन शामिल हैं।

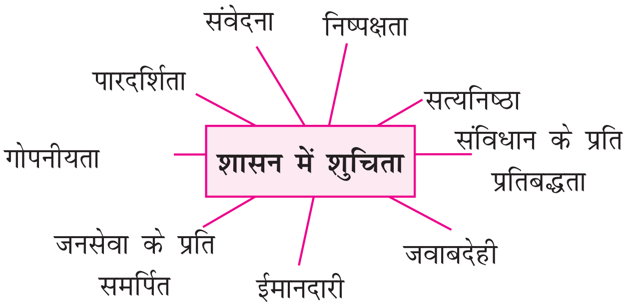

चित्र: शासन में शुचिता

7.1 शुचिता से तात्पर्य

- **यह ईमानदारी, औचित्य, पारदर्शिता एवं सच्चरित्रता जैसे मजबूत नैतिक मूल्य धारण करने और उनका कठोरता से पालन करने का गुण है। सामान्यत: इसे भ्रष्टाचाररहित माना जाता है।** शुचिता सिद्ध सत्यनिष्ठा है।
- चूंकि यह व्यक्तिगत एवं सामुदायिक आदर्शों जैसे **अमूर्त भावों पर आधारित है,** अत: शुचिता बेईमानी से बचने से कहीं अधिक बढ़कर हैं।

चित्र: ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और शुचिता के बीच संबंध

उदाहरण

- दो प्रमुख शहरों को जोड़ने वाले नए राजमार्ग के निर्माण के उद्देश्य से बनाई गई इस परियोजना का क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास पर काफी प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। इस परियोजना के कार्यान्वयन में विभिन्न सरकारी विभागों, विनियामक निकायों और सिविल सेवा अधिकारियों की भागीदारी की आवश्यकता है।
- **आपको इस परियोजना का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया है।**
- इस परियोजना के आयोजना चरण में यह देखा गया है कि प्रस्तावित राजमार्ग घने वन क्षेत्र से होकर गुजर रहा है, जो कई लुप्तप्राय प्रजातियों का घर है और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील पर्यावास है।
- इससे पर्यावरण कार्यकर्ताओं, स्थानीय समुदायों और वन्यजीव संरक्षण से संबंधित संगठनों के बीच चिंता बढ़ गई है।
- **आपके समक्ष एक गंभीर चुनौती है:** क्योंकि आपके अधीनस्थ कर्मचारी स्थानीय लोगों से सस्ती दर पर जमीन खरीद रहे हैं ताकि इसे सरकार को उच्च कीमत पर बेच सकें। आप इस स्थिति से कैसे निपटेंगे?

दृष्टिकोण

परियोजना के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में, मैं परियोजना के कुशल एवं समय पर कार्यान्वयन हेतु उत्तरदायी हूं। इस मामले में, मेरे अधीनस्थ कर्मचारी जो कुछ भी कर रहे हैं वह कानूनन सही है, परंतु वे नैतिक रूप से भ्रष्ट हैं, क्योंकि वे भेदिया व्यापार (insider trading) कर रहे हैं और अपने लाभ के लिए स्थानीय लोगों को उनकी जमीन का कम मूल्य देकर उनके हितों को हानि पहुँचा रहे हैं।

7.2 शुचिता - दर्शन एवं सिद्धांत

- **शासन का दार्शनिक आधार प्राचीन यूनान में मिलता है।**
- **अरस्तू ने दर्शन एवं राजनीति को एक साथ जोड़ा।**
  - उन्होंने **नैतिकता (इथोस) शब्द का आविष्कार किया** और कहा कि नैतिकता एवं राजनीति, अध्ययन की दो अलग-अलग परंतु बारीकी से संबद्ध शाखाएं हैं, क्योंकि नैतिकता किसी व्यक्ति के कल्याण का विश्लेषण करती है, जबकि राजनीति राज्य की भलाई से संबंधित है।
- **मैकियावली ने अपनी पुस्तक "प्रिन्स" में तर्क दिया है कि अच्छे शासक को** प्रभावशाली होने के लिए कभी-कभी **''अच्छा न होना''** भी अवश्य सीखना चाहिए।
  - उन्हें अपने राज्य में स्थिरता बनाए रखने के लिए न्याय, सत्यनिष्ठा एवं करुणा जैसी नैतिक चिंताओं की अवहेलना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- **हॉब्स की "सामाजिक अनुबंध" की अवधारणा को जॉन लॉक ने चुनौती दी थी।**
  - **सामाजिक अनुबंध के अनुसार राज्य प्राधिकार का स्रोत जनता की इच्छा है** और राज्य का व्यक्तियों के प्रति विशिष्ट उत्तरदायित्व है।
- **चुंकि** सामाजिक अनुबंध का तात्पर्य यह है कि लोगों ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए राज्य पर विश्वास किया है, यह विश्वास ही **शुचिता का दार्शनिक आधार प्रदान करता है।**
  - शासन में शुचिता की अवधारणा बताती है कि जो लोग शासन में हैं उन्हें अन्य लोगों की तुलना में अधिक नैतिक होना चाहिए और इस बात का विश्वास होना चाहिए कि सत्ता में बैठे लोग नैतिकता के साथ कार्य करेंगे।
- **सरकार की भारतीय धारणा नैतिकता पर आधारित है।**
  - अपनी प्रजा को संतुष्ट रखना राजा का कर्तव्य है।
  - **महाभारत के अनुसार कोई भी** व्यक्ति धर्म की रक्षा के लिए राजा बनता है न कि मनमाना आचरण करने के लिए।
- **चाणक्य की "अर्थशास्त्र" (दूसरी और तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व)** भारतीय शासन के दार्शनिक आधार का ठोस विवरण है।
  - चाणक्य ने धर्म शास्त्रों के आधार पर राजा के शासन करने के अधिकार का समर्थन किया है, लेकिन वह राजसी तानाशाही के विरोधी थे।

7.2.1 शुचिता के सिद्धांत

- **यूनाइटेड किंगडम** में, शासन में शुचिता एवं सत्यनिष्ठा पर ध्यान केन्द्रित करते हुए, सार्वजनिक जीवन में व्यवहार के मानदंडों की समीक्षा करने हेतु **1994 में नोलन समिति की स्थापना की गई थी।**
- समिति की सिफारिशों, जो 1995 से 1997 के बीच अनेक प्रकाशनों के रूप में जारी की गई, में **यूके के सार्वजनिक संस्थानों में सत्यनिष्ठा एवं विश्वास को बढ़ाने के उद्देश्य से सार्वजनिक जीवन के सात सिद्धांत भी दिए गए थे।**
- **इन्हें ''नोलन सिद्धांत'' कहा जाता है। यह शासन एवं शुचिता के दार्शनिक आधार** के विकास के समकक्ष हैं।

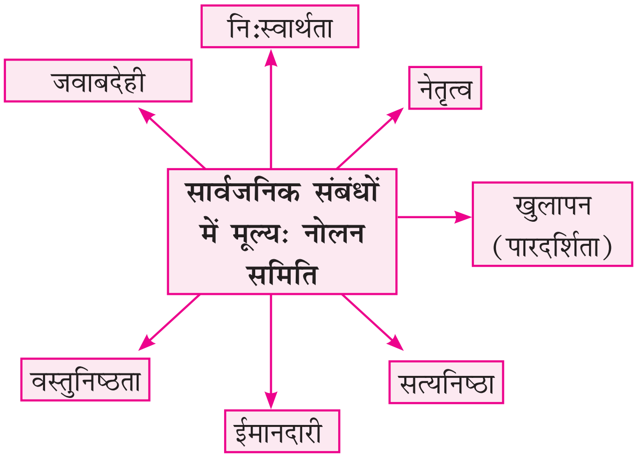

1. **खुलापनः** सार्वजनिक अधिकारियों को अपने कार्यों में खुला और पारदर्शी होना चाहिए, और उन्हें जनता के साथ जानकारी साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
2. **ईमानदारीः** जनता और अपने सहकर्मियों के साथ बातचीत में सार्वजनिक अधिकारियों को सच्चा और ईमानदार होना चाहिए।
3. **नेतृत्वः** सार्वजनिक अधिकारियों में महान नेतृत्व के गुण होने चाहिए जो ऐसे सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करें जिनका अन्य व्यक्ति अनुसरण कर सकें।
4. **निःस्वार्थताः** सार्वजनिक अधिकारियों को व्यक्तिगत लाभ के बजाय सार्वजनिक हित में कार्य करना चाहिए।
5. **सत्यनिष्ठाः** सार्वजनिक अधिकारियों को उन स्थितियों से बचना चाहिए जिनमें उनकी ईमानदारी एवं निष्पक्षता पर सवाल उठाया जा सकता है।
6. **वस्तुनिष्ठताः** सार्वजनिक अधिकारियों को अपने निर्णय साक्ष्यों के आधार पर लेने चाहिए और अपने व्यक्तिगत विश्वासों का प्रभाव निर्णय लेने की प्रक्रिया पर नहीं पड़ने देना चाहिए।
7. **जवाबदेहीः** सार्वजनिक जीवन में नेतृत्व को अपने कार्यों के लिए जवाबदेह होना चाहिए और अपने निर्णयों को उचित ठहराने के लिए तैयार रहना चाहिए।

उच्चतम न्यायालय ने आगे कहा कि **''सार्वजनिक जीवन के ये सिद्धांत प्रत्येक लोकतंत्र में सामान्य रूप से लागू होते हैं और प्रत्येक सार्वजनिक पद धारक के आचरण की जांच करते समय इन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए।''** यह इस संबंध में है

कि सार्वजनिक पद धारकों को कतिपय अधिकार केवल जनता की भलाई के लिए सौंपे जाते हैं, अतः कार्यालय लोगों के विश्वास के प्रति जवाबदेह है।

7.3 शासन में शुचिता हासिल करने के मार्ग में चुनौतियाँ

- **समाज में शक्ति की ऐतिहासिक एवं सामाजिक विषमताएँ:** भारत में लगभग 90 प्रतिशत कार्यबल असंगठित क्षेत्र में काम करता है।
  - संगठित क्षेत्र के शेष श्रमिकों के पास सुरक्षित नौकरी और नियमित मासिक वेतन है और वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से राज्य के कर्मचारी हैं।
  - शक्ति की इस प्रकार की विषमता नैतिक व्यवहार के अनुरूप कार्य करने के सामाजिक दबाव को कम करती है।
- **मूल्यों और संस्थाओं का क्षरण:** संवैधानिक एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं में घोर विकृति के कारण पद की शपथ का जानबूझकर उल्लंघन किया जाना, व्यवस्था में इतनी गहराई तक व्याप्त है कि अधिकांश लोग भ्रष्टाचार को अपरिहार्य मानते हैं और इससे लड़ने के किसी भी प्रयास को निरर्थक मानते हैं।
- **समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की संस्कृति:** यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भ्रष्टाचार कई लोगों के लिए आदत का विषय बन गया है। यह इतनी गहराई तक व्याप्त है कि भ्रष्टाचार को अब एक सामाजिक नियम माना जाता है।
  - **अवैध धन का लालच,** अत्यधिक केंद्रीकरण, भ्रष्टाचार की संस्कृति के कुछ कारण हैं।
- **संस्थानों के कामकाज में पारदर्शिता का अभाव:** पारदर्शिता ईमानदारी की आधारशिला है। संगठन में अपारदर्शी कामकाजी माहौल के कारण, संस्थानों के प्रशासन में ईमानदारी बनाए रखना मुश्किल है।
- **कानूनों के निष्पक्ष और प्रभावी कार्यान्वयन का अभाव:** जमीनी स्तर पर समस्याओं के समाधान में कानूनों की प्रभावशीलता का पता कानूनों के कार्यान्वयन से ही चलता है। किसी भी कानून का खराब कार्यान्वयन बड़े से बड़े कानून को भी अप्रभावी बना देता है।

7.4 शासन में शुचिता को बढ़ावा देने के तरीके

शासन में शुचिता सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए जाने आवश्यक हैं:

- **बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम, 1988 की धारा 5 को लागू किए जाने की आवश्यकता:** यह अधिनियम, जिसमें कानून की नौ धाराएं हैं, शायद इसे संशोधित एवं अधिक मजबूत किए जाने की आवश्यकता है।
  - यह कार्य भ्रष्ट लोक सेवकों पर निवारक के रूप में कार्य करेगा और निश्चित रूप से यह शासन में शुचिता लाने वाला उपाय सिद्ध होगा।
- **भ्रष्टाचार से अर्जित कमाई को छीन लेना:** केवल आईपीसी या भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम (पीसीए) के तहत मुकदमा चलाना पर्याप्त नहीं है, सिवाय इस तथ्य के कि ऐसे मुकदमे बहुत कम ही चलाए जाते हैं और जब चलाए भी जाते हैं, तो सजा शायद ही कभी होती है।
  - लोक सेवकों की अवैध रूप से अर्जित संपत्ति को जब्त करने का प्रावधान करने वाले कानून की आवश्यकता है।
  - जब तक भ्रष्टाचार से अर्जित संपत्ति नहीं छीनी जाती तब तक भ्रष्टाचार से सही मायने में और प्रभावी ढंग से नहीं लड़ पाएंगे।
- **सिविल सेवकों की जवाबदेही निर्धारित करना:** लोक सेवकों की जवाबदेही वाले सिद्धांत स्पष्ट एवं निष्पक्ष होने चाहिए जिसमें निडरता से कार्य किया जा सके और लोक सेवकों के वास्तविक नेक नियती से किए कार्यों को समझने में सक्षम नहीं होना चाहिए, भले ही उससे संबंधित हों।
- **एक एसा व्यापक कानून बनाए जाने की आवश्यकता है** जिसमें यह प्रावधान हो कि जहां कहीं भी लोक सेवकों द्वारा दुर्भावनापूर्ण किए गए कार्यों या स्पष्ट चरित्र के अभाव में राज्य को हानि हो, उन्हें राज्य को उनके द्वारा हुए नुकसान की भरपाई के लिए उत्तरदायी ठहराया जाना सके और इसके अलावा, उन पर कठोर हर्जाना भी लगाया जा सके।
- **पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देना:** सूचना का अधिकार अधिनियम (आरटीआई) के अंतर्गत दिए गए उपायों को ठीक से लागू किया जाना चाहिए। इसी प्रकार, नागरिक अधिकार पत्र के प्रावधानों को संस्थागत बनाया जाना चाहिए।
- **सिविल सेवा बोर्ड को सशक्त बनाना:** यह सिविल सेवकों को स्थानांतरण और तैनाती में राजनीतिक हस्तक्षेप से बचाएगा। इस प्रकार, तटस्थता, गैर-पक्षपातपूर्णता और निष्पक्षता जैसे मूल्यों को बढ़ावा मिलेगा।

7.5 लोक सेवाओं से तात्पर्य

- जनता की ओर से सरकारी एजेंसियों या संगठनों द्वारा की जाने वाली विस्तृत सेवाओं को लोक सेवाएँ कहा जाता है।
  - ये सेवाएँ **समग्र समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन की गई हैं** और इनका वित्त

पोषण करों, शुल्कों या अन्य प्रकार के सरकारी राजस्व से होता है।

- शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, परिवहन, सार्वजनिक सुरक्षा (पुलिस और अग्निशमन सेवाएँ), स्वच्छता, जल आपूर्ति, ऊर्जा वितरण, अपशिष्ट प्रबंधन और सामाजिक कल्याण कार्यक्रम सभी सार्वजनिक सेवाओं के उदाहरण हैं।

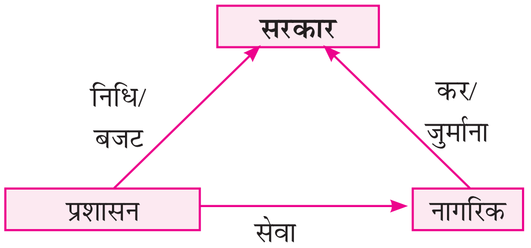

- **वितरण का स्तर:** सेवा के आकार और प्रकृति के आधार पर, सरकारी संगठन अक्सर स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर ये सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- **लोक सेवाओं का उद्देश्य:** लोक सेवाओं का मूलभूत उद्देश्य सभी व्यक्तियों को आवश्यक सेवाओं के प्रावधान तक समान पहुंच सुनिश्चित करके, सामुदायिक कल्याण एवं विकास को बढ़ावा देना है।
  - वे लोक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयास करते हैं जिन्हें निजी व्यवसाय, सामर्थ्य, सार्वभौमिकता, या सामाजिक महत्व जैसे अनेक कारणों की वजह से पूरी तरह से संभालने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।

7.5.1 लोक सेवा की विशेषताएँ

लोक सेवाओं में कई प्रमुख विशेषताएं होती हैं जो उन्हें निजी सेवाओं से अलग करती हैं। इन विशेषताओं में निम्नलिखित शामिल हैं:

- **लोक हित:** लोक सेवाओं का सृजन और वितरण आम लोगों की भलाई के लिए और जनता के समग्र हितों को बढ़ाने के लिए किया जाता है।
  - ये व्यक्तिगत लाभ से अधिक नागरिकों की भलाई को प्राथमिकता देती हैं।
- **सरकार का उत्तरदायित्व:** आमतौर पर, सरकारी एजेंसियां या संगठन लोक सेवाएं प्रदान करते हैं या उनकी देखरेख करते हैं।
  - सरकारें अपने नागरिकों को **बुनियादी सेवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने** के साथ-साथ सेवाओं के वितरण को विनियमित करने एवं उनकी निगरानी करने के लिए उत्तरदायी हैं। उदाहरण के लिए, पीने योग्य पानी, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं शिक्षा।
- **पहुंच और सार्वभौमिकता:** लोक सेवाओं का लक्ष्य सामाजिक-आर्थिक स्थिति, स्थान या अन्य जनसांख्यिकीय विशेषताओं की परवाह किए बिना उन्हें समाज के सभी सदस्यों के लिए उपलब्ध कराना है।
  - **इनकी विशेषता,** यह गारंटी देते हुए कि सभी को बुनियादी आवश्यकताओं तक समान पहुंच प्राप्त हो, अर्थात सार्वभौमिक कवरेज प्रदान करना होता है।
  - **उदाहरण के लिए,** शिक्षा का अधिकार अधिनियम में 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है।
- **समानता और सामाजिक न्याय:** लोक सेवाओं का लक्ष्य असमानताओं को कम करना और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना है।

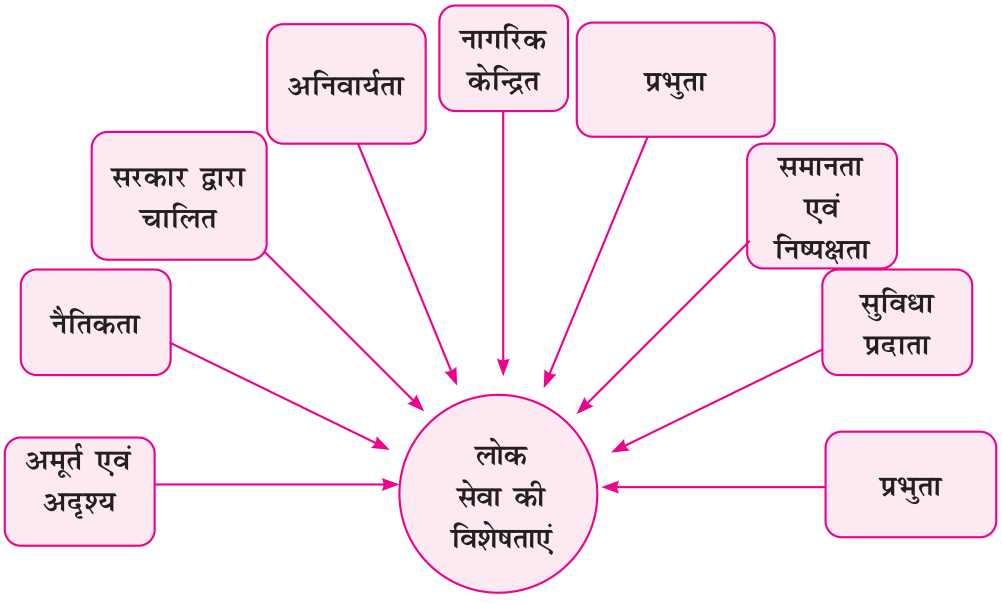

चित्र: लोक सेवाओं के गुण

- ये सामाजिक जरूरतों को पूरा करती हैं और पहुंच एवं अवसर की खाई को पाटने का कार्य करती हैं और यह सुनिश्चित करती है कि सभी निवासियों, विशेष रूप से हाशिए पर रह रहे लोगों एवं वंचित समुदायों को आवश्यक सेवाएं प्राप्त हों।
  - **उदाहरण के लिए,** निराश्रितों का उत्थान और सामाजिक समानता प्राप्त करना सुनिश्चित करने के लिए उन्हें रियायती भोजन, पानी एवं परिवहन सेवा प्रदान किया जाना।
- **गैर-लाभकारी उद्देश्य:** निजी सेवाओं के विपरीत, लोक सेवाएँ पैसा कमाने को प्राथमिकता नहीं देती हैं। हालाँकि उन्हें धन की आवश्यकता होती है, उनका लक्ष्य पैसा कमाना नहीं है बल्कि गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करना है जिससे समग्र रूप से समाज को लाभ हों।
  - **उदाहरण के लिए,** शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, आयुष्मान भारत और राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता:** लोक सेवाओं की जांच की जाती है और जनता द्वारा उन्हें जवाबदेह ठहराया जाता है।
  - सरकारों और सार्वजनिक एजेंसियों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने संचालन में पारदर्शी हों, सेवा वितरण, कार्य-निष्पादन और परिणामों के संबंध में जानकारी जारी करें। उन्हें जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए और उन्हें उनके कार्यों के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है।
    - **उदाहरण के लिए,** आरटीआई, लोकपाल, केंद्रीय सतर्कता आयोग आदि के प्रावधान सार्वजनिक सेवाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देते हैं।
- **विनियमन और निरीक्षण:** विनियामक ढाँचे और निरीक्षण प्रणालियाँ लोक सेवाओं को नियंत्रित करती हैं।
  - सरकारें लोक सेवाओं की प्रभावशीलता, सुरक्षा और गुणवत्ता की गारंटी के लिए विनियमन, मानक और नियम बनाती हैं।
  - **वे अनुपालना की निगरानी भी करती हैं और जहां आवश्यक हो,** लोक हित की रक्षा के लिए हस्तक्षेप भी करती हैं।
    - **उदाहरण के लिए,** सेबी, भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग, आरबीआई, आदि की स्थापना।
- **दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य:** लोक सेवाओं में अक्सर सामाजिक विकास और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य होता है।
  - उनका आशय दीर्घकालिक सेवाएं और आधारभूत ढांचा प्रदान करना होता है जिससे वर्तमान और भविष्य दोनों पीढ़ियों को लाभ हो।
    - **उदाहरण के लिए,** बीओपी संकट से निपटने के लिए वर्ष 1991 के उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के सुधारों के माध्यम से लंबे समय तक के लिए भारतीय समाज में आधारभूत बदलाव किया गया है।

ये विशेषताएं सामूहिक रूप से सार्वजनिक सेवाओं की प्रकृति और उद्देश्य को परिभाषित करती हैं, जनता की भलाई को बढ़ावा देने, समान पहुंच सुनिश्चित करने और समाज की आवश्यक जरूरतों को पूरा करने में उनकी भूमिका पर जोर देती हैं।

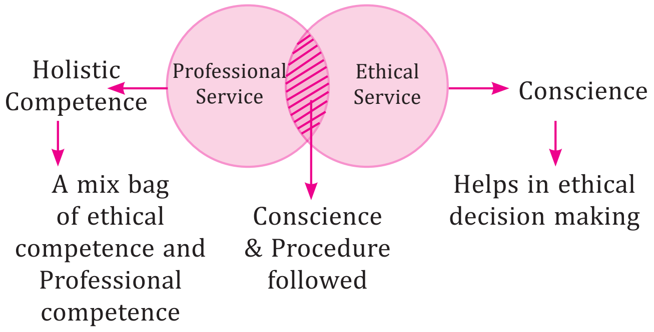

7.5.2 लोक सेवाओं का महत्व

विभिन्न कारणों से, समाज में लोक सेवा सर्वोपरि है:

- **सर्वजन हित:** लोक सेवा का उद्देश्य सामान्य जन की भलाई करना है और समग्र रूप से समाज के हितों को आगे बढ़ाना है।
  - **यह आवश्यक सेवाएं प्रदान करने,** सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने और सामूहिक मांगों को पूरा करने पर केंद्रित है जिन्हें निजी क्षेत्र ठीक से पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं।
- **समानता और समावेशन:** सार्वजनिक क्षेत्र असमानताओं को कम करने और सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।
  - इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि मूल निवास, धन या भूगोल की परवाह किए बिना समाज के सभी सदस्यों को मौलिक सेवाओं और अवसरों तक पहुंच प्राप्त हो।
  - सार्वजनिक सेवा दूरियों को पाटकर और समावेशिता को बढ़ावा देकर निष्पक्ष एवं अधिक न्यायसंगत समाज में योगदान देती है।

- **सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा:** स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता और सार्वजनिक सुरक्षा जैसी लोक सेवाएँ सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं।
  - वे जनता की भलाई एवं सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए व्यक्तियों एवं समुदायों को खतरों, बीमारियों और आपात स्थितियों से बचाती हैं।
- **आधारभूत ढाँचा और विकास:** परिवहन नेटवर्क, ऊर्जा ग्रिड, जल आपूर्ति प्रणाली और अपशिष्ट प्रबंधन सुविधाओं जैसे महत्वपूर्ण आधारभूत ढाँचे का विकास एवं रखरखाव सार्वजनिक सेवाओं द्वारा किया जाता है।
  - ये बुनियादी ढांचा परियोजनाएं आर्थिक विकास को बढ़ावा देने, जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा देने में मदद करती हैं।
- **शिक्षा और ज्ञान:** सार्वजनिक सेवा में शिक्षा प्रणालियाँ शामिल हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच प्राप्त हो।
  - **यह रचनात्मकता,** आर्थिक उत्पादकता और सामाजिक प्रगति का समर्थन करते हुए एक जानकार और कुशल कार्यबल के विकास में योगदान देती है।
- **लोकतांत्रिक सरकार:** सार्वजनिक क्षेत्र लोकतांत्रिक सरकार से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। यह गारंटी देती है कि सार्वजनिक संसाधनों का प्रबंधन ठीक से और जनता के सर्वोत्तम हित में किया जाए।
  - **नागरिकों के प्रति जवाबदेह,** सार्वजनिक अधिकारी अपनी सेवा वितरण में लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता एवं नैतिक मानकों का सम्मान करने का प्रयास करते हैं।
- **संकट प्रबंधन और आपदा प्रतिक्रिया:** संकट और आपदाओं के दौरान, सार्वजनिक सेवाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे लोगों, उनकी संपत्ति और आधारभूत ढांचे की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए आपदा प्रतिक्रिया, राहत और पुनर्वास संबंधी सेवाएं प्रदान करते हैं।
  - किसी आपदा के बाद, लोक सेवा एजेंसियां प्रयासों में समन्वय करती हैं, सहायता प्रदान करती हैं और समुदायों को पुनर्निर्माण में सहायता करती हैं।
- **सामाजिक कल्याण और सहायता:** लोक सेवाओं में समाज के कमजोर व्यक्तियों और समूहों का सहयोग करने और सहायता करने वाले सामाजिक कल्याण कार्यक्रम शामिल हैं।
  - ये जरूरतमंद व्यक्तियों की भलाई और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए उन्हें सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल कवरेज, आवास सहायता और अन्य प्रकार की सामाजिक सहायता प्रदान करते हैं।
- **पर्यावरणीय प्रबंधन:** सार्वजनिक क्षेत्र में पर्यावरणीय स्थिरता की आवश्यकता को व्यापक रूप से मान्यता दी जा रही है।
  - **पर्यावरण की रक्षा करने,** जलवायु परिवर्तन को कम करने और ऊर्जा, परिवहन, अपशिष्ट प्रबंधन और संरक्षण जैसे क्षेत्रों में संवहनीय प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए सरकारी एजेंसियों द्वारा पर्यावरण नीतियों एवं पहलों को लागू किया जाता है।

कुल मिलाकर, लोक सेवा एक अच्छे कार्यशील समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। यह सामाजिक जरूरतों को पूरा करती है, महत्वपूर्ण सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करती है, समानता एवं विविधता को बढ़ावा देती है और लोकतांत्रिक मूल्यों का पालन करती है। लोक सेवा सार्वजनिक हित में कार्य करके समुदायों, व्यक्तियों और समग्र रूप से समाज की उन्नति में योगदान देती है।

7.5.3 लोक सेवाओं के समक्ष चुनौतियाँ

यद्यपि, लोक सेवाएँ समाज की भलाई के लिए महत्वपूर्ण हैं, फिर भी उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो उनकी प्रभावशीलता और उनके वितरण में बाधा पहुँचा सकती हैं। लोक सेवाओं से जुड़े कुछ प्रमुख मुद्दे इस प्रकार हैं:

- **वित्तीय सीमाएँ:** चूंकि लोक सेवाएँ अक्सर सरकारी वित्तपोषण पर निर्भर होती हैं, वित्तीय सीमाएँ उनके संसाधनों को सीमित कर सकती हैं। अपर्याप्त वित्तपोषण के परिणामस्वरूप उपयुक्त कर्मचारियों, आधारभूत ढांचे, उपकरण और सेवा अदायगी की कमी हो सकती है, जिससे सेवा की गुणवत्ता और पहुंच प्रभावित हो सकती है।
  - **उदाहरण के लिए,** लोक लेखा समिति (पीएसी) ने 'सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली [पीएफएमएस] के कार्यान्वयन' पर अपनी 54वीं रिपोर्ट में बजट, प्रोजेक्टिंग और धन के उपयोग में वैज्ञानिक तरीकों को शामिल करके वित्तीय नियोजन में राजकोषीय विवेक पर जोर दिया है।
- **जटिल निर्णय लेना:** नौकरशाही प्रक्रियाएँ और निर्णय लेने का जटिल ढाँचा सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन को नुकसान पहुँचा सकते हैं।
  - **इससे सेवा वितरण में देरी,** अक्षमताएं और बदलती जरूरतों एवं अनुरोधों पर प्रतिक्रिया करने में कठिनाई हो सकती है।
  - **उदाहरण के लिए,** बिनोद कुमार चौधरी एक नेपाली अरबपति हैं और चौधरी समूह के अध्यक्ष एवं सभापति हैं, जो आतिथ्य और पाक कला उद्योग दोनों क्षेत्रों में कार्य करते हैं (वे प्रसिद्ध वाई-वाई नूडल्स का उत्पादन करते हैं)। उन्होंने 2010 में सूरत में जमीन खरीदी, उनकी वहां होटल बनाने की योजना थी, लेकिन लाइसेंस प्राप्त करने

के लिए उनके द्वारा किए गए कई वर्षों के प्रयासों के बाद उन्होंने इस परियोजना को छोड़ दिया।

- **जवाबदेही और पारदर्शिता संबंधी चुनौतियाँ:** स्पष्ट कार्य-प्रदर्शन उपायों का अभाव, रिपोर्टिंग की कमजोर प्रक्रियाओं एवं प्रतिबंधित लोक संपर्क के कारण जवाबदेही एवं सार्वजनिक विश्वास बाधित हो सकता है।
- **कार्यबल संबंधी मुद्दे:** सार्वजनिक क्षेत्र प्रशिक्षित एवं प्रेरित कार्यबल पर निर्भर करता है। हालाँकि, सीमित मुआवजा संरचनाओं, निजी क्षेत्र की प्रतिस्पर्धा और नौकरशाही कार्य संस्कृतियों जैसे कारणों से, प्रतिभाशाली व्यक्तियों को आकर्षित करना और बनाए रखना मुश्किल हो सकता है।
- **जटिल हितधारक प्रबंधन:** विभिन्न हितों और एजेंडा वाले कई हितधारक अक्सर लोक सेवाओं में शामिल होते हैं।
  - विभिन्न हितधारकों के हितों को संतुलित करना और कुशल सहयोग एवं समन्वय सुनिश्चित करना कठिन हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप संभावित संघर्ष, देरी और सेवा वितरण में समझौता करना पड़ सकता है।
- प्रौद्योगिकी में तेजी से हो रहे सुधार लोक सेवाओं के लिए अवसरों के साथ-साथ कठिनाइयाँ भी प्रस्तुत करते हैं।
  - प्रौद्योगिकी जहां दक्षता और सेवा अदायगी में बढ़ोतरी ला सकती है वहीं नई प्रौद्योगिकियों को अपनाने एवं एकीकृत करने के लिए पर्याप्त निवेश, प्रशिक्षण और बदलाव के प्रति प्रतिरोध पार पाने की आवश्यकता पड़ सकती है।
- **बदलती आवश्यकताएँ और बढ़ती माँग:** समाज की आवश्यकताएँ एवं अपेक्षाएँ सदैव बदलती रहती हैं।
  - **बदलती जनसांख्यिकी,** तकनीकी में सुधार और बढ़ती सामाजिक-आर्थिक चिंताओं के प्रति लोक सेवाओं को अनुकूलित किए जाने की आवश्यकता है।
  - बढ़ती हुई मांगों एवं सीमित संसाधनों के बीच संतुलन साधने में सेवा वितरण पर दबाव पड़ सकता है और बदलती जरूरतों को कुशलतापूर्वक पूरा करने की क्षमता बाधित हो सकती है।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप और अस्थिरता:** राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण लोक सेवाओं में असंगत नीतियां, बार-बार पुनर्गठन और नेतृत्व परिवर्तन हो सकता है।
  - **इन मुद्दों के कारण सेवा निरंतरता बाधित हो सकती है,** संस्थागत स्थिरता को खतरा हो सकता है और दीर्घकालिक योजना एवं उनकी प्रभावकारिता प्रभावित हो सकती है।
- **आपातकाल और संकट प्रबंधन:** वहीं दूसरी ओर, बड़े पैमाने पर आपदाओं या आपात स्थितियों के कारण लोक सेवा एजेंसियों की क्षमता एवं संसाधनों पर बोझ पड़ सकता है, जिससे उनके लिए समय पर एवं प्रभावी सहायता प्रदान करना मुश्किल हो जाता है।

निष्कर्ष

इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए, उचित वित्त, संगठनात्मक सुधार, सुव्यवस्थित प्रक्रियाएँ, बेहतर जवाबदेही तंत्र, कार्यबल विकास और नवीन समाधान अपनाने जैसी सक्रिय पहलों की आवश्यकता है। निरंतर समीक्षा करना, सीखना और बदलती मांगों के अनुसार बदलाव, लोक सेवाओं को इन समस्याओं से उबरने और जनता को कुशल एवं प्रभावी सेवाएं प्रदान करने में मदद कर सकता है।

7.5.4 लोक सेवाओं की बदलती प्रकृति

- **नियामक के स्थान पर सुविधाप्रदाता होना:** पहले लोक सेवा से तात्पर्य पुलिस राज्य, कानून और व्यवस्था बनाए रखने, की अवधारणा के तहत समाज के लिए हानिकारक गतिविधियों को विनियमित करना था।
  - **उस परिदृश्य में,** निष्पक्षता, प्रक्रियात्मक शुद्धता, वैधता, ईमानदारी सिविल सेवा के प्रमुख मूल्य हुआ करते थे।
  - शासन के बदलते हुए परिदृश्य ने सरकार को निजी पक्षों के लिए एक सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य करने का अवसर दिया।
  - सुविधा प्रदाता की भूमिका में सरकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उस पक्ष की जरूरतों को समझें और उसकी कार्यप्रणाली को आसान बनाएं और उसका मार्गदर्शन करें।
  - इस उभरती भूमिका ने लोक सेवा को प्रक्रियात्मक शुद्धता के स्थान पर लचीलेपन पर जोर देने को विवश किया है।
  - विनियामक कार्यों के कारण विनियमन अधीन पक्षों के कार्य-प्रदर्शन का निरीक्षण करने और उनके द्वारा गैर-अनुपालना पर तदनुसार जुर्माना लगाने की आवश्यकता हुई है।
- **विनियमन से विकास की ओर बदलाव:** विनियमन का तात्पर्य निगरानी से है, जबकि विकास का तात्पर्य लोक कल्याण हेतु सेवाओं के प्रावधान से है।
  - विकास संबंधी सेवाएं (शिक्षा, स्वास्थ्य, ऋण, रोजगार, भोजन, आदि) ज्यादातर समाज के सबसे वंचित वर्गों के लिए होती हैं, जिसके लिए सादगी एवं सहानुभूति जैसे मूल्यों का पालन किए जाने की आवश्यकता होती है।
- क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने पर ध्यान दिया जाता जा रहा है। छोटे शहरों और देश के सभी पिछड़े इलाकों को ध्यान रखकर निर्णय लिए जा रहे हैं।

- **प्रशासन में तकनीकी का समावेश:** व्यक्तियों के जीवन में प्रौद्योगिकी के प्रवेश की स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में, प्रशासन को प्रौद्योगिकी के प्रवेश को विनियमित करना एवं सुविधाजनक बनाना दोनों कार्य करने होंगे, जिससे शासन में टेक्नोक्रेट को शामिल करना आवश्यक हो जाएगा।
  - **बहुत सारे फोरेंसिक विशेषज्ञ,** साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ एवं निर्माता शासन के क्षेत्र में आए हैं जिससे लोक सेवा वितरण, अंतर्विषयक विषय बन गया है जिसमें टीम भावना, प्रौद्योगिकी इंटरफेस और विशेषज्ञता जैसे कई नए लोक सेवा मूल्य सामने आए हैं।
  - हालाँकि इससे पदानुक्रम और केंद्रीयकरण जैसे पारंपरिक लोक सेवा मूल्यों का क्षरण हुआ है।
- **सूचना प्रौद्योगिकी:** शासन में सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से शासन एवं जनता के बीच की दीवार को तोड़ दिया है। इससे वास्तविक समय में एक साथ अनेक नागरिकों को सेवा प्रदान किया जाना संभव हुआ है।
- इसके कारण नवाचार, पदानुक्रम, पारदर्शिता, द्वार पर सेवा उपलब्ध करवाना और कुशलता जैसे नए लोक सेवा मूल्यों का उद्‌भव हुआ है।
- **नया लोक प्रबंधन (एनपीएम):** एनपीएम का संदर्भ लोक प्रशासन में निजी क्षेत्र के प्रबंधन सिद्धांतों के अनुप्रयोग से है, जिसमें कार्य-निष्पादन से जुड़े पुरस्कार, ग्राहक-केंद्रितता, नवाचार, उद्यमशीलता की भावना, समूह में कार्य करना, परिणाम-प्रबंधन, प्रतिस्पर्धा, लचीलापन, पूंजीवाद, बाजार वर्चस्व और योग्यता जैसे निजी क्षेत्र के सिद्धांत शामिल हैं।

चित्र: लोक सेवाओं के बदलते मूल्य।

- **पारंपरिक लोक सेवा को अक्षम बताया गया था,** फाइलों का गोल-गोल घूमना, स्वत: पदोन्नति और जवाबदेही न होना, जिसने वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिकता खो दी है, यह पदानुक्रम, आवधिकता, विवेकाधिकार और गोपनीयता जैसे पारंपरिक लोक सेवा मूल्यों को नष्ट कर रहा है।
- टीम वर्क, नेतृत्व, समानता, लचीलापन और दूरदर्शिता जैसे **नए लोक सेवा मूल्यों ने प्रासंगिकता हासिल कर ली है।**

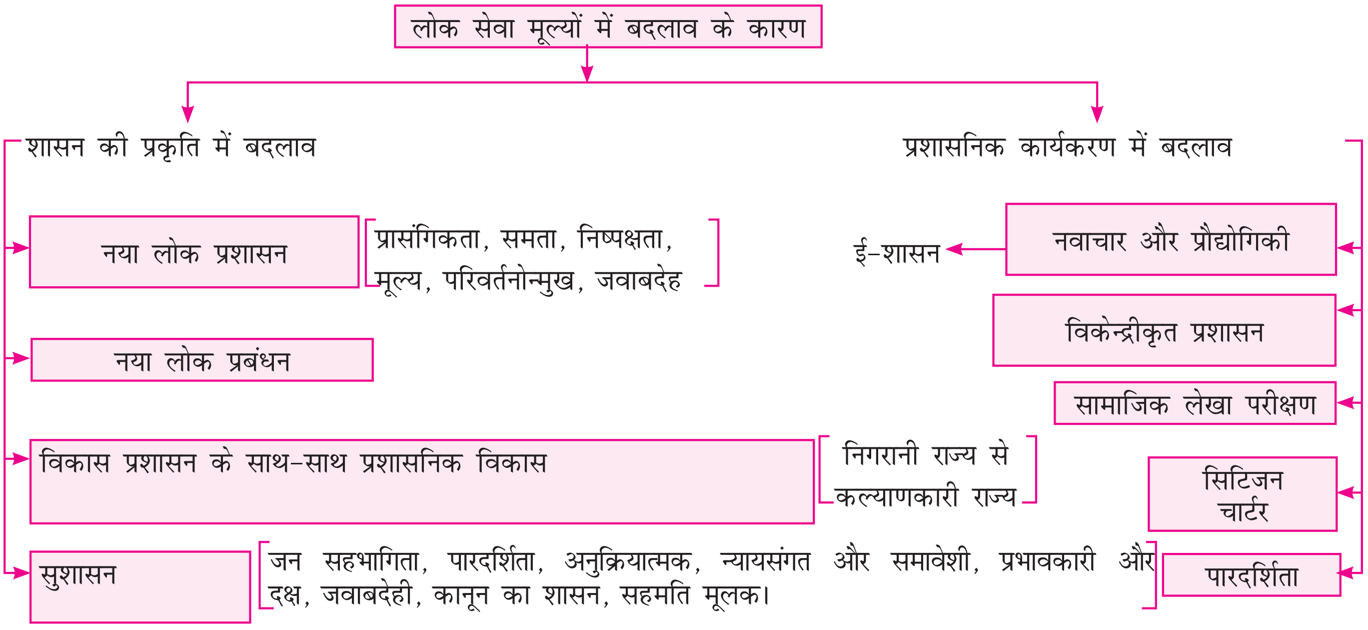

चित्र: लोक सेवाओं की प्रकृति में बदलाव हेतु जिम्मेदार कारक

7.5.5 लोक सेवाओं में नैतिकता संबंधी चिंताएँ

जनता के सर्वोत्तम हित में कार्य करने और निर्णय प्रक्रिया एवं कार्यों में नैतिक मूल्यों को बनाए रखने की लोक सेवकों की जिम्मेदारी के कारण लोक सेवा में नैतिकता पर विचार किया जाता है। **सरकार में कुछ विशिष्ट नैतिक चिंताएं निम्न हैं:**

- **हितों का टकराव:** लोक सेवकों को व्यक्तिगत हितों एवं लोक कर्तव्य के बीच टकराव से बचना चाहिए।
  - इसमें उन स्थितियों से बचना शामिल है जिनमें व्यक्तिगत वित्तीय लाभ या व्यक्तिगत संबंध के कारण निर्णय प्रक्रिया प्रभावित हो सकती हों या उनके कार्यों में निष्पक्षता एवं सत्यनिष्ठा बाधित हो सकती हों।
  - **उदाहरण के लिए,** सेवानिवृत्त सिविल सेवक निजी क्षेत्र में नौकरियां ले रहे हैं और वित्तीय अनियमितताओं में लिप्त हैं।
- लोक सेवकों से उनके कार्यों और उनके विकल्पों में पारदर्शिता एवं जवाबदेही की अपेक्षा की जाती है।
- **सार्वजनिक संसाधनों के उपयोग,** खरीद प्रक्रियाओं में पारदर्शिता की गारंटी, पक्षपात या भाई-भतीजावाद को रोकने के लिए उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।
- **न्यायसंगतता और निष्पक्षता:** सभी लोगों के साथ न्यायसंगत एवं समान व्यवहार करते हुए लोक सेवकों को निष्पक्ष तरीके से और बिना किसी पक्षपात के कार्य करना चाहिए।
  - व्यक्तिगत पूर्व धारणाओं या पक्षपात के बजाय, उन्हें योग्यता, वस्तुनिष्ठ मानकों और जन हित को आधार बनाना चाहिए।
- लोक सेवक अक्सर संवेदनशील सामग्री संभालते हैं और उन्हें व्यक्तियों की गोपनीयता और निजता के अधिकारों का सम्मान करना चाहिए। उन्हें उचित डेटा सुरक्षा उपायों का पालन करना चाहिए और गोपनीय जानकारी का उपयोग केवल कानूनी उद्देश्यों के लिए ही करना चाहिए।
- **व्यावसायिकता और सत्यनिष्ठा:** लोक सेवकों को व्यावसायिकता और सत्यनिष्ठा के साथ आचरण करना चाहिए।
  - **इसमें ईमानदारी,** सत्यनिष्ठा और दूसरों के प्रति सम्मान के साथ कार्य करके संस्था में विश्वास और जनता का विश्वास बनाए रखना शामिल है।
- **जनता से जुड़ाव और जन भागीदारी:** लोक सेवकों का यह दायित्व है कि वे जनता के साथ जुड़ें, उनकी चिंताओं को सुनें और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में यथोचित रूप से शामिल करें।
  - जब वास्तविक जन भागीदारी नहीं होती है या जब जनता के मत पर विचार किए बिना विकल्प चुने जाते हैं, तो नैतिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं।
- **नैतिक शक्ति एवं प्राधिकार:** लोक सेवक जनता द्वारा उन्हें सौंपी गई शक्ति एवं प्राधिकार का उपयोग करते हैं। शक्ति के दुरुपयोग या भ्रष्टाचार से बचते हुए, इस शक्ति का नैतिक रूप से उपयोग करना महत्वपूर्ण हो जाता है।
- **संचार एवं पारदर्शिता में नैतिकता:** गुमराह करने या तथ्यों को छिपाने से विश्वास कम हो सकता है और जनता को सूचित निर्णय लेने से रोका जा सकता है।
- **नैतिक नेतृत्व एवं अनुकरणीय व्यक्तित्व:** सार्वजनिक क्षेत्र के नेताओं का काम नैतिक मानक बनाना और अपने अधीनस्थों एवं व्यापक समुदाय के बीच एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में काम करना है।

निष्कर्ष

सरकार में नैतिक चुनौतियों का समाधान करने के लिए स्पष्ट नैतिक मानक, आचार संहिता और प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। मजबूत नैतिक नेतृत्व, प्रभावी एवं जवाबदेही प्रक्रियाएं और नैतिक व्यवहार एवं सत्यनिष्ठा को प्रोत्साहित करने वाली संस्कृति की भी आवश्यकता है।

7.5.6 लोक सेवा संहिता

- **लोक सेवा विधेयक, 2007 के प्रारूप में,** द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग (एआरसी) ने एक लोक सेवा संहिता की शुरूआत की वकालत की है। आयोग ऑस्ट्रेलिया, पोलैंड और ऐसे ही अन्य देशों के संविधानों में शामिल ऐसे अनुच्छेदों से प्रेरित था।
- आयोग उन वांछनीय विशेषताओं को निर्दिष्ट करता है जिससे सिविल सेवाओं में कुशलता आ सके।

  क. उनमें निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा, जन सेवा के प्रति समर्पण, राजनीतिक तटस्थता, शुचिता के श्रेष्ठतम मानकों का पालन करना, निष्पक्षता, कम भाग्यशाली लोगों के प्रति सहानुभूति आदि शामिल हैं।
- आयोग इन मानदंडों को सामान्य रूप से लागू करने में आने वाली कठिनाई को स्वीकार करता है। हालाँकि, आयोग ने कहा है कि संगठनों के अंदर नेतृत्व पदों पर बैठे व्यक्तियों के इन मूल्यों को लागू करने के प्रयासों से स्थिति में कुछ अंतर आ सकता है।
- **आयोग के अनुसार,** लोक सेवा संहिता से कार्मिकों के लिए अपने आधिकारिक दायित्वों को सक्षमता एवं जवाबदेही, सावधानी एवं कर्मठता, ईमानदारी, बिना किसी भेदभाव के और कानून के अनुरूप पूरा करना आसान हो जाएगा।

- इसमें त्रिस्तरीय व्यापक सिविल सेवा संहिता की परिकल्पना की गई है।
    1. **सर्वोच्च स्तर:** उन आदर्शों एवं नैतिक मानकों की संक्षिप्त एवं स्पष्ट व्याख्या जिनका संघीय सेवकों को पालन करना चाहिए।
    2. **दूसरा स्तर:** सिविल सेवकों के आचरण को नियंत्रित करने वाले व्यापक सिद्धांतों की रूपरेखा प्रदान करता है।
    3. **तीसरा स्तर:** यह विस्तृत आचार संहिता है जो स्वीकार्य एवं निषिद्ध आचरण की सूची विनिर्दिष्ट करता है और सटीक एवं स्पष्ट तरीके से कार्य करता है।
- आयोग का मानना था कि सरकारी सेवा विधेयक के माध्यम से आचार संहिता को वैधानिक स्वरूप प्रदान करने से सरकारी सेवक ऐसे व्यवहार, विकल्प एवं कार्यों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित होंगे जिससे जनता को लाभ पहुंचें।

7.6 शासन में सूचना साझाकरण और पारदर्शिता

शासन में सूचना साझा करना और पारदर्शिता लोकतांत्रिक शासन और सार्वजनिक जवाबदेही के महत्वपूर्ण तत्व हैं। इनमें सरकारी संस्थानों द्वारा जनता के सामने जानकारी का सक्रिय प्रकटीकरण शामिल है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि नागरिकों को सरकारी गतिविधियों, निर्णयों और नीतियों के बारे में प्रासंगिक और समय पर जानकारी मिल सके।

> ''पारदर्शिता एक विकल्प नहीं है, बल्कि एक आधुनिक और प्रभावी शासन के लिए एक आवश्यकता है।''
>
> **–क्रिस्टीन लेगार्ड**

पारदर्शिता की परिभाषा

- पारदर्शिता केवल जानकारी साझा करने से संबंधित नहीं है, बल्कि सरकार की गतिविधियों के लिए खुलापन, ईमानदारी और जवाबदेही से भी संबंधित है।
- पारदर्शिता से तात्पर्य है कि लागू कानूनों और विनियमों के अनुसार निर्णय कैसे लिए जाते हैं और लागू किए जाते हैं।
    - इसका तात्पर्य यह भी है कि जानकारी आसानी से पढ़ने योग्य प्रारूपों में आसानी से उपलब्ध हो। यह उन लोगों के लिए सुलभ हो जो ऐसे निर्णयों और उनके कार्यान्वयन से प्रभावित होंगे।

शासन में सूचना और पारदर्शिता का महत्व

पारदर्शिता और सूचना शासन के प्रमुख घटक हैं, जो प्रभावी, जवाबदेह और लोकतांत्रिक शासन के लिए आधार तैयार करते हैं। **उनके महत्व के कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्न हैं:**

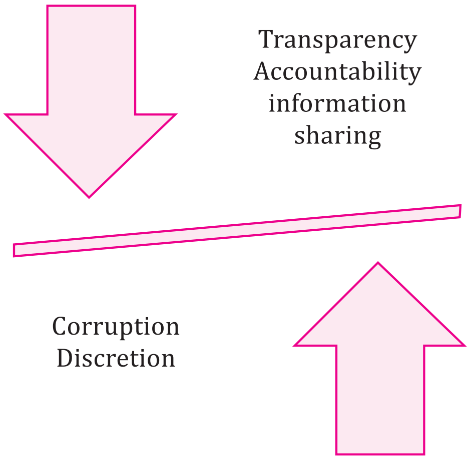

- **जवाबदेही:** जब आम जनता के पास सरकारी प्रक्रियाओं, नीतियों और प्रदर्शन के बारे में जानकारी तक पहुंच होती है, तो यह अधिक जांच को प्रोत्साहित करती है, भ्रष्टाचार को कम करती है और जनता का विश्वास बढ़ाती है।
- **विश्वास:** पारदर्शिता सरकार और उसके घटकों के बीच विश्वास को बढ़ावा देती है। जब सरकारें अपनी गतिविधियों, निर्णय लेने और संसाधन आवंटन में खुली और पारदर्शी होती हैं, तो यह शासकीय संस्थानों की वैधता को मजबूत करती है और सार्वजनिक विश्वास को प्रोत्साहित करती है।
    - **आरटीआई अधिनियम,** नागरिक चार्टर, ई-गवर्नेंस पहल, नागरिक समाज आंदोलन आदि जवाबदेही में सहायता के लिए कुछ तंत्र हैं।
- **सूचित निर्णय:** सूचना तक पहुंच नागरिकों को उनके जीवन, समुदायों और सरकार की समग्र दिशा के बारे में सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाती है।
    - **यह लोगों को सार्वजनिक बहसों में भाग लेने,** नीतिगत चर्चाओं में योगदान देने और उन मुद्दों पर सूचित राय बनाने में सक्षम बनाता है जो उनसे संबंधित हैं।
- **सार्वजनिक भागीदारी:** यह शासन प्रक्रियाओं में सार्थक सार्वजनिक भागीदारी की अनुमति देता है। जिन नागरिकों के पास महत्वपूर्ण जानकारी तक पहुंच है, वे निर्णय लेने में भाग लेते हैं, इनपुट प्रदान करते हैं, नीतियों और कार्यक्रमों को आकार देने में मदद कर सकते हैं।

- **साक्ष्य आधारित निर्णय लेना:** यह सुनिश्चित करता है कि निर्णय लेने की प्रक्रिया साक्ष्य आधारित और समावेशी है। सूचना तक पहुंच नीति निर्माताओं को सुविज्ञ नीतियां विकसित करने में सहायता करती है जो कई दृष्टिकोणों और विभिन्न हितधारकों के अनुभवों को ध्यान में रखती हैं।
- **भ्रष्टाचार को प्रतिबंधित करना:** भ्रष्टाचार की रोकथाम और सामना करने में पारदर्शिता एक मजबूत साधन है। जब सरकारी प्रक्रियाओं, लेन-देन और बजट को सार्वजनिक किया जाता है, तो यह भ्रष्ट आचरण पर एक निवारक के रूप में कार्य करता है।
    - **यह बढ़ी हुई जवाबदेही,** अनियमितताओं की खोज और सरकार के भीतर नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देता है।
- **संसाधनों का कुशल आवंटन:** शासन में पारदर्शिता यह गारंटी देती है कि सार्वजनिक संसाधनों का आवंटन कुशल और प्रभावी तरीके से किया जाता है। जब बजटीय आवंटन, सार्वजनिक व्यय और खरीद प्रक्रियाओं पर जानकारी आसानी से उपलब्ध होती है, तो यह बर्बादी की रोकथाम में सहायता करती है, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करती है और सार्वजनिक निवेश में धन का मूल्य सुनिश्चित करती है।
- **सामाजिक बंधन:** पारदर्शिता और सूचना का आदान-प्रदान सूचना विषमता को दूर करके और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच समझ बढ़ाकर सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देता है।
    - सटीक और संपूर्ण जानकारी तक पहुंच संचार को प्रोत्साहित करती है, विश्वास पैदा करती है और विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच दूरियों को कम करती है।
- **वैश्विक छवि में सुधार:** पारदर्शी शासन प्रणालियां अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और विकास को बढ़ावा देती हैं। पारदर्शी शासन प्रक्रियाओं से निवेश आकर्षित करने, अंतर्राष्ट्रीय सहायता प्राप्त करने और अन्य देशों के साथ प्रभावी सहयोग बनाने की संभावना बढ़ जाती है।

इस प्रकार पारदर्शिता और सूचना तक पहुंच सुशासन की महत्वपूर्ण आधारशिलाएं हैं। ये जवाबदेही, विश्वास, नागरिक भागीदारी, सूचित निर्णय लेने और कुशल संसाधन आवंटन को प्रोत्साहित करते हैं।

सार्वजनिक कार्यालयों में सूचना साझाकरण और पारदर्शिता में सुधार के लिए तंत्र

- **आरटीआई:** सूचना आदान-प्रदान और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा आरटीआई अधिनियम लागू किया गया था। परिणामस्वरूप, इसे अक्षरशः क्रियान्वित किया जाएगा।
- **पारदर्शिता की शपथ:** नौकरशाहों और राजनेताओं को पारदर्शिता की शपथ दिलाना।
- **आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम:** इसे निरस्त किया जाना चाहिए ताकि दोनों अधिनियम एक-दूसरे का खंडन न करें।
- **ई-गवर्नेंस:** नियमित अपडेट के साथ सूचना का निर्बाध प्रवाह सुनिश्चित करने के लिए ई-गवर्नेंस तकनीक बनाएं।
    - ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल बाधा को पाटें ताकि ग्रामीण निवासी सेवाओं तक पहुंच बना सकें।
- ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों में सामाजिक अंकेक्षण का उपयोग किया जाना चाहिए।
- **मीडिया:** जन जागरूकता बढ़ाने और विश्वास कायम करने के लिए मीडिया का उपयोग।
- **नागरिक चार्टर:** उपलब्ध सेवाओं की सूची प्रकाशित की जानी चाहिए।

7.7 सूचना का अधिकार (आरटीआई)

- संयुक्त राष्ट्र महासभा के 1946 के संकल्प 59 ने सूचना की स्वतंत्रता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के एक आवश्यक घटक के रूप में मान्यता दी।
- **सूचना का अधिकार अधिनियम:** अधिनियम प्रत्येक नागरिक को सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा रखी गई जानकारी तक पहुंचने का अधिकार देता है।
    - **नागरिक सरकारी निर्णयों,** नीतियों, कार्यक्रमों, परियोजनाओं और रिकॉर्ड सहित सार्वजनिक महत्व के किसी भी मामले पर जानकारी का अनुरोध कर सकते हैं।

भारत में आरटीआई की उत्पत्ति

भारत में आरटीआई विकास में महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ जिसके प्रगति का त्वरित विवरण दिया गया है:

- **आरटीआई अधिनियम से पहले,** सरकारी अधिकारियों से जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ विकल्प थे।
    - हालांकि कई राज्यों के पास अपने स्वयं के सूचना अधिनियम थे, लेकिन कोई व्यापक राष्ट्रीय कानून नहीं था।
    - 1986 में सुप्रीम कोर्ट ने कुलवाल बनाम जयपुर नगर निगम मामले में कहा कि सूचना के अधिकार के बिना बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अर्थहीन है।

- **पारदर्शिता की वकालत और मांग:** पिछले कुछ वर्षों में, नागरिक समाज संगठनों, कार्यकर्ताओं और मीडिया वकालत ने व्यापक सूचना के अधिकार कानूनों की मांग बढ़ा दी थी।
  - आरटीआई पहल का उद्देश्य खुलापन, जवाबदेही और नागरिक सशक्तिकरण को बढ़ाना है।
  - 1994 में, मजदूर किसान शक्ति संगठन (एमकेएसएस) ने आरटीआई कार्यान्वयन के लिए पहला जमीनी स्तर का आंदोलन शुरू किया।
  - **पीपुल्स आरटीआई राष्ट्रीय अभियान:** 1996 में स्थापित पीपुल्स आरटीआई के लिए राष्ट्रीय अभियान ने सरकार के लिए आरटीआई कानून का पहला मसौदा विकसित किया।
  - **तमिलनाडु 1997** में आरटीआई कानून पारित करने वाला पहला भारतीय राज्य था।
- भारतीय संसद ने 2005 में आरटीआई अधिनियम पारित किया और उसी वर्ष 15 जून को इसे राष्ट्रपति की सहमति प्राप्त हुई। यह 12 अक्टूबर 2005 को प्रभावी हुआ, जिससे नागरिकों के लिए सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा रखे गए डेटा तक पहुँचने के लिए एक औपचारिक रूपरेखा तैयार की गई।

7.7.1 आरटीआई अधिनियम 2005 की मुख्य विशेषताएं

- यह पूरे देश पर लागू होता है (धारा 1(2))।
- **सार्वजनिक प्राधिकरण को परिभाषित करता है:** धारा 2(एच) के तहत ''सार्वजनिक प्राधिकरण'' का अर्थ है स्थापित या गठित स्वशासन का कोई प्राधिकरण, निकाय या संस्थान–
  - **संविधान द्वारा या उसके अंतर्गत;**
  - संसद/राज्य विधानमंडल द्वारा बनाए गए किसी अन्य कानून द्वारा।
  - उचित सरकार द्वारा जारी अधिसूचना या आदेश द्वारा, और इसमें शामिल है–
    - **सरकारी स्वामित्व वाली,** नियंत्रित या पर्याप्त रूप से वित्तपोषित संस्था;
    - गैर-सरकारी संगठनों को उचित सरकार द्वारा प्रदान की गई धनराशि द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्याप्त रूप से वित्तपोषित किया जाता है।
- **निर्दिष्ट प्रतिक्रिया समय:** सार्वजनिक एजेंसियों को सूचना अनुरोधों का उत्तर 30 दिनों के भीतर देना होगा। किसी व्यक्ति के जीवन या स्वतंत्रता से जुड़ी परिस्थितियों में, 48 घंटों के भीतर प्रतिक्रिया जारी की जानी चाहिए।
  - **यदि डेटा किसी अन्य सरकारी एजेंसी के पास है,** तो इसे पांच दिनों के भीतर स्थानांतरित किया जाना चाहिए।
- **सूचना प्रकटीकरण:** अधिनियम में सार्वजनिक एजेंसियों को सक्रिय आधार पर कुछ श्रेणियों की जानकारी का खुलासा करने की आवश्यकता है।
  - **उन्हें अपने कार्यों**, शक्तियों, नियमों, विनियमों, बजटीय आवंटन और सार्वजनिक अनुबंध विवरण के बारे में जानकारी प्रकाशित करनी होगी।
  - इससे पारदर्शिता बढ़ती है जबकि व्यक्तियों द्वारा सूचना अनुरोध दाखिल करने की आवश्यकता कम हो जाती है।
- **छूट:** अधिनियम उन परिस्थितियों को निर्दिष्ट करता है जिनके तहत जानकारी रोकी जा सकती है। राष्ट्रीय सुरक्षा, रक्षा, संप्रभुता, गोपनीयता, वाणिज्यिक विश्वास और कैबिनेट फाइलें छूट में से हैं।
  - **हालाँकि,** ये बहिष्करण एक सार्वजनिक हित परीक्षण के अधीन हैं, और भ्रष्टाचार और मानवाधिकार उल्लंघनों के बारे में जानकारी छिपाई नहीं जा सकती है।
- **अपील और शिकायतें:** अधिनियम दो-स्तरीय अपील प्रणाली बनाता है। यदि किसी सूचना अनुरोध को अस्वीकार कर दिया जाता है या कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलती है, तो आवेदक के पास प्रथम अपीलीय प्राधिकारी के पास अपील दायर करने के लिए 30 दिन का समय होता है।
  - **यदि अपील अस्वीकार कर दी जाती है,** तो आवेदक के पास राष्ट्रीय या राज्य स्तर पर सूचना आयोग के पास एक और अपील दायर करने के लिए 90 दिन का समय होता है।
- **सूचना आयोग:** अधिनियम संघीय स्तर पर एक केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) और राज्य-स्तरीय सूचना आयोग (एसआईसी) बनाता है।
  - ये आयोग निष्पक्ष संस्थाओं के रूप में कार्य करते हैं जो आरटीआई अधिनियम की अपीलों और शिकायतों को सुनते हैं।
  - **उनके पास सूचना जारी करने का आदेश देने,** अवज्ञाकारी सार्वजनिक कर्मचारियों पर जुर्माना लगाने और अधिनियम का पालन करने की गारंटी देने के निर्देश देने का अधिकार है।
  - **आरटीआई संशोधन अधिनियम 2019,** केंद्र सरकार को सीआईसी का वेतन तय करने की शक्ति देता है।
- **दंड और उपचार:** अधिनियम, अधिनियम का अनुपालन न करने पर जुर्माना और उपचार स्थापित करता है।
  - सार्वजनिक कर्मचारी जो अनुचित तरीके से जानकारी तक पहुंच रोकते हैं या देरी करते हैं, उन्हें दंडित किया जा सकता है, और प्रभावित आवेदक को मुआवजा दिया जा सकता है।
  - अधिनियम में सूचना के प्रवाह को अवरुद्ध करने वाले सार्वजनिक अधिकारियों के लिए अनुशासनात्मक दंड भी शामिल है।
- आरटीआई आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम को भी खत्म कर देता है। धारा 8(2) में व्यापक सार्वजनिक हित की पूर्ति

के लिए आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1923 के तहत छूट प्राप्त जानकारी के प्रकटीकरण का प्रावधान है।

आरटीआई और न्यायपालिका

- आरटीआई अधिनियम ने अपने प्रावधानों को पूरा करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और राज्यों के उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों को शक्तियां प्रदान कीं।
- सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार के आरटीआई-अनुकूल नियमों को अपने लिए अपनाया।
- **सुभाष अग्रवाल केस:**
  - सुप्रीम कोर्ट ने भारत के मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय को आरटीआई अधिनियम के तहत एक सार्वजनिक प्राधिकरण घोषित किया। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि निजता का अधिकार एक महत्वपूर्ण पहलू है और भारत के मुख्य न्यायाधीश के कार्यालय से जानकारी देने का निर्णय लेते समय इसे पारदर्शिता के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।
  - आरटीआई का उपयोग निगरानी के उपकरण के रूप में नहीं किया जा सकता है और पारदर्शिता से निपटने के दौरान न्यायिक स्वतंत्रता को ध्यान में रखना होगा।
  - जजों की नियुक्ति से जुड़े मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नियुक्ति के लिए कॉलेजियम द्वारा अनुशंसित जजों के केवल नामों का ही खुलासा किया जा सकता है, कारणों का नहीं।

आरटीआई और राजनीतिक दल

- 2013 में केंद्रीय सूचना आयोग की पूर्ण पीठ ने राष्ट्रीय राजनीतिक दलों को आरटीआई अधिनियम के दायरे में लाया।

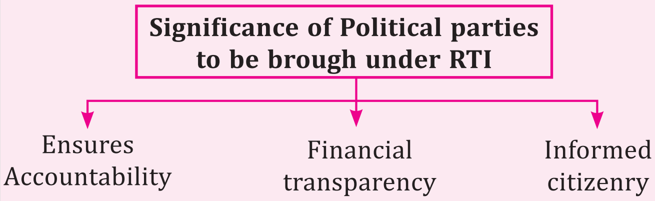

राजनीतिक दलों को आरटीआई लोक प्राधिकरण के अंतर्गत लाने के संबंध में चिंताएं

- आरटीआई का उपयोग दुर्भावनापूर्ण उद्देश्य से उन राजनीतिक रणनीतियों को समझने के लिए किया जा सकता है जो उनकी जीत की संभावनाओं को बाधित कर सकती हैं।
- आयकर अधिनियम, 1961 में पहले से ही प्रावधान हैं। जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 आवश्यक पारदर्शिता की मांग करता है।

7.7.2 आरटीआई अधिनियम का महत्व

- **पारदर्शिता और जवाबदेही:** सरकारी कार्यों में पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए आरटीआई अधिनियम आवश्यक है। यह नागरिकों को सरकारी निर्णयों, नीतियों और गतिविधियों के बारे में जानकारी तक पहुंच प्रदान करता है, जिससे वे सार्वजनिक अधिकारियों को उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहरा सकते हैं।
  - **यह पारदर्शिता, भ्रष्टाचार को कम करने,** निष्पक्ष प्रथाओं को बढ़ावा देने और जिम्मेदार शासन के कार्यान्वयन में सहायता करती है।
- **नागरिकों का सशक्तिकरण:** आरटीआई अधिनियम नागरिकों को शासन में सक्रिय रूप से भाग लेने का एक उपकरण देकर सशक्त बनाता है। यह व्यक्तियों को सार्वजनिक मुद्दों पर ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, जिससे उन्हें शिक्षित निर्णय लेने, सार्वजनिक चर्चाओं में भाग लेने और नीति निर्माण में योगदान करने की अनुमति मिलती है।
  - **यह नागरिकों को अपने अधिकारों का प्रयोग करने,** अपनी चिंताओं को व्यक्त करने और सार्वजनिक अधिकारियों को जिम्मेदार ठहराने की क्षमता देता है।
- **भ्रष्टाचार से मुकाबला:** आरटीआई अधिनियम भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में एक शक्तिशाली साधन है। यह व्यक्तियों को सरकारी अनुबंधों, खर्चों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी तक पहुंच की अनुमति देकर भ्रष्ट प्रथाओं पर एक निवारक के रूप में कार्य करता है।
  - **यह भ्रष्टाचार,** अनियमितताओं और अधिकार के दुरुपयोग को उजागर करने, सार्वजनिक प्रशासन में पारदर्शिता और अखंडता को प्रोत्साहित करने में सहायता करता है।
- **सुशासन:** आरटीआई अधिनियम पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक भागीदारी के लिए उपकरण विकसित करके सुशासन को प्रोत्साहित करता है। यह सरकारी एजेंसियों और सार्वजनिक प्राधिकरणों को अधिक सक्रिय रूप से जानकारी साझा करने, नौकरशाही देरी को कम करने और नागरिक पूछताछ के प्रति प्रतिक्रिया में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
  - इसके परिणामस्वरूप सेवा वितरण, दक्षता और सरकारी प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।
- **नागरिकों की भागीदारी और सूचित निर्णय लेना:** अधिनियम नागरिकों को जानकारी तक पहुंच प्रदान करके लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है जो उन्हें सार्वजनिक मामलों में रचनात्मक रूप से कार्य करने की अनुमति देता है।

- यह नागरिकों को नीतिगत चर्चाओं में भाग लेने, सरकारी कार्यों की निगरानी करने और भरोसेमंद डेटा के आधार पर शिक्षित निर्णय लेने की अनुमति देता है।
- **सार्वजनिक प्राधिकरण के कार्यों पर जांच:** आरटीआई अधिनियम नागरिकों को जानकारी प्राप्त करने और निर्णयों को चुनौती देने की अनुमति देकर सार्वजनिक प्राधिकरणों के कार्यों पर जाँच के रूप में कार्य करता है।
  - यह **सत्ता के दुरुपयोग,** मनमाने निर्णय लेने और सार्वजनिक संसाधनों के अनधिकृत उपयोग को रोकने में सहायता करता है।
  - सार्वजनिक प्राधिकरण जनता के प्रति जवाबदेह हैं, और अधिनियम यह सुनिश्चित करता है कि वे ऐसा पारदर्शी और जवाबदेह तरीके से करें।
- **मीडिया और नागरिक समाज संगठनों की भागीदारी:** आरटीआई अधिनियम पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने में मीडिया और नागरिक समाज संगठनों की भूमिका को बढ़ावा देता है।
  - इस अधिनियम का उपयोग पत्रकारों और नागरिक समाज कार्यकर्ताओं द्वारा जानकारी प्राप्त करने, सार्वजनिक हित की समस्याओं की जांच करने और सार्वजनिक अधिकारियों को जवाबदेह बनाने के लिए किया जाता है।
  - इससे नागरिक समाज द्वारा शासन की जांच को बढ़ावा मिलता है और एक निगरानीकर्ता के रूप में मीडिया की भूमिका मजबूत होती है।
- **सक्रिय प्रकटीकरण को प्रोत्साहित करना:** अधिनियम सार्वजनिक अधिकारियों को अग्रिम रूप से जानकारी का खुलासा करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इससे नागरिकों पर सूचना अनुरोध दर्ज करने का बोझ कम हो जाता है और यह सुनिश्चित होता है कि महत्वपूर्ण जानकारी जनता तक आसानी से पहुंच सके। सक्रिय प्रकटीकरण एक खुले समाज को बढ़ावा देता है और नागरिकों और सार्वजनिक अधिकारियों के बीच विश्वास पैदा करता है।

इस प्रकार, आरटीआई अधिनियम पारदर्शिता, जवाबदेही, सार्वजनिक सशक्तिकरण और अच्छी सरकार को बढ़ावा देता है। यह नागरिक भागीदारी को बढ़ाता है, भ्रष्टाचार से लड़ता है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है, जिसके परिणामस्वरूप एक अधिक समावेशी और जवाबदेह समाज का निर्माण होता है।

7.7.3 आरटीआई अधिनियम के मुद्दे और चुनौतियां

- **आरटीआई बढ़ते बैकलॉग से बाधित है:** सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम कानून बनने के सत्रह साल बाद, भारत के 26 सूचना आयोगों के पास लगभग 3.15 लाख शिकायतें या अपीलें लंबित हैं।
  - **सतर्क नागरिक संगठन की रिपोर्ट के अनुसार,** आयोगों के समक्ष अपील या शिकायतों का बैकलॉग साल-दर-साल लगातार बढ़ रहा है।
  - सर्वाधिक लंबित मामलों और अपीलों वाले राज्य महाराष्ट्र (99,722), उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, बिहार और अन्य हैं।
- **अधिकांश आयोग कम क्षमता पर काम कर रहे हैं:** कानून के अनुसार, प्रत्येक आयोग में एक नेता और अधिकतम दस आयुक्त होने चाहिए।
  - सतर्क नागरिक संगठन (एसएनएस) और सेंटर फॉर इक्विटी स्टडीज (सीईएस) ने अक्टूबर 2020 में भारत के सूचना आयोगों के प्रदर्शन पर एक रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत किया।
- **रिक्त नेतृत्व पद:** रिपोर्ट कार्ड के अनुसार, देश के 29 सूचना आयोगों में से नौ (31%) बिना सूचना आयुक्त प्रमुख के काम कर रहे थे।
- **निष्क्रिय सूचना आयुक्त: क्रमशः** दो साल और एक साल से अधिक समय से, झारखंड और त्रिपुरा में आईसी पूरी तरह से निष्क्रिय हैं।
- **सार्वजनिक सूचना अधिकारी (पीआईओ) रिक्त पद:** ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार, सूचना आयुक्त के एक-चौथाई (कुल 165 में से 42) पद रिक्त हैं। मणिपुर, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश उन राज्यों में से हैं जहां कोई सूचना आयुक्त नहीं है।
- **जुर्माना लगाने में अनिच्छा:** आरटीआई अधिनियम की धारा 20 आईसी को सूचना प्रदान करने से गलत इनकार के खिलाफ निवारक के रूप में गलती करने वाले सार्वजनिक सूचना अधिकारियों (पीआईओ) पर 25,000 रुपये तक का जुर्माना लगाने का अधिकार देती है। हालांकि, "आईसी ने उन मामलों के बेहद छोटे हिस्से पर जुर्माना लगाया, जिनमें जुर्माना लगाया जा सकता था," और "आयोग पीआईओ से कानून का पालन न करने के लिए उनका औचित्य बताने के लिए भी अनिच्छुक प्रतीत होता है।"
  - केवल 3.8% मामले जहां जुर्माना लगाया जा सकता है, उन्हें प्राप्त किया जा सकता है।
  - कुल मामले जिन पर जुर्माना लगाया जा सकता था, उसके 3.8% मामले पर ही जुर्माना लगाया गया था।
- **पारदर्शिता का अभाव:** इसमें कहा गया है कि समीक्षा के हिस्से के रूप में आवश्यक अधिकांश सामग्री इन समितियों की वार्षिक रिपोर्ट में उपलब्ध होनी चाहिए थी। 29 आईसी

(Information commissions) में से 20 (69%) ने अभी तक 2020-21 के लिए अपनी वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की है।

- **इसके अलावा,** अधिकांश सूचना आयोगों ने किसी वर्ष में एक आयुक्त को कितने मामलों को संभालना चाहिए, इसके लिए कोई दिशानिर्देश स्थापित नहीं किए हैं।

- **आरटीआई अनुरोधों की अस्वीकृति के लिए कोई वैध स्पष्टीकरण नहीं दिया गया:** 2019-20 में, केंद्र ने सभी आरटीआई प्रश्नों में से केवल 4.3% को खारिज कर दिया। हालाँकि, इनमें से लगभग 40% अस्वीकरणों में वैध औचित्य का अभाव था क्योंकि उन्होंने आरटीआई अधिनियम के अधिकृत छूट खंडों में से एक का हवाला नहीं दिया था।
- **व्यक्तिगत जानकारी तक पहुंच से इनकार:** धारा 8(1)(जे) व्यक्तिगत जानकारी तक पहुंच से इनकार करने की अनुमति देती है यदि प्रकटीकरण की किसी सार्वजनिक गतिविधि या सार्वजनिक हित से कोई प्रासंगिक जुड़ाव नहीं है या व्यक्ति की गोपनीयता का अनुचित उल्लंघन होने की संभावना है।
    - इस खंड का उपयोग सभी वैध इनकारों में से एक तिहाई में किया गया था।
- **जानकारी साझा करने से छूट:** अधिनियम की धारा 24, जो सुरक्षा और खुफिया एजेंसियों से संबंधित सामग्री को छूट देती है - भ्रष्टाचार और मानवाधिकारों के उल्लंघन के आरोपों को छोड़कर - का भी अक्सर उपयोग किया गया था, जो हर पांच अनुमेय इनकारों में से एक के लिए जिम्मेदार है।
    - कृषि मंत्रालय ने लंबित मुकदमे का हवाला देते हुए कृषि सुधार उपायों पर पूर्व-विधान परामर्श पर जानकारी के लिए सूचना का अधिकार (आरटीआई) अनुरोध को अस्वीकार कर दिया है।
- **आरटीआई कार्यकर्ताओं की हत्या:** आरटीआई अधिनियम को अपनाने के बाद से हर साल लगभग 28 आरटीआई अधिवक्ताओं को डराया गया, उन पर हमला किया गया या उनकी हत्या कर दी गई। सौ से अधिक आरटीआई कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी गई, 182 पर हमला किया गया और 188 को परेशान किया गया है या धमकाया गया।
- **नियुक्तियां विविध नहीं हैं नियुक्तियों में विविधिकरण का अभाव:** आरटीआई अधिनियम की धारा 12 (5) में आयुक्तों को "कानून, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, सामाजिक सेवा, प्रबंधन, पत्रकारिता, मास मीडिया, या प्रशासन और शासन में व्यापक ज्ञान और अनुभव के साथ सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित व्यक्तियों" में से चुना जाना आवश्यक है।''
    - **हालाँकि,** 84% सीआईसी नौकरशाही पृष्ठभूमि से आते हैं, जिनमें 65% सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी हैं।
- **रिकॉर्ड निरीक्षण के दौरान आने वाली बाधाएं:** अधिनियम के अनुसार, जानकारी अनुरोधित प्रपत्र में दी जानी चाहिए, जब तक कि यह सार्वजनिक प्राधिकरण के संसाधनों को असमान रूप से विचलित न कर दे।
- **अपर्याप्त मानव संसाधन:** ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार, सूचना आयुक्त के एक-चौथाई (कुल 165 में से 42) पद खाली हैं। मणिपुर, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश में चार आईसी में कोई प्रमुख या अगुआ नहीं हैं।
- **आवेदन दाखिल करते समय आने वाली बाधाएं:** उपयोगकर्ता मैनुअल उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। उपयोगकर्ता गाइड की कमी के कारण सूचना चाहने वालों के लिए आरटीआई अनुरोध सबमिट करने की प्रक्रिया के बारे में सीखना मुश्किल हो जाता है।
- **खराब गुणवत्ता की जानकारी:** आरटीआई अधिनियम के अनुपालन के लिए बुनियादी ढांचे और उचित तंत्र की कमी के कारण प्रदान की गई जानकारी की गुणवत्ता बहुत खराब है। प्रदान किया गया डेटा या तो आंशिक है या मात्रा में कमी है।
- **व्यवहारिक प्रशिक्षण का अभाव:** आरटीआई एक गतिशील अधिनियम है, जिसमें नियमित आधार पर नए आयाम पेश किए जाते हैं। परिणामस्वरूप, पीआईओ के पास आरटीआई पुनश्चर्या प्रशिक्षण या एकल सूचना भंडार तक पहुंच होनी चाहिए।
- **डेटाबेस का अभाव:** आरटीआई आवेदकों का कोई केंद्रीकृत डेटाबेस नहीं है, इसलिए कोई निगरानी और समीक्षा प्रणाली नहीं है। आवेदकों के सूचना अनुरोधों और सूचना प्रदाताओं की प्रतिक्रियाओं का एक केंद्रीकृत डेटाबेस पीआईओ को धारा 25(1) के अनुसार एक सटीक और समय पर संकलन प्रस्तुत करने की अनुमति देगा।
- **सीआईसी कार्यालय कमजोर:** 2019 का आरटीआई (संशोधन) अधिनियम केंद्र सरकार को संघीय और राज्य दोनों स्तरों पर सूचना आयुक्तों के लिए रोजगार के नियम और शर्तें निर्धारित करने का अधिकार देता है।
    - इस संशोधन ने संघीय सरकार को असंगत शक्तियों से सशक्त बनाकर सीआईसी की स्वायत्तता को सीमित कर दिया है।

आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम (ओएसए) और आरटीआई के लिए इसके निहितार्थ

- यह देखते हुए कि हमारे पास ब्रिटिश काल का औपनिवेशिक आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम (ओएसए) था, हमने स्वतंत्रता के बाद भी प्रशासनिक स्तर पर गुप्त तरीके से कार्य करना जारी रखा।
- 1964 के केंद्रीय सिविल सेवा आचरण नियम सरकारी कर्मचारियों को बिना अनुमति के किसी के साथ आधिकारिक दस्तावेज साझा करने से रोककर आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम को सुदृढ़ करते हैं।

आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के साथ समस्याएं

- **दूसरी एआरसी रिपोर्ट के अनुसार,** सूचना का अधिकार अधिनियम के कार्यान्वयन में सबसे समस्याग्रस्त मुद्दा आधिकारिक रहस्य है।
- ओएसए की धारा 5 में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति जो किसी निषिद्ध स्थान के बारे में जानकारी देता है, या ऐसी जानकारी जो दुश्मन राज्य की सहायता कर सकती है, या जिसे उसे विश्वास में सौंपा गया है, या जिसे उसने अपनी आधिकारिक स्थिति के परिणामस्वरूप प्राप्त किया है, वह 'अपराध' करता है।
  - यह धारा किसी भी प्रकार की सामग्री पर लागू होती है जिसे "गुप्त" के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
- अधिनियम में "आधिकारिक रहस्य" शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है, जिससे लोक सेवकों के लिए किसी भी चीज को "गुप्त" के रूप में लेबल करना आसान हो गया है।
- **ओएसए पर शौरी समिति के अनुसार,** "यह ओएसए है जिसे कई हलकों में सरकार की अत्यधिक गोपनीयता के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार माना गया है।" इसके "कैच-ऑल" चरित्र की व्यापक आलोचना हुई है और इसमें संशोधन की मांग की गई है।

7.7.4 आरटीआई अधिनियम को मजबूत करने के उपाय

- सरकारों को आरटीआई कार्यान्वयन सेल स्थापित करना चाहिए।
- आरटीआई आवेदन करने में नागरिकों की सहायता के लिए राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना के तहत स्थापित कई एक्सेस चैनलों, सामान्य सेवा केंद्रों की स्थापना करके अनुरोध सुविधा में सुधार करना चाहिए।
- सभी सार्वजनिक प्राधिकरणों में आरटीआई के प्रभावी कार्यान्वयन की निगरानी का काम सीआईसी और एसआईसी को सौंपा जाना चाहिए।
- मुख्य सूचना आयुक्त की अध्यक्षता में नोडल केंद्रीय मंत्रालय, एसआईसी और राज्य प्रतिनिधियों के साथ एक राष्ट्रीय समन्वय समिति (एनसीसी) का गठन किया जा सकता है।
- अनुसूची 2 में निर्दिष्ट सभी संगठनों द्वारा पीआईओ की नियुक्ति की जानी आवश्यक है।
- सार्वजनिक प्राधिकरणों को संघीय और राज्य स्तरों पर सूचीबद्ध किया जाना चाहिए, और सार्वजनिक प्राधिकरणों के लिए वेब-आधारित अनुप्रयोगों का उपयोग किया जाना चाहिए।
- प्रत्येक जिले में एक सिंगल विंडो एजेंसी की स्थापना करनी चाहिए।
- वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट, परीक्षा प्रश्न पत्र और संबंधित मामलों को कवर करने के लिए आरटीआई अधिनियम के तहत छूट में संशोधन किया जाना चाहिए।
- तृतीय-पक्ष ऑडिटिंग को संस्थागत बनाना चाहिए।

आरटीआई अधिनियम पारदर्शिता, जवाबदेही, सार्वजनिक सशक्तिकरण और अच्छी सरकार को बढ़ावा देता है। यह नागरिक भागीदारी को बढ़ाता है, भ्रष्टाचार से लड़ता है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है, जिसके परिणामस्वरूप एक अधिक समावेशी और जवाबदेह समाज बनता है।

7.8 आचार संहिता और नैतिक संहिता

- **आचार संहिता:** आचार संहिता किसी संगठन या पेशे के भीतर व्यक्तियों के लिए अपेक्षित व्यवहार और आचरण के मानकों को रेखांकित करती है।
  - यह दिशानिर्देश प्रदान करता है कि व्यक्तियों को दूसरों के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए, निर्णय लेना चाहिए और संगठन के मूल्यों और सिद्धांतों को बनाए रखना चाहिए।
  - **आचार संहिता अपने सदस्यों के बीच सत्यनिष्ठा,** व्यावसायिकता और नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने में मदद करती है।
- **नैतिक संहिता:** नैतिक संहिता सिद्धांतों और दिशानिर्देशों का एक समूह है जो किसी विशिष्ट पेशे या संगठन के भीतर व्यक्तियों के नैतिक और नैतिक व्यवहार को नियंत्रित करती है।
  - यह नैतिक निर्णय लेने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है और अपने सदस्यों की नैतिक जिम्मेदारियों और दायित्वों को स्थापित करता है।

7.8.1 आचार संहिता

आचार संहिता मूल्यों, नियमों, मानकों और सिद्धांतों का एक समूह है जो यह बताता है कि नियोक्ता किसी संगठन के भीतर कर्मचारियों से क्या अपेक्षा करते हैं।

- **सिविल सेवक नियमों के दो व्यवस्था के अधीन हैं:** एक अखिल भारतीय सेवाओं के लिए और दूसरा केंद्रीय सिविल सेवाओं के लिए। अधिकारी का व्यवहार और आचरण विशेष रूप से परिभाषित आचरण नियमों द्वारा शासित होता है।
- 1968 के एआईएस आचरण नियम और 1964 के सीसीएस आचरण नियम मूल रूप से एक ही हैं।
  - ये 1962 में तत्कालीन गृहमंत्री लाल बहादुर शास्त्री द्वारा गठित एक समिति के सुझावों पर आधारित थे।
  - इस भ्रष्टाचार निरोधक समिति की अध्यक्षता राज्यसभा सदस्य के संथानम ने की।

आचार संहिता की विशेषताएं

आचरण नियम व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा की धुंधली अवधारणा से लेकर अधिक सटीक गतिविधियों तक, मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करते हैं।

- **सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता:** नियम 3(1) के अनुसार, "सेवा का प्रत्येक सदस्य हर समय पूर्ण सत्यनिष्ठा और कर्तव्य के प्रति समर्पण बनाए रखेगा और ऐसा कुछ भी नहीं करेगा जो सेवा के सदस्य के लिए अशोभनीय हो।"
- **निजी रोजगार रोकना:** एआईएस आचरण नियम, नियम 4(1) में अधिक स्पष्ट हैं। इसमें कहा गया है, ''सेवा का कोई भी सदस्य किसी निजी उपक्रम या गैर-सरकारी संगठन में अपने परिवार के किसी भी सदस्य के लिए रोजगार सुरक्षित करने के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने पद या प्रभाव का उपयोग नहीं करेगा।''
- **राजनीतिक तटस्थता:** ''सेवा का कोई भी सदस्य किसी भी राजनीतिक दल या किसी भी संगठन का सदस्य नहीं होगा, या अन्यथा राजनीति में भाग नहीं लेगा, न ही वह किसी भी राजनीतिक आंदोलन या राजनीतिक गतिविधि में भाग लेगा, या सहायता करेगा, या किसी अन्य तरीके से सहायता करेगा,'' नियम 5 (1) निर्दिष्ट करता है।
- **निष्पक्षता:** नियम 5(4) में कहा गया है कि ''सेवा का कोई भी सदस्य किसी विधायिका या स्थानीय प्राधिकरण के किसी भी चुनाव में प्रचार नहीं करेगा या अन्यथा हस्तक्षेप नहीं करेगा, या उसके संबंध में अपने प्रभाव का उपयोग नहीं करेगा, या उसमें भाग नहीं लेगा।''
- **व्यक्तिगत राय व्यक्त करने पर प्रतिबंध:** एआईएस नियमों के नियम 7 के अनुसार, "सेवा का कोई भी सदस्य, किसी भी सार्वजनिक मीडिया पर किसी भी रेडियो प्रसारण या संचार में या गुमनाम रूप से, छद्म नाम से या अपने नाम से या किसी अन्य व्यक्ति के नाम पर या प्रेस को किसी भी संचार मीडिया में या किसी भी सार्वजनिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रकाशित नहीं करेगा, कोई तथ्य या राय का बयान नहीं देने देगा, जो केंद्र सरकार या किसी राज्य की किसी वर्तमान या हाल की नीति या कार्रवाई की प्रतिकूल आलोचना के प्रभाव को दर्शाता हो।"
- **नागरिक-केंद्रित प्रशासन को बढ़ावा देना:** ''सेवा का प्रत्येक सदस्य अन्य बातों के अलावा, जनता के साथ उच्च नैतिक मानकों, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी; राजनीतिक तटस्थता; जवाबदेही और पारदर्शिता; जनता के प्रति जवाबदेही, विशेष रूप से कमजोर वर्ग के प्रति शिष्टाचार और अच्छा व्यवहार बनाए रखेगा।''

आचार संहिता से जुड़े मुद्दे

- **अस्पष्ट प्रकृति:** नियम 3(1) के तहत विनियमन जानबूझकर अस्पष्ट है, और इसका उपयोग किसी भी प्रकार के अपराध की परिस्थितियों में व्यक्तियों के लिए किया जा सकता है, भले ही दावे किसी अन्य नियम के अंतर्गत नहीं आते हों।
  - **हालाँकि कोई भी विशेष आचरण नियम,** जातिवाद के प्रसार को संबोधित नहीं करता है। नियम 3(1) के तहत जातिवादी व्यवहार को "सेवा के सदस्य के लिए अशोभनीय" के रूप में देखा जा सकता देखने की बात कहता है।
- **जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी:** सबसे गंभीर कठिनाइयों में से एक आचार संहिता पर पर्याप्त जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी है।
  - कई सरकारी कर्मचारी संहिता की सटीक आवश्यकताओं और मानदंडों से अनभिज्ञ हो सकते हैं, जिससे अनजाने में उल्लंघन या गलतफहमी हो सकती है।
- **असंगत प्रवर्तन:** आचार संहिता को कुछ मामलों में असंगत रूप से लागू किया जा सकता है।
  - उल्लंघन के लिए अनुशासन या दंड विभागों या क्षेत्रों के बीच भिन्न हो सकते हैं, जिससे अनुचितता या अन्यायोचित उदारता का आभास होता है। इससे संहिता की प्रभावशीलता और आत्मविश्वास विश्वसनीयता को नुकसान पहुंचने की संभावना होती है।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप:** राजनीतिक हस्तक्षेप आचार संहिता को बनाए रखना कठिन बना सकता है। सिविल अधिकारी निष्पक्षता और निष्पक्षता के आदर्शों का पालन करने के बजाय राजनीतिक उद्देश्यों के अनुरूप काम करने के दबाव का अनुभव कर सकते हैं।
- **हितों का टकराव:** हालांकि आचार संहिता हितों के टकराव से निपटती है, लेकिन उनका पता लगाना और उन्हें प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना कठिन हो सकता है।
  - सिविल अधिकारियों के व्यक्तिगत या पारिवारिक संबंध हो सकते हैं जो उनके निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हितों का संभावित टकराव होता है।
- **व्हिसलब्लोअर सुरक्षा:** गलत काम या आचार संहिता के उल्लंघन का खुलासा करने वाले व्हिसलब्लोअर को प्रतिशोध का डर होता है या पर्याप्त सुरक्षा की कमी होती है।

- परिणामस्वरूप जवाबदेही और खुलेपन के कारण व्यक्तियों को नैतिक उल्लंघनों की रिपोर्ट करने से हतोत्साहित किया जा सकता है।

- **सीमित पारदर्शिता और जवाबदेही:** आचार संहिता के कार्यान्वयन में पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी हो सकती है। क्योंकि जनता के पास जांच, अनुशासनात्मक उपायों और परिणामों से संबंधित जानकारी तक सीमित पहुंच हो सकती है, सिस्टम में विश्वास प्रभावित हो सकता है।
- **अपर्याप्त निगरानी और रिपोर्टिंग विधियां:** आचार संहिता की प्रभावशीलता प्रभावी निगरानी और रिपोर्टिंग विधियों पर निर्भर है। हालाँकि, अनुपालन की निगरानी और उल्लंघन की रिपोर्टिंग के लिए सिस्टम और प्रक्रियाओं में कमियां मौजूद हो सकती हैं, जिससे समय पर कार्रवाई और समाधान में बाधा आ सकती है।
- **उभरती नैतिक कठिनाइयां:** तकनीकी सफलताओं, वैश्वीकरण और बदलते सामाजिक मानदंडों के कारण, आचार संहिता हमेशा बढ़ती नैतिक कठिनाइयों और जटिलताओं का सामना नहीं करती है। इन बढ़ती नैतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए नियमित अद्यतन और समायोजन की आवश्यकता होती है।
- **अपर्याप्त सार्वजनिक भागीदारी:** आचार संहिता अपने निर्माण और कार्यान्वयन में जनता को पर्याप्त रूप से शामिल करने में विफल हो सकती है। सार्वजनिक भागीदारी और फीडबैक को शामिल करने से यह गारंटी मिल सकती है कि संहिता नागरिकों की अपेक्षाओं और चिंताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

इन चिंताओं को दूर करने के लिए, जागरूकता बढ़ाने, संपूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करने, प्रवर्तन प्रक्रियाओं को मजबूत करने, पारदर्शिता बढ़ाने और संपूर्ण सिविल सेवा में एक नैतिक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए। उभरती कठिनाइयों का सामना करने और तेजी से बदलते परिवेश में प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए, आचार संहिता का नियमित आधार पर मूल्यांकन और अद्यतन किया जाना चाहिए।

भारत में सिविल सेवाओं के लिए आचार संहिता के अनुप्रयोग

- **ईमानदारी बनाए रखना:** संहिता सरकार में ईमानदारी के महत्व पर जोर देती है। यह निर्णय लेने, धन प्रबंधन और सार्वजनिक बातचीत सहित सिविल सेवक के काम के सभी तत्वों में ईमानदारी, पारदर्शिता और जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करता है।
- **हितों के टकराव को रोकना:** संहिता हितों के टकराव से निपटता है और संघीय अधिकारियों को ऐसी स्थितियों को पहचानने और प्रबंधित करने की सलाह देता है।
  - यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि सरकारी कर्मचारी व्यक्तिगत या निजी हितों को आधिकारिक दायित्वों को अनुचित रूप से प्रभावित करने से रोककर सार्वजनिक हित को प्राथमिकता देते हैं।
  - **उदाहरण के लिए,** सिविल सेवकों द्वारा संपत्ति के स्वैच्छिक प्रकटीकरण जैसे प्रावधान।
- **निष्पक्षता विकसित करना:** संहिता सिविल कार्यकर्ताओं के अपने कार्यों में निष्पक्ष रहने के महत्व पर जोर देती है। यह नागरिक अधिकारियों को सभी नागरिकों को समान और न्यायसंगत सेवाएं प्रदान करने की आवश्यकता के द्वारा निवासियों को भेदभाव, पक्षपात और अनुचित व्यवहार से बचाता है।
- **जवाबदेही सुनिश्चित करना:** यह नागरिक अधिकारियों के जनता के लिए सुलभ होने, शिकायतों को तुरंत संबोधित करने और उनके कार्यों और विकल्पों के लिए जवाबदेह होने के महत्व पर जोर देता है।
- **गोपनीयता:** संहिता गोपनीयता की आवश्यकता और संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा पर जोर देता है। सिविल सेवकों से अपेक्षा की जाती है कि वे आधिकारिक दस्तावेजों और डेटा को सावधानी से संभालें, यह सुनिश्चित करते हुए कि गुप्त सामग्री का प्राधिकरण के बिना खुलासा नहीं किया जाए।
- **भ्रष्टाचार निषिद्ध है:** संहिता स्पष्ट रूप से सरकारी कर्मचारियों को भ्रष्ट आचरण, रिश्वतखोरी, या सार्वजनिक संसाधनों के दुरुपयोग में शामिल होने से रोकती है। यह सिविल अधिकारियों को उनके सामने आने वाले किसी भी गलत काम की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करता है और भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहिष्णुता की संस्कृति विकसित करता है।
- **व्यावसायिकता को प्रोत्साहित करता है:** यह निरंतर सीखने, पेशेवर विकास और उच्च सेवा वितरण मानकों के पालन के महत्व पर जोर देता है।
- **सार्वजनिक विश्वास को मजबूत करना:** संहिता में नागरिक अधिकारियों को ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ कार्य करने की आवश्यकता है, जो सभी सरकारी संस्थानों में जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।
- **अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए आधार प्रदान करना:** संहिता की आवश्यकताओं का उल्लंघन करने वाले सिविल सेवक अनुशासनात्मक कार्रवाई के अधीन हैं।
  - यह अधिकारियों को जांच करने, अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू करने और दुर्व्यवहार के लिए उचित दंड या परिणाम देने की अनुमति देता है।

आचार संहिता को मजबूत करने के लिए आवश्यक उपाय

- आचरण नियमों के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए, शिकायत प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जाना चाहिए और पारदर्शिता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

- उभरती कठिनाइयों को दूर करने और उनकी प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए नियमों की नियमित आधार पर समीक्षा और अद्यतन किया जाना चाहिए।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम और जन जागरूकता पहल सिविल अधिकारियों को उनकी भूमिका और गैर-अनुपालन के निहितार्थ को समझने में मदद कर सकते हैं।
- सरकारी एजेंसियों, नागरिक समाज और आम जनता के बीच सहयोग सिविल सेवकों के बीच जवाबदेही और नैतिक व्यवहार की संस्कृति विकसित करने में मदद कर सकता है।

भारत की सिविल सेवाओं में नैतिक, पेशेवर और सार्वजनिक-उत्साही संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आचार संहिता का कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है। सिविल अधिकारी संहिता का पालन करके और जिन नागरिकों की वे सेवा करते हैं उनके प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करके कुशल और सफल शासन में योगदान करते हैं।

7.8.2 नैतिक संहिता

- नैतिक संहिता का उद्देश्य मुख्य रूप से सभी निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना और सभी निर्णयों के लिए एक साझा नैतिक ढांचा तैयार करना है। यह विशेषज्ञों को उन प्रक्रियाओं को समझने में भी सहायता करता है जिन्हें निष्पादित किया जाना चाहिए।
- यह किसी विशिष्ट संगठन, संघ या पेशे के सदस्यों के बीच सही व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार किए गए मानदंडों की एक प्रणाली है।
- नैतिक संहिता केवल पिछले संगठनात्मक और व्यक्तिगत अनुभवों के बजाय उन कृत्यों के आधार पर बनायी गई है जिन्हें संगठन घटित होने से रोकना चाहते हैं।

नैतिक संहिता के उद्देश्य

- **नैतिक संहिता के दो मौलिक और महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं:**
  1. **प्राथमिक लक्ष्य व्यवहार के नैतिक और व्यावसायिक मानकों को बनाए रखना है।**
     - ये लोगों को उनके प्रदर्शन के साथ-साथ ईमानदारी और दायित्व के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए जवाबदेह बनाए रखता है।
  2. **दूसरा लक्ष्य पेशेवरों में सहिष्णुता,** गौरव और जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के लिए पेशेवर व्यवहार को परिभाषित करना है।

Objectives of code of Ethics
- People outside the organisation can expect a degree of uniformity from the/ standardisation of norms/values
- Individuals within the organisation can call upon their colleagues and mutual adherence to certain organisation principles.
- Sets bars of standards/values for the organisation and the personnels.

भारत में नैतिक संहिता की वर्तमान स्थिति

- **भारत में,** प्रशासनिक अधिकारियों के लिए कोई नैतिक संहिता नहीं है, इस तथ्य के बावजूद कि अन्य देशों में समान संहिताएं मौजूद हैं।
- **भारत में,** हमारे पास विभिन्न आचरण नियम हैं जो विभिन्न प्रकार के सामान्य कार्यों पर रोक लगाते हैं।
  - ये आचरण नियम एक कार्य करते हैं, लेकिन ये नैतिक संहिता नहीं हैं।

नैतिक संहिता की विशेषताएं

यह व्यवहार के प्रत्याशित मानदंडों को सामने रखता है और नैतिक व्यवहार के लिए एक रूपरेखा के रूप में कार्य करता है। **नैतिक संहिता की मूलभूत विशेषताएं निम्न हैं:**

- **वस्तुनिष्ठता:** नैतिक संहिता से पहले अक्सर उद्देश्य और मिशन की स्पष्ट उद्घोषणा की जाती है। यह संगठन या पेशे के व्यापक उद्देश्यों और आकांक्षाओं का वर्णन करता है, इसके बाद आने वाले नैतिक मानदंडों के लिए संदर्भ प्रदान करता है।
- **मार्गदर्शक आचरण:** नैतिक संहिता व्यवहार को निर्देशित करने वाले आवश्यक नैतिक सिद्धांतों को स्पष्ट करती है। इन सिद्धांतों में ईमानदारी, निष्पक्षता, सम्मान, जवाबदेही, पारदर्शिता और व्यावसायिकता शामिल हैं।
  - ये नैतिक निर्णय लेने और व्यवहार के लिए आधार तैयार करते हैं।
- **अनुप्रयोग और कार्यक्षेत्र:** नैतिक संहिता का अनुप्रयोग और कार्यक्षेत्र विस्तृत है। यह निर्दिष्ट करता है कि क्या यह किसी संगठन या पेशे के सभी सदस्यों पर लागू होता है, या उस संगठन या पेशे के विशिष्ट पदों या विभागों पर लागू होता है।
  - यह उन सीमाओं और परिस्थितियों को भी निर्दिष्ट करता है जिनमें नैतिक संहिता का उपयोग किया जाना है।
- **विशिष्ट आचरण मानक:** नैतिक संहिता में विशिष्ट आचरण मानक शामिल होते हैं जिनका व्यक्तियों या संगठनों से पालन करने की अपेक्षा की जाती है।
  - ये मानक विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करते हैं, जिनमें हितों का टकराव, गोपनीयता, ग्राहक या हितधारक संबंध, जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन, कानूनों और विनियमों का अनुपालन और पेशेवर क्षमता शामिल हैं।
- **अनुपालन और प्रवर्तन:** यह नैतिक मुद्दों के लिए रिपोर्टिंग प्रक्रियाएं निर्धारित कर सकता है, शिकायतों की जांच कर सकता है और संहिता के उल्लंघन के लिए अनुशासनात्मक कार्रवाई या दंड लगा सकता है। यह स्व-नियमन और स्व-निगरानी के महत्व पर भी जोर देता है।
- **नैतिक निर्णय लेने संबंधी मार्गदर्शन:** नैतिक निर्णय लेने पर सलाह प्रदान करने के लिए अक्सर नैतिक संहिता का उपयोग किया जाता है।
  - यह व्यक्तियों या संगठनों को जटिल नैतिक उलझनों से निपटने और संहिता के नैतिक सिद्धांतों और मानकों

के अनुरूप निर्णय लेने में सहायता करने के लिए एक रूपरेखा या विधि प्रदान करता है।
  - **उदाहरण के लिए,** कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के प्रावधान नैतिक तरीके से निवेश का मार्गदर्शन करते हैं।
- **आवधिक समीक्षा और अद्यतन:** नैतिक संहिता स्थिर नहीं होती है।यह समय के साथ विकसित होती है। बढ़ती नैतिक दुविधाओं और सामाजिक मानकों में बदलाव से निपटने में इसकी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता की गारंटी के लिए नियमित आधार पर इसकी जांच और संशोधन किया जाना चाहिए।
- **संगठनात्मक संस्कृति एकीकरण:** संगठनात्मक संस्कृति में एक प्रभावी आचार संहिता शामिल की जाती है। प्रशिक्षण, संचार और नेताओं की प्रतिबद्धता सभी इसे सुदृढ़ करते हैं।
  - यह संगठन के साझा मूल्यों और विश्वासों का हिस्सा बन जाता है, जो सभी स्तरों पर व्यवहार और निर्णय लेने को नियंत्रित करता है।
- **पहुंच और संचार:** सभी हितधारकों की नैतिक संहिता तक आसान पहुंच होनी चाहिए। इसे कर्मचारियों, सदस्यों या अन्य संबंधित पक्षों को पर्याप्त रूप से सूचित किया जाना चाहिए।
- **बाहरी मानक संरेखण:** कुछ स्थितियों में आचार संहिता पेशेवर संघों, नियामक प्राधिकरणों या उद्योग-विशिष्ट नियमों द्वारा निर्धारित बाहरी मानकों या संहिता के साथ संरेखित या संबंधित हो सकती है। यह बड़े नैतिक ढांचे के अनुरूप और अनुपालन सुनिश्चित करता है।

ये लक्षण संयुक्त रूप से नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने, निर्णय लेने को निर्देशित करने और संगठनों या व्यवसायों के अंदर एक सत्यनिष्ठा संस्कृति के निर्माण में नैतिक संहिता की प्रभावशीलता और प्रभाव में योगदान करते हैं।

सिविल सेवा के लिए नैतिक संहिता की उपयोगिता

सिविल सेवा में नैतिक संहिता नैतिक व्यवहार, व्यावसायिकता और प्रशासनिक तंत्र में जनता के विश्वास को बढ़ावा देने में मदद करती है।सिविल सेवा नैतिक संहिता के महत्वपूर्ण लाभ निम्न हैं:

- **कानून के शासन को बढ़ावा देता है:** आचार संहिता नागरिक अधिकारियों के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए स्पष्ट मानदंड और सिद्धांत देती है। यह सिविल सेवकों को नैतिक निर्णय लेने, ईमानदारी के साथ कार्य करने और उनकी सार्वजनिक सेवा जिम्मेदारियों को पूरा करने में सहायता करने के लिए व्यवहार मानकों को परिभाषित करता है।
  - **एक आईएएस अधिकारी,** रजनी सेकरी ने रिश्वतखोरी से इनकार किया, और उन्होंने हरियाणा में जेबीटी घोटाले (जाली दस्तावेजों की मदद से जूनियर बेसिक प्रशिक्षित (जेबीटी) शिक्षकों की नियुक्ति) का पर्दाफाश किया।
- **नैतिक निर्णय लेना:** यह संहिता के मूल्यों, सिद्धांतों और मानकों को ध्यान में रखते हुए नैतिक निर्णय लेने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। यह सिविल सेवकों को उनकी गतिविधियों के नैतिक निहितार्थों का आकलन करने और जनता की भलाई को प्राथमिकता देने वाले निर्णय लेने में सहायता करता है।
- **ईमानदारी और व्यावसायिकता बनाए रखना:** नैतिक संहिता सरकार में ईमानदारी और व्यावसायिकता को प्रोत्साहित करती है। यह सिविल अधिकारियों के लिए उच्च नैतिक मानकों को बनाए रखने, अपने रिश्तों में पेशेवर होने और सार्वजनिक सेवा मूल्यों को बनाए रखने की अपेक्षाएं स्थापित करता है।
  - इससे सरकार के प्रति जनता का भरोसा और विश्वास बढ़ता है।
- **हितों के टकराव को रोकना:** आचार संहिता हितों के टकराव से निपटती है और संघीय अधिकारियों को ऐसे विवादों की पहचान करने, रिपोर्ट करने और प्रबंधन करने की सलाह देती है। यह उन परिस्थितियों की रोकथाम में सहायता करता है जिनमें व्यक्तिगत हित सार्वजनिक सेवा कृत्यों की निष्पक्षता को प्रभावित या खतरे में डाल सकते हैं।
- नैतिक संहिता सरकारी सेवाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही के महत्व पर जोर देती है। यह प्रासंगिक जानकारी के त्वरित प्रकटीकरण, उचित संसाधन उपयोग और सटीक रिकॉर्ड रखने को प्रोत्साहित करता है। यह सिविल सेवकों को उनके निर्णयों और कार्यों के लिए जवाबदेह बनाता है।
- **सार्वजनिक हित को बढ़ावा देना:** आचार संहिता सिविल सेवा में सार्वजनिक हित के महत्व पर जोर देती है।
  - यह सिविल अधिकारियों को आदेश देता है कि वे जिन नागरिकों की सेवा करते हैं उनके कल्याण और भलाई को प्राथमिकता देना चाहिए। यह ऐसे आचरण को हतोत्साहित करता है जो सार्वजनिक हित को खतरे में डालता है या सिविल सेवा की अखंडता से समझौता कर सकता है।
- **कानूनी और नियामक अनुपालन बनाए रखना:** नैतिक संहिता यह सुनिश्चित करती है कि लोक सेवा अधिकारी कानूनी और नियामक मानकों का पालन करना हैं। यह अपने कार्यों के निष्पादन में कानूनों, विनियमों और नीतियों का पालन करने के लिए सरकारी अधिकारियों के दायित्वों पर जोर देता है।
  - यह कानूनी कर्तव्यों के दायरे में नैतिक व्यवहार को प्रोत्साहित करता है।
- **सार्वजनिक विश्वास और आत्मविश्वास बढ़ाना:** नैतिक संहिता का पालन करके, सिविल कर्मचारी नैतिक व्यवहार, व्यावसायिकता और सार्वजनिक सेवा के प्रति अपना समर्पण प्रदर्शित करते हैं।
  - **नागरिक, सिविल सेवकों को जवाबदेह,** पारदर्शी और जनता की भलाई के लिए समर्पित मानते हैं, जिससे सिविल सेवा में जनता का भरोसा और विश्वास बढ़ता है।
- **नैतिक नेतृत्व और संगठनात्मक संस्कृति:** नैतिक संहिता, सिविल सेवा में नैतिक नेतृत्व को बढ़ावा देती है। यह वरिष्ठ

अधिकारियों और प्रबंधकों को संगठन के लिए वातावरण तैयार करने और नैतिक व्यवहार का उदाहरण देकर एक नैतिक संस्कृति का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह सिविल सेवा में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही के आदर्श स्थापित करता है।

- **निरंतर सुधार और सीखना:** सिविल सेवा में, नैतिक संहिता निरंतर सीखने, प्रशिक्षण और विकास की नींव के रूप में कार्य करती है। यह नागरिक अधिकारियों को नैतिक चिंताओं के बारे में सोचने, नैतिक चर्चाओं में भाग लेने और उनकी नैतिक जिम्मेदारियों का बेहतर ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सिविल सेवा एक मजबूत आचार संहिता विकसित और क्रियान्वित करके सत्यनिष्ठा, व्यावसायिकता और नैतिक व्यवहार की संस्कृति को प्रोत्साहित कर सकती है। परिणामस्वरूप, जनता का विश्वास मजबूत होता है, सेवा प्रदर्शन में सुधार होता है और सिविल सेवा क्षेत्र में सुशासन के मूल्यों को बरकरार रखा जाता है।

नैतिक संहिता के साथ समस्याएं

हालाँकि नैतिक संहिता व्यवहार को निर्देशित करने और नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए एक उपयोगी आधार हो सकती है, लेकिन इसके अनुप्रयोग के साथ कुछ चिंताएँ या चुनौतियाँ भी हो सकती हैं। यहां कुछ सामान्य चिंताएं हैं जो नैतिक संहिता का उपयोग करते समय उभर सकती हैं:

- **सीमित प्रवर्तन तंत्र:** एक नैतिक संहिता को लागू करना मुश्किल हो सकता है। यदि पालन की निगरानी करने, उल्लंघनों की जांच करने और उचित परिणाम देने के लिए पर्याप्त प्रणालियाँ नहीं हैं, तो संहिता के नियमों का पालन करने में व्यक्तियों की रुचि कम हो सकती है।
- **संगठनात्मक संस्कृति के साथ संघर्ष:** नैतिक संहिता कुछ उदाहरणों में प्रमुख संगठनात्मक संस्कृति या मानदंडों के साथ संघर्ष कर सकता है।
    - व्यक्तियों को संहिता का पालन करने में कठिनाइयों का अनुभव हो सकता है या नैतिक मानकों से समझौता करने के लिए मजबूर महसूस किया जा सकता है यदि संहिता में व्यक्त मूल्यों और सिद्धांतों और संगठन के अंदर वास्तविक प्रथाओं के बीच गलत संरेखण है।
- **नैतिक दुविधाएं और दुर्गम क्षेत्र (grey area):** वास्तविक दुनिया की परिस्थितियां अक्सर बिना किसी स्पष्ट समाधान के कठिन नैतिक प्रश्न प्रस्तुत करती हैं।
    - नैतिकता की एक संहिता हर संभव परिदृश्य को कवर नहीं कर सकता है, जिससे व्यक्ति आगे बढ़ने के बारे में अनिश्चित हो जाते हैं। दुर्गम क्षेत्र भ्रम पैदा कर सकते हैं और संहिता को सही ढंग से लागू करना मुश्किल बना सकते हैं।
- यदि जवाबदेही प्रक्रियाओं में कमियाँ हैं तो व्यक्ति आचार संहिता का सम्मान करने के लिए कम मजबूर महसूस कर सकते हैं। उल्लंघन के लिए होने की स्थिति में अपर्याप्त या कोई परिणाम न होने से संहिता की प्रभावशीलता कम हो सकती है और व्यवहार पर इसका प्रभाव कम हो सकता है
- **सांस्कृतिक और प्रासंगिक विविधताएँ:** किसी विशिष्ट सांस्कृतिक या संगठनात्मक सेटिंग के लिए लिखी गई आचार संहिता विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के अद्वितीय दृष्टिकोण और मूल्यों को ध्यान में रखने में विफल हो सकती है।
    - सांस्कृतिक मतभेद इस बात को प्रभावित कर सकते हैं कि नैतिक मानदंडों की व्याख्या और लागू कैसे किया जाता है, जिससे विभिन्न परिस्थितियों में कोड के सावधानीपूर्वक विश्लेषण और अनुकूलन की आवश्यकता होती है।
- **नैतिक परिदृश्य विकसित करना:** समय के साथ, सामाजिक मूल्य और नैतिक मानदंड बदल जाते हैं। नैतिकता की एक संहिता पुरानी हो सकती है या नई नैतिक दुविधाओं और चुनौतियों का सामना करने में विफल हो सकती है।
    - यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह प्रासंगिक बनी हुई है और वर्तमान नैतिक मानदंडों का प्रतिनिधित्व करती है, इसका नियमित आधार पर समीक्षा और अद्यतन किया जाना चाहिए।
- **नैतिक सापेक्षवाद:** विभिन्न लोगों या समूहों में अलग-अलग नैतिक विश्वास या सांस्कृतिक मानदंड हो सकते हैं। नैतिकता की एक संहिता मौलिक नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए कई दृष्टिकोणों को एकीकृत करने और समावेश की गारंटी देने में कठिनाइयों का सामना कर सकता है। सार्वभौमिक नैतिक मानदंडों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता के बीच संतुलन बनाना मुश्किल हो सकता है।
- **नैतिक नेतृत्व और रोल मॉडलिंग:** आचार संहिता के प्रभावी होने के लिए, वरिष्ठ अधिकारियों और संगठनात्मक नेताओं को मजबूत नैतिक नेतृत्व और भूमिका मॉडलिंग प्रदान करनी चाहिए। यदि नेता नैतिक मानकों का सम्मान नहीं करते हैं या दूसरों को जवाबदेह नहीं ठहराते हैं, तो संहिता की विश्वसनीयता और प्रभाव प्रभावित होगा।

इन चिंताओं को संबोधित करने के लिए नियमित संहिता समीक्षा और संशोधन, व्यापक प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम, मजबूत प्रवर्तन तंत्र और एक नैतिक संगठनात्मक संस्कृति के विकास जैसे निरंतर प्रयासों की आवश्यकता होती है। गतिशील नैतिक संदर्भ के साथ प्रासंगिकता, प्रभावकारिता और संगतता सुनिश्चित करने के लिए, नैतिक संहिता का नियमित रूप से मूल्यांकन और समायोजन किया जाना चाहिए।

आवश्यक उपाय

- **दूसरी एआरसी (10 वीं रिपोर्ट) के अनुसार;** कार्मिक प्रशासन का नवीनीकरण - नई ऊंचाइयों को पार करना, एक

व्यापक सिविल सेवा संहिता को तीन स्तरों पर संकल्पित किया जा सकता है।

- **पहला स्तर:** आदर्शों और नैतिक मानकों का एक स्पष्ट और संक्षिप्त बयान मानक जो एक सिविल कार्यकर्ता को बनाए रखना चाहिए, उच्चतम स्तर पर किया जाना चाहिए।
    - **इन सिद्धांतों को राजनीतिक तटस्थता,** उच्चतम नैतिक मानकों को बनाए रखने और किसी के कार्यों के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने के संदर्भ में एक सिविल सेवक की जनता की अपेक्षाओं का प्रतिनिधित्व करना चाहिए।
- **दूसरा स्तर:** एक सिविल सेवक के कार्यों को नियंत्रित करने वाले बुनियादी सिद्धांतों को दूसरे स्तर पर व्यक्त किया जा सकता है। इसमें नैतिक संहिता शामिल होगी।
- **तीसरे स्तर पर,** एक विशिष्ट आचार संहिता होनी चाहिए जो स्वीकार्य और निषिद्ध व्यवहार और कृत्यों की एक सूची प्रदान करती है जो स्पष्ट और सादे तरीके से कार्य करती है।
- **प्रवर्तन तंत्र:** यह सुनिश्चित करने के लिए एक प्रक्रिया लागू की जा सकती है कि नेतृत्व के पदों पर रहने वाले, विशेष रूप से, अपनी कंपनियों के सभी सदस्यों में इन सिद्धांतों को स्थापित करने का प्रयास करते हैं।
- **यह भी कहा गया है कि आयुक्त की जिम्मेदारियों में निम्नलिखित शामिल हैं:**
    - आचार संहिता का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए एजेंसियों की प्रक्रियाओं और प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
    - एक स्वतंत्र एजेंसी को संगठनों/विभागों का ऑडिट करना चाहिए और सिविल सेवा आदर्शों का सम्मान करने के लिए उठाए गए कदमों का मूल्यांकन करना चाहिए। केंद्रीय सिविल सेवा प्राधिकरण को यह जिम्मेदारी दी जा सकती है।

आचार संहिता और नैतिक संहिता के बीच अंतर

मापदंड	आचार संहिता	नैतिक संहिता
अर्थ	• एक विशिष्ट संगठन या पेशे के भीतर व्यक्तियों के अपेक्षित व्यवहार और कार्यों को निर्दिष्ट करता है।	• नैतिक सिद्धांतों, मूल्यों और मानकों को रेखांकित करता है जो किसी विशेष पेशे या क्षेत्र में नैतिक निर्णय लेने और व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं।
पर बल देता है	• नियमों और विनियमों पर केंद्रित है जो व्यवहार और आचरण को नियंत्रित करते हैं।	• व्यापक नैतिक सिद्धांतों और आदर्शों पर जोर देता है जिन्हें व्यक्तियों को बनाए रखने की आकांक्षा करनी चाहिए।
दायरा	• उचित व्यवहार के लिए विशिष्ट दिशानिर्देश प्रदान करता है, अक्सर हितों के टकराव, गोपनीयता, व्यावसायिकता और जवाबदेही जैसे मुद्दों को संबोधित करता है।	• निष्पक्षता, ईमानदारी, अखंडता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे कारकों को ध्यान में रखते हुए नैतिक निर्णय लेने के लिए एक अधिक व्यापक ढांचा प्रदान करता है।
प्रवर्तन	• अक्सर गैर-अनुपालन के लिए अनुशासनात्मक उपायों और परिणामों के माध्यम से लागू किया जाता है। आमतौर पर उस संगठन या पेशेवर निकाय द्वारा विकसित और लागू किया जाता है जिससे व्यक्ति संबंधित होते हैं।	• अनुशासनात्मक कार्रवाइयों पर कम जोर देने के साथ, नैतिक सिद्धांतों का पालन करने के लिए व्यक्तिगत प्रतिबद्धता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर निर्भर करता है। पेशेवर संघों या निकायों द्वारा विकसित किया जा सकता है, लेकिन व्यापक सामाजिक मूल्यों और नैतिक मानकों द्वारा निर्देशित भी किया जा सकता है।
कार्य	• मुख्य रूप से किसी विशिष्ट संगठन या पेशे के भीतर व्यवहार को विनियमित करने से संबंधित है। अक्सर अधिक विशिष्ट और विस्तृत, दिन-प्रतिदिन के कार्यों और निर्णयों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करता है।	• इसका उद्देश्य व्यक्तिगत चरित्र को आकार देना, विशिष्ट व्यावसायिक संदर्भों से परे नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देना है। आम तौर पर अधिक व्यापक और सिद्धांत-आधारित, विभिन्न स्थितियों में व्याख्या और अनुप्रयोग की अनुमति देता है।
परिवर्तनशीलता	• विभिन्न संगठनों या व्यवसायों के बीच भिन्न हो सकते हैं, प्रत्येक की विशिष्ट आवश्यकताओं और संदर्भ को दर्शाते हैं।	• कुछ सार्वभौमिक सिद्धांत हो सकते हैं, लेकिन किसी विशेष पेशे या क्षेत्र के लिए प्रासंगिक विशिष्ट विचारों को भी शामिल कर सकते हैं।

7.9 नागरिक चार्टर

अपनी 12 वीं रिपोर्ट में, दूसरे एआरसी में नागरिक चार्टर को एक साधन के रूप में वर्णित किया जो एक संगठन को पारदर्शी, जवाबदेह और नागरिक-अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। नागरिक चार्टर अनिवार्य रूप से एक संगठन द्वारा प्रदान किए जाने वाले सेवा मानकों के बारे में किए गए समझौतों की एक श्रृंखला है।

7.9.1 नागरिक का अर्थ

- नागरिक चार्टर में नागरिक शब्द उन ग्राहकों को संदर्भित करता है जिनके हितों और मूल्यों को नागरिक चार्टर द्वारा संबोधित किया जाता है, और इस प्रकार न केवल नागरिक, बल्कि सभी हितधारकों, अर्थात नागरिकों, ग्राहकों, ग्राहकों, उपयोगकर्ताओं, लाभार्थियों, अन्य मंत्रालयों / विभागों / संगठनों, राज्य सरकारों, संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन, आदि को भी शामिल किया जाता है।
- इस प्रयास में न केवल केंद्र सरकार के मंत्रालय, विभाग और संगठन, बल्कि राज्य सरकार के विभाग और केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन भी शामिल हैं।

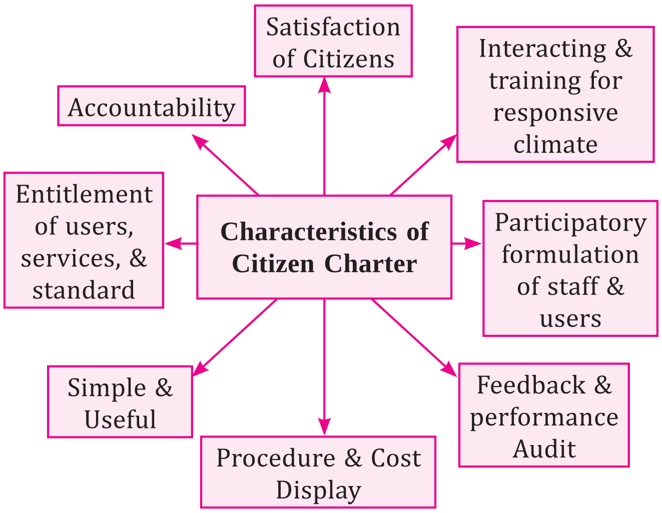

चित्र: नागरिक चार्टर की विशेषताएं

7.9.2 नागरिक चार्टर का विकास

- **प्रधान मंत्री जॉन मेजर के नक्शेकदम पर चलते हुए,** यूनाइटेड किंगडम 1991 में नागरिक चार्टर स्थापित करने वाला पहला देश था।
- अन्य देशों ने विशिष्ट क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तुलनीय इससे मिलती जुलती योजनाएं शुरू कीं, जिनमे पारदर्शिता और जवाबदेही आदि तत्व बने रहे की धारणा सुसंगत रही।
- **भारत में मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन:** इसे 24 मई, 1997 को मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में पेश किया गया था, जहां नागरिक चार्टर को लागू करने का निर्णय लिया गया था, विशेष रूप से उच्च सार्वजनिक इंटरफेस वाले क्षेत्रों में।
- **विधायी कार्रवाई:** भारत में नागरिक चार्टर को औपचारिक समर्थन प्रदान करने के लिए 2011 में रेजिडेंट्स चार्टर बिल 2011 में पेश किया गया था।
  - इसका इरादा निवासियों को वस्तुओं और सेवाओं की सामयिक वितरण सुनिश्चित करने के लिए एक रूपरेखा तैयार करना है।
  - इसमें किसी भी सार्वजनिक प्राधिकरण को अधिनियम को अपनाने के छह महीने के भीतर नागरिक चार्टर प्रकाशित करना होगा या 50,000 रुपये तक का जुर्माना भरना होगा।
  - भारत सरकार ने नागरिक चार्टर (www-goicharters-nic-in) के लिए एक व्यापक मंच बनाया और प्रकाशित किया है, जिसमें केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और संगठनों द्वारा जारी किए गए नागरिक चार्टर शामिल हैं।
- **पंचायती राज मंत्रालय ने एक आदर्श पंचायत नागरिक चार्टर प्रकाशित किया।**
  - यह स्थानीय सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के साथ प्रयासों का मिलान करते हुए 29 क्षेत्रों में सेवाओं की आपूर्ति करने के लिए बनाया गया था।

ग्राम पंचायत नागरिक चार्टर का महत्व

- **व्यावसायिकता:** यह पंचायत की कार्यप्रणाली को बढ़ाता है और बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी क्षेत्रों तक पहुंचने में सहायता करता है।
- **सेवा वितरण की निगरानी और मूल्यांकन:** पंचायतों के वादे सेवा वितरण की निगरानी और मूल्यांकन के लिए महान महत्वपूर्ण मानकों के रूप में काम करते हैं।
- **जमीनी स्तर पर अधिक जवाबदेही:** इससे निवासियों को अपने अधिकारों को समझने में मदद मिलेगी और साथ ही पंचायतों और उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों को सीधे लोगों के प्रति जवाबदेह बनाया जा सकेगा।

7.9.3 नागरिक चार्टर के घटक

एक मजबूत नागरिक चार्टर में निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया जाना चाहिए: विजन और मिशन संगठनात्मक वक्तव्य–

- संगठन के व्यावसायिक लेनदेन का विवरण
- 'नागरिकों' या 'ग्राहकों' की जानकारी।
- प्रत्येक नागरिक/या ग्राहक समूह को अलग से दी जाने वाली सेवाओं का विवरण, जिसमें मानक, गुणवत्ता, समय अवधि और सेवाएं कैसे/कहां से प्राप्त करें।

- शिकायत निवारण तंत्र के बारे में जानकारी और इसका उपयोग कैसे करें।
- 'नागरिकों' या 'ग्राहकों' की अपेक्षाएँ।
- अतिरिक्त वादे, जैसे सेवा वितरण विफलता की स्थिति में प्रतिपूर्ति।
- **गुणवत्ताः** सेवा की गुणवत्ता में सुधार
- **विकल्पः** जहां भी और जब भी व्यावहारिक हो, उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- **सेवा वितरण मानकः** स्पष्ट रूप से बताना कि क्या अपेक्षा करनी चाहिए और यदि अपेक्षाएं पूरी न हों तो क्या करना चाहिए।
- **पारदर्शिताः** नागरिक चार्टर प्रक्रिया और शिकायत निवारण तंत्र को विस्तार से बताता है।
- जवाबदेही व्यक्तियों और संगठनों दोनों पर लागू होती है।

7.9.4 नागरिक चार्टर के सिद्धांत

मूल रूप से तैयार किए गए नागरिक चार्टर आंदोलन के छह सिद्धांत थेः

1. **गुणवत्ताः** सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार;
2. **विकल्पः** जहां भी संभव हो;
3. **मानकः** निर्दिष्ट करें कि मानक पूरे न होने पर क्या अपेक्षा की जाए और कैसे कार्य किया जाए;
4. **मूल्यः** करदाताओं के पैसे के लिए;
5. **जवाबदेहीः** व्यक्ति और संगठन; और
6. **पारदर्शिताः** नियम/प्रक्रियाएं/योजनाएं/शिकायतें।

इन्हें बाद में श्रम सरकार द्वारा सेवा वितरण (1998) के निम्नलिखित नौ सिद्धांतों के रूप में विस्तृत किया गया थाः-

1. सेवा के मानक तय करना;
2. सुझावों के लिए खुले रहें और पूरी जानकारी प्रदान करें;
3. सलाह लें और शामिल करें;
4. पहुंच को प्रोत्साहित करें और पसंद को बढ़ावा दें;
5. सभी के साथ उचित व्यवहार करें;
6. जब चीजें गलत हो जाएं तो उन्हें सही करें;
7. संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करें;
8. नवप्रवर्तन और सुधार करें;
9. अन्य प्रदाताओं के साथ कार्य करें.

7.9.5 नागरिक चार्टर की विशेषताएं

नागरिक चार्टर की प्राथमिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं नागरिक चार्टर की प्राथमिक विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- **सेवा वितरण मानकों का एक सेटः** चार्टर को स्पष्ट सेवा गुणवत्ता मानकों को स्थापित करना चाहिए ताकि लोग समझ सकें कि सेवा प्रदाताओं से क्या उम्मीद करनी है।
  - **ये आवश्यकताएं उपयुक्त,** भरोसेमंद, अवलोकन योग्य, सटीक और समयबद्ध होनी चाहिए।
- **सेवा वितरण पारदर्शिता और जानकारीः** उपयोगकर्ताओं को उचित समय पर और सही जगह पर सटीक और संक्षिप्त जानकारी तक पहुंच है।
  - **आम आदमी के शब्दों में,** चार्टर्स को सुलभ संसाधनों के बारे में पूरी तरह से और विस्तृत जानकारी प्रदान करनी चाहिए।
- **पसंद और उपयोगकर्ताओं के साथ संपर्कः** चार्टर उपभोक्ताओं को उपलब्ध होने पर सेवाओं का विकल्प प्रदान करेगा। सेवा अपेक्षाओं को परिभाषित करने और सेवा वितरण की स्थिरता बनाए रखने के लिए, सेवा के उपयोगकर्ताओं को नियमित और व्यवस्थित आधार पर परामर्श किया जाना चाहिए।
- **सेवा वितरण में निष्पक्षता और सहायताः** चार्टर मैत्रीपूर्ण और चौकस सार्वजनिक सेवा की संस्कृति बनाने में मदद करेगा।
- **नागरिकों की आपत्तियों और शिकायतों का समाधान किया जाता हैः** उच्च गुणवत्ता वाली सेवा प्रदान करने और शिकायतों का सफलतापूर्वक समाधान करने के बीच एक मजबूत संबंध है। प्रोत्साहित करने और चिंताओं पर प्रतिक्रिया देने से शिकायतों के कारणों को कम किया जा सकता है।
  - शिकायतों में **"रुझानों"** को पहचानने से सेवा प्रदाता को संरचनात्मक और पुरानी चिंताओं को दूर करने की अनुमति मिलती है।

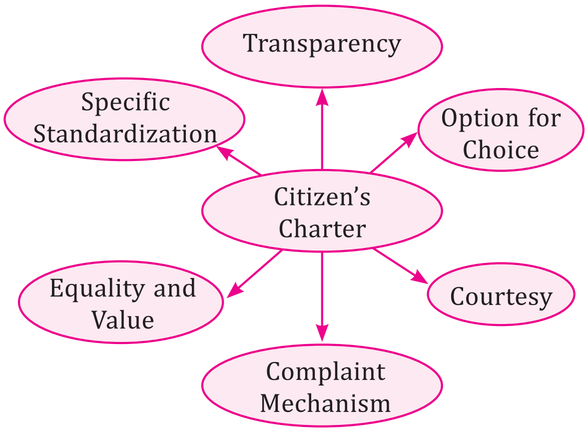

Fig: Features of Citizen Charter

7.9.6 नागरिक चार्टर के साथ भारत का अनुभव

- **डीएआरपीजी और उपभोक्ता समन्वय परिषद,** नई दिल्ली, एक गैर सरकारी संगठन, ने अक्टूबर 1998 में कई सरकारी

संस्थानों के नागरिक चार्टरों का एक अध्ययन किया। भारत में पहल की प्रारंभिक अवस्था को देखते हुए, निष्कर्ष काफी आशावादी थे।

- **डीएआरपीजी ने नागरिक चार्टरों के अधिक सटीक,** मात्रात्मक और वस्तुनिष्ठ आंतरिक और बाह्य मूल्यांकन के लिए एक मानकीकृत तंत्र विकसित करने के लिए 2002-03 में एक विशेष संगठन की भर्ती की।
- **एजेंसी की मूल्यांकन रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्षों में शामिल हैं:** अधिकांश मामलों में चार्टर परामर्शात्मक प्रक्रिया के माध्यम से तैयार नहीं किए गए थे; सेवा प्रदाता आम तौर पर चार्टर की विचारधारा, लक्ष्यों और प्रमुख विशेषताओं से अपरिचित होते हैं; और चार्टरों को जांचे गए किसी भी विभाग में पर्याप्त प्रचार नहीं दिया गया।
- नागरिक चार्टर के बारे में जागरूकता बढ़ाने या चार्टर के विभिन्न घटकों पर श्रमिकों को प्रशिक्षित करने के लिए स्पष्ट रूप से कोई धनराशि निर्धारित नहीं की गई है;
- **चार्टर अभी विकास के प्रारंभिक या मध्य चरण में हैं।**

भारत में नागरिक चार्टर की कमियां:

- **अपर्याप्त रूप से निर्मित और संगठनात्मक क्षमता का अभाव:** सेवा समय सारिणी, शिकायत समाधान तंत्र आदि जैसी महत्वपूर्ण जानकारी गायब है।
- **सार्वजनिक जागरूकता की कमी है:** सार्वजनिक शिक्षा और संचार प्रयास अप्रभावी रहे हैं।
- नागरिक चार्टर को विकसित और संशोधित करते समय मूल्यांकन और आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार के संदर्भ में पर्याप्त जमीनी कार्य का अभाव है।
- **कोई अद्यतन न होना:** चार्टर के निर्माण को एक बार की घटना के रूप में देखा जाता है जिसे नियमित रूप से अद्यतन नहीं किया जाता है।
- **हितधारकों से कोई परामर्श नहीं:** जब चार्टर का मसौदा तैयार किया जाता है, तो अंतिम उपयोगकर्ताओं, नागरिक समाज और अन्य हितधारकों से परामर्श नहीं किया जाता है।
  - जब चार्टर का मसौदा तैयार किया जाता है तो बुजुर्गों और गरीबों के हितों की अनदेखी की जाती है।
  - एजेंसी और कर्मचारियों का नागरिकों के प्रति व्यवहार और रवैया सुधार प्रतिरोध में योगदान देता है।
- **समझ का अभाव:** सेवा प्रदाताओं में चार्टर की अवधारणा, लक्ष्यों और आवश्यक तत्वों की समझ का अभाव।
  - सभी मंत्रालयों और विभागों को अभी तक सिटीजन चार्टर लाना बाकी है।
- **सक्रिय समर्पण की कमी:** कई परिस्थितियों में, सेवा प्रदाताओं में मानकों और सेवा वितरण में समर्पण और सटीकता की कमी होती है।
- **शिकायत निवारण प्रणालियों का अभाव:** नाराज पक्ष की अनुपस्थिति में, कुशल और पर्याप्त शिकायत निवारण प्रणालियाँ अक्सर स्थानीय भाषा में जानकारी नहीं देती हैं।
- **अनिच्छा:** संगठन अक्सर नागरिक चार्टर के दायित्वों को पूरा करने में अनिच्छुक होते हैं क्योंकि उन्हें अपने कर्मचारियों पर थोपने का कोई उद्देश्य या इच्छा नहीं होती है।

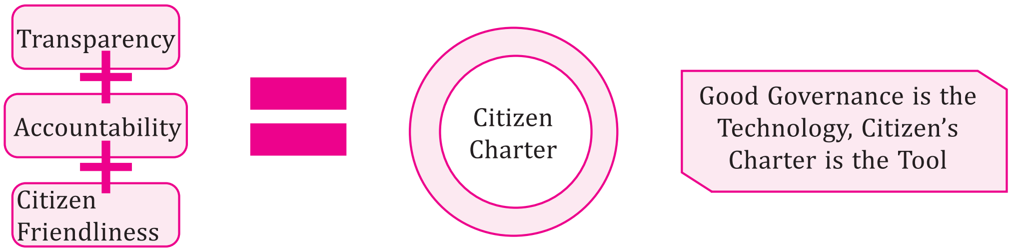

नागरिक चार्टर को लागू करने के उपाय

द्वितीय एआरसी ने सेवा वितरण में नागरिक चार्टर की सफलता और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित कार्यों की सिफारिश की:

- **नागरिक चार्टर को प्रभावी बनाना:** चार्टर में उल्लिखित आवश्यकताओं को पूरा करने में विफलता की स्थिति में जुर्माना मुआवजे के उपाय को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए।
- **व्यापक परामर्श प्रक्रिया:** संस्थान के अंदर और संगठन तथा नागरिक समाज के बीच परामर्श की वकालत करके एक नागरिक चार्टर विकसित किया जाना चाहिए।
- **विफलता की स्थिति में,** एक पर्याप्त शिकायत निवारण प्रणाली होनी चाहिए। नागरिक चार्टर में स्पष्ट रूप से उस राहत का उल्लेख होना चाहिए जो संगठन निर्दिष्ट सेवा मानदंडों को पूरा करने में विफल होने पर प्रदान करने के लिए बाध्य है।

- **एक आकार का खाका सभी के लिए उपयुक्त नहीं है:** सरकारी संगठनों की क्षमताएं, संसाधन और जिम्मेदारियां समान नहीं हैं, और देश भर में नागरिक चार्टर को लागू करने की काफी आवश्यकता है।
- **दृढ़ प्रतिबद्धता होनी चाहिए:** नागरिक चार्टर विशिष्ट होना चाहिए और, जब भी संभव हो, मात्रात्मक शर्तों में नागरिकों को सेवा वितरण मानकों के दायित्वों से बाहर रखा जाना चाहिए।
- नागरिक चार्टरों का नियमित आधार पर मूल्यांकन और परिवर्तन किया जाना चाहिए।
- **वैधानिक आश्वासन:** नागरिक चार्टर में सेवाएँ प्राप्त करने के अधिकार के लिए वैधानिक आश्वासन शामिल होना चाहिए।
- **सूचना और सुविधा केंद्र बनाएं:** विधेयक के अनुसार प्रत्येक सार्वजनिक प्राधिकरण को कुशल और प्रभावी सेवा वितरण और शिकायत निवारण प्रदान करने के लिए सूचना और सुविधा केंद्रों का निर्माण करना आवश्यक था।
- "हर विभाग में एक नागरिक चार्टर एक मजबूत संदेश देगा कि सरकार भ्रष्टाचार को रोकने और नियंत्रित करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

7.9.7 सेवोत्तम मॉडल

- **सेवोत्तम मॉडल सार्वजनिक सेवा वितरण में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए एक रूपरेखा है।**
  - सेवोत्तम मॉडल को नागरिक चार्टर की विफलता के परिणामस्वरूप बनाया गया था जो अपने दम पर सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के मामले में वांछित परिणाम उत्पन्न करने में विफल रहा था।
- सेवोत्तम मॉडल आंतरिक प्रक्रियाओं की दक्षता और सेवा वितरण की गुणवत्ता पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए एक तकनीक है।

सेवोत्तम मॉडल को तीन मॉड्यूल में विभाजित किया गया है:

1. **नागरिक चार्टर:** प्रभावी चार्टर कार्यान्वयन की आवश्यकता है, जो लोगों के लिए फीडबैक प्रदान करने के लिए एक प्रणाली स्थापित करता है कि कंपनियां सेवा वितरण आवश्यकताओं को कैसे निर्धारित करती हैं।
2. **लोक शिकायत निवारण प्रक्रिया:** एक प्रभावी शिकायत निवारण प्रक्रिया की आवश्यकता होती है, जो अंतिम निर्णय की परवाह किए बिना, नागरिक को संगठन द्वारा समस्याओं से निपटने के तरीके में अधिक सहज महसूस कराती है।
3. **सेवा वितरण की क्षमताएँ:** यदि कोई संगठन सफल सेवा वितरण के लिए मुख्य घटकों को अच्छी तरह से नियंत्रित करता है और वितरण को बढ़ावा देने की अपनी क्षमता में लगातार सुधार करता है तो ही वह उत्कृष्ट सेवा वितरण दक्षता प्राप्त कर सकता है।

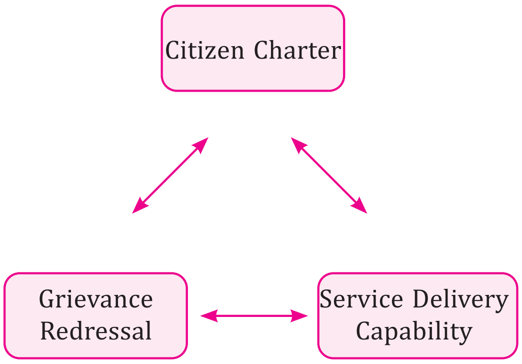

Fig: Trinity of Sevottam Model

सेवोत्तम मॉडल का महत्व

- **अप्रैल 2009 से जून 2010 तक,** सेवोत्तम मॉडल को पहली बार बड़े सार्वजनिक इंटरफेस वाली ग्यारह सरकारी एजेंसियों में लागू किया गया था।
- **इसके बाद बीआईएस ने आईएस 15700:** 2005 मानक तैयार किया, जो सार्वजनिक सेवा संगठनों को उत्कृष्टता का सेवोत्तम प्रतीक प्रदान करने की अनुमति देता है यदि वे प्रबंधन प्रणालियों के एक सेट को लागू करते हैं और उसका अनुपालन प्रदर्शित करते हैं।
- सेवोत्तम मॉडल को नागरिक चार्टर को लागू करने, शिकायत समाधान प्रक्रिया को लागू करने और सेवाएं प्रदान करने की संगठन की क्षमता का आकलन करने के लिए डिजाइन किया गया है।

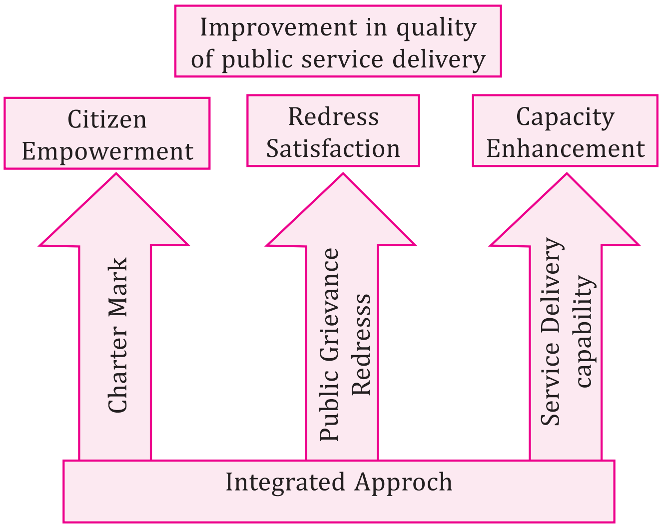

निष्कर्ष

नागरिक चार्टर शासन में सुधार, सार्वजनिक विश्वास बढ़ाने और नागरिक-केंद्रित सेवा वितरण को बढ़ावा देने के लिए एक उपकरण

के रूप में कार्य करता है। यह सार्वजनिक सेवाओं को अधिक सुलभ, जवाबदेह और उनकी आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनाकर नागरिकों को सशक्त बनाता है।

7.10 कार्य संस्कृति

- कार्य संस्कृति उन मूल्यों, व्यवहारों, मानदंडों और प्रथाओं को संदर्भित करती है जो परिभाषित करते हैं कि कोई व्यवसाय या संगठन कैसे चलता है।
- इसमें संगठन के मिशन और मूल्यों को शामिल किया जा सकता है, कर्मचारी एक-दूसरे के साथ और प्रबंधन के साथ कैसे जुड़ते हैं, सहयोग और टीम वर्क का स्तर और कार्यस्थल का समग्र दृष्टिकोण और वातावरण।
- एक सकारात्मक कार्य संस्कृति से कर्मचारी खुशी और उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है, जबकि एक नकारात्मक कार्य संस्कृति से कारोबार और कम मनोबल बढ़ सकता है।

सकारात्मक कार्य संस्कृति के घटक

- संचार स्पष्टता और पारदर्शिता।
- सतत शिक्षा और व्यक्तिगत विकास को प्राथमिकता दी जाती है।
- अपनत्व और टीम वर्क की भावना।
- विविधता और समग्रता को महत्व दिया जाता है।
- सभी कर्मचारियों के साथ निष्पक्ष एवं समान व्यवहार किया जाता है।
- कार्य और व्यक्तिगत जीवन का स्वस्थ संतुलन।

सकारात्मक कार्य संस्कृति का महत्व

- कार्यस्थल संस्कृति कर्मचारियों में सर्वश्रेष्ठ लाने और उन्हें लंबे समय तक बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- संगठन को कर्मचारियों के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करना चाहिए ताकि वे एक-दूसरे के काम में हस्तक्षेप करने के बजाय अपने काम पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

एक स्वस्थ कार्य संस्कृति की विशेषताएं

- अनुकूल कार्य वातावरण में कर्मचारी अधिक खुश और अधिक उत्पादक होते हैं।
- **खुला और पारदर्शी:** एक अच्छी कार्य संस्कृति संगठन के सभी स्तरों पर खुले और पारदर्शी संचार को बढ़ावा देती है। कर्मचारी अपने विचारों, चिंताओं और आलोचना को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हैं, और प्रबंधन सक्रिय रूप से सुनता है और रचनात्मक प्रतिक्रिया देता है।
- विश्वास और सम्मान एक सफल कार्यस्थल संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व हैं। कर्मचारियों को अपने नेताओं, सहकर्मियों और टीमों पर भरोसा होता है और वे विभिन्न दृष्टिकोणों, योगदानों और पृष्ठभूमियों को महत्व देते हैं।
- **स्पष्ट मूल्य और उद्देश्य:** कर्मचारी संगठन के मिशन और मूल्यों को समझते हैं, और उनका काम इन विचारों को प्रतिबिंबित करता है, अर्थ और दिशा प्रदान करता है।
- **सहयोग और टीम वर्क:** कर्मचारियों को सहयोग करने, ज्ञान और कौशल साझा करने और एक-दूसरे की सफलता के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
  - **बेहतर समस्या-समाधान,** नवाचार और उत्पादकता प्रभावी टीमवर्क से उत्पन्न होती है।
- **कार्य-जीवन संतुलन:** नियोक्ता लचीली कार्य व्यवस्था को प्रोत्साहित करते हैं, कर्मचारियों की भलाई को प्राथमिकता देते हैं, और कर्मचारियों को स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में मदद करने के लिए संसाधन और सहायता देते हैं।
- एक अच्छी कार्य संस्कृति में कर्मचारियों के प्रयासों और सफलताओं को मान्यता दी जाती है और पुरस्कृत किया जाता है।
- **व्यावसायिक विकास:** एक अच्छी कार्य संस्कृति निरंतर सीखने और पेशेवर विकास पर अधिक ध्यान देती है। नियोक्ता कौशल विकास, प्रशिक्षण और कैरियर पदोन्नति के अवसर प्रदान करके लोगों को बढ़ने और अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने के अवसर पैदा करते हैं।
- एक स्वस्थ कार्य संस्कृति में विविधता और समावेशन को महत्व दिया जाता है और अपनाया जाता है। यह एक ऐसा वातावरण बनाकर रचनात्मकता, नवीनता और व्यापक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है जिसमें विभिन्न पृष्ठभूमि के लोग स्वीकार्य, सम्मानित और शामिल महसूस करते हैं।
- **कार्यभार संतुलन और यथार्थवादी अपेक्षाएँ:** एक स्वस्थ कार्य संस्कृति स्वीकार्य कार्यभार और कर्मचारियों की यथार्थवादी अपेक्षाओं को प्रोत्साहित करती है। यह यह सुनिश्चित करके बर्नआउट को रोकने के लिए काम करता है कि नौकरी की उम्मीदें प्रबंधनीय हैं और कर्मचारियों के पास अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधन और समर्थन है।
- **स्वायत्तता और सशक्तिकरण:** एक मजबूत कार्य संस्कृति कर्मचारियों को उनकी भूमिकाओं में स्वायत्तता और निर्णय लेने का अधिकार देकर सशक्त बनाती है। यह लोगों से अपेक्षा करता है कि वे अपनी नौकरी का स्वामित्व लें, स्वतंत्र निर्णय लें और संगठन की सफलता में योगदान दें।

खराब कार्य संस्कृति से जुड़ी समस्याएं और चुनौतियाँ

एक खराब कार्य संस्कृति में विभिन्न हानिकारक लक्षण हो सकते हैं जो कर्मचारियों के मनोबल, उत्पादकता और संगठन के समग्र प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। खराब कार्य संस्कृति की कुछ आम लक्षण नीचे दिए गए हैं:

- **संवाद की कमी:** खराब कार्य संस्कृति में, अक्सर कर्मचारियों औरा प्रबंधन के बीच प्रभावी संचार की कमी होती है। इससे गलतफहमियाँ, टकराव और टीम वर्क और सहयोग में बाधा आ सकती है।
- **भरोसे का अभाव:** स्वस्थ कार्य संस्कृति के लिए भरोसा आवश्यक है, लेकिन खराब कार्य संस्कृति में अक्सर भरोसे की कमी होती है। कर्मचारी असहाय, अप्रशंसित, या कम महत्व वाला महसूस कर सकते हैं, जिससे उनका मनोबल कम हो सकता है और काम के प्रति जुड़ाव कम हो सकता है।
- **खराब सूक्ष्म प्रबंधन:** खराब कार्य संस्कृतियों में अक्सर अत्यधिक सूक्ष्म प्रबंधन शामिल होता है, जहां प्रबंधक अपने कर्मचारियों के काम के हर पहलू की बारीकी से जांच और नियंत्रण करते हैं। यह एक घुटनभरा माहौल बना सकता है जो रचनात्मकता, स्वायत्तता और व्यक्तिगत विकास में बाधक होता है।
- **पहचान और पुरस्कार की कमी:** जब कर्मचारियों के योगदान और उपलब्धियों को पहचान या पुरस्कार नहीं मिलता है, तो इससे प्रेरणा की कमी और हतोत्साहन की भावना पैदा हो सकती है।
- **उच्च टर्नओवर दर:** खराब कार्य संस्कृति उच्च टर्नओवर दर (कर्मचारियों द्वारा संस्थान छोड़ने की दर) में योगदान कर सकती है, क्योंकि कर्मचारी असंतुष्ट रहते हैं और कहीं और रोजगार के अवसर तलाश सकते हैं। लगातार टर्नओवर टीम की गतिशीलता, संस्थागत ज्ञान और उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।
- **धमकी या उत्पीड़न:** एक खराब कार्य संस्कृति में धमकी, उत्पीड़न या भेदभाव भी शामिल हो सकते है, जिससे कर्मचारियों के लिए शत्रुतापूर्ण और असुविधाजनक वातावरण पैदा हो सकता है। इस तरह के व्यवहार से कर्मचारियों में भावनात्मक समस्याएं हो सकती हैं, नौकरी से संतुष्टि कम हो सकती है और समग्र कल्याण में गिरावट आ सकती है।
- **कार्यक्षेत्र और निजी जीवन में संतुलन का अभाव:** एक खराब कार्य संस्कृति अक्सर कार्य क्षेत्र और जीवन में संतुलन के महत्व की उपेक्षा करती है। कर्मचारियों से लंबे समय तक काम करने, अत्यधिक कार्यभार लेने या अव्यवहारिक समय-सीमा में काम पूरा करने की अपेक्षा की जा सकती है, जिसके परिणामस्वरूप उनको थकान होगी और उनके व्यक्तिगत जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
- **परिवर्तन का विरोध:** खराब कार्य संस्कृति में, अक्सर परिवर्तन और नवाचार का विरोध होता है। संगठन पुरानी प्रथाओं, प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों में उलझा रह सकता है, जो प्रगति और अनुकूलन क्षमता में बाधक होता है।
- **कर्मचारियों के विकास का अभाव:** एक खराब कार्य संस्कृति आमतौर पर कर्मचारियों के विकास और वृद्धि के अवसरों की उपेक्षा करती है। इससे वह कार्यालय सीमित कौशल, कम प्रेरणा और नौकरी से असंतुष्टि के साथ एक स्थिर कार्यबल में बदल सकता है।
- **नकारात्मक दृष्टिकोण और निम्न मनोबल:** खराब कार्य संस्कृतियाँ कर्मचारियों के बीच नकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देती हैं, जिनमें संशय, उदासीनता और अलगाव शामिल हैं। निम्न मनोबल व्यापक हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप उत्पादकता कम हो जाती है, अनुपस्थिति की आदत बढ़ जाती है और संगठनात्मक लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता की कमी हो जाती है।

इन लक्षणों को पहचानना और उनको हल करना संगठनों के लिए एक सकारात्मक कार्य संस्कृति विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है जो कर्मचारियों की भलाई, संतुष्टि और उत्पादकता को बढ़ावा देती है।

भारतीय कार्यस्थल संस्कृति की प्रमुख समस्याएं

- **'भागदौड़ भरी संस्कृति':** एक प्रकार की गहन कार्यशैली-भारतीय कार्यस्थल में प्रचलित है, जैसा कि कई अन्य एशियाई उद्योगों में है।
- **यह संस्कृति अभाव की मानसिकता से प्रेरित है,** जिसमें कहा गया है कि प्रत्येक कर्मचारी को 1.30 करोड़ से अधिक लोगों के साथ अवसर और संसाधन साझा करने होंगे, और केवल इतने ही संसाधन उपलब्ध हैं।
  - इससे असुरक्षा की भावना पैदा होती है, जो लोगों को खराब कार्य संस्कृति की बुराइयों में उलझाए रखती है।
- किसी भी कर्मचारी को उसके काम की गुणवत्ता के बजाय कार्य के घंटों की संख्या के आधार पर आंकने की प्रथा न केवल भारत में बल्कि पूरे एशिया में व्याप्त है। जापान की करोशी संस्कृति इस सांस्कृतिक धारणा के परिणाम का उदाहरण है।
- **आईएलओ की ग्लोबल वेज रिपोर्ट 2020-21 के अनुसार,** भारतीय दुनिया में सबसे सबसे लंबे समय तक काम करने और कम वेतन पाने वालों में से एक हैं। काम के घंटों को 48 घंटे तक बढ़ाया जा सकता है, जिससे भारत सबसे लंबे कार्यदिवस वाले देशों में पांचवें स्थान पर आ जाएगा।
- हाल में आई महामारी ने इस भागदौड़ भरी संस्कृति के कारण उत्पन्न होने वाली विभिन्न कठिनाइयों को उजागर किया है, जैसे अत्यधिक अपेक्षा और कर्मचारियों पर काम के बोझ वाले कार्यस्थल।
- **इसके अलावा,** ऑसिफाइड (ऑसिफाई का तात्पर्य अनम्य, पारंपरिक और परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी होने से है) पदानुक्रम भारतीय कार्यस्थलों को प्रभावित करता है।

सिविल सेवकों के बीच खराब कार्य संस्कृति के लिए जिम्मेदार कारक

- **नौकरशाही उदासीनताः** नौकरशाही को विशेषाधिकार प्राप्त रहते है और उसे लोगों, विशेषकर कमजोर वर्गों की जरूरतों के प्रति उदासीन माना जाता है। सफलता को नजरअंदाज करते हुए, नौकरशाही भारी भरकम वेतन और पदोन्नति का आनंद लेती रहती है। कार्ल मार्क्स ने नौकरशाही की ऐसी खामियों को स्पष्ट किया है।
- **प्रदर्शन मूल्यांकन का अभावः** कर्मचारी के प्रदर्शन की उचित, मापने योग्य और वस्तुनिष्ठ तरीके से समीक्षा नहीं की जाती है। परिणामस्वरूप, उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कार और मान्यता की कमी है, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिकों के बीच प्रेरणा और प्रयास का स्तर कम हो गया है।
- **अपर्याप्त कार्यनिष्पादन उत्तरदायित्वः** खराब कार्यनिष्पादन, त्रुटियों या विलंब के लिए सिविल अधिकारियों को उत्तरदायी नहीं ठहराया जाता है। इससे खराब कार्यनिष्पादन को बढ़ावा मिलता है जबकि सबसे खराब प्रदर्शन करने वालों को बाहर नहीं किया जाता है।
- **वरिष्ठता सिद्धांतः** पदोन्नति वरिष्ठता और सेवा के निश्चित वर्षों के पूरे होने पर निर्भर होती है, और योग्यता को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता है। परिणामस्वरूप कर्मचारी आत्मसंतुष्ट हो जाते हैं और उनमें अच्छा प्रदर्शन करने की इच्छा कम हो जाती है।
- **रोजगार सुरक्षाः** अत्यधिक रोजगार सुरक्षा और लंबी सेवा अवधि की गारंटी से आत्मसंतुष्टि आती है क्योंकि कर्मचारी मानते हैं कि खराब प्रदर्शन के बावजूद उनकी नौकरी बनी रहेगी।
- **प्रक्रिया-उन्मुखः** सरकार में परिणाम प्राप्त करने के बजाय नियमों और प्रक्रियाओं का बारीकी से पालन करने पर जोर दिया जाता है।
- **सरकार के पास उपलब्ध वित्त की मात्रा सीमित है,** विशेष रूप से विकासशील देशों में, जिसके परिणामस्वरूप मानव संसाधन और कार्यालय स्थलों में निवेश की कमी होती है।
- **खराब प्रशिक्षणः** सिविल सेवक, विशेष रूप से निचले पायदान पर मौजूद लोग, सिविल सेवा के सिद्धांतों और कौशल को अपनाने के लिए ठीक से प्रशिक्षित नहीं होते हैं जिससे उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती। इसके परिणामस्वरूप सारे कार्यबल में समर्पण की कमी और खराब कार्यनिष्पादन की प्रवृत्ति पैदा होती है।

सिविल सेवा में कार्य संस्कृति के सुधार हेतु आवश्यक उपायः

- **संवेदनशीलता प्रशिक्षणः** क्रिस आर्गिरिस तकनीक (जिसे टी-ग्रुप प्रशिक्षण के रूप में भी जाना जाता है) का उद्देश्य कर्मचारियों के बीच आपसी समझ और सम्मान में सुधार करना है, जिसके परिणामस्वरूप पारस्परिक संबंध मजबूत होते हैं। इससे मतभेद कम होते हैं और मनोबल बढ़ता है।
- **जन सुनवाईः** जनता की समस्याओं को खुले और प्रभावी तरीके से सुलझाने के लिए नियमित आधार पर जन सुनवाई आयोजित की जानी चाहिए। इससे उत्तरदायित्व बढ़ती है और सेवा प्रदायगी की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। राजस्थान में यह काफी सफल रहा है जिसे जन सुनवाई के नाम से जाना जाता है।
- **मजबूत फीडबैक तंत्रः** संगठनों और कर्मचारियों को उनके प्रदर्शन पर स्पष्ट और लगातार फीडबैक मिलते रहना चाहिए। यह उन्हें सुधार लागू करने और अपने कार्य संचालन में सुधार करने के लिए प्रेरित करता है।
- **लोक सेवा गारंटीः** विभिन्न भारतीय राज्यों में लागू लोक सेवा गारंटी अधिनियम जैसे कानूनी साधनों का उपयोग सेवा प्रदायगी के लिए विशिष्ट कानूनी मानदंड स्थापित करने के लिए किया जा सकता है। यह कर्मचारियों के लिए कर्तव्यनिर्वहन को एक कानूनी दायित्व बनाता है और साथ ही कर्मचारी जागरूकता भी बढ़ाता है।
- **निष्पादन-आधारित वेतनः** सिविल सेवकों का वेतन पूरी तरह से निश्चित नहीं होना चाहिए और इसमें एक घटक शामिल होना चाहिए जो उनके निष्पादन के साथ बढ़े। यह अच्छी उपलब्धि को प्रेरित भी करता है और पहचान भी दिलाता है।
- **सीसीटीवी निगरानी और ई-गवर्नेंसः** निगरानी से कर्मचारियों पर नजर रहती है, जिससे कड़ी मेहनत करने के लिए प्रोत्साहन बढ़ता है। यह अनुचित व्यवहार को रोकने का भी काम करता है।
- **निजी क्षेत्र की प्रथाओं से सीखनाः** चूंकि निजी क्षेत्र की कार्य संस्कृति में सार्वजनिक क्षेत्र की तुलना में कुछ फायदे हैं, इसलिए सरकार द्वारा निजी क्षेत्र की कुछ प्रथाओं को अपनाया जा सकता है। इसमें कार्यनिष्पादन-लक्ष्य, कार्यनिष्पादन -आधारित पारिश्रमिक, प्रबंधकीय स्वायत्तता, भर्ती करने और नौकरी से निकालने की सुविधा इत्यादि शामिल हो सकते हैं।

कार्य संस्कृति में सुधार हेतु आवश्यक उपायः

- प्रत्येक कर्मचारी को एक अलग व्यक्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। कर्मचारियों का मूल्यांकन विशेष रूप से उनके प्रदर्शन के आधार पर किया जाना चाहिए।

- कार्यस्थल पर व्यक्तिगत संबंधों को पीछे रखना चाहिए। किसी के साथ सिर्फ इसलिए विशेष तरह का व्यवहार न करें क्योंकि वह आपका रिश्तेदार है।

- **पहचान देना और पुरस्कृत करना महत्वपूर्ण है:** अच्छा प्रदर्शन नहीं करने वाले व्यक्तियों को दोष देने के बजाय, उन्हें अगली बार बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें तुरंत नौकरी से निकालने के बजाय एक और मौका दें।
- **कार्यस्थल पर चर्चा को बढ़ावा देना एक अच्छा विचार है:** बेहतर निष्कर्ष निकालने के लिए कर्मचारियों को आपस में मुद्दों पर चर्चा करनी चाहिए। हर किसी को अपनी बात स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में सक्षम होना चाहिए।
  - मजबूत कर्मचारी संपर्क और स्वस्थ कंपनी संस्कृति के लिए सभी स्तरों पर पारदर्शिता आवश्यक है।
  - कार्यस्थल पर आंकड़ो में हेरफेर और छेड़छाड़ पूरी तरह से प्रतिबंधित है। वांछित लोगों को जानकारी पहुंचने देना चाहिए।
- संगठन को कर्मचारी-अनुकूल नियमों और मानकों की आवश्यकता होती है। नियमों और विनियमों से कर्मचारियों को लाभ होना चाहिए।
- कर्मचारियों से संगठन के नियमों को पालन करने की अपेक्षा की जाती है। कार्यस्थल पर उच्च स्तर का अनुशासन बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है।
- वर्तमान स्थिति में **"तानाशाही रवैया"** अनुचित है। नियोक्ताओं को अपने कर्मचारियों के लिए मार्गदर्शक के रूप में काम करना चाहिए। वरिष्ठों को कर्मचारियों को मार्गदर्शन प्रदान करना और आवश्यकतानुसार उनका मार्गदर्शन करना आवश्यक है।
- **अपने संबंधों को गहरा करने के लिए,** कर्मचारियों को टीम-निर्माण गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना। कर्मचारियों को उनकी वर्तमान क्षमताओं में सुधार करने में सहायता करने के लिए, प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ, सेमिनार और प्रस्तुतियाँ आयोजित करना। उन्हें आने वाले चुनौतीपूर्ण समय के लिए तैयार करना। उन्हें अप्रत्याशित स्थितियों या कार्यस्थल संस्कृति में बदलाव की स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए।

निष्कर्ष

कंपनियों और संगठनों को एक उत्पादक, व्यस्त और खुश कर्मचारी समूह को बढ़ावा देने के लिए सकारात्मक कार्य संस्कृति का निर्माण और बनाए रखने को प्राथमिकता देनी चाहिए। कार्य संस्कृति प्रत्येक संगठन का एक अनिवार्य घटक है और इसका कर्मचारियों के मनोबल, प्रदर्शन और कल्याण पर काफी प्रभाव पड़ सकता है। एक सकारात्मक कार्य संस्कृति उत्पादकता, रचनात्मकता और सहयोग को बढ़ावा देती है, जबकि एक नकारात्मक कार्य संस्कृति इन गुणों में बाधक होती है, जिसके परिणामस्वरूप कम मनोबल और उच्च टर्नओवर होता है।

7.11 सेवा प्रदायगी की गुणवत्ता

किसी भी सरकार की प्रमुख जिम्मेदारी अपने देशवासियों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करना है। स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा से लेकर सार्वजनिक सुरक्षा और बुनियादी ढाँचे तक सरकारी सेवाएँ, उसके देशवासियों के दैनिक जीवन पर सीधा प्रभाव डालती हैं। जन विश्वास, संतुष्टि और कर्तव्यनिष्ठा को स्थापित करने और बनाए रखने के लिए उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएँ प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

भारत में सेवाओं की गुणवत्ता की चुनौतियाँ:

सरकारी सेवा प्रदायगी की गुणवत्ता पर कई कारकों का प्रभाव पड़ सकता है। इसके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- **अपर्याप्त संसाधन:** यह सुनिश्चित करना कि सेवाएँ प्रदान करने के लिए पर्याप्त वित्तीय और मानव संसाधन उपलब्ध हैं, सेवा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **सक्षम और सुप्रशिक्षित कर्मियों की कमी:** सरकारी कर्मचारियों के कौशल और विशेषज्ञता उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। निरंतर प्रशिक्षण और पेशेवर विकास प्रदान करने से यह गारंटी मिल सकती है कि कर्मचारियों के पास प्रभावी सेवाएं प्रदान करने के लिए आवश्यक कौशल और विशेषज्ञता है।
- परिभाषित नीतियां और प्रक्रियाएं स्थापित करने से यह सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है कि सेवाएं लगातार और कुशलता से प्रदान की जाती हैं।
- **नौकरशाही और लालफीताशाही:** जटिल नीतियां, प्रक्रियाएं और नियम सेवाएं प्रदान करने में देरी और अकुशलता पैदा कर सकते हैं।
- **एजेंसियों के बीच समन्वय की कमी:** परस्पर विरोधी प्राथमिकताएँ या सरकारी एजेंसियों और विभागों के बीच समन्वय की कमी सेवा प्रदायगी को धीमा कर सकती है।
- **विभिन्न हित समूहों की आवश्यकताओं के साथ संतुलन:** सरकारों को अक्सर विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं को संतुलित करना चाहिए, जैसे आयु समूह, आय स्तर या भौगोलिक स्थिति। सभी निवासियों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को पूरा करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

7.11.1 गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी के लक्षण

- **विश्वसनीयता:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी सतत और भरोसेमंद होती है। लाभार्थियों को सेवाएं समय पर और बिना किसी दोष

या रुकावट के प्राप्त होने की उम्मीद करनी चाहिए। इसमें सहमत सेवाएं प्रदान करना और निर्दिष्ट मानदंडों का पालन करना शामिल है।

- **गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी लाभार्थियों की इच्छाओं,** अनुरोध और चिंताओं पर ध्यान देता देती है। इसमें समय पर और प्रभावी संवाद, समस्या-समाधान और ग्राहकों की मांगों को पूरा करने के लिए आगे आने की इच्छा शामिल है।
- **योग्यता और विशेषज्ञता:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी सक्षम और जानकार कर्मचारियों द्वारा समर्थित होती है।
  - सेवा प्रदाताओं के पास सेवाओं को सफलतापूर्वक और कुशलता से निष्पादित करने के लिए आवश्यक कौशल, प्रशिक्षण और विशेषज्ञता होती है। वे उद्योग में बदलावों और सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में जानकारी रखते हैं।
- **वैयक्तिकरण:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी प्रत्येक लाभार्थी की विशिष्टता को पहचानता है और सेवा अनुभव को वैयक्तिकृत करने का प्रयास करता है।
  - इसमें विशिष्ट उपभोक्ता आवश्यकताओं, पसंद और स्थितियों के अनुसार सेवाओं को प्रदान करना शामिल है।
  - उदाहरण के लिए, सिटीजन चार्टर के प्रावधान
- **स्पष्ट संवाद:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी सेवा प्रदाताओं और लाभार्थियों के बीच स्पष्ट और प्रभावी संवाद पर निर्भर है। इसमें सरल, सुगम तरीके से जानकारी, निर्देश और अद्यतन जानकारी संप्रेषित करने के साथ-साथ लाभार्थियों की प्रतिक्रिया को सक्रिय रूप से सुनना शामिल है।
- **दक्षता और समयबद्धता:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी कुशल और समयबद्ध दोनों होती है। इसमें विलंब को कम करना, संचालन को सुगम बनाना और सहमत समय-सीमा के भीतर सेवाएं प्रदान करना शामिल है। लाभार्थियों को लंबी लाइनों या अनावश्यक लालफीताशाही का सामना नहीं करना पड़े।
- **विशिष्टताओं पर ध्यान:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी विशिष्टताओं पर ध्यान देता है। इसमें सेवा प्रदायगी में शुद्धता, सटीकता और संपूर्णता की गारंटी शामिल है। सेवा प्रदाता छोटी-छोटी जानकारियों पर ध्यान देते हैं जो लाभार्थी के अनुभव पर बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं।
- **निरंतर सुधार:** गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदायगी निरंतर सुधार के लिए समर्पित होती है। इसमें सेवा प्रदायगी प्रक्रियाओं की लगातार समीक्षा और मूल्यांकन करना, सुधार के अवसर ढूंढना और ग्राहक संतुष्टि और संगठनात्मक प्रदर्शन में सुधार के लिए बदलाव करना शामिल है।

सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक उपाय

- **प्रभावी संवाद और सहयोग:** एजेंसियों और विभागों के बीच प्रभावी संवाद और सहयोग सेवा समन्वय और प्रदायगी में सुधार कर सकता है।
- प्रौद्योगिकी सेवा प्रदायगी की दक्षता और प्रभावकारिता में सुधार कर सकती है, लेकिन यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि नियोजित प्रौद्योगिकी विश्वसनीय और प्रयोक्ता अनुकूल हो।
  - उदाहरण के लिए, जेएएम(JAM) ट्रिनिटी, प्रगति पोर्टल, ई- क्रांति पोर्टल आदि की शुरूआत।
- **बदलती मांगों और अपेक्षाओं के प्रति उत्तरदायित्व:** सरकारों को अपने नागरिकों की बदलती जरूरतों और अपेक्षाओं के प्रति जागरूक रहना चाहिए, और उन्हें हमेशा अपनी सेवा प्रदायगी को बढ़ाने और नया करने के तरीकों की तलाश करनी चाहिए।
  - प्रत्येक विभाग एवं मंत्रालय द्वारा सिटीजन चार्टर उपलब्ध कराना।
  - **ट्विटर सेवा:** सरकार की नवीनतम सोशल मीडिया परियोजनाएं नागरिकों को सेवाओं का अनुरोध करने, शिकायत दर्ज करने और त्वरित प्रतिक्रिया प्राप्त करने की सुविधा देती है।
- **पारदर्शिता और उत्तरदायित्व:** सेवा प्रदायगी प्रक्रिया में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने से नागरिक भरोसे और विश्वास के विकास में सहायता मिल सकती है।
  - डीबीटी के माध्यम से पीडीएस के दुरूपयोग को रोकना।
- **स्पष्ट लक्ष्य और कार्यनिष्पादन मानदंड स्थापित करना:** स्पष्ट लक्ष्य और कार्यनिष्पादन मानक स्थापित करने से यह गारंटी देने में मदद मिल सकती है कि सेवाएं लगातार और सफलतापूर्वक प्रदान की जाती हैं।
  - **लोक सेवा गारंटी अधिनियम:** 2010 में मध्य प्रदेश से शुरू होकर राज्य सरकारों ने पीएसजी अधिनियम लागू किया है जो सेवा प्रदायगी के लिए समय सारिणी और गैर-अनुपालन को निर्धारित करता है।
- **सेवा प्रदायगी की प्रक्रिया में नागरिकों को शामिल करना:** सेवा प्रदायगी प्रक्रिया में नागरिकों को शामिल करने से यह गारंटी मिल सकती है कि सेवाएँ उन लोगों की जरूरतों और अपेक्षाओं को पूरा करती हैं जो उनका उपयोग करते हैं।
  - द्वितीय एआरसी ने नागरिक-केंद्रित प्रशासन की सिफारिश की थी।
- **पेशेवर विकास और प्रशिक्षण में निवेश करना:** निरंतर प्रशिक्षण और पेशेवर विकास यह गारंटी देने में सहायता कर सकता है कि सरकारी कर्मचारियों के पास उच्च गुणवत्ता

वाली सेवाएं प्रदान करने के लिए आवश्यक कौशल और विशेषज्ञता है।

- सरकार ने क्षमता निर्माण के लिए 360-डिग्री मिड-कैरियर प्रशिक्षण मॉड्यूल पेश किया।

- **नियमों और प्रक्रियाओं को सरल बनाना:** नीतियों और प्रक्रियाओं को सरल बनाने से नौकरशाही कम करने और सेवा प्रदायगी दक्षता बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
  - **उदाहरण के लिए,** बायोमेट्रिक-आधारित राशन कार्ड सुरक्षा तंत्र।

निष्कर्ष

सरकारों के लिए उत्कृष्ट सेवाएँ प्रदान करना कठिन है, लेकिन इसके लिए विभिन्न समाधान और सर्वोत्तम प्रथाएँ उपलब्ध हैं। इनमें स्पष्ट लक्ष्य और प्रदर्शन मानक निर्धारित करना, सेवा प्रदायगी में नागरिकों को शामिल करना, निरंतर सुधार लाने के लिए कार्यनिष्पादन आंकड़ों का उपयोग करना, प्रशिक्षण और पेशेवर विकास में निवेश करना, नीतियों और प्रक्रियाओं को सरल बनाना, दक्षता में सुधार के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, एजेंसी सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देना और ग्राहक सेवा संस्कृति को बढ़ावा देना शामिल है।

7.12 सार्वजनिक निधि का उपयोग

शब्द **''सार्वजनिक वित्त पोषण''** का तात्पर्य राज्य या सरकार द्वारा राजनीतिक दलों और/या राजनेताओं को उपलब्ध कराए गए धन या संसाधनों से है। प्रत्यक्ष कर, अप्रत्यक्ष कर, गैर-कर आय और बाहरी वित्तपोषण सभी सरकार के राजस्व में योगदान करते हैं। इन सार्वजनिक निधियों को सार्वजनिक निधि कहा जाता है और इन्हें नियमानुसार खर्च किया जाना चाहिए।

7.12.1 सार्वजनिक निधि के उपयोग से संबंधित समस्याएं

- राज्यों द्वारा योजना व्यय का कम उपयोग योजनाओं को लागू करने की प्रक्रिया में संस्थागत और प्रक्रियात्मक बाधाओं के साथ-साथ जिला-स्तरीय योजना प्रक्रिया में कमियों से भी जोड़ा जा सकता है।
  - श्रम संबंधी संसदीय स्थायी समिति कहा कि बजट अनुमान में मंत्रालय के लिए आवंटन में ₹12,065.49 करोड़ की वृद्धि हुई है, लेकिन 15 फरवरी, 2021 तक केवल ₹2,566 करोड़ ही व्यय किए जा सके, जो कि केवल 52.8% धनराशि के उपयोग के बराबर है।
- **योजना गतिविधियों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त कर्मचारियों,** क्षमता निर्माण पर अपर्याप्त ध्यान और योजना प्रक्रिया में सामुदायिक भागीदारी की सीमित भूमिका के परिणामस्वरूप योजनाओं में विकेन्द्रीकृत योजना में कमी आई।
  - श्रम संबंधी संसदीय स्थायी समिति का यह भी मानना है कि धन के अत्यधिक कम उपयोग ने कुछ योजनाओं के प्रदर्शन को प्रभावित किया है, जिससे लक्षित समूह को लाभ पहुंचाने में इन योजनाओं का प्रशंसनीय उद्देश्य विफल हो गया है।
- **योजनाओं की बजटीय प्रक्रियाओं में रुकावटें,** जैसे धन के प्रवाह में विलंब, व्यय के लिए मंजूरी आदेश जारी करने में देरी, राज्यों में निर्णय लेने की केंद्रीकृत प्रक्रिया, जिला/उप-जिला स्तर के अधिकारियों को वित्तीय शक्तियों का अपर्याप्त हस्तांतरण और सभी राज्यों के लिए प्रायोजित योजनाओं के मानदंड के लिए एक समान केंद्रीय व्यवस्था।

सरकारी लेखे

- **भारत की संचित निधि:** इस निधि का गठन भारतीय संविधान के अनुच्छेद 266(1) के अनुसार किया गया था।
  - भारत की समेकित निधि में सरकार के सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर राजस्व, उधार खर्च और ऋण भुगतान शामिल हैं।
- **भारत की आकस्मिकता निधि:** भारतीय संविधान का अनुच्छेद 267(1) भारत आकस्मिकता निधि की स्थापना की बात करता है।
  - भारत की आकस्मिकता निधि का रखरखाव राष्ट्रपति की ओर से वित्त मंत्रालय में भारत सरकार के एक सचिव द्वारा किया जाएगा।
  - अप्रत्याशित खर्चों हेतु भारत की आकस्मिकता निधि से अग्रिम राशि दी जाएगी।
- **लोक लेखा :** भारत के लोक लेखा कोष की स्थापना संविधान के अनुच्छेद 266 (2) के अनुसार की गयी है।
  - यह उन लेन-देन का लेखा-जोखा रखता है जिसमें सरकार सिर्फ एक बैंकर के रूप में कार्य कर रही है।

- **कार्यक्रमों में आवश्यकता-आधारित बजट की कमी,** जिसे अक्सर वास्तविक इकाई लागत के पर्याप्त विश्लेषण के बिना किया जाता है, से पता चलता है कि कुछ योजनाओं के लिए आवंटन ऊपर से नीचे और अवास्तविक रूप से किए गए।
- **धन का दुर्विनियोजन:**
  - सार्वजनिक धन के दुर्विनियोजन में सांसद द्वारा एमपीएलएडी के धन का अपने निजी ट्रस्टों और सोसायटियों में निवेश है।
  - **गैरकानूनी परियोजनाओं की सिफारिश,** कार्यान्वयन एजेंसियों के चयन पर जोर देना, ठेकेदारों को भुगतान

को नियंत्रित करने की मांग करना, और पारदर्शिता और जवाबदेही से लगातार इनकार करना, ये सब धन के दुर्विनियोजन को बढ़ाते हैं।

- **दुरूपयोग:**
  - सार्वजनिक धन के दुरुपयोग में पर्याप्त अधिकार के बिना खर्च करना या ऐसा खर्च शामिल है जो लागू कानून, विनियमों, नीतियों और प्रक्रियाओं के लिए के परिपेक्ष में अवैध या विरोधाभासी है।
  - ऐसी खरीदारी जो अनावश्यक रूप से अतिश्योक्तिपूर्ण महँगी हो और संगठन की वाणिज्यिक या परिचालन आवश्यकताओं के अनुरूप न हो, सार्वजनिक धन का दुरुपयोग भी हो सकती है।
  - सार्वजनिक संपत्तियों के दुरुपयोग में सरकारी संपत्ति का अनुचित या अवैध उपयोग और ऐसी संपत्तियों की रक्षा करने में विफलता दोनों शामिल हैं।
    - नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने 2012 में पाया कि तत्कालीन शासकीय निकाय ने 1993 से 2006 तक सार्वजनिक और निजी फर्मों को 216 कोयला ब्लॉकों को गलत तरीके से आवंटित किया, जिसमें लाखों डॉलर बर्बाद हुए थे।
- **राजनीतिक सत्ता पाने के लिए मुफ्त चीजें उपलब्ध कराना:** अतार्किक और मुफ्त में मिली चीजें लोगों को लुभाती हैं। यह फिजूलखर्ची सरकार के वित्त पर दबाव डालती है। यह सत्तारूढ़ दल को सभी के लिए उचित तरीके से खर्च करने में बाधा डालता है।
- **नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) की सीमित शक्तियाँ:** भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक सार्वजनिक धन के संरक्षक हैं और राज्य और केंद्र दोनों स्तरों पर देश की संपूर्ण वित्तीय प्रणाली को नियंत्रित करते हैं, लेकिन यह केवल व्यय के बाद खाते की लेखापरीक्षा कर सकते हैं। सीएजी यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि धनराशि सही ढंग से खर्च की जाए।

लोक वित्त में सुधार के लिए आवश्यक उपाय

- वित्तपोषण की स्थिरता: सार्वजनिक धन का उपयोग करने वाली एक सार्वजनिक इकाई को अपने वित्तपोषण निर्णयों के प्रभाव और भविष्य के वित्तपोषण की जरूरतों पर विचार करना चाहिए।
  - सार्वजनिक संगठनों को दीर्घकालिक सेवा प्रदायगी को खतरे में डाले बिना किसी उद्देश्य के लिए निष्पक्ष और उचित वित्त पोषण करना चाहिए।
  - उदाहरण के लिए, उर्वरक सब्सिडी प्रकृति को नुकसान पहुंचा रही है और पर्यावरणीय चुनौतियाँ पैदा कर रही है।
- **सार्वजनिक निधियों के उपयोग के सिद्धांतों का पालन:** सार्वजनिक निधियों को नियोजित करने वाली सार्वजनिक संस्थाओं को इन दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए:
  - सरकारी एजेंसियों को कानून का पालन करना। सार्वजनिक निधियों का उपयोग सक्षम प्राधिकारी की सहमति से करना।
  - अनाधिकृत खर्च से अतिव्यय का कारण बनता है। निधियों का उपयोग भी अपने इच्छित उद्देश्य के लिए किया जाना चाहिए।
  - **उत्तरदायित्व:** सार्वजनिक निधियों का उपयोग करने वाली सरकारी एजेंसियों को अपने संचालन के पूर्ण और सटीक खाते लेखे प्रस्तुत करने में सक्षम होना चाहिए और कमियों को दूर करने के लिए पर्याप्त शासन और प्रबंधन होना चाहिए।
- **सुशासन को बढ़ावा देना:** सुशासन के लिए विकेंद्रीकरण, विधायी खामियाँ, सीवीसी और आरटीआई जैसी सार्वजनिक संस्थाओं को मजबूत करना, प्रशासनिक जवाबदेही और लोक वित्त को सफलतापूर्वक नियोजित करने के लिए एक अधिक लोकतांत्रिक समाज की आवश्यकता होती है।
- **धन का सदुपयोग:** सरकार को सामाजिक लाभ और व्यय को संतुलित करके इष्टतम सार्वजनिक व्यय का पता लगाकर और उसे बनाए रखना चाहिए। सरकारी धन का एक-एक रूपया समाज के लाभ के लिए उपयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

गुड गवर्नेंस और डिजिटलीकरण ने भ्रष्टाचार और खामियों को कम किया है, लेकिन अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना बाकी है। जन भागीदारी, एजेंसियों और नौकरशाही में नैतिक जिम्मेदारियां बढ़ाना, योजना कार्यान्वयन और आउटपुट पर ध्यान केंद्रित करना और प्रक्रियाओं में पारदर्शिता लाने से इस कार्य में मदद मिल सकती है।

7.13 भ्रष्टाचार

- **ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा जारी किए गए भ्रष्टाचार बोध सूचकांक,** 2022 के अनुसार, भारत 180 देशों में से 85वां सबसे कम भ्रष्ट देश है।

7.13.1 भ्रष्टाचार के प्रकार (जैसा कि द्वितीय एआरसी द्वारा दिया गया है)

जबरदस्ती भ्रष्टाचार	मिलीभगत से किया गया भ्रष्टाचार
• यहां नागरिक को सेवा पाने के लिए रिश्वत देनी पड़ती देने के लिए मजबूर किया जाता है। • जब नागरिक भ्रष्टाचार का विरोध करने का प्रयास करते हैं तो उन्हें बहुत अधिक नुकसान उठाना पड़ता है। • यह विलंब, उत्पीड़न, अवसर, कीमती समय और वेतन की हानि और कभी-कभी जीवन या अंग खोने के संभावित खतरे के रूप में भी हो सकता है।	• रिश्वत देने वाले और लोक सेवक के बीच मिलीभगत होती है। • इन दोनों को समाज की कीमत पर लाभ होता है। • उदाहरण के लिए, सार्वजनिक कार्यों के लिए ठेके देने, माल और सेवाओं की खरीद, कर्मचारियों की भर्ती आदि में भ्रष्टाचार।

भ्रष्टाचार के प्रकार

- गबन उन लोगों द्वारा संसाधनों की चोरी है जिन्हें उन्हें संसाधनों को प्रशासित करने का काम सौंपा गया है गया हो। ऐसा तब होता है जब बेईमान कर्मचारी अपने मालिकों से चोरी करते हैं। जब कोई सरकारी कर्मचारी उस सार्वजनिक संस्था से चोरी करता है जिसमें वह कार्यरत है और उन संसाधनों से चोरी करता है जिन्हें वह जनता की ओर से प्रशासित करने के लिए बाध्य है, यह एक गंभीर अपराध है।
- भाई-भतीजावाद पक्षपात का एक रूप है जिसमें एक अधिकारी अपने निजी रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों (पत्नी, भाई-बहन, बच्चे और ससुराल वालों) को प्राथमिकता देता है।
  - कई अनियंत्रित शासकों ने सरकारी तंत्र के भीतर महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक और सैन्य/सुरक्षा भूमिकाओं में परिवार के सदस्यों को नियुक्त करके अपनी शक्ति को सुरक्षित करने का प्रयास किया है।
- **हितों का टकराव:** यह पुलिस नैतिकता और भ्रष्टाचार के बड़े मुद्दे का एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण घटक है।
- पक्षपात सत्ता के दुरुपयोग का एक साधन है जिसका अर्थ है **"निजीकरण"** और राज्य संसाधनों का अत्यधिक पक्षपातपूर्ण आवंटन, भले ही ये धन कैसे अर्जित किया गया हो।
  - पक्षपात अजनबियों से पहले मित्रों और परिवार को प्राथमिकता देने की अंतर्निहित मानवीय प्रवृत्ति है। पक्षपात भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह संसाधनों के भ्रष्ट वितरण को इंगित करता है। यह सिक्के का दूसरा पहलू है, जहां भ्रष्टाचार संसाधनों पर कब्जा है।
- **धोखाधड़ी एक वित्तीय अपराध है जिसमें धोखाधड़ी,** घोटाले या जालसाजी शामिल है। जालसाजी को सरकारी अधिकारियों द्वारा व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करने के लिए, जानकारी, तथ्यों और विशेषज्ञता के हेरफेर या विरूपण के रूप में परिभाषित किया गया है, जो राजनेताओं और नागरिकों के बीच की कड़ी होते हैं।
  - जालसाजी तब होती है जब एक सरकारी अधिकारी (मुख्य) जो अपने वरिष्ठों (मुख्य) द्वारा सौंपे गए आदेशों या कार्यों को पूरा करने के लिए उत्तरदायी होता है, व्यक्तिगत लाभ के लिए सूचना को उपलब्ध कराने में हेरफेर करता है, जिसके परिणामस्वरूप इस घटना का अर्थशास्त्रियों द्वारा अध्ययन के लिए प्रिंसिपल-एजेंट या प्रोत्साहन सिद्धांत का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
- **रिश्वतखोरी:** रिश्वत एक भ्रष्ट संबंध में दिया या प्राप्त किया गया भुगतान (पैसे या वस्तु के रूप में) है। रिश्वत एक निश्चित शुल्क, अनुबंध का एक प्रतिशत, या कोई अन्य मौद्रिक या वस्तुगत उपहार है जो किसी ऐसे सरकारी अधिकारी को प्रदान किया गया जो राज्य की ओर से अनुबंध कर सकता है या अन्यथा निगमों या व्यक्तियों, व्यापारियों और ग्राहकों को लाभ पहुंचा सकता है।

Corruption = **Monopoly** + **Discretion** – **Accountability**

- Monopoly ↓
  - Competition
  - e-bidding
  - Public procurement
- Discretion ↓
  - Decentralisation
  - Delegation
  - Devolution
- Accountability ↓
  - RTI
  - Citizen Charter
  - Social audit

7.13.2 भ्रष्टाचार से उत्पन्न चुनौतियाँ

- भ्रष्टाचार से लाभ पाने वाले लोग यथास्थिति बनाए रखने की कोशिश करते हैं और किसी भी सुधार का विरोध करते हैं।

- यह उत्पादकता कम करता है और औद्योगिक नीतियों की प्रभावशीलता को कम करता है।
- **बुनियादी ढांचे की विफलता:** माफिया धन शोधन और पैसा कमाने के लिए निर्माण का उपयोग करता है।
  - **रिश्वतखोरी,** पक्षपात और प्रभाव-व्यापार का प्रयोग भूमि-उपयोग और प्राधिकरण सीमाओं का उल्लंघन करने में किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप खतरनाक इमारतें बनती हैं।
- उच्च भ्रष्टाचार वाले देशों में शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल आदि जैसे सामाजिक निवेश कम होते हैं।
- इससे जनता के बीच असमानता पैदा होती है। असमानता पर ऑक्सफैम की हालिया रिपोर्ट इसी ओर इशारा करती है।
- व्यापार सुगमता कमजोर होती है। हालाँकि भ्रष्टाचार के आर्थिक प्रभावों के सटीक आंकड़े आना मुश्किल है, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के 2016 के शोध से पता चला है कि अकेले रिश्वतखोरी पर प्रति वर्ष +1.5 से +2 ट्रिलियन तक खर्च होता है।
- **लालफीताशाही:** सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में भ्रष्टाचार अच्छे कार्यों के संचालन के लिए उच्च जोखिम पैदा करता है। कंपनियों को किसी भी प्रक्रिया या सौदे को अंतिम रूप देने के लिए अवांछित लालफीताशाही, छोटे-मोटे भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी का सामना करना पड़ता है।
- भ्रष्टाचार से राजनीतिक व्यवस्था में वैधता खत्म हो जाती है और गैर-सरकारी कारकों को खुली छूट मिल जाती है। उदाहरण- वामपंथी उग्रवाद

7.13.3 भ्रष्टाचार के कारण

संथानम समिति (1963) ने भारत में भ्रष्टाचार के निम्नलिखित कारणों की पहचान की:

- **सरकार का एकाधिकार:** सरकार विनियामक कार्यों के माध्यम से जितना प्रबंधन कर सकती है उससे अधिक जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती है।
- **व्यापक विवेकाधिकार:** सरकारी कर्मचारियों की विभिन्न श्रेणियों में निहित शक्तियों के प्रयोग में विवेक का दायरा।
- **जटिल कानून और नियम:** जनता के साथ कामकाज में विभिन्न मामले जो नागरिकों के लिए उनके दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण हैं, से निपटने में बोझिल प्रक्रियाएं।
- **अन्य कारण:**
  - a. **दंडात्मक कार्रवाई के लिए कमजोर कानूनी ढांचा:** गलत परिभाषित नीतियों, कमजोर नियामक ढांचे और मंत्रियों और उच्च सरकारी अधिकारियों के बीच बड़े अविवेक के कारण ऐसा होता है।
  - b. **राजनीतिक भ्रष्टाचार:** एक निर्वाचन क्षेत्र के विशाल भौगोलिक क्षेत्र के कारण, कई जगह तो 20 लाख से अधिक मतदाताओं के कारण, किसी उम्मीदवार को चुनाव लड़ने के लिए भारी मात्रा में धन खर्च करना पड़ता है।
  - c. **अति-विनियमन:** एक कमजोर सरकार के साथ मिलकर, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है।
  - d. **नौकरशाही की लालफीताशाही और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना:** इसे रॉबर्ट मेर्टन ने उपयुक्त रूप से उजागर किया है, "जब नियम खेल से अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है"।
  - e. **अभिजात्य वर्ग का उदय और उदारीकरण के बाद भ्रष्टाचार:** बड़े व्यवसायों, राजनेताओं और नौकरशाहों के बीच सांठगांठ के कारण बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार पनपता है, जैसा कि ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने उजागर किया है।

द्वितीय एआरसी ने उच्च भ्रष्टाचार के तीन प्रमुख कारणों की पहचान की

1. **पहला,** औपनिवेशिक शक्ति और मनमानी का होना। सत्ता-लोलुप समाज में राजनेता नैतिकता से भटक सकते हैं।
2. **दूसरा,** हमारा समाज अत्यधिक असमान है। सत्ता की विषमता के कारण भ्रष्टाचार आसान है।
3. **तीसरा, भारतीय गणराज्य की प्रारंभिक नीतियों ने नागरिकों को राज्य की दया पर छोड़ दिया। अतिनियमन,** आर्थिक गतिविधियों पर महत्वपूर्ण सीमाएं, भारी सरकारी नियंत्रण, कई क्षेत्रों में सरकार का लगभग एकाधिकार, और अभाव वाली अर्थव्यवस्था ने अनियंत्रित भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है।

7.13.4 सरकारी सेवाओं पर भ्रष्टाचार का प्रभाव

- **दूसरों को दूषित करता है:** भ्रष्टाचार स्वजन्य है, जिसके परिणामस्वरूप भ्रष्ट कृत्यों का सिलसिला शुरू हो जाता है। भ्रष्टाचार निम्नलिखित परिणामों के कारण संपूर्ण प्रशासन और शासन प्रणाली को नुकसान पहुँचाता है:
- **स्नोबॉलिंग:** भ्रष्ट आचरण के छोटे-छोटे उदाहरण बड़े भ्रष्टाचार में बदल जाते हैं। भ्रष्टाचार से समय पर न निपटना और आंखें मूंद लेना यह दर्शाता है कि यह स्वीकार्य है। इससे यह संभावना बढ़ जाती है कि उल्लंघनकर्ता बार-बार और बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार में संलग्न होंगे।
- **एक नियम बन जाना:** जिन उल्लंघनों की अनदेखी की जाती है या संगठन द्वारा उचित तरीके से निपटा नहीं जाता है, उन्हें

स्वीकार्य माना जा सकता है। इससे यह संभावना बढ़ जाती है कि संगठन में अन्य लोग भी इसका अनुसरण करने के लिए उचित या प्रोत्साहित हो सकते हैं।

- **भ्रष्टाचार का विकिरण:** सिविल सेवा के किसी एक क्षेत्र में भ्रष्टाचार पूरी सिविल सेवा की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाता है। नागरिक और मीडिया, सामान्य तौर पर, सरकार की विभिन्न शाखाओं के बीच अंतर नहीं करते हैं।
  - **परिणामस्वरूप,** संपूर्ण सार्वजनिक तंत्र पर भ्रष्टाचार का आरोप लग जाता है, जिससे इसकी वैधता कम हो जाती है।
- **पारदर्शिता:** सार्वजनिक क्षेत्र में पारदर्शिता एक प्रमुख सिद्धांत है। सिविल सेवक एक मछलीघर वाले माहौल में काम करते हैं, ऐसे में उन पर हमेशा और हर तरफ से नजर रखी जाती है और एक मैग्नीफाइंग लेंस से उनके बारे में जांच की जाती है।
  - इस प्रकार भ्रष्ट कृत्यों का मीडिया द्वारा पता लगाए जाने और उजागर होने की अधिक संभावना होती है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर जन आक्रोश पनपता है और जनता का विश्वास कम होता है।

7.13.5 भारत में भ्रष्टाचार के लक्षण

संविधान के कामकाज की समीक्षा के लिए राष्ट्रीय आयोग द्वारा शासन में शुचिता पर जारी परामर्श पत्र में भारत में भ्रष्टाचार के निम्नलिखित लक्षणों को बताया गया है:

1. **पहला,** भारत में भ्रष्टाचार डाउनस्ट्रीम के बजाय अपस्ट्रीम में होता है। उच्चतम स्तर पर भ्रष्टाचार विकास के उद्देश्यों, कार्यक्रमों और परियोजनाओं से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णयों को प्रभावित करता है।
2. **दूसरा,** भारत में भ्रष्टाचार के पहिए नहीं बल्कि पंख हैं। भारत में भ्रष्टाचार से कमाया गया धन तस्करी द्वारा तुरंत ही देश के बाहर सुरक्षित ठिकानों पर ले जाया जाता है।
   - **जबकि पूंजी का पलायन दूसरे देशों में भी होता है,** परंतु इसका बड़ा हिस्सा निवेश किया जाता है। दूसरे शब्दों में, दुनिया के अन्य क्षेत्रों में भ्रष्ट धन का उपयोग विदेशी खातों को भरने की तुलना में व्यापार के वित्तपोषण के लिए किए जाने की अधिक संभावना है।
3. **तीसरा,** भारत में भ्रष्टाचार अक्सर कारावास की बजाय उन्नति की ओर ले जाता है। बड़े भ्रष्टाचारी शायद ही कभी पकड़े जाते हैं, जब तक वे दूसरी टीम से न हों।
   - **इसके विपरीत,** विकसित देशों में अक्सर एक उत्तरदायित्व तंत्र होता है जहां शीर्ष नेताओं की भी जांच की जाती है और उन पर मुकदमा चलाया जाता है।
   - भारत में भ्रष्टाचार का सबसे परेशान करने वाला पहलू यह है कि बेईमान अक्सर बहुत शक्तिशाली होते हैं और वे ईमानदार जवाबदेही प्रक्रिया से नहीं गुजरते हैं।
4. **चौथा,** भ्रष्टाचार भारत में होता है, जहां लाखों लोग गरीबी में रहते हैं और स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता जैसी बुनियादी आवश्यकताओं तक उनकी पहुंच नहीं है। अधिकांश आबादी गरीब और निराश्रित है, जबकि कुछ लोग भ्रष्टाचार के माध्यम से धन अर्जित करते हैं।

7.13.6 भ्रष्टाचार से निपटने के तरीके और साधन

- **आचार संहिता और नीति संहिता का कड़ाई से पालन:** विभिन्न अधिकारियों के लिए स्थापित आचार संहिता को एक नीति संहिता द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए जिसे अधिकारियों द्वारा आंतरिक रूप से आत्मसात करने की आवश्यकता है।
  - इसका प्रभाव यह होगा कि लोक सेवकों को सही आचरण दिखाने के लिए दबाव डालने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
- **संस्थागत उपायों का प्रभावी कार्यान्वयन:** समाज की आवश्यकताओं की बदलती गतिशीलता के अनुसार जवाबदेही तंत्र, चाहे वे प्रभावी कानून, तंत्र, प्रक्रियाएं या साधन हों, का सख्त और विकसित कार्यान्वयन महत्वपूर्ण है।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने, प्रमुख हितधारकों के बीच गतिशील और निरंतर संपर्क करने के लिए ई-गवर्नेंस और आईसीटी उपकरणों का उपयोग।
- **जनता के हाथ में शक्ति:** नागरिकों को भी अपने व्यवहार में बदलाव लाने की जरूरत है और उन्हें अपना काम तेजी से पूरा करवाने के लिए 'स्पीड मनी' के माध्यम से अधिकारियों को रिश्वत देने से बचना चाहिए।

निष्कर्ष

यदि भारत में भ्रष्टाचार का स्तर स्कैंडिनेवियाई देशों के बराबर कम हो जाए, तो सकल घरेलू उत्पाद में 1.5% की वृद्धि होगी और निवेश में 12% की वृद्धि होगी। यदि विदेशों से सारा काला धन वापस लाया जाए तो भारत अपना कर्ज चुका सकता है।

7.13.7 भारत में भ्रष्टाचार से निपटने के लिए वर्तमान तंत्र

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए कानून

- **भारतीय दंड संहिता, 1860:**
  - गैरकानूनी तरीके से संपत्ति खरीदने या बोली लगाने पर धारा 169 के अंतर्गत अर्थदंड के साथ दो वर्ष तक के कारावास का प्रावधान है।

- किसी लोक सेवक पर मुकदमा चलाने के लिए राज्य या केंद्र सरकार से पूर्व मंजूरी का प्रावधान आवश्यक है।

- **बेनामी लेनदेन (निषेध) अधिनियम, 1988 :**
  - यह बेनामी लेनदेन (दूसरे व्यक्ति के गलत नाम पर संपत्ति खरीदना जो इसके लिए भुगतान नहीं करता है) पर प्रतिबंध लगाता है, सिवाय इसके कि जब इसे पत्नी या अविवाहित बेटी के नाम पर खरीदा गया हो।
  - बेनामी लेनदेन (निषेध) संशोधन अधिनियम, 2016
  - जुर्माने के साथ कारावास को सात वर्ष वर्ष तक बढ़ा दिया गया है।
  - गलत जानकारी देने पर पांच वर्ष का कारावास और जुर्माना हो सकता है।
  - आरंभकर्ता अधिकारी संपत्ति रखने के लिए एक आदेश पारित कर सकता है और फिर मामले को निर्णायक प्राधिकारी को भेज सकता है, जो साक्ष्यों की जांच करेगा और एक आदेश पारित करेगा।
  - अपीलीय न्यायाधिकरण निर्णय प्राधिकारी के आदेशों के खिलाफ अपील की सुनवाई करेगा।
  - उच्च न्यायालय अपीलीय न्यायाधिकरण के आदेशों के विरुद्ध अपील सुन सकता है।

- **भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988:**
  - यह लोक सेवकों द्वारा भ्रष्टाचार के संबंध में दंड का प्रावधान करता है और उन लोगों के लिए भी जो भ्रष्टाचार के कृत्य को बढ़ावा देने में शामिल हैं।
  - 2018 के संशोधन ने लोक सेवकों द्वारा रिश्वत लेने और किसी भी व्यक्ति द्वारा रिश्वत देने दोनों को अपराध घोषित कर दिया।

- **धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002:**
  - मनी लॉन्ड्रिंग अवैध स्रोतों से अर्जित धन को वैध दिखाने की प्रक्रिया है।
  - यह अधिनियम प्रवर्तन निदेशालय को मनी लॉन्ड्रिंग जांच करने का अधिकार देता है।
  - इसमें जुर्माने के साथ-साथ कठोर कारावास का भी प्रावधान है।
  - बैंकिंग कंपनियां और वित्तीय मध्यस्थ अधिनियम के अंतर्गत निर्दिष्ट प्रकृति और मूल्य के वित्तीय लेनदेन के रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए बाध्य हैं।

- **कंपनी अधिनियम, 2013:**
  - यह कॉर्पोरेट प्रशासन और कॉर्पोरेट क्षेत्र में भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी की रोकथाम का प्रावधान करता है।
  - 'धोखाधड़ी' शब्द को व्यापक परिभाषा दी गई है और यह कंपनी अधिनियम के अंतर्गत एक आपराधिक अपराध है।
  - विशेष रूप से धोखाधड़ी से जुड़े मामलों में, कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के अंतर्गत गंभीर धोखाधड़ी जांच कार्यालय (एसएफआईओ) स्थापित किया गया है, जो सफेदपोश अपराधों और कंपनियों में अपराधों से निपटने के लिए जिम्मेदार है।
  - एसएफआईओ कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत जांच करता है।

भ्रष्टाचार से निपटने के लिए संस्थाएँ

- **लोकपाल और लोकायुक्त:**
  - **लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013,** संघ स्तर पर लोकपाल और राज्य स्तर पर लोकायुक्त की स्थापना का प्रावधान करता है।
  - उन्होंने कुछ लोक अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच की है।
  - लोकपाल के अधिकार क्षेत्र में प्रधान मंत्री, मंत्री, सांसद, समूह क, ख, ग और घ अधिकारी और केंद्र सरकार के अधिकारी शामिल हैं।
  - इनके पास भ्रष्ट तरीकों से अर्जित संपत्ति या अन्य लाभों को जब्त करने की शक्ति है।
  - लोकपाल को भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988, के अंतर्गत सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ कथित अपराधों से संबंधित शिकायतें प्राप्त करने और उन्हें संभालने के लिए कानूनी रूप से अनिवार्य किया गया है।
  - लोकपाल से जुड़े मुद्दे :
    - **न्यायपालिका द्वारा पूर्ण बहिष्कार:** जो न्यायपालिका को जवाबदेह बनाने की संभावनाओं को बाधित करता है।
    - **प्रधान मंत्री की जांच करने का कोई पूर्ण अधिकार नहीं:** यह अधिनियम परमाणु ऊर्जा आदि जैसे कुछ मामलों में प्रधान मंत्री के खिलाफ जांच पर रोक लगाता है।
    - **व्हिसिल-ब्लोअर्स को ज्यादा सुरक्षा नहीं:** यह भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान में बाधा के रूप में कार्य करता है।
    - **लोकपाल की नियुक्ति में देरी:** वर्षों से तकनीकी मुद्दों के कारण लोकपाल की नियुक्ति में देरी होती रही है।

- **मुख्य सतर्कता आयोग (सीवीसी):**
  - केंद्रीय सतर्कता आयोग सर्वोच्च सतर्कता संस्था है।

- सीवीसी की स्थापना सरकार द्वारा 1964 में के. संथानम की अध्यक्षता वाली भ्रष्टाचार निवारण समिति की सिफारिशों पर की गई थी।
- सीवीसी किसी भी मंत्रालय या विभाग से स्वतंत्र है और केवल संसद के प्रति जवाबदेह है।
- इसके पास कुछ श्रेणियों के लोक सेवकों द्वारा भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 के अंतर्गत किए गए कथित अपराधों की जांच करने का अधिकार है।
- इसकी वार्षिक रिपोर्ट आयोग द्वारा किए गए कार्यों का विवरण देती है और प्रणालीगत विफलताओं की ओर इशारा करती है जिससे सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार पनपता है।
- **सीवीसी की सीमाएँ:**
    - इसे एक सलाहकार निकाय के रूप में माना जाता है जिसके पास आपराधिक मामले दर्ज करने की कोई शक्ति नहीं है।
    - उसके पास भ्रष्टाचार के मामलों पर कार्रवाई करने के लिए संसाधनों और शक्तियों का अभाव है।

- **केंद्रीय जांच ब्यूरो:**
    - द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान खरीद में भ्रष्टाचार के मामलों की जांच के लिए 1941 में विशेष पुलिस संस्था के रूप में सीबीआई का गठन किया गया था।
    - सीबीआई का गठन संथानम समिति की सिफारिशों पर गृह मंत्रालय के एक प्रस्ताव द्वारा किया गया था।
    - इसकी महत्वपूर्ण भूमिका भ्रष्टाचार को रोकना और प्रशासन में सत्यनिष्ठा बनाए रखना है। यह सीवीसी की देखरेख में काम करता है।
    - यह संबंधित विभाग के अनुरोध पर या संबंधित विभाग के परामर्श से आर्थिक और राजकोषीय कानूनों के उल्लंघन से जुड़े मामलों की जांच करता है।
    - यह गंभीर प्रकृति के अपराधों की जांच करता है, जिनका राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव होता है और जो पेशेवर अपराधियों या संगठित गिरोहों द्वारा किए जाते हैं।
    - यह विभिन्न राज्य पुलिस बलों और भ्रष्टाचार विरोधी एजेंसियों की गतिविधियों का समन्वय करता है।
    - यह अपराध के आंकड़े रखता है और आपराधिक जानकारी प्रसारित करता है।
    - इंटरपोल के साथ पत्राचार के लिए सीबीआई भारत की प्रतिनिधि है।

सीबीआई से जुड़े मुद्दे:

- **स्वतंत्रता का अभाव :** सीबीआई अपने कर्मचारियों के लिए गृह मंत्रालय पर निर्भर है।
- **राजनीतिक हस्तक्षेप :** सरकार के अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण सर्वोच्च न्यायालय ने सीबीआई को पिंजरे में बंद तोता कहा है।
- **राज्य सरकार पर निर्भरता:** जांच शुरू करने से पहले सीबीआई को संबंधित राज्य की सहमति की आवश्यकता होती है। पश्चिम बंगाल राज्य ने सीबीआई को दी गई सामान्य सहमति वापस ले ली थी।
- **जवाबदेही का अभाव:** क्योंकि सीबीआई आरटीआई के दायरे से बाहर है।
- **पूर्व सहमति:** केंद्र सरकार को संयुक्त सचिव और उससे ऊपर के स्तर के अधिकारियों पर जांच शुरू करने के लिए पूर्व सहमति की आवश्यकता होती है।

व्हिसलब्लोइंग

यह किसी प्राधिकारी व्यक्ति या जनता द्वारा सार्वजनिक, निजी या तीसरे क्षेत्र के संगठनों के भीतर कथित रिश्वतखोरी, अक्षमता, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, या अनैतिक व्यवहार को उजागर करने का कार्य है।

व्हिसलब्लोइंग की उत्पत्ति:

- 2001 में, विधि आयोग ने सिफारिश की कि भ्रष्टाचार से निपटने के लिए व्हिसलब्लोअर्स की सुरक्षा के लिए एक कानून बनाया जाए।
- 2003 में, बिहार में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के एक प्रोजेक्ट इंजीनियर सत्येन्द्र दुबे द्वारा स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना में भ्रष्टाचार को उजागर किया गया था।
    - नवंबर 2003 में गया में उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी. हत्या के आरोप में 2010 में तीन लोगों को उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी।
    - उनकी हत्या के बाद व्हिसलब्लोअर की सुरक्षा के लिए कानून बनाने की मांग उठी।
- **2004 में,** भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक याचिका के जवाब में, केंद्र सरकार को "कानून बनाने से पहले व्हिसलब्लोअर की शिकायतों पर कार्रवाई के लिए प्रशासनिक तंत्र" स्थापित करने का आदेश दिया।
- जवाब में, सरकार ने 2004 में **'पब्लिक इंटरेस्ट डिस्क्लोजर एंड प्रोटेक्शन ऑफ इन्फॉर्मर्स रेजोल्यूशन (पीआईडीपीआईआर)'** जारी किया।
- द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने भी सुझाव दिया कि नया कानून बनाकर व्हिसल-ब्लोअर्स को सुरक्षित किया जाए।

- **अंतर्राष्ट्रीय संधियों में सुधार:** 2005 में, भारत ने भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए जो शिकायत करने वालों के लिए पर्याप्त सुरक्षा और सुरक्षा उपाय प्रदान करता है और भ्रष्ट लोक सेवकों पर रिपोर्टिंग की सुविधा प्रदान करता है।
    - व्हिसल ब्लोअर संरक्षण विधेयक 2011 में पेश किया गया था और 2014 में एक अधिनियम बन गया।

अधिनियम की मुख्य विशेषता:

- **व्हिसल-ब्लोअर्स की सुरक्षा करना:** यह उन लोगों को उत्पीड़न से बचाता है जो दुर्व्यवहार, अधिकार के जानबूझकर दुरुपयोग, या किसी सरकारी अधिकारी द्वारा किसी शक्ति के विवेक के मनमाने उपयोग की रिपोर्ट करते हैं, साथ ही यह व्हिसिल-ब्लोअर्स की पहचान को सुरक्षित रखता है।
- **सुरक्षा उपाय प्रदान करना:** इसके अलावा, अधिनियम ऐसी शिकायत दर्ज करने वाले व्यक्ति को उत्पीड़न के खिलाफ पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करता है।
- **शिकायत दर्ज करने के लिए सीमित समय सीमा:** यह कानून गुमनाम आरोपों पर रोक लगाता है और स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करता है कि जब तक वादी अपनी पहचान नहीं बताता, तब तक सक्षम प्राधिकारी द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती है।
    - शिकायत सात वर्ष की अवधि के भीतर दर्ज की जा सकती है।
- **झूठे दावों को अपराध घोषित करना:** जो कोई भी अनजाने में या दुर्भावनापूर्ण रूप से वादी की पहचान का खुलासा करता है उसे तीन वर्ष तक का कारावास और 50,000 रुपये तक के जुर्माने का सामना करना पड़ता है।
- **उच्च न्यायालय में अपील:** कोई भी व्यक्ति जो सक्षम प्राधिकारी के आदेश से संतुष्ट नहीं है, उसके पास संबंधित उच्च न्यायालय में अपील दायर करने के लिए आदेश की तारीख से साठ दिन का समय होता है।
- **छूट:** यह अधिनियम विशेष सुरक्षा समूह (एसपीजी) के कर्मचारियों और अधिकारियों पर लागू नहीं होता है, जिसका गठन विशेष सुरक्षा समूह अधिनियम 1988 के अंतर्गत किया गया था।
- **व्हिसल ब्लोअर्स अधिनियम,** आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1923 का अधिक्रमण (supersede) करता है, जो एक शिकायतकर्ता को सक्षम प्राधिकारियों के समक्ष जन हित में खुलासे करने की अनुमति देता है, भले ही वे आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1923 का उल्लंघन कर रहे हों, लेकिन देश की संप्रभुता को खतरे में नहीं डालते हैं डाल रहा हो।
- **पहचान का खुलासा करने से सुरक्षा:** यदि आवश्यक समझा जाए तो सतर्कता आयोग विभाग के प्रमुख को छोड़कर शिकायतकर्ता की पहचान का खुलासा नहीं करेगा। यह अधिनियम किसी भी ऐसे व्यक्ति को दंडित करता है जिसने शिकायतकर्ता की पहचान का खुलासा किया हो।
- **शिकायतकर्ता की पहचान:** प्रत्येक शिकायत में शिकायतकर्ता की पहचान शामिल होनी चाहिए।

व्हिसलब्लोअर संरक्षण अधिनियम, 2014 से संबंधित समस्याएं

- **कार्यान्वयन में देरी:** व्हिसलब्लोअर संरक्षण अधिनियम के कार्यान्वयन में देरी हुई है। परिणामस्वरूप, कुछ लोगों को आरटीआई कार्यकर्ता या व्हिसलब्लोअर होने पर प्रताड़ित किया गया, उन पर हमला किया गया या उनकी हत्या कर दी गयी।
- **गुमनाम शिकायतों की अनुमति नहीं:** अधिनियम गुमनाम शिकायतों की अनुमति नहीं देता है जो अधिनियम के मूल उद्देश्य को विफल कर रहा है। उदाहरण के लिए - इस तरह से अधिकारी की पहचान उजागर हो सकती है और उसकी जान को खतरा हो सकता है, उदाहरण के लिए - सत्येन्द्र दुबे।
- **संगठनात्मक कार्यान्वयन अप्रभावी है:** कई उद्योगों में, व्हिसलब्लोअर कार्यक्रम पर श्रमिकों को निर्देश देने के लिए व्हिसलब्लोअर नीति नियम पुस्तिका का उपयोग नहीं किया जाता है।
- भारत में व्हिसलब्लोअर को बहुत कम सुरक्षा प्राप्त है और इसलिए वे नियामक या अपने नियोक्ताओं को दस्तावेजी साक्ष्य भेजने से आशंकित रहते हैं।
- **मामले बढ़ रहे हैं:** नेशनल स्टॉक एक्सचेंज ऑफ इंडिया के निफ्टी इंडेक्स की 50 कंपनियों में से लगभग एक तिहाई ने अपनी पिछले वित्तीय वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट में कहा कि उन्हें 2018 में 3,508 व्हिसल-ब्लोअर शिकायतें प्राप्त हुई, जो पिछले वर्ष प्राप्त 3,139 शिकायतों से अधिक थीं।
- **व्हिसिल-ब्लोअर संशोधन विधेयक 2015 से संबंधित समस्याएं:** यह पिछले अधिनियम के कई प्रावधानों को कमजोर करता है, उदाहरण के लिए
- इस विधेयक के अंतर्गत ऐसे मामले का प्रकटीकरण नहीं किया जा सकता, जो आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम, 1923 के अंतर्गत निषिद्ध है।
    - यह राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों को इसके दायरे से बाहर रखने के प्रावधान शामिल करता है।
- **बहुत अधिक छूट:** यह विभिन्न आधारों पर बहुत सारी जानकारी को जनता के लिए दुर्गम बना देता है।

- लेकिन यह विधेयक राज्यसभा में पास नहीं हो सका और मई 2019 में 16वीं लोकसभा भंग हो जाने पर यह समाप्त हो गया।

आवश्यक उपाय

द्वितीय एआरसी ने निम्नलिखित उपायों की सिफारिश की:

- निर्दोष मुखबिरों की सुरक्षा के लिए उचित कानून लागू किया जाना चाहिए।
- सशक्तीकरण: विधि आयोग द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित तर्ज पर मुखबिरों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए तुरंत कानून बनाया जाना चाहिए:
  - झूठे दावों, धोखाधड़ी या भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले व्हिसलब्लोअर्स को गोपनीयता और गुमनामी सुनिश्चित करके, उनके करियर में उत्पीड़न से सुरक्षा, और शारीरिक नुकसान और उत्पीड़न को रोकने के लिए अन्य प्रशासनिक उपायों द्वारा संरक्षित किया जाना चाहिए।
- कानून में कॉर्पोरेट व्हिसलब्लोअर्स को शामिल किया जाना चाहिए जो जानबूझकर चूक या कमीशन के कृत्यों से सार्वजनिक हित को हुई गंभीर क्षति या धोखाधड़ी का पता लगाते हैं।
  - सेबी ने हाल ही में एक टिपिंग मैकेनिज्म पेश किया है। सेबी अंदरूनी व्यापारियों के खिलाफ जानकारी और सफल कार्रवाई के लिए ₹1 करोड़ तक का पुरस्कार देगी। इसने एक "सहयोग और गोपनीयता" तंत्र भी बनाया है।

भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु किये गये अन्य उपाय

- भारत सरकार "**भ्रष्टाचार के खिलाफ शून्य सहनशीलता**" के लिए प्रतिबद्ध है और उसने कई भ्रष्टाचार विरोधी उपाय लागू किए हैं, जिनमें शामिल हैं:
- नागरिक-अनुकूल सेवाओं में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए प्रणालीगत सुधार लागू किए जाने चाहिए।
  - इसमें प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना के माध्यम से, विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों के तहत नागरिकों को कल्याणकारी लाभों का प्रत्यक्ष और पारदर्शी हस्तांतरण शामिल है।
  - ई-टेंडरिंग एक प्रकार की सार्वजनिक खरीद है।
  - ई-गवर्नमेंट कार्यान्वयन एवं प्रक्रिया एवं प्रणाली सरलीकरण
  - सरकारी खरीद के लिए गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM) की शुरुआत की जा रही है।
- सरकारी विभागों में ग्रुप 'बी' (अराजपत्रित) और ग्रुप 'सी' की पोस्टिंग के लिए साक्षात्कार रोक दिए गए हैं।
- **नियमों और प्रक्रियाओं में अद्यतनीकरण:** अनुशासनात्मक प्रक्रियाओं के लिए अधिक विशिष्ट समय सारिणी प्रदान करने के लिए केंद्रीय सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण और अपील) नियम और अखिल भारतीय सेवा (अनुशासनात्मक और अपील) नियम दोनों को अद्यतन किया गया है।
  - रिश्वतखोरी को स्पष्ट रूप से अपराध घोषित करने के लिए भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 को संशोधित किया गया है।
- सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम 2005 में सूचना के अधिकार के लिए एक व्यावहारिक ढांचा बनाने के लिए पारित किया गया था, जिससे नागरिकों को सार्वजनिक एजेंसियों द्वारा रखे गए डेटा तक पहुंच प्राप्त करने की अनुमति मिल सके।

विगत वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

1. व्हिसिल-ब्लोअर, जो संबंधित अधिकारियों को भ्रष्टाचार और अवैध गतिविधियों, गलत कार्यों और कदाचार की रिपोर्ट करता है, उसे निहित स्वार्थों, आरोपी व्यक्तियों और उसकी टीम द्वारा गंभीर खतरे, शारीरिक नुकसान और उत्पीड़न का सामना करने का जोखिम होता है। व्हिसिल-ब्लोअर की सुरक्षा के लिए सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के लिए आप कौन से नीतिगत उपाय सुझाएंगे? (2022)
2. निम्नलिखित पर प्रत्येक 30 शब्दों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए: (2022)
   a. संवैधानिक नैतिकता
   b. एक ऐसी स्थिति जिसमें सरकारी अधिकारी का निर्णय उसकी व्यक्तिगत रूचि से प्रभावित हो
   c. सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी
   d. डिजिटलीकरण की चुनौतियाँ
   e. कर्तव्य के प्रति समर्पण
3. विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सार्वजनिक धन का प्रभावी उपयोग महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक धन के कम उपयोग और दुरुपयोग के कारणों और उनके निहितार्थों की आलोचनात्मक जांच कीजिए। (2019)
4. विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सार्वजनिक धन का प्रभावी उपयोग महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक धन के कम उपयोग और दुरुपयोग के कारणों और उनके निहितार्थों की समोचना कीजिए। (2019)
5. सार्वजनिक जीवन के मूल सिद्धांत क्या हैं? इनमें से किन्हीं तीन को उपयुक्त उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए। (2019)
6. शासन में संभाव्यता के बारे में आप क्या समझते हैं? शब्द की अपनी समझ के आधार पर, सरकार में ईमानदारी सुनिश्चित करने के उपाय सुझाएँ। (2019)

7. "लोक सेवक द्वारा कर्तव्य का पालन न करना भ्रष्टाचार का एक रूप है" क्या आप इस विचार से सहमत हैं? अपने जवाब का औचित्य सिद्ध कीजिए। (2019)

8. ऐसा विचार है कि शासकीय गोपनीयता अधिनियम सूचना का अधिकार अधिनियम के कार्यान्वयन में बाधा है। क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत हैं? (2019)

9. तर्कसंगत निर्णय लेने के लिए इनपुट के एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रभाव एक बहस का मुद्दा है। उपयुक्त उदाहरण के साथ आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। (2019)

10. "लोक सेवक द्वारा कर्तव्य का पालन न करना भ्रष्टाचार का एक रूप है" क्या आप इस विचार से सहमत हैं? आपने जवाब का औचित्य साबित कीजिए। (2019)

11. नागरिक चार्टर आंदोलन के मूल सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए और इसके महत्व पर प्रकाश डालें। (2019)

12. हितों के टकराव से क्या तात्पर्य है? वास्तविक और संभावित हितों के टकराव के बीच अंतर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। (2018)

13. उपयुक्त उदाहरणों के साथ ''नैतिक संहिता'' और ''आचार संहिता'' के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए। (2018)

14. "सूचना का अधिकार अधिनियम केवल नागरिकों के सशक्तिकरण के बारे में नहीं है, यह अनिवार्य रूप से जवाबदेही की अवधारणा को फिर से परिभाषित करता है। चर्चा कीजिए।

15. "अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त होना है और सुंदर दिमागों का देश बनना है, तो मुझे दृढ़ता से लगता है कि तीन प्रमुख सामाजिक सदस्य हैं जो बदलाव ला सकते हैं। वे पिता, माता और शिक्षक हैं। - ए पी जे अब्दुल कलाम। विश्लेषण कीजिए। (2017)

16. राष्ट्रीय संपत्ति में वृद्धि के परिणामस्वरूप इसके लाभों का समान वितरण नहीं हो सका। इसने केवल कुछ ''बहुसंख्यकों की कीमत पर एक छोटे से अल्पसंख्यक वर्ग के लिए आधुनिकता और समृद्धि के क्षेत्र'' बनाए हैं। न्यायोचित ठहराइए। (2017)

17. द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग द्वारा अनुशंसित लोक सेवा संहिता पर चर्चा कीजिए। (2016)

18. अनुशासन का तात्पर्य आम तौर पर आदेशों का पालन करना और अधीनता से है। हालाँकि, यह संगठन के लिए प्रतिकूल हो सकता है। चर्चा कीजिए। (2015)

19. कुछ हालिया घटनाक्रम जैसे कि आरटीआई अधिनियम की शुरूआत, मीडिया और न्यायिक सक्रियता आदि, सरकार के कामकाज में अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही लाने में सहायक साबित हो रहे हैं। हालाँकि, यह भी देखा जा रहा है कि कई बार तंत्र का दुरुपयोग भी किया जाता है। दूसरा नकारात्मक प्रभाव यह है कि अधिकारी अब त्वरित निर्णय लेने से डर रहे हैं। इस स्थिति का विस्तार से विश्लेषण कीजिए और सुझाव दें कि इस द्वंद्व को कैसे हल किया जा सकता है। सुझाव दें कि इन नकारात्मक प्रभावों को कैसे कम किया जा सकता है। (2015)

20. अक्सर कहा जाता है कि गरीबी भ्रष्टाचार को जन्म देती है। हालाँकि, ऐसे उदाहरणों की कोई कमी नहीं है जहाँ संपन्न और शक्तिशाली लोग बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। लोगों में भ्रष्टाचार के मूल कारण क्या हैं? उदाहरण सहित अपने उत्तर का समर्थन कीजिए। (2014)

21. सार्वजनिक जीवन में 'ईमानदारी' से आप क्या समझते हैं? वर्तमान समय में इसका अभ्यास करने में क्या कठिनाइयाँ हैं? इन कठिनाइयों को कैसे दूर किया जा सकता है? (2014)

22. आज हम पाते हैं कि आचार संहिता निर्धारित करने, सतर्कता सेल/आयोग स्थापित करने, आरटीआई, सक्रिय मीडिया और कानूनी तंत्र को मजबूत करने जैसे विभिन्न उपायों के बावजूद, भ्रष्ट आचरण नियंत्रण में नहीं आ रहे हैं। क) औचित्य के साथ इन उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कीजिए। ख) इस खतरे से निपटने के लिए अधिक प्रभावी रणनीतियां सुझाएं। (2014)

केस स्टडी

केस स्टडी: 2022

प्रभात एक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी स्टर्लिंग इलेक्ट्रिक लिमिटेड में उपाध्यक्ष (विपणन) के पद पर कार्यरत थे। लेकिन फिलहाल कंपनी मुश्किल दौर से गुजर रही थी क्योंकि पिछली दो तिमाहियों में बिक्री में लगातार गिरावट देखी जा रही थी। उनका डिवीजन, जो अब तक कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य में एक प्रमुख राजस्व योगदानकर्ता था, अब उनके लिए कुछ बड़े सरकारी ऑर्डर प्राप्त करने की बेताब भरसक कोशिश कर रहा था। लेकिन उनके सर्वोत्तम प्रयासों से कोई सकारात्मक सफलता नहीं मिली।

उनकी एक पेशेवर कंपनी थी और उनके स्थानीय मालिकों पर उनके लंदन स्थित मुख्यालय से कुछ सकारात्मक परिणाम दिखाने का दबाव था। कार्यकारी निदेशक (भारत प्रमुख) द्वारा ली गई पिछली प्रदर्शन समीक्षा बैठक में उनके खराब प्रदर्शन के लिए उन्हें फटकार लगाई गई थी। उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि उनका प्रभाग ग्वालियर के पास एक गुप्त स्थापना के लिए रक्षा मंत्रालय से एक विशेष अनुबंध पर काम कर रहा है और शीघ्र ही निविदा प्रस्तुत की जा रही है।

वह अत्यधिक दबाव में था और बहुत परेशान था। जिस बात ने स्थिति को और अधिक खराब कर दिया वह ऊपर से दी गई चेतावनी थी कि यदि सौदा कंपनी के पक्ष में नहीं हुआ, तो उसका प्रभाग बंद करना पड़ सकता है और उसे अपनी आकर्षक नौकरी छोड़नी पड़ सकती है।

एक और आयाम था जो उसे गहरी मानसिक यातना और पीड़ा दे रहा था। यह उनके व्यक्तिगत अनिश्चित वित्तीय स्वास्थ्य से संबंधित था। वह दो स्कूल-कॉलेज जाने वाले बच्चों और अपनी बूढ़ी बीमार माँ के साथ परिवार में अकेला कमाने वाला था। शिक्षा और चिकित्सा पर भारी खर्च के कारण उनके मासिक वेतन पैकेज पर बड़ा दबाव पड़ रहा था। बैंक से लिए गए आवास ऋण के लिए नियमित ईएमआई अपरिहार्य है और कोई भी डिफॉल्ट उसे गंभीर कानूनी कार्रवाई के लिए उत्तरदायी बना देगा।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में, वह किसी चमत्कार के घटित होने की आशा कर रहा था। अचानक घटनाक्रम बदल गया। उनके सचिव ने बताया कि एक सज्जन सुभाष वर्मा उनसे मिलना चाहते थे क्योंकि उनकी रुचि कंपनी में प्रबंधक के पद में थी जो उनके द्वारा भरा जाना था। उन्होंने आगे बताया कि उनका सीवी रक्षा मंत्री के कार्यालय के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

उम्मीदवार-सुभाष वर्मा के साक्षात्कार के दौरान, उन्होंने उन्हें तकनीकी रूप से मजबूत, साधन संपन्न और एक अनुभवी विपणनकर्ता पाया। ऐसा प्रतीत होता है कि वह निविदा प्रक्रियाओं से अच्छी तरह परिचित था और इस संबंध में अनुवर्ती कार्रवाई करने और संपर्क करने में माहिर था। प्रभात को लगा कि वह बाकी उम्मीदवारों की तुलना में बेहतर विकल्प है, जिनका हाल ही में पिछले कुछ दिनों में उसने साक्षात्कार लिया था।

सुभाष वर्मा ने यह भी संकेत दिया कि उनके पास बोली दस्तावेजों की प्रतियां भी हैं जिन्हें यूनिक इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड अगले दिन अपनी निविदा के लिए रक्षा मंत्रालय को सौंपेगा। उन्होंने उपयुक्त नियमों और शर्तों पर कंपनी में अपने रोजगार की शर्त पर उन दस्तावेजों को सौंपने की पेशकश की। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस प्रक्रिया में, स्टर्लिंग इलेक्ट्रिक लिमिटेड अपनी प्रतिद्वंद्वी कंपनी को पछाड़ सकती है और बोली और भारी रक्षा मंत्रालय का ऑर्डर प्राप्त कर सकती है। उन्होंने संकेत दिया कि यह उनके और कंपनी दोनों के लिए फायदे की स्थिति होगी।

प्रभात एकदम सन्न रह गया। यह सदमा और रोमांच का मिश्रित एहसास था। वह असहज था और पसीना बहा रहा था। यदि स्वीकार कर लिया जाता है, तो उनकी सभी समस्याएं तुरंत गायब हो जाएंगी और उन्हें बहुप्रतीक्षित निविदा हासिल करने और इस तरह कंपनी की बिक्री और वित्तीय स्थिति को बेहतर बनाने के लिए पुरस्कृत किया जा सकता है। वह भविष्य की कार्रवाई को लेकर असमंजस में थे। उन्हें सुभाष वर्मा की हिम्मत पर आश्चर्य हुआ कि उन्होंने चोरी-छिपे अपनी ही कंपनी के कागजात निकाल लिए और प्रतिद्वंद्वी कंपनी को काम देने की पेशकश की। एक अनुभवी व्यक्ति होने के नाते, वह प्रस्ताव/स्थिति के पक्ष और विपक्ष की जांच कर रहे थे और उन्होंने उसे अगले दिन आने के लिए कहा।

A. मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए।

B. उपरोक्त स्थिति में प्रभात के पास उपलब्ध विकल्पों की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

C. उपरोक्त में से कौन-सा प्रभात के लिए सबसे उपयुक्त होगा और क्यों? (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- शामिल हितधारकों, मुद्दे और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए।
- **प्रभात के पास उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कीजिए:**
  - सुभाष वर्मा का प्रस्ताव ठुकरा दे।
  - घटना की रिपोर्ट करे
  - कानूनी सलाह लें।
- सबसे उपयुक्त विकल्प पर चर्चा कीजिए।

केस स्टडी: 2022

रमेश एक राज्य सिविल सेवा अधिकारी हैं जिन्हें 20 साल की सेवा के बाद एक सीमावर्ती राज्य की राजधानी में तैनात होने का अवसर मिला। रमेश की मां को हाल ही में कैंसर का पता चला है और उन्हें शहर के प्रमुख कैंसर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उनके दो किशोर बच्चों को भी शहर के सबसे अच्छे पब्लिक स्कूलों में से एक में प्रवेश मिला है। राज्य के गृह विभाग में निदेशक पद पर नियुक्ति के बाद रमेश को खुफिया सूत्रों से गोपनीय रिपोर्ट मिली कि पड़ोसी देश से अवैध प्रवासी राज्य में घुसपैठ कर रहे हैं। उन्होंने अपने गृह विभाग की टीम के साथ व्यक्तिगत रूप से सीमा चौकियों की औचक जांच करने का निर्णय लिया। उन्हें आश्चर्य हुआ जब उन्होंने सीमा चौकियों पर सुरक्षाकर्मियों की मिलीभगत से घुसपैठ कर रहे 12 सदस्यों वाले दो परिवारों को रंगे हाथों पकड़ लिया। आगे की पूछताछ और जांच में पता चला कि पड़ोसी देश से प्रवासियों की घुसपैठ के बाद उनके आधार कार्ड, राशन कार्ड और वोटर आईडी जैसे दस्तावेज भी फर्जी बनाए जाते हैं और उन्हें राज्य के एक विशेष क्षेत्र में बसाने के लिए मजबूर किया जाता है। रमेश ने विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर राज्य के अपर सचिव को सौंपी। हालांकि उन्हें अपर गृह सचिव ने एक सप्ताह बाद तलब किया है और रिपोर्ट वापस लेने का निर्देश दिया है। अतिरिक्त गृह सचिव ने रमेश को बताया कि उनके द्वारा सौंपी गयी रिपोर्ट को उच्च अधिकारियों ने सराहा नहीं है। उन्होंने आगे उन्हें चेतावनी दी कि यदि वह गोपनीय रिपोर्ट वापस लेने में विफल रहते हैं, तो उन्हें न केवल राज्य की राजधानी से प्रतिष्ठित नियुक्ति से बाहर कर दिया जाएगा, बल्कि निकट भविष्य में होने वाली उनकी आगे की पदोन्नति भी खतरे में पड़ जाएगी।

1. सीमावर्ती राज्य के गृह विभाग के निदेशक के रूप में रमेश के पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं?
2. रमेश को कौन-सा विकल्प अपनाना चाहिए और क्यों?
3. प्रत्येक विकल्प का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।
4. रमेश को किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है?
5. पड़ोसी देश से अवैध प्रवासियों की घुसपैठ के खतरे से निपटने के लिए आप क्या नीतिगत उपाय सुझाएंगे? (उत्तर 250 शब्दों में दें)

दृष्टिकोण

- **शामिल हितधारकों**, मुद्दे और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए।
- रमेश के लिए उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कीजिए:
  - **रिपोर्ट वापस लें.**
  - **रिपोर्ट बनाए रखें.**
  - कानूनी सलाह/व्हिसलब्लोइंग करें।
- **रमेश के लिए अनुशंसित विकल्प।**
  - विकल्प का नैतिक और आलोचनात्मक मूल्यांकन करे।
- अवैध प्रवासन से निपटने के लिए नीतिगत उपायों पर चर्चा करे।
- व्हिसलब्लोइंग के महत्व का जिक्र करते हुए समापन कीजिए।

केस स्टडी: 2022

आपको अनुपालन और उसकी अनुवर्ती कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में अनुभाग के प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया है। उस क्षेत्र में बड़ी संख्या में छोटे और मध्यम उद्योग थे जिन्हें मंजूरी दी गई थी। आपने पाया कि ये उद्योग कई प्रवासी श्रमिकों को रोजगार प्रदान करते हैं। अधिकांश औद्योगिक इकाइयों को पर्यावरण अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त हो चुका है। पर्यावरण मंजूरी का उद्देश्य उन उद्योगों और परियोजनाओं पर अंकुश लगाना है जो कथित तौर पर क्षेत्र में पर्यावरण और जीवित प्रजातियों को बाधित करते हैं। लेकिन व्यवहार में. इनमें से अधिकांश इकाइयाँ वायु, जल और मृदा प्रदूषण जैसे कई तरीकों से प्रदूषणकारी इकाइयाँ बनी हुई हैं। ऐसे में स्थानीय लोगों को लगातार स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा।

यह पुष्टि की गई कि अधिकांश उद्योग पर्यावरण अनुपालन का उल्लंघन कर रहे थे। आपने सभी औद्योगिक इकाइयों को सक्षम प्राधिकारी से नए पर्यावरण मंजूरी प्रमाणपत्र के लिए आवेदन करने के लिए नोटिस जारी किया। हालाँकि, आपकी कार्रवाई को औद्योगिक इकाइयों के एक वर्ग, अन्य निहित स्वार्थी व्यक्तियों और स्थानीय राजनेताओं के एक वर्ग से शत्रुतापूर्ण प्रतिक्रिया मिली। श्रमिक भी आपके प्रति बहुत शत्रुतापूर्ण हो गए क्योंकि उन्हें लगा कि आपकी कार्रवाई से ये औद्योगिक इकाइयां बंद हो जाएंगी और परिणामी बेरोजगारी से उनकी आजीविका में असुरक्षा और अनिश्चितता पैदा हो जाएगी। उद्योगों के कई मालिकों ने आपसे यह अनुरोध किया कि आपको कठोर कार्रवाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे उन्हें अपनी इकाइयां बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा और भारी वित्तीय नुकसान होगा, बाजार में उनके उत्पादों की कमी हो जाएगी। इससे जाहिर तौर पर मजदूरों और उपभोक्ताओं की तकलीफें बढ़ेंगी। श्रमिक संघ ने भी इकाइयों को बंद करने के खिलाफ अनुरोध करते हुए आपको एक अभ्यावेदन भेजा, आपको इसके साथ ही अज्ञात लोगों से धमकियाँ मिलनी शुरू हो गई। हालाँकि आपको अपने कुछ सहकर्मियों से समर्थन प्राप्त हुआ, जिन्होंने आपको पर्यावरणीय अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए स्वतंत्र रूप से कार्य करने की सलाह दी। स्थानीय गैर सरकारी संगठन भी आपके समर्थन में आये और उन्होंने प्रदूषण फैलाने वाली इकाइयों को तुरंत बंद करने की मांग की।

1. दी गई स्थिति में आपके लिए क्या विकल्प उपलब्ध हैं?
2. आपके द्वारा सूचीबद्ध विकल्पों की आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।
3. पर्यावरणीय अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए आप किस प्रकार की व्यवस्था का सुझाव देंगे?
4. अपने विकल्प का प्रयोग करने में आपको किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ा? (उत्तर 250 शब्दों में दें)

दृष्टिकोण

- शामिल हितधारकों, मुद्दे और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए।
- एक अधिकारी के रूप में उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कीजिए:
  - सख्त अनुपालन लागू करना
  - बातचीत और सहयोग करना.
  - कानूनी सहायता लेना.
  - निगरानी एवं निरीक्षण को सुदृढ़ करना।
- विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण करना और गुणों के अनुसार विकल्पों का मूल्यांकन करना।
- पर्यावरणीय अनुपालन सुनिश्चित करने के तंत्र पर चर्चा कीजिए।
- एक अधिकारी के रूप में आपके सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं पर चर्चा कीजिए।
- सतत विकास के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडी: 2021

एक विशेष राज्य की राजधानी में यातायात की भीड़ को कम करने के लिए एक एलिवेटेड कॉरिडोर का निर्माण किया जा रहा है। आपको आपकी व्यावसायिक योग्यता और अनुभव के आधार पर इस प्रतिष्ठित परियोजना के प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में चुना गया है। इस परियोजना को अगले दो वर्षों में 20 जून 2021 तक पूरा करने की समय सीमा है, क्योंकि जुलाई 2021 के दूसरे सप्ताह में चुनाव की घोषणा से पहले इस परियोजना का उद्घाटन मुख्यमंत्री द्वारा किया जाना है। टीम के अनुसार, संभवत: खराब सामग्री के इस्तेमाल के कारण एलिवेटेड कॉरिडोर के एक पाये में मामूली दरार देखी गई। आपने तुरंत मुख्य अभियंता को सूचित किया और आगे का काम रोक दिया। आपके द्वारा आकलन किया गया था कि एलिवेटेड कॉरिडोर के कम से कम तीन पायों को तोड़कर पुनर्निर्माण किया जाना है। लेकिन इस प्रक्रिया से परियोजना में कम से कम चार से छह महीने की देरी होगी। लेकिन मुख्य अभियंता ने निरीक्षण दल की टिप्पणी को इस आधार पर खारिज कर दिया कि यह एक छोटी सी दरार थी जो किसी भी तरह से पुल की मजबूती और स्थायित्व को प्रभावित नहीं करेगी। उन्होंने आपको निरीक्षण दल के निरीक्षण को नजरअंदाज करने और उसी गति और चाल से काम करते रहने का आदेश दिया। उन्होंने आपको बताया कि मंत्री कोई देरी नहीं चाहते क्योंकि वह चाहते हैं कि मुख्यमंत्री चुनाव घोषित होने से पहले एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन कीजिए। आपको यह भी बताया कि ठेकेदार मंत्री का दूर का रिश्तेदार है और वह चाहता है कि वह इस परियोजना को पूरा करे। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि अतिरिक्त मुख्य अभियंता के रूप में आपकी पदोन्नति मंत्रालय में विचाराधीन है। हालाँकि, आपने दृढ़ता से महसूस किया कि एलिवेटेड कॉरिडोर के घाट में मामूली दरार पुल की सेहत और जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगी और इसलिए एलिवेटेड कॉरिडोर की मरम्मत न करना बहुत खतरनाक होगा।

1. दी गई शर्तों के तहत, एक प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में आपके लिए क्या विकल्प उपलब्ध हैं?
2. प्रोजेक्ट मैनेजर को किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है?
3. प्रोजेक्ट मैनेजर को किन व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है और ऐसी चुनौतियों पर काबू पाने के लिए उसकी प्रतिक्रिया क्या है?
4. निरीक्षण दल द्वारा उठाई गई टिप्पणी को नजरअंदाज करने के क्या परिणाम हो सकते हैं? (उत्तर 250 शब्दों में दें)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान कीजिए।
- नैतिक मुद्दों को पहचानें.
- विभिन्न विकल्पों का पता लगाएं और योग्यता के अनुसार उनका मूल्यांकन कीजिए।
- कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनें.

केस स्टडी: 2021

आप एक मध्यमवर्गीय कस्बे में एक डिग्री कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल हैं। प्रिंसिपल हाल ही में सेवानिवृत्त हुए हैं और प्रबंधन उनके प्रतिस्थापन की तलाश कर रहा है। ऐसे विचार भी हैं कि प्रबंधन आपको प्रिंसिपल के रूप में पदोन्नत कर सकता है। इसी बीच, वार्षिक परीक्षा के दौरान विश्वविद्यालय के उड़नदस्ते ने दो छात्रों को अनुचित साधनों का प्रयोग करते हुए रंगेहाथ पकड़ लिया। इस कृत्य में कॉलेज के एक वरिष्ठ व्याख्याता व्यक्तिगत रूप से इन छात्रों की मदद कर रहे थे। यह सीनियर लेक्चरर मैनेजमेंट का करीबी भी होता है. छात्रों में से एक स्थानीय राजनेता का बेटा था जो कॉलेज को वर्तमान प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से संबद्ध कराने के लिए जिम्मेदार था। दूसरा छात्र एक स्थानीय व्यवसायी का बेटा था जिसने कॉलेज चलाने के लिए अधिकतम धनराशि दान की थी। आपने तुरंत इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के संबंध में प्रबंधन को सूचित किया। प्रबंधन ने कहा कि हर हाल में उड़नदस्ते के साथ समस्या का समाधान कीजिए. उन्होंने आगे कहा कि इस तरह की घटनाओं से न केवल कॉलेज की छवि खराब होगी बल्कि साथ ही राजनेता और व्यवसायी भी कॉलेज के संचालन के लिए बहुत महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं. आपको यह भी संकेत दिया गया था कि प्रिंसिपल के रूप में आपकी आगे की पदोन्नति उड़न दस्ते के साथ इस मुद्दे को सुलझाने की आपकी क्षमता पर निर्भर करती है। इसी बीच आपके प्रशासनिक पदाधिकारी द्वारा आपको यह सूचना दी गयी कि छात्र संघ के कुछ सदस्य कॉलेज गेट के बाहर वरिष्ठ व्याख्याता एवं इस घटना में शामिल छात्रों के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं तथा दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं.

1. मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए।
2. वाइस प्रिंसिपल के रूप में आपके पास उपलब्ध विकल्पों की समालोचना कीजिए। आप कौन सा विकल्प अपनाएंगे और क्यों? (उत्तर 250 शब्दों में दें)

दृष्टिकोण

- **शामिल हितधारकों**, मुद्दे और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए।
- **वाइस प्रिंसिपल के रूप में उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कीजिए:**
  - उड़न दस्ते को रिपोर्ट कीजिए।
  - फ्लाइंग स्क्वाड से बातचीत कीजिए.
  - कानूनी सलाह और अन्य विकल्प खोजें।
- वाइस प्रिंसिपल के रूप में आपके द्वारा चुने गए विकल्पों का वर्णन कीजिए।
- व्यावसायिक नैतिकता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडी: 2021

कोरोनोवायरस बीमारी (COVID-19) महामारी तेजी से विभिन्न देशों में फैल गई है। 8 मई 2020 तक भारत में कोरोना के 56342 पॉजिटिव मामले सामने आ चुके थे। 135 अरब से अधिक की आबादी वाले भारत को अपनी आबादी के बीच कोरोनोवायरस के संचरण को नियंत्रित करने में कठिनाई हुई। इस प्रकोप से निपटने के लिए कई रणनीतियाँ आवश्यक हो गई। भारत के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने इस प्रकोप के बारे में जागरूकता बढ़ाई और कोविड-19 के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए सभी आवश्यक कार्रवाई की। भारत सरकार ने वायरस के संचरण को कम करने के लिए पूरे देश में 55 दिनों का लॉकडाउन लागू किया। स्कूल और कॉलेज शिक्षण-सीखने-मूल्यांकन और प्रमाणन के वैकल्पिक तरीके में स्थानांतरित हो गए थे। ऑनलाइन मोड इन दिनों लोकप्रिय हो गया है। इस स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक मानव संसाधन, धन और अन्य सुविधाओं के मामले में सीमित बुनियादी ढांचे के कारण भारत इस तरह के संकट के अचानक हमले के लिए तैयार नहीं था। इस बीमारी ने एक तरफ जाति, पंथ, धर्म की परवाह किए बिना किसी को नहीं छोड़ा और दूसरी तरफ किसी को भी नहीं छोड़ा। अस्पताल के बिस्तर, ऑक्सीजन सिलेंडर, एम्बुलेंस, अस्पताल के कर्मचारी और श्मशान घाट में कमी सबसे महत्वपूर्ण पहलू थे। आप उस समय एक सार्वजनिक अस्पताल में अस्पताल प्रशासक हैं जब कोरोनोवायरस ने बड़ी संख्या में लोगों पर हमला किया था और अस्पताल में दिन-ब-दिन मरीजों का तांता लगा हुआ था।

1. यह जानते हुए भी कि यह एक अत्यधिक संक्रामक बीमारी है और संसाधन और बुनियादी ढाँचा सीमित हैं, रोगियों की देखभाल के लिए अपने नैदानिक और गैर-नैदानिक कर्मचारियों को नियुक्त करने के आपके मानदंड और औचित्य क्या हैं?
2. यदि आपका निजी अस्पताल है तो क्या आपका औचित्य और निर्णय सार्वजनिक अस्पताल जैसा ही रहेगा? (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान कीजिए।
- रोगियों के बीच सीमित उपलब्धता संसाधनों के आवंटन के मानदंड और औचित्य की पहचान कीजिए।
- योग्यता के अनुसार उन्हें तौलते हुए विभिन्न संभावित विकल्पों का पता लगाएं।
- औचित्य के साथ कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनें।

केस स्टडी: 2021

भारत स्थित एक प्रतिष्ठित खाद्य उत्पाद कंपनी ने अंतरराष्ट्रीय बाजार के लिए एक खाद्य उत्पाद विकसित किया और आवश्यक अनुमोदन प्राप्त करने के बाद उसका निर्यात शुरू कर दिया। कंपनी ने इस उपलब्धि की घोषणा की और यह भी संकेत दिया कि जल्द ही यह उत्पाद घरेलू उपभोक्ताओं के लिए लगभग समान गुणवत्ता और स्वास्थ्य लाभ के साथ उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार, कंपनी ने अपने उत्पाद को घरेलू सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित कराया और उत्पाद को भारतीय बाजार में लॉन्च किया। कंपनी समय के साथ अपनी बाजार हिस्सेदारी बढ़ा सकती है और घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त लाभ कमा सकती है। हालाँकि, निरीक्षण दल द्वारा किए गए यादृच्छिक नमूना परीक्षण में पाया गया कि उत्पाद सक्षम प्राधिकारी से प्राप्त अनुमोदन के विपरीत घरेलू स्तर पर बेचा जा रहा है। आगे की जांच में यह भी पता चला कि खाद्य कंपनी न केवल ऐसे उत्पाद बेच रही थी जो देश के स्वास्थ्य मानकों को पूरा नहीं कर रहे थे, बल्कि अस्वीकृत निर्यात उत्पादों को भी घरेलू बाजार में बेच रही थी। इस प्रकरण ने खाद्य कंपनी की प्रतिष्ठा और लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

1. आप क्या सोचते हैं कि निर्धारित घरेलू खाद्य मानक का उल्लंघन करने और अस्वीकृत निर्यात उत्पादों को घरेलू बाजार में बेचने के लिए खाद्य कंपनी के खिलाफ सक्षम प्राधिकारी द्वारा क्या कार्रवाई की जानी चाहिए?
2. संकट को हल करने और अपनी खोई प्रतिष्ठा वापस लाने के लिए खाद्य कंपनी के पास क्या कार्रवाई उपलब्ध है?
3. मामले में शामिल नैतिक दुविधा की जाँच कीजिए। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- **मुद्दे,** नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- खाद्य कंपनी द्वारा सुरक्षा मानकों और स्वास्थ्य मानदंडों के उल्लंघन के लिए सक्षम प्राधिकारी द्वारा की जाने वाली कार्रवाइयों की पहचान करना।
- मामले में शामिल नैतिक दुविधाओं की पहचान करना।
- उपलब्ध विकल्पों और खाद्य कंपनी द्वारा की जाने वाली अपेक्षित कार्रवाई पर प्रकाश डालना।

केस स्टडी: 2020

राजेश कुमार एक वरिष्ठ लोक सेवक हैं, जो ईमानदारी और स्पष्टवादिता की प्रतिष्ठा रखते हैं, वर्तमान में वित्त मंत्रालय में बजट प्रभाग के प्रमुख के रूप में तैनात हैं। उनका विभाग वर्तमान में राज्यों को बजटीय सहायता के आयोजन में व्यस्त है, जिनमें से चार राज्यों में वित्तीय वर्ष के भीतर चुनाव होने हैं। इस साल के वार्षिक बजट में समाज के कमजोर वर्गों के लिए केंद्र प्रायोजित सामाजिक आवास योजना, राष्ट्रीय आवास योजना (एनएचएस) के लिए 8300 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे। जून तक एनएचएस के लिए 775 करोड़ रुपये निकाले जा चुके हैं.

वाणिज्य मंत्रालय लंबे समय से निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक दक्षिणी राज्य में एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) स्थापित करने का मामला चला रहा था। केंद्र और राज्य के बीच दो साल की विस्तृत चर्चा के बाद, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने अगस्त में इस परियोजना को मंजूरी दे दी। आवश्यक भूमि अधिग्रहण के लिए प्रक्रिया शुरू की गई।

अठारह महीने पहले एक अग्रणी सार्वजनिक क्षेत्र इकाई (पीएसयू) ने क्षेत्रीय गैस ग्रिड के लिए उत्तरी राज्य में एक बड़ा प्राकृतिक गैस प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की आवश्यकता का अनुमान लगाया था। जमीन पहले से ही पीएसयू के कब्जे में है। गैस ग्रिड राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा रणनीति का एक अनिवार्य घटक है। वैश्विक बोली के तीन दौर के बाद, परियोजना एक बहुराष्ट्रीय कंपनी, मेसर्स ग्र्ल हाइड्रोकार्बन को आवंटित की गई थी। बहुराष्ट्रीय कंपनी को भुगतान की पहली किश्त दिसंबर में दी जानी है।

वित्त मंत्रालय से इन दोनों विकासात्मक परियोजनाओं के लिए अतिरिक्त 6000 करोड़ रुपये के समय पर आवंटन के लिए कहा गया था। इस संपूर्ण राशि को एनएचएस आवंटन से पुन: विनियोग करने की अनुशंसा करने का निर्णय लिया गया। फाइल को उनकी टिप्पणियों और आगे की प्रक्रिया के लिए बजट विभाग को भेज दिया गया था। केस फाइल का अध्ययन करने पर, राजेश कुमार को एहसास हुआ कि इस पुनर्विनियोजन से एनएचएस के निष्पादन में अत्यधिक देरी हो सकती है, जो कि वरिष्ठ राजनेताओं की रैलियों में बहुत प्रचारित परियोजना है। इसके अनुरूप, वित्त की अनुपलब्धता से एसईजेड में वित्तीय नुकसान होगा और अंतरराष्ट्रीय परियोजना में भुगतान में देरी के कारण राष्ट्रीय शर्मिंदगी होगी।

राजेश कुमार ने इस मामले पर वरिष्ठों से चर्चा की. उन्हें बताया गया कि राजनीतिक रूप से संवेदनशील इस स्थिति पर तुरंत कार्रवाई करने की जरूरत है। राजेश कुमार को एहसास हुआ कि एनएचएस से धन का विचलन संसद में सरकार के लिए कठिन सवाल खड़ा कर सकता है।

इस मामले के संदर्भ में निम्नलिखित पर चर्चा कीजिए:

1. किसी कल्याणकारी परियोजना से विकास परियोजनाओं के लिए धन के पुनर्विनियोजन में शामिल नैतिक मुद्दे।
2. सार्वजनिक धन के समुचित उपयोग की आवश्यकता को देखते हुए, राजेश कुमार के लिए उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा कीजिए। क्या इस्तीफा देना एक योग्य विकल्प है?

(250 शब्द)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- किसी कल्याणकारी परियोजना से विकासात्मक परियोजनाओं में धन के पुनर्विनियोजन में शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए।
- विभिन्न संभावित विकल्पों/प्रतिक्रियाओं की खोज करना और योग्यता के अनुसार मूल्यांकन करना। कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनकर स्थिति का जवाब देना।

केस स्टडी: 2020

आप एक बड़े शहर के नगर निगम आयुक्त हैं, आपकी छवि एक बहुत ही ईमानदार और सत्यनिष्ठ अधिकारी की है। आपके शहर में एक विशाल बहुउद्देशीय मॉल निर्माणाधीन है जिसमें बड़ी संख्या में दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी कार्यरत हैं। एक रात, बरसात के दौरान, छत का एक बड़ा हिस्सा ढह गया, जिससे दो नाबालिगों सहित चार मजदूरों की तत्काल मृत्यु हो गई। कई अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए जिन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता की आवश्यकता थी। इस दुर्घटना के परिणामस्वरूप बड़ा हंगामा हुआ और सरकार को जांच बैठानी पड़ी।

आपकी प्रारंभिक जांच से कई विसंगतियों का पता चला है। निर्माण में प्रयुक्त सामग्री घटिया गुणवत्ता की थी। स्वीकृत भवन योजना में केवल एक बेसमेंट की अनुमति के बावजूद, एक अतिरिक्त बेसमेंट का निर्माण किया गया है। नगर निगम के बिल्डिंग इंस्पेक्टर द्वारा समय-समय पर किए जाने वाले निरीक्षण के दौरान इसे नजरअंदाज कर दिया गया। आपकी पूछताछ में, आपने देखा कि शहर के जोनल मास्टर प्लान में ग्रीन बेल्ट और स्लिप रोड के लिए निर्धारित क्षेत्रों पर अतिक्रमण होने के बावजूद मॉल के निर्माण को हरी झंडी

दे दी गई थी। मॉल के निर्माण की अनुमति पिछले नगर आयुक्त द्वारा दी गई थी जो न केवल आपके वरिष्ठ और पेशेवर रूप से आपके परिचित हैं, बल्कि आपके अच्छे मित्र भी हैं।

प्रथम दृष्टया मामला नगर निगम के अधिकारियों और बिल्डरों के बीच व्यापक सांठगांठ का प्रतीत होता है। आपके सहकर्मी आप पर पूछताछ धीमी गति से करने का दबाव डाल रहे हैं। बिल्डर, जो अमीर और प्रभावशाली है, राज्य कैबिनेट में एक शक्तिशाली मंत्री का करीबी रिश्तेदार है। बिल्डर आपको मामले को रफा-दफा करने के लिए मना रहा है और ऐसा करने के लिए आपको मोटी रकम देने का वादा कर रहा है। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि अगर इस मामले का जल्द से जल्द उनके पक्ष में समाधान नहीं किया गया तो उनके कार्यालय में कोई है जो आपके खिलाफ POSH अधिनियम के तहत मामला दर्ज करने की प्रतीक्षा कर रहा है।

मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए। इस स्थिति में आपके पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं? अपनी चुनी हुई कार्यवाही की व्याख्या कीजिए। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- किसी कल्याणकारी परियोजना से विकासात्मक परियोजनाओं में धन के पुनर्विनियोजन में शामिल नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए।
- योग्यता के अनुसार विभिन्न संभावित विकल्पों/प्रतिक्रियाओं की खोज करना।
- कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनें.

केस स्टडीः 2019

ईमानदारी और सत्यनिष्ठी सिविल सेवकों की पहचान है। इन गुणों वाले सिविल सेवकों को किसी भी मजबूत संगठन की रीढ़ माना जाता है। कर्तव्य की पंक्ति में, वे विभिन्न निर्णय लेते हैं, कभी-कभी कुछ वास्तविक गलतियाँ हो जाती हैं। जब तक ऐसे फैसले जानबूझकर न लिए जाएं और व्यक्तिगत तौर पर फायदा न हो, तब तक अधिकारी को दोषी नहीं कहा जा सकता। हालाँकि, ऐसे निर्णय कभी-कभी दीर्घकालिक रूप से अप्रत्याशित प्रतिकूल परिणामों का कारण बन सकते हैं।

हाल के दिनों में, ऐसे कुछ उदाहरण सामने आए हैं जिनमें सिविल सेवकों को वास्तविक गलतियों के लिए फंसाया गया है। उन पर अक्सर मुकदमा चलाया गया और यहां तक कि उन्हें जेल भी भेजा गया। इन घटनाओं ने सिविल सेवकों के नैतिक ढांचे को बुरी तरह हिलाकर रख दिया है।

यह प्रवृत्ति सिविल सेवाओं के कामकाज को कैसे प्रभावित करती है? यह सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं कि ईमानदार सिविल सेवकों को उनकी वास्तविक गलतियों के लिए फंसाया न जाए? आपने जवाब का औचित्य साबित कीजिए। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान कीजिए।
- सिविल सेवकों की बदलती भूमिका और पारंपरिक मूल्यों के साथ परिणामी टकराव पर चर्चा कीजिए।
- आधिकारिक कर्तव्य के पालन में सिविल सेवकों के सामने आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए। सिविल सेवकों के कामकाज पर प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।
- सिविल सेवकों का मनोबल सुनिश्चित करने के लिए किए गए उपायों के साथ निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडीः 2019

आप गंभीर प्राकृतिक आपदा से प्रभावित क्षेत्र में बचाव अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं, हजारों लोग बेघर हो गए हैं और भोजन, पीने के पानी और अन्य बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। भारी बारिश और आपूर्ति मार्गों के क्षतिग्रस्त होने से बचाव कार्य बाधित हो गया है। सीमित बचाव कार्यों में देरी के खिलाफ स्थानीय लोगों में गुस्सा पनप रहा है। जब आपकी टीम प्रभावित क्षेत्र में पहुंचती है तो वहां मौजूद लोग टीम के कुछ सदस्यों के साथ धक्का-मुक्की और मारपीट भी करते हैं. आपकी टीम का एक सदस्य गंभीर रूप से घायल भी हो गया है। इस संकट का सामना करते हुए टीम के कुछ सदस्य आपसे अपने जीवन को खतरा बताते हुए ऑपरेशन बंद करने का अनुरोध करते हैं।

ऐसी कठिन परिस्थितियों में आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? एक लोक सेवक के उन गुणों की जाँच कीजिए जिनकी स्थितियों को प्रबंधित करने के लिए आवश्यकता होगी। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- यहां शामिल नैतिक मुद्दों और हितधारकों पर चर्चा कीजिए।
- एक नेता के तौर पर सबसे पहले स्थानीय लोगों के गुस्से के कारणों को समझने की कोशिश कीजिए.
- प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने के लिए एक सिविल सेवक में आवश्यक गुणों पर चर्चा कीजिए।
- सार्वजनिक सेवाओं में आशावाद और नेतृत्व के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडीः 2019

सीमांत राज्य के एक जिले में, नशीले पदार्थों का खतरा बड़े पैमाने पर है। इसके परिणामस्वरूप मनी लॉन्ड्रिंग, पोस्त की खेती, हथियारों की तस्करी और शिक्षा लगभग ठप हो गई है। व्यवस्था चरमराने के कगार पर है. अपुष्ट रिपोर्टों से स्थिति और भी खराब हो गई है कि स्थानीय राजनेता, साथ ही कुछ वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, ड्रग माफिया को गुप्त संरक्षण प्रदान कर रहे हैं। उस समय स्थिति को सामान्य बनाने के लिए एक महिला पुलिस अधिकारी को पुलिस

अधीक्षक के रूप में नियुक्त किया जाता है, जो ऐसी स्थितियों से निपटने में अपने कौशल के लिए जानी जाती है।

यदि आप वही पुलिस अधिकारी हैं, तो संकट के विभिन्न आयामों की पहचान कीजिए। अपनी समझ के आधार पर संकट से निपटने के उपाय सुझाएँ। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- पुलिस अधीक्षक के रूप में इसमें शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए और जमीनी स्थिति का आकलन कीजिए।
- एक योजना विकसित कीजिए और कार्यान्वित कीजिए।
  - कानून को सख्ती से लागू कीजिए
  - समुदाय के साथ काम कीजिए.
  - समस्या के स्रोत को लक्षित कीजिए.
  - समुदाय के लिए शिक्षा का समर्थन कीजिए.
- सार्वजनिक सेवाओं के वितरण में सामुदायिक सहभागिता और आउटरीच के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष निकालें।

केस-स्टडी: 2018

मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में, आपके पास सार्वजनिक डोमेन में अधिसूचित होने से पहले महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों और सड़क निर्माण परियोजनाओं जैसी आगामी बड़ी घोषणाओं तक पहुंच होती है। मंत्रालय एक मेगा सड़क परियोजना की घोषणा करने वाला है जिसके लिए चित्र पहले से ही मौजूद हैं। निजी पक्षों से न्यूनतम भूमि अधिग्रहण के साथ सरकारी भूमि का उपयोग करने के लिए योजनाकारों द्वारा पर्याप्त देखभाल की गई थी। सरकारी नियमों के अनुसार निजी पार्टियों के लिए मुआवजे की दर को भी अंतिम रूप दिया गया। वनों की कटाई को कम करने का भी ध्यान रखा गया। एक बार परियोजना की घोषणा हो जाने के बाद, यह उम्मीद की जाती है कि उस क्षेत्र और उसके आसपास रियल एस्टेट की कीमतों में भारी उछाल आएगा। इस बीच, संबंधित मंत्री इस बात पर जोर देते हैं कि आप सड़क को इस तरह से बनाएं कि यह उनके 20 एकड़ के फार्महाउस के करीब आ जाए। वह यह भी सुझाव देता है कि वह प्रस्तावित मेगा रोड परियोजना में और उसके आसपास, प्रचलित दर पर, जो कि बहुत मामूली है, आपकी पत्नी के नाम पर प्रचलित दर पर, जो कि बहुत मामूली है, एक बड़ा भूखंड खरीदने की सुविधा प्रदान करेगा। वह यह कहकर भी आपको समझाने की कोशिश करता है कि इसमें कोई बुराई नहीं है क्योंकि वह कानूनी तौर पर जमीन खरीद रहा है। यदि आपके पास जमीन खरीदने के लिए पर्याप्त धन नहीं है तो वह आपकी बचत को पूरा करने का भी वादा करता है। हालाँकि, पुनर्संरेखण के कार्य से, बहुत सारी कृषि भूमि का अधिग्रहण करना पड़ता है, जिससे सरकार पर काफी वित्तीय बोझ पड़ता है, और किसानों का विस्थापन भी होता है। जैसे कि यह पर्याप्त नहीं है, इसमें बड़ी संख्या में पेड़ों को काटना शामिल होगा जिससे इसके हरित आवरण का क्षेत्र नष्ट हो जाएगा। इस स्थिति का सामना करते हुए, आप क्या करेंगे? हितों के विभिन्न टकरावों की आलोचनात्मक जांच कीजिए और बताएं कि एक लोक सेवक के रूप में आपकी जिम्मेदारियां क्या हैं। (250 शब्द)

केस-स्टडी: 2017

तीन मंजिलों की अनुमति वाली एक इमारत, जिसे एक बिल्डर द्वारा अवैध रूप से 6 मंजिलों तक बढ़ाया जा रहा था, ढह गई। परिणामस्वरूप, महिलाओं और बच्चों सहित कई निर्दोष मजदूरों की मृत्यु हो गई। ये मजदूर अलग-अलग जगहों से आए प्रवासी हैं. सरकार ने तुरंत पीड़ित परिवारों को नकद राहत की घोषणा की और बिल्डर को गिरफ्तार कर लिया। देशभर में हो रही ऐसी घटनाओं के कारण बताएं? उनकी घटना को रोकने के उपाय सुझाएँ। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- परस्पर विरोधी मूल्यों और हितों के टकराव का विश्लेषण कीजिए।
  - हितों के टकराव को रोकने के लिए उपाय सुझाएं।
- विकास और टिकाऊ आजीविका के तरीकों के बीच बहस पर चर्चा कीजिए।
- एक लोक सेवक के रूप में भूमिकाओं और कर्तव्यों की पहचान कीजिए।
- कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनें.
- पेशेवर नैतिकता के महत्व और सूचना के सक्रिय प्रकटीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडीज: 2018

यह एक ऐसा राज्य है जहां शराबबंदी लागू है. आपको हाल ही में शराब के अवैध आसवन के लिए कुख्यात जिले का पुलिस अधीक्षक नियुक्त किया गया था। अवैध शराब के कारण कई मौतें होती हैं, इनकी रिपोर्ट नहीं की जाती है या उन्हें दर्ज नहीं किया जाता है, और जिला अधिकारियों के लिए एक बड़ी समस्या का कारण बनती है। अब तक का दृष्टिकोण इसे कानून और व्यवस्था की समस्या के रूप में देखना और तदनुसार निपटना था। छापे, गिरफ्तारी, पुलिस मामले और आपराधिक मुकदमे – इन सबका केवल सीमित प्रभाव था। समस्या पहले की तरह ही गंभीर बनी हुई है. आपके निरीक्षण से पता चलता है कि जिले के वे हिस्से जहां आसवन फलता-फूलता है, आर्थिक, औद्योगिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए हैं। खराब सिंचाई सुविधाओं के कारण कृषि बुरी तरह प्रभावित होती है। समुदायों के बीच बार-बार होने वाली झड़पों ने अवैध आसवन को बढ़ावा दिया। लोगों की स्थिति सुधारने के लिए न तो सरकार की ओर से और न ही सामाजिक संगठनों

की ओर से अतीत में कोई बड़ी पहल की गई थी। समस्या को नियंत्रण में लाने के लिए आप कौन सा नया तरीका अपनाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान करना।
- शराब की अनधिकृत बिक्री से जुड़े नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिए।
- स्थिति को नियंत्रित करने के लिए अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।
- बेरोजगारी और अपराध के बीच के दुष्चक्र और रोजगार प्रदान करने के तरीकों का हवाला देते हुए निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडी: 2018

एक बड़ा कॉर्पोरेट घराना बड़े पैमाने पर औद्योगिक रसायन बनाने का काम करता है। इसमें यह अतिरिक्त इकाई स्थापित करने का प्रस्ताव रखता है। पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव के कारण कई राज्यों ने इसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। लेकिन एक राज्य सरकार ने अनुरोध स्वीकार कर लिया और सभी विरोधों को दरकिनार करते हुए एक शहर के करीब इकाई की अनुमति दे दी। यह इकाई 10 साल पहले स्थापित की गई थी और हाल तक पूरे जोरों पर थी। औद्योगिक अपशिष्टों के कारण होने वाला प्रदूषण क्षेत्र की भूमि, पानी और फसलों को प्रभावित कर रहा था। इससे इंसानों और जानवरों के लिए गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं भी पैदा हो रही थीं। इसने आंदोलन की एक श्रृंखला को जन्म दिया जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया, जिससे कानून और व्यवस्था की समस्या पैदा हो गई जिसके लिए कड़ी पुलिस कार्रवाई की आवश्यकता पड़ी। लोगों के आक्रोश के बाद राज्य सरकार ने फैक्ट्री को बंद करने का आदेश दिया। फैक्ट्री के बंद होने से न केवल वे श्रमिक बेरोजगार हो गए जो फैक्ट्री में कार्यरत थे बल्कि वे भी जो सहायक इकाइयों में काम कर रहे थे। इसका उन उद्योगों पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ा जो इसके द्वारा निर्मित रसायनों पर निर्भर थे। एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में आपको इन मुद्दों से निपटने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, आप इसे कैसे संबोधित करेंगे? (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- मुद्दे, नैतिक पहलुओं और हितधारकों की पहचान कीजिए।
- समग्र प्रकृति में सामाजिक आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।
- विभिन्न संभावित विकल्पों का पता लगाएं और उन्हें गुणों के आधार पर तौलें।
- इस खतरे को नियंत्रित करने और समस्या का दीर्घकालिक समाधान प्रदान करने के लिए उठाए जाने वाले विभिन्न कदमों की सिफारिश करना।
- कार्रवाई का सर्वोत्तम संभव तरीका चुनकर स्थिति का जवाब दें।

केस-स्टडी: 2018

कंप्यूटर विशेषज्ञ और पूर्व सीआईए प्रशासक एडवर्ड स्नोडेन ने सरकारी निगरानी कार्यक्रमों के अस्तित्व के बारे में गोपनीय सरकारी दस्तावेज प्रेस को जारी किए। कई कानूनी विशेषज्ञों और अमेरिकी सरकार के अनुसार, उनकी कार्रवाई ने 1971 के जासूसी अधिनियम का उल्लंघन किया, जिसने राज्य के रहस्यों को लीक करने को देशद्रोह के कृत्य के रूप में पहचाना। फिर भी, इस तथ्य के बावजूद कि उसने कानून तोड़ा, स्नोडेन ने तर्क दिया कि कार्रवाई करना उसका नैतिक दायित्व था। उन्होंने खुलासे का औचित्य बताते हुए कहा कि उनका कर्तव्य था कि "जनता को सूचित करें कि उनके नाम पर क्या किया जाता है और उनके खिलाफ क्या किया जाता है।" स्नोडेन के अनुसार, सरकार द्वारा गोपनीयता के उल्लंघन को वैधता की परवाह किए बिना उजागर किया जाना था क्योंकि यहां सामाजिक कार्रवाई और सार्वजनिक नैतिकता के अधिक महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल थे। कई लोग स्नोडेन से सहमत थे। कुछ लोगों ने तर्क दिया कि उन्होंने कानून तोड़ा और राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किया, जिसके लिए उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

क्या आप इस बात से सहमत हैं कि स्नोडेन के कार्य कानूनी रूप से प्रतिबंधित होने के बावजूद नैतिक रूप से उचित थे? क्यों या क्यों नहीं? इस मामले में प्रतिस्पर्धी मूल्यों को तौलकर तर्क प्रस्तुत कीजिए (250 शब्द, 20 अंक)

दृष्टिकोण

- एडवर्ड स्नोडेन के मामले का विश्लेषण कीजिए, जिन्होंने निगरानी कार्यक्रमों के बारे में गोपनीय सरकारी दस्तावेज लीक किए थे।
- उसके कार्यों की वैधता और मुखबिरी के लिए उसके द्वारा प्रदान किए गए नैतिक औचित्य के बीच संघर्ष को स्पष्ट कीजिए।
- इस मामले में प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर चर्चा कीजिए, जिसमें कानून को बनाए रखने, राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने, व्यक्तिगत गोपनीयता अधिकारों की रक्षा करने और सरकारी कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने का महत्व शामिल है।
- नैतिक सिद्धांतों, संभावित परिणामों और समाज, गोपनीयता और सरकारी पारदर्शिता के लिए व्यापक निहितार्थों पर विचार करते हुए, स्नोडेन के कार्य नैतिक रूप से उचित थे या नहीं, इस पर अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण से निष्कर्ष निकालें।

केस-स्टडी: 2017

आप एक सरकारी विभाग में जन सूचना अधिकारी (पीआईओ) हैं। आप जानते हैं कि आरटीआई अधिनियम 2005 प्रशासन

में पारदर्शिता और जवाबदेही की परिकल्पना करता है। इस अधिनियम ने कथित रूप से मनमाने ढंग से किए जाने वाले प्रशासनिक व्यवहार और कार्यों पर अंकुश लगाने का काम किया है। हालाँकि, एक पीआईओ के रूप में आपने देखा है कि ऐसे नागरिक हैं जिन्होंने अपने लिए नहीं बल्कि ऐसे हितधारकों की ओर से आरटीआई आवेदन दायर किए हैं जो कथित तौर पर अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए जानकारी तक पहुंच चाहते हैं। वहीं, ऐसे आरटीआई कार्यकर्ता भी हैं जो नियमित रूप से आरटीआई आवेदन दायर करते हैं और निर्णय निर्माताओं से धन उगाही करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार की आरटीआई सक्रियता ने प्रशासन के कामकाज पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और संभवत: उन आवेदनों की वास्तविकता को भी खतरे में डाल दिया है जिनका उद्देश्य अनिवार्य रूप से न्याय प्राप्त करना है। वास्तविक और गैर-वास्तविक एप्लिकेशनों को अलग करने के लिए आप क्या उपाय सुझाएंगे? अपने सुझावों के गुण-दोष बताइये।

(250 शब्द, 20)

दृष्टिकोण

- यहां शामिल हितधारकों और इस मामले के अध्ययन में एक हितधारक के रूप में आपके सामने आने वाली नैतिक चिंताओं की पहचान कीजिए।
- वास्तविक और गैर-वास्तविक दोनों आरटीआई आवेदनों की उपस्थिति को पहचानें, जो प्रशासन के कामकाज और आरटीआई प्रक्रिया की वैधता को प्रभावित कर सकते हैं।
- न्याय पाने के उद्देश्य से और व्यक्तिगत हितों या जबरन वसूली से प्रेरित एप्लिकेशनों के बीच अंतर करने की आवश्यकता पर चर्चा कीजिए।
- वास्तविक और गैर-वास्तविक आवेदनों के बीच अंतर करते हुए आरटीआई अधिनियम की अखंडता(पदजमहतपजल) बनाए रखने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सुझाए गए उपायों का सारांश प्रस्तुत कीजिए।

केस स्टडी: 2017

आप एक ईमानदार एवं जिम्मेदार सिविल सेवक हैं। आप अक्सर निम्नलिखित बाते देखते हैं:

1. एक सामान्य धारणा है कि नैतिक आचरण का पालन करने से व्यक्ति को स्वयं कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और परिवार के लिए समस्याएँ पैदा हो सकती हैं, जबकि अनुचित प्रथाएँ कैरियर के लक्ष्यों तक पहुँचने में मदद कर सकती हैं।
2. जब अनुचित साधन अपनाने वाले लोगों की संख्या बड़ी है, तो नैतिक साधनों के प्रति रुझान रखने वाले एक छोटे से अल्पसंख्यक से कोई फर्क नहीं पड़ता।
3. नैतिक साधनों से चिपके रहना बड़े विकासात्मक लक्ष्यों के लिए हानिकारक है
4. हालाँकि कोई स्वयं को बड़े अनैतिक कार्यों में शामिल नहीं कर सकता है, छोटे उपहार देना और स्वीकार करना प्रणाली को अधिक कुशल बनाता है।
5. उपरोक्त कथनों का उनके गुण-दोषों सहित विवेचना कीजिए। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- प्रस्तुत परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए प्रत्येक कथन का व्यक्तिगत रूप से विश्लेषण कीजिए।
- नैतिक आचरण और व्यक्तिगत और व्यावसायिक परिणामों पर इसके प्रभाव के संबंध में प्रत्येक कथन की अंतर्निहित धारणाओं और निहितार्थों को पहचानें।
- नैतिक आचरण का उदाहरण स्थापित करने और शासन और सार्वजनिक सेवा में ईमानदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने में सिविल सेवकों और नेताओं की भूमिका पर प्रकाश डालें।
- व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक कल्याण के लिए नैतिक आचरण के महत्व पर जोर देने वाले मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

केस-स्टडी: 2016

सरस्वती अमेरिका में एक सफल आईटी पेशेवर थीं। देश के लिए कुछ करने की देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर वह भारत लौट आई। कुछ अन्य समान विचारधारा वाले दोस्तों के साथ मिलकर, उन्होंने एक गरीब ग्रामीण समुदाय के लिए एक स्कूल बनाने के लिए एक एनजीओ बनाया।

स्कूल का उद्देश्य मामूली लागत पर सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली आधुनिक शिक्षा प्रदान करना था। उसे जल्द ही पता चला कि उसे कई सरकारी एजेंसियों से अनुमति लेनी होगी। नियम और प्रक्रियाएँ काफी भ्रमित करने वाली और बोझिल थीं। जिस बात ने उन्हें सबसे ज्यादा निराश किया वह थी देरी, अधिकारियों का उदासीन रवैया और रिश्वत की लगातार मांग। उनके अनुभव और उनके जैसे कई अन्य लोगों के अनुभव ने लोगों को सामाजिक सेवा परियोजनाओं को अपनाने से रोका है।

स्वैच्छिक सामाजिक कार्यों पर सरकारी नियंत्रण का एक उपाय आवश्यक है। लेकिन इसका प्रयोग जबरदस्ती या भ्रष्ट तरीके से नहीं किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए आप कौन से उपाय सुझा सकते हैं कि उचित नियंत्रण तो रखा जाए लेकिन सार्थक, ईमानदार एनजीओ प्रयासों को विफल न किया जाए?

(25 अंक)

दृष्टिकोण

- वर्तमान स्थिति का आकलन कीजिए और हितधारकों की पहचान कीजिए।
- स्वैच्छिक सामाजिक कार्यों पर सरकारी नियंत्रण सुनिश्चित करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।
  - विनियामक प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित कीजिए।
  - .व्हिसलब्लोअर संरक्षण और शिकायत निवारण।
  - ऑनलाइन पोर्टल और सूचना प्रसार।
- हड़ताल पर नियंत्रण रखने और नेक इरादे वाले, ईमानदार एनजीओ प्रयासों का समर्थन करने के बीच संतुलन के महत्व के साथ निष्कर्ष निकालें।

केस स्टडी: 2016

खनन, बांध और अन्य बड़े पैमाने की परियोजनाओं के लिए आवश्यक भूमि ज्यादातर आदिवासियों, पहाड़ी निवासियों और ग्रामीण समुदायों से अधिग्रहित की जाती है। विस्थापितों को कानूनी प्रावधानों के अनुसार आर्थिक मुआवजा दिया जाता है। हालाँकि, भुगतान में अक्सर देरी होती है। किसी भी स्थिति में, यह विस्थापित परिवारों का अधिक समय तक भरण-पोषण नहीं कर सकता। इन लोगों के पास किसी अन्य व्यवसाय में शामिल होने के लिए विपणन योग्य कौशल नहीं है। वे अंततः कम वेतन पाने वाले प्रवासी मजदूर बनकर रह जाते हैं। इसके अलावा, उनका जीवन नष्ट हो जाता है। इस प्रकार, सामुदायिक विकास के पारंपरिक तरीकों का लाभ उद्योगों, उद्योगपतियों और शहरी समुदायों को जाता है जबकि लागत इन गरीब असहाय लोगों पर डाली जाती है। लागत और लाभ का यह अन्यायपूर्ण वितरण अनैतिक है। मान लीजिए कि आपको ऐसे विस्थापित व्यक्तियों के लिए एक बेहतर मुआवजा-सह-पुनर्वास नीति का मसौदा तैयार करने का काम सौंपा गया है, तो आप इस समस्या से कैसे निपटेंगे और आपकी सुझाई गई नीति के मुख्य तत्व क्या होंगे? (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- इस मामले में शामिल हितधारकों और नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिए।
- स्थिति का आकलन:
  - बड़े पैमाने की परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण से उत्पन्न लागत और लाभों के अन्यायपूर्ण वितरण को पहचानें, जिसके परिणामस्वरूप आदिवासियों, पहाड़ी निवासियों और ग्रामीण समुदायों का विस्थापन होता है।
- बड़े पैमाने की परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में नैतिक चिंताओं को दूर करने और लागत और लाभों का उचित वितरण सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दें।

केस स्टडी: 2015

यह एक आपदा-प्रवण राज्य है जहां अक्सर भूस्खलन, जंगल की आग, बादल फटना, बाढ़ और भूकंप आदि आते रहते हैं। इनमें से कुछ मौसमी और अक्सर अप्रत्याशित होते हैं। आपदा की भयावहता हमेशा अप्रत्याशित होती है। एक मौसम के दौरान, बादल फटने से विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन हुआ, जिससे बड़ी संख्या में लोग हताहत हुए। सड़कों, पुलों और बिजली उत्पादन इकाइयों जैसे बुनियादी ढांचे को बड़ा नुकसान हुआ। इसके कारण 100000 से अधिक तीर्थयात्री, पर्यटक और अन्य स्थानीय लोग विभिन्न मार्गों और स्थानों पर फंस गए। आपके उत्तरदायित्व वाले क्षेत्र में फंसे लोगों में वरिष्ठ नागरिक, अस्पतालों में मरीज, महिलाएं और बच्चे, पैदल यात्री, पर्यटक, सत्तारूढ़ दल के क्षेत्रीय अध्यक्ष अपने परिवार के साथ, और अतिरिक्त जेल कर्मचारी शामिल थे। राज्य के एक सिविल सेवा अधिकारी के रूप में, आप इन लोगों को बचाने का क्रम क्या होगा और क्यों? औचित्य दीजिए.

दृष्टिकोण

- **स्थिति का आकलन:**
  - प्रभावित क्षेत्रों, फंसे हुए लोगों की संख्या और बुनियादी ढांचे को हुए नुकसान की गंभीरता सहित आपदा की सीमा के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
- फंसे हुए व्यक्तियों को उनकी स्थितियों की तात्कालिकता और उनके सामने आने वाले जोखिम के स्तर के आधार पर बचाने के लिए प्राथमिकता क्रम स्थापित कीजिए।
  - बचाव प्रयासों का समन्वय.
- निकासी के आदेश का औचित्य सिद्ध कीजिए.

केस स्टडी: 2014

आजकल दुनिया भर में आर्थिक विकास पर जोर बढ़ रहा है। साथ ही, विकास के कारण होने वाले पर्यावरणीय क्षरण को लेकर भी चिंता बढ़ रही है। कई बार, हमें विकासात्मक गतिविधि और पर्यावरणीय गुणवत्ता के बीच सीधे टकराव का सामना करना पड़ता है। न तो विकास प्रक्रिया को रोकना या कम करना संभव है, न ही पर्यावरण को खराब करते रहना उचित है, क्योंकि इससे हमारे अस्तित्व को ही खतरा है।

कुछ व्यवहार्य रणनीतियों पर चर्चा कीजिए जिन्हें इस संघर्ष को खत्म करने के लिए अपनाया जा सकता है और जिससे सतत विकास हो सकता है। (250 शब्द)

दृष्टिकोण

- आर्थिक विकास और पर्यावरणीय गिरावट के बीच बढ़ते संघर्ष की अवधारणा का परिचय दें।
- संघर्ष को समझना:
  - संघर्ष के पीछे के कारणों पर चर्चा कीजिए, जैसे पर्यावरणीय प्रभावों पर पर्याप्त विचार किए बिना आर्थिक विकास की खोज।
  - पारिस्थितिक तंत्र, जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु परिवर्तन पर अनियंत्रित विकास के परिणामों की व्याख्या कीजिए।
- अंत में, आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों पर विचार करते हुए सतत विकास प्राप्त करने के लिए व्यवहार्य रणनीतियों की आवश्यकता पर प्रकाश डालें।

केस स्टडी: 2014

हमारे देश में ग्रामीण लोगों का कस्बों और शहरों की ओर पलायन तेजी से बढ़ रहा है। इससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में गंभीर समस्याएं पैदा हो रही हैं। दरअसल, चीजें वास्तव में असहनीय होती जा रही हैं। क्या आप इस समस्या का विस्तार से विश्लेषण कर सकते हैं और न केवल सामाजिक-आर्थिक बल्कि इस समस्या के लिए जिम्मेदार भावनात्मक और व्यवहारिक कारकों का भी संकेत दे सकते हैं? साथ ही, स्पष्ट रूप से बताएं कि क्यों-

1. शिक्षित ग्रामीण युवा शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित होने का प्रयास कर रहे हैं;
2. भूमिहीन गरीब लोग शहरी मलिन बस्तियों की ओर पलायन कर रहे हैं;
3. यहां तक कि कुछ किसान अपनी जमीन बेच रहे हैं और छोटी-मोटी नौकरियां लेकर शहरी इलाकों में बसने की कोशिश कर रहे हैं।
4. आप कौन से संभावित कदम सुझा सकते हैं जो हमारे देश की इस गंभीर समस्या को नियंत्रित करने में कारगर होंगे?

दृष्टिकोण

इस केस स्टडी के लिए गरीबी और बेरोजगारी के बीच संबंध के समग्र ज्ञान की आवश्यकता है जो ग्रामीण युवाओं के बीच प्रवासन का कारण बन रहा है।

- बढ़ते ग्रामीण-शहरी प्रवास और ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों पर इसके प्रभाव का एक सिंहावलोकन प्रदान कीजिए।
- समस्या का विश्लेषण : प्रवासन मुद्दे में योगदान देने वाले सामाजिक-आर्थिक, भावनात्मक और व्यवहारिक कारकों का अन्वेषण कीजिए।
- **प्रवासन के कारण:**
  - शिक्षित ग्रामीण युवा : शिक्षित व्यक्तियों को शहरी क्षेत्रों की ओर आकर्षित करने वाले कारकों और अवसरों की जांच कीजिए।
  - भूमिहीन गरीब लोग: ड्राइविंग के कारकों पर चर्चा कीजिए।?

केस-स्टडी: 2013

निम्नलिखित प्रश्नों में, प्रस्तुत मामलों का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए और फिर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:

एक जन सूचना अधिकारी को आरटीआई अधिनियम के तहत एक आवेदन प्राप्त हुआ है। जानकारी एकत्र करने के बाद, पीआईओ को पता चलता है कि जानकारी उसके द्वारा लिए गए कुछ निर्णयों से संबंधित है, जो पूरी तरह से सही नहीं पाए गए। अन्य कर्मचारी भी थे जो इन निर्णयों में पक्षकार थे। जानकारी का खुलासा करने पर उनके और उनके कुछ सहयोगियों के खिलाफ सजा की संभावना के साथ अनुशासनात्मक कार्रवाई होने की संभावना है। गैर-प्रकटीकरण या आंशिक प्रकटीकरण या जानकारी के छद्म प्रकटीकरण के परिणामस्वरूप कम सजा होगी या कोई सजा नहीं होगी।

पीआईओ वैसे तो एक ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति होता है लेकिन यह विशेष निर्णय, जिस पर आरटीआई आवेदन दायर किया गया है, गलत निकला। वह आपके पास सलाह के लिए आता है।

निम्नलिखित कुछ सुझाए गए विकल्प हैं। कृपया प्रत्येक विकल्प के गुण और दोषों का मूल्यांकन कीजिए:

1. पीआईओ मामले को अपने वरिष्ठ अधिकारी के पास भेज सकता है और उसकी सलाह ले सकता है और सलाह के अनुसार सख्ती से कार्य कर सकता है, भले ही वह वरिष्ठ की सलाह से पूरी तरह सहमत न हो।
2. पीआईओ छुट्टी पर जा सकता है और मामले को कार्यालय में अपने उत्तराधिकारी के पास छोड़ सकता है या आवेदन को किसी अन्य पीआईओ को स्थानांतरित करने का अनुरोध कर सकता है।
3. पीआईओ सच्चाई से जानकारी का खुलासा करने के परिणामों पर विचार कर सकता है, जिसमें उसके करियर पर प्रभाव भी शामिल है, और इस तरीके से उत्तर दे सकता है जिससे उसे या उसके करियर को कोई खतरा न हो, लेकिन साथ ही

इसकी सूचना सामग्री पर थोड़ा समझौता किया जा सकता है। सूचना।

4. पीआईओ अपने अन्य सहयोगियों से परामर्श कर सकता है जो निर्णय में पक्षकार हैं और उनकी सलाह के अनुसार कार्रवाई कर सकते हैं।
5. कृपया उचित कारण बताते हुए यह भी बताएं (उपरोक्त विकल्पों तक सीमित किए बिना) कि आप क्या सलाह देना चाहते हैं। (20 अंक)

दृष्टिकोण

- हितधारकों, मुद्दों और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए।
- उपलब्ध विकल्पों को पहचानें और प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिए।
  - मामले को वरीय अधिकारी के पास भेजना और उनकी सलाह के अनुसार सख्ती से काम करना.
  - छुट्टी पर जाना या आवेदन के स्थानांतरण का अनुरोध करना।
  - परामर्श देने वाले सहकर्मी जो निर्णय के पक्षकार थे।
- एक उपयुक्त विकल्प चुनें और उस विकल्प को चुनने के लिए नैतिक और व्यावहारिक कारण बताएं।

केस-स्टडीः 2013

वित्त मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में, आपके पास उन नीतिगत निर्णयों के बारे में कुछ गोपनीय और महत्वपूर्ण जानकारी तक पहुंच है जो सरकार घोषित करने वाली है। इन निर्णयों का आवास और निर्माण उद्योग पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की संभावना है। अगर बिल्डरों को यह जानकारी पहले से मिल जाए तो वे भारी मुनाफा कमा सकते हैं। बिल्डरों में से एक ने सरकार के लिए बहुत सारे गुणवत्तापूर्ण काम किए हैं और वह आपके तत्काल वरिष्ठ का करीबी माना जाता है, जो आपसे उक्त बिल्डर को यह जानकारी बताने के लिए कहता है। (20 अंक)

1. आपके लिए क्या विकल्प उपलब्ध हैं ?
2. इनमें से प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिए और कारण बताते हुए वह विकल्प चुनें जिसे आप अपनाएंगे।

दृष्टिकोण

- मुद्दे और नैतिक पहलुओं की पहचान कीजिए।
- उपलब्ध विकल्पों को पहचानें।
  - प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिए।
- पसंदीदा विकल्प चुनें और कारण बताएं।

❖ ❖ ❖

8 नैतिकता और उभरती प्रौद्योगिकियाँ

8.1 परिचय

- उभरती प्रौद्योगिकियाँ **प्रौद्योगिकी के नवीन और उन्नत क्षेत्रों को संदर्भित करती हैं** जिनमें समाज के विभिन्न पहलुओं पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालने की क्षमता होती है। जैसे-जैसे ये प्रौद्योगिकियाँ विकसित होती जा रही हैं, **नैतिक विचार उत्तरोत्तर** महत्त्वपूर्ण होते जा रहे हैं।
- **ये इस अर्थ में नवोन्वेषी हैं कि इनके द्वारा विश्व के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के नए और बेहतर समाधानों को प्राप्त किया जा सकता हैं।**
- ये अभी भी विकास के चरण में हैं एवं उनसे **कोई भी नहीं या सीमित संख्या** में उत्पाद या सेवाएँ निर्मित की गई हैं। **इन प्रौद्योगिकियों से महत्त्वपूर्ण आर्थिक मूल्य और गतिविधि उत्पन्न होने की उम्मीद है।**
- यहाँ उभरती प्रौद्योगिकियों और उनसे जुड़े नैतिक निहितार्थों के कुछ उदाहरण दिये गए हैं:

8.2 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence-AI) कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो ऐसे कार्यों को करने में सक्षम तथा **बुद्धिमत्ता युक्त मशीनें बनाने पर केंद्रित है** जिनके लिये आमतौर पर मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। इसमें **कंप्यूटर सिस्टम और एल्गोरिदम को विकसित करना शामिल है जो इंसानों की तरह ही सीखने तर्क करने, समस्या का समाधान करने एवं निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।**

AI के अनुप्रयोगों के उदाहरणों में **सिरी और एलेक्सा जैसे वर्चुअल असिस्टेंट, सेल्फ-ड्राइविंग कारें, धोखाधड़ी का पता लगाने वाली प्रणालियाँ और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर वैयक्तिकृत अनुशंसाएँ शामिल हैं।**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) नैतिक और नैतिक मूल्यों से संबंधित मुद्दों की एक शृंखला प्रस्तुत करती है जिन पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। **यहाँ कुछ प्रमुख चिंताएं हैं:**

- **AI द्वारा नैतिक निर्णय लेना:** AI प्रणाली या तंत्र में कुछ स्थितियों में नैतिक निर्णय लेने की आवश्यकता हो सकती है, जैसे **संभावित दुर्घटनाओं के बीच चयन करने वाले स्वायत्त वाहन।** AI तंत्र को प्रोग्राम करने हेतु नैतिक सिद्धांतों को निर्धारित करना और नैतिक दुविधाओं की जटिलताओं को संबोधित करना एक महत्त्वपूर्ण नैतिक चुनौती है।
- **मानव AI अन्योन्यक्रिया और निर्भरता:** जैसे-जैसे AI का हमारे दैनिक जीवन में अधिकाधिक उपयोग बढ़ता जा रहा है, वैसे ही AI निर्मित तंत्र पर अत्यधिक निर्भरता के कारण, मानव कौशल का क्षरण और मानव संसाधन की संभावित हानि से संबंधित चिंताएं उत्पन्न होती जा रही हैं। इन नैतिक विचारों में मानव नियंत्रण को संरक्षित करना, पारदर्शिता को बढ़ावा देना और सार्थक मानव-AI सहयोग को बनाए रखना शामिल है।
- **स्वायत्त हथियार और युद्ध:** स्वायत्त हथियार प्रणालियों (Autonomous Weapons Systems) का विकास मशीनों के घातक उपयोग से संबंधित नैतिक मुद्दों को उत्पन्न कर सकता है। चिंताओं में मानव नियंत्रण का अभाव, अंधाधुंध उपयोग की संभावना और सशस्त्र संघर्षों में नैतिक विचारों का क्षरण शामिल है।
- **रोजगार का विस्थापन और आर्थिक प्रभाव:** AI स्वचालन में विभिन्न उद्योगों को बाधित करने तथा रोजगार के विस्थापन को को उत्पन्न करने की क्षमता है। नैतिक विचारों में सामाजिक-आर्थिक प्रभाव को संबोधित करना, पुनः प्रशिक्षण के अवसर सुनिश्चित करना और प्रभावित श्रमिकों हेतु उचित परिवर्तन को बढ़ावा देना शामिल है।
- **पूर्वाग्रह और भेदभाव:** AI तंत्र प्रशिक्षण डेटा में मौजूद पूर्वाग्रहों को बनाए रख सकते हैं, जिससे नियुक्ति, ऋण अनुमोदन या आपराधिक न्याय जैसे क्षेत्रों में भेदभावपूर्ण परिणाम हो सकते हैं। AI विकास में निष्पक्षता सुनिश्चित करना और भेदभाव से बचना एक महत्त्वपूर्ण नैतिक चुनौती है।
- **गोपनीयता और डेटा सुरक्षा:** AI बड़ी मात्रा में डेटा पर निर्भर करता है, जिससे व्यक्तिगत जानकारी की गोपनीयता और सुरक्षा के बारे में चिंताएं बढ़ जाती हैं। नैतिक विचारों में सूचित सहमति प्राप्त करना, संवेदनशील डेटा की सुरक्षा करना और अनधिकृत पहुंच या दुरुपयोग को रोकना शामिल है।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता:** AI तंत्र जटिल हो सकते हैं, जिससे उनकी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को समझना

चुनौतीपूर्ण हो सकता है। पारदर्शिता का अभाव जवाबदेही के बारे में चिंताओं को बढ़ाती है, क्योंकि यह निर्धारित करना मुश्किल हो जाता है कि परिणामों के लिये कौन जिम्मेदार है या संभावित त्रुटियों या पूर्वाग्रहों को संबोधित करना मुश्किल हो जाता है।

- **आर्थिक और सामाजिक असमानता:** यदि AI प्रौद्योगिकियों तक पहुंच और लाभ कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित हैं तो AI मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकती है। AI के लाभों और अवसरों का समान वितरण सुनिश्चित करना एक महत्त्वपूर्ण नैतिक विचार है।

AI के अनैतिकपूर्ण उपयोग को दर्शाने वाले उदाहरण

- **डीपफेक मैनिपुलेशन:** AI एल्गोरिदम अत्यधिक विश्वसनीय डीपफेक सामग्री निर्मित कर सकता है, जैसे मैनिपुलेटेड या हेरफेर की गई छवियां या वीडियो, जिसका उपयोग लोगों को धोखा देने और हेरफेर करने के लिये किया जा सकता है। इससे गलत सूचना, पहचान का गलत उपयोग तथा राजनीति एवं सार्वजनिक चर्चा सहित विभिन्न संदर्भों में दुरुपयोग की संभावना के संबंध में नैतिक चिंताएं पैदा होती हैं।
- **ऑटोनोमस वेपन्स/स्वायत्त हथियार:** AI-संचालित स्वायत्त हथियारों (Autonomous Weapons) का विकास युद्ध के क्षेत्र में नैतिक चिंताओं को बढ़ाता है। ये हथियार संभावित रूप से मानवीय हस्तक्षेप के बिना जीवन-या-मृत्यु के निर्णय ले सकते हैं, जिससे नियंत्रण और जवाबदेही का नुकसान हो सकता है। स्वायत्त हथियारों से जुड़े जोखिमों में आकस्मिक क्षति, संघर्षों का बढ़ना तथा युद्ध में नैतिक विचारों का क्षरण शामिल है।
- **एल्गोरिथम ट्रेडिंग मैनिपुलेशन:** वित्तीय बाजारों में उपयोग किए जाने वाले AI एल्गोरिदम से व्यक्तिगत लाभ के लिये हेरफेर किया जा सकता है। उदाहरण के लिये, हाई फ्रीक्वेंसी ट्रेडिंग (High-frequency trading) अभूतपूर्व गति से बाजार के उतार-चढ़ाव का फायदा उठा सकता है, जिससे संभावित रूप से बाजार में हेरफेर, अनुचित लाभ और अत्यधिक अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।

AI की विश्ववसनीयता हेतु यूरोपीय आयोग द्वारा जारी नैतिक दिशा-निर्देश:

1. **मानव समूह और निरीक्षण:** AI प्रणाली को उपयोगकर्त्ता समूह का समर्थन करके, मौलिक अधिकारों को बढ़ावा देने और मानव निरीक्षण की अनुमति देकर एक लोकतांत्रिक, समृद्ध और न्यायसंगत समाज हेतु प्रवर्तक के रूप में कार्य करना चाहिये।
2. **तकनीकी मजबूती और सुरक्षा:** AI प्रणाली को लचीला और सुरक्षित होना आवश्यक है।
3. **गोपनीयता और डेटा गवर्नेंस:** गोपनीयता और डेटा सुरक्षा हेतु पूर्ण सम्मान सुनिश्चित करने के अलावा, डेटा की गुणवत्ता और प्रामाणिकता पर विचार करते हुए तथा डेटा तक वैध पहुंच सुनिश्चित करते हुए पर्याप्त डेटा गवर्नेंस तंत्र भी सुनिश्चित किया जाना चाहिये।
4. **पारदर्शिता:** AI प्रणाली व्याख्यात्मकता के सिद्धांत पर आधारित होना चाहिये और इसमें शामिल तत्त्वों-डेटा, सिस्टम और व्यवसाय मॉडल में पारदर्शिता और संचार शामिल होना चाहिये।
5. **विविधता, गैर-भेदभाव और निष्पक्षता:** विविधता और समावेशन को सक्षम करने के अलावा AI प्रणाली के पूरे जीवनचक्र में अनुचित पूर्वाग्रह से बचाव, पहुंच, सार्वभौमिक योजना एवं हितधारक की भागीदारी शामिल है।
6. **सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण:** AI प्रणालियों से भावी पीढ़ियों सहित सभी मनुष्यों को लाभ होना चाहिये अतः यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि वे टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल हों।

जवाबदेही: जवाबदेही की आवश्यकता अन्य आवश्यकताओं को पूरा करती है और निष्पक्षता के सिद्धांत से निकटता से संबंधित है।

निष्कर्ष:

जैसे-जैसे AI प्रौद्योगिकियां हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में आगे बढ़ रही हैं और एकीकृत होती जा रही हैं, नैतिक दिशा-निर्देशों को प्राथमिकता देना तथा उनका जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग सुनिश्चित करना अनिवार्य है। AI पर नैतिक विचार न केवल सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के लिये आवश्यक है, बल्कि एक ऐसे भविष्य को आकार देने के लिये भी आवश्यक है जहां AI प्रौद्योगिकियों का उपयोग मानवता कल्याण के लिये किया जाए। यह सुनिश्चित करना एक सामूहिक जिम्मेदारी है कि AI नैतिक रूप से आगे बढ़े, जिससे व्यक्तियों और समाज को समग्र रूप से लाभ मिल सके।

8.3 आभासी वास्तविकता (VR) और संवर्धित वास्तविकता (AR)

आभासी वास्तविकता (Virtual Reality-VR) उपयोगकर्ताओं को एक सिम्युलेटेड डिजिटल (Simulated Digital) वातावरण में ले जाती है जो वास्तविक दुनिया से पूरी तरह से अलग हो सकता है। इसमें आम तौर पर एक VR हेडसेट पहनना शामिल होता है जो

आपकी आंखों और कानों को ढकता है और वास्तविक दुनिया से अलग कर देता है और आपको आभासी वातावरण में डुबो देता है। VR का उपयोग आमतौर पर गेमिंग, प्रशिक्षण सिमुलेशन, वर्चुअल टूर और यहाँ तक कि चिकित्सीय अनुप्रयोगों में भी किया जाता है।

दूसरी ओर, संवर्धित वास्तविकता (Augmented Reality-AR), वास्तविक दुनिया पर आभासी तत्त्वों को प्रस्तुत करती है, अतिरिक्त डिजिटल जानकारी के साथ वास्तविक दुनिया के वातावरण को बढ़ाती है। AR का अनुभव **स्मार्टफोन, टैबलेट या स्मार्ट ग्लास** जैसे उपकरणों के माध्यम से किया जाता है, जो वास्तविक दुनिया के दृश्य को एकत्र करने और उस पर आभासी वस्तुओं या जानकारी को प्रत्यारोपित करने के लिये कैमरों का उपयोग करते हैं।

उदाहरण के लिये, AR का उपयोग वास्तविक जीवन की छवि के ऊपर डिजिटल जानकारी प्रदर्शित करने हेतु किया जा सकता है, जैसे कि लाइव मैप (Live Map) पर दिशा-निर्देश दिखाना या अपने लिविंग रूम में आभासी फर्नीचर रखकर यह देखना कि यह कैसा दिखेगा।

VR और AR से संबंधित कुछ नैतिक चिंताएँ नीचे दी गई हैं:

- **गोपनीयता और डेटा सुरक्षा:**
  - **चिंता:** VR/AR डिवाइस व्यक्तिगत डेटा एकत्र और संसाधित करते हैं, जिससे गोपनीयता और डेटा सुरक्षा से संबंधित चिंताएं बढ़ जाती हैं।
  - **उदाहरण:** एक VR एप्लिकेशन उपयोगकर्त्ता की गतिविधियों, इंटरैक्शन और शारीरिक प्रतिक्रियाओं को ट्रैक कर सकता है, जो संवेदनशील हो सकता है तथा अनधिकृत पहुंच या दुरुपयोग को रोकने हेतु उचित डेटा सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है।
- **नैतिक उपयोग और सामग्री:**
  - **चिंता:** VR/AR प्रौद्योगिकियों का उपयोग हानिकारक, आपत्तिजनक या अनैतिक सामग्री बनाने और वितरित करने हेतु किया जा सकता है।
  - **उदाहरण:** VR/AR अनुभव जो हिंसा, घृणास्पद भाषण या स्पष्ट सामग्री को दर्शाते हैं, उनसे नकारात्मक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न हो सकते हैं, जिससे उचित सामग्री निर्माण और वितरण सुनिश्चित करने हेतु दिशा-निर्देशों और विनियमों की आवश्यकता होती है।
- **डिजिटल डिवाइड और एक्सेस:**
  - **चिंता:** VR/AR प्रौद्योगिकियों तक पहुंच सीमित हो सकती है, जो संभावित रूप से मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकती है।
  - **उदाहरण:** VR/AR उपकरण और अनुभव महंगे हो सकते हैं एवं उनकी उपलब्धता कुछ जनसांख्यिकी या भौगोलिक क्षेत्रों तक सीमित हो सकती है। यह एक डिजिटल विभाजन को उत्पन्न कर सकता है, जहां कुछ व्यक्तियों के पास ही उन्नत अनुभवों तक पहुंच होती है जबकि अन्य के पास नहीं।
- **नैतिक प्रतिनिधित्व और पूर्वाग्रह:**
  - **चिंता:** VR/AR अनुप्रयोगों को पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता से बचते हुए निष्पक्ष और समावेशी प्रतिनिधित्व हेतु प्रयास करना चाहिये।
  - **उदाहरण:** यदि AR का अनुप्रयोग वास्तविक दुनिया की वस्तुओं या लोगों पर डिजिटल जानकारी को अध्यारोपित करते हैं, तो नस्ल, लिंग या अन्य विशेषताओं के आधार पर पूर्वाग्रहों के प्रबल होते या रूढ़िवादिता को बनाए रखने का जोखिम उत्पन्न हो सकता है। नैतिक विचारों में विविध और समावेशी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना शामिल है।

निष्कर्ष:

इन नैतिक चिंताओं को संबोधित करने के लिये उद्योग मानकों, दिशा-निर्देशों और विनियमों की आवश्यकता होती है। VR/AR प्रौद्योगिकियों के निर्माताओं और प्रदाताओं को उपयोगकर्त्ता की सुरक्षा, गोपनीयता और समावेशी सामग्री निर्माण को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। पारदर्शिता, सूचित सहमति और उपयोगकर्त्ता की जागरूकता जिम्मेदारपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देने तथा VR और AR प्रौद्योगिकियों से जुड़े संभावित नैतिक मुद्दों को कम करने में महत्त्वपूर्ण हैं।

मेटावर्स और इससे जुड़े नैतिक मुद्दें

मेटावर्स एक आभासी वास्तविकता स्थान (Virtual Reality Space) **या एक सामूहिक आभासी साझा स्थान** (Collective Virtual Shared Space) को संदर्भित करता है जहाँ लोग त्रि-आयामी वातावरण (Three-Dimensional Environment) में डिजिटल वस्तुओं के द्वारा एक-दूसरे से बातचीत कर सकते हैं। इसे अक्सर एक व्यापक और परस्पर जुड़े डिजिटल यूनिवर्स के रूप में देखा जाता है जो व्यक्तिगत आभासी वास्तविकता अनुभवों से परे फैला हुआ है

मेटावर्स की अवधारणा, **आभासी वास्तविकता** (VR), **संवर्धित वास्तविकता** (AR) और इंटरनेट के अभिसरण द्वारा निर्मित एक आभासी साझा स्थान, कई नैतिक मुद्दों को प्रस्तुत करते हैं। यहाँ मेटावर्स से जुड़ी कुछ नैतिक चिंताएं दी गई हैं:

- **गोपनीयता और डेटा सुरक्षा:** मेटावर्स में, उपयोगकर्त्ता आभासी बातचीत में संलग्न होते हैं, छवि निर्मित करते हैं

और व्यक्तिगत जानकारी साझा करते हैं। उपयोगकर्त्ता के **डेटा संग्रह, भंडारण और उपयोग के साथ-साथ अनधिकृत पहुंच, डेटा उल्लंघनों** और व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग की संभावना के संबंध में नैतिक चिंताएं उत्पन्न होती हैं।

- **पहचान और प्रामाणिकता:** मेटावर्स **वास्तविक और आभासी पहचान** के बीच की रेखाओं को धुंधला कर देता है। पहचान की चोरी, प्रतिरूपण और नकली व्यक्तित्वों के निर्माण के बारे में एक नैतिक चिंता है जो आभासी वातावरण में धोखाधड़ीपूर्ण गतिविधियों या धोखे को उत्पन्न कर सकती है।
- **डिजिटल विभाजन और समावेशन:** मेटावर्स **मौजूदा असमानताओं** को बढ़ा सकता है, जिससे उन लोगों के बीच डिजिटल विभाजन उत्पन्न हो सकता है जिनके पास आवश्यक प्रौद्योगिकियों और संसाधनों तक पहुंच है और जिनके पास नहीं है। नैतिक विचारों में न्यायसंगत पहुंच और समावेशिता सुनिश्चित करना और सामाजिक-आर्थिक स्थिति या अन्य कारकों के आधार पर संभावित भेदभाव या बहिष्कार को संबोधित करना शामिल है।
- **बौद्धिक संपदा और कॉपीराइट:** मेटावर्स में, उपयोगकर्त्ता आभासी संपत्ति, डिजाइन और सामग्री बना और साझा कर सकते हैं। इससे **बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करने, अनधिकृत नकल या वितरण को रोकने एवं रचनाकारों और नवप्रवर्तकों हेतु उचित मुआवजा सुनिश्चित करने में नैतिक मुद्दे उठते सकते हैं।**
- **मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव:** मेटावर्स की व्यापक प्रकृति उपयोगकर्त्ताओं पर मनोवैज्ञानिक और सामाजिक प्रभाव डाल सकती है। नैतिक चिंताएँ लत,आभासी लत, मानसिक स्वास्थ्य और वास्तविक जीवन के रिश्तों एवं सामाजिक संबंधों पर प्रभाव के इर्द-गिर्द घूमती हैं।
- **नैतिक प्रतिनिधित्व और सांस्कृतिक विनियोग:** मेटावर्स के भीतर, उपयोगकर्त्ता छवि और आभासी वातावरण बना सकते हैं जो विभिन्न पहचान, संस्कृतियों या समुदायों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। सम्मानजनक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना, सांस्कृतिक विनियोग से बचना और विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण नैतिक चिंताजनक विचार हैं।

निष्कर्ष:

इन नैतिक मुद्दों को सक्रिय रूप से संबोधित करके, हम भविष्य के मेटावर्स की दिशा में प्रयास कर सकते हैं जो जीवन को समृद्ध बनाता है, सकारात्मक अनुभवों को बढ़ावा देता है तथा उन मूल्यों एवं सिद्धांतों को कायम रखता है जो हमारी वास्तविक दुनिया की बातचीत का मार्गदर्शन करते हैं। नैतिक विचारों को मेटावर्स प्रौद्योगिकियों के विकास, तैनाती और विनियमन का मार्गदर्शन करना चाहिये, यह सुनिश्चित करना चाहिये कि यह एक ऐसा क्षेत्र बन जाए जो अपने उपयोगकर्ताओं के अधिकारों और गरिमा का सम्मान करते हुए समग्र रूप से समाज को लाभ पहुंचाए।

8.4 रोबोटिक्स और स्वचालन

रोबोटिक्स (Robotics) और स्वचालन (Automation) **दो परस्पर जुड़े हुए क्षेत्र** हैं जिनमें कार्यों को स्वचालित करने और न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप के साथ संचालन करने हेतु **प्रौद्योगिकी का उपयोग शामिल है।**

रोबोटिक्स से तात्पर्य **रोबोट के डिजाइन, विकास और संचालन से है।** रोबोट एक यांत्रिक उपकरण है जिसे विशिष्ट कार्यों या क्रियाओं को करने के लिये प्रोग्राम किया गया है। ये कार्य सरल दोहराव वाली क्रियाओं से लेकर जटिल गतिविधियों और पर्यावरण के साथ अंत:क्रियात्मक तक हो सकते हैं। **रोबोट विभिन्न उद्योगों में संलग्न हो सकते हैं, जैसे विनिर्माण, स्वास्थ्य देखभाल, कृषि और यहाँ तक कि हमारे दैनिक जीवन में (उदाहरण के लिये, रोबोटिक वैक्यूम क्लीनर)।**

दूसरी ओर, **स्वचालन,** प्रत्यक्ष मानव भागीदारी की आवश्यकता के बिना, **कार्यों को स्वचालित रूप से करने या सिस्टम को नियंत्रित करने हेतु प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की प्रक्रिया है।** इसमें विभिन्न प्रक्रियाओं की निगरानी और नियंत्रण के लिये सॉफ्टवेयर, सेंसर और नियंत्रण प्रणालियों का उपयोग शामिल है। **स्वचालन का उद्देश्य संचालन को सुव्यवस्थित करना, दक्षता में सुधार करना तथा मानवीय त्रुटि को कम करना है।**

कुछ नैतिक चिंताएँ हैं:

- **विस्थापन और आर्थिक प्रभाव:**
  - **चिंता:** रोबोटिक्स और स्वचालन से रोजगार के अवसरों में कमी के कारण विस्थापन हो सकता है, जिसका प्रभाव श्रमिकों और समुदायों पर पड़ सकता है।
  - **उदाहरण:** विनिर्माण में बढ़ते स्वचालन के परिणामस्वरूप मानव श्रमिकों के लिये रोजगार के अवसर कम हो सकते हैं, जिससे बेरोजगारी और आय असमानता जैसी सामाजिक आर्थिक चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **नैतिक उपयोग और जवाबदेही:**
  - **चिंता:** रोबोट और स्वायत्त प्रणालियों को नैतिक और जवाबदेहीपूर्ण निर्माण और उपयोग किया जाना चाहिये।
  - **उदाहरण:** यह युद्ध के लिये उपयोग किए जाने वाले सैन्य ड्रोन, घातक निर्णय लेने की जिम्मेदारी मशीनों को सौंपने के नैतिक निहितार्थ और अनपेक्षित नागरिक हताहतों की संभावना के बारे में चिंताओं को बढ़ाते हैं।

- **सुरक्षा और दायित्व:**
  - **चिंता:** रोबोट और स्वायत्त प्रणालियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और दुर्घटनाओं या क्षति के लिये दायित्व का निर्धारण करना।
  - **उदाहरण:** स्व-चालित कारें सवाल उठाती हैं कि दुर्घटना की स्थिति में कौन जिम्मेदार है - वाहन निर्माता, सॉफ्टवेयर डेवलपर, या वाहन मालिक।
- **मानव-मशीन संपर्क और स्वायत्तता:**
  - **चिंता:** रोबोटिक प्रणालियों पर सार्थक मानव नियंत्रण बनाए रखना और स्वायत्तता के उचित स्तर पर विचार करना।
  - **उदाहरण:** शल्य चिकत्सा प्रक्रियाओं में सहायता करने वाले मेडिकल रोबोट को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि मानव शस्त्र-चिकित्सक के पास रोगी की देख-भाल हेतु अंतिम निर्णय लेने का अधिकार और जिम्मेदारी भी बरकरार रखें।
- **Ethical Design and Bias:**
- **नैतिकता पूर्ण डिजाइन/खाका और पूर्वाग्रह**
  - **चिंता:** पक्षपात और भेदभावपूर्ण व्यवहार से बचते हुए नैतिक विचारों के साथ रोबोट और AI प्रणाली का खाका या डिजाइन का निर्माण करना।
  - **उदाहरण:** भर्ती में AI-आधारित भर्ती प्रणाली को पूर्वाग्रहों को समाप्त करने और जाति, लिंग या अन्य संरक्षित विशेषताओं की परवाह किए बिना सभी उम्मीदवारों के लिये उचित और समान अवसर सुनिश्चित करने हेतु डिजाइन किया जाना चाहिये।

निष्कर्ष

रोबोटिक्स और स्वचालन के सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन किया जाना चाहिये। आर्थिक असमानताओं, नैतिक दुविधाओं और मानव-रोबोट संपर्क सहित समाज पर इन प्रौद्योगिकियों के व्यापक प्रभावों पर विचार करना महत्त्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने हेतु सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिये कि रोबोटिक्स और स्वचालन के लाभ समान रूप से वितरित किए जाए तथा मानवीय मूल्यों और अधिकारों का सम्मान किया जाए।

8.5 जैव प्रौद्योगिकी और बायोइंजीनियरिंग

जैव प्रौद्योगिकी और बायोइंजीनियरिंग तेजी से आगे बढ़ने वाले क्षेत्र हैं जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के लिये नवीन समाधान विकसित करने हेतु **जैविक सिद्धांतों, उपकरणों और तकनीकों का अनुप्रयोग** शामिल है। जैव प्रौद्योगिकी और बायोइंजीनियरिंग का एक उदाहरण आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों (Genetically Modified Crops-GMOs) का विकास है। हालाँकि, वे महत्त्वपूर्ण नैतिक चिंताओं को भी उठाते हैं। यहाँ जैव प्रौद्योगिकी और बायोइंजीनियरिंग के कुछ प्रमुख नैतिक चिंताएँ निम्नलिखित हैं:

- **आनुवंशिक रूप से हेरफेर और संशोधन:**
  - **चिंता:** जेनेटिक इंजीनियरिंग और जीवों के संशोधन के नैतिक प्रभाव हो सकते हैं।
  - **उदाहरण:** आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलें संभावित पर्यावरणीय प्रभावों, मानव स्वास्थ्य पर अज्ञात दीर्घकालिक प्रभावों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (GMOs) के स्वामित्व और नियंत्रण से संबंधित चिंताओं को बढ़ाती हैं।
- **क्लोनिंग और प्रजनन प्रौद्योगिकी:**
  - **चिंता:** क्लोनिंग और सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकियाँ मानव गरिमा, पहचान और क्लोन या आनुवंशिक रूप से संशोधित व्यक्तियों की नैतिक स्थिति से संबंधित नैतिक प्रश्न उठाती हैं।
  - **उदाहरण:** जानवरों या संभावित रूप से मनुष्यों की क्लोनिंग से व्यक्तित्व, स्वायत्तता और प्रौद्योगिकी के शोषण या दुरुपयोग की संभावना के बारे में चिंताएं उत्पन्न होती हैं।
- **जैव सुरक्षा और दोहरे उपयोग अनुसंधान:**
  - **चिंता:** जैव प्रौद्योगिकी की प्रगति से लाभकारी और हानिकारक दोनों अनुप्रयोग हो सकते हैं, जिससे जैव सुरक्षा जोखिम उत्पन्न हो सकते हैं।
  - **उदाहरण:** सिंथेटिक जीव विज्ञान में विकास, जैसे संभावित खतरनाक रोगजनकों का निर्माण, हानिकारक जीवों का जान-बूझकर या आकस्मिक रूप से मुक्त होना और मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता के बारे में चिंताओं को बढ़ाता है।
- **पहुंच और समानता:**
  - **चिंता:** जैव प्रौद्योगिकी प्रगति तक समान पहुंच सुनिश्चित करना तथा विकसित और विकासशील क्षेत्रों के बीच असमानताओं से बचना।
  - **उदाहरण:** जीन थेरेपी या वैयक्तिकृत दवाओं जैसे जीवन रक्षक जैव प्रौद्योगिकी उपचारों की उपलब्धता और सामर्थ्य, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों तथा आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों के लिये समान पहुंच को बनाए रखने से संबंधित चिंताओं को बढ़ाती हैं।
- **सूचित सहमति और मानव विषय अनुसंधान:**
  - **चिंता:** मानव विषयों से जुड़े अनुसंधान के संचालन हेतु सूचित सहमति, गोपनीयता सुरक्षा और नैतिक विचारों की आवश्यकता होती है।

- **उदाहरण:** नए जैव प्रौद्योगिकी हस्तक्षेपों का परीक्षण करने वाले नैदानिक परीक्षणों को नैतिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिये, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रतिभागियों को अनुसंधान में उनकी भागीदारी के जोखिमों, लाभों और निहितार्थों को पूरी तरह से समझना चाहिये।

- **पर्यावरणीय प्रभाव और पारिस्थितिक नैतिकता:**
  - **चिंता:** जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के पर्यावरणीय परिणाम हो सकते हैं और पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के संबंध में नैतिक चिंताओं को बढ़ा सकते हैं।
  - **उदाहरण:** रोग नियंत्रण के लिये आनुवंशिक रूप से संशोधित मच्छरों जैसे आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों को पर्यावरण में मुक्त करने के लिये सावधानीपूर्वक जोखिम मूल्यांकन, पर्यावरणीय प्रभाव अध्ययन और सार्वजनिक भागीदारी की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष:

नैतिक चिंताओं को संबोधित करके, हम एक मजबूत नैतिक आधार के साथ जैव प्रौद्योगिकी और बायोइंजीनियरिंग की क्षमता का उपयोग कर सकते हैं। यह जिम्मेदारपूर्ण प्रथाओं और नैतिक ढांचे के माध्यम से ही संभव है कि हम एक ऐसा भविष्य का निर्माण कर सकते हैं जहाँ जैव प्रौद्योगिकी की प्रगति मानवता की बेहतरी और हमारे ग्रह के संरक्षण में योगदान देगी।

8.6 अंतरिक्ष अन्वेषण और औपनिवेशीकरण

अंतरिक्ष अन्वेषण (Space Exploration) और उपनिवेशीकरण (Colonization) वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति से संबंधित क्षेत्र हैं जो अलग प्रकार की नैतिक चिंताओंको प्रस्तुत करते हैं। यहाँ अंतरिक्ष अन्वेषण और उपनिवेशीकरण से संबंधित कुछ प्रमुख नैतिक पहलू दिये गए हैं

- **ग्रह सुरक्षा और पर्यावरण नैतिकता:**
  - **चिंता:** आकाशीय पिंडों की अखंडता को बनाए रखना और पृथ्वी से होने वाले प्रदूषण से बचना।
  - **उदाहरण:** संभावित अलौकिक जीवन की रक्षा करने और प्राचीन वातावरण के वैज्ञानिक मूल्य को बनाए रखने के लिये पृथ्वी से सूक्ष्म जीवों के साथ आकाशीय पिंडों के संदूषण को रोकने हेतु सख्त प्रोटोकॉल का पालन किया जाता है।
- **संसाधनों का आवंटन और निष्पक्षता:**
  - **चिंता:** अंतरिक्ष अन्वेषण और उपनिवेशीकरण में संसाधनों का समान वितरण और उपयोग।
  - **उदाहरण:** यह सुनिश्चित करना कि खनिज या जल जैसे अलौकिक संसाधनों के दोहन से सभी देशों को लाभ हो और कुछ शक्तिशाली संस्थाओं द्वारा एकाधिकार या शोषण न हो।
- **मानव स्वास्थ्य और कल्याण:**
  - **चिंता:** अंतरिक्ष यात्रा और संभावित दीर्घकालिक उपनिवेशीकरण के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य और कल्याण की रक्षा करना।
  - **उदाहरण:** लंबे समय तक अंतरिक्ष स्थितियों और पृथक और सीमित वातावरण में रहने की चुनौतियों का सामना करने वाले अंतरिक्ष यात्रियों के लिये पर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल, विकिरण सुरक्षा और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करना।
- **अंतरिक्ष मलबा और संवहनीयता:**
  - **चिंता:** अंतरिक्ष मलबे के उत्पाद को कम करना और अंतरिक्ष गतिविधियों की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करना।
  - **उदाहरण:** मलबे को हटाने और उनके परिचालन जीवन के अंत में नियंत्रित पुन: प्रवेश या निपटान हेतु उपग्रहों और अंतरिक्ष यान को डिजाइन करने सहित जिम्मेदारपूर्ण अंतरिक्ष मलबे की प्रबंधन प्रथाओं को लागू करना।
- **सांस्कृतिक और स्थानिक:**
  - **चिंता:** अंतरिक्ष अन्वेषण और उपनिवेशीकरण के संबंध में सांस्कृतिक विरासत और स्वदेशी लोगों के अधिकारों का सम्मान करना।
  - **उदाहरण:** अंतरिक्ष-संबंधी गतिविधियों के लिये अपनी पैतृक भूमि या क्षेत्रों के उपयोग के संबंध में निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में स्थानिक समुदायों को पहचानना और शामिल करना, यह सुनिश्चित करना कि उनके सांस्कृतिक मूल्यों और अधिकारों को बरकरार रखा जाए।।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहभागिता:**
  - **चिंता:** अंतरिक्ष अन्वेषण और उपनिवेशीकरण में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, सहयोग और लाभों को साझा करना।
  - **उदाहरण:** शांतिपूर्ण अन्वेषण को बढ़ावा देने, संघर्षों से बचने और मानवता की सामान्य भलाई को बढ़ावा देने हेतु राष्ट्रों, अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष एजेंसियों और निजी संस्थाओं के बीच सहयोगात्मक प्रयासों को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष:

अंतरिक्ष अन्वेषण आकाशीय पिंडों के संरक्षण, स्थानिक जीवन रूपों की सुरक्षा और जिम्मेदारपूर्ण संसाधन उपयोग के संबंध में नैतिक प्रश्न उठाता है। उपनिवेशीकरण के प्रयास समानता, शासन और आकाशीय वातावरण पर प्रभाव के मुद्दों को सामने लाते हैं। यह नैतिक निहितार्थों पर विचारशील चिंतन के माध्यम से है कि हम

अंतरिक्ष अन्वेषण और उपनिवेशीकरण प्रयासों को शुरू कर सकते हैं जो वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी प्रगति और पृथ्वी एवं संभावित भविष्य के अंतरिक्ष आवास दोनों की भलाई में योगदान करते हैं।

8.7 जीन एडिटिंग से संबंधित नैतिक चुनौती

परिचय

जीन एडिटिंग (Gene Editing), विशेष रूप से CRISPR-Cas9 प्रणाली के साथ, कई नैतिक मुद्दे को प्रस्तुत करता है जिन पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। यहाँ जीन एडिटिंग से जुड़ी कुछ प्रमुख नैतिक चिंताओं के बारे में बताया गया है:

- **ह्यूमन जीन एडिटिंग:** प्राथमिक नैतिक चिंताओं में से एक मानव भ्रूण, शुक्राणु, या अंडे (रोगाणु कोशिकाओं) में जीन एडिटिंग करने से संबंधित है। जर्मलाइन के परिवर्तित होने के संभावित रूप से आनुवंशिक परिवर्तन हो सकते हैं जो भविष्य की पीढ़ियों को विरासत में मिलेंगे, जिससे मानव विकास, आनुवंशिक विविधता एवं अनपेक्षित परिणामों पर दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में सवाल उठेंगे।
- **संवर्द्धन में नैतिक उपयोग:** जीन एडिटिंग तकनीकों का उपयोग गैर-चिकित्सीय उद्देश्यों के लिये किए जाने की संभावना है, जैसे कि कुछ शारीरिक या संज्ञानात्मक लक्षणों का बढ़ाना। यह उन लोगों के बीच विभाजन को उत्पन्न करने के बारे में चिंताओं को पैदा करता है जो संवर्द्धन (Enhancements) का खर्च वहन कर सकते हैं और जो नहीं कर सकते हैं, मौजूदा सामाजिक असमानताओं को बढ़ा रहा है और संभावित रूप से ''डिजाइनर बेबी'' (Designer Baby) परिदृश्य को जन्म दे रहा है।
- **सूचित स्वीकृति:** जब जीन एडिटिंग की बात आती है, खासकर मानव नैदानिक परीक्षणों के संदर्भ में, सूचित स्वीकृति सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है। व्यक्तियों को जीन एडिटिंग के जोखिमों, लाभों, अनिश्चितताओं और संभावित दीर्घकालिक परिणामों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करने के बारे में नैतिक चिंताएँ हैं, जिससे उन्हें ऐसे हस्तक्षेपों में शामिल होने के लिये स्वायत्त निर्णय लेने की अनुमति मिलती है।
- **लक्ष्य से इतर प्रभाव और अनपेक्षित परिणाम:** जीन एडिटिंग तकनीकें अभी तक पूरी तरह से सटीक नहीं हैं और जहाँ अनपेक्षित आनुवंशिक परिवर्तन होते हैं, वहाँ लक्ष्य से परे प्रभावों का जोखिम होता है। इससे जीन एडिटिंग से गुजरने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य और कल्याण पर संभावित अप्रत्याशित परिणामों और दीर्घकालिक प्रभावों के बारे में चिंताएं उत्पन्न होती हैं।
- **न्यायसंगतता (इक्विटी) और पहुंच:** जीन एडिटिंग प्रौद्योगिकियों तक न्यायसंगत पहुंच का नैतिक प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करना कि ये प्रौद्योगिकियाँ कुछ व्यक्तियों या समुदायों तक सीमित होने के बजाय सभी के लिये सुलभ हैं, मौजूदा सामाजिक असमानताओं को बढ़ाने और उन लोगों के बीच विभाजन पैदा करने से रोकने हेतु महत्त्वपूर्ण है जिनके पास आनुवंशिक हस्तक्षेप तक पहुंच है और जिनके पहुंच नहीं है।
- **सुरक्षा और दीर्घकालिक प्रभाव:** नैतिक चिंताओं में क्लीनिकल सेटिंग्स में लागू होने से पहले जीन एडिटिंग हस्तक्षेपों की सुरक्षा और दीर्घकालिक प्रभावों का पर्याप्त रूप से आकलन करना शामिल है। जीन एडिटिंग प्रक्रियाओं से गुजरने वाले व्यक्तियों की सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित करने हेतु गहन प्रीक्लिनिकल और क्लिनिकल अनुसंधान, कठोर नियामक निरीक्षण और निरंतर निगरानी आवश्यक है।
- **नैतिक ढाँचे और विनियमन:** जीन एडिटिंग के लिये मजबूत नैतिक ढाँचे और नियम विकसित करना आवश्यक है। इन रूपरेखाओं में जीन संपादन से जुड़े जटिल नैतिक विचारों को संबोधित करने और उत्तरदायीपूर्ण अनुसंधान और नैदानिक अनुप्रयोगों हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने के लिये अंत:विषय सहयोग, सार्वजनिक भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय सहमति शामिल होनी चाहिये।

निष्कर्ष:

ये नैतिक मुद्दे वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, नैतिकतावादियों, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों और जनता को शामिल करते हुए एक विचारशील और समावेशी संवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं ताकि जीन संपादन तकनीक का विकास सुनिश्चित किया जा सके। और इसका इस प्रकार से उपयोग किया जाए जो नैतिक सिद्धांतों को कायम रखने, सामाजिक भलाई को बढ़ावा देने तथा व्यक्तियों और समाज पर समग्र रूप से संभावित प्रभाव पर विचार करने में सक्षम हो।

8.8 डिजाइनर बेबीज से संबंधित चुनौतियाँ

डिजाइनर बेबी/शिशु (Designer Baby) अजन्मे बच्चों में कुछ लक्षणों को चुनने या संशोधित करने हेतु आनुवंशिक इंजीनियरिंग और प्रजनन प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने की अवधारणा को संदर्भित करते हैं। इसमें वांछित विशेषताओं को बढ़ाने या अवांछित विशेषताओं को समाप्त करने के लिये भ्रूण की आनुवंशिक संरचना में हेरफेर करना शामिल है। **जबकि आनुवंशिक रूप से संशोधित बच्चे पैदा करने का विचार संभावित लाभ और संभावनाएं बढ़ाता है, यह महत्त्वपूर्ण नैतिक चिंताओं को भी उत्पन्न करता है।**

- **यूजीनिक्स की नैतिक चिंताएँ:** डिजाइनर बेबीज की तलाश को यूजीनिक्स (Eugenics) के रूप में देखा जा सकता है,

जो सामाजिक आदर्शों या प्राथमिकताओं के आधार पर लक्षणों के चयन और हेरफेर के बारे में नैतिक चिंताओं को बढ़ाता है। इससे वांछित मानदंडों को पूरा नहीं करने वाले व्यक्तियों के साथ भेदभाव, प्रश्नचिन्ह और अवमूल्यन हो सकता है।

- **अस्थिर/नाजुक झुकाव:** डिजाइनर शिशुओं के साथ उत्पन्न चिंताओं के कारण इस बात की संभावना अधिक है कि ये आनुवंशिक हेरफेर के अधिक चरम रूपों की ओर ले जाती हैं। प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग किया जा सकता है या चिकित्सा आवश्यकता से परे इसका विस्तार किया जा सकता है, जिससे एक ऐसा समाज बन जाएगा जहाँ आनुवंशिक वृद्धि आदर्श बन जाएगी, जिसका सामाजिक असमानता और मानव जीवन के उपभोक्ताकरण पर प्रभाव पड़ेगा।
- **सूचित स्वीकृति:** जब आनुवंशिक संशोधन (Genetic Modification) की बात आती है तो सूचित स्वीकृति का नैतिक सिद्धांत महत्त्वपूर्ण है। यह अजन्मे बच्चे के अधिकारों और स्वायत्तता तथा उनकी ओर से निर्णय लेने की माता-पिता की जिम्मेदारी पर सवाल उठाता है। यह सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है कि माता-पिता के पास आनुवंशिक संशोधन के जोखिमों, लाभों और दीर्घकालिक परिणामों के बारे में सटीक और निष्पक्ष जानकारी हो।
- **अनपेक्षित परिणाम और आनुवंशिक विविधता:** व्यक्तियों की आनुवंशिक संरचना में बदलाव से उनके स्वास्थ्य और कल्याण पर अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आनुवंशिक विविधता पर संभावित प्रभाव के बारे में चिंताएं हैं यदि कुछ लक्षणों को लगातार चुना या समाप्त कर दिया जाता है, जिससे जीन पूल के भीतर भिन्नता का नुकसान होता है और नई बीमारियों या पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति संभावित कमजोरियां उत्पन्न होती हैं।
- **सामाजिक निहितार्थ:** आनुवंशिक संशोधन प्रौद्योगिकियों की उपलब्धता और सामर्थ्य सामाजिक असमानता के बारे में चिंताएँ बढ़ाती है। यदि केवल अमीरों के पास इन प्रौद्योगिकियों तक पहुंच है, तो यह मौजूदा असमानताओं को बढ़ा सकता है और आनुवंशिक रूप से बढ़ी हुई तथा गैर-बढ़ी हुई आबादी के मध्य एक और विभाजन पैदा कर सकता है।

निष्कर्ष:

जैसे-जैसे समाज प्रगति कर रहा है और वैज्ञानिक प्रगति जारी है, खुली और समावेशी चर्चा में शामिल होना महत्त्वपूर्ण है जिसमें विशेषज्ञ, नीति निर्माता, नैतिकतावादी और आम जनता सहित विभिन्न हितधारक शामिल हों। इन चर्चाओं में डिजाइनर बेबीज की खोज से जुड़े नैतिक निहितार्थों, जोखिमों और संभावित दीर्घकालिक परिणामों का पता लगाया जाना चाहिये।

8.9 सोशल मीडिया से संबंधित नैतिक चिंताएँ

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया से संबंधित नैतिक चिंताएं तेजी से ध्यान आकर्षित कर रही हैं। जबकि **सोशल मीडिया प्लेटफार्म कनेक्टिविटी, सूचना साझाकरण और सामुदायिक निर्माण के अवसर प्रदान करते हैं, वे कई नैतिक चिंताओं को भी उत्पन्न करते हैं** जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- **गलत सूचना और दुष्प्रचार:** सोशल मीडिया गलत सूचना और दुष्प्रचार के प्रसार का प्रजनन स्थल बन गया है, जिसके महत्त्वपूर्ण सामाजिक परिणाम हो सकते हैं। झूठी या भ्रामक जानकारी आसानी से वायरल हो सकती है, जिससे जनता की राय, राजनीतिक चर्चा और यहाँ तक कि सार्वजनिक स्वास्थ्य पहल भी प्रभावित हो सकती है।
    - **उदाहरण:** COVID-19 महामारी के दौरान झूठी सूचनाओं के प्रसार, जैसे कि कन्स्पिरसी थ्योरी और भ्रामक उपचार, का सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयासों और वैक्सीन स्वीकृति पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है।
- **ऑनलाइन उत्पीड़न और साइबरबुलिंग:** सोशल मीडिया पर गुमनाम और व्यापक पहुंच व्यक्तियों को हानिकारक गतिविधियों में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित कर सकती है। नैतिक चिंताओं में प्रभावी रिपोर्टिंग तंत्र लागू करना, सख्त सामुदायिक दिशा-निर्देश लागू करना और सकारात्मक और सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण को बढ़ावा देना शामिल है।
    - **उदाहरण:** ट्विटर या इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों पर साइबरबुलिंग के उदाहरण, जहाँ व्यक्तियों को लगातार उत्पीड़न, धमकियों या ऑनलाइन शर्मिंदगी का शिकार होना पड़ता है, पीड़ितों के मानसिक कल्याण पर नकारात्मक प्रभाव दर्शाते हैं।
- **एल्गोरिथम पूर्वाग्रह और हेरफेर:** सोशल मीडिया प्लेटफार्म द्वारा उपयोग किए जाने वाले एल्गोरिदम सामग्री को व्यवस्थित करने एवं उपयोगकर्त्ता के अनुभवों को वैयक्तिकृत करने से पक्षपात और हेरफेर हो सकता है। यह प्रतिध्वनि कक्षों, फिल्टर बब्ल और मौजूदा पूर्वाग्रहों को मजबूत करने या ध्रुवीकरण दृष्टिकोण को जकरने की क्षमता के बारे में चिंता उत्पन्न करता है। नैतिक चिंताओं में एल्गोरिथम निर्णय लेने में पारदर्शिता सुनिश्चित करना, सामग्री अनुशंसाओं में विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देना एवं हेरफेर तथा एल्गोरिथम भेदभाव की संभावना को संबोधित करना शामिल है।
- **मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर प्रभाव:** सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के साथ-साथ निरंतर तुलना, सत्यापन-चाहने और जीवन के क्यूरेटेड चित्रण, व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य एव कल्याण पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं। नैतिक विचारों में डिजिटल कल्याण को बढ़ावा देना,

सोशल मीडिया के जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करना, सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से प्रभावित लोगों के लिये संसाधन और सहायता प्रदान करना शामिल है।

- **बच्चों और कमजोर व्यक्तियों पर प्रभाव:** युवा उपयोगकर्त्ता अनुचित सामग्री, साइबरबुलिंग और हानिकारक ऑनलाइन व्यवहार के संपर्क में आ सकते हैं। इसके अलावा, सोशल मीडिया विशेष रूप से युवा उपयोगकर्त्ताओं के बीच अपर्याप्तता, कम आत्मसम्मान और शारीरिक छवि से संबंधित मुद्दों को उत्पन्न कर सकता है। नैतिक चिंताओं में आयु-उपयुक्त सामग्री फिल्टर लागू करना, नाबालिगों की सुरक्षा के लिये सख्त दिशा-निर्देश लागू करना, बच्चों और कमजोर आबादी के बीच डिजिटल साक्षरता एवं सोशल मीडिया के जिम्मेदारपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना शामिल है। यूट्यूब या टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म बेहतर सुरक्षा और आयु-उपयुक्त दिशा-निर्देशों की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

निष्कर्ष:

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के भीतर एक नैतिक संस्कृति को बढ़ावा देना महत्त्वपूर्ण है जो पारदर्शिता, उपयोगकर्त्ता सशक्तिकरण और व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा को महत्त्व देता है। एक स्वस्थ डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिये अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और उचित सामग्री मॉडरेशन के मध्य संतुलन बनाना महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल साक्षरता, आलोचनात्मक सोच और सहानुभूति को बढ़ावा देने से उपयोगकर्त्ताओं को नैतिक और जिम्मेदार तरीके से सोशल मीडिया परिदृश्य को नेविगेट करने में मदद मिल सकती है।

8.10 अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों में शामिल नैतिक मुद्दे

- **ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी डेटा गोपनीयता, सुरक्षा और अवैध गतिविधियों को आसान बनाने की क्षमता से संबंधित चिंताओं को बढ़ाती है।
  - **उदाहरण:** बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी मनी लॉन्ड्रिंग और अवैध लेन-देन से संबंधित है।
- **जेनेटिक इंजीनियरिंग और जीन एडिटिंग:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** जेनेटिक इंजीनियरिंग और जीन एडिटिंग सहमति, आनुवंशिक भेदभाव और अनपेक्षित परिणामों के संबंध में नैतिक दुविधाओं को पैदा करते हैं।
  - **उदाहरण:** CRISPR-Cas9, एक जीन-एडिटिंग उपकरण, मानव जीनोम को बदलने के नैतिक निहितार्थों से संबंधित प्रश्नों को उठाता है।
- **इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT):**
  - **नैतिक चिंताएँ:** IoT डेटा सुरक्षा, गोपनीयता और व्यक्तिगत जानकारी के संभावित दुरुपयोग के बारे में चिंताओं को बढ़ाता है।
  - **उदाहरण:** स्मार्ट होम डिवाइस जो व्यक्तियों की दैनिक गतिविधियों के बारे में डेटा एकत्र और संचारित करते हैं, गोपनीयता उल्लंघन और डेटा सुरक्षा के बारे में चिंताओं को बढ़ाते हैं।
- **5G तकनीक:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** 5G तकनीक डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा और संभावित स्वास्थ्य जोखिमों से संबंधित चिंताओं को बढ़ाती है।
  - **उदाहरण:** 5G नेटवर्क की तैनाती और उपकरणों की बढ़ी हुई कनेक्टिविटी व्यक्तिगत डेटा की सुरक्षा और साइबर हमलों की संभावना पर सवाल उठाती है।
- **नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियाँ पर्यावरणीय प्रभाव, संसाधन वितरण और सामाजिक समानता के बारे में चिंताओं को बढ़ाती हैं।
  - **उदाहरण:** बड़े पैमाने पर सौर या पवन ऊर्जा परियोजनाओं के विकास एवं कार्यान्वयन से भूमि-उपयोग संघर्ष और समुदायों का संभावित विस्थापन हो सकता है।
- **नैनोटेक्नोलॉजी:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** नैनोटेक्नोलॉजी स्वास्थ्य और पर्यावरणीय जोखिमों के साथ-साथ निगरानी या हथियार विकास में संभावित दुरुपयोग के बारे में चिंताएँ उत्पन्न करती है।
  - **उदाहरण:** उपभोक्ता उत्पादों में नैनोमटेरियल्स का उपयोग मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर उनके दीर्घकालिक प्रभावों के बारे में सवाल उठाता है।
- **क्वांटम कम्प्यूटिंग:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** क्वांटम कंप्यूटिंग डेटा सुरक्षा, एन्क्रिप्शन और वर्तमान क्रिप्टोग्राफिक सिस्टम को बाधित करने की क्षमता के बारे में चिंताओं को बढ़ाती है।
  - **उदाहरण:** शक्तिशाली क्वांटम कंप्यूटरों का विकास संवेदनशील जानकारी के लिये जोखिम उत्पन्न कर सकता है तथा डेटा सुरक्षा को बनाए रखने हेतु नई एन्क्रिप्शन विधियों की आवश्यकता हो सकती है।
- **बॉयोमेट्रिक्स:**
  - **नैतिक चिंताएँ:** बायोमेट्रिक प्रौद्योगिकियाँ गोपनीयता, सहमति और व्यक्तिगत बायोमेट्रिक डेटा के संभावित दुरुपयोग के बारे में चिंताओं को बढ़ाती हैं।

- **उदाहरण:** सार्वजनिक स्थानों पर फेशियल रिकॉग्निशन टेक्नोलॉजी (Facial Recognition Technology) का उपयोग गोपनीयता के हनन और पहचान में संभावित पूर्वाग्रहों के बारे में सवाल उठाता है।

8.11 उभरती प्रौद्योगिकियों में नैतिकता के लिये आगे की राह

- **नैतिक ढाँचों का विकास:** व्यापक नैतिक ढाँचे स्थापित किये जाने चाहिये जो उभरती प्रौद्योगिकियों द्वारा उत्पन्न अद्वितीय चुनौतियों का समाधान करें। इन प्रौद्योगिकियों के विकास और उपयोग को निर्देशित करने हेतु इन रूपरेखाओं में जवाबदेही, पारदर्शिता, गोपनीयता और समावेशिता जैसे सिद्धांतों को शामिल किया जाना चाहिये।
- **प्रतिपालक सहयोग:** प्रौद्योगिकी निर्माणकर्त्ता, नीति निर्माताओं, नैतिकतावादियों, शोधकर्त्ताओं और नागरिक समाज संगठनों सहित विभिन्न हितधारकों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। सहयोगात्मक प्रयास नैतिक चिंताओं को पहचानने और उनका समाधान करने, जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देने और संभावित नुकसान को कम करते हुए उभरती प्रौद्योगिकियों के लाभों को अधिकतम करने में मदद कर सकते हैं।
- **नैतिक शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देना:** उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास, तैनाती और शासन में शामिल प्रौद्योगिकी पेशेवरों और हितधारकों के लिये नैतिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ाना। इससे नैतिक विचारों के बारे में जागरूकता बढ़ेगी और व्यक्तियों को नैतिक रूप से सूचित निर्णय लेने के लिये ज्ञान और कौशल से युक्त किया जाएगा।
- **नैतिक प्रभाव आकलन लागू करना:** उभरती प्रौद्योगिकियों के डिजाइन और विकास प्रक्रियाओं में नैतिक प्रभाव आकलन को एकीकृत किया जाना चाहिये। इन मूल्यांकनों में संभावित नैतिक निहितार्थों, सामाजिक प्रभावों और प्रौद्योगिकियों से जुड़े जोखिमों का मूल्यांकन किया जाना चाहिये, जिससे किसी भी नैतिक चिंताओं को सक्रिय रूप से पहचानने और संबोधित करने में मदद मिलेगी।
- **सार्वजनिक संवाद में संलग्न होना:** उभरती प्रौद्योगिकियों से संबंधित नैतिक विचारों पर खुले और समावेशी सार्वजनिक संवाद को बढ़ावा देना चाहिये। यह सुनिश्चित करने के लिये नागरिकों, सामुदायिक संगठनों और सलाहकारी समूहों को शामिल कर व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखा जाए। यह सार्वजनिक समझ को बढ़ावा देगा, जागरूकता को बढ़ाएगा और नैतिक मुद्दों पर सामूहिक निर्णय लेने में सक्षम बनाएगा।
- **नियामक ढाँचे की स्थापना:** नियामक ढाँचे विकसित करें और लागू करें जो उभरती प्रौद्योगिकियों के नैतिक विकास, तैनाती और उपयोग को नियंत्रित करते हैं। इन रूपरेखाओं को नवाचार और सामाजिक कल्याण द्वारा संतुलित करना चाहिये, नैतिक मानकों को बनाए रखना सुनिश्चित करना चाहिये और जवाबदेही एवं निरीक्षण के लिये तंत्र प्रदान करना चाहिये।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा:** उभरती प्रौद्योगिकियों में नैतिकता पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सहभागिता को बढ़ावा देना। विभिन्न देशों और क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं, ज्ञान और अनुभवों को साझा करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। इससे नैतिक प्रथाओं के लिये वैश्विक मानदंड और मानक स्थापित करने में मदद मिलेगी एवं नैतिक चुनौतियों से निपटने में निरंतरता सुनिश्चित होगी।
- **सतत् निगरानी और मूल्यांकन:** उभरती प्रौद्योगिकियों के नैतिक निहितार्थ और सामाजिक प्रभावों की निरंतर निगरानी और मूल्यांकन के लिये तंत्र लागू किया जाना चाहिये। इससे नियमित मूल्यांकन से उभरती नैतिक चिंताओं की पहचान करने, तदनुसार नैतिक ढांचे को अनुकूलित करने और नैतिक मानकों के साथ चल रहे अनुपालन को सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष

इन उपायों को लागू करके, हम उभरती प्रौद्योगिकियों के विकास और तैनाती के लिये एक उत्तरदायित्वपूर्ण और नैतिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकते हैं। यह हमें निष्पक्षता, गोपनीयता, जवाबदेही और सामाजिक कल्याण के सिद्धांतों को कायम रखते हुए इन प्रौद्योगिकियों की परिवर्तनकारी क्षमता का उपयोग करने में सक्षम बनाएगा।

❖ ❖ ❖

9 नीतिशास्त्र: विविध विषय

9.1 वरिष्ठ का निर्देश बनाम जनहित

किसी वरिष्ठ के निर्देश और जनहित के बीच टकराव ऐसी **स्थिति में होता है जहां प्राधिकार वाले किसी व्यक्ति द्वारा किया गया निर्णय या कार्रवाई जनहित** या समाज के बड़े हित के विरुद्ध होती है।

उदाहरण

- कल्पना कीजिए कि आप एक **ऐसी सरकारी एजेंसी के लिए काम करते हैं जो निर्माण परियोजनाओं का निरीक्षण और अनुमोदन करने** के लिए उत्तरदायी है **ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे सुरक्षा मानकों को पूरा करते हैं।** एक दिन, **आपका वरिष्ठ अधिकारी आपको एक भवन परियोजना में कुछ सुरक्षा उल्लंघनों को नजरअंदाज करने का निर्देश देता है क्योंकि परियोजना निर्माता के सरकार में प्रभावशाली लोगों से करीबी संबंध हैं।** ऐसा करके, आपका वरिष्ठ अधिकारी परियोजना की अनुमोदन प्रक्रिया में तेजी लाना चाहता है और संभावित टकराव से बचना चाहता है।
- हालाँकि, **एक सिविल सेवक के रूप में, आपकी प्राथमिक जिम्मेदारी जनता की रक्षा करना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना है।** आपने देखा कि ये सुरक्षा उल्लंघन महत्वपूर्ण हैं और इनके द्वारा भविष्य में इस भवन में रहने वालों के लिए खतरनाक **स्थिति पैदा हो सकती है।** यदि आप अपने वरिष्ठ के निर्देशों का पालन करते हैं, तो आप एक असुरक्षित भवन को मंजूरी और निर्माण की अनुमति देकर जनहित से समझौता करेंगे।
- इस स्थिति में, **आपको अपने वरिष्ठ अधिकारी के निर्देशों का पालन करने और जनहित को कायम रखने के बीच एक दुविधा का सामना करना पड़ता है।** नैतिक रूप से कार्य करने के लिए, आपको सुरक्षा उल्लंघनों का दस्तावेजीकरण करके, अपने उच्च अधिकारियों या उपयुक्त नियामकों को समस्या की रिपोर्ट करके और सुरक्षा मानकों के गहन निरीक्षण और पालन की वकालत करके जनहित के लिए कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है। यह कार्रवाई **आपके वरिष्ठ अधिकारी के निर्देशों का पालन करने के बजाय भविष्य में इस भवन में रहने वालों की सुरक्षा और भलाई को प्राथमिकता देती है।**
- यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है **कि एक सिविल सेवक के रूप में, आपका कर्तव्य जनता की सेवा और कानून का पालन करना है।** कभी-कभी, इसका परिणाम अपने वरिष्ठों के निर्देशों को चुनौती देना हो सकता है जब यह जनहित के साथ टकराव की स्थिति पैदा हो। जो सही है, उसके लिए खड़े होकर, आप जनता के हितों की रक्षा सुनिश्चित करते हुए सिविल सेवा की अखंडता और विश्वसनीयता में योगदान करते हैं।

- **वरिष्ठ अधिकारी के निर्देश और जनहित के बीच टकराव** सिविल सेवकों के लिए नैतिक दुविधाएँ पैदा करता है। अंध आज्ञाकारिता की बजाय जन सुरक्षा को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण होता है। **व्यापक भलाई के लिए खड़े होने में उल्लंघनों की रिपोर्ट करना, उचित प्रक्रियाओं पर जोर देना और नैतिक मानकों को बनाए रखना शामिल है।** जिम्मेदारी से कार्य करके, सिविल सेवक सार्वजनिक हितों की रक्षा करते हैं और संस्थागत सत्यनिष्ठा बनाए रखते हैं।

9.2 उद्यमशील सरकार

उद्यमशील सरकार से तात्पर्य ऐसी सरकार से है **जो समस्याओं को सुलझाने और सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने के लिए उद्यमशीलता और नवीन दृष्टिकोण अपनाती है।** इसमें **व्यवसायिक मानसिकता को अपनाना और** सकारात्मक बदलाव लाने और सार्वजनिक सेवा प्रदायगी को बढ़ाने के लिए **रचनात्मकता, जोखिम लेना और अनुकूलनशीलता** जैसे उद्यमशीलता सिद्धांतों को लागू करना शामिल है।

ओसबोर्न और गैबलर ने उद्यमशील सरकार के लिए दस सूत्री कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा, जो निम्नलिखित सिद्धांतों पर जोर देता है:

1. विविध माल और सेवा प्रदाताओं के बीच प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करना।
2. नौकरशाही को कम करके नागरिकों को सशक्त बनाना।

3. प्रदर्शन का मूल्यांकन केवल इनपुट के आधार पर नहीं, बल्कि परिणामों के आधार पर करना।
4. कठोर नियमों और विनियमों के बजाय मिशन-संचालित दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करना।
5. जनता को ग्राहक के रूप में देखना और उन्हें विकल्प प्रदान करना।
6. प्रतिक्रियाशील समाधानों के बजाय निवारक उपायों पर जोर देना।
7. प्रभावी और कुशल व्यय को प्राथमिकता देना, न कि केवल पैसा खर्च करने को।
8. सहभागी प्रबंधन को अपनाना और निर्णय लेने में हितधारकों को शामिल करना।
9. नौकरशाही प्रक्रियाओं पर बाजार तंत्र को प्राथमिकता देना।
10. सामुदायिक समस्याओं के समाधान के लिए सार्वजनिक, निजी और स्वैच्छिक क्षेत्रों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना।

सरकार की उद्यमशील भूमिका में निम्नलिखित पहलू शामिल हैं:

- **नई इकाइयों में निवेश:** सरकार उन उद्योगों में निवेश करती है जिनमें महत्वपूर्ण पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है या जिन्हें राष्ट्र के हितों और जन कल्याण को बढ़ाने के लिए आवश्यक माना जाता है।
- **मौजूदा इकाइयों का अधिग्रहण:** सरकार आर्थिक रूप से संकटग्रस्त या अलाभकारी इकाइयों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से उनका अधिग्रहण करती है। बीमार इकाइयों का स्वस्थ इकाइयों के साथ आमेलन प्रोत्साहित करने के लिए 1977 में एक विलय योजना शुरू की गई थी, जिससे अवशोषित इकाइयों को कर लाभ मिल सके।
- **राष्ट्रीयकरण:** कुछ उद्योग विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित हैं, सरकार उनका स्वामित्व और नियंत्रण अपने हाथ में लेती है।

सरकारी निवेश आमतौर पर निम्नलिखित उद्योगों में देखा जाता है:

- भारी और बुनियादी उद्योगों जैसे उच्च जोखिम वाले उद्योग।
- पूँजीवादी उद्योग।
- कम लाभ दर वाले उद्योग।
- लंबी निर्माण अवधि वाले उद्योग।
- राष्ट्रीय महत्व के उद्योग।

उदाहरण

- मान लीजिए कि आप **अपने शहर में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार एक स्थानीय सरकारी एजेंसी के लिए काम करते हैं।** परंपरागत रूप से, एजेंसी **पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए ब्रोशर और विज्ञापनों जैसे पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रही है।**
- **उद्यमशील सोच वाले** एक सिविल सेवक के रूप में, आप **व्यापक दर्शकों तक पहुंचने और पर्यटकों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ने के लिए प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का उपयोग करने की क्षमता को पहचानते हैं।** आप **एक प्रयोक्ता-अनुकूल मोबाइल ऐप बनाने** जैसे नवीन विचारों का प्रस्ताव देते हैं जो स्थानीय आकर्षण वाली जगहों, इंटरैक्टिव मानचित्र और वैयक्तिकृत अनुशंसाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
- इन उद्यमशील विचारों को प्रस्तुत करके, आपका लक्ष्य समग्र पर्यटक अनुभव को बढ़ाना, आगंतुकों की संख्या को बढ़ाना और स्थानीय व्यवसायों के राजस्व में वृद्धि करना है। आप इन पहलों को विकसित और कार्यान्वित करने के लिए **तकनीक-प्रेमी पेशेवरों, स्थानीय उद्यमियों और सामुदायिक हितधारकों का सहयोग लेते हैं।**
- अपनी उद्यमशील सरकारी सोच के माध्यम से, आप सार्वजनिक सेवा प्रदायगी के लिए एक **सक्रिय और गतिशील दृष्टिकोण अपनाते हैं।** आप **अवसरों की तलाश करते हैं, नपा तुला जोखिम लेते हैं, और** समुदाय के लिए बेहतर परिणाम प्राप्त करने के लिए बदलती परिस्थितियों को लगातार अपनाते हैं। इस उद्यमशीलता से नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है और शहर के पर्यटन उद्योग पर **सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।**

एक उद्यमशील सरकार **सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने के लिए नवाचार और सक्रिय दृष्टिकोण अपनाती है। यह परिणामों, नागरिक सशक्तिकरण और सहयोग को प्राथमिकता देता है।** उद्यमशीलता के सिद्धांतों को अपनाकर, सिविल सेवक सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं, विकास को बढ़ावा देते हैं और सामुदायिक कल्याण को बढ़ाते हैं। वे प्रयोक्ता-अनुकूल ऐप्स और हितधारकों की भागीदारी जैसी पहलों के माध्यम से ग्राहक-केंद्रित अनुभव उत्पन्न करते हैं, एवं प्रगति के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं।

9.3 नवीन लोक प्रशासन (NPA)

नवीन लोक प्रशासन (एनपीए) लोक प्रशासन के लिए एक आधुनिक दृष्टिकोण को संदर्भित करता है जो **नागरिक भागीदारी, सामाजिक समानता और सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति**

प्रतिक्रिया पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य सहयोग, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देकर सकारात्मक बदलाव लाना और सार्वजनिक सेवा प्रदायगी में सुधार करना है।

सरल शब्दों में नवीन लोक प्रशासन सरकार को अधिक जन- केंद्रित बनाने **और यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि यह** सभी के लिए प्रभावी ढंग से और निष्पक्ष रूप से काम करे। यह निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नागरिकों को शामिल करने और उनकी जरूरतों और समस्याओं को हल करने के महत्व को पहचानता है।

नवीन लोक प्रशासन की विशेषताएं

नवीन लोक प्रशासन (एनपीए) कई विशिष्ट विशेषताएं प्रदर्शित करता है:

- **अनुदेशात्मक प्रकृतिः** एनपीए की विशेषता एक अनुदेशात्मक दृष्टिकोण है, जो प्रभावी लोक प्रशासन प्रथाओं के लिए दिशानिर्देश और सिफारिशें प्रदान करता है।
- **मूल्य-आधारित अवधारणाः** एनपीए लोक प्रशासन में मूल्यों के महत्व को पहचानता है और नैतिक विचारों और जनहित पर जोर देता है।
- **परिवर्तन की ओर उन्मुखीकरणः** एनपीए बदलती वास्तविकताओं को अपनाने और लोक प्रशासन में उभरती चुनौतियों का समाधान करने पर केंद्रित है।
- **लचीलापन और गतिशीलताः** एनपीए समाज की बढ़ती जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए लचीलेपन और उत्तरदायी को प्रोत्साहित करता है।
- **नीतियों पर प्रभावः** एनपीए का लक्ष्य उन नीतियों को प्रभावित करना है जो काम की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं और ऐसी नीतियों को लागू करने में सक्षम हैं।
- **ग्राहक-उन्मुख दृष्टिकोणः** एनपीए नागरिकों को लोक प्रशासन का ग्राहक मानते हुए उनकी जरूरतों और अपेक्षाओं पर जोर देता है।
- **लोगों की भागीदारीः** एनपीए लोक प्रशासन की निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में जनता की सक्रिय भागीदारी की वकालत करता है, सहभागी शासन को बढ़ावा देता है।

नवीन लोक प्रशासन का विषय

- **नवीन लोक प्रशासन** (एनपीए) एक आंदोलन है जो 1960 के दशक में पारंपरिक लोक प्रशासन की कथित कमियों के जवाब में उभरा। एनपीए ने लोक प्रशासन में जन भागीदारी, नागरिक आवश्यकताओं के प्रति जवाबदेही और सामाजिक समानता के महत्व पर जोर दिया।
- **नवीन लोक प्रशासन के चार प्रमुख विषय हैं:**

1. **प्रासंगिकताः** एनपीए ने नागरिकों की आवश्यकताओं के लिए लोक प्रशासन के प्रासंगिक होने के महत्व पर जोर दिया। इसका अर्थ यह है कि लोक प्रशासकों को नागरिकों की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए और समस्याओं को हल करने एवं नागरिकों के साथ काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
2. **मूल्यः** एनपीए ने लोक प्रशासन में मूल्यों के महत्व पर भी जोर दिया। इसका मतलब यह था कि लोक प्रशासकों को सामाजिक समानता,निष्पक्षता और दक्षता जैसे मूल्यों के एक समूह द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए।
3. **भागीदारीः** एनपीए ने लोक प्रशासन में नागरिक भागीदारी के महत्व पर भी जोर दिया। इसका मतलब यह था कि लोक प्रशासकों को नागरिकों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और नागरिकों के साथ सत्ता साझा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
4. **परिवर्तनः** एनपीए ने लोक प्रशासन में परिवर्तन के महत्व पर भी जोर दिया। इसका मतलब यह था कि लोक प्रशासकों को नागरिकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने काम करने के तरीके को बदलने के लिए तैयार रहना चाहिए।

नवीन लोक प्रशासन के प्रमुख मील के पत्थर

- **हनी रिपोर्ट (1967):** हनी रिपोर्ट, जिसे आधिकारिक तौर पर **"लोक सेवा में कार्मिक प्रशासन"** के रूप में जाना जाता है, ने सरकारी प्रदर्शन में सुधार के लिए कार्मिक प्रबंधन, प्रशिक्षण और भर्ती पर ध्यान केंद्रित करते हुए लोक प्रशासन में व्यापक सुधारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।
- **फिलाडेल्फिया सम्मेलन (1967):** फिलाडेल्फिया सम्मेलन में लोक प्रशासन में चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा करने के लिए विद्वान, चिकित्सक और नीति निर्माता एक साथ आए। इसने सरकारी एजेंसियों के कामकाज में नागरिक भागीदारी, जवाबदेही और अनुक्रियाशीलता के महत्व पर जोर दिया।
- **मिनोब्रुक (Minnowbrook) सम्मेलन (1968):** मिनोब्रुक सम्मेलन लोक प्रशासन विद्वानों का एक महत्वपूर्ण जमावड़ा था जो बदलते समाज में लोक प्रशासन की भूमिका पर केंद्रित था। इसने सहयोगात्मक शासन की ओर बदलाव, सामाजिक समानता को संबोधित करने और लोक प्रबंधन के नए तरीकों को अपनाने का आह्वान किया।
- **महत्वपूर्ण प्रकाशनः** विभिन्न प्रकाशनों ने नए लोक प्रशासन के विकास में योगदान दिया, जिसमें ड्वाइट वाल्डो द्वारा **"लोक प्रशासन और जनहित"**, के माध्यम से लोक प्रशासन के नैतिक और मूल्य-आधारित आयामों पर जोर दिया, और बी गाइ पीटर्स द्वारा "नौकरशाही की राजनीति", जिसने नौकरशाही संस्थानों के भीतर राजनीतिक गतिशीलता का पता लगाया, शामिल हैं। इन प्रकाशनों ने नवीन लोक प्रशासन आंदोलन के सिद्धांतों और प्रथाओं में सैद्धांतिक रूपरेखा और अंतर्दृष्टि प्रदान की।

पुराने लोक प्रशासन और नये लोक प्रशासन के बीच अंतर

पहलू	पुराना लोक प्रशासन	नवीन लोक प्रशासन
केंद्र	नौकरशाही संरचना और पदानुक्रम	नागरिक-केंद्रित दृष्टिकोण, उत्तरदायित्व और दक्षता
निर्णय प्रक्रिया	केंद्रीकृत, ऊपर से नीचे दृष्टिकोण	विकेंद्रीकृत, सहभागी दृष्टिकोण
उत्तरदायित्व	नियम-कानूनों के अनुपालन पर जोर	परिणामों और परिणाम-आधारित उत्तरदायित्व पर जोर
नागरिक सहभागिता	सीमित नागरिक भागीदारी	नागरिकों की भागीदारी और सहभागिता में वृद्धि
लक्ष्य	स्थिर प्रशासन और नियमित प्रक्रियाएँ	नवाचार, अनुकूलनशीलता और निरंतर सुधार
लचीलापन	कठोर और नौकरशाह	बदलती परिस्थितियों के लिए लचीली और अनुकूलनीय
पारदर्शिता	सूचना तक सीमित पारदर्शिता और सार्वजनिक पहुंच	पारदर्शिता, खुलापन और उत्तरदायित्व
समस्या समाधान	प्रतिक्रियाशील समस्या-समाधान	सक्रिय समस्या-समाधान और रोकथाम
क्षमता	प्रक्रियाओं और प्रोटोकॉल का पालन करने पर जोर	दक्षता, लागत-प्रभावशीलता और सेवा प्रदायगी पर जोर
जन सेवा वितरण	नौकरशाही और लालफीताशाही पर जोर	ग्राहक-उन्मुख सेवाओं और उत्तरदायित्व पर जोर

उदाहरण

- **मान लीजिए कि आप शहरी नियोजन के लिए जिम्मेदार** स्थानीय सरकारी विभाग के लिए काम करते हैं। परंपरागत रूप से, शहर के विकास के संबंध में अधिकांश निर्णय समुदाय के सुझाव के बिना किए जाते थे, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी परियोजनाएं बनती थी जो हमेशा निवासियों की जरूरतों और आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं होती थीं।
- हालाँकि, एनपीए सिद्धांतों को अपनाने के साथ, **आपका विभाग स्थानीय समुदाय को योजना प्रक्रिया में शामिल करने का निर्णय लेता है। आप निवासियों से प्रतिक्रिया और उनके विचार जानने के लिए सार्वजनिक बैठकें, कार्यशालाएं और ऑनलाइन सर्वेक्षण करते हैं। यह समावेशी दृष्टिकोण** समुदाय के सदस्यों को अपनी समस्याओं को व्यक्त करने, शहर के लिए अपने दृष्टिकोण साझा करने और निर्णय लेने में भाग लेने की अनुमति देता है।
- प्राप्त इनपुट के आधार पर, आपका विभाग समुदाय की प्राथमिकताओं को संबोधित करने के लिए शहरी विकास योजनाओं को संशोधित करता है। आप सुनिश्चित करते हैं कि **सामाजिक समानता को बढ़ावा देने और सभी निवासियों के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए** किफायती आवास, हरित स्थान और बेहतर बुनियादी ढांचे को योजनाओं में शामिल किया गया है।

नवीन लोक प्रशासन (एनपीए) नागरिक भागीदारी, सामाजिक समानता और उत्तरदायी लोक सेवा वितरण पर केंद्रित है। इसमें समुदाय को निर्णय लेने और उनकी जरूरतों को पूरा करने में शामिल करना शामिल है।

9.4 नवीन लोक प्रबंधन (NPM)

नवीन लोक प्रबंधन (एनपीएम) एक लोक प्रशासनिक दृष्टिकोण है जो निजी क्षेत्र से प्रबंधन तकनीकों को लेकर **दक्षता, प्रभावशीलता और** उत्तरदायित्व **पर जोर देता है।** इसका उद्देश्य सरकारी कार्यों को अधिक व्यवसाय- उन्मुख और परिणाम-उन्मुख बनाना है।

सरल शब्दों में, एनपीएम **एक अच्छी तरह से प्रबंधित व्यवसाय की तरह, सरकारी एजेंसियों का अधिक कुशलता से संचालन के बारे में है।** यह ठोस परिणाम प्राप्त करने, अनावश्यक नौकरशाही में कटौती करने और लोक अधिकारियों को उनके प्रदर्शन के लिए उत्तरदायी बनाने पर केंद्रित है।

उदाहरण

- मान लीजिए **एक सरकारी अस्पताल है जो एनपीएम सिद्धांतों को अपनाता है।** एवं परंपरागत रूप से, अस्पताल को **लंबी प्रतीक्षा सूची, अकुशल प्रक्रियाओं और जवाबदेही की कमी की विशेषता से पहचाना जाता होगा।**
- हालाँकि, एनपीएम के कार्यान्वयन के साथ, **अस्पताल प्रबंधन संचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए सुधार पेश करता है।** वह बाधाओं की पहचान करते हैं और प्रतीक्षा समय को कम करने के उपायों को लागू करते हैं, जैसे बेहतर परामर्श बुकिंग प्रणाली और बेहतर रोगी संख्या प्रबंधन। **मरीजों को समय पर और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।**

- इसके अतिरिक्त, **अस्पताल अपने कर्मचारियों के लिए स्पष्ट कार्य निष्पादन लक्ष्य निर्धारित करता है,** नियमित रूप से उनके प्रदर्शन की निगरानी करता है, और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को उपलब्धियों को पुरस्कृत करता है। यह दृष्टिकोण उत्तरदायित्व की भावना पैदा करता है और कर्मचारियों को अपनी भूमिकाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- एनपीएम सिद्धांतों को अपनाने से, अस्पताल **अधिक कुशल, रोगी- केंद्रित और जवाबदेह बन जाता है।** इसका उद्देश्य लागत प्रभावी तरीके से गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना है, यह सुनिश्चित करना कि सार्वजनिक संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाए और रोगियों को वह देखभाल तुरंत मिले जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

नवीन लोक प्रबंधन (NPM) दक्षता, प्रभावशीलता और उत्तरदायित्व पर जोर देते हुए सरकार को अधिक व्यवसाय-उन्मुख बनाता है। यह परिचालन को सुव्यवस्थित करने और परिणामों में सुधार करने के लिए निजी क्षेत्र से प्रबंधन तकनीकों को अपनाता है। एनपीएम का लक्ष्य नौकरशाही कम करके और परिणाम-उन्मुख दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर लोक सेवा प्रदायगी को मजबूत करना है।

9.5 हिरासत में हिंसा और यातना

हिरासत में हिंसा और यातना से आशय ऐसी घटनाओं से है जिसमें पुलिस या सुधार सुविधाओं जैसी **कानून प्रवर्तन एजेंसियों की हिरासत में लोगों के साथ हिंसा, दुर्व्यहार, और यातना की घटनाएं होती हैं। इसमें बंदी बनाए गए, गिरफ्तार किए गए** या हिरासत में रखे गए लोगों को पहुंचाई गई शारीरिक, मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक क्षति शामिल है।

हिरासत में हिंसा और यातना की घटना **तब होती है जब प्राधिकारियों की हिरासत में लोगों के साथ हिंसात्मक व्यवहार किया जाता है।** इसमें शारीरिक हिंसा जैसे पिटाई या यातना के तरीके, साथ ही मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार, जैसे अपमान या धमकी शामिल हो सकते हैं।

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)

भारत में 2021 में हिरासत में हिंसा के 12,000 से अधिक मामले सामने आए। ये मामले अक्सर दर्ज नहीं किए जाते हैं, और हिंसा के अपराधियों को शायद ही कभी न्याय के कटघरे में लाया जाता है।

हालिया उदाहरण

- **17 फरवरी, 2023 को जयराज** नाम के 20 वर्षीय व्यक्ति **और उसके 58 वर्षीय पिता फेनिक्स** को तमिलनाडु की सथानकुलम पुलिस ने नकली शराब बेचने के आरोप में गिरफ्तार किया था। पुलिस ने हिरासत में दोनों लोगों को कथित तौर पर पीटा और यातनाएं दी और गिरफ्तारी के कुछ घंटों के भीतर ही उनकी मौत हो गई। इस घटना से भारत में व्यापक आक्रोश फैल गया और इसमें शामिल पुलिस अधिकारियों को उत्तरदायी ठहराने की मांग की गई। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने भी मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए जांच के आदेश दिए हैं।
- 2021 में उत्तर प्रदेश पुलिस ने अकील नाम के 22 वर्षीय शख्स को चोरी के आरोप में गिरफ्तार किया था। **हिरासत में पुलिस ने कथित तौर पर** उसे पीटा और यातनाएं दी और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।
- 2020 में हरियाणा में जुनैद नाम के 16 साल के लड़के को **गोमांस ले जाने के आरोप में पुलिस ने गिरफ्तार किया था। हिरासत में पुलिस ने कथित तौर पर** उसे पीटा और यातनाएं दी और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।
- **2019 में उत्तर प्रदेश में पुलिस ने अल्ताफ** नाम के एक 23 वर्षीय व्यक्ति को **माओवादी होने के आरोप में गिरफ्तार किया था। हिरासत में पुलिस ने कथित तौर पर** उसे पीटा और यातनाएं दी और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

इसमें शामिल नैतिक मुद्दे

- **मानवीय गरिमा:** हिरासत में हिंसा व्यक्तियों की अंतर्निहित गरिमा को कमजोर करती है, इससे सभी के साथ निष्पक्ष और सम्मानजनक व्यवहार के सिद्धांत का उल्लंघन करती है।
- **मानवाधिकार:** हिरासत में हिंसा बुनियादी मानवाधिकारों का उल्लंघन करती है, जिसमें जीवन, स्वतंत्रता, सुरक्षा का अधिकार और यातना या अपमानजनक व्यवहार से सुरक्षा शामिल है।
- **सत्ता का दुरुपयोग:** हिरासत में हिंसा अधिकार के दुरुपयोग को दर्शाती है, तथा कानून प्रवर्तन और हिरासत एजेंसियों में जनता के भरोसे को तोड़ती है।
- **जवाबदेही और न्याय:** नैतिक व्यवहार को बढ़ावा देने, भविष्य में होने वाले दुर्व्यवहार को रोकने और न्याय प्रणाली में विश्वास बहाल करने के लिए हिरासत में हिंसा के लिए अपराधियों को जिम्मेदार ठहराना महत्वपूर्ण है।
- **रोकथाम और सुरक्षा का कर्तव्य:** हिरासत में हिंसा की घटना को कम करने और हिरासत में व्यक्तियों के लिए एक सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए निवारक उपाय करना एक नैतिक दायित्व है।

- **व्यावसायिक नैतिकता:** हिरासत में हिंसा पेशेवर नैतिकता के विपरीत है, जो अधिकारों का सम्मान करने, कानून को बनाए रखने और जनहित की सेवा करने की मांग करती है,जिससे पेशे में विश्वास कम होता है।

किए गए उपाय

- **मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993:** इस अधिनियम ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) और राज्य मानवाधिकार आयोगों की स्थापना की। एनएचआरसी के पास हिरासत में हिंसा सहित मानवाधिकार उल्लंघन के मामलों की जांच करने की शक्ति है।
    - राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कई सलाह जारी की हैं, जिसमें बताया गया है कि हिरासत में हिंसा को रोकने के लिए उन्हें क्या कदम उठाने चाहिए।
    - इन सलाहों में पुलिस स्टेशनों में **सीसीटीवी कैमरों की स्थापित करना,** मानवाधिकारों पर पुलिस अधिकारियों का प्रशिक्षण और हिरासत में हिंसा के पीड़ितों को कानूनी सहायता का प्रावधान शामिल है।
- **आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013:** इस अधिनियम ने हिरासत में हिंसा से निपटने के लिए भारतीय दंड संहिता में नए प्रावधान पेश किए। इन प्रावधानों में हिरासत में मौत के लिए मौत की सजा और पुलिस हिरासत में गंभीर चोट पहुंचाने वालों के लिए आजीवन कारावास शामिल है।
- **भारत का सर्वोच्च न्यायालय:** इसने हिरासत में हिंसा की समस्या के समाधान के लिए कई निर्णय भी जारी किए हैं। इन निर्णयों में शामिल हैं:
    - **डीके बसु दिशानिर्देश:** ये दिशानिर्देश 1994 में जारी किए गए थे और उन्होंने हिरासत में हिंसा को रोकने के लिए कई उपाय निर्धारित किये। इन उपायों में गिरफ्तारी के कारणों की जानकारी पाने का अधिकार, गिरफ्तारी के 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के सामने पेश होने का अधिकार और डॉक्टर द्वारा जांच कराने का अधिकार शामिल है।
    - **प्रकाश सिंह दिशानिर्देश (2006):** ये दिशानिर्देश 2006 में जारी किए गए थे और उन्होंने पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार के लिए कई उपाय निर्धारित किए थे। इन उपायों में स्वतंत्र पुलिस शिकायत प्राधिकरण की स्थापना और पुलिस जवाबदेही की एक प्रणाली का निर्माण शामिल है।
- **कुछ राज्य सरकारों ने भी हिरासत में हिंसा की समस्या के समाधान के लिए कदम उठाए हैं।** उदाहरण के लिए, **महाराष्ट्र राज्य सरकार** ने हिरासत में हिंसा के मामलों की जांच के लिए एक **विशेष जांच दल (एसआईटी) की स्थापना की है।** तमिलनाडु राज्य सरकार ने एक नया कानून भी पेश किया है जो पुलिस अधिकारियों के लिए गिरफ्तार किए गए व्यक्ति के परिवार को गिरफ्तारी के 24 घंटे के भीतर सूचित करना अनिवार्य बनाता है।

आगे का रास्ता

- **हिरासत में हिंसा के खिलाफ कानूनों को मजबूत बनाना:** हिरासत में हिंसा के खिलाफ कानूनों को मजबूत करने की जरूरत है ताकि इन अपराधों को करने वालों को दंडित किया जा सके।
- **पुलिस की जवाबदेही में सुधार:** पुलिस को अपने कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए, भले ही वे हिरासत में हिंसा करते पाए जाएं। यह स्वतंत्र पुलिस शिकायत प्राधिकरण बनाकर और पुलिस जवाबदेही की प्रणाली को मजबूत करके किया जा सकता है।
- **दण्ड से मुक्ति की संस्कृति को बदलना:** दण्ड से मुक्ति की संस्कृति को बदलने की जरूरत है ताकि हिरासत में हिंसा करने वाले लोगों को दंडित किया जा सके। यह हिरासत में हिंसा की समस्या के बारे में जागरूकता बढ़ाकर और यह सुनिश्चित करके किया जा सकता है कि पुलिस को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराया जाए।
- **निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार:** हिरासत में हिंसा और यातना व्यक्तियों के निष्पक्ष सुनवाई के अधिकार का भी उल्लंघन कर सकती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनका उपयोग जबरदस्ती अपराध स्वीकार करने या गवाहों को डराने-धमकाने के लिए किया जा सकता है।
- **मूल्य आंतरिककरण खंड को बढ़ाना:** पुलिस प्रशिक्षण में पुनर्जीवन की आवश्यकता है। ध्यान कानून लागू करने वालों से हटकर मानवाधिकारों और जन कल्याण के सुविधा प्रदाताओं पर केंद्रित होना चाहिए। कानून और व्यवस्था को नागरिकों को अनुशासित करने के बजाय नागरिकों की स्वतंत्रता के अनुभव को बेहतर बनाने के साधन के रूप में देखा जाना चाहिए।

9.6 प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान की नैतिकता

हाल ही में भ्रूण स्टेम कोशिकाओं पर हुए अनुसंधान ने इसकी नैतिक चिंताओं पर बहस छेड़ दी है, इसलिए इसमें शामिल मुद्दों का अध्ययन करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

परिचय

- भ्रूणीय स्टेम कोशिका अनुसंधान से **तात्पर्य मानव भ्रूण से प्राप्त भ्रूणीय स्टेम कोशिकाओं पर किए गए वैज्ञानिक परीक्षण से है।**

- भ्रूण स्टेम कोशिका अनुसंधान एक **जटिल नैतिक दुविधा प्रस्तुत करता है,क्योंकि इसमें दो नैतिक सिद्धांतों के बीच चयन की आवश्यकता होती है:**
    a. रोकने का कर्तव्य या
    b. समस्याओं को कम करना और मानव जीवन के मूल्य का सम्मान करने का कर्तव्य।
- मुख्य प्रश्न प्रारंभिक भ्रूण की नैतिक स्थिति के इर्द-गिर्द घूमता है और क्या इसे एक व्यक्ति माना जाना चाहिए या नहीं।

प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान के पक्ष में नैतिक तर्क

- **भ्रूण की विकासात्मक क्षमता:** गर्भाशय में प्रत्यारोपण से पहले प्रारंभिक भ्रूण में पूर्ण विकसित इंसान के रूप में विकसित होने की क्षमता नहीं होती है। इसलिए, यह तर्क दिया जा सकता है कि उसकी नैतिक स्थिति पूर्ण विकसित व्यक्ति के समान नहीं है।
- **अधिशेष भ्रूण:** प्रजनन क्लिनिक अक्सर प्रत्यारोपण की आवश्यकता से अधिक भ्रूण बनाते हैं,जिससे अधिशेष भ्रूण का निपटान करना होता है। अनुसंधान उद्देश्यों के लिए इन अतिरिक्त भ्रूणों का उपयोग उन्हें नष्ट करने के बजाय उनसे संभावित लाभ प्राप्त करने का एक तरीका प्रदान करता है।
- **चिकित्सा प्रगति और जीवन बचाना:** प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान, विशेष रूप से भ्रूण स्टेम कोशिकाओं के क्षेत्र में, नए चिकित्सा उपचारों का पता लगाने की क्षमता रखता है जो कई लोगों की समस्याओं की समस्याओं को कम कर सकते हैं और जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। यदि इस तरह के अनुसंधान से महत्वपूर्ण चिकित्सीय सफलता मिलती है तो यह भ्रूण को नष्ट करने से अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान के विरुद्ध नैतिक तर्क

- **एक पूर्ण मानव के रूप में विकसित होने की क्षमता:** मुख्य नैतिक चिंता इस विश्वास के इर्द-गिर्द घूमती है कि प्रारंभिक भ्रूण में एक पूर्ण मानव के रूप में विकसित होने की क्षमता होती है। इस परिप्रेक्ष्य का तर्क है कि अनुसंधान उद्देश्यों के लिए जानबूझकर भ्रूण को नष्ट करना मानव जीवन को समाप्त करने के बराबर है।
- **धार्मिक और दार्शनिक परिप्रेक्ष्य:** विभिन्न धार्मिक और दार्शनिक परंपराएँ यह विश्वास रखती हैं कि भ्रूण में आत्मा की उपस्थिति या मानव जीवन की अंतर्निहित गरिमा के कारण नैतिक महत्व होता है। ये दृष्टिकोण जीवन की पवित्रता पर जोर देते हैं और दूसरों के लाभ के लिए एक जीवन का बलिदान करना अनैतिक मानते हैं।
- **मानवीय गुणों का मूल्य निर्धारण:** मानवीय क्षमताओं को श्रेष्ठ और निम्न की श्रेणियों में रखा जाता है। इससे तथाकथित श्रेष्ठ गुणों की कमी वाले लोगों के प्रति पूर्वाग्रहों और भेदभाव को मजबूत होने की संभावना है।

आगे बढ़ने का रास्ता

- **अनुसंधान का नैतिक तरीके से करना:** यह महत्वपूर्ण है कि प्रारंभिक भ्रूण सहित स्टेम कोशिकाओं से जुड़े सभी अनुसंधान उचित निरीक्षण और स्थापित दिशानिर्देशों और विनियमों के अनुपालन के साथ नैतिक तरीके से किए जाएं।
- **सार्वजनिक जुड़ाव और संवाद:** विभिन्न दृष्टिकोणों और मूल्यों को शामिल करते हुए प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान के नैतिक आयामों का पता लगाने के लिए सामाजिक चर्चा जारी रहनी चाहिए। सार्वजनिक भागीदारी ऐसे नियमों और नीतियों को विकसित करने में योगदान दे सकती है जो वैज्ञानिक प्रगति की खोज और मानव जीवन के मूल्य के सम्मान के बीच संतुलन बनाते हैं।
- **वैकल्पिक अनुसंधान दृष्टिकोण:** ऐसे वैकल्पिक अनुसंधान प्रयासों का पता लगाने और विकसित करने का प्रयास किया जाना चाहिए जिनमें भ्रूण को नष्ट किया जाना शामिल न हो। इसमें वयस्क स्टेम कोशिकाओं, प्रेरित प्लुरिपोटेंट स्टेम कोशिकाओं और अन्य नवीन तकनीकों की खोज शामिल है।

निष्कर्ष

प्रारंभिक भ्रूण अनुसंधान की नैतिकता एक **गहरी नैतिक दुविधा पैदा करती है, जो चिकित्सा प्रगति के संभावित लाभों को संतुलित करती है** और प्रारंभिक भ्रूण के आंतरिक मूल्य और नैतिक स्थिति के खिलाफ पीड़ा को कम करती है। जारी चर्चा और विविध दृष्टिकोणों पर विचार यह सुनिश्चित करते हुए कि वैज्ञानिक प्रगति जिम्मेदारी और नैतिक तरीके से प्राप्त की जाती है, एक नैतिक ढांचे को आकार देगा।

9.7 युद्ध की नैतिकता

रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष ने बल के उपयोग और युद्ध के संचालन के संबंध में महत्वपूर्ण नैतिक चिंताएं पैदा कर दी हैं।

परिचय

- **युद्ध की नैतिकता एक जटिल और विवादास्पद विषय है जो सशस्त्र संघर्ष में शामिल होने के नैतिक निहितार्थों की जांच करता है।**
- इसमें **युद्ध का सहारा लेने के औचित्य,** युद्ध के संचालन और लोगों और समाज पर युद्ध के परिणामों का मूल्यांकन करना शामिल है।

- वैध अधिकार, उचित कारण, आनुपातिकता और गैर-लड़ाकों की सुरक्षा जैसे नैतिक सिद्धांत युद्ध की नैतिक औचित्यता के मूल्यांकन का मार्गदर्शन करते हैं।
- युद्ध की नैतिकता अंतरराष्ट्रीय कानूनों और संधियों के पालन, मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने और शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान की खोज पर भी विचार करती है।

न्यायसंगत युद्ध सिद्धांत या जस्ट वॉर थ्योरी

- जस्ट वॉर थ्योरी एक ढांचा है जो **युद्ध आरंभ करने और युद्ध संचालन के लिए नैतिक औचित्य निर्धारित करने के लिए सिद्धांत और मानदंड प्रदान करता है।**
- **इसका एक एतिहासिक आधार जिसमें 5वीं सदी में सेंट ऑगस्टीन और 13वीं सदी में सेंट थॉमस एक्विनास ने** योगदान दिया।
- **सिद्धांत की दो मुख्य शाखाएँ हैं:** जूस एड बेलम (JusAd bellum) और जूस इन बेल्लो (Jus in Bello)। जूस एड बेलम युद्ध का सहारा लेने के औचित्य पर केंद्रित है, जबकि जूस इन बेल्लो युद्ध के दौरान नैतिक आचरण से संबंधित है। ये शाखाएँ यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करती हैं कि युद्ध नैतिक रूप से जिम्मेदार तरीके से सचालित किया जाए।
- **जस्ट वॉर थ्योरी के सिद्धांतों के अनुसार, एक युद्ध को नैतिक रूप से उचित ठहराए जाने के लिए कई मानदंडों को पूरा करना होगा:**
    - **वैध प्राधिकरण:** एक मान्यता प्राप्त और वैध शासकीय प्राधिकरण, आमतौर पर एक राज्य या सरकार, को ही युद्ध में जाने का निर्णय लेना चाहिए।
    - **उचित कारण:** युद्ध का उचित कारण होना चाहिए, जैसे आक्रमणकारी के विरूद्ध आत्मरक्षा, निर्दोष लोगों की सुरक्षा, या न्याय स्थापित करने के लिए।
    - **सही इरादा:** युद्ध छेड़ने के पीछे का इरादा नैतिक रूप से ईमानदार होना चाहिए, जिसका लक्ष्य स्वार्थ या बदला लेने के बजाय उचित और शांतिपूर्ण परिणाम प्राप्त करना हो।
    - **सफलता की संभावना:** युद्ध के वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने की समुचित संभावना होनी चाहिए। निरर्थक या निराशाजनक युद्ध अन्यायपूर्ण माना जाता है।
    - **अंतिम उपाय:** युद्ध अंतिम उपाय होना चाहिए, जिसका उपयोग संघर्ष को सुलझाने के सभी शांतिपूर्ण तरीकों के समाप्त हो जाने के बाद ही किया जाना चाहिए।
    - **आनुपातिकता:** युद्ध से होने वाली हानि उस लाभ के समानुपाती होनी चाहिए जिसे प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। अत्यधिक बल प्रयोग या असंगत क्षति को अन्यायपूर्ण माना जाता है।
- **इन सिद्धांतों के अलावा, तीन प्रमुख सिद्धांत हैं जो युद्ध के संचालन का मार्गदर्शन करते हैं (Jus in Bello):**
    - **विभेद:** लड़ाकों और गैर-लड़ाकों के बीच अंतर किया जाना चाहिए। गैर-लड़ाकों, जैसे कि नागरिकों, चिकित्सा कर्मियों और युद्धबंदियों को जानबूझकर होने वाले नुकसान से बचाया जाना चाहिए।
    - **आनुपातिकता:** बल का उपयोग सैन्य उद्देश्य के लिए आनुपातिक होना चाहिए और इससे अनावश्यक नुकसान या कष्ट नहीं होना चाहिए।
    - **सैन्य आवश्यकता:** युद्ध के दौरान की जाने वाली कार्रवाइयां वांछित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सैन्य रूप से आवश्यक होनी चाहिए। अनावश्यक विनाश या क्षति को नैतिक रूप से अस्वीकार्य माना जाता है।
- **इन सिद्धांतों का पालन करते हुए,** जस्ट वॉर थ्योरी सशस्त्र संघर्ष में शामिल होने के नैतिक निहितार्थों का आकलन करने और युद्ध के समय में निर्णय लेने का मार्गदर्शन करने के लिए एक नैतिक ढांचा स्थापित करने का प्रयास करती है।

युद्ध के परिणाम

युद्ध के परिणाम महत्वपूर्ण होते हैं और समाज के विभिन्न पहलुओं पर दूरगामी प्रभाव डालते हैं। कुछ सामान्य परिणाम निम्नलिखित हैं:

- **जीवन की हानि और कष्ट:** युद्ध में अक्सर मानव जीवन की हानि होती है, जिसमें सैन्यकर्मी और नागरिक दोनों शामिल होते हैं। यह व्यक्तियों और उनके परिवारों के लिए शारीरिक चोटों, मनोवैज्ञानिक आघात और भावनात्मक कष्ट का कारण बनता है।
- **संपत्ति का सामूहिक विनाश:** युद्धों में हथियारों और सैन्य रणनीति का उपयोग शामिल होता है जिसके परिणामस्वरूप बुनियादी ढांचों, घरों, सांस्कृतिक विरासत स्थलों और सार्वजनिक सुविधाओं का विनाश हो सकता है। इस क्षति के पुनर्निर्माण में वर्षों या दशकों का समय लग सकता है, जिससे प्रभावित समुदाय और अधिक प्रभावित होते हैं।
- **नकारात्मक आर्थिक प्रभाव:** युद्धों का अर्थव्यवस्था पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है, जिसमें व्यापार में व्यवधान, बुनियादी ढांचे को नुकसान और उत्पादक क्षमता का नुकसान शामिल है। जो संसाधन विकास और कल्याण के लिए आवंटित किए जा सकते थे, उन्हें सैन्य व्यय के लिए उपयोग किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप जनता के लिए आर्थिक अस्थिरता और कठिनाई होती है।
- **आजीविका पर प्रभाव:** युद्ध कृषि, उद्योग और वाणिज्य सहित समाज के सामान्य कामकाज को बाधित करता है।

लोगों का विस्थापन, आजीविका का विनाश और आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान से गरीबी, खाद्य असुरक्षा और रोजगार के अवसरों की हानि हो सकती है।

- **बुनियादी मानवाधिकारों से उल्लंघन:** युद्ध के दौरान, अक्सर मानवाधिकारों का उल्लंघन किया जाता है, जिसमें मनमाने ढंग से गिरफ्तारियां, यातना, जबरन विस्थापन, यौन हिंसा और स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा तक पहुंच बाधित होना शामिल है। ये उल्लंघन युद्ध से प्रभावित लोगों और समुदायों की गरिमा और कल्याण को कम करते हैं।

युद्ध से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय कानून और समझौते

जिनेवा समझौते और अतिरिक्त प्रोटोकॉल	• **जिनेवा समझौते अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून** की आधारशिला है। • **यह उन लोगों की सुरक्षा** के लिए कानूनी ढांचे की रूपरेखा तैयार करता है जो सीधे तौर पर युद्ध में भाग नहीं ले रहे हैं, जिनमें नागरिक, चिकित्सा कर्मी और युद्ध बंदी शामिल हैं। • **समझौते सशस्त्र संघर्षों के दौरान लोगों के साथ मानवीय व्यवहार, यातना पर रोक और मौलिक मानवाधिकारों के सम्मान के लिए नियम स्थापित करते हैं।** • अतिरिक्त प्रोटोकॉल अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करते हैं और कुछ हथियारों के उपयोग, गैर-अंतर्राष्ट्रीय सशस्त्र संघर्षों में पीड़ितों की सुरक्षा और लड़ाकों और वैध लक्ष्यों की पहचान जैसे मुद्दों का समाधान करते हैं।
गैर-हस्तक्षेप का संयुक्त राष्ट्र चार्टर सिद्धांत	• **संयुक्त राष्ट्र चार्टर का अनुच्छेद 2(4)** गैर-हस्तक्षेप सिद्धांत पर जोर देता है, किसी भी राज्य की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ बल प्रयोग या बल की धमकी पर रोक लगाता है। • रूसी हमले को इस सिद्धांत के उल्लंघन के रूप में देखा जाता है और यह अंतरराष्ट्रीय कानून के अंतर्गत आक्रमण है।
संयुक्त राष्ट्र महासभा संकल्प 3314 (1974)	• यह प्रस्ताव **आक्रमण को परिभाषित करता है,** जिसमें कहा गया है कि इसमें एक राज्य द्वारा दूसरे राज्य की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ सशस्त्र बल का उपयोग शामिल है। • इसका मानना है कि किसी तीसरे राज्य के खिलाफ आक्रमण के लिए किसी अन्य राज्य द्वारा अपने क्षेत्र का उपयोग करने की अनुमति देना आक्रमण माना जाएगा।
मानवाधिकारों का सार्वभौम घोषणापत्र (यूडीएचआर)	• यूडीएचआर एक ऐतिहासिक दस्तावेज है जो **मौलिक मानवाधिकारों और स्वतंत्रता को निर्धारित करता है।** • **इसे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1948 में** अपनाया गया था और यह मानवाधिकारों की रक्षा के लिए एक वैश्विक मानक के रूप में कार्य करता है। • यूडीएचआर सभी लोगों की **अंतर्निहित गरिमा और समान अधिकारों पर जोर देता है, चाहे उनकी राष्ट्रीयता या दर्जा कुछ भी हो।** • **इसमें जीवन, स्वतंत्रता और सुरक्षा का अधिकार, यातना और क्रूर व्यवहार का निषेध और निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार** जैसे अधिकार शामिल हैं। • यूडीएचआर एक ऐसा नैतिक और कानूनी ढांचा प्रदान करता है जो स्वतंत्रता, समानता और न्याय को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का मार्गदर्शन करता है।

युद्ध में नैतिकता को बढ़ावा देने के तरीके

- **अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को मजबूत करना:** मौजूदा समझौतों का अनुपालन बढ़ाना और युद्ध में उभरती चुनौतियों का समाधान करने के लिए उनका विस्तार/अद्यतन करना।
- **शिक्षा और प्रशिक्षण:** सैन्य कर्मियों को नैतिक सिद्धांतों और सशस्त्र संघर्ष के कानूनों पर व्यापक शिक्षा प्रदान करना।
- **नैतिक निर्णय लेना:** सैन्य निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में नैतिक विचारों को प्राथमिकता देना।
- **नैतिक नेतृत्व को बढ़ावा देना:** सैन्य संगठनों के भीतर नैतिक नेतृत्व की संस्कृति का पोषण करना, नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों का उदाहरण प्रस्तुत करने और उन्हें कायम रखने वाले नेताओं के महत्व पर जोर देना।

- **संघर्ष की रोकथाम और समाधान के प्रयास करना:** सैन्य हस्तक्षेप की आवश्यकता को कम करते हुए, कूटनीति, बातचीत और मध्यस्थता के माध्यम से संघर्षों को रोकने और शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देने के प्रयासों को प्राथमिकता देना।
- **मानवीय सहायता को बढ़ावा देना:** प्रभावित आबादी, विशेष रूप से नागरिकों और कमजोर समूहों का कल्याण और सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए, संघर्ष क्षेत्रों में मानवीय सहायता और सहायता प्रयासों को उपलब्ध बनाना और समर्थन करना।
- **नैतिक अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना:** सैन्य प्रौद्योगिकी और रणनीति में अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करना जो नैतिक सिद्धांतों के साथ संरेखित हो, जैसे कि नागरिक क्षति को कम करना, मानवाधिकारों का सम्मान करना और शांतिपूर्ण परिणामों को बढ़ावा देना।
- **सम्मान की संस्कृति विकसित करना:** सैन्य संस्थानों के भीतर एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देना जो मानवाधिकारों, गैर-लड़ाकू प्रतिरक्षा और आनुपातिकता और भेदभाव के सिद्धांतों को महत्व देती है और सम्मान को बढ़ावा देती है।
- **शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान को बढ़ावा देना:** सशस्त्र हस्तक्षेप की आवश्यकता को रोकने के लक्ष्य के साथ संघर्षों को हल करने के लिए कूटनीति, बातचीत और शांतिपूर्ण तरीकों को प्राथमिकता देना।
- **उत्तरदायित्व और न्याय स्थापित करना:** युद्ध अपराधों और मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए व्यक्तियों को उत्तरदायी ठहराने, न्याय स्थापित करना और भविष्य में अनैतिक कार्यों को रोकने के लिए मजबूत तंत्र स्थापित करना।
- **संवाद और कूटनीति:** अनावश्यक युद्धों को रोकने के लिए शांतिपूर्ण बातचीत और राजनयिक समाधान पर जोर देना।
- **जन जागरूकता और सहभागिता:** शिक्षा और चर्चाओं के माध्यम से युद्ध के नैतिक आयामों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाना।

निष्कर्ष

न्यायसंगत युद्ध सिद्धांत और दिशानिर्देश का उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष में शामिल होने का **नैतिक औचित्य सुनिश्चित करना है। सेंट ऑगस्टीन और सेंट थॉमस एक्विनास** के ऐतिहासिक योगदान पर आधारित जस्ट वॉर थ्योरी, दो मुख्य शाखाओं से युक्त एक रूपरेखा प्रदान करती है: जूस एड बेलम (युद्ध का सहारा लेने का औचित्य) और जूस इन बेल्लो (युद्ध के दौरान नैतिक आचरण)। ये शाखाएँ युद्ध के नैतिक औचित्य के लिए मानदंड स्थापित करने के लिए मिलकर काम करती हैं, जिसमें **वैध प्राधिकार, उचित कारण, नेक इरादा, सफलता की संभावना, अंतिम उपाय और आनुपातिकता शामिल हैं।**

9.8 प्रशासन में भगवत गीता की भूमिका

परिचय

- भगवत गीता एक **पवित्र हिंदू धर्मग्रंथ है और इसका वर्णन महाभारत महाकाव्य में पाया जाता है। इसमें अर्जुन और भगवान कृष्ण के बीच एक संवाद शामिल है,** जो जीवन, कर्तव्य और आध्यात्मिकता के बारे में गहन प्रश्नों की खोज करता है।
- गीता **धर्म की अवधारणा पर जोर देती है, कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग** सहित आध्यात्मिक ज्ञान के विभिन्न मार्ग प्रस्तुत करती है।
- **यह धार्मिक जीवन, आत्म-साक्षात्कार और सर्व शक्तिमान के प्रति समर्पण हेतु** मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है।
- गीता की शिक्षाओं का भारतीय दर्शन पर गहरा प्रभाव पड़ा है और यह दुनिया भर के लोगों को उनकी आध्यात्मिक यात्राओं के लिए प्रेरित करती रही है।

प्रशासन में भगवत गीता की भूमिका

भगवद गीता प्रशासकों को विभिन्न पहलुओं पर **बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करती है:**

- **अनासक्ति और कर्तव्य:** गीता इस बात पर जोर देती है कि केवल अपना कर्तव्य निभाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि ऐसा व्यक्तिगत इच्छाओं और परिणामों से वैराग्य के साथ करना चाहिए। प्रशासक व्यक्तिगत लाभ के बजाय समाज की भलाई पर ध्यान केंद्रित करते हुए, निःस्वार्थ भाव से अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए इस सिद्धांत को अपना सकते हैं।
- **सदाचार का सिद्धांत:** गीता धर्मनिष्ठ प्रशासन के आवश्यक गुणों पर प्रकाश डालती है, जैसे शांत और अनुत्तेजित मन, निर्णय लेने में दृढ़ रहना, निष्पक्ष रहना और अपने कर्तव्य में संतुष्ट रहना, और मित्र और शत्रु, सम्मान और अपमान के साथ समानता का व्यवहार करना। ये गुण प्रशासकों को उनके कार्यों और परस्पर व्यवहार में मार्गदर्शन करते हैं।
- **नेतृत्व विकास:** गीता भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे प्रभावी नेतृत्व गुणों को विकसित करने, नैतिक दुविधाओं को हल करने और उदासीनता और निष्पक्षता की भावना को बढ़ावा देने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है। ये गुण प्रशासकों को जटिल परिस्थितियों से निपटने और दूसरों को प्रेरित करने में मदद करते हैं।
- **धर्म और शासकीय सिद्धांत:** गीता में धर्म की अवधारणा हमारे सांस्कृतिक जीवन के आवश्यक विचारों और शासकीय सिद्धांतों की पहचान करती है। प्रशासक अपने निर्णयों और

नीतियों में न्याय, धर्मनिष्ठा और सद्भाव को बनाए रखने के लिए इन सिद्धांतों का सहारा ले सकते हैं।

- **कर्म योग और ज्ञान योग:** गीता कर्म योग (नि:स्वार्थ कर्म का मार्ग) और ज्ञान योग (ज्ञान का मार्ग) को शाश्वत आनंद और सत्य प्राप्त करने के तरीकों के रूप में प्रस्तुत करती है। प्रशासक समर्पण के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करके, ज्ञान प्राप्त करके और आत्म-सुधार करके इन मार्गों का उपयोग कर सकते हैं।
- **सामाजिक और व्यक्तिगत कल्याण का एकीकरण:** गीता व्यक्तिगत और सामाजिक हितों के एकीकरण पर जोर देती है। यह समाज के भीतर व्यक्तियों के अंतर्संबंध को उजागर करते हुए व्यक्तिगत विकास के महत्व को प्रदर्शित करती है।
- **निष्काम कर्म:** गीता सत्य निष्ठा और आध्यात्मिक विकास के मार्ग के रूप में, व्यक्तिगत इच्छाओं और अहंकार से रहित, निस्वार्थ कर्मों को बढ़ावा देती है। आसक्ति को दूर करके और कर्तव्य पर ध्यान केंद्रित करके लोग नैतिक आचरण का जीवन जी सकते हैं।
- **कर्म फल के प्रति अनासक्ति:** गीता इस बात पर जोर देती है कि लोगों को कर्म करने का अधिकार है, लेकिन अपने कर्मों के परिणामों को नियंत्रित करने का नहीं। प्रशासक व्यक्तिगत पुरस्कारों या परिणामों से जुड़े बिना, अपने कर्तव्यों और कार्यों पर ध्यान केंद्रित करके इस शिक्षा को अपना सकते हैं, इस प्रकार सफलता या विफलता से जुड़े तनाव और चिंता को कम कर सकते हैं।
- **भोग और तपस्या का संश्लेषण:** गीता जीवन के प्रति एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करती है, भोग और तपस्या को एकीकृत करती है। यह लोगों को अपने जुनून को दिव्यता प्रदान करने और भौतिक गतिविधियों और आध्यात्मिक विकास के बीच सामंजस्य खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है।
- **दैनिक कर्तव्यों का मार्गदर्शन:** गीता व्यक्ति की प्रकृति और भूमिका के अनुसार उसके दैनिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन करती है। यह रोजमर्रा की जिंदगी में नैतिक कार्यों को समझने और निष्पादित करने के लिए एक रूपरेखा उपलब्ध कराती है।
- **नियतिवाद और इच्छा की स्वतंत्रता:** गीता नियतिवाद और इच्छा की स्वतंत्रता की अवधारणाओं का संश्लेषण करती है। यह व्यक्तिगत दृढ़ संकल्प और दैवीय कार्रवाई के प्रति समर्पण के महत्व पर जोर देते हुए परिणामों को नियंत्रित करने में दैवीय भूमिका को स्वीकार करती है।
- **नैतिक दुविधाओं का समाधान:** वैराग्य और निस्वार्थ कर्म पर गीता की शिक्षाएँ नैतिक दुविधाओं के समाधान करने में सहायता कर सकती हैं, विशेष रूप से स्व-हित और जनहित के बीच टकराव से उत्पन्न होने वाली दुविधाओं को हल करने में।
- **सार्वभौमिक प्रासंगिकता:** गीता का संदेश सार्वभौमिक रूप से व्यापक और कालातीत है। इसकी शिक्षाएं समकालीन समाज में महत्व रखती हैं, जो संतुलित और नैतिक जीवन शैली की ओर लोगों का मार्गदर्शन करती हैं, खासकर ऐसे समय में जब भौतिकवाद सामाजिक सद्भाव के लिए खतरा बन जाता है।
- **शासन में भूमिका:** गीता की नैतिक शिक्षाएँ प्रभावी, उत्तरदायी और समावेशी शासन उपलब्ध कराने में लोक सेवकों का मार्गदर्शन कर सकती हैं। नैतिक व्यवहार, निर्णय लेने और एक नैतिक कार्यस्थल बनाने पर जोर देकर, यह नैतिक शासन प्रथाओं में योगदान कर सकती हैं।

निष्कर्ष

अंत में, भगवत गीता **वैराग्य, कर्तव्य, सदाचार, नेतृत्व और नैतिक निर्णय लेने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करके प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।** यह सामाजिक और व्यक्तिगत कल्याण के एकीकरण पर जोर देती है, निस्वार्थ कार्यों को बढ़ावा देती है और दैनिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है। **गीता की अनासक्ति, भोग और तपस्या पर शिक्षाओं के साथ-साथ नियतिवाद** और इच्छा की स्वतंत्रता के संश्लेषण की सार्वभौमिक प्रासंगिकता है। गीता के सिद्धांतों को लागू करके, प्रशासक नैतिक शासन प्रथाओं को बढ़ावा दे सकते हैं और एक सामंजस्यपूर्ण और समावेशी वातावरण तैयार कर सकते हैं।

9.9 सैन्य सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): नैतिक मुद्दे

हाल ही में नीदरलैंड ने सेना में एआई के उपयोग पर पहले वैश्विक सम्मेलन की मेजबानी की जिसमें भारत सहित दुनिया की सभी प्रमुख सैन्य शक्तियों को आमंत्रित किया गया था।

परिचय

- चूंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) लगातार विकसित हो रही है और सैन्य सुरक्षा में तेजी से प्रमुख भूमिका निभा रही है, इसलिए इससे उत्पन्न होने वाले नैतिक प्रश्नों को हल किया जाना आवश्यक है।
- एआई तकनीक कंप्यूटरों को आंकड़ों का विश्लेषण करके और मानवीय सोच और निर्णय लेने का अनुकरण करने उसके अनुसार प्रतिक्रिया देने में सक्षम बनाती है।
- यद्यपि, जैसा कि एआई मानवीय क्षमताओं से परे है, इसलिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो जाता है कि सैन्य संदर्भों में एआई का उपयोग करने से पहले मानव आचरण को

नियंत्रित करने वाले नैतिक सिद्धांतों पर उचित विचार किया जाना चाहिए।

इसमें शामिल नैतिक मुद्दे

सैन्य सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) महत्वपूर्ण नैतिक चिंताओं को जन्म देती है जिसे इसके उपयोग से पहले संबोधित किया जाना चाहिए। ये नैतिक मुद्दे निम्नलिखित हैं:

- **निजता और मानवाधिकारों का उल्लंघन:** निगरानी और गश्त के लिए एआई उपकरणों का उपयोग निजता के अधिकार और अन्य मौलिक मानवाधिकारों को खतरे में डाल सकता है, खासकर सीमा क्षेत्रों और उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में। आंकड़े एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने में एआई की व्यापक क्षमताएं निजी स्वतंत्रता का अतिक्रमण कर सकती हैं।
- **मानव व्यवहार और मान्यताओं को बदलना:** सत्तावादी शासन में, जनता के व्यवहार और मान्यताओं में हेरफेर करने के लिए एआई प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, चीन के शिनजियांग प्रांत में, उइगुर मुसलमानों को नियंत्रित करने और दबाने के लिए चेहरे की पहचान और निगरानी तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसी तरह, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और स्वायत्तता को सीमित करते हुए, नागरिकों के व्यवहार का आकलन और नियंत्रण करने के लिए सामाजिक क्रेडिट स्कोर प्रणाली विकसित की जा रही है।
- **मानव बुद्धि और क्षमता को वश में करना:** सैन्य सुरक्षा के निर्णय लेने के लिए एआई प्रणाली पर बढ़ती निर्भरता मानव बुद्धिमत्ता और अनुभव की भूमिका को कम कर सकती है। जबकि एआई आंकड़ा-आधारित विश्लेषण कर सकती है, लेकिन इसमें मानव निर्णय की तरह प्रासंगिक समझ, अंतर्ज्ञान और रणनीतिक सोच का अभाव है।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति:** एआई में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति का अभाव है, जो सैन्य सुरक्षा अभियानों में महत्वपूर्ण हैं। चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में मानव सैनिक सौहार्द, भावनात्मक समर्थन और सहानुभूति पर भरोसा करते हैं। एआई-नियंत्रित या स्वायत्त प्रणालियाँ समान स्तर का भावनात्मक सहयोग नहीं कर सकती हैं, जो संभावित रूप से सैन्य कर्मियों के मनोबल और कल्याण को प्रभावित कर सकती हैं।
- **युद्ध में आनुपातिकता:** सैन्य अभियानों में एआई की शुरूआत से हिंसा और विनाश में वृद्धि हो सकती है। स्वायत्त हथियारों और एआई-संचालित निर्णय-प्रक्रिया के परिणामस्वरूप असंगत प्रतिक्रियाएं और संपार्श्विक क्षति (collateral damage) हो सकती है, जिससे आनुपातिकता और हानि कम करने के सिद्धांतों के अनुपालन के बारे में चिंताएं बढ़ सकती हैं।
- **उत्तरदायित्व और जिम्मेदारी:** पारंपरिक युद्ध में, लोगों को नैतिक सिद्धांतों के उल्लंघन के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है और युद्ध अपराधों के लिए परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। हालाँकि, स्वचालित मशीनों और एआई सिस्टम की भागीदारी उत्तरदायित्व के मुद्दे को जटिल बनाती है। मशीनों को उनके कार्यों के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, जिससे अनैतिक या क्रूर कार्यों के लिए जिम्मेदारी और उत्तरदायित्व तय करने पर प्रश्नचिन्ह लगते हैं।

उठाए जा सकने वाले कदम

सैन्य सुरक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता(एआई) के उपयोग से जुड़े नैतिक मुद्दों पर ध्यान देने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- **नैतिक ढाँचे:** सैन्य सुरक्षा में एआई के उपयोग के लिए विशिष्ट व्यापक नैतिक ढाँचे का विकास करना। इन रूपरेखाओं में गोपनीयता अधिकार, मानवाधिकार, युद्ध में आनुपातिकता, जवाबदेही और अन्य प्रासंगिक नैतिक चिंताओं को संबोधित किया जाना चाहिए। उन्हें निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए और उत्तरदायी एआई उपयोग के लिए सिद्धांत स्थापित करना चाहिए।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** सैन्य सुरक्षा में एआई के उपयोग के संबंध में वैश्विक मानदंडों और विनियमों को स्थापित करने के लिए राष्ट्रों के बीच अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और संवाद को बढ़ावा देना। इससे एकीकृत दृष्टिकोण सुनिश्चित करने और अनैतिक प्रथाओं को रोकने में मदद मिल सकती है।
- **नैतिक दिशानिर्देश और प्रशिक्षण:** सैन्य सुरक्षा में शामिल सैन्य कर्मियों और एआई डेवलपर्स के लिए स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देश विकसित किए जाएं। ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना जो एआई के जिम्मेदार और नैतिक उपयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं, मानव निरीक्षण, अंतरराष्ट्रीय कानूनों और समझौतों का पालन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में मानवीय मूल्यों को बनाए रखने के महत्व पर जोर देते हैं।
- **जन सहयोग और पारदर्शिता:** सैन्य सुरक्षा में एआई के उपयोग के बारे में जन सहयोग और जागरूकता को बढ़ावा देना। चर्चाओं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में जनता, नागरिक समाज संगठनों और विशेषज्ञों को शामिल करके मुक्त बातचीत, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करना। इससे चिंताओं को कम करने, विश्वास बनाने और यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि एआई तैनाती में सामाजिक मूल्यों पर विचार किया जाता है।
- **मानव-मशीन सहयोग:** सैन्य सुरक्षा में उपयोग की जाने वाली एआई प्रणालियों में मानव निरीक्षण और नियंत्रण के महत्व पर जोर देना। मनुष्यों और मशीनों के एक साथ काम करने के विचार को बढ़ावा देना, एआई प्रणाली इसे पूरी

तरह से प्रतिस्थापित करने के बजाय मानव निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है। यह दृष्टिकोण एआई की क्षमताओं और मानव निर्णय के नैतिक विचारों के बीच संतुलन सुनिश्चित कर सकता है।

- **सतत मूल्यांकन और अनुकूलन:** सैन्य सुरक्षा में तैनात एआई प्रणालियों के चल रहे मूल्यांकन और आकलन के लिए तंत्र स्थापित करना। एआई अनुप्रयोगों के नैतिक निहितार्थ और प्रभाव की नियमित रूप से समीक्षा करना, विकसित नैतिक मानकों और सामाजिक मूल्यों के साथ संरेखित करने के लिए आवश्यक समायोजन और अद्यतनीकरण करना।
- **बहुविषयक दृष्टिकोण:** एआई विकास और सैन्य सुरक्षा में तैनाती के लिए बहुविषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना। विविध दृष्टिकोण प्रदान करने और नैतिक निहितार्थों पर समग्र विचार सुनिश्चित करने के लिए नैतिकता, कानून, सामाजिक विज्ञान और दर्शन सहित विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को शामिल करना।
- **नैतिक परीक्षा और प्रमाणन:** सैन्य सुरक्षा में उपयोग की जाने वाली एआई प्रणालियों के नैतिक लेखापरीक्षा और प्रमाणन के लिए तंत्र स्थापित करना। स्वतंत्र तृतीय-पक्ष संगठन स्थापित नैतिक मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए एआई प्रौद्योगिकियों द्वारा नैतिक प्रथाओं और अनुपालन का आकलन कर सकते हैं।

निष्कर्ष

सैन्य सुरक्षा में एआई का अनुप्रयोग नैतिक चिंताओं को बढ़ाता है, जिसमें गोपनीयता का उल्लंघन, हेरफेर, कम होती मानव बुद्धिमत्ता, सहानुभूति की कमी, आनुपातिकता और जवाबदेही चुनौतियां शामिल हैं। इन चिंताओं को दूर करने के लिए **नैतिक ढाँचे, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, प्रशिक्षण कार्यक्रम, जन सहभागिता, मानव-मशीन सहयोग, निरंतर मूल्यांकन और बहु-विषयक दृष्टिकोण आवश्यक हैं।** ये उपाय एआई के उत्तरदायी उपयोग को सुनिश्चित करते हैं, मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हैं और निजी अधिकारों की रक्षा करते हैं।

9.10 केंद्रीकरण और एकाधिकार

परिचय

- केंद्रीकरण और एकाधिकार ऐसे शब्द हैं जो एक इकाई या संस्थाओं के एक छोटे समूह के भीतर शक्ति और नियंत्रण की एकाग्रता को संदर्भित करते हैं।
- एक केंद्रीय इकाई में अधिकार या प्रभाव के समेकन को केंद्रीकरण कहा जाता है, जबकि एकाधिकार तब होता है जब एक एकल निगम या समूह एक निश्चित बाजार को नियंत्रित करता है, जिससे प्रतिस्पर्धा समाप्त हो जाती है या काफी कम हो जाती है।
- ये विचार न्याय, प्रतिस्पर्धा और दुरुपयोग की संभावना के बारे में नैतिक समस्याएं पैदा करते हैं।

केंद्रीकरण और एकाधिकार को समझना

- **केंद्रीकरण:** शक्ति की एकाग्रता:
  - **परिभाषा और दायरा:** केंद्रीकरण एक इकाई या संस्थाओं के एक छोटे समूह में शक्ति, अधिकार या नियंत्रण की एकाग्रता है। एक पदानुक्रमित संगठन के साथ, निर्णय लेने को अक्सर शीर्ष पर केंद्रीकृत किया जाता है।
  - **नैतिक विचार:**
    - **निष्पक्षता और जवाबदेही:** केंद्रीकरण के परिणामस्वरूप शक्ति और निर्णय लेने वाले प्राधिकरण के न्यायसंगत वितरण से संबंधित चिंताएं उत्पन्न होती हैं। पारदर्शिता और जवाबदेही की कमी होने पर सत्ता का दुरुपयोग हो सकता है।
    - **भागीदारी और प्रतिनिधित्व:** विभिन्न दृष्टिकोणों को सुनिश्चित करने और आवाजों के हाशिए से बचाने के लिए, समावेशी निर्णय लेने की प्रक्रिया आवश्यक है।
- **एकाधिकार:** बाजार का वर्चस्व
  - **परिभाषा और दायरा:** एकाधिकार तब होता है जब एक एकल फर्म या समूह एक बाजार पर हावी होता है, माल या सेवाओं की आपूर्ति पर विशेष नियंत्रण रखता है। नतीजतन, बहुत कम या कोई प्रतिस्पर्धा नहीं होती है।
  - **नैतिक विचार:**
    - **प्रतिस्पर्धा और नवाचार:** एकाधिकार प्रतिस्पर्धा को दबा देता है, जो नवाचार को दबा सकता है, गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रोत्साहन को कम कर सकता है और उपभोक्ता विकल्पों को सीमित कर सकता है।
    - **उपभोक्ता कल्याण:** एकाधिकार गतिविधियों के परिणामस्वरूप उच्च लागत, कम उत्पाद की गुणवत्ता और उपभोक्ताओं के लिए कम विकल्प हो सकते हैं, जिससे उन्हें नुकसान हो सकता है।

नैतिक चिंताएं

- **प्रतिस्पर्धा का अभाव:** केंद्रीकरण और एकाधिकार प्रतिस्पर्धा में बाधा डालते हैं, जिसके परिणामस्वरूप कम ग्राहक विकल्प, कम नवाचार और मूल्य में हेरफेर की संभावना होती है। शक्ति का यह संकेन्द्रण बाजार की गतिशीलता और स्वतंत्र एवं निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा के सिद्धांतों को कमजोर करता है।
- **असमानता:** संकेंद्रित शक्ति सामाजिक असमानताओं को और खराब कर सकती है। एकाधिकार अक्सर संसाधनों, आपूर्ति

श्रृंखलाओं और वितरण नेटवर्क को नियंत्रित करते हैं, जिससे उन्हें असंगत शक्ति का इस्तेमाल करने और छोटी फर्मों, श्रमिकों और ग्राहकों सहित कमजोर हितधारकों का दुरुपयोग करने की अनुमति मिलती है। इससे आर्थिक अंतराल बढ़ने और सामाजिक गतिशीलता बाधित होने की संभावना है।

- **उपभोक्ता कल्याण:** एकाधिकारवादी गतिविधियाँ उत्पाद की गुणवत्ता कम करके, लागत बढ़ाकर और ग्राहक सेवा में गिरावट करके उपभोक्ताओं को प्रभावित कर सकती हैं। यदि विश्वसनीय विकल्प उपलब्ध नहीं हैं तो उपभोक्ताओं के पास कुछ ही विकल्प रह सकते हैं और उन्हें एकाधिकारवादी दुरुपयोग का अनुभव हो सकता है।
- **नैतिक नेतृत्व:** केंद्रीकृत संस्थाएं और एकाधिकार समाज को लाभ पहुंचाने के लिए अपनी शक्ति और प्रभाव का उपयोग करने की नैतिक चुनौती का सामना करते हैं। नैतिक नेतृत्व के लिए पारदर्शिता, जवाबदेही और उनके निर्णयों और कार्यों के व्यापक सामाजिक परिणामों के बारे में जागरूकता आवश्यक है।

नैतिक चुनौतियों को कम करना

- **नियामक ढाँचे:** सरकारें और नियामक एजेंसियां निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा की गारंटी देने और केंद्रित शक्ति के दुरुपयोग को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रभावी नियम और अविश्वास कानून, समान अवसर के संरक्षण, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने और उपभोक्ताओं और छोटे बाजार सहभागियों के हितों की सुरक्षा में सहायता कर सकते हैं।
- **विविधता और नवाचार को बढ़ावा देना:** विविधता को प्रोत्साहित करना और ऐसा वातावरण बनाना जो नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा दे, केंद्रीकरण और एकाधिकार के नकारात्मक परिणामों को कम करने में मदद कर सकता है। एक समावेशी संस्कृति बनाकर और स्टार्टअप और छोटे उद्यमों का समर्थन करके समाज अधिक प्रतिस्पर्धा, नए विचारों और आर्थिक प्रगति से लाभ उठा सकता है।
- **सामाजिक जिम्मेदारी:** एकाधिकार और केंद्रीकृत निगमों को नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं और सामाजिक जिम्मेदारी को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसमें टिकाऊ तकनीकों का उपयोग करना, समुदाय को वापस लौटाना और कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं और ग्राहकों के साथ उचित व्यवहार करना शामिल है। सार्वजनिक विश्वास बनाए रखने के लिए नैतिक व्यावसायिक प्रशासन और पारदर्शिता की आवश्यकता होती है।
- **उपभोक्ता सशक्तिकरण:** ग्राहकों को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित करना, शिक्षित निर्णय लेने में सक्षम बनाना और सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करना व्यक्तियों को एकाधिकारवादी व्यवहार से लड़ने के लिए सशक्त बना सकता है। उपभोक्ता वकालत समूह,उद्योग निगरानीकर्ता और सूचना तक खुली पहुंच सभी अधिक संतुलित बाजार परिदृश्य बनाने में मदद कर सकते हैं।

निष्कर्ष

केंद्रीकरण और एकाधिकार नैतिक कठिनाइयाँ पैदा करते हैं जिनके लिए सावधानीपूर्वक विचार और कार्रवाई की आवश्यकता होती है। जबकि केंद्रीकरण दक्षता में सुधार कर सकता है और संचालन को सुव्यवस्थित कर सकता है, इसे निष्पक्षता, प्रतिस्पर्धात्मकता और सामाजिक कल्याण के आदर्शों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। विनियामक ढांचे जो स्वस्थ बाजार गतिशीलता का समर्थन करते हैं, नवाचार को बढ़ावा देते हैं, और उपभोक्ताओं और छोटे बाजार सहभागियों के अधिकारों की रक्षा करते हैं, समाज के लिए एक लक्ष्य होना चाहिए। अंत में, हम एक अधिक निष्पक्ष और टिकाऊ आर्थिक परिदृश्य को बढ़ावा दे सकते हैं जो नैतिक मानकों को संरक्षित करके, विविधता का समर्थन करके और व्यक्तियों को सशक्त बनाकर सभी हितधारकों को लाभान्वित करता है।

9.11 फार्मास्युटिकल पारिस्थितिकी तंत्र की नैतिकता

परिचय

- फार्मास्युटिकल पारिस्थितिकी तंत्र वैश्विक स्वास्थ्य देखभाल के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन को बढ़ाने और संरक्षित करने वाली महत्वपूर्ण दवाएं और उपचार प्रदान करता है। हालाँकि, यह जटिल उद्योग नैतिक चुनौतियों से रहित नहीं है।
- यह लेख दवा मूल्य निर्धारण, दवाओं तक पहुंच, अनुसंधान नैतिकता और स्वास्थ्य और मुनाफे के संतुलन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए फार्मास्युटिकल पारिस्थितिकी तंत्र की नैतिकता की जांच करता है।

क्या डॉक्टर दवा उद्योगों से मुफ्त उपहार स्वीकार कर सकते हैं?

- भारतीय चिकित्सा परिषद (व्यावसायिक आचरण, शिष्टाचार और नैतिकता) विनियमों के अनुसार, चिकित्सकों को उपहार, यात्रा सुविधाएं, आतिथ्य, नकद या मौद्रिक अनुदान जैसी परिलब्धियां स्वीकार करने से प्रतिबंधित किया गया है।
- मुफ्त वस्तुओं को स्वीकार करने पर (5,000 रुपये तक के प्रोत्साहन के लिए) ''निंदा'' से लेकर तीन साल तक की अवधि के लिए भारतीय मेडिकल रजिस्टर या राज्य मेडिकल रजिस्टर से हटाने तक कई प्रकार के प्रतिबंध लग सकते हैं।

नैतिक विचार और चुनौतियां

- **दवा मूल्य निर्धारण और सामर्थ्य:**
  - **लाभ और पहुंच को संतुलित करना:** उचित मूल्य स्थापित करना जो लाभप्रदता को अनुमति देता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी व्यक्तियों को फार्मास्यूटिकल्स तक सस्ती पहुंच हो।
  - **मूल्य निर्धारण में असमानताएँ:** क्षेत्रों और देशों के बीच दवा मूल्य निर्धारण में अंतर, कम वित्तीय संसाधनों वाले लोगों के लिए पहुंच को सीमित करता है।
- **दवाओं तक पहुंच:**
  - **स्वास्थ्य देखभाल संबंधी असमानताएँ:** भौगोलिक, आय और स्वास्थ्य देखभाल बुनियादी ढांचे जैसे कारकों के कारण दवाओं तक असमान पहुंच।
  - **ऊंची कीमतें और सीमित उपलब्धता:** ऊंची कीमतों, कमी या वितरण नेटवर्क की कमी के कारण सीमित पहुंच।
- **अनुसंधान नैतिकता:**
  - **सूचित सहमति:** यह सुनिश्चित करना कि अनुसंधान में भाग लेने वाले सूचित अनुमति प्रदान करते हैं और उन्हें संभावित जोखिमों और लाभों के बारे में पर्याप्त जानकारी दी जाती है।
  - **डेटा प्रामाणिकता और रिपोर्टिंग:** अनुसंधान डेटा संग्रह, प्रसंस्करण और परीक्षण परिणामों की पारदर्शी रिपोर्टिंग में प्रामाणिकता बनाए रखना डेटा प्रामाणिकता और रिपोर्टिंग के रूप में जाना जाता है।
- **विपणन प्रथाएं और पारदर्शिता:**
  - **भ्रामक विज्ञापन:** फार्मास्युटिकल विपणन तकनीकों की सच्चाई और निष्पक्षता के बारे में नैतिक चिंताएं, जो निर्धारित निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं।
  - **हितों का टकराव:** फार्मास्युटिकल निगमों और स्वास्थ्य देखभाल कर्मियों के बीच वित्तीय संबंधों का खुलासा करने में पारदर्शिता सुनिश्चित करना, जो चिकित्सा निर्णयों को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।
- **बौद्धिक संपदा अधिकार और वैश्विक स्वास्थ्य:**
  - **अभिगम अवरोध:** विशेष रूप से कम आय वाले देशों में जीवन रक्षक फार्मास्यूटिकल्स तक सस्ती पहुंच की आवश्यकता के साथ बौद्धिक संपदा अधिकार संरक्षण को संतुलित करना।
  - **पेटेंट और विनियामक बाधाएं:** पेटेंट और विनियामक प्रतिबंधों के साथ-साथ व्यापार समझौतों को नियन्त्रित करना जो सस्ती जेनेरिक दवाओं तक पहुंच को सीमित करते हैं।
- **कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR):**
  - **नैतिक व्यावसायिक प्रथाएँ:** यह सुनिश्चित करना कि फार्मास्युटिकल व्यवसाय आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन और कॉर्पोरेट प्रशासन सहित अपने परिचालन के सभी हिस्सों में नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं का पालन करें।
  - **पर्यावरणीय प्रभाव:** फार्मास्युटिकल विनिर्माण, अपशिष्ट प्रबंधन और टिकाऊ प्रथाओं के पर्यावरणीय प्रभाव को संबोधित करना।

नैतिक चुनौतियों को कम करना

- **पारदर्शी मूल्य निर्धारण मॉडल:** पारदर्शी मूल्य निर्धारण मॉडल लागू करना जो अनुसंधान एवं विकास लागत, सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रभाव और विभिन्न समूहों के लिए सामर्थ्य जैसे तत्वों को ध्यान में रखता है।
- **सामर्थ्य के लिए सहयोग:** उचित मूल्य निर्धारण पर बातचीत करने और अलग-अलग मूल्य निर्धारण और छूट जैसे उपायों के माध्यम से सामर्थ्य सुनिश्चित करने के लिए सरकारों, स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों और गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) के साथ काम करना।
- **विभेदक मूल्य निर्धारण और लाइसेंस:** कम आय वाले देशों में और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों के दौरान किफायती पहुंच को सक्षम करने के लिए विभेदक मूल्य निर्धारण मॉडल और लाइसेंस समझौतों को लागू करना।
- **नैतिक दिशानिर्देश और निरीक्षण:** अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा परिभाषित जैसे कि, मजबूत नैतिक सिद्धांतों और विनियमों का पालन, साथ ही अनुसंधान प्रतिभागियों के कल्याण को संरक्षित करने के लिए नैतिक समितियों द्वारा निरीक्षण।
- **पारदर्शी रिपोर्टिंग और डेटा साझाकरण:** परीक्षण परिणामों की रिपोर्टिंग में पारदर्शिता को बढ़ावा देना और विज्ञान को आगे बढ़ाने और विश्वास स्थापित करने के लिए उत्तरदायी डेटा साझाकरण को बढ़ावा देना।
- **नैतिक विपणन कोड:** व्यवहार के सख्त विपणन मानदंडों का पालन करना जो प्रचार कार्यों में पारदर्शिता, सटीकता और अखंडता को बढ़ावा देते हैं।
- **स्वैच्छिक लाइसेंसिंग और ज्ञान हस्तांतरण:** स्वैच्छिक लाइसेंसिंग समझौतों के माध्यम से जेनेरिक उत्पादकों के साथ सहयोग करके और ज्ञान हस्तांतरण को बढ़ावा देकर सस्ती दवाओं की उपलब्धता बढ़ाना।
- **बौद्धिक संपदा में लचीलापन:** सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों को हल करने और महत्वपूर्ण दवाओं तक पहुंच को

बढ़ावा देने के लिए अनिवार्य लाइसेंसिंग जैसे बौद्धिक संपदा अधिकारों के लचीलेपन की वकालत करना।

- **जिम्मेदार कॉर्पोरेट प्रशासन:** नैतिक निर्णय लेने, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देने वाली मजबूत कॉर्पोरेट प्रशासन संरचनाओं को लागू करना जिम्मेदार कॉर्पोरेट प्रशासन के रूप में जाना जाता है।

निष्कर्ष

दवा का मूल्य निर्धारण, दवाओं तक पहुंच, अनुसंधान नैतिकता, विपणन रणनीतियाँ, बौद्धिक संपदा अधिकार और कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी वे सभी मुद्दे हैं जिनका दवा व्यवसाय सामना करता है। उद्योग एक नैतिक वातावरण स्थापित कर सकता है जो पारदर्शी मूल्य निर्धारण, सहयोग, नैतिक दिशानिर्देश, जिम्मेदार विपणन, निष्पक्ष बौद्धिक संपदा प्रबंधन और सामाजिक जिम्मेदारी पर जोर देकर समान पहुंच, रोगी कल्याण, नवाचार और वैश्विक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

9.12 वैवाहिक बलात्कार और वैवाहिक अधिकार

संदर्भ

- भारत में वैवाहिक बलात्कार और दाम्पत्य अधिकारों का प्रश्न एक विवादास्पद मुद्दा रहा है। 2017 में, भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने धारा 375 के उपधारा का हवाला देते हुए छुट प्रदान की और फैसला सुनाया कि वैवाहिक बलात्कार भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) के तहत एक अपराध नहीं है, जो वैवाहिक बलात्कार को बलात्कार की परिभाषा से छूट देता है। यह निर्णय "दाम्पत्य अधिकारों" की अवधारणा पर आधारित था और इसे महिलाओं के मौलिक अधिकारों को कमजोर करने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा।
- 2020 में, 2017 के फैसले को पलटने की मांग करते हुए सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई थी। याचिका में तर्क दिया गया है कि धारा 375 में अपवाद उपधारा असंवैधानिक है और वैवाहिक बलात्कार को अपराध माना जाना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट को अभी याचिका पर फैसला लेना है.
- हालाँकि, हाल के वर्षों में सकारात्मक विकास हुए हैं। 2021 में, दिल्ली उच्च न्यायालय ने माना कि घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम, 2005 के तहत वैवाहिक बलात्कार घरेलू दुर्व्यवहार का एक रूप है। यह निर्णय वैवाहिक बलात्कार के पीड़ितों को अदालतों के माध्यम से मुआवजे और सुरक्षात्मक आदेशों सहित नागरिक उपचार प्राप्त करने की अनुमति देता है।

वैवाहिक बलात्कार को समझना

- **वैवाहिक बलात्कार:** वैवाहिक बलात्कार कोई भी अवांछित संभोग या प्रवेश है, जो पत्नी के सहमति के बैगर बल, बल की धमकी के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
- **वैवाहिक अधिकार:** वैवाहिक अधिकार विवाह-निर्मित अधिकार हैं, यानी पति या पत्नी का दूसरे पति या पत्नी के समाज में अधिकार। इन अधिकारों को कानून द्वारा मान्यता प्राप्त है, दोनों विवाह, तलाक और इसी तरह से निपटने वाले व्यक्तिगत कानून में, और आपराधिक कानून में पति या पत्नी को रखरखाव और गुजारा भत्ता के भुगतान को अनिवार्य करते हैं।

नैतिक मुद्दे

- **सम्मान के साथ जीने के अधिकार का उल्लंघन:** वैवाहिक बलात्कार किसी महिला या पत्नी के सम्मान के साथ जीने के अधिकार का उल्लंघन करता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के अनुसार, मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार जीवन के अधिकार (एक मौलिक अधिकार) का हिस्सा है।
- **यौन गोपनीयता के मुद्दे:** महाराष्ट्र राज्य बनाम मधुकर नारायण के मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि प्रत्येक महिला अपनी यौन गोपनीयता की हकदार है और यह किसी के लिए भी खुला नहीं है कि वह जब चाहे उसकी गोपनीयता का उल्लंघन कर सके।
- **शारीरिक आत्मनिर्णय का अधिकार:** प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर के बारे में निर्णय लेने का अधिकार है। इसी तरह, एक महिला का यौन संबंध बनाने या न करने या सहमति देने का निर्णय उसके द्वारा लिए गए सबसे व्यक्तिगत निर्णयों में से एक है। खुद को अभिव्यक्त करना एक अधिकार है.
- **समानता के अधिकार का उल्लंघन:** इसी तरह, भारत में, आईपीसी की धारा 375 के तहत बलात्कार और वैवाहिक बलात्कार के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार, साथ ही आईपीसी की धारा 376 के तहत दोनों के लिए दी गई अलग-अलग सजाएं, समानता के अधिकार का उल्लंघन करती हैं। (अनुच्छेद 14)।
- **बलात्कार तलाक का आधार नहीं है:** क्योंकि वैवाहिक बलात्कार 1954 के विशेष विवाह अधिनियम सहित किसी भी व्यक्तिगत कानून के तहत तलाक का आधार नहीं है, इसलिए इसे तलाक और पति या पत्नी के खिलाफ क्रूरता के आधार के रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता है। परिणामस्वरूप, महिलाएँ असहाय बनी रहती हैं और चुपचाप सहती रहती हैं।

परिदृश्य उदाहरण

- यद्यपि सारा और अब्दुल विवाहित हैं, अब्दुल अक्सर सारा के साथ उसकी स्पष्ट सहमति के बिना यौन गतिविधियों में संलग्न होता है। सारा का शोषण किया गया है, लेकिन वह इस मामले को आगे बढ़ाने से डरती है क्योंकि समाज उम्मीद करता है कि वैवाहिक अधिकारों को सहमत होने के अधिकार पर वरीयता दी जाए।
- **नैतिक विचार:**
  - अपनी शादी में सारा की सहमति के अधिकार का सम्मान करना, साथ ही उसकी सीमाओं को स्वीकार करना, महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दे हैं।
  - विवाह में शक्ति की गतिशीलता को पहचानना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अब्दुल का गैर-सहमति वाला व्यवहार सारा की स्वायत्तता और समानता की उपेक्षा करता है।
  - चूंकि दोनों जोड़ों को यौन सीमाओं और अपेक्षाओं के बारे में ईमानदार संवाद करना चाहिए, इसलिए इस मुद्दे को हल करने के लिए खुला संचार और विश्वास महत्वपूर्ण है।
- **प्रस्ताव:**
  - सारा ने अनुमति के महत्व और अपनी स्वायत्तता पर जोर देते हुए अब्दुल के साथ समस्या पर चर्चा की। वे खुलकर संवाद करते हैं, सीमाएँ निर्धारित करते हैं और सारा की सहमति को प्राथमिकता देते हैं।
  - अब्दुल जिम्मेदारी स्वीकार करता है, सारा की बाधाओं का सम्मान करने का वादा करता है, और उससे स्पष्ट अनुमति मांगता है। वे सांस्कृतिक मानदंडों से हटकर अपने रिश्ते में सहमति को प्राथमिकता देते हैं। सारा और अब्दुल एक नैतिक और सहयोगात्मक विवाह संबंध बनाने के लिए सहयोग करते हैं।

आवरण का सिद्धांत

- कवरचर(आवरण) का सिद्धांत एक कानूनी सिद्धांत था जो मानता था कि जब एक महिला शादी करती है, तो उसकी कानूनी पहचान और अधिकार उसके पति के साथ मिश्रित हो जाते हैं।
- परिणामस्वरूप, उसकी कानूनी क्षमता सीमित थी और वह संपत्ति नहीं रख सकती थी, अनुबंध में प्रवेश नहीं कर सकती थी, या स्वतंत्र कानूनी स्थिति नहीं रख सकती थी।
- यह अवधारणा उस समय प्रचलित सामाजिक मानकों और लैंगिक असमानता को दर्शाती है।
- **हालाँकि,** इसकी भेदभावपूर्ण प्रकृति के कारण, इस अवधारणा की अत्यधिक निंदा की गई है और आधुनिक कानूनी प्रणालियों में व्यक्तिगत अधिकारों और लैंगिक समानता के महत्व को पहचानते हुए इसे आम तौर पर समाप्त कर दिया गया है।

नैतिक निहितार्थ

दूसरी ओर, विवाह, दूसरे पति या पत्नी के शरीर पर स्वामित्व या नियंत्रण प्रदान नहीं करता है। वैवाहिक बलात्कार के नैतिक परिणामों को समझना किसी भी रिश्ते में स्वायत्तता, सहमति और गरिमा के आदर्शों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

- **स्वायत्तता:** प्रत्येक व्यक्ति को अपने शरीर के बारे में निर्णय लेने का आंतरिक अधिकार है, जिसमें यौन व्यवहार में शामिल होना या न करना भी शामिल है। विवाह के अंदर स्वायत्तता के इस अधिकार को बिना किसी अपवाद के बरकरार रखा जाना चाहिए।
- **सहमति:** सहमति नैतिक यौन संबंधों की नींव है। इसे स्वतंत्र रूप से दिया जाना चाहिए, उत्साहपूर्वक प्राप्त किया जाना चाहिए और अच्छी तरह से सूचित किया जाना चाहिए। सहमति या बल की अनुपस्थिति वैवाहिक स्थिति की परवाह किए बिना, किसी भी यौन संपर्क के नैतिक आधार को कमजोर करती है।
- **गरिमा:** वैवाहिक बलात्कार पीड़िता के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का उल्लंघन करता है। स्वस्थ, न्यायसंगत और नैतिक वैवाहिक साझेदारी के निर्माण के लिए प्रत्येक साथी की गरिमा का सम्मान करना आवश्यक है।

वैवाहिक बलात्कार को अपराध बनाने के खिलाफ तर्क

- **एक संस्था के रूप में विवाह को अस्थिर करना:** इसमें परिवारों में पूर्ण उथल-पुथल पैदा करने और एक संस्था के रूप में विवाह को अस्थिर करने की क्षमता है, जिससे पारिवारिक मंच को नुकसान पहुँचता है जो पारिवारिक मूल्यों को कायम रखता है और देश के अस्तित्व में योगदान देता है। भारतीय संस्कृति में विवाह को एक संस्कार के रूप में देखा जाता है।
- **कानून का दुरुपयोग:** यह कानून का दुरुपयोग करके पतियों को परेशान करने का एक आसान साधन बन सकता है, जिसकी तुलना आईपीसी की धारा 498A (एक विवाहित महिला को उसके पति और ससुराल वालों द्वारा दिया गया उत्पीड़न) के बढ़ते दुरुपयोग से की जा सकती है।
- **जागरूकता अधिक महत्वपूर्ण है:** केवल वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित करना इसे समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है क्योंकि ऐसी घटना को रोकने के लिए **''नैतिक और सामाजिक जागरूकता''** आवश्यक है।
- **सबूत प्राप्त करने की समस्या:** ऐसी स्थिति में सबूत प्राप्त करना एक जटिल समस्या है। जब वैवाहिक बलात्कार को अपराध माना जाता है, तो अपराध साबित करने का बोझ या तो पत्नी पर होता है या पति पर जिसे अपनी बेगुनाही

साबित करनी होती है, जिससे इसे लागू करना बेहद मुश्किल हो जाता है।

- **निजता के खिलाफ:** कुछ लोगों का कहना है कि वैवाहिक बलात्कार को अपराध बनाने से सरकार को लोगों के निजी जीवन में हस्तक्षेप करने की अनुमति मिल जाएगी। यह भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 में जीवन के अधिकार की गारंटी में निहित निजता के अधिकार का उल्लंघन होगा।
- **सांस्कृतिक विविधता:** साक्षरता, अधिकांश महिलाओं के लिए वित्तीय सशक्तिकरण की कमी, सामाजिक दृष्टिकोण, विशाल विविधता, गरीबी आदि जैसे तत्वों के कारण भारत में अद्वितीय चुनौतियाँ हैं, और वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित करने से पहले उनका सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाना चाहिए।

आगे की राह

वैवाहिक बलात्कार के मुद्दे को संबोधित करने और अंतरंग संबंधों में सहमति के महत्व को पहचानने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जाने चाहिए।

- **कानूनी सुधार:** न्यायमूर्ति वर्मा समिति की सिफारिशों को अपनाएं, जो इस बात पर जोर देती है कि सहमति के मूल्यांकन में आरोपी और शिकायतकर्ता के बीच संबंध पर विचार नहीं किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि वैवाहिक बलात्कार को एक गंभीर अपराध के रूप में देखा जाए और इसे हल्के में न लिया जाए।
- **विवाह विच्छेद:** वैवाहिक बलात्कार के पीड़ितों को विवाह विच्छेद के माध्यम से कानूनी उपाय प्रदान करें। यह व्यक्तियों को कानूनी अलगाव या तलाक की मांग करने की अनुमति देता है, जिससे उन्हें अपमानजनक संबंध छोड़ने की अनुमति मिलती है।
- **दृष्टिकोण में बदलाव:** कानूनी सुधारों के अलावा, सहमति और लैंगिक समानता के बारे में सार्वजनिक दृष्टिकोण में बदलाव को प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए सार्वजनिक जागरूकता अभियान और शैक्षिक पहल की आवश्यकता है जो विवाहित या अंतरंग संबंध की स्थिति की परवाह किए बिना महिलाओं की स्वायत्तता और शारीरिक अखंडता के अधिकारों के ज्ञान को बढ़ावा दे।
- **प्रशिक्षण और संवेदीकरण:** सुनिश्चित करें कि अभियोजकों, पुलिस अधिकारियों और अन्य कानून प्रवर्तन अधिकारियों को वैवाहिक बलात्कार के मामलों को संभालने के तरीके पर व्यापक प्रशिक्षण मिले। इसमें संवेदनशीलता का प्रशिक्षण, रिश्तों के भीतर शक्ति और नियंत्रण की गतिशीलता को पहचानना और सभी पीड़ितों के साथ शालीनता और सम्मान के साथ व्यवहार करना शामिल है।
- **सहायता सेवाएँ:** वैवाहिक बलात्कार के पीड़ितों के लिए सहायता सेवाएँ स्थापित करें, जैसे हेल्पलाइन, परामर्श और सुरक्षित क्षेत्र। हिंसक स्थितियों से बचने के इच्छुक व्यक्ति इन एजेंसियों के भावनात्मक समर्थन, कानूनी सहायता और निर्देश से लाभ उठा सकते हैं।

वैवाहिक बलात्कार के खिलाफ लड़ाई में हालिया घटनाक्रम

वैवाहिक बलात्कार के खिलाफ भारत की लड़ाई में कुछ हालिया घटनाक्रम यहां दिए गए हैं:

- **2021 में:** दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2021 में माना कि महिलाओं का संरक्षण और घरेलू दुर्व्यवहार अधिनियम, 2005 के तहत वैवाहिक बलात्कार एक प्रकार का घरेलू दुर्व्यवहार है।
- **2022 में:** राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने 2022 में वैवाहिक बलात्कार की घटनाओं से निपटने के लिए सिफारिशें कीं। नियमों के अनुसार, पुलिस को वैवाहिक बलात्कार की स्थितियों में एफआईआर दर्ज करनी चाहिए, और न्यायाधीशों को ऐसे मामलों के प्रति ग्रहणशील होना चाहिए।
- **2023 में:** महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD) ने 2023 में वैवाहिक बलात्कार को अपराध घोषित करने वाला एक प्रस्तावित विधेयक पेश किया। सरकार वर्तमान में विधेयक पर विचार कर रही है।

निष्कर्ष

वैवाहिक बलात्कार एक कठिन विषय है जिसकी गहन जांच की आवश्यकता है। वैवाहिक बलात्कार को अपराध बनाने से न केवल मदद मिलेगी। बल्कि, मौजूदा कानूनों में खामियों को ठीक करने और उन्हें दूर करने की जरूरत है, साथ ही उन अप्रचलित कानूनों को खत्म करने की जरूरत है जो महिलाओं और समग्र रूप से समाज की भलाई के खिलाफ काम करते हैं। सभी हितधारकों के साथ सार्वजनिक परामर्श और चर्चा ही रास्ता हो सकता है।

9.13 जनमत सर्वेक्षण और नैतिक मुद्दे

परिचय

- जनमत सर्वेक्षण लोगों के एक विशिष्ट नमूने के आधार पर जनता की राय का सर्वेक्षण है।
- आमतौर पर, जनमत सर्वेक्षणों का उद्देश्य प्रश्नों की एक श्रृंखला पूछकर और फिर अनुपात या विश्वास अंतराल का उपयोग करके सामान्यीकरण करके जनसंख्या की राय का प्रतिनिधित्व करना है।

- एग्जिट पोल के विपरीत, जो मतदान के बाद आयोजित किए जाते हैं, ओपिनियन पोल चुनाव से पहले आयोजित किए जाते हैं।

भारत में जनमत सर्वेक्षणों का विनियमन

- **अनुच्छेद 324 के तहत नियमः** भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई) ने 1998 में संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत नियम प्रकाशित किए, जो मीडिया को प्रतिबंधित समय के भीतर राय और एग्जिट पोल के निष्कर्षों को प्रसारित करने से रोकते हैं।
  - सुप्रीम कोर्ट ने 1999 में फैसला सुनाया कि औपचारिक सजा के अभाव में, ईसीआई ऐसे चुनावों पर रोक लगाने के लिए कोई नियम लागू नहीं कर सकता है।
- **जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951** की धारा 126 (A) को 2010 में जोड़ा गया था ताकि केवल एग्जिट पोल को प्रतिबंधित किया जा सके।
  - **लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951** की धारा 126(1) (B) उस मतदान जिले में चुनाव से 48 घंटे पहले इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जनमत सर्वेक्षणों के प्रसार पर रोक लगाती है।
  - सजाः धारा 126(1) (B) का उल्लंघन करने पर धारा 126(2) के तहत दो साल तक की कैद, जुर्माना या दोनों से दंडित किया जाता है।

जनमत सर्वेक्षण के साथ नैतिक मुद्दे

- **पक्षपाती और पेड न्यूजः** इसका मानना है कि कुछ चुनाव प्रायोजित, प्रेरित और पक्षपातपूर्ण हैं।
  - पक्षपातपूर्ण नमूने से गलत और भ्रामक परिणाम मिल सकते हैं जो व्यापक आबादी के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं।
  - कैम्ब्रिज एनालिटिका घोटाला पक्षपातपूर्ण राय बनाने का एक कुख्यात उदाहरण है।
- **अपारदर्शी और पक्षपाती नमूनाकरणः** व्यावहारिक रूप से सभी चुनाव अपारदर्शी होते हैं, जिसमें तकनीक के बारे में बहुत कम जानकारी प्रदान की जाती है।
  - ऐसी खामियों वाले कई ''**मतदान**'' गलत सूचना के समान हैं, जिसके परिणामस्वरूप "अनुचित प्रभाव" पड़ सकता है, जो आईपीसी धारा 171 (सी) के तहत एक "चुनावी अपराध" है।
  - आरपी अधिनियम की धारा 123 (2) में इसे "भ्रष्ट आचरण" के रूप में परिभाषित किया गया है।
- **जनमत सर्वेक्षण की ईमानदारी पर संदेहः** प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया के अनुसार, आज, क्योंकि इच्छुक व्यक्तियों या समूहों द्वारा जातिवादी, धार्मिक और जातीय आधार पर सूक्ष्म और सूक्ष्म प्रचार के साथ-साथ कथित चुनाव सर्वेक्षण जैसे परिष्कृत साधनों के उपयोग के माध्यम से मतदाताओं को गुमराह करने और गुमराह करने के लिए प्रिंट मीडिया का शोषण किया जा रहा है।
- **चुनावी प्रक्रिया पर अनुचित प्रभावः** जनमत सर्वेक्षणों का चुनाव प्रक्रिया की पवित्रता और अखंडता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।
  - उनमें मतदान व्यवहार को प्रभावित करने और चुनावी नतीजों को बदलने की क्षमता होती है।
  - 2014 की शुरुआत में एक टेलीविजन समाचार कार्यक्रम के स्टिंग ऑपरेशन ने काफी हलचल मचा दी थी।
    - कम से कम 11 मतदान फर्मों को मतदान में गड़बड़ी करते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया।
    - ये मतदान कंपनियाँ त्रुटि के अंतर, उम्मीदवार की जीत के अंतर, किसी पार्टी के लिए सीट के अनुमान को गलत साबित करने या नकारात्मक डेटा को छिपाने के लिए तैयार थीं। अफसोस की बात है कि इस खुलासे को वह ध्यान नहीं मिला जिसका यह हकदार था।
- **बैंडवैगन प्रभावः** बैंडवैगन प्रभाव का दावा है कि मतदाता "बैंडवैगन पर कूदते हैं", जिसका अर्थ है कि यदि कोई पार्टी चुनाव में बढ़त हासिल कर रही है, तो पार्टी मतदाताओं से अधिक समर्थन प्राप्त करेगी, और इसके विपरीत यदि पार्टी चुनाव में हार रही है।
- **अनुचित और अवास्तविक दावेः** सर्वेक्षणकर्ता व्यापक दावे करके स्थिति को और खराब कर देते हैं।
  - उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रिया के कट्टरपंथी चांसलर सेबेस्टियन कुर्ज पर फोन सर्वेक्षणों की व्यवस्था करने और उन्हें वैध जनमत सर्वेक्षण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए समाचार मीडिया को खरीदने का आरोप लगाया गया है।
- **संभावित नुकसान और प्रभावः** कुछ मामलों में, जनमत सर्वेक्षणों के अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं, जैसे कि जनता की राय या चुनाव परिणामों को प्रभावित करना।
  - चुनाव परिणाम मतदाताओं को प्रभावित कर सकते हैं या चुनावों में भागीदारी को हतोत्साहित कर सकते हैं, जिससे संभावित रूप से विषम परिणाम हो सकते हैं।

इससे संबंधित, जनमत सर्वेक्षण वास्तविक आंकड़े का सटीक प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इसके अलावा, वे विशिष्ट राजनीतिक दलों को बढ़ावा देने के लिए चुनावों से पहले विशेष रूप से प्रसारित किए जाते हैं।

क्या ओपिनियन पोल पर प्रतिबंध लगाने से समस्या का समाधान हो सकता है?

कई राजनीतिक वैज्ञानिकों ने ओपिनियन पोल पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने की मांग की है। लेकिन इसमें निम्नलिखित मुद्दे होंगे:

- **बिना सोचे-समझे प्रतिक्रियाएँ:** चुनाव पूर्व ओपिनियन पोल पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने, या नोटिस के दिन से शुरू होने वाले निषेध की मांग, बिना सोचे-समझे की गई प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है जो हमारी अधिकांश नीतियों पर हावी हो गई है।
- **न्यायिक जांच पास करने में विफल:** अभियान की अवधि के लिए पूर्ण प्रतिबंध को अदालत में बरकरार नहीं रखा जा सकता है।
- **बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के खलिफ:** यह समझना मुश्किल है कि इस तरह के निषेध को संवैधानिक रूप से प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर "उचित प्रतिबंध" के रूप में कैसे उचित ठहराया जा सकता है।
- इसे लागू करना बेहद कठिन होगा. यह सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध की तरह केवल कागजों पर मौजूद हो सकता है।
- **कानून का पालन करने वाली एजेंसियों को दंडित करें:** यह सभी वैध और कानून का पालन करने वाली एजेंसियों को बाहर कर सकता है, जिससे रात भर चलने वाले ऑपरेशनों द्वारा चलाए जाने वाले अवांछित सर्वेक्षणों के लिए मैदान खुला रह जाता है।
- **भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना:** यह निश्चित रूप से जानकारी के लिए एक काला बाजार तैयार करेगा, जिसमें पारदर्शी और जवाबदेह मतदान की जगह गुप्त मतदान और फुसफुसाहटें ले लेंगी।

उपायों की जरूरत

- **एक संभावित दृष्टिकोण एक स्वतंत्र नियामक होगा:** जैसे कि ब्रिटिश पोलिंग काउंसिल।
  - नमूना आकार, तकनीक, समय सीमा और अनुसंधान कर्मचारियों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता के अलावा, सभी मतदान संगठनों को समीक्षा के लिए प्रायोजक का खुलासा करना होगा। इसी तर्ज पर भारत भी अपनी पेशेवर संस्था स्थापित कर सकता है।
  - 2015 में बिहार चुनाव के बाद, छह प्रमुख एजेंसियों ने भारतीय मतदान परिषद नामक एक स्व-नियामक इकाई के गठन पर चर्चा की। करीब छह साल में कोई विकास नहीं हुआ।
- **एक आचार संहिता विकसित करना:** एक जनमत सर्वेक्षण आचार संहिता मौजूद होनी चाहिए। नमूना फ्रेम, नमूना आकार, और नमूना निकालने के लिए उपयोग की जाने वाली विशिष्ट प्रक्रिया प्रकाशित की जाएगी, साथ ही प्राप्त नमूने की सामाजिक प्रोफाइल भी प्रकाशित की जाएगी।
- **पारदर्शिता में सुधार:** सर्वेक्षण करने वाले समूह का स्वामित्व और ट्रैक रिकॉर्ड, साथ ही प्रायोजकों के नाम सार्वजनिक किए जाएंगे।
- **नमूना त्रुटि को दूर करना:** नमूना फ्रेम, नमूना आकार, और सटीक नमूना प्रक्रिया नियोजित; प्राप्त नमूने की समाजशास्त्रीय प्रोफाइल को सार्वजनिक किया जाना चाहिए।
- **जारी करने का समय:** राजनीतिक प्रक्रियाओं पर किसी भी अनुचित प्रभाव को कम करने के लिए चुनाव परिणामों के समय और जारी करने में नैतिक विचार दिया जाना चाहिए।
- **गोपनीयता की रक्षा करना:** व्यक्तिगत जानकारी को सुरक्षित रूप से एकत्र और संग्रहीत किया जाना चाहिए, और यह सुनिश्चित करने के लिए परिणामों की रिपोर्ट करते समय गुमनाम होना चाहिए कि व्यक्तियों की पहचान नहीं की जा सकती है।
  - इसके अतिरिक्त, एकत्र किए गए डेटा का उपयोग केवल बताए गए अनुसंधान उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए और किसी अन्य असंबंधित गतिविधियों के लिए नहीं।
- **तटस्थता को बनाए रखना:** प्रमुख या पक्षपाती प्रश्नों से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए जो प्रतिभागियों की राय को अनुचित रूप से प्रभावित कर सकते हैं।
  - सर्वेक्षणकर्ताओं को सटीक और निष्पक्ष परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रश्न डिजाइन में तटस्थता और निष्पक्षता के लिए प्रयास करना चाहिए।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर, जनमत सर्वेक्षण जनता की राय में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं, लेकिन एकत्र किए गए डेटा की प्राणिकता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए नैतिक विचार महत्वपूर्ण हैं। इन नैतिक चिंताओं को संबोधित करके, हम जनमत सर्वेक्षणों की विश्वसनीयता और सूचित निर्णय लेने में उनके योगदान को बनाए रख सकते हैं।

9.14 बुल्डोज़र मॉडल और प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत

परिचय

- शासन के "**बुलडोजर मॉडल**", जिसमें सजा के रूप में संपत्ति का विध्वंस शामिल है, कि प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन करने के लिए आलोचना की गई है। प्राकृतिक न्याय का सिद्धांत, जिसे ऑडी अल्टरम पार्टेम नियम (AudiAlteram Partem rule) के रूप में भी जाना जाता है, के लिए आवश्यक है कि व्यक्तियों को दंडित करने से पहले निष्पक्ष सुनवाई दी जाए।
- इसका मतलब है कि उन्हें उनके खिलाफ आरोपों का नोटिस दिया जाना चाहिए, अपना मामला पेश करने का अवसर दिया जाना चाहिए, और वकील द्वारा प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया जाना चाहिए।

प्राकृतिक न्याय के तत्व

प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत में आमतौर पर निम्नलिखित तत्व शामिल होते हैं:

- **सुनवाई का अधिकार:** व्यक्तियों को अपना मामला पेश करने का अधिकार है और निर्णय लेने वाले द्वारा उनके तर्कों और सबूतों पर विचार किया जाता है।
  - इसमें आरोपों का जवाब देने, गवाहों से जिरह करने और दलीलें पेश करने का अधिकार शामिल है।
- **निष्पक्ष निर्णयकर्ता:** अधिकारियों को मामले के नतीजे में कोई व्यक्तिगत हित या कोई पूर्वकल्पित धारणा नहीं होनी चाहिए जो उनके फैसले को प्रभावित कर सकती है।
- **मामले की सूचना:** व्यक्तियों को उनके खिलाफ मामले की पर्याप्त सूचना दी जानी चाहिए, जिसमें आरोपों की प्रकृति, जिन सबूतों पर भरोसा किया जा रहा है और संभावित परिणाम शामिल हैं।
  - यह व्यक्तियों को अपने बचाव को पर्याप्त रूप से तैयार करने की अनुमति देता है।
- **एक निष्पक्ष न्यायाधिकरण का अधिकार:** निर्णय लेने वाला निकाय या न्यायाधिकरण निष्पक्ष होना चाहिए और हितों के किसी भी टकराव से मुक्त होना चाहिए।
  - निर्णय व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों या बाहरी दबावों के बजाय साक्ष्य और लागू कानून पर आधारित होना चाहिए।
- **निर्णय के कारणों का अधिकार:** व्यक्तियों को निर्णय के लिए लिखित कारण प्राप्त करने का अधिकार है। यह उन्हें निर्णय के पीछे तर्क को समझने और यह निर्धारित करने की अनुमति देता है कि क्या कोई कानूनी त्रुटियां की गई थीं।

प्राकृतिक न्याय के तीन सिद्धांत

1. **Audi alteram partem (सुनने का अधिकार):** यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि विवाद या निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल सभी पक्षों को सुने जाने का अधिकार है।
   - क. इसका मतलब है कि व्यक्तियों को अपने मामले पेश करने, उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों या तर्कों का जवाब देने और निर्णय-निर्माता द्वारा उनके तर्कों और सबूतों पर विचार करने का अवसर मिलना चाहिए।
2. **Nemo judex in causa sua (पूर्वाग्रह के विरुद्ध नियम):** यह सिद्धांत बताता है कि निर्णय लेने वाले को निष्पक्ष और निष्पक्ष होना चाहिए।
   - क. यह ऐसे व्यक्तियों को निर्णय लेने से रोकता है जिनकी मामले के नतीजे में व्यक्तिगत रुचि है या कोई पूर्वकल्पित धारणा है।
   - ख. निर्णय लेने वालों के हितों का कोई टकराव नहीं होना चाहिए जो उनके निर्णय को प्रभावित कर सकता है, और उन्हें मामले को खुले दिमाग और तटस्थता के साथ देखना चाहिए।
3. **निष्पक्ष सुनवाई और तर्कसंगत निर्णय का नियम:** इस सिद्धांत में विभिन्न तत्व शामिल हैं जो निष्पक्ष सुनवाई में योगदान करते हैं।
   - क. इसमें मामले की पर्याप्त सूचना का अधिकार (आरोपों की प्रकृति, साक्ष्य और संभावित परिणामों सहित), कानूनी प्रतिनिधित्व का अधिकार, गवाहों से जिरह करने का अधिकार और निर्णय के लिए कारण प्राप्त करने का अधिकार शामिल है।

इन सिद्धांतों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि निर्णय लेने की प्रक्रिया निष्पक्ष, पारदर्शी और जवाबदेह हो। वे प्रशासनिक कानून, अनुशासनात्मक कार्यवाही और न्यायिक प्रक्रियाओं सहित विभिन्न कानूनी संदर्भों पर लागू होते हैं।

बुल्डोज़र संस्कृति का औचित्य

- **त्वरित न्याय:** आज बुल्डोज़र एक ऐसे शासन का प्रतिनिधित्व करता है जो उन व्यक्तियों पर अत्याचार है, जो मानते हैं कि उन्होंने कुछ गलत किया है।
  - वहां कोई पूछताछ नहीं थी, अदालती फैसलों का इंतजार नहीं था और कानूनी प्रक्रियाओं की कोई जरूरत नहीं थी।
  - चाहे भागे हुए जोड़े हों,कानून तोड़ने वाले हों, या सामुदायिक हिंसा हो, पुलिस जल्दबाजी में बुलडोजर के माध्यम से सजा देने की ओर रुख कर रही है।

- **सीमांत तत्वों पर दायित्व:** राज्य की गतिविधियों के रक्षक अक्सर 2009 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले का हवाला देते हैं जिसमें कहा गया है कि किसी घटना के दौरान किसी भी हिंसा की जिम्मेदारी कार्यक्रम के आयोजकों की होती है।
    - फैसले के अनुसार, आयोजकों को इस तरह की हिंसा से उत्पन्न दावों का निपटारा करना चाहिए।
    - हालांकि, ये लोग फैसले के अन्य पहलुओं की अनदेखी करते हैं, जैसे कि आयोजकों को हिंसा में सहभागी स्थापित करने की पूर्ववर्ती आवश्यकता है।
- **राज्य द्वारा अतिक्रमण विरोधी अभियान:** बुल्डोज़र ने पड़ोस में "अवैध रूप से" बनी इमारतों या घर के विस्तार को ध्वस्त कर दिया है, जहां हाल ही में दिल्ली, मध्य प्रदेश और गुजरात में सांप्रदायिक झड़पें दर्ज की गई।
- **भविष्य के अपराधों और अपराधियों को प्रतिबंधित करें:** यह अपराध और अवैध गतिविधियों को रोकने का एक तरीका है। विचार यह है कि अगर लोगों को पता है कि कानून तोड़ने पर उनकी संपत्ति ध्वस्त कर दी जाएगी, तो उनके ऐसा करने की संभावना कम होगी।

बुल्डोज़र संस्कृति के साथ नैतिक मुद्दे

कानून की उचित प्रक्रिया के बिना संपत्ति का विध्वंस कई तरीकों से प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन है:

- **यह व्यक्तियों को सुनवाई के अधिकार से वंचित करता है:** यदि संपत्ति को नोटिस या सुनवाई के अवसर के बिना ध्वस्त कर दिया जाता है, तो व्यक्तियों को यह समझाने का मौका नहीं मिल सकता है कि उनकी संपत्ति को ध्वस्त क्यों नहीं किया जाना चाहिए।
- **कानून की उचित प्रक्रिया को कमजोर करता है:** संपत्ति का विध्वंस सजा का एक रूप हो सकता है, जो स्वतंत्रता से वंचित होने का एक रूप है।
    - प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के तहत, व्यक्तियों को कानून की उचित प्रक्रिया के बिना दंडित नहीं किया जा सकता है।
- **व्यक्तियों पर विनाशकारी प्रभाव:** संपत्ति का विध्वंस व्यक्तियों के जीवन पर विनाशकारी प्रभाव डाल सकता है।
    - यह उन्हें उनके घरों से विस्थापित कर सकता है, उनके व्यवसायों को नष्ट कर सकता है, और उन्हें आजीविका को प्रभावित कर सकता है।
- **अनुच्छेद 300A का उल्लंघन:** ''कानून के अधिकार के अलावा किसी को भी उसकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा''।
- **सर्वोच्च न्यायालय का उल्लंघन:** भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने विध्वंस के संदर्भ में प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत के महत्व को पहचाना है।
    - एम.सी. मेहता बनाम गुजरात राज्य के मामले में, न्यायालय ने माना कि कानून की उचित प्रक्रिया के बिना संपत्ति का विध्वंस संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन है।
    - न्यायालय ने यह भी माना कि संपत्ति का विध्वंस सजा का एक रूप हो सकता है, जो स्वतंत्रता से वंचित करने का एक रूप है, और यह सजा कानून की उचित प्रक्रिया के बिना नहीं दी जा सकती है।
- **कोई पूर्व सूचना नहीं:** यह प्रावधान गारंटी देता है कि व्यक्तियों को छोड़ने के लिए पर्याप्त समय है। इससे पहले कि उन्हें जाने के लिए मजबूर किया जाए, चले जाएं।
- **शक्ति के पृथक्करण का अतिक्रमण:** कार्यपालिका न्यायाधीश, जूरी और जल्लाद की भूमिका निभा रही है।
- **यह सामूहिक दंड का एक रूप है:** जब पूरे समुदाय/परिवार की संपत्ति को ध्वस्त कर दिया जाता है, तो अक्सर निर्दोष लोग ही सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।
    - इससे असंतोष और क्रोध हो सकता है, जो संघर्ष को और बढ़ावा दे सकता है।

उपायों की जरूरत

- **कार्रवाई से पहले नोटिस देना:** बेदखली से पहले, 1985 का ऐतिहासिक ओल्गा टेलिस फैसला इस बात पर प्रकाश डालता है कि नोटिस की आवश्यकता है, साथ ही अतिक्रमण करने वालों सहित प्रभावित लोगों की बात सुनना भी आवश्यक है।
- **न्यायपालिका को मजबूत बनाना:** जैसे फास्ट-ट्रैक अदालतों की स्थापना, और न्यायिक कार्यवाही में पारदर्शिता।
- **सामूहिक दंड के खिलाफ खड़े हों:** अदालत को इस तथ्य का भी सामना करना चाहिए कि इस तरह के विध्वंस सामूहिक दंड हैं, जिनका सामूहिक दंड के बजाय व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर आधारित आधुनिक कानूनी प्रणाली में कोई स्थान नहीं है।
- **कानूनों का प्रभावी कार्यान्वयन:** हरियाणा, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड जैसे राज्यों में व्यवधान के कारण संपत्ति के नुकसान की भरपाई के लिए कानून मौजूद हैं।

निष्कर्ष

''संदिग्ध'' लोगों के घरों और व्यवसायों को ध्वस्त करने के लिए बुलडोजर तैनात करने की विवादास्पद रणनीति स्थानीय आबादी को अपूरणीय क्षति पहुंचाती है। किसी अन्य समुदाय के निवासी उचित सुनवाई के बिना अनियंत्रित बुल्डोज़र से पीड़ित होंगे। ये कार्रवाइयां

संक्षिप्त हैं, लेकिन यह दाग कायम रहता है और कानूनी प्रणाली के बारे में मुद्दे उठाता है। अदालत को यह संदेश देना चाहिए कि भारत में कानून का शासन मजबूत है।

9.15 पीत पत्रकारिता

जॉन स्टुअर्ट मिल

हर किसी की राय सुनी जानी चाहिए, भले ही वह एक पागल आदमी हो। क्योंकि हर राय में सच्चाई का एक हिस्सा होता है।

परिचय

- पत्रकारिता आम जनता के लिए समाचार और सामाजिक मुद्दों को इकट्ठा करने, विश्लेषण करने और प्रसारित करने का पेशा है। मीडिया स्रोतों का प्रमुख कार्य जनता को प्रबुद्ध करना और विश्वसनीय, निष्पक्ष जानकारी प्रदान करना है। आज, पत्रकारिता एक नैतिक संकट का सामना कर रही है, इसकी रेटिंग लगातार गिर रही है और एक लोकतांत्रिक एजेंसी के रूप में इसकी व्यवहार्यता को संदेह से देखा जा रहा है।

पत्रकारिता पर गांधीवादी नैतिकता

- महात्मा गांधी ने एक सेवा के रूप में पत्रकारिता के महत्व पर जोर दिया, न कि पानी की अनियंत्रित धारा के रूप में।
- उन्होंने सामाजिक जिम्मेदारी के विचार पर जोर देते हुए कहा कि पत्रकारिता को सनसनीखेज, विरूपण और तथ्यों के हेरफेर से बचते हुए समर्पण के साथ लोगों की सेवा करनी चाहिए और उन्हें शिक्षित करना चाहिए।
- उन्होंने लाभ के लिए पत्रकारिता में नैतिक मानकों की आवश्यकता पर जोर दिया।

मीडिया नैतिकता के तत्व

मीडिया नैतिकता में सिद्धांतों और मानकों का एक समूह शामिल है जो मीडिया पेशेवरों के नैतिक व्यवहार और प्रथाओं का मार्गदर्शन करता है। हालाँकि सांस्कृतिक और प्रासंगिक कारकों के आधार पर विशिष्ट तत्व भिन्न हो सकते हैं, यहाँ कुछ महत्वपूर्ण तत्व हैं जो आमतौर पर मीडिया नैतिकता से जुड़े हैं:

- **सच्चाई और सटीकता:** मीडिया पेशेवरों की नैतिक जिम्मेदारी है कि वे सच्चाई और सटीक रूप से रिपोर्ट करें। उन्हें तथ्यों को सत्यापित करना चाहिए, स्रोतों की जांच करनी चाहिए, और निष्पक्ष और संतुलित तरीके से जानकारी पेश करनी चाहिए।
    - इसमें झूठी जानकारी, भ्रामक सुर्खियों और भ्रामक संपादन प्रथाओं के प्रसार से बचना शामिल है।
- **स्वतंत्रता और निष्पक्षता:** मीडिया को अनुचित प्रभाव, राजनीतिक दबाव या हितों के टकराव से स्वतंत्रता बनाए रखनी चाहिए। पत्रकारों को पक्षपात, पूर्वाग्रह या व्यक्तिगत या कॉर्पोरेट एजेंडे को बढ़ावा देने से बचते हुए निष्पक्षता के लिए प्रयास करना चाहिए।
- **गोपनीयता:** मीडिया पेशेवरों को व्यक्तियों के गोपनीयता अधिकारों का सम्मान करना चाहिए और व्यक्तिगत जानकारी को सावधानी से संभालना चाहिए।
- **संवेदनशीलता और सम्मान:** मीडिया को सांस्कृतिक, धार्मिक, नस्लीय और लैंगिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता और सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए।
    - उन्हें रूढ़िवादिता को कायम रखने, भेदभावपूर्ण प्रथाओं में शामिल होने या नफरत फैलाने वाले भाषण को बढ़ावा देने से बचना चाहिए।
    - जिम्मेदार रिपोर्टिंग के लिए हाशिए पर मौजूद या कमजोर समुदायों पर भाषा, दृश्य और आख्यानों के संभावित प्रभाव पर विचार करना आवश्यक है।
- **जवाबदेही और पारदर्शिता:** मीडिया संगठनों और पेशेवरों को अपने कार्यों और निर्णयों के लिए जवाबदेह होना चाहिए।
    - अशुद्धियों या गलतियों के मामले में सुधार और स्पष्टीकरण तुरंत जारी किए जाने चाहिए, और दर्शकों से प्रतिक्रिया या शिकायतों को गंभीरता से लिया जाना चाहिए।
- **नुकसान को कम करना:** मीडिया पेशेवरों को संवेदनशील या दर्दनाक घटनाओं की रिपोर्ट करते समय नुकसान को कम करने का प्रयास करना चाहिए।
    - सनसनीखेज, अनावश्यक हिंसा, या गोपनीयता के आक्रमण से बचा जाना चाहिए जब तक कि सार्वजनिक हित के लिए आवश्यक न हो।
- **सामाजिक जिम्मेदारी:** एक स्वस्थ और सूचित समाज को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका है। मीडिया पेशेवरों को सार्वजनिक हित को प्राथमिकता देनी चाहिए, सार्वजनिक बहस में योगदान करना चाहिए, और नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देना चाहिए।

ये तत्व जिम्मेदार और नैतिक मीडिया प्रथाओं के लिए एक आधार प्रदान करते हैं। मीडिया नैतिकता का पालन दर्शकों के साथ विश्वास बनाने में मदद करती है, पत्रकारिता अखंडता को बढ़ावा देती है, लोकतंत्र और सूचना प्रसार के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में मीडिया की भूमिका का समर्थन करता है।

पीत पत्रकारिता के साथ नैतिक मुद्दे

पीत पत्रकारिता, पत्रकारिता की एक शैली को संदर्भित करती है जो पाठकों को आकर्षित करने और परिसंचरण को बढ़ाने के लिए

सनसनी, अतिशयोक्ति और समाचारों की विकृति पर जोर देती है। इस प्रकार इसमें निम्नलिखित नैतिक मुद्दे जुड़े हुए हैं:

- **सटीकता और सच्चाई:** पीली पत्रकारिता अक्सर तथ्यात्मक सटीकता पर ध्यान आकर्षित करने को प्राथमिकता देती है।
  - इससे गलत सूचना, अफवाहें और असत्यापित दावों का प्रसार हो सकता है।
  - 2017 में, एक प्रमुख अखबार ने पहले पन्ने पर एक शीर्षक प्रकाशित किया जिसमें दावा किया गया कि जम्मू-कश्मीर कठुआ मामले में बलात्कार का कोई सबूत नहीं था।
    - यह मामला जम्मू-कश्मीर के कठुआ में आठ साल की बच्ची के बलात्कार और हत्या से जुड़ा है। बाद में यह खुलासा होने के बाद कि वास्तव में बलात्कार के सबूत थे, हैड्लाइन्स को वापस ले लिया गया था।
- **सनसनी और अतिशयोक्ति:** पीत पत्रकारिता समाचारों को सनसनीखेज बनाने की प्रवृत्ति रखती है, अक्सर सनसनीखेज सुर्खियां या आख्यान बनाने के लिए तथ्यों को बढ़ा-चढ़ाकर या विकृत करती है।
  - यह सार्वजनिक धारणा में हेरफेर कर सकता है, अनावश्यक घबराहट पैदा कर सकता है और व्यक्तियों या संस्थानों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकता है।
  - **दो हजार रुपये का नोट विवाद:** दो हजार रुपये का नया नोट जारी होने के बाद, कुछ प्रतिष्ठित समाचार चौनलों द्वारा फर्जी खबर चलाई गई कि नोट के स्थान को ट्रैक करने के लिए नोट में एक जीपीएस-सक्षम माइक्रोचिप जुड़ा हुआ है।
- **निष्पक्षता और संतुलन की कमी:** नैतिक पत्रकारिता विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करके और मुद्दे का व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करके रिपोर्टिंग में निष्पक्षता और संतुलन के लिए प्रयास करती है।
  - दूसरी ओर, पीत पत्रकारिता पक्षपातपूर्ण हो सकती है, जो किसी विशेष कथा या एजेंडे का समर्थन करने के लिए एकतरफा या अधूरी जानकारी प्रस्तुत करती है।
  - प्रचलित आख्यानों को चुनौती देने वाले प्रश्नों को दबा दिया जाता है और सार्वजनिक आवाज से वंचित कर दिया जाता है।
- **जनता के हित को कमजोर करता है:** सरकार की नीतियों और सत्ता के किसी भी दुरुपयोग पर 'चेक एंड बैलेंस' के रूप में कार्य करने के बजाय, मुख्यधारा के मीडिया ने कुख्यात युद्धों में नियोजित प्रचार हथियारों की भूमिका निभाई है, जब सभी प्रकार के संचार चौनलों को प्रतिबंधित किया गया था और आधिकारिक विचारों को प्रसारित करने के लिए उपयोग किया गया था।
  - अधिकारियों के सामने निष्पक्ष मुद्दों को उठाने और स्वस्थ प्रवचन में संलग्न होने में व्यक्तियों की सहायता करने के बजाय, मुख्यधारा का मीडिया नागरिकों को ऐसे मंचों से वंचित करने की भूमिका निभाता है।
- **भगवा पत्रकारिता:** भगवा पत्रकारिता, 'पीत पत्रकारिता' का एक रूप, पत्रकारिता को संदर्भित करता है जो 'राज्य' को एक स्वायत्त इकाई के बजाय अपनी इकाई के रूप में देखता है। यह मुख्य रूप से टेलीविजन माध्यम में ध्यान देने योग्य है।
- **गोपनीयता का हनन:** पीत पत्रकारिता कभी-कभी व्यक्तियों की सहमति के बिना व्यक्तिगत विवरण, निजी बातचीत, या दखल देने वाली तस्वीरें प्रकाशित करके उनकी गोपनीयता पर हमला करती है।
  - इसमें शामिल व्यक्तियों के लिए गंभीर परिणाम हो सकते हैं और गोपनीयता अधिकारों का सम्मान करने के बारे में नैतिक चिंताओं को उठाते हैं।
  - इस तरह के मीडिया संस्थान मीडिया ट्रायल करते हैं, जैसा कि सुशांत सिंह राजपूत हत्या मामले में हुआ था, जो सार्वजनिक व्यवस्था के रूप में जाना जाता है, जिसे बनाए रखने में सरकारी प्रचार उपकरण की भूमिका को अपनाया जाता है।
- **जनमत में हेरफेर:** पीत पत्रकारिता में भावनाओं, पूर्वाग्रहों या पूर्वाग्रहों का फायदा उठाकर जनमत में हेरफेर करने की क्षमता है।
  - इससे समाज का ध्रुवीकरण, घृणा का प्रसार और लोकतांत्रिक विमर्श को कमजोर किया जा सकता है।
- **जवाबदेही की कमी:** पीत पत्रकारिता नैतिक जिम्मेदारी पर व्यावसायिक सफलता को प्राथमिकता दे सकती है।
  - उच्च प्रसार या दर्शकों की संख्या की खोज पत्रकारिता की अखंडता और जवाबदेही के महत्व को कम कर सकती है।
  - पत्रकारिता संगठनों और व्यक्तिगत पत्रकारों को अपने द्वारा उत्पादित सामग्री और समाज पर इसके प्रभाव के लिए जवाबदेह होना चाहिए।
- **मीडिया की विश्वसनीयता को नुकसान:** पीत पत्रकारिता समग्र रूप से मीडिया में जनता के विश्वास को खत्म कर सकती है।
  - जब समाचार आउटलेट सनसनी और क्लिकबेट रणनीति को प्राथमिकता देते हैं, तो यह पूरे पेशे की विश्वसनीयता को कम करता है और सूचना के विश्वसनीय स्रोत के रूप में मीडिया की भूमिका को कम करता है।

जिम्मेदार पत्रकारिता की सटीकता, निष्पक्षता, निष्पक्षता और सार्वजनिक हित के लिए सम्मान के सिद्धांतों को बनाए रखना

चाहिए। इन सिद्धांतों का पालन यह सुनिश्चित करता है कि मीडिया संगठन विश्वसनीय और जिम्मेदार जानकारी प्रदान करके लोकतांत्रिक समाजों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को पूरा करें।

जरूरी उपाय

- **व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को तय करना:** पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारी जनता को सटीक और सत्यापित जानकारी प्रदान करना है, जिससे उन्हें सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाया जा सके।
- **नैतिक मानकों को बढ़ावा देने वाले मीडिया संगठन:** मीडिया संगठनों को अपने स्वयं के संचालन के भीतर नैतिक पत्रकारिता मानकों को प्राथमिकता और बढ़ावा देना चाहिए।
  - इसमें सटीकता, निष्पक्षता और जिम्मेदार रिपोर्टिंग के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश स्थापित करना और लागू करना शामिल है।
  - पत्रकारों के लिए व्यावसायिक विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने से नैतिक प्रथाओं को बढ़ावा देने में भी मदद मिल सकती है।
- **पत्रकारिता स्व-विनियमन:** वे आचार संहिता विकसित और लागू कर सकते हैं जो पत्रकारों के पालन के लिए नैतिक मानकों और सिद्धांतों को रेखांकित करते हैं।
  - इसमें सनसनी को हतोत्साहित करने, तथ्यों की जांच की आवश्यकता और संतुलित रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के उपाय शामिल हैं।
- **तथ्य-जांच और सत्यापन:** तथ्य-जांच पहल को बढ़ावा देना और मजबूत सत्यापन प्रक्रियाओं में निवेश करना गलत सूचना और अफवाहों के प्रसार से निपटने में मदद कर सकता है।
  - मीडिया संगठन प्रकाशन या प्रसारण से पहले जानकारी को सत्यापित करने के लिए समर्पित टीमों की स्थापना कर सकते हैं या स्वतंत्र तथ्य-जांच संगठनों के साथ सहयोग कर सकते हैं।
- **स्वामित्व और वित्त पोषण में पारदर्शिता:** मीडिया संगठनों को अपने स्वामित्व संरचनाओं और वित्त पोषण स्रोतों के बारे में पारदर्शी होना चाहिए।
  - इससे हितों के किसी भी संभावित टकराव की पहचान करने में मदद मिलती है और यह सुनिश्चित होता है कि संपादकीय निर्णय बाहरी दबावों से अनुचित रूप से प्रभावित नहीं होते हैं।
  - मीडिया स्वामित्व और निवेश प्रकटीकरण मानदंडों के संबंध में ट्राई की सिफारिशों को लागू करने से समाचार मीडिया क्षेत्र के लिए आवश्यक पारदर्शिता बनाए रखने में मदद मिलेगी।
- **मीडिया साक्षरता और सार्वजनिक जागरूकता:** शैक्षिक संस्थान, मीडिया संगठन और नागरिक समाज ऐसे कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए सहयोग कर सकते हैं जो मीडिया साक्षरता कौशल को बढ़ाते हैं, व्यक्तियों को स्रोतों का मूल्यांकन करना, पूर्वाग्रहों की पहचान करना और विश्वसनीय और अविश्वसनीय जानकारी के बीच अंतर करना सिखाते हैं।
- **शिक्षा में नैतिक पत्रकारिता:** पत्रकारिता स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों को अपने पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में नैतिक शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए।
  - नैतिक प्रथाओं, मीडिया नैतिकता कोड और पीत पत्रकारिता के प्रभाव के महत्व के बारे में इच्छुक पत्रकारों को पढ़ाने से उनके करियर की शुरुआत से ही जिम्मेदार पत्रकारिता मूल्यों को स्थापित करने में मदद मिल सकती है।
- **नियामक निरीक्षण:** नियामक निकाय या स्वतंत्र मीडिया परिषद मीडिया सामग्री की निगरानी और पीत पत्रकारिता से संबंधित शिकायतों को संबोधित करने में भूमिका निभा सकते हैं।
  - इन निकायों के पास शिकायतों की जांच करने, चेतावनी जारी करने और नैतिक मानकों का उल्लंघन होने पर उचित प्रतिबंध लगाने की शक्ति होनी चाहिए।
- **सार्वजनिक जवाबदेही तंत्र:** मीडिया संगठनों के पास सार्वजनिक शिकायतों और प्रतिक्रिया को संबोधित करने के लिए स्पष्ट तंत्र होना चाहिए।
  - इसमें अनैतिक रिपोर्टिंग प्रथाओं के बारे में सार्वजनिक चिंताओं को प्राप्त करने और संबोधित करने के लिए लोकपाल कार्यालयों या समर्पित प्लेटफार्मों की स्थापना शामिल हो सकती है।

निष्कर्ष

पीत पत्रकारिता को संबोधित करने के लिए मीडिया संगठनों, पत्रकारों, नियामकों, शैक्षणिक संस्थानों और जनता को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। सामूहिक रूप से नैतिक पत्रकारिता मानकों को बढ़ावा देने और बनाए रखने से, पीत पत्रकारिता के नकारात्मक प्रभाव को कम करना और अधिक जिम्मेदार और विश्वसनीय मीडिया परिदृश्य को बढ़ावा देना संभव है।

9.16 शब्दावली

1. **निरन्तर प्रयत्न (Perseverance):**
   - यह कठिनाइयों या बाधाओं का सामना करते हुए भी एक लक्ष्य की ओर काम करना जारी रखने की क्षमता है। यह

अपने उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहने और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में अथक प्रयास करने का गुण है।

- उदाहरण भारत के **"मेट्रो मैन"** श्रीधरन की कहानी है। श्रीधरन दिल्ली मेट्रो के निर्माण के लिए जिम्मेदार थे, जो दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे सफल मेट्रो प्रणालियों में से एक है। परियोजना को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन श्रीधरन दृढ़ रहे और इसे पूरा होते देखा।

2. सावधानी (Prudence):

- **यह निर्णय लेने में ठोस निर्णय,** सावधानी और व्यावहारिक ज्ञान का प्रयोग करने की गुणवत्ता को संदर्भित करता है। इसमें उपलब्ध्ध विकल्पों पर सावधानीपूर्वक विचार करना, संभावित जोखिमों और लाभों का मूल्यांकन करना और विचारशील विश्लेषण के आधार पर समझदार विकल्प बनाना शामिल है।
- इसका उदाहरण भारत के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एस आर शंकरन की कहानी है। शंकरन को उनकी सावधानीपूर्वक योजना और यह सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता था कि चुनाव निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से आयोजित किए जाएं। वह अलोकप्रिय होने पर भी कठोर निर्णय लेने की इच्छा के लिए जाने जाते थे।

3. आत्मसंयम (Self-Restraint):

- आत्म-संयम किसी की भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को नियंत्रित करने की क्षमता है। यह प्रलोभन का विरोध करने और ऐसे तरीके से कार्य करने की क्षमता है जो किसी के मूल्यों के अनुरूप हो।
- उदाहरण के लिए सिविल सेवकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने काम में निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ रहें, और उन्हें अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को अपने निर्णयों को प्रभावित करने वाले प्रलोभन का विरोध करने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम होना चाहिए, और उन्हें हर समय पेशेवर तरीके से कार्य करने में सक्षम होना चाहिए।

❖ ❖ ❖

शब्दावली: उदाहरण के साथ नैतिकता से संबंधित महत्वपूर्ण अवधारणा

नैतिकता और मानवीय सहसंबंध

1. **नीतिशास्त्र**
   - यह परम सुख की प्राप्ति के साधन के रूप में मानवीय कार्यों का उनके सही या गलत होने के दृष्टिकोण से व्यवस्थित अध्ययन है।
   - **उदाहरण:** नियमों का पालन करना, काम में ईमानदार रहना, सम्बन्धों में निष्ठावान रहना आदि।
2. **मानकीय नीतिशास्त्र:**
   - **मानकीय नीतिशास्त्र,** इसमें नैतिक मानकों का एक समूह शामिल है जो सही या गलत आचरण का निर्धारण करता है। इसे अनुदेशात्मक नीतिशास्त्र भी कहा जाता है।
   - **उदाहरण;** अरस्तू का सदाचार नीतिशास्त्र, इमैनुएल कांट का डेंटोलॉजिकल एथिक्स, जे.एस. मिल का उपयोगितावाद या परिणामवाद और भगवद् गीता का निष्काम कर्म।
3. **सदाचार नीतिशास्त्र**
   - इसका उद्देश्य नैतिक चरित्र को समझना और उसके अनुसार जीवन जीना है। यह सिद्धांत अरस्तू द्वारा दिया गया था।
   - **उदाहरण:** प्लेटो के अनुसार साहस, संयम, न्याय, विवेक आदि जैसे, 4 प्रमुख गुणों का व्यवहार करके एक सम्मानजनक और नैतिक चरित्र का निर्माण किया जा सकता है।
4. **अधि-नीतिशास्त्र**
   - यह नैतिक अवधारणाओं की उत्पत्ति और अर्थ के अध्ययन को संदर्भित करता है। यह इस बात का अध्ययन है कि नैतिक शब्द और सिद्धांत क्या संदर्भित करते हैं।
   - **''नैतिक निर्णय या शर्तों का अर्थ क्या है?''** जैसे प्रश्नों का ये समाधान करते हैं।
5. **व्यक्तिगत नैतिकता**
   - यह किसी व्यक्ति के लिए विशिष्ट है और व्यक्ति के नैतिक मानकों और आचार संहिता को निर्धारित करता है।
   - महात्मा गांधी अपनी ईमानदारी, त्याग, सच्चाई और अनुशासन के गुणों के कारण ही उच्च व्यक्तिगत नैतिकता के प्रतीक हैं।
6. **व्यावसायिक नैतिकता**
   - यह उन नैतिक सिद्धांतों या मूल्यों को संदर्भित करता है जो व्यवसायों और व्यक्तियों के व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल होने की विधियों को नियंत्रित करते हैं।
   - बिना सहमति प्राप्त किए कंपनियों द्वारा उपभोक्ताओं से एकत्र किए गए डेटा का उपयोग नहीं करना व्यावसायिक नैतिकता का एक उदाहरण है।
7. **नैतिक दुविधा**
   - यह एक ऐसी स्थिति है जब दो समान रूप से महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य एक-दूसरे के साथ टकराव करते हैं और व्यक्ति को दूसरे के मुकाबले एक को चुनने की दुविधा होती है।
   - एक सिविल सेवक (ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ आदि होकर) रेत खनन माफियाओं से अपने परिवार को नुकसान पहुंचाने (दूसरों के जीवन की रक्षा करने) की बार-बार धमकियों के बावजूद रेत खनन माफियाओं के विरुद्ध काम करता है
8. **सीमित / परिबद्ध नैतिकता**
   - यह उन प्रणालीगत और पूर्वानुमेय विधियों को संदर्भित करता है जिसमें लोग अपने व्यवहार के निहितार्थ को समझे बिना निर्णय लेते हैं।
   - **निहित पूर्वाग्रह,** अर्थात समानता का पक्षधर व्यक्ति अनजाने में लिंग या नस्ल के आधार पर भेदभाव कर सकता है।
9. **नैतिक अव्यक्तता/पतन**
   - ऐसा तब होता है जब किसी निर्णय का नैतिक पहलू दृष्टि से ओझल हो जाता है और व्यक्ति किसी निर्णय की नैतिकता से अधिक उसके अन्य पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह नैतिक मानकों का उल्लंघन करके होने वाले अपराध-बोध को कम करने में मदद करता है।
   - जैसे-बड़े निगमों द्वारा लाभ के लिए ग्रीनवॉशिंग की प्रथा।
10. **विधि**
    - यह एक बाध्यकारी शक्ति है और इसमें अपने नागरिकों के व्यवहार को विनियमित करने के लिए किसी विशेष देश या समुदाय द्वारा मान्यता प्राप्त नियमों का समूह शामिल है।

- जैसे-भारत के संविधान में, लोगों के लाभ के लिए विधायिका द्वारा विनिर्मित कानून जैसे POCSO, POSH, आदि।

11. नियम

- यह आम तौर पर नियम या प्रक्रियाएं हैं, जो गतिविधि के एक विशिष्ट क्षेत्र के भीतर आचरण को नियंत्रित करता है। यदि इसे वैधानिक आवश्यकताओं से जोड़ा जाए तो यह एक बाध्यकारी शक्ति हो सकती है।
- संसद के सदनों में कामकाज के संचालन के नियम सदन की कार्यवाही को नियंत्रित करने की विधियों और प्रक्रियाओं को नियंत्रित करते हैं।

12. उपयोगितावाद

- इसके अंतर्गत,यदि कोई कार्य अधिक लोगों के लिए अनुकूल हो, तो वह नैतिक रूप से सही माना जाता है। एक व्यक्ति की सबसे बड़ी खुशी से ज्यादा बड़ी संख्या में लोगों की खुशी अधिक महत्वपूर्ण है।
- इसकी वकालत जेरेमी बेंथम (मात्रात्मक उपयोगितावाद) और जे.एस. मिल (गुणात्मक उपयोगितावाद) ने की थी। उदाहरण-अमीरों से गरीबों तक आय का पुनर्वितरण।

13. हानि सिद्धांत

- इसमें कहा गया है कि लोग अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं जब तक कि उनके कार्यों से अन्य व्यक्तियों को नुकसान न पहुंचे। यह जे.एस. मिल द्वारा दिया गया था।
- महामारी फैलने के दौरान दूसरों को नुकसान से बचाने के लिए व्यक्तियों का टीकाकरण सुनिश्चित करना।

14. धर्मशास्त्र/कर्तव्य शास्त्र

- धर्मशास्त्र, कर्तव्य-आधारित नैतिकता है। (यह ग्रीक शब्द डीओन से आया है, जिसका अर्थ है कर्तव्य)। यह कार्यो से ही संबंधित है न कि कार्यों के परिणामों से। वचन निभाए जाने चाहिए क्योंकि परिणामों की परवाह किए बिना उन्हें निभाना सही है।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान गांधीजी द्वारा उपयोग किए गए धर्मशास्त्र सिद्धांतों के रूप में सत्याग्रह और अहिंसा।

15. नैतिकता

- यह किसी व्यक्ति के स्वीकार्य प्रतिबद्धताओं के समूह को संदर्भित करता है, भले ही उन्हें दूसरों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया हो। एक नैतिकतावादी युद्ध का पक्षधर हो सकता है, भले ही अन्य लोग ऐसा न करें।
- किसी व्यक्ति के नैतिक सिद्धान्त उसे अविवाहित माताओं या लिव-इन-रिलेशनशिप को प्रोत्साहित करने या स्वीकार करने की अनुमति दे सकते है।

16. सुखवाद

- यह नैतिक दर्शन के संदर्भ में, संताप को कम करके - अपने स्वयं के सुख को उच्चतम नैतिक मूल्य प्रदान करने से है। यह इस विश्वास से जुड़ा है कि प्रसन्नता या कष्ट की अनुपस्थिति, कार्रवाई के संभावित दिशा की नैतिकता का निर्धारण करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।
- कोई व्यक्ति केवल आनंद प्राप्त करने के लिए नशीली दवाओं का अंधाधुंध सेवन करता है।

17. मानवीय मूल्य

- ये व्यक्तिगत सिद्धांत या गुण हैं जो किसी व्यक्ति या समूह के निर्णय और व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं।
- समानता और न्याय आदि के विचार।
- जानवरों जैसे जीवित प्राणियों के प्रति दया भाव रखना मानवीय मूल्य का एक उदाहरण हो सकता है।

18. परोपकारिता

- इसका तात्पर्य अपने स्वयं के हित के बजाय दूसरों के सर्वोत्तम हित में कार्य करना है।
- अक्षय पात्र फाउंडेशन वंचित बच्चों को मुफ्त भोजन प्रदान करता है।

19. परोपकारी धोखा

- यह दूसरों के कल्याण के लिए धोखाधड़ी को संदर्भित करता है क्योंकि जब इससे दूसरों को लाभ होता है तो लोगों के लिए अपने असंगत कार्य को तर्कसंगत बनाना आसान होता है। इससे व्यक्ति को स्वयं लाभ हो भी सकता है और नहीं भी।
- जासूस अपने देश की मदद के लिए अपनी पहचान गुप्त रखता है, परीक्षा में नकल कराने में अपने एक करीबी दोस्त की मदद करना।

20. संज्ञानात्मक पूर्वाग्रह

- जिस तरह से कोई विशेष व्यक्ति घटनाओं, तथ्यों और अन्य लोगों को समझता है, वह उनके अपने विशेष विश्वासों और अनुभवों पर आधारित होता है और उचित या सटीक नहीं भी हो सकता है।
- मातृत्व की जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं को काम के लिए कम सक्षम मानना, खाप पंचायत द्वारा ऑनर किलिंग को वैध बनाना।

21. संज्ञानात्मक असंगति

- इसे मानसिक व्यथा की स्थिति भी कहा जा सकता है जब किसी के विश्वास, दृष्टिकोण, मूल्यों और व्यवहार या कार्यों के मध्य संघर्ष होता है।
- अहिंसा में विश्वास रखने वाले आईपीएस अधिकारी को कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए लाठीचार्ज का आदेश देना पड़ता है।

22. पुष्टिकरण पूर्वाग्रह

- यह उपबंधित करता है कि लोग स्वाभाविक रूप से ऐसी जानकारी को पसंद करते हैं जो उनकी पहले से मौजूद मान्यताओं की पुष्टि करती है।
- चुनाव प्रचार के दौरान, लोग विभिन्न उम्मीदवारों के बारे में अपने दृष्टिकोण की पुष्टि करने वाली जानकारी की तलाश करते हैं, जबकि अपने विचारों के विरोधाभासी किसी भी जानकारी को नजरअंदाज कर देते हैं।

23. अनुरूपता पूर्वाग्रह

- यह लोगों की प्रवृत्ति होती है कि वे अपने निजी निर्णय का उपयोग करने के बजाय अपने आस-पास के लोगों की तरह व्यवहार करने लगते हैं।
- एक विशिष्ट कैरियर पथ का अनुसरण करना जो समाज के अनुसार सुरक्षित है, दान में योगदान देना जैसा कि अन्य लोग कर रहे हैं, जल संरक्षण करना आदि।

24. वृद्धिवाद

- वृद्धिवाद वह फिसलन भरी ढलान है जो प्रायः लोगों को अनजाने में अनैतिक व्यवहार की ओर उन्मुख कर देती है।
- लेखांकन धोखाधड़ी छोटी संख्याओं में हेराफेरी से शुरू होती है।

25. नैतिकवान

- एक नैतिकवान में सही और गलत को पहचानने और अपने कार्यों के लिए उत्तरदायी होने की क्षमता होती है।
- **सामान्यतः**, मनुष्यों को नैतिक एजेंट माना जाता है, जबकि जानवरों को नहीं। स्वस्थ मस्तिष्क वाले किसी भी वयस्क को नैतिक एजेंट माना जा सकता है जबकि शिशुओं को नैतिक एजेंट नहीं माना जाता है।

26. नैतिक मूकता

- ऐसा तब होता है जब लोग अनैतिक व्यवहार देखने पर भी मौन रहना पसंद करते हैं।
- अधिकांश लोग भ्रष्टाचार देखते हैं लेकिन केवल कुछ ही लोग इसकी रिपोर्ट करने का साहस रखते हैं। घरेलू हिंसा, दहेज, बाल विवाह जैसे बुरे कृत्यों पर लोगों का मौन रहना।

27. नैतिक निकट-दृष्टि दोष

- इस शब्द को मिनेट ड्रमराइट और पैट्रिक मर्फी द्वारा गढ़ा गया था और इसे नैतिक मुद्दों को स्पष्ट रूप से देखने में असमर्थता के रूप में समझा जा सकता है।
- ब्राजील सरकार पशुपालन और सोयाबीन उत्पादन के लिए अमेजन वर्षावन में वनों की कटाई संबंधी गतिविधियों की अनुमति दे रही है।

28. नैतिक संतुलन

- यह वह विचार है जो अधिकांश लोगों की मानसिक संगणना से संबंधित है जहां वे अपनी छवि की तुलना एक अच्छे व्यक्ति के रूप में करते हैं। यदि वे अपनी सकारात्मक आत्म-छवि के अनुरूप कुछ करते हैं, तो उन्हें संगणना के अच्छे पक्ष में अधिशेष महसूस होता है।
- दान या क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म पर दान करने से हमें अपने बारे में अच्छा महसूस होता है।

29. नैतिक सापेक्षवाद

- इसकी अवधारणा है कि नैतिक मानकों का कोई सार्वभौमिक या पूर्ण सेट नहीं है। वे सांस्कृतिक रूप से परिभाषित हैं। हालाँकि कुछ ऐसे मूल्य हो सकते हैं जो लगभग सार्वभौमिक प्रतीत होते हैं, जैसे ईमानदारी और सम्मान, लेकिन जब लोग दुनिया भर में नैतिक मानकों का मूल्यांकन करते हैं तो संस्कृतियों में विभिन्न अंतर दिखाई देते हैं।
- LGBTQ+ लोगों को संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस आदि में अधिकार प्राप्त हैं लेकिन बांग्लादेश, ब्रुनेई, अफगानिस्तान आदि में यह गैरकानूनी है।

30. नैतिक शून्यवाद

- नैतिक शून्यवाद अधि-नैतिकशास्त्रीय दृष्टिकोण है जिसमें कुछ भी तटस्थ:,न नैतिक रूप से सही या न नैतिक रूप से गलत है।
- इसका मानना है कि कोई भी वस्तुनिष्ठ नैतिक तथ्य नहीं है, नैतिक रूप से कुछ भी अच्छा, बुरा, गलत, सही आदि नहीं है - क्योंकि कोई नैतिक सत्य नहीं है। नैतिक शून्यवाद के अनुसार किसी को मारना गलत नहीं होगा लेकिन यह सही भी नहीं होगा।

31. अनभिज्ञता का आवरण

- यह लोगों को एक न्यायपूर्ण और निष्पक्ष समाज स्थापित करने में मदद करता है क्योंकि वे अपनी परिस्थितियों से अनभिज्ञ होते हैं। जैसा कि जॉन रॉल्स ने समझाया है, हमें कल्पना करनी चाहिए कि हम अनभिज्ञता के आवरण के पीछे बैठे हैं जो हमें यह जानने से रोकता है कि हम कौन

हैं। न्याय के सिद्धांत पूर्वाग्रह से मुक्त होने चाहिए और अनभिज्ञता के आवरण में विकसित होने चाहिए।

- नौकरी के लिए इंटरव्यू में अंक देने से पहले साक्षात्कारकर्ताओं को उम्मीदवारों की सामाजिक स्थिति, जाति आदि के बारे में नहीं पता होता है।

32. परोपकार

- यह दया, दयालुता, उदारता, दान, परोपकारिता, प्रेम, मानवता और दूसरों के कल्याण को बढ़ावा देने के कार्यों को संदर्भित करता है।
- कोरोना वायरस महामारी के बीच, केरल के कन्नूर जिले के एक दिव्यांग बीड़ी कार्यकर्ता जनार्दन ने अपने जीवन की सारी बचत - ₹2 लाख मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष (सीएमडीआरएफ) में दान कर दी थी।उनके पास सिर्फ ₹850 बचे।

33. सत्यता

- यह दूसरों को सच्चाई से अवगत कराने के लिए व्यक्तियों के नैतिक दायित्व को संदर्भित करता है।
- डॉक्टर-रोगी संबंध, जिसमें डॉक्टर रोगी को किसी विशेष उपचार के दुष्प्रभावों के बारे में सूचित करता है।

34. विनम्रता

- यह विनम्र होने या स्वयं को अभिमान और अहंकार से मुक्त रखने की स्थिति है।
- एक बार एक कार्यक्रम के दौरान, डॉ. कलाम (भारत के पूर्व राष्ट्रपति) ने उनके लिए निर्धारित कुर्सी पर बैठने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह कुर्सी अन्य कुर्सियों की तुलना में आकार में बड़ी थी।

35. कृतज्ञता

- यह किसी चीज या व्यक्ति के प्रति आभार की भावना है।
- खुश रहने के लिए व्यक्ति को छोटी-छोटी चीजों जैसे परिवार, दोस्त, अच्छा स्वास्थ्य, नौकरी आदि के लिए आभारी होना चाहिए।

मनोवृत्ति

1. अभिवृत्ति

- यह किसी विशेष वस्तु का पक्ष या विपक्ष में मूल्यांकन करने की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है। इसके तीन घटक हैं- संज्ञानात्मक (विश्वास और विचार), भावनात्मक (भावना या संवेग), और व्यवहारिक (प्रवृत्ति या पूर्वप्रवृत्ति)।
- **सकारात्मक अभिवृत्ति:** क्षमाशील, उदार, कृतज्ञता, कर्मठता, ईमानदारी।
- **नकारात्मक अभिवृत्ति:** क्रोधी, निराशावादी, आलसी, स्वार्थी, अहंकारी।
- सकारात्मक दृष्टिकोण वाला एक सिविल सेवक दलितों के प्रति करुणा जैसे संवैधानिक लोकाचार और मूल्यों को कायम रखेगा।

2. व्यवहार

- यह वह तरीका है जिससे कोई व्यक्ति स्वयं आचरण करता है। हमारा व्यवहार काफी हद तक हमारी मनोवृत्ति से आकार लेता है। एक सकारात्मक मनोवृत्ति, अच्छे व्यवहार के रूप में प्रकट होती है। यह किसी विशेष क्रिया, व्यक्ति या वातावरण के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया है।
- संचार, सोच, प्रेरणा आदि व्यवहार की अभिव्यक्तियाँ हैं।

3. स्पष्ट मनोवृत्ति

- इसे **"स्व-प्रदर्शित मनोवृत्ति"** भी कहा जाता है। यह मनोवृत्ति हमारी सचेत अनुभूति में अंतर्निहित है या सरल शब्दों में, इसमें शामिल व्यक्ति अपनी मनोवृत्ति से अवगत है।
- **स्पष्ट रवैया:** एक फुटबॉल प्रशंसक अजनबियों के साथ एक सभा में मेसी की जर्सी पहने एक व्यक्ति के साथ घुलना-मिलना पसंद करेगा।

4. अंतर्निहित मनोवृत्ति

- यह बहुधा अतीत की स्मरणों से संचालित होता है, यह मनोवृत्ति हमारे अचेतन संज्ञान में अंतर्निहित होती है। यह हमारे अनुभवों के कारण अनायास ही उत्पन्न हो जाता है।
- दुर्व्यवहार करने वाले साथी के समान आवाज वाले व्यक्ति के आसपास अनजाने में असहज महसूस करना।

5. राय/विचार

- यह किसी चीज के बारे में किसी व्यक्ति के विचार या विश्वास हैं, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकता है।
- पश्चिमी और पूर्वी दुनिया में परमाणु हथियारों के संग्रह, जलवायु परिवर्तन की ऐतिहासिक उत्तरदायित्व पर परस्पर विरोधी राय हैं।

6. विश्वास

- इसका अर्थ किसी ऐसी चीज के बारे में निश्चित होना है जो अस्तित्व में है या सत्य है। विश्वास को व्यक्तियों द्वारा स्वीकार किया जाता है, सत्य माना जाता है या एक राय के रूप में माना जाता है।
- विश्वास का कोई ठोस प्रमाण हो भी सकता है और नहीं भी।

- आस्तिक ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं जबकि नास्तिक इसे अस्वीकार करते हैं।

7. नैतिक मनोवृत्ति

- नैतिक मनोवृत्ति में नैतिक निर्णय (सही और गलत) शामिल होते हैं और यह किसी व्यक्ति के मूल्यों को दर्शाते हैं। यह एक नैतिक प्रवृत्ति होती है जो एक व्यक्ति को दूसरे से पृथक करती है।
- अन्याय से लड़ने के एक उपकरण के रूप में अहिंसा में गांधीजी का मौलिक विश्वास।

8. सामाजिक मनोवृत्ति

- यह समाज, संस्कृति, संगठनों, संस्थानों आदि जैसी सामाजिक संस्थाओं के प्रति एक व्यक्ति का दृष्टिकोण है। यह व्यक्तिगत अनुभवों और विचारों से निर्धारित होता है। इससे पूर्वप्रवृत्ति सीखी जा सकती हैं।
- विशेषतः, समान-लिंग या अंतर-धार्मिक विवाह के प्रति समाज के कई वर्गों में प्रतिकूल सामाजिक प्रवृत्ति होती है।

9. पूर्वाग्रह

- यह किसी विशेष व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह और प्राथमिकताओं के प्रति एक अनुचित नापसंदगी है। यह आम तौर पर किसी भी कारण या तर्क से रहित एक पूर्वकल्पित धारणा है।
- पश्चिमी देशों में रंगभेद द्वारा पक्षपातपूर्ण व्यवहार।

10. रूढ़िवादिता

- यह लिंग, लैंगिक पहचान, नस्ल और जातीयता, राष्ट्रीयता, आयु, सामाजिक आर्थिक स्थिति, भाषा आदि के आधार पर एक विशिष्ट समूह के बारे में एक पूर्वकल्पित धारणा है। यह सामाजिक संस्थाओं और व्यापक संस्कृति में अंतर्निहित होती है।
- गुलाबी रंग को लड़कियों से और नीले रंग को लड़कों के साथ जोड़ा जा रहा है।

11. राजनीतिक मनोवृत्ति

- यह राजनीतिक संस्थाओं और नेताओं जैसे राजनीतिक विषयों के प्रति हमारा दृष्टिकोण है और यह काफी हद तक हमारे व्यक्तित्व वृत्तियों से निर्धारित होता है।
- स्वतंत्रता और स्वायत्तता का पक्षधर व्यक्ति उदारवादी विचारधारा वाले राजनीतिक दलों का पक्ष लेगा।

12. लोकतांत्रिक मनोवृत्ति

- यह मत-भिन्नता को स्थान देता है और हितधारकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। सार्वजनिक सेवा के मामले में, यह नीति निर्माण और कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करता है।
- सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे ने ग्रामीण विकास, भ्रष्टाचार के लिए अपनी लड़ाई में लोकतांत्रिक मनोवृत्ति का परिचय दिया था।

13. नौकरशाही मनोवृत्ति

- यह योजनाओं के कार्यान्वयन में नौकरशाहों की मनोवृत्ति को संदर्भित करता है। आम तौर पर इसकी विशेषता लालफीताशाही, टॉप-डाउन अप्रोच और मानदंडों का कड़ाई से पालन है जिसमें किसी के प्रति लचीलेपन की कोई गुंजाइश नहीं है।
- अंतिम परिणाम से अधिक प्रक्रिया को महत्व देना।

14. नैतिक निगरानी

- इसे सतर्कतावाद के रूप में भी जाना जाता है, यह समाज में एक विशेष आचार संहिता को लागू करने के लिए सतर्क समूहों द्वारा किए गए कार्यों को संदर्भित करता है।
- पुरुषों के लिए ध्यान भटकाने वाली मानी जाने वाली महिला पोशाक को कुछ समाजों में नैतिक निगरानी का सामना करना पड़ता है।

15. सामाजिक प्रभाव

- यह किसी व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और कार्यों पर वाह्य कारकों मुख्य रूप से सामाजिक समूहों का प्रभाव है।
- गाँव से शहर जाने पर, कोई व्यक्ति सहकर्मी समूहों के प्रभाव में अपना पहनावा परिवर्तित कर सकता है।

16. अनुनय

- इसे किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के प्रयास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- स्वच्छ भारत मिशन लोगों को शौचालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

अभिक्षमता

1. अभिक्षमता

- अभिक्षमता, किसी व्यक्ति की नवीन कौशल, ज्ञान और क्षमताओं को प्राप्त करने और लागू करने की प्राकृतिक क्षमता या प्रतिभा को संदर्भित करती है। इसे प्रायः किसी विशेष क्षेत्र या व्यवसाय में सफलता के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता के माप के रूप में देखा जाता है।
- सचिन तेंदुलकर की बल्लेबाजी योग्यता ने उन्हें अपनी पीढ़ी का एक सफल खिलाड़ी बनाया।

2. कौशल

- कौशल को किसी कार्य या कार्यों के समूह को प्रभावी ढंग से और कुशलतापूर्वक निष्पादित करने की सीखी गई क्षमता या विशेषज्ञता के रूप में परिभाषित किया गया है।

अभ्यास, अनुभव और प्रशिक्षण, कौशल विकसित करने में सहायता करते हैं।

- तकनीकी या हार्ड स्किल, आमतौर पर किसी विशेष व्यवसाय या उद्योग के लिए विशिष्ट होते हैं, जबकि सॉफ्ट स्किल पारस्परिक और अधिक हस्तांतरणीय होते हैं और कई अलग-अलग संदर्भों में उपयोगी हो सकते हैं। तकनीकी या हार्ड स्किल जैसे कोडिंग या अकाउंटिंग।

3. रुचि

- किसी विशेष गतिविधि, विषय या टॉपिक के प्रति स्वाभाविक झुकाव या पसंद जो किसी व्यक्ति को उसी में संलग्न होने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है।
- फुटबॉल खेलने में रुचि ने लियोनेल मेस्सी और क्रिस्टियानो रोनाल्डो जैसे खिलाड़ियों को उत्कृष्टता हेतु प्रेरित किया।

4. बुद्धिमत्ता

- बुद्धिमत्ता स्मृति, रचनात्मकता, तार्किक तर्कशक्ति, समझ, समस्या-समाधान, स्थितिजन्य/स्थानिक जागरूकता और अनुभव से सीखने जैसी संज्ञानात्मक क्षमताओं की एक विस्तृत श्रृंखला का परिणाम है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अर्थात भावनाओं का अनुभव करने/समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की क्षमता।

5. योग्यता

- किसी विशेष गतिविधि या कार्य को करने की प्राकृतिक या अर्जित क्षमता को योग्यता कहा जाता है। शारीरिक, संज्ञानात्मक या व्यवहारिक इसके कुछ प्रकार हैं।
- लोगों को प्रेरित करने की क्षमता, भीड़ को नियंत्रित करने की क्षमता, विश्लेषणात्मक क्षमता आदि।

6. मूल्य

- मूल्य मार्गदर्शक सिद्धांत और विश्वास हैं जो किसी व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय और दृष्टिकोण को निर्धारित करते हैं। मूल्य सही और गलत, अच्छे और बुरे और क्या सार्थक व संतुष्टिदायक है, के बारे में हमारी धारणाओं को प्रभावित करते हैं। पालन-पोषण, संस्कृति, विश्वास प्रणाली, शिक्षा और व्यक्तिगत अनुभव जैसे कारक किसी व्यक्ति के लिए मूल्य-निर्धारण में अपनी भूमिका निभाते हैं। किसी व्यक्ति की मान्यताएं और दृष्टिकोण विकसित होने के साथ-साथ समय के साथ मूल्य भी परिवर्तित हो सकते हैं।
- इसके उदाहरणों में ईमानदारी, सम्मान, उत्तरदायित्व, करुणा, निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा आदि मूल्य शामिल हैं।

7. सिद्धांत

- सिद्धांत मार्गदर्शक अवधारणाएँ हैं जो व्यक्तियों और संगठनों को निर्णय लेने, प्राथमिकताएँ निर्धारित करने और कार्यों या परिणामों का मूल्यांकन करने में मदद करती हैं।
- **संधारणीयता:** भावी पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान जरूरतों को पूरा करने का सिद्धांत।
- **निष्पक्षता:** दूसरों के लिए न्यायसंगत और समतापूर्ण व्यवहार।

8. प्रवीणता (Proficiency)

- किसी विशेष कार्य या गतिविधि के कुशल, प्रभावी और सटीक प्रदर्शन के लिए अधिकाधिक योग्यता को प्रवीणता कहा जाता है। केंद्रित व्यापक अभ्यास और अनुभव से प्रवीणता उद्भूत होती है।
- भाषा दक्षता, कोडिंग, गणित आदि में प्रवीणता।

9. उपलब्धि

- उपलब्धि को किसी लक्ष्य या कार्य की सफल परिणति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। कुशल और केंद्रित प्रयास और दृढ़ता के परिणामस्वरूप वांछित परिणाम प्राप्त होता है जिसे उपलब्धि कहा जाता है।
- उपलब्धि से संतुष्टि, गर्व और पूर्णता की भावना जागृत होती है, आत्मविश्वास, प्रेरणा और उच्च आत्म-सम्मान की अभिवृद्धि होती है।
- किसी प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करना।
- भारतीय क्रिकेट टीम ने 1983 और 2011 विश्व कप जीतकर पूरे देश में उपलब्धि की भावना पैदा की।

सिविल सेवाओं के लिए मूलभूत मूल्य

1. सत्यनिष्ठा (Integrity)

- यह ईमानदार होने का गुण है, जिसमें सशक्त नैतिक सिद्धांत होते हैं, जो परिवर्तनीय नहीं हैं।
- **सर एम विश्वेश्वरैया:** मैसूर के दीवान का पद स्वीकार करने से पहले उन्होंने अपने सभी रिश्तेदारों को रात्रि भोज पर आमंत्रित किया था। उन्होंने उनसे स्पष्ट रूप से कहा कि वह इस प्रतिष्ठित पद को इस शर्त पर स्वीकार करेंगे कि उनमें से कोई भी अनुग्रह के लिए उनसे संपर्क नहीं करेगा। ऐसी बातें आजकल सुनने को नहीं मिलतीं। कहा जाता है कि उनके पास मोमबत्तियों के 2 सेट हुआ करते थे। एक निजी तौर पर खरीदा गया था जिसका उपयोग उन्होंने अपने निजी काम के लिए किया था और दूसरा, सरकार द्वारा प्रदान किया गया था जिसका उपयोग उन्होंने केवल आधिकारिक काम के लिए किया था।
- **लाल बहादुर शास्त्री:** प्रधानमंत्री के रूप में एक कपड़ा मिल के दौरे पर, जब मालिक ने उन्हें महंगी साड़ियाँ देने

की पेशकश की, तो शास्त्री ने केवल वही खरीदने और भुगतान करने पर जोर दिया जो वह वहन कर सकते थे।

2. ईमानदारी

- यह सत्य के साथ खड़े रहने या सत्यनिष्ठ होने का गुण है।
- केरल कैडर के आईएएस राजू नारायण स्वामी को सरकार में भी भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए जाना जाता है और उनका 20 बार स्थानान्तरण किया जा चुका है।

3. निष्पक्षता

- यह निष्पक्ष होने, या किसी भी चीज या व्यक्ति के प्रति पक्षपाती न होने का गुण है।
- नीलम संजीव रेड्डी (भारत के छठे राष्ट्रपति और दो बार लोकसभा अध्यक्ष), अध्यक्ष चुने जाने पर अपनी पार्टी छोड़ने वाले पहले अध्यक्ष थे। उन्होंने कार्यवाही भी इतनी सुचारु रूप से संचालित की कि उनके कार्यकाल के दौरान एक बार भी विपक्ष ने वाकआउट नहीं किया।

4. गैर-पक्षपात

- इसका तात्पर्य किसी राजनीतिक दल या विचारधारा के प्रति सम्बद्धता की कमी से है। गैर-पक्षपातपूर्ण मीडिया लोकतंत्र के सबसे मजबूत स्तंभों में से एक है।
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को उनके सादे जीवन और गैर-पक्षपातपूर्ण आचरण के लिए लोगों और विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा माना जाता था।

5. हितों का टकराव

- जब किसी व्यक्ति या संगठन को प्रतिस्पर्धी हितों या निष्ठा का सामना करना पड़ता है जो उचित, निष्पक्ष, न्यायोचित या उद्देश्यपूर्ण रीतियों से कार्य करने की उनकी क्षमता में हस्तक्षेप कर सकता है, तो इसे हितों के टकराव के रूप में जाना जाता है। यह तब होता है जब किसी व्यक्ति या संगठन का कोई व्यक्तिगत, वित्तीय या अन्य हित होता है जो उनके व्यावसायिक या नैतिक दायित्वों से टकरा सकता है।
- एक पत्रकार जो किसी ऐसी कंपनी पर रिपोर्टिंग कर रहा है जिसमें उसका वित्तीय हित है, उसे पक्षपाती या गैर-पक्षपातपूर्णता की कमी के रूप में देखा जा सकता है।

6. सद्भाव

- सद्भाव का तात्पर्य व्यक्तियों या समूहों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व या समझौते की स्थिति से है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें विभिन्न तत्व या भाग इस तरह से एक साथ आते हैं जो सुखद, संतुलित और पारस्परिक रूप से मजबूत होता है।
- व्यक्तिगत सद्भाव आंतरिक शांति या संतुलन की भावना है, जहां किसी व्यक्ति के विचार, भावनाएं और कार्य संरेखित और समन्वित होते हैं।
- सामाजिक सद्भाव एक ऐसी स्थिति है जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक, जातीय या धार्मिक समूह शांतिपूर्वक और सम्मानपूर्वक सह-अस्तित्व में रहते हैं।
- पर्यावरणीय सद्भाव मानवीय गतिविधियों और प्राकृतिक विश्व के बीच एक संतुलन है, जहां पर्यावरण को परिरक्षित और संरक्षित किया जाता है।

7. वस्तुनिष्ठता

- इसका तात्पर्य, अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं और भावनाओं के स्थान पर तथ्यों का पालन करना है।
- अनुबंध प्रदान करना, नियुक्तियाँ करना और योग्यता के आधार पर पुरस्कार देना न कि पक्षपात के आधार पर।

8. तटस्थता

- यह किसी भी मुद्दे, टकराव या परिस्थिति में किसी का पक्ष न लेने की स्थिति है।
- पूर्व चुनाव आयुक्त टी एन शेषन अपनी तटस्थता के लिए जाने जाते थे और उन्होंने चुनाव सुधारों का सूत्रपात किया था।

9. अनामता

- लोक सेवा की दृष्टि से इसका तात्पर्य आवरण के पीछे रहना है। यह सिविल सेवाओं में स्थायित्व और तटस्थता की अवधारणाओं से संबंधित है।
- यह आवश्यक है कि सिविल सेवक (स्थायी कार्यकारी अधिकारी) विभिन्न राजनीतिक दलों की सरकारों को स्वतंत्र और भय-मुक्त रूप से (तटस्थता) सलाह दें। कई डॉक्टरों, पैरामेडिक्स और मेडिकल स्टाफ ने अनाम रूप से COVID-19 महामारी के खिलाफ लड़ाई में योगदान दिया है।

10. लोक सेवा के प्रति समर्पण

- यह जनता के कल्याण को सुनिश्चित करने के लिए अपने कर्तव्य के प्रति एक लोक सेवक की प्रतिबद्धता को संदर्भित करता है।
- एस. आर. शंकरन, आईएएस, को पीपुल्स मैन के रूप में जाना जाता था क्योंकि उन्होंने बंधुआ मजदूरी के उन्मूलन का नेतृत्व किया और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के कल्याण के लिए बहुत काम किया।

11. सहिष्णुता (Tolerance)

- सहिष्णुता हमारे वैश्विक संस्कृतियों की समृद्ध विविधता, हमारी अभिव्यक्ति के स्वरूपों और मानव होने के हमारे तरीकों का सम्मान, स्वीकृति और सराहना है। (यूनेस्को)।

- अशोक ने धम्म के माध्यम से और अकबर ने दीन-ए-इलाही के माध्यम से विभिन्न धर्मों के सभी व्यक्तियों के प्रति सहिष्णुता का उपदेश दिया।

12. स्वीकृति

- इसका तात्पर्य व्यक्ति का जीवन के दुख और सुख दोनों परिस्थितियों को स्वीकार करना है।
- खेलों के खिलाड़ी पराजय स्वीकार करते हैं और उन पराजयों से सीखते हैं।

13. विद्वेष, उदासीनता, सहानुभूति

- **विद्वेष:** यह किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति तीव्र अरूचि या शत्रुता की भावना है।
- रोहिंग्या नरसंहार ने म्यांमार में अल्पसंख्यक समूहों के प्रति विद्वेष को दर्शाया।
- **उदासीनता:** यह किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति उदासीन होने की प्रकृति है। यह किसी चीज के प्रति चिंता, भावना, वृत्तियों, झुकाव आदि की अनुपस्थिति से चिह्नित होता है।
- रूस-यूक्रेन युद्ध का आरम्भ, सत्ता में बैठे लोगों की आम जनता के प्रति उदासीनता को दर्शाता है।
- **सहानुभूति:** यह किसी की पीड़ा के प्रति दया, दु:ख और करुणा की भावना है। इसे किसी खास मुद्दे पर सहमति के तौर पर भी समझा जा सकता है
- निर्भया कांड के बाद देशभर में निकाले गए कैंडल मार्च ने पीड़िता और आम तौर पर सभी महिलाओं के प्रति सहानुभूति दिखाई।

14. समानुभूति

- यह दूसरों की भावनाओं को समझने, दूसरों के दृष्टिकोण से देखने, स्वयं को उनकी जगह पर रखने की क्षमता है।
- आईएएस जितेंद्र कुमार सोनी ने कुछ वंचित बच्चों को कठोर सर्दियों में नंगे पैर स्कूल जाते देखकर चरण पादुका अभियान शुरू किया और उन्हें जूते वितरित किए।

15. करुणा

- यह दूसरों के दर्द को महसूस करने और उनके कष्ट को दूर करने में उनकी मदद करने की भावना है।
- मदर टेरेसा को गरीबों और वंचितों के प्रति उनकी सेवा के लिए करुणा की प्रतिमूर्ति माना जाता है।

16. निष्कपटता/सच्चाई/ईमानदारी निष्ठा

- **निष्कपटता,** किसी के विचारों, कार्यों और दूसरों के साथ संव्यवहार में ईमानदार, वास्तविक और सच्चा होने का गुण है। यह एक ऐसा गुण है जिसमें स्वयं को अभिव्यक्त करने और दूसरों के साथ व्यवहार करने में प्रामाणिक, पारदर्शी और सरल होना शामिल है। निष्कपटता/सच्चाई में दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों को ईमानदारी से करना शामिल हो सकता है।
- समय पर कार्यालय आना, सभी आधिकारिक लेनदेन आदि का रिकॉर्ड रखना।

17. दृढ़ता

- दृढ़ता चुनौतियों, बाधाओं और असफलताओं के बावजूद किसी लक्ष्य या कार्य को जारी रखने का गुण है। इसमें कठिनाइयों या असफलताओं का सामना करने में दृढ़ संकल्प, दृढ़ता और लचीलेपन का संयोजन शामिल है। विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण गुण है।
- प्रकाश बल्ब के आविष्कार में 1000 से अधिक बार असफल होने के बावजूद थॉमस एडिसन ने काम जारी रखा था।

18. साहस

- साहसी, निडर होने और चुनौतियों, कठिनाइयों या यहां तक कि खतरे का सामना करने और उस पर काबू पाने के लिए तैयार होने का गुण है।
  - जो सही है उसके लिए खड़ा होना, वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए आवश्यक होने पर जोखिम उठाना और भय का मुकाबला करना साहस के अनुरूप है।

19. पौरुष

- पौरुष एक ऐसे गुण को संदर्भित करती है जो हमें साहस, दृढ़ता और आंतरिक शक्ति की गहरी भावना के साथ जीवन की कठिनाइयों का सामना करने में सक्षम बनाती है।
- एक सैनिक जिसका निजी जीवन अव्यवस्थित है, खतरनाक परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने देश की रक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डालता है और हार नहीं मानता।

20. अनुक्रियशीलता

- अनुक्रियशीलता से तात्पर्य किसी स्थिति, अनुरोध या उत्तेजना के प्रति शीघ्र और उचित रूप से प्रतिक्रिया करने की क्षमता से है।
- 2006 बैच के आईपीएस अधिकारी शिवदीप वामन लांडे ने कई अपराधियों को गिरफ्तार किया, महिलाओं की सुरक्षा की दिशा में काम किया और फार्मास्युटिकल माफिया से मुकाबला किया, छेड़छाड़ करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की और लोगों के लिए बहुत आसानी से उपलब्ध रहे। हर दिन सैकड़ों संदेश प्राप्त होते थे और उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक संदेश पर ध्यान दिया जाए।

21. विवेक

- विवेक का तात्पर्य निर्णय लेने और कार्रवाई करने में सावधान, सतर्क और बुद्धिमान होने के गुण से है। संभावित जोखिमों का अनुमान लगाने के लिए अच्छे निर्णय और दूरदर्शिता का उपयोग करना और जल्दबाजी या आवेगपूर्ण निर्णयों से बचना व्यक्ति को विवेकपूर्ण बनाता है।
- एक पेशेवर तब विवेकशीलता दिखाता है जब वह अपने काम की गुणवत्ता को प्राथमिकता देता है और खुद को पहले से बेहतर बनाता है।

22. संयम

- संयम का तात्पर्य व्यवहार में आत्म-नियंत्रण और संयम बरतने और आवेगपूर्ण व्यवहार से बचने की क्षमता है, खासकर जब संलिप्तता हो। संयम, व्यक्तियों को संतुलन बनाए रखने और चरम सीमाओं से बचने की अनुमति देता है।
- संयम से कोई व्यक्ति साथियों के दबाव के कारण या किसी अन्य कारण से हानिकर/व्यर्थ गतिविधियों में शामिल नहीं हो रहा है।

23. गोपनीयता

- गोपनीयता से तात्पर्य संवेदनशील या वर्गीकृत जानकारी, डेटा या ज्ञान को निजी रखने और अनधिकृत व्यक्तियों या अनपेक्षित व्यक्तियों के सामने इसके प्रकटीकरण को रोकने के व्यवहार/आश्वासन से है।
- यौन अपराधों के पीड़ितों की पहचान का खुलासा न करना: पहचान की रक्षा की जाती है ताकि उन्हें अनावश्यक उपहास, सामाजिक बहिष्कार और उत्पीड़न का शिकार न होना पड़े।

24. प्राकट्य/खुलापन

- प्राकट्य, पारदर्शी, समावेशी और सुलभ होने की स्थिति को संदर्भित करता है। प्राकट्य, विश्वास, उत्तरदायित्व की संस्कृति को बढ़ावा देता है साथ ही ज्ञान और अवसरों तक पहुंच बढ़ाकर, नवाचार को बढ़ाकर और अधिक समावेशी समाज बनाकर सामाजिक और आर्थिक विकास की ओर ले जाता है।
- राजस्थान सरकार का जनसूचना पोर्टल प्राकट्य को बढ़ावा देता है

25. नि:स्वार्थता

- नि:स्वार्थता से तात्पर्य स्वयं की अपेक्षा दूसरों की जरूरतों और कल्याण के प्रति अधिक चिंतित होने के गुण या स्थिति से है। निस्वार्थता स्वयं को कई अलग-अलग तरीकों से प्रकट कर सकती है, जिसमें दयालुता, उदारता, देशभक्ति और परोपकारिता के कार्य शामिल हैं।
- भारत के वीर सैनिक अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देते हैं।

26. जवाबदेही

- जवाबदेही से तात्पर्य किसी के कार्यों, निर्णयों और प्रदर्शन के लिए जिम्मेदार होने और उन कार्यों के परिणामों के लिए जवाबदेह होने की स्थिति से है। इसमें किसी के कार्यों को स्वीकार करना और उनका स्वामित्व लेना और यदि आवश्यक हो तो उन्हें समझाने और उचित ठहराने के लिए तैयार रहना शामिल है।
- नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक अपने कार्यों के लिए संसद के प्रति जवाबदेह है

27. उत्तरदायित्व

- उत्तरदायित्व से तात्पर्य व्यक्ति की इच्छा के परिणामों को स्वीकार करने और किसी विशेष भूमिका, स्थिति या स्थिति से जुड़े कर्तव्यों और अपेक्षाओं को पूरा करने की इच्छा और क्षमता से है।
- कॉर्पोरेट फर्म की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व सिद्धांत इसे से सम्बंधित है।

28. प्रत्ययी कर्तव्य

- प्रत्ययी कर्तव्य एक कानूनी दायित्व को संदर्भित करता है जिसे एक पक्ष को दूसरे पक्ष के सर्वोत्तम हित में करना होता है। प्रत्ययी कर्तव्य वाली पार्टी को प्रत्ययी कहा जाता है, और जिस पक्ष पर कर्तव्य बकाया है उसे लाभार्थी कहा जाता है।
- एक सिविल सेवक का प्रत्ययी कर्तव्य जनता के सर्वोत्तम हित में कार्य करने और अपनी शक्तियों और संसाधनों का जिम्मेदार और जवाबदेह तरीके से उपयोग करने के उनके दायित्व को संदर्भित करता है।

29. जिम्मेदारियों का प्रसार

- **जिम्मेदारियों का प्रसार,** जिसे बाईस्टैंडर प्रभाव के रूप में भी जाना जाता है, एक सामाजिक परिघटना है जिसमें व्यक्तियों द्वारा अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने या आपातकालीन स्थिति में हस्तक्षेप करने की संभावना कम होती है जब अन्य लोग मौजूद होते हैं। यह अन्य कारकों के अलावा सामाजिक मानदंडों, समूह अनुरूपता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी की कमी के कारण हो सकता है।
- यदि दोस्तों का एक समूह किसी को धमकाते हुए देखता है, तो उनके हस्तक्षेप करने की संभावना कम हो सकती है यदि उनमें से प्रत्येक यह मानता है कि समूह में कोई और ऐसा करेगा।

30. अनुशासन

- अनुशासन नियमों के एक समूह या आचार संहिता को संदर्भित करता है जिसका पालन कोई व्यक्ति किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने या एक निश्चित मानक और संतुलन बनाए रखने के लिए करता है। यह आत्म-नियंत्रण का कार्य है और विकर्षणों का सामना करने पर भी स्वीकृत नियमों या मानकों का पालन करने की क्षमता है।
- अनुशासन, भारतीय सेना का मेरुदंड है। अनुशासन के माध्यम से, इसने वर्षों से व्यवस्था और उत्कृष्टता बनाए रखी है।

31. चरित्र

- चरित्र किसी व्यक्ति के कुछ गुणों, मूल्यों और लक्षणों के परिणामस्वरूप उसकी नैतिकता और नैतिक पहचान को परिभाषित करता है।
- सत्तासीन लोग आचार संहिता का पालन करते हैं और अपने पद का दुरुपयोग नहीं करते।

32. तर्कसंगतता

- तर्कसंगतता का तात्पर्य आलोचनात्मक चिंतन करने, विभिन्न विकल्पों पर विचार करने और युक्तिपरक और तार्किक तरीके से यानी साक्ष्यों और तथ्यों के आधार पर सूचित निर्णय लेने की क्षमता से है।
- लोग अधिक भुगतान वाली नौकरियों की बजाय ऐसी नौकरियां चुनते हैं जो उनके कौशल और रुचियों के अनुरूप हों।

भावानात्मक बुद्धिमत्ता

1. भावनाएँ

- भावनाएँ जटिल मनोवैज्ञानिक और शारीरिक प्रतिक्रियाएँ हैं जो या तो किसी वाह्य उत्तेजना या आंतरिक विचारों और भावनाओं के कारण उत्पन्न होती हैं। भावनाएँ स्वाभाविक रूप से अच्छी या बुरी नहीं होती हैं, बल्कि वे हमारे मानसिक और शारीरिक कल्याण के स्वाभाविक और आवश्यक पहलू हैं। भावनाएँ सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती हैं और उनकी तीव्रता साधारण से तीव्र तक हो सकती है।
- कुछ सामान्य सकारात्मक भावनाएँ प्रसन्नता, संतुष्टि और उत्साह हैं, जबकि क्रोध, भय और उदासी सामान्य नकारात्मक भावनाएँ हैं।

2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता

- यह भावनाओं को अनुभव करने/समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने, तनावपूर्ण गतिविधियों के दौरान या तनावपूर्ण स्थितियों में संयम बनाए रखने की क्षमता को संदर्भित करता है।
- खेल के दौरान लक्ष्य का पीछा करना, शांत रहना और व्यक्तिगत जीवन में अशांति के बावजूद कार्यस्थल पर ध्यान केंद्रित रखना।

3. ईक्यू बनाम आईक्यू (EQ vs IQ)

- IQ या इंटेलिजेंस कोशेंट एक बुद्धि परीक्षण स्कोर है। परीक्षण का उद्देश्य किसी व्यक्ति की सोचने और तर्क करने की संज्ञानात्मक क्षमता का आकलन करना है।
- EQ या भावनात्मक लब्धि को एक व्यक्ति की अपनी और दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को पहचानने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता किसी व्यक्ति की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने, मूल्यांकन करने और व्यक्त करने की क्षमता को मापती है।
- IQ या इंटेलिजेंस कोशेंट (IQ or Intelligence Quotient)
- यह संज्ञानात्मक क्षमताओं का माप है जिसमें प्रसंस्करण, ज्ञान, स्मृति और तर्क शामिल है। यह शिक्षाविदों, विशेषज्ञता, आलोचनात्मक सोच और तर्क को प्रभावित करता है।
- EQ या भावनात्मक भागफल (EQ or Emotional Quotient)
- यह भावनात्मक योग्यता के माप को संदर्भित करता है। इसमें भावनाओं को पहचानना, नियंत्रित करना और सर्वोत्तम और सबसे प्रभावी तरीके से उपयोग करना शामिल है।
- यह प्रेरणा, सहानुभूति, संबंध, आत्म-जागरूकता और आत्म-नियंत्रण को प्रभावित करता है। ऐसे परिदृश्य में जहां दो व्यक्ति उच्च दबाव वाली नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं, एक के पास एक विशिष्ट आईक्यू है यानी उसके पास अधिक संज्ञानात्मक क्षमता और कौशल हैं लेकिन वह दबाव में आसानी से निराश हो जाता है जबकि दूसरे के पास एक आईक्यू है जो कई लोगों के बराबर है लेकिन उसका ईक्यू उच्च है जो उसे नौकरी के लिए अधिक उपयुक्त बनाता है।

4. सामाजिक बुद्धिमत्ता

- यह सामाजिक स्थितियों और अंत:क्रियाओं को प्रभावी ढंग से समझने और नेविगेट करने की क्षमता है। इसमें दूसरों की भावनाओं, आवश्यकताओं और दृष्टिकोणों के प्रति जागरूक और संवेदनशील होना और सकारात्मक व रचनात्मक तरीके से दूसरों के साथ अन्तर्क्रिया करने के लिए उस समझ का उपयोग करने में सक्षम होना शामिल है।
- एक टीम लीडर ने नोटिस किया कि उनकी टीम का एक सदस्य मीटिंग के दौरान परेशान और विचलित लग रहा है। व्यवहार को नजरअंदाज करने या आलोचनात्मक होने के बजाय, नेतृत्वकर्ता बैठक के बाद टीम के सदस्य को एक तरफ ले जाता है और पूछता है कि क्या सब कुछ

ठीक है। नेतृत्वकर्ता ध्यान से सुनता है और सहायता एवं प्रोत्साहन प्रदान करता है, जिससे टीम के सदस्य को यह महसूस करने में मदद मिलती है कि उसकी बात सुनी जाती है और उसे महत्व दिया जाता है।

5. **परस्पर निर्भरता**

- परस्पर निर्भरता को दो या दो से अधिक संस्थाओं के बीच संबंध के रूप में परिभाषित किया गया है जिसमें प्रत्येक इकाई समर्थन, सहयोग या पारस्परिक लाभ के लिए दूसरे पर निर्भर करती है। ऐसे व्यक्ति, समूह या प्रणालियाँ जो एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे की गतिविधियों और उपस्थिति से प्रभावित हैं, उन्हें अन्योन्याश्रित कहा जाता है।
- **शासन:** विभिन्न मंत्रालय और विभाग, सेवा वितरण के सुचारू संचालन के लिए कार्यात्मक और तकनीकी सहायता के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं।
- **सामाजिक व्यवस्थाएँ:** ऐसी स्थिति जिसमें विभिन्न समूह या समुदाय संसाधनों, सेवाओं या सुरक्षा के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं।
- **अर्थशास्त्र:** ऐसी स्थिति जिसमें बाजार, देश या क्षेत्र व्यापार, निवेश या प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं।

नैतिक शासन

1. **नैतिक शासन**

- यह सच्चाई, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता आदि जैसे नैतिक सिद्धांतों द्वारा संचालित नियमों, प्रथाओं और प्रक्रियाओं के सेट को संदर्भित करता है।
- प्रभावी शिकायत निवारण के लिए केंद्र सरकार का CPGRAMS पोर्टल और राजस्थान सरकार का संपर्क पोर्टल।

2. **अन्तःकरण**

- यह किसी के कार्यों की नैतिकता के संबंध में एक व्यक्तिगत निर्णय है। यह कुछ गलत करने के लिए अपराधबोध और सही के लिए गर्व की भावना पैदा करता है।
- जयपुर में एक बीएसएफ जवान, जितेंद्र सिंह ने 11 लाख रुपये का दहेज लेने से इनकार कर दिया और इसके बदले, निशानी के तौर पर 11 रुपये और नारियल लिया।

3. **कॉर्पोरेट प्रशासन**

- यह नियमों, प्रथाओं और प्रक्रियाओं का समूह है जिसका उपयोग किसी कंपनी को संचालित करने या प्रबंधित करने के लिए किया जाता है। कैडबरी समिति के अनुसार, कॉर्पोरेट प्रशासन वह प्रणाली है जिसके द्वारा कंपनियों को निर्देशित और नियंत्रित किया जाता है।
- वॉरेन बफेट को 3 Ps- Principal, Purpose, and People पर आधारित नैतिक व्यवसाय रणनीति के लिए जाना जाता है।

4. **लालफीताशाही**

- यह नियमों या प्रक्रियाओं के अति पालन को संदर्भित करता है जो न केवल कार्य को जटिल बनाता है बल्कि परिणाम में विलंब भी करता है।
- एक जटिल कराधान संरचना और फाइलिंग प्रक्रिया।

5. **भाई-भतीजावाद**

- यह अपने किसी निकट व्यक्ति को अनुचित लाभ पहुंचाने के लिए अपनी शक्ति या पद के दुरुपयोग को संदर्भित करता है।
- एक राजनीतिक नेता आंतरिक चुनावों और पार्टी के अन्य सदस्यों को उचित मौका देने के बजाय अपने बेटे को पार्टी का अध्यक्ष नियुक्त करता है।

ईमानदारी/सत्यनिष्ठा

1. **सत्यनिष्ठा**

- सत्यनिष्ठा का तात्पर्य ईमानदार, नैतिक और नैतिक आचरण के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता से है। यह किसी व्यक्ति या संगठन के अपने कार्यों और निर्णय लेने में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही के उच्च मानकों के पालन को संदर्भित करता है। सत्यनिष्ठा वाला एक सार्वजनिक अधिकारी सार्वजनिक हित में कार्य करेगा, अपने वित्तीय लेनदेन के बारे में पारदर्शी होगा और हितों के टकराव से बचेगा।
- एक पत्रकार जो सत्यनिष्ठा का पालन करता है वह सत्यपरक रिपोर्ट करेगा और सूचना के अपने स्रोतों के बारे में पारदर्शी होगा। वे सनसनीखेज और पूर्वाग्रह से बचेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि उनकी रिपोर्टिंग सटीक और तथ्य-आधारित हो।

2. **पारदर्शिता**

- पारदर्शिता सभी प्रकार के मानवीय संबंधों और संचार में स्पष्टता और ईमानदारी के सिद्धांत को संदर्भित करती है, चाहे वह व्यक्तिगत संबंधों, व्यवसाय या सरकार में हो। इसमें किसी के कार्यों, इरादों और प्रेरणाओं के बारे में खुला और सच्चा होना और दूसरों को प्रभावित करने वाली जानकारी और प्रक्रियाओं तक पहुंच प्रदान करना शामिल है। मानव संपर्क के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी, विश्वास और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए पारदर्शिता एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है।
- एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जो पारदर्शी है, सार्वजनिक रूप से अपनी सामग्री मॉडरेशन नीतियों का खुलासा करता

है, ताकि उपयोगकर्ताओं को पता चले कि क्या अनुमति है और क्या नहीं।

3. **आचार संहिता**
   - आचार संहिता दिशानिर्देशों या सिद्धांतों का एक समूह है जो किसी व्यक्ति, संगठन या पेशे के व्यवहार के लिए नैतिक मानकों और अपेक्षाओं को रेखांकित करता है। यह नैतिक निर्णय लेने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है और सत्यनिष्ठा, व्यावसायिकता और जवाबदेही को बढ़ावा देने में मदद करता है।
   - मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) की आचार संहिता और विनियम भारत में चिकित्सकों के लिए नैतिक मानक निर्धारित करते हैं, जिसमें चिकित्सा पेशे की गरिमा और सम्मान बनाए रखने, रोगी के कल्याण को प्राथमिकता देने और हितों के टकराव से बचने जैसे सिद्धांत शामिल हैं।

4. **आचार संहिता**
   - आचार संहिता दिशानिर्देशों या सिद्धांतों का एक समूह है जो व्यक्तियों या संगठनों के लिए स्वीकार्य व्यवहार की रूपरेखा तैयार करता है। यह हितों के टकराव, गोपनीयता और कानूनों और विनियमों के अनुपालन जैसे मुद्दों का भी समाधान कर सकता है। कई संगठनों और व्यवसायों की अपनी आचार संहिता होती है, जिन्हें प्रायः अनुशासनात्मक कार्रवाई या उल्लंघन के अन्य परिणामों के माध्यम से लागू किया जाता है।
   - भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) के पास अपने कर्मचारियों के लिए एक आचार संहिता है जो पालन किए जाने वाले नैतिक और पेशेवर मानकों की रूपरेखा तैयार करती है।

5. **नागरिक चार्टर**
   - नागरिक चार्टर एक ऐसा दस्तावेज है जो किसी सरकार या सार्वजनिक सेवा प्रदाता द्वारा अपने नागरिकों या ग्राहकों के प्रति की गई प्रतिबद्धताओं को रेखांकित करता है। चार्टर सेवा के उन मानकों को निर्धारित करता है जिनकी संगठन से अपेक्षा की जा सकती है, जिसमें सेवा की गुणवत्ता और स्तर, कार्यों को पूरा करने में लगने वाला समय और सेवाओं की पहुंच शामिल है। यह नागरिकों के लिए सार्वजनिक सेवा प्रदाताओं को उनके कार्यों के लिए जवाबदेह ठहराने और बेहतर सेवाओं की मांग करने का एक उपकरण है।

     जैसे-सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के नागरिक चार्टर।

6. **भ्रष्टाचार**
   - भ्रष्टाचार, बेईमानी या अनैतिक व्यवहार का एक रूप है जिसमें व्यक्तिगत लाभ के लिए सत्ता का दुरुपयोग शामिल है। भ्रष्टाचार कई रूप में हो सकता है, जिनमें रिश्वतखोरी, गबन, भाई-भतीजावाद और धोखाधड़ी शामिल हैं।
   - 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला 2008: यह मामला संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 2जी स्पेक्ट्रम लाइसेंस के आवंटन में कथित अनियमितताओं से जुड़ा था।

7. **विश्वसनीयता**
   - हर समय ईमानदार, निष्कपट रहने का गुण जो व्यक्ति को विश्वसनीय बनाता है।
   - फेक न्यूज और अफवाहों के बड़े पैमाने पर प्रसार ने सोशल मीडिया की विश्वसनीयता को कम कर दिया है।

8. **भेदभाव**
   - यह किसी व्यक्ति या समूह के साथ उनकी नस्ल, लिंग, जाति आदि के आधार पर अनुचित और पूर्वाग्रहपूर्ण व्यवहार है।
   - **नस्लीय भेदभाव:** महात्मा गांधी को उनकी त्वचा के रंग के कारण ट्रेन में प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर फेंक दिया गया था।

9. **अधिमानी व्यवहार**
   - यह कुछ व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों को दी गई रियायत या विशेषाधिकार को संदर्भित करता है जिससे उनके लिए कुछ लाभ अधिक सुलभ हो जाते हैं।
   - विकलांग व्यक्तियों को सार्वजनिक सुविधाओं तक आसानी से पहुंचने में मदद करने के लिए उन्हें प्राथमिकता दी जाती है।

10. **साझा कल्याण**
    - यह उन सुविधाओं को संदर्भित करता है जो बड़े पैमाने पर समाज को लाभान्वित करती हैं और स्वाभाविक रूप से समुदाय के सभी सदस्यों द्वारा साझा की जाती हैं।
    - सार्वजनिक परिवहन और मनोरंजन सुविधाएँ, न्यायिक प्रणाली, नागरिक स्वतंत्रता जैसे वाक स्वतंत्रता और संघ की स्वतंत्रता, स्वच्छ हवा और स्वच्छ जल; और राष्ट्रीय रक्षा।

11. **मिथ्या/असत्यता**
    - किसी असत्य या गलत कथन या दावे को मिथ्या कहा जा सकता है। जानबूझकर या अनजाने में बयान में किया गया दावा झूठ, अफवाहें, गलतफहमी और गलत बयानी की तरह भ्रामक हो सकता है।
    - बिक्री बढ़ाने के लिए विज्ञापनदाता कई बार अपने उत्पादों के बारे में असत्य/अतिशयोक्तिपूर्ण दावे करते हैं।

❖ ❖ ❖

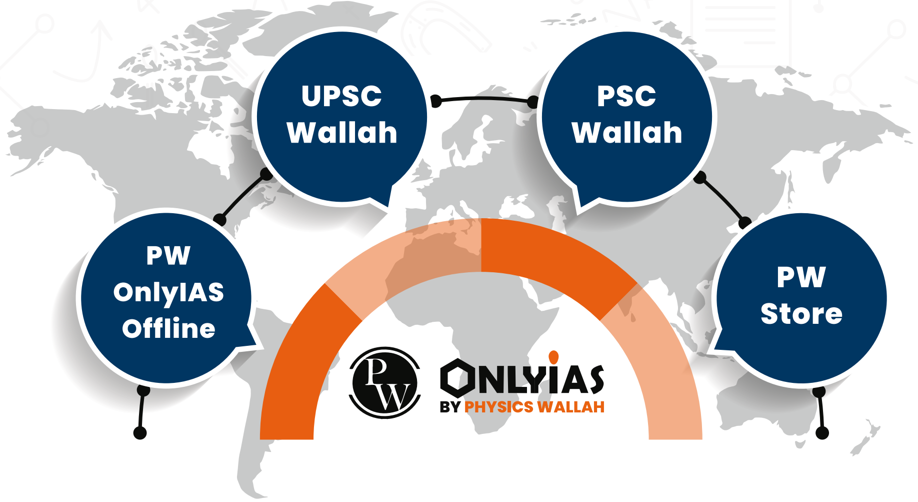

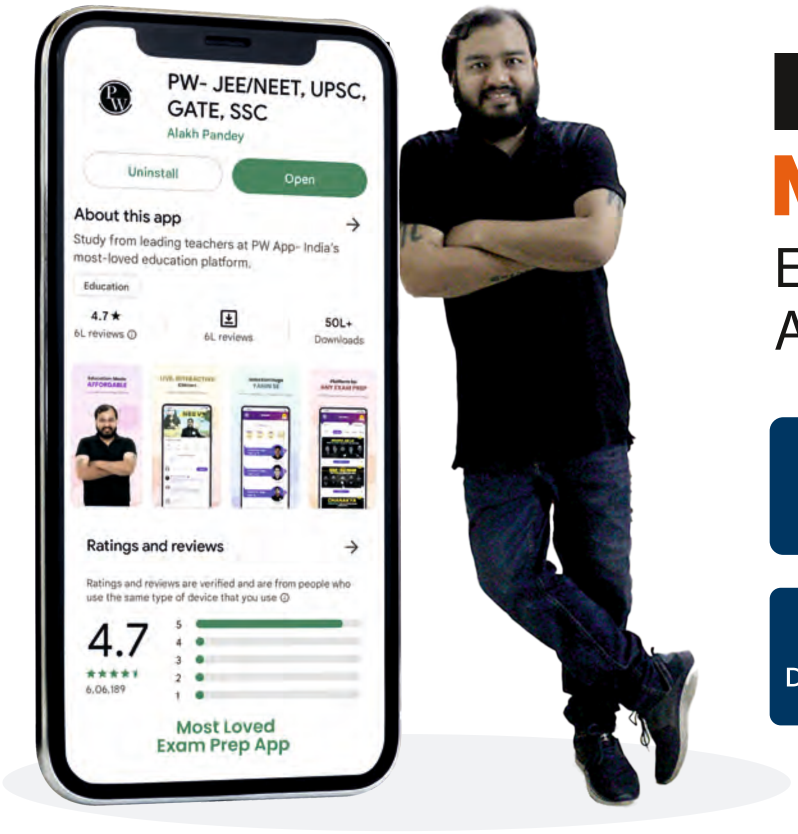

INDIA'S MOST LOVED

Educational Channel And Platform

4.8★ Rating	**20M+** Subscribers
8M+ Downloads	**8000**hrs Video Content/Week

If you have any queries or need assistance with admission in PW Classes

here is what you can do

PW APP
Reach out to us: 07948221232

PW OnlyIAS
Reach out to us: 9920613613

₹ 349/-

www.pw.live

ISBN 978-81-19130-82-5